Sherkhan
9825 696 131

vol 8

6874

सहीह मुस्लिम

हदीस नं. 7563

صحیح مسلم

تالیف: امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمہ اللہ

सहीह मुस्लिम

तालीफ़

इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुल अज़ीज़ अल्वी

तख़रीज

मौलाना अदनान दुर्वेश

तक़रीज़

मौलाना इरशादुल हक़ असरी

بِسْــــــمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیم

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वगैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

صحیح مسلم

تالیف: امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمہ اللہ

सहीह मुस्लिम

तालीफ़

इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ल्वी

तख़रीज

मौलाना अदनान दुर्वेश

तक़रीज़

मौलाना इरशादुल हक़ असरी

ज़िल्द नम्बर

हदीस नं. 6874 से 7563 तक

नाम किताब	**सहीह मुस्लिम जिल्द - 8**	
तालीफ़	**इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नीशापुरी (रह.)**	
उर्दू तर्जुमा	**फ़ज़ीलतुश्शैख मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ल्वी**	
हिन्दी तर्जुमा	**दारुत-तर्जुमा, शोबा नशरो इशाअ़त जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर (राज.)**	
तख़रीज	**मौलाना अदनान दुर्वेश**	
तक़रीज़	**मौलाना इरशादुल हक़ असरी**	
तस्हीह व नज़्रे सानी	**मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी (97857-69878)**	
लेज़र टाइपसेटिंग	**मुहम्मद अकबर, अब्दुल वाजिद**	
मेनेजिग डायरेक्टर	**अली हम्जा, (82338-55857)**	
प्रिण्टिंग	**आदर्श आफसेट, स्टेडियम शॉपिंग सेन्टर, जोधपुर 92144-85741**	
बाइंडिंग	**कमाल बाईण्डिंग हाउस, यादगार मास्टर जहुरुद्दीन साहब मो. शाहिद भाई 93516-68223 0291-2551615**	
प्रकाशन (प्रथम संस्करण)	जमादिल आखिर 1441 हिजरी (जनवरी 2020 इस्वी)	
तादादा कॉपी : 500	तादाद पेज: 520	क़ीमत: रु. 600/- जिल्द (रु. 4500 आठ जिल्द सेट)

प्रकाशक	**मर्कज़ी अन्जुमन खुद्दामुल क़ुरआन वल हदीस, जोधपुर**
जेरे निगरानी	**शहरी व सूबाई जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान**

फेहरिस्ते-मजामीन

इस किताब के कुल बाब 26 और 132 अहादीस हैं।

ज़िक्र, दुआ, तौबा और इस्तिग़फ़ार का बयान

हदीस नम्बर 6874 से 7023 तक

अज़कार, दुआएँ और उनके फ़ज़ाइल व आदाब

ये इंसान के लिये बहुत बड़ी ख़ूश क़िस्मती की बात है कि वह अल्लाह पर सच्चा ईमान रखता हो, उसकी सिफ़ाते हस्ना को पहचानता हो, उसकी नेमतों, मेहरबानियों और उसके बे'पायाँ फ़ज़ल व करम का एहसास रखता हो और पूरे इजज़ (लाचारी) और मोहब्बत से उसको याद करता हो। अल्लाह ने इंसान को इस तरह बनाया है कि वह हर लम्हा अल्लाह की मेहरबानियों का मोहताज होता है। अगर उसका दिल मुर्दा नहीं हुआ तो वह बे'इख़्तियार उसको याद करता है। ये याद उसे दिल का मुकम्मल इत्मिनान, एहसास तहफ्फ़ुज़, सच्ची ख़ूशी और बे'हिसाब लज़्ज़त व हलावत अ़ता करती है। अल्लाह का बन्दा उसे याद करे तो वह उससे बढ़ कर ख़ूश होता है। बन्दा उसकी याद के ज़रिये से उसके क़रीब आये तो वह बन्दे से बढ़ कर उसके क़रीब आता है।

अल्लाह के निन्यानवे ख़ूबसूरत नाम हैं। बन्दा जिस नाम से चाहे अल्लाह को याद कर सकता है, पुकार सकता है, दुआ कर सकता है, बन्दे की ज़िन्दगी का कोई पहलू और उसकी कोई ज़रूरत ऐसी नहीं जिसके लिये वह अल्लाह को पुकारना चाहे और उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ उसे मुनासिब तरीन नाम न मिले। बीमारियों के लिये वह शाफ़ी है, भूखों नंगों के लिये वह रज़्ज़ाक़ है, गुनाहगारों के लिये वह ग़फ़्फ़ार व ग़फ़ूर है, महरूमों के लिये वह मुन्इम है, कमज़ोरों के लिये वह क़वी है, धुत्कारे हुओं के लिये वह वदूद है, रहीम है, व अ़न हाज़ल क़ियास। उसे पसन्द है कि उसका बन्दा इस्रार कर के उससे माँगे, पूरे यक़ीन के साथ कि उसे मिल कर रहेगा। उसे सख़्त नापसन्द है कि कोई उससे मायूस हो। जिसके लिये ज़िन्दगी नाक़ाबिले बरदाश्त हो जाये और वह मौत माँगने लगे तो इस बात को अल्लाह की रहमत से वाबस्ता करे। जो मौत के वक़्त अल्लाह से मुलाक़ात का मुतमन्नी हो अल्लाह भी उससे मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाता है, वह बन्दे के अच्छे गुमान को भी रद्द नहीं करना चाहता। गुनाहों पर पशेमानी हो तो भी दुनिया में सज़ा पाने के बजाये दुनिया और आख़िरत दोनों में उससे अच्छाई और उसकी रहमत माँगने का हुक्म दिया गया है।

अल्लाह को तन्हाई में भी याद करना चाहिए और दूसरे मोमिनों के साथ मिलकर भी। तन्हाई में ज़्यादा याद करने वाले बाज़ी ले जाते हैं। सुबह व शाम, सोते जागते, दिन की मस़रूफ़ियतों और रात की तन्हाईयों में उसे याद करने वाला अ़ज़ीम तरीन इनाम का हक़दार है जो क़ुर्बे ईलाही है, लेकिन हज़रत अबू हुरैरह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि जब क़ुर्आन पढ़ना पढ़ाना हो, अल्लाह के एहसान याद करने, सुनने और बयान करने हों और मज़ीद माँगने हों तो उसकी याद की मज्लिसें मुनासिब हैं, अल्लाह उन

मज्लिसों पर सकीनत नाज़िल फ़रमाता है, शरीक होने वालों को अपनी रहमत से ढाँप देता है, फ़रिश्ते उनके इर्द गिर्द घेरा बाँध लेते हैं (हदीस़: 6853) अल्लाह उन याद करने वालों को उनकी मज्लिस से बहुत ऊँची मज्लिस में याद करता है। (हदीस़: 6839, 6855) जो तन्हाई में बैठ कर उसकी याद में मुस्तग़र्क़ हो जाता है, अल्लाह उसे अपने दिल में याद करता है। (हदीस़: 6805) याद रहे कि ज़िक्र के हवाले से ऊपर बयान की जाने वाली सारी रिवायत हज़रत अबू हुरैरह (ﷺ) ने रिवायत की हैं। इनमें तन्हा और मिल कर दोनों तरह से अल्लाह की याद की तफ़्सीलात मौजूद हैं। इनमें कहीं भी कोई ऐसा तरीक़ा मज़कूर नहीं जो आज कल के अस्हाबे तरीक़त ने ईजाद कर रखे हैं। ये तरीक़े अपने अपने ईजाद करने वालों ही के नाम से मौसूम हैं। तरीक़-ए-शाज़लिया, तरीक़-ए-नक़्शबन्दिया, तरीक़-ए-क़ादरिया वग़ैरह, ये तरीक़े अच्छी नियत से तर्बीयत के हवाले से अपने अपने तजुर्बों की रोशनी में शुरू किये गये होंगे लेकिन ये सब तरीक़े आपस में एक दूसरे से भी मुख़्तलिफ़ हैं और तरीक़-ए-नबविया(ﷺ) से भी मुख़्तलिफ़ हैं।

तरीक़-ए-नबविया(ﷺ) के मुताबिक़ अव्वलीन और नागुज़ीर तरीक़-ए-ज़िक्र नमाज़ है। अल्लाह तआला ने वाज़ेह फ़रमाया है; 'मेरे ज़िक्र के लिये नमाज़ क़ाइम करो।' (सूरह ताहा: 20/14) अल्लाह ने ख़ूद रिसालत मा'ब(ﷺ) को मुख़ातब करके फ़रमाया: 'नमाज़ क़ाइम कर सूरज ढलने से रात के अंधेरे तक और फ़ज्र का क़ुर्आन (पढ़) बिलाशुब्हा फ़ज्र का क़ुर्आन हमेशा से हाज़िर होने का वक़्त रहा है और रात के कुछ हिस्से में, फिर इसके साथ बेदार रह, इस हाल में कि तेरे लिये इज़ाफ़ी है। क़रीब है कि तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ करेगा।' (बनी इस्राईल : 17/78, 79) इब्तेदाई दौर में रात की नमाज़ का ख़ुसूसी एहतिमाम था। आप(ﷺ) को हुक्म था: 'ऐ कपड़े में लिपटने वाले! रात को क़याम कर मगर थोड़ा। आधी रात (क़याम कर) या इससे थोड़ा सा कम कर ले या इससे ज़्यादा कर ले और क़ुर्आन को ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़।' (अल मुज़्ज़म्मिल: 73/1-4) गोया आपको आधी रात या इससे कम या ज़्यादा क़याम का हुक्म था जिसमें आपको तर्तील से क़ुर्आन पढ़ना था। क़ुर्आन, ख़ुसूसन जब नमाज़ में तवज्जा से पढ़ा जाये तो सबसे आला और सबसे मुकम्मल ज़िक्र है। अल्लाह तआला ने इसी को 'अज़्ज़िक्र' कहा है।' 'बिलाशुबहा हम ही ने ये ज़िक्र नाज़िल किया है और बिलाशुब्हा हम ज़रूर इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।' (अल हिज्र: 15/9) इससे अल्लाह की याद, उसकी इबादत और इन्सान की तर्बीयत के तमाम तक़ाज़ों की तकमील होती है। रसूलुल्ल्लाह(ﷺ) को अल्लाह की तरफ़ से जो मिशन अता हुआ, रात के क़याम को उसकी तकमील की पूरी तैयारी और अल्लाह के पैग़ाम को इन्सानी क़ुलूब व अज़्हान तक पहुँचाने का कामियाब ज़रिया क़रार दिया गया: 'बिलाशुब्हा रात को उठना (नफ़्स को) कुचलने में ज़्यादा सख़्त और बात करने में ज़्यादा दुरूस्ती वाला है।' (अल मुज़्ज़म्मिल: 73/6)

रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नमाज़ के बाद के अज़कार, सुबह व शाम के अज़कार, सोने जागने के अज़कार, खाने पीने के अज़कार, ग़र्ज़ हर मरहल्ले और हर काम के वक़्त के अज़कार सिखाये और मुसलमान की पूरी ज़िन्दगी को ज़िक्रे इलाही से वाबस्ता कर दिया। ये तरीक़-ए-नबविया है जो पूरी इन्सानी ज़िन्दगी को मुनव्वर कर देता है। आप(ﷺ) के बताये हुये अज़कार और दुआएँ ऐसी हैं कि उनसे बेहतर दुआओं का तसव्वुर तक नहीं किया जा सकता। आज कल के अस्हाबे तरीक़त में इन चीज़ों का कोई ख़ास एहतिमाम नज़र नहीं आता। क़ुर्आन मजीद का ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा याद करने, उसको अच्छी तरह समझने और रात का क़याम करके उसमें तवज्जा और तर्तील के साथ पढ़ने की तल्क़ीन तरीक़त का हिस्सा नज़र नहीं आता। रसूलुल्लाह(ﷺ) के अज़कार और आपकी तल्क़ीन करदा दुआएँ याद करने और उनके मफ़हूम को ज़हन नशीन कराने का भी कोई एहतिमाम नहीं। मुर्शिदीने तरीक़त ख़ूद भी रसूलुल्लाह(ﷺ) के मामूलात के इत्तिबा यहाँ तक कि आपके सिखाये हुये अज़कार और दुआओं से बे बहरा नज़र आते हैं। तज़किय-ए-क़ल्ब के लिये क़ुर्आन ने जो तरीक़ा बताया है वह फ़र्ज़ ज़कात और कसरत से सदक़ात के ज़रिये से माल ख़र्च करना है ताकि दिल से माल की मोहब्बत ख़त्म हो जाये। अल्लाह का फ़रमान है: 'इनके मालों से सदक़ा लें, इसके साथ आप इन्हें पाक करेंगे और इन्हें साफ़ करेंगे।' (अत्तौबा: 9/103) और एक मिसाली मोमिन का तआरूफ़ करवाते हुये कहा गया: 'वह जो अपना माल (इसलिये) देता है कि पाक हो जाये।' (अल्लैल: 92/18) लेकिन आज कल के ज़्यादातर अस्हाबे तरीक़त तज़किया हासिल करने के बजाये उलटा फ़तूहात की सूरत में लोगों के माल का मैल कुचैल इकट्ठा करने में लगे हुये नज़र आते हैं।

इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह के इस हिस्से में सही अहादीस के ज़रिये से तरीक़-ए-नबविया के ख़द्दोख़ाल वाज़ेह किये हैं। इसमें अज़कार हैं, उनके फ़ज़ाइल हैं, दुआएँ हैं और उनके आदाब हैं।

(6874) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, मगर उसमें आपका यह क़ौल नहीं है। ''ज़िन्दगी और मौत का फ़ित्ने से।'

तख़रीज 6874 : इसकी तख़रीज ह़दीस नं. (6812) में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّ يَزِيدَ لَيْسَ فِي حَدِيثِهِ قَوْلُهُ " وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ "

(6875) ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने चंद चीज़ों से पनाह माँगी, (और उनको बयान किया) और बुख़्ल से पनाह माँगी।

तख़रीज 6875 : इसकी तख़रीज हदीस (6812) में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ أَخْبَرَنَا ابْنُ مُبَارَكٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ تَعَوَّذَ مِنْ أَشْيَاءَ ذَكَرَهَا وَالْبُخْلِ .

(6876) ह़ज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) इन कलिमात से दुआ फ़र्माते थे, 'ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, बुख़्ल, काहिली से और निकम्मी उम्र से, क़ब्र के अ़ज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से।''

तख़रीज 6876 : स़ह़ीह़ बुख़ारी : 4707

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ أَسَدٍ الْعَمِّيُّ، حَدَّثَنَا هَارُونُ الأَعْوَرُ، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ الْحَبْحَابِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يَدْعُو بِهَؤُلاَءِ الدَّعَوَاتِ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْكَسَلِ وَأَرْذَلِ الْعُمُرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ " .

बाब 17 : बुरी तक़्दीर और बदबख़्ती वग़ैरह के लाहिक़ होने से पनाह माँगना

بَاب(17): فِيْ التَّعَوُّذِ مِنْ سُوْءِ الْقَضَاءِ وَدَرْكِ الشَّقَاءِ وَغَيْرِهِ

(6877) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ), बुरी तक़्दीर, बदबख़्ती के लाहिक़ होने, दुश्मनों की शमातत (ख़ुशी व मसर्रत) और बलाओं की सख़्ती से पनाह माँगते थे।'' अम्र अपनी हदीस में कहते हैं, सुफ़्यान ने बताया, मुझे शक है, मैंने उनमें एक का इज़ाफ़ा किया है।

तख़रीज 6877 : सहीह बुख़ारी : 6341; वफ़िल्क़द्र : 6616; नसाई : 5506.

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنِي سُمَيٌّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَتَعَوَّذُ مِنْ سُوءِ الْقَضَاءِ وَمِنْ دَرَكِ الشَّقَاءِ وَمِنْ شَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ وَمِنْ جَهْدِ الْبَلاَءِ . قَالَ عَمْرٌو فِي حَدِيثِهِ قَالَ سُفْيَانُ أَشُكُّ أَنِّي زِدْتُ وَاحِدَةً مِنْهَا .

फ़ायदा : इस हदीस में बज़ाहिर चार चीज़ों से पनाह तलब की गई है, लेकिन दर हक़ीक़त उन चार के ज़िम्न में दुनिया व आख़िरत की हर बुराई व तक्लीफ़ और परेशानी से पनाह माँगी है, सबसे पहले सूउल क़ज़ाअ है, इसमें नफ़्स, माल, औलाद, अहल, दुनिया और आख़िरत की हर तक्लीफ़ और परेशानी आ गई, इस तरह बदबख़्ती का लाहिक़ होना, दरकिश शक़ाइ में हर क़िस्म और हर नौअ की बदबख़्ती आ गई तो जिसको बुरी तक़्दीर और बदबख़्ती से अल्लाह तआला की पनाह और हिफ़ाज़त मयस्सर आ गई, उसे सब कुछ मिल गया, वह किसी चीज़ से भी महरूम न रहा, दुनिया और आख़िरत की हर चीज़ उसमें दाख़िल है और दुश्मनों को फ़रहत व मसर्रत, इंसान की किसी नाकामी और मुसीबत में मुब्तला होने पर होती है और दुश्मनों की शमातत और तानाज़नी इंसान के लिए बड़ी रूहानी और ज़हनी तक्लीफ़ का बाइस बनती है, इसलिए उसको अलग बयान किया, हालाँकि यह पहली दोनों चीज़ों के अंदर मौजूद है, इस तरह जहदल बलाइ किसी मुसीबत की मशक़्क़त और सख़्ती और बला हर उस हालत का नाम है, जो इंसान के लिए बाइसे तक्लीफ़ हो और परेशानी का सबब बने, जिसमें उसका इम्तिहान व आज़माइश हो और यह दुनियावी भी हो सकती है और दीनी भी, रूहानी भी हो सकती है और जिस्मानी भी, इंफ़िरादी व शख़्सी भी हो सकती है और इज्तिमाई भी, इस तरह उस एक ही लफ़्ज में हर क़िस्म के मसाइब व तकालीफ़ और आफ़ात व मुश्किलात आ जाती हैं, इस रिवायत में सुफ़्यान ने शमाततुल आदाइ का इज़ाफ़ा किया है, लेकिन यह दूसरी रिवायात में मौजूद है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، وَاللَّفْظُ، لَهُ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ يَعْقُوبَ، أَنَّ يَعْقُوبَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ بُسْرَ بْنَ سَعِيدٍ، يَقُولُ سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ، يَقُولُ سَمِعْتُ خَوْلَةَ بِنْتَ حَكِيمٍ السُّلَمِيَّةَ، تَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ نَزَلَ مَنْزِلاً ثُمَّ قَالَ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ . لَمْ يَضُرُّهُ شَىْءٌ حَتَّى يَرْتَحِلَ مِنْ مَنْزِلِهِ ذَلِكَ " .

(6878) हज़रत ख़ौला बिन्ते हकीम सुलमिय्या (रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, ''जिसने कहीं पड़ाव किया, फिर यह कलिमात कहे, मैं अल्लाह के कलिमाते ताम्मा की पनाह लेता हूँ, उसकी सारी मख़लूक़ात के शर्र से तो जब तक वह उस मंज़िल (पड़ाव) से रवाना न हो जाएगा, उसको कोई चीज़ ज़रर (नुक़्सान) नहीं पहुँचा सकेगी।''

तख़रीज 6878 : सुनन तिर्मिज़ी : 3427; इब्ने माजा : 3547.

फ़ायदा:अल्लाह के कलिमाते ताम्मा से मुराद, वह कलिमात हैं जो हर ऐब व नुक़्स से पाक हैं, नफ़ा और शिफ़ा बख़्श हैं, पुर तासीर हैं, इसलिए कुछ ने इनसे मुराद, क़ुरआन लिया है कि मैं उसकी पनाह में आता हूँ और क़ुरआन अल्लाह का कलाम है और उसकी सिफ़त है, उसकी सिफ़त की पनाह लेना जाइज़ है।

وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَأَبُو الطَّاهِرِ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ وَهْبٍ، - وَاللَّفْظُ لِهَارُونَ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، قَالَ وَأَخْبَرَنَا عَمْرٌو، - وَهُوَ ابْنُ الْحَارِثِ - أَنَّ يَزِيدَ بْنَ أَبِي، حَبِيبٍ وَالْحَارِثَ بْنَ يَعْقُوبَ حَدَّثَاهُ عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الأَشَجِّ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيمٍ السُّلَمِيَّةِ، أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا نَزَلَ أَحَدُكُمْ مَنْزِلاً فَلْيَقُلْ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ

(6879) हज़रत ख़ौला बिन्ते हकीम सुलमिय्या (रज़ि.) से रिवायत है कि उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'कि जब तुममें से कोई किसी मंज़िल पर उतरे तो यह कलिमात कहे, अऊज़ु बि-कलिमातिल्ला-हित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़ तो जब तक वह वहाँ से कूच नहीं करेगा, उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगी ।''

तख़रीज 6879 : इसकी तख़रीज हदीस 6817 में गुज़र चुकी है।

اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ . فَإِنَّهُ لاَ يَضُرُّهُ شَىْءٌ حَتَّى يَرْتَحِلَ مِنْهُ " .

قَالَ يَعْقُوبُ وَقَالَ الْقَعْقَاعُ بْنُ حَكِيمٍ عَنْ ذَكْوَانَ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لَقِيتُ مِنْ عَقْرَبٍ لَدَغَتْنِي الْبَارِحَةَ قَالَ " أَمَا لَوْ قُلْتَ حِينَ أَمْسَيْتَ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لَمْ تَضُرَّكَ " .

(6880) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी नबी अकरम(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! कल शाम मुझे बिच्छू के डसने से बहुत तक्लीफ़ पहुँची, आपने फ़र्माया, 'अगर तुम शाम को यह कलिमात कह लेते, अऊज़ु बि-कलिमातिल्ला-हित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़, वह तुम्हें नुक़्सान न पहुँचाता।''

तख़रीजः इसकी तख़रीज पहले गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي عِيسَى بْنُ حَمَّادٍ الْمِصْرِيُّ، أَخْبَرَنِي اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ جَعْفَرٍ، عَنْ يَعْقُوبَ، أَنَّهُ ذَكَرَ لَهُ أَنَّ أَبَا صَالِحٍ، مَوْلَى غَطَفَانَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ لَدَغَتْنِي عَقْرَبٌ . بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ وَهْبٍ .

(6881) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मुझे बिच्छू ने डस लिया, आगे ऊपर वाली हदीस रिवायत है।

(18) بَاب: مَايَقُولُ عِنْدَ النَّوْمِ وَأَخْذِ الْمَضْجَعِ

बाब 18 : बिस्तर में सोते वक़्त क्या कहे?

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِعُثْمَانَ - قَالَ إِسْحَاقُ

(6882) हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब अपने बिस्तर पर सोने का इरादा करो तो

أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، حَدَّثَنِي الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا أَخَذْتَ مَضْجَعَكَ فَتَوَضَّأْ وُضُوءَكَ لِلصَّلاَةِ ثُمَّ اضْطَجِعْ عَلَى شِقِّكَ الأَيْمَنِ ثُمَّ قُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْلَمْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ وَاجْعَلْهُنَّ مِنْ آخِرِ كَلاَمِكَ فَإِنْ مُتَّ مِنْ لَيْلَتِكَ مُتَّ وَأَنْتَ عَلَى الْفِطْرَةِ " . قَالَ فَرَدَّدْتُهُنَّ لأَسْتَذْكِرَهُنَّ فَقُلْتُ آمَنْتُ بِرَسُولِكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ قَالَ " قُلْ آمَنْتُ بِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ " .

नमाज़ वाला वुज़ू करो, फिर अपने दाएँ पहलू पर लेट जाओ, फिर यह दुआ पढ़ो, ऐ अल्लाह! मैंने अपना चेहरा तेरी ओर मुतवज्जह किया और अपने तमाम मामलात तेरे ह़वाले कर दिये और तुझ ही को अपना पुश्त पनाह बना लिया, अपनी टेक तेरी ओर लगा दी, तेरे रह़मो करम की उम्मीद करते हुए और तेरे जलाल व अ़ज़ाब से डरते हुए, तेरी गिरफ़्त से बचने के लिए, तेरे सिवा कोई जाय पनाह और बचने की जगह नहीं , मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया, जो तूने उतारी और तेरे उस नबी पर ईमान लाया, जिसको तूने भेजा, यह वह तेरा आख़िरी बोल हो, यानी उसके बाद बातचीत न करना तो अगर तुम अपनी उस रात में इंतिक़ाल कर गए तो तुम उस ह़ाल में फ़ौत हो गए कि तुम फ़ित्रत (दीने इस्लाम) पर होगे।'' ह़ज़रत बराअ (रज़ि.) कहते हैं, मैंने याद करने के लिए इन कलिमात को दोहराना शुरू कर दिया तो मैंने कहा, मैं तेरे उस रसूल पर ईमान लाया जिसे तूने भेजा है, आपने फ़र्माया, 'यूँ कहो, मैं तेरे उस नबी पर ईमान लाया, जिसे तूने भेजा है।'

तख़रीज 6882 : स़ह़ीह़ बुख़ारीः 247; वफ़िद्दअवात : 6311; अबूदाऊद : 5046: 5047: 5048; तिर्मिज़ी : 3394;

फ़ायदा : इस दुआ में अल्लाह पर ऐतिमाद, तवक्कल, यक़ीन और तस्लीम व तफ़्वीज़ की रूह़ भरी हुई है और ईमान की तज्दीद भी है, इसलिए इस यक़ीन व तवक्कल पर फ़ौत होना इस्लाम पर मरना है और इस ह़दीस से मालूम हुआ, बिस्तर पर जाने से पहले नमाज़ वाला वुज़ू कर लेना पसंदीदा अ़मल है, इस

तरह इंसान, तहारते जिस्मानी और दुआ के ज़रिये तहारते क़ल्बी को हासिल करके, मौत के लिए तैयार होकर सोता है, नीज़ इस हदीस से यह भी साबित हुआ, रसूलुल्लाह(ﷺ) से मंक़ूल औराद (विर्द) व वज़ाइफ़ (वज़ीफ़े)और दुआओं के अल्फ़ाज़ में तब्दीली नहीं करना चाहिए, क्योंकि आपके अल्फ़ाज़ के अंदर जो तासीर और असरार व ख़्वास़ हैं, किसी के अल्फ़ाज़ उसका बदल नहीं बन सकते और यह भी मुम्किन है उस अज्रो सवाब और फ़ज़ीलत का तअल्लुक़, उन ही अल्फ़ाज़ के साथ हो।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ، - يَعْنِي ابْنَ إِدْرِيسَ - قَالَ سَمِعْتُ حُصَيْنًا، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِهَذَا الْحَدِيثِ غَيْرَ أَنَّ مَنْصُورًا أَتَمُّ حَدِيثًا وَزَادَ فِي حَدِيثِ حُصَيْنٍ " وَإِنْ أَصْبَحَ أَصَابَ خَيْرًا

(6883) इमाम स़ाहब (रह.) एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं, लेकिन ऊपर वाली रिवायत ज़्यादा मुकम्मल है और इस हदीस में यह इज़ाफ़ा है 'अगर वह सुबह करेगा, उसे ख़ैरो भलाई हासिल होगी।'

तख़रीज 6883 : इसकी तख़रीज हदीस नं. 6820 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، وَأَبُو دَاوُدَ قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، قَالَ سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ عُبَيْدَةَ، يُحَدِّثُ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَمَرَ رَجُلاً إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ أَنْ يَقُولَ " اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِرَسُولِكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ . فَإِنْ مَاتَ مَاتَ عَلَى الْفِطْرَةِ " .

(6884) हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक आदमी को हुक्म दिया, जब वह रात को अपने बिस्तर पर जाने का इरादा करे तो यूँ कहे, 'ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको तेरे सुपुर्द कर दिया और अपना चेहरा (रुख़) तेरी जानिब मुतवज्जह किया और अपनी पुश्त की टेक तेरी तरफ़ कर दी और अपने तमाम मामलात तेरे हवाले कर दिए, तेरे (सवाब) की रग़बत और शौक़ और तेरी पकड़ से डरते हुए, तेरे अ़लावा तुझसे बचने के लिए कोई ठिकाना और नजात की जगह नहीं है, मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया, जो तूने नाज़िल की है और उस रसूल पर जिसे तूने भेजा, सो अगर वह मर गया तो दीन पर मरेगा।'' इब्ने बश्शार ने अपनी हदीस मिनल्लैल (रात को) का ज़िक्र नहीं किया।

وَلَمْ يَذْكُرِ ابْنُ بَشَّارٍ فِي حَدِيثِهِ مِنَ اللَّيْلِ .

तख़रीज 6884 : इसकी तख़रीज हदीस 6820 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ، عَازِبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِرَجُلٍ " يَا فُلاَنُ إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ " . بِمِثْلِ حَدِيثِ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ . فَإِنْ مُتَّ مِنْ لَيْلَتِكَ مُتَّ عَلَى الْفِطْرَةِ وَإِنْ أَصْبَحْتَ أَصَبْتَ خَيْرًا " .

(6885) हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक आदमी को फ़र्माया, 'ऐ फ़लाँ! जब तुम अपने बिस्तर पर जाना चाहो' आगे ऊपर वाली हदीस इस फ़र्क़ के साथ है, आपने फ़र्माया, 'और तेरे नबी पर जिसे तूने भेजा, अगर तुम अपनी उस रात फ़ौत हो गए, फ़ित्रत पर फ़ौत हो गए और अगर सुबह करोगे तो ख़ैर पाओगे।'

तख़रीज 6885 : सहीह बुख़ारी, ह : 7488.

حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي، إِسْحَاقَ أَنَّهُ سَمِعَ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ، يَقُولُ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً . بِمِثْلِهِ وَلَمْ يَذْكُرْ " وَإِنْ أَصْبَحْتَ أَصَبْتَ خَيْرًا " .

(6886) इमाम साहब (रह.) यही रिवायत अपने दो उस्तादों से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक आदमी को हुक्म दिया, आगे ऊपर वाली रिवायत है और उसमें यह लफ़्ज़ नहीं हैं 'और अगर तुम सुबह उठोगे, ख़ैर पाओगे।'

तख़रीज 6886 : सहीह बुख़ारी, ह : 6313.

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مُوسَى، عَنِ الْبَرَاءِ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ قَالَ " اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَحْيَا وَبِاسْمِكَ أَمُوتُ " . وَإِذَا اسْتَيْقَظَ قَالَ " الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ " .

(6887) हज़रत बराअ (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी अकरम(ﷺ) जब अपने बिस्तर पर जाते तो दुआ करते, 'ऐ अल्लाह! तेरे ही नाम पर ज़िन्दा हूँ और तेरे ही नाम पर मैं मरता हूँ और जब बेदार (जगते) होते तो फ़र्माते 'हम्द व शुक्र उस अल्लाह के लिए, जिसने मौत तारी करने के बाद हमें ज़िन्दा किया और आख़िरकार उसके पास उठना है।'

फ़ायदा : ज़िन्दगी, काम काज और अ़मल से ताबीर है और बेदारी में इंसान ज़िन्दगी के कारोबार में मस़रूफ़ (बीज़ी) होता है और मौत, मोहलते अ़मल को ख़त्म हो जाने का नाम है और नींद में इंसान कारोबारे ह़यात से फ़ारिग़ हो जाता है, इसलिए इस दुआ में नींद को मरने से बेदारी को ज़िन्दा होने से ताबीर किया गया है, और इस त़रह़ रोज़मर्रा के सोने जागने को मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा होने की याद देहानी और उसकी तैयारी की फ़िक्र का ज़रिया बनाया गया है और इस ह़क़ीक़त को दुआ की सूरत में ज़हन नशीन कराया गया है कि मौत व ज़िन्दगी का मालिक अल्लाह है, मैं उसकी मशिय्यत से ज़िन्दा हूँ और वह जब चाहेगा मेरी ज़िन्दगी का चराग़ बुझा देगा, इसलिए इंसान को अपनी ह़याते मुस्तआर के शब व रोज़ अल्लाह की हिदायत व तालीमात के मुताबिक़ गुज़ारने चाहिए और उसके अह़काम व फ़रामीन को नज़र अंदाज़ करने या उनकी मुख़ालिफ़त करने से रुकना चाहिए।

حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ مُكْرَمٍ الْعَمِّيُّ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ قَالاَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خَالِدٍ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الْحَارِثِ، يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ أَمَرَ رَجُلاً إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ قَالَ " اللَّهُمَّ خَلَقْتَ نَفْسِي وَأَنْتَ تَوَفَّاهَا لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا إِنْ أَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا وَإِنْ أَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ " . فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ أَسَمِعْتَ هَذَا مِنْ عُمَرَ فَقَالَ مِنْ خَيْرٍ مِنْ عُمَرَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . قَالَ ابْنُ نَافِعٍ فِي رِوَايَتِهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ . وَلَمْ يَذْكُرْ سَمِعْتُ .

(6888) अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस (रह़.) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के बारे में बयान करते हैं कि उन्होंने एक आदमी को कहा, जब वह अपने बिस्तर पर जाए तो यूँ कहे, ऐ मेरे अल्लाह! तूने ही मुझे पैदा किया है और तू ही जब चाहेगा, मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर लेगा, मेरा मरना और जीना तेरे ही इख़्तियार में है, अगर तूने मेरे नफ़्स को (मुझे) ज़िन्दा रखे तो (हर गुनाह व बला से और हर फित्ना फ़साद से) उसकी हिफ़ाज़त फ़र्मा और अगर तू उसको मौत दे दे तो उसे माफ़ फ़र्मा और उसे (मेरे नफ़्स को) बख़्श दे, ऐ मेरे अल्लाह! मैं तुझसे माफ़ी और आ़फ़ियत का सवाल करता हूँ, यानी तू मेरे लिए माफ़ी का और दुनिया व आख़िरत में आ़फ़ियत का फ़ैसला फ़र्मा।'' तो उस आदमी ने उनसे पूछा, 'क्या आपने यह दुआ अपने वालिद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से सुनी है? उन्होंने जवाब दिया, उस हस्ती से जो उ़मर (रज़ि.) से बेहतर हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी है।

फ़ायदा : यह दुआ भी अ़ब्दियत के जज़्बात से भरपूर है और अल्लाह के हुज़ूर में अ़ब्दियत व न्याज़मन्दी और इज़्हारे आजिज़ी व बेबसी है, सबसे ज़्यादा उसकी रहमत को आवाज़ देती है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، قَالَ كَانَ أَبُو صَالِحٍ يَأْمُرُنَا إِذَا أَرَادَ أَحَدُنَا أَنْ يَنَامَ أَنْ يَضْطَجِعَ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ ثُمَّ يَقُولُ " اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ وَرَبَّ الأَرْضِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَىْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ وَالْفُرْقَانِ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَىْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ اللَّهُمَّ أَنْتَ الأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَىْءٌ وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَىْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَىْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَىْءٌ اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ " . وَكَانَ يَرْوِي ذَلِكَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم .

(6889) हज़रत सुहैल (रह.) बयान करते हैं कि अबू सालेह (रह.) हमें यह तल्क़ीन करते कि जब हममें से कोई सोना चाहे तो वह अपनी दाहिनी करवट पर लेटे, फिर यूँ दुआ करे, 'ऐ मेरे अल्लाह! आसमानों का मालिक, ज़मीन के मालिक और अर्शे अ़ज़ीम के मालिक, हमारे और हर चीज़ के मालिक, दाने और गुठली को फाड़ने वाले, ऐ तौरात इंजील और फ़ुर्क़ान (क़ुरआन) को नाज़िल करने वाले, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, हर उस चीज़ के शर्र (बुराई) से जिसकी पेशानी तेरे क़ाबू में है, यानी हर मख़्लूक़ की बुराई से। ऐ अल्लाह! तू ही सबसे पहला (अव्वल) है, कोई चीज़ तुझसे पहले नहीं है तू ही सबके बाद बाक़ी रहने वाला (आख़िर) है, कोई चीज़ तेरे बाद नहीं है, तू ज़ाहिर है, तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं है, मेरा क़र्ज़ अदा कर दे (मुझे तमाम हुक़ूक़ और ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने की तौफ़ीक़ दे) और मुझे फ़क़ीरी और मोहताजी से मुस्तग़्नी (बेन्याज़) कर दे। हज़रत सुहैल यह हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) के वास्ता से नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते थे।

फ़ायदा : इस हदीस में भी सोने के लिए दाहिनी करवट पर लेटने की रिवायत की गई है और आपका अपना मअमूल भी यही था, क्योंकि इस करवट पर लेटने की सूरत में दिल जो बाएँ पहलू में है, लटकता रहता है और लेटते वक़्त ज़िक्रो दुआ और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह रखने के लिए यही सूरत ज़्यादा मुनासिब है और बक़ौल अल्लामा इब्ने जौज़ी (रह.), अतिब्बा (डॉक्टरों) के नज़दीक बदन के

लिए यही मुनासिब है, क्योंकि दाएँ पहलू पर लेटने से खाना नीचे चला जाता है और फिर बाद में बाएँ पहलू पर लेटने से वह हज़म हो जाता है और यह दुआ उन लोगों के लिए ज़्यादा मुनासिबे ह़ाल है, जो मक़रूज़ हैं और मआशी परेशानियों में मुब्तला हैं, बन्दा यह दुआ करे और अपने रब्बे करीम से यह उम्मीद रखे कि वह रिज़्क़ की कुशादगी (बढ़ोतरी) की सूरत पैदा फ़र्मा देगा।

(6890) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) हमें तल्क़ीन करते थे कि जब हम अपने बिस्तरों पर लेटें तो यह कलिमात कहें, आगे ऊपर वाली दुआ, इस फ़र्क़ के साथ है, आपने फ़र्माया, 'हर जानदार की बुराई और शर्र से जिसकी पेशानी तेरे क़ाबू में है।'

अबूदाऊद : 5051; तिर्मिज़ी : 3400.

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ بَيَانٍ الْوَاسِطِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي الطَّحَّانَ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَأْمُرُنَا إِذَا أَخَذْنَا مَضْجَعَنَا أَنْ نَقُولَ . بِمِثْلِ حَدِيثِ جَرِيرٍ وَقَالَ " مِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا " .

(6891) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) की ख़िदमत में ख़ादिम त़लब करने के लिए ह़ाज़िर हुईं तो आप(ﷺ) ने फ़र्माया, 'यह कहो, ऐ सातों आसमानों के मालिक।' आगे ह़ज़रत सुहैल (रह़.) वाली दुआ है।

तख़रीज 6891 : तिर्मिज़ी : 68; 3481; इब्ने माजा : 3831.

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي، شَيْبَةَ وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُبَيْدَةَ، حَدَّثَنَا أَبِي كِلاَهُمَا، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي، صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ أَتَتْ فَاطِمَةُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَقَالَ لَهَا " قُولِي اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ " . بِمِثْلِ حَدِيثِ سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ .

(6892) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब तुममें से कोई शख़्स अपने बिस्तर पर जगह पकड़ना चाहे तो अपने तहबन्द के अंदुरूनी हिस्से को पकड़कर, उससे अपने बिस्तर को

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى

الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا أَوَى أَحَدُكُمْ إِلَى فِرَاشِهِ فَلْيَأْخُذْ دَاخِلَةَ إِزَارِهِ فَلْيَنْفُضْ بِهَا فِرَاشَهُ وَلْيُسَمِّ اللَّهَ فَإِنَّهُ لاَ يَعْلَمُ مَا خَلَفَهُ بَعْدَهُ عَلَى فِرَاشِهِ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَضْطَجِعَ فَلْيَضْطَجِعْ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ وَلْيَقُلْ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّي بِكَ وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَاغْفِرْ لَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ " .

झाड़ ले और अल्लाह का नाम ले, क्योंकि उसे पता नहीं है, उसके बाद उसके बिस्तर पर कौन उसका जानशीन बना है और जब लेटने का इरादा करे तो अपने दाएँ पहलू पर लेटे और यह दुआ पढ़े, ऐ अल्लाह! तू पाक और मुनज़्ज़ा है, ऐ मेरे रब! तेरी तौफ़ीक़ से, मैंने अपना पहलू रखा और तेरी तौफ़ीक़ से इसे उठाऊँगा, अगर तू मेरे नफ़्स को रोक ले, मेरी रूह क़ब्ज़ कर ले तो इसे माफ़ करना और अगर तू इसे छोड़ दे (क़ब्ज़ न करे) तो इसकी हिफ़ाज़त फ़र्माना, जिस वसीला व क़ुदरत से अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त फ़र्माता है।''

तख़रीज 6892 : सहीह बुख़ारी : 13; 6320; अबूदाऊद : 5050.

फ़ायदा :इस हदीस से मालूम हुआ कि रात को बिस्तर पर जाने से पहले अपने बिस्तर को झाड़ लेना चाहिए, क्योंकि मुम्किन है, उसकी ग़ैर मौजूदगी में उस पर किसी मूज़ी (नुक़्सानदेह) जानवर ने बसेरा कर लिया हो, ज़ाहिर है यह उस सूरत में काट न ले, फिर दुआ पढ़कर सोए ताकि अल्लाह की पनाह में आ जाए।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " ثُمَّ لْيَقُلْ بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي فَإِنْ أَحْيَيْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا " .

(6893) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'फिर यूँ कहे, ''ऐ मेरे परवरदिगार! तेरे नाम के साथ, तुझे याद करके, मैं ने अपना पहलू रखा, सो अगर तू मेरे नफ़्स को ज़िन्दा रखे तो उस पर रहम फ़र्माना।''

तख़रीज 6893 : इसकी तख़रीज हदीस नं. 6830 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ قَالَ " الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَآوَانَا فَكَمْ مِمَّنْ لاَ كَافِيَ لَهُ وَلاَ مُئْوِيَ " .

(6894) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) जब अपने बिस्तर पर क़रार पकड़ते, यह दुआ पढ़ते, ''हम्द व शुक्र का हक़दार अल्लाह है, जिसने हमें खिलाया और पिलाया और हमारी ज़रूरतों को पूरा किया और हमें ठिकाना दिया, सो कितने ही बन्दे हैं, जिनका न कोई ज़रूरियात पूरी करने वाला है और न उन्हें ठिकाना देने वाला है।''

तख़रीज 6894 : अबूदाऊद : 5053; तिर्मिज़ी : 3396.

फ़ायदा : हम जो खाते पीते हैं, जो ठिकाने हमें मयस्सर हैं और हमारी ज़रूरियात पूरी हो रही हैं, यानी जो कुछ हमें मिल रहा है, वह सब हमारे रब्बे मेहरबान का अ़तिया है इसलिए वही हम्दो शुक्र का हक़दार है, इस तरह उस ऐतिराफ़े हक़ीक़त और दुआ के ज़रिये हम अल्लाह की उन तमाम नेअ़मतों का शुक्र अदा कर सकते हैं, जिनसे हम फ़ायदा उठा रहे हैं।

(19) بَاب: التَّعَوُّذِ مِنَ شَرِّ مَا عَمِلَ وَمِنَ شَرِّ مَا لَمْ يَعْمَلْ

बाब 19 : जो अ़मल (काम) किये उनके शर्र से पनाह तलब करना और जो अ़मल नहीं किये उनके शर्र से भी पनाह चाहना।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - قَالاَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ هِلاَلٍ، عَنْ فَرْوَةَ بْنِ نَوْفَلٍ الأَشْجَعِيِّ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَمَّا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَدْعُو بِهِ اللَّهَ قَالَتْ

(6895) फ़र्वा बिन नौफ़िल अश्जई (रह.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सवाल किया, रसूलुल्लाह(ﷺ) अल्लाह से कौनसी दुआ करते थे? उन्होंने जवाब दिया, आप यह दुआ करते थे, 'ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उन आमाल के शर्र (बुराई) से जो मैंने किये हैं और उन आमाल की बुराई

كَانَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ " .

से जो मैंने नहीं किये हैं।

तख़रीज 6895 : अबूदाऊद : 1550; नसाई : 1306; वफ़िल्इस्तिआज़ा : 5540; हदीस नं. 5541; इब्ने माजा : 3839.

फ़ायदा : किसी बुरे अ़मल का सरज़द हो जाना और इसी तरह किसी अच्छे और नेक अ़मल का रह जाना, दोनों ऐसी चीज़ें हैं जिनकी बुराई से हमें पनाह माँगनी चाहिए, लेकिन आप चूँकि अल्लाह की सबसे ज़्यादा मअ़रिफ़त रखते थे, इसलिए सबसे ज़्यादा ख़शिय्यते इलाही से मुत्तसिफ़ थे, इसलिए आप अच्छे से अच्छे अ़मल करने और बुरे और गंदे आमाल से दामन बचाने के बावजूद यह समझते थे कि शायद कोई नेक अ़मल जो मुझे करना चाहिए था, मैं वह न कर सका हूँ और जो अ़मल मैंने किये हैं, शायद वह उस हद तक न पहुँच सके हों, जैसे वह करने चाहिए थे, नीज़ आप हमारे लिए नमून-ए-अमल थे, अगर आप यह दुआ न फ़र्माते तो हमें इनका कैसे पता चलता और हमें माँगने का उस्लूब और तरीक़ा कैसे आता, नीज़ हममें अच्छे अ़मल करने और बुरे आमाल से बचने से अ़जब व गुरूर और नेकी व पाकदामनी का पिंदार (घमंड/अभिमान) पैदा हो सकता है, जो इंतिहाई क़बीह जुर्म है, इसलिए हमें यह दुआ करनी चाहिए।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ هِلاَلٍ، عَنْ فَرْوَةَ بْنِ نَوْفَلٍ، قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ دُعَاءٍ، كَانَ يَدْعُو بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ كَانَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَشَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ " .

(6896) फ़र्वा बिन नौफ़िल अश्जई (रह.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से ऐसी दुआ के बारे में पूछा, जो आप किया करते थे तो उन्होंने जवाब दिया, आप दुआ करते थे 'ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, उन आमाल (कामों) के शर्र से जो मैंने किये हैं और उन आमाल की बुराई से जो मैंने नहीं किये हैं।''

तख़रीज 6896 : इसकी तख़रीज हदीस नं. 6833 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ عَمْرِو بْنِ جَبَلَةَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ

(6897) इमाम साहब यही रिवायत अपने तीन उस्तादों की दो सनदों से बयान करते हैं और मुहम्मद बिन जअ़फ़र की रिवायत में

جَعْفَرٍ - كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ حُصَيْنٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرٍ " وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ " .

'शर्र मा लम अअ़्मल' से पहले मिन है। (जबकि ऊपर की रिवायत में मिन नहीं है।)

तख़रीज 6897 : इसकी तख़रीज हदीस नं. 6833 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ هَاشِمٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ عَبْدَةَ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ فَرْوَةَ بْنِ نَوْفَلٍ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقُولُ فِي دُعَائِهِ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَشَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ " .

(6898) ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) अपनी दुआ में यह कलिमात कहते थे, 'ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, उस अ़मल के शर्र से जो मैंने किया है और उस अ़मल की बुराई से जो मैंने नहीं किया है।'

तख़रीज 6898 : इसकी तख़रीज हदीस नं. 6833 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ، حَدَّثَنِي ابْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِعِزَّتِكَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَنْ تُضِلَّنِي أَنْتَ الْحَىُّ الَّذِي لاَ يَمُوتُ وَالْجِنُّ وَالإِنْسُ يَمُوتُونَ " .

(6899) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) दुआ किया करते थे, 'ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको तेरे सुपुर्द किया और तुझ पर ईमान लाया और तुझ पर ही ऐ़तिमाद किया और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ किया (गुनाहों से इत़ाअ़त की त़रफ़ लौटा) और तेरी ही तौफ़ीक़ व एआनत से (मुख़ालेफ़ीन से) झगड़ा, ऐ अल्लाह! मैं तेरी ही इ़ज़्ज़त व क़ुदरत की पनाह में आया, उससे कि तू मुझे राह से भटका दे, तेरे सिवा कोई इलाह नहीं है तू ही ऐसा ज़िन्दा है, जिस पर मौत नहीं है और सब जिन्न व इंसान मर जाएँगे।'

तख़रीज 6899 : स़ह़ीह़ बुख़ारी : 6550

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ،

(6900) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) की आ़दते

أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ سُهَيْلِ، بْنِ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا كَانَ فِي سَفَرٍ وَأَسْحَرَ يَقُولُ " سَمَّعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللَّهِ وَحُسْنِ بَلاَئِهِ عَلَيْنَا رَبَّنَا صَاحِبْنَا وَأَفْضِلْ عَلَيْنَا عَائِذًا بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ " .

मुबारका थी, जब आप सफ़र में होते और सेहरी का वक़्त हो जाता तो फ़र्माते, 'सुनने वाले ने सुन लिया अल्लाह की ह़म्दो सना को और उसकी हम पर बेहतरीन इनायत और इन्आम को, ऐ हमारे रब! हमारा साथी और मुहाफ़िज़ बन और हम पर ज़्यादा से ज़्यादा इन्आम फ़र्मा और हम आग से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

तख़रीज 6900 : अबूदाऊद : 5086.

मुफ़रदातुल ह़दीस : (1) **अस्ह़र** : सेह़री के वक़्त बेदार हुए, या सेह़री का वक़्त हो गया। (2) **सम्मअ़ सामिउ़न** : सुनने वाला यह कलिमात दूसरों को सुनाए, **समिअ़ सामिउ़न** : सुनने वाला सुन ले, हमारे इन कलिमात का गवाह बन जाए, **बलाअ** : अ़तिया एह़सान, आज़माइश व इम्तिह़ान, **अफ़्ज़िल अ़लैना** : फ़ज़्लो करम से हमें नवाज़

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ كَانَ يَدْعُو بِهَذَا الدُّعَاءِ " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي خَطِيئَتِي وَجَهْلِي وَإِسْرَافِي فِي أَمْرِي وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي جِدِّي وَهَزْلِي وَخَطَئِي وَعَمْدِي وَكُلُّ ذَلِكَ عِنْدِي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ " .

(6901) ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी अकरम(ﷺ) यह दुआ किया करते थे ऐ अल्लाह! मुझे मेरी लग़्ज़िशें (ख़ताएँ) माफ़ कर दे और मेरी जिहालत और मेरा मेरे मामलात में ह़द से बढ़ना और जिसको तू मुझसे ज़्यादा जानता है, उन सबको बख़्श दे, ऐ मेरे अल्लाह! जो काम मैंने संजीदगी से किया हो और जो मैंने दिल्लगी और मज़ाक़ में किया है और जो चूक से और क़स्द व इरादे से किया है, उन सबको माफ़ कर दे, यह सारे काम मैं कर चुका हूँ। ऐ मेरे अल्लाह! मेरी तक़्दीम व ताख़ीर या मेरे अगले, पिछले क़ुसूर और जो मैंने पोशीदा (छुपे) त़ौर पर किये और जो मैंने (ज़ाहिर) खुले त़ौर पर किये और जिनको तू मुझसे ज़्यादा जानता है, मुझे सब

बख़्श दे तू ही आगे बढ़ाने वाला है, (नेकी इताअत या दरजात व मरातिब की तरफ़) और तू ही (तौफ़ीक़ से महरूम करके) पीछे छोड़ने वाला है) और तू हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है। सहीह बुख़ारी : 6398, 6399.

फ़ायदा : आपने इस दुआ में उन तमाम मामलात को जमा कर दिया है, जो एक आम इंसान की ज़िन्दगी में पाये जाते हैं, और एक बशर व इंसान की हैसियत से आपसे सरज़द हो सकते हैं, लेकिन आपने अपने बुलंद व बाला मक़ाम की हैसियत से यूँ बयान किया है, गोया कि यह उमूर आपसे सरज़द हो चुके हैं , ताकि हम अल्लाह के हुज़ूर में यह दुआ करके, माफ़ी के ख़्वास्तगार (तलबगार) हों।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ الصَّبَّاحِ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ .

(6902) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

तख़रीज 6902 : इसकी तख़रीज हदीस 6839 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ دِينَارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو قَطَنٍ، عَمْرُو بْنُ الْهَيْثَمِ الْقُطَعِيُّ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُونِ عَنْ قُدَامَةَ بْنِ مُوسَى، عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِينِيَ الَّذِي هُوَ عِصْمَةُ أَمْرِي وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَاىَ الَّتِي فِيهَا مَعَاشِي وَأَصْلِحْ لِي آخِرَتِي الَّتِي فِيهَا مَعَادِي وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ وَاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِي مِنْ ك

(6903) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) यह दुआ फ़र्माया करते थे, 'ऐ अल्लाह! मेरी दीनी हालत सही कर दे, जिस पर मेरी ख़ैरियत और मेरे तमाम उमूर (मामलात) की सलामती का मदार है और मेरी दुनिया भी दुरुस्त कर दे, जिसमें मुझे अपनी ज़िन्दगी गुज़ारना है और मेरी आख़िरत दुरुस्त कर दे, जहाँ मुझे लौटकर जाना है और मेरी ज़िन्दगी को मेरे लिए हर ख़ैर और भलाई में इज़ाफ़ा और ज़्यादती का ज़रिया बना दे और मौत को मेरे लिए हर शर्र व मुसीबत से राहत और हिफ़ाज़त का वसीला बना दे।'

फ़ायदा : यह एक इंतिहाई जामेअ दुआ है, दरअसल दीन ही वह चीज़ है कि अगर वह सही व सलामत है तो इंसान अल्लाह के ग़ज़ब व नाराज़गी से महफ़ूज़ होकर उसके लुत्फ़ो करम का मुस्तहिक़ क़रार पाता

है और उसके जान व माल और इज़्ज़तो आबरू को क़ानूनी तौर पर हिफ़ाज़त करता है और दीन की दुरुस्ती का मतलब यह है कि इंसान को ईमान व यक़ीन हासिल हो, उसके अक़ीदे नज़रियात और अफ़्कार व जज़्बात सही हों, उसके अख़्लाक़ और आमाल और सीरत व किरदार सही हों और दुनिया की दुरुस्तगी का मतलब यह है कि उसके रिज़्क़ और मआश की ज़रूरतें हलाल और जाइज़ रास्तों से पूरी हों, ताकि उसके दीन के अंदर ख़लल और ख़राबी न आए और जब इंसान का दीन और दुनिया दोनों सही होंगे तो लाज़मी नतीजा आख़िरत जो अस़ल ठिकाना और हमेशा की ज़िन्दगी है, की स़लाह और फ़लाह है, लेकिन दीनो दुनिया की अच्छी हालत के बावजूद इंसान को आख़िरत के बारे में मुत्मइन और बेफ़िक्र नहीं होना चाहिए इसलिए उसकी स़लाह व फ़लाह का भी ख़्वास्तगार होना चाहिए और हर आदमी को इस दुनिया में अपनी ज़िन्दगी का वक़्फ़ा पूरा करके मरना है और अल्लाह की दी हुई उम्र से आदमी नेक कमाई भी कर सकता है और बुराई व भी भी कमा सकता है, यानी वह उसकी सआदत व ख़ुशबख़्ती में इज़ाफ़ा और तरक़्क़ी का वसीला भी बन सकती है और शक़ावत व बदबख़्ती में इज़ाफ़ा और ज़्यादती का बाइस बनी और सब कुछ अल्लाह के हाथ में है, इसलिए दीन और दुनिया और आख़िरत की स़लाह व फ़लाह के साथ अल्लाह तआला से यह दुआ भी करते रहना चाहिए कि ऐ अल्लाह! मेरी ज़िन्दगी को मेरे लिए ख़ैरो सआदत में इज़ाफ़ा और तरक़्क़ी का सबब बना और मेरी मौत को शुरूर और फ़ित्ने से राहत और आराम का ज़रिया बना, इस तरह इस दुआ में दीनो दुनिया और आख़िरत की हर भलाई का सवाल है और इनके हर शर्र और बुराई से हिफ़ाज़त और बचाव की दरख़्वास्त है और यह दुआ मुख़्तस़र (शॉर्ट और छोटी) है लेकिन दिल को छूने वाली है।

(6904) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (बिन मसऊ़द) (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आप यह दुआ करते थे, 'ऐ अल्लाह! मैं तुझ ही से हिदायत और तक़्वा, पाकदामनी और मख़्लूक़ से बेनियाज़ी माँगता हूँ।'

तख़रीज 6904 : तिर्मिज़ी : 73, हदीस : 3489; इब्ने माजा, ह : 3832.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْهُدَى وَالتُّقَى وَالْعَفَافَ وَالْغِنَى " .

फ़ायदा : यह भी इंतिहाई जामेअ दुआ है, इसमें हिदायत यानी राहे हक़ पर चलना और उस पर इस्तिक़ामत (जम) जाना, तक़्वा व परहेज़गारी यानी मआस़ी और मुंकरात (ग़लत कामों) और सय्यिआत से बचाव और हिफ़ाज़त, इफ़्फ़त व पाकदामनी, यानी नामुनासिब चीज़ों से बचना और

लोगों से बेनियाज़ी व इस्तिग़्ना का सवाल किया गया है और उनके बग़ैर इंसान इत्मिनान व सुकून की ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي، إِسْحَاقَ بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّ ابْنَ الْمُثَنَّى، قَالَ فِي رِوَايَتِهِ " وَالْعِفَّةَ " .

(6905) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं, लेकिन इब्ने मुसन्ना की रिवायत में अफ़ाफ़ की जगह इफ्फ़त का लफ़्ज़ है, यानी नाजाइज़ और नामुनासिब चीज़ों से दूर रहना।

तिर्मिज़ी : 73, 3489; इब्ने माजा, ह : 3832.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ نُمَيْرٍ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ، وَعَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ لاَ أَقُولُ لَكُمْ إِلاَّ كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ كَانَ يَقُولُ " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَالْهَرَمِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اللَّهُمَّ آتِ نَفْسِي تَقْوَاهَا وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلاَهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لاَ يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لاَ يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لاَ تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لاَ يُسْتَجَابُ لَهَا " .

(6906) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) बयान करते हैं, मैं तुम्हें उस तरह बयान करता हूँ, जिस तरह रसूलुल्लाह(ﷺ) फ़र्माते थे, आप(ﷺ) दुआ किया करते थे, 'ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ, कम हिम्मती से। ऐ मेरे अल्लाह! मेरे नफ़्स को तक़्वा अता फ़र्मा और उसको पाक साफ़ कर दे तू ही इसका सबसे बेहतर तज़्किया करने वाला है तू ही इसका सरपरस्त और कारसाज़ है। ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, उस इल्म से जो नफ़ा देने वाला न हो और ऐसे दिल से जिसमें बेबसी और फ़रोतनी न हो और ऐसे नफ़्स से जिसको सैरी न हो और ऐसी दुआ से जो क़बूल न हो।'

तख़रीज 6906 : नसाई : 5473.

फ़ायदा : इल्म ग़ैर नाफ़ेअ, क़ल्ब ग़ैर खाशेअ और हवसनाक नफ़्स जिसकी हवस व हिर्स ख़त्म ही न हो और वह दुआ जो मक़बूल न हो, उससे अल्लाह की पनाह की दरख़्वास्त करने का मक़्सद यह है कि

ऐ अल्लाह! नफ़ाबख़्श इल्म अ़ता कर, नफ़्स को हवसनाकी से पाक कर के क़नाअ़त बख़्श, दिल को ख़ुशूअ़ से मुत्तसिफ़ फ़र्मा और दुआ को क़बूल फ़र्मा।

(6907) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बयान करते हैं कि जब शाम होती तो रसूलुल्लाह(ﷺ) यह दुआ करते, 'शाम इस हाल में हो रही है कि हम और सारी कायनात अल्लाह ही के हैं और सारी ह़म्दो सताइश अल्लाह ही के लिए है, उसके सिवा कोई लायक़े बन्दगी नहीं है, उसका कोई शरीक साझी नहीं है।'

हसन (रह.) कहते हैं, मुझे ज़ुबैद (रह.) ने बताया, मैंने इब्राहीम (रह.) से इस दुआ में यह अल्फ़ाज़ भी याद किये हैं, 'इक़्तिदार का वही मालिक है, वही ह़म्दो सताइश का ह़क़दार है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ मेरे अल्लाह! मैं इस आने वाली रात की ख़ैर का तुझसे सवाल करता हूँ और मैं इस आने वाली रात के शर्र (बुराई) और इसके बाद के शर्र से तेरी पनाह में आता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ, सुस्ती और काहिली से और बुढ़ापे के बुरे असरात से। ऐ अल्लाह! मैं पनाह माँगता हूँ, आग के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से।'

तख़रीजः अबूदाऊद : 5071; तिर्मिज़ी : 3390.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سُوَيْدٍ النَّخَعِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَمْسَى قَالَ " أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ " . قَالَ الْحَسَنُ فَحَدَّثَنِي الزُّبَيْدُ أَنَّهُ حَفِظَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ فِي هَذَا " لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوءِ الْكِبَرِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ " .

(6908) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बयान करते हैं कि जब शाम हो जाती, नबी अकरम(ﷺ) दुआ करते, 'शाम

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، بْنِ سُوَيْدٍ

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَانَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَمْسَى قَالَ " أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ " . قَالَ أُرَاهُ قَالَ فِيهِنَّ " لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوءِ الْكِبَرِ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ " . وَإِذَا أَصْبَحَ قَالَ ذَلِكَ أَيْضًا " أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ " .

इस हाल में हो रही है कि हम और सारी कायनात ही अल्लाह की है और सारी हम्दो सताइश अल्लाह ही के लिए है, उसके सिवा कोई इलाह नहीं है, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं है।' रावी कहते हैं, मेरे ख़्याल में उनमें यह कलिमात भी हैं, 'राज और मुल्क उसी का है, वह लायक़े हम्दो सना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ मेरे रब! मैं तुझसे सवाल करता हूँ, इस रात में जो कुछ है, इसकी ख़ैरो भलाई का और इस रात के बाद के हालात की ख़ैर का और मैं तेरी पनाह में आता हूँ, इस रात में जो कुछ होने वाला है, उसके शर्र से और इसके बाद के हालात के शर्र से, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, सुस्ती और काहिली से और किब्रे सिन्नी (बड़ी उम्र) के बुरे असरात से, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, आग के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से।' और जब सुबह्र हो जाती तो आप एक लफ़्ज़ की तब्दीली से यूँ दुआ करते, 'हमारी सुबह्र इस हाल में हो रही है कि हम और सारी कायनात अल्लाह ही के हैं।'

इसकी तख़रीज हदीस नं. 6845 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ، عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَمْسَى

(6909) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि जब शाम होती तो रसूलुल्लाह(ﷺ) अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर में अ़र्ज़ करते, 'यह शाम इस हाल में हो रही है कि हम और सारी कायनात अल्लाह ही के हैं और हम्दो शुक्र अल्लाह ही के लिए है, उस

قَالَ " أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرِ مَا فِيهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَسُوءِ الْكِبَرِ وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ " . قَالَ الْحَسَنُ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ وَزَادَنِي فِيهِ زُبَيْدٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سُوَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَفَعَهُ أَنَّهُ قَالَ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ " .

एक के सिवा कोई मअ़बूद नहीं है, उसका कोई शरीक साझी नहीं है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ इस रात में जो कुछ होने वाला, उसकी ख़ैर का और इस रात की ख़ैर का और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, इस रात में जो कुछ होने वाला है, उसके शर्र से, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ, काहिली से और इंतिहाई बुढ़ापे से और बड़ी उम्र के बुरे असरात से और दुनिया के हर फ़ित्ने से और क़ब्र के अ़ज़ाब से।' हसन बिन उ़बैदुल्लाह बयान करते हैं, ज़ुबैद ने इब्राहीम से इस रिवायत में यह इज़ाफ़ा मुझे सुनाया है कि आपने फ़र्माया, 'अल्लाह के सिवा जो यक्ता है, कोई बन्दगी के लायक़ नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, वही इक़्तिदार व बादशाही का मालिक है, वह हम्दो सताइश का सज़ावार है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

इसकी तखरीज हदीस नं. 6844 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : इस दुआ में अपनी ज़ात और सारी कायनात के ऊपर अल्लाह की हाकिमियत और मालिकियत का इक़रार और ऐतिराफ़ है और उसकी हम्दो शुक्र के साथ, उसकी वहदानियत और यक्ताई का ऐलान है, फिर रात या दिन में जो ख़ैर और बरकतें हैं, उनकी दरख़्वास्त है और रात या दिन में जो शर्र व फ़साद हैं, उनसे पनाह तलब की गई है और जो कमज़ोरियाँ ख़ैरो सआदत से महरूमी का बाइस बनती हैं, उनसे पनाह तलब की गई है और आख़िर में दुनिया के हर फ़ित्ने और क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह माँगी गई है, इस तरह इसमें अपनी बन्दगी और न्याज़मन्दी का भरपूर इज़्हार किया गया है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(6910) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) यह दुआ किया करते थे, 'अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं, वह यक्ता है, उसने अपने लश्कर को

كَانَ يَقُولُ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ أَعَزَّ جُنْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَغَلَبَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ فَلاَ شَىْءَ بَعْدَهُ " .

क़ुव्वत बख़्शी और अकेला ही तमाम गिरोहों पर ग़ालिब आ गया और अपने बन्दे की मदद की, उसके सिवा कुछ नहीं।

तख़रीज 6910 : सहीह बुख़ारी : 1414.

फ़ायदा : इस दुआ में जंगे अहज़ाब की तरफ़ इशारा है और ला शैअ बअ्दहू का मआनी है, उसके सिवा हर चीज़ क़ाबिले फ़ना है, किसी का वुजूद व बक़ा ज़ाती नहीं है, सिर्फ़ अल्लाह का वुजूद अपना है, जो फ़ना होने वाला नहीं है, बाक़ी सब मख़्लूक़ को वुजूद उसकी तरफ़ से मिला है और उसके बाक़ी रखने से ही वह सब मख़्लूक़ बाक़ी है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ سَمِعْتُ عَاصِمَ بْنَ كُلَيْبٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قُلِ اللَّهُمَّ اهْدِنِي وَسَدِّدْنِي وَاذْكُرْ بِالْهُدَى هِدَايَتَكَ الطَّرِيقَ وَالسَّدَادِ سَدَادَ السَّهْمِ "

(6911) हज़रत अली (रज़ि.) बयान करते हैं, मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'यह दुआ करो, ऐ अल्लाह! मुझे हिदायत दे और सीधा रख और हिदायत की दुआ के वक़्त, रास्ता की हिदायत का इस्तिह्ज़ार करना और सदाद की दुआ के वक़्त तीर के सीधे होने का ख़्याल करना।'

तख़रीज: अबूदाऊद : 4225; नसाई : 5227.

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि दुआइया कलिमात के वक़्त उनके मआनी और मतालिब और मक़ासिद की तरफ़ तवज्जह देनी चाहिए सिर्फ़ तोते की तरह अल्फ़ाज़ ही मुँह से न निकाल देने चाहिए।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ، - يَعْنِي ابْنَ إِدْرِيسَ - أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْهُدَى وَالسَّدَادَ " . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

(6912) इमाम साहब एक दूसरे उस्ताद से बयान करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'यह दुआ करो, ऐ अल्लाह! मैं तुझसे हिदायत और दुरुस्तगी की दरख़्वास्त करता हूँ।' फिर आगे ऊपर वाला टुकड़ा बयान किया।

इसकी तख़रीज हदीस 6848 में गुज़र चुकी है।

बाब 20 : दिन के शुरूआत में और सोते वक़्त तस्बीह़ बयान करना

(20)باب: التَّسْبِيحِ أَوَّلَ النَّهَارِ وَعِنْدَ النَّوْمِ

(6913) ह़ज़रत जुवेरिया (रज़ि.) बयान करती हैं कि नबी अकरम(ﷺ) सुबह़ की नमाज़ पढ़ने के बाद जल्द ही उनके पास चले गए और वह अभी अपनी नमाज़गाह मे थीं, फिर दिन चढ़ने के बाद वापिस लौटे और वह अभी वहीं बैठी थीं तो आपने फ़र्माया, 'मैं तुम्हें जिस ह़ालत पर छोड़कर गया था, अभी तक उस पर हो?' ह़ज़रत जुवेरिया (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, जी हाँ! नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैंने तुम्हारे पास जाने के बाद चार कलिमात तीन बार कहे हैं, अगर उनका वज़न उन कलिमात के साथ करें, जो अब तक तूने कहे हैं तो उनका वज़न ज़्यादा होगा, अल्लाह की ह़म्द के साथ तस्बीह़ है, उसकी मख़्लूक़ की तादाद, उसकी रज़ा व ख़ुशनुदी उसके अ़र्श के वज़न और उसके कलिमात की स्याही के बराबर।'

तख़रीज 6913 : सुनन तिर्मिज़ी : 104, ह़दीस 3555; नसाई : 3808.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي عُمَرَ - قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، مَوْلَى آلِ طَلْحَةَ عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ جُوَيْرِيَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم خَرَجَ مِنْ عِنْدِهَا بُكْرَةً حِينَ صَلَّى الصُّبْحَ وَهِيَ فِي مَسْجِدِهَا ثُمَّ رَجَعَ بَعْدَ أَنْ أَضْحَى وَهِيَ جَالِسَةٌ فَقَالَ " مَا زِلْتِ عَلَى الْحَالِ الَّتِي فَارَقْتُكِ عَلَيْهَا " . قَالَتْ نَعَمْ . قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لَقَدْ قُلْتُ بَعْدَكِ أَرْبَعَ كَلِمَاتٍ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ لَوْ وُزِنَتْ بِمَا قُلْتِ مُنْذُ الْيَوْمِ لَوَزَنَتْهُنَّ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ " .

फ़ायदा : यह कलिमात इंतिहाई जामेअ़ हैं, जो ह़स्र व शुमार से बाहर हैं और इनका वज़न मुम्किन नहीं है तो मआ़नी हुआ, उसकी बेइन्तिहा और ला तादाद मर्तबा तश्बीह व तह़मीद बयान करता हूँ।

(6914) ह़ज़रत जुवेरिया (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) उनके पास से

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَإِسْحَاقُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ بِشْرٍ، عَنْ مِسْعَرٍ،

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي رِشْدِينَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ جُوَيْرِيَةَ، قَالَتْ مَرَّ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ صَلَّى صَلاَةَ الْغَدَاةِ أَوْ بَعْدَ مَا صَلَّى الْغَدَاةَ . فَذَكَرَ نَحْوَهُ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " سُبْحَانَ اللَّهِ عَدَدَ خَلْقِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ رِضَا نَفْسِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ زِنَةَ عَرْشِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ " .

गुज़रे, जबकि आप सुबह की नमाज़ पढ़ने के लिए निकले, या सुबह की नमाज़ पढ़ चुके, फिर ऊपर वाली बात कही और यह कलिमात फ़र्माए, 'अल्लाह की तस्बीह उसके मख़लूक़ की तादाद के बराबर, अल्लाह की तस्बीह उसकी रज़ामंदी के बक़द्र, अल्लाह की तस्बीह उसके अ़र्श के वज़न के बराबर, अल्लाह की तस्बीह उसके कलिमात की स्याही के बराबर।'

इसकी तख़रीज हदीस 6850 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى، حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، أَنَّ فَاطِمَةَ، اشْتَكَتْ مَا تَلْقَى مِنَ الرَّحَى فِي يَدِهَا وَأَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم سَبْىٌ فَانْطَلَقَتْ فَلَمْ تَجِدْهُ وَلَقِيَتْ عَائِشَةَ فَأَخْبَرَتْهَا فَلَمَّا جَاءَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَخْبَرَتْهُ عَائِشَةُ بِمَجِيءِ فَاطِمَةَ إِلَيْهَا فَجَاءَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِلَيْنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا فَذَهَبْنَا نَقُومُ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " عَلَى مَكَانِكُمَا " . فَقَعَدَ بَيْنَنَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمِهِ عَلَى صَدْرِي ثُمَّ قَالَ " أَلاَ أُعَلِّمُكُمَا خَيْرًا مِمَّا

(6915) हज़रत अ़ली (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को चक्की पीसने से जो हाथों की तक्लीफ़ बर्दाश्त करनी पड़ती थी, (हाथों में जो निशान पड़ गए) उसकी शिकायत की और नबी अकरम(ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए थे, चुनाँचे वह गईं, लेकिन आप मिल न सके, हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से मिलकर उन्हें अपने आमद का मक़्सद बताया तो जब नबी अकरम(ﷺ) तशरीफ़ लाए, हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने आपको आपके पास हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की आमद का तज़्किरा किया, चुनाँचे नबी अकरम(ﷺ), हज़रत अ़ली (रज़ि) के यहाँ गए, जबकि वह अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे, चुनाँचे वह उठने लगे तो आपने फ़र्माया, 'अपनी जगह पर रहो।' और आप हमारे बीच बैठ गए यहाँ तक कि मैंने अपने सीने पर आपके क़दमों की ठण्डक महसूस की, फिर आपने फ़र्माया, 'जो

سَأَلْتُمَا إِذَا أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا أَنْ تُكَبِّرَا اللَّهَ أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ وَتُسَبِّحَاهُ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَتَحْمَدَاهُ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ " .

तुम दोनो ने दरख़्वास्त की है, क्या मैं तुमको उससे बेहतर चीज़ न सिखाऊँ? जब तुम अपने बिस्तरों पर जाओ तो चौंतीस (34) बार अल्लाहु अकबर (33) बार (सुब्हानल्लाह) उसकी तस्बीह बयान करो और (33) बार (अल्हम्दु लिल्लाह) उसकी हम्द बयान करो, तो यह अमल तुम्हारे लिए ख़ादिम लेने से बेहतर है।'

तख़रीज 6915 : सहीह बुख़ारी : 3113; फ़ज़ाइले सहाबा, मनाक़िबे अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) : 3705; नफ़्क़ात : 5360; दअवात : 6318; अबूदाऊद : 5062.

फ़ायदा : इस हदीस से हाफ़िज़ इब्ने तैमिया (रह.) ने यह इस्तिम्बात किया है, सोते वक़्त इस वज़ीफ़े की पाबन्दी से थकान दूर होती है और बक़ौल हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) इस वज़ीफ़े की पाबन्दी काम काज की कसरत से इंसान ज़रर और नुक़्सान से महफ़ूज़ हो जाता है और मेहनत व मशक़्क़त से गिरानी पैदा नहीं होती और आख़िरत में काम आने वाले अमल ज़्यादा फ़ायदेमन्द हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِ مُعَاذٍ " أَخَذْتُمَا مَضْجَعَكُمَا مِنَ اللَّيْلِ".

(6916) यही रिवायत इमाम साहब तीन और उस्तादों से बयान करते हैं और मुआज़ की रिवायत में मज़ा जिअकुमा की जगह मज़् जअकुमा मिनल्लैलि (जब रात को अपने बिस्तर पर जाओ) है।

इसकी तख़रीज हदीस 6853 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَزِيدَ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، ح

(6917) यही रिवायत इमाम साहब और उस्तादों से बयान करते हैं, उसमें यह इज़ाफ़ा है कि हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, 'मैंने नबी अकरम(ﷺ) से सुनने के बाद यह अमल कभी नहीं छोड़ा, उनसे पूछा गया, जंगे

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَعُبَيْدُ بْنُ يَعِيشَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِنَحْوِ حَدِيثِ الْحَكَمِ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، وَزَادَ، فِي الْحَدِيثِ قَالَ عَلِيٌّ مَا تَرَكْتُهُ مُنْذُ سَمِعْتُهُ مِنَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . قِيلَ لَهُ وَلاَ لَيْلَةَ صِفِّينَ قَالَ وَلاَ لَيْلَةَ صِفِّينِ . وَفِي حَدِيثِ عَطَاءٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ قُلْتُ لَهُ وَلاَ لَيْلَةَ صِفِّينَ

सिफ़्फ़ीन के मौक़े पर भी नहीं ? कहने लगे, जंगे सिफ़्फ़ीन की रात भी नहीं। अ़ता (रह.) की ह़दीस में है, इब्ने अबी लैला कहते हैं, मैंने उनसे कहा और सिफ़्फ़ीन की रात भी नहीं, (जो इंतिहाई घमसान की जंग थी)

حَدَّثَنِي أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامَ الْعَيْشِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، - يَعْنِي ابْنَ زُرَيْعٍ - حَدَّثَنَا رَوْحٌ، وَهُوَ ابْنُ الْقَاسِمِ عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ فَاطِمَةَ، أَتَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم تَسْأَلُهُ خَادِمًا وَشَكَتِ الْعَمَلَ فَقَالَ " مَا أَلْفَيْتِيهِ عِنْدَنَا " . قَالَ " أَلاَ أَدُلُّكِ عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ لَكِ مِنْ خَادِمٍ تُسَبِّحِينَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَتَحْمَدِينَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَتُكَبِّرِينَ أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ حِينَ تَأْخُذِينَ مَضْجَعَكِ " .

(6918) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) की ख़िदमत में ख़ादिम लेने के लिए हाज़िर हुईं और काम काज की (ज़्यादा होने की) शिकायत की तो आपने फ़र्माया, 'वह तो तुम्हें हमारे यहाँ से नहीं मिलेगा।' फ़र्माया, 'क्या मैं तुम्हें ख़ादिम से जो चीज़ तुम्हारे लिए बेहतर हो, वह न बताऊँ? तैंतीस (33) बार तस्बीह़ बयान किया करो और तैंतीस (33) बार अल्ह़म्दु लिल्लाह कहा करो और तैंतीस (33) बार अल्लाहु अकबर कहा करो।' जब तुम अपने बिस्तर पर जा चुको।'

وَحَدَّثَنِيهِ أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6919) यही रिवायत इमाम स़ाह़ब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

बाब 21 : मुर्ग़ की आवाज़ के वक़्त दुआ करना बेहतर अ़मल है।

(21) بَاب : اسْتِحْبَابِ الدُّعَآءِ عِنْدَ صِيَاحِ الدِّيكِ

حَدَّثَنِي قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ الْحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهَا رَأَتْ شَيْطَانًا " .

(6920) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है नबी अकरम(ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम मुर्ग़ों की आवाज़ सुनो तो अल्लाह से उसके फ़ज़्लो करम का सवाल करो, क्योंकि उन्होंने फ़रिश्ते को देखा है और जब तुम गधे का चिल्लाना सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह में आओ, क्योंकि उसने शैतान को देखा है।'

तख़रीज 6920 : सहीह बुख़ारी : 3303; अबूदाऊद : 5102; तिर्मिज़ी : 3459.

मुफ़रदातुल हदीस : दियका दीक की जमा है, मुर्ग़

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है नेक लोगों के सामने दुआ करना पसंदीदा है, क्योंकि फ़रिश्ते को देखकर जब मुर्ग़ ने अज़ान कही और हमने दुआ की, ताकि फ़रिश्ता आमीन कहे तो इससे मालूम हुआ, नेक लोगों का दुआ में शरीक होना क़बूलियत का ज़्यादा इम्कान रखता है और शैतान चूँकि नुक़्सान पहुँचाने की कोशिश करता है इसलिए उससे पनाह माँगने की ज़रूरत है और यह ख़ुसूसियत अल्लाह तआ़ला ने इन जानवरों में रख दी है।

बाब 22 : मुसीबतज़दा के लिए दुआ

(22) بَاب : دُعَآءِ الْكَرْبِ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ سَعِيدٍ - قَالُوا حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي،

(6921) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी अकरम(ﷺ) परेशानी के वक़्त यह कलिमात पढ़ते, 'अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह बड़ी अ़ज़्मत

عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ " .

वाला, बुर्दबार है, कोई मालिक व मअ़बूद नहीं अल्लाह के सिवा, वह अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है, कोई मअ़बूद नहीं अल्लाह के सिवा, अल्लाह आसमानों का मालिक है और ज़मीन का मालिक है और अ़र्शे करीम का मालिक है।

तख़रीज 6921 : सहीह बुख़ारी, फ़िद्दअवात : 6345, 6346; व फ़ित्तौहीद : 7426; और बाब (तअ़रूजुल मलाइकतु वर्रुहु इलैहि) : 7431; तिर्मिज़ी : 3435; इब्ने माजा : 3883.

फ़ायदा : इसमें ज़मीन से लेकर अ़र्श तक के मालिक से, जो रब होने के साथ साथ हलीम है, अपनी फ़िक्रो परेशानी के इज़ाला की दरख़्वास्त है और रब होने की हैसियत से वही मुश्किलकुशा और हाजतरवा है, इसलिए उससे यह दरख़्वास्त की जा सकती है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَحَدِيثُ مُعَاذِ بْنِ هِشَامٍ أَتَمُّ .

(6922) इमाम साहब ऊपर वाली हदीस एक और उस्ताद से बयान करते हैं लेकिन ऊपर वाली रिवायत ज़्यादा मुकम्मल है।
इसकी तख़रीज हदीस (6858) में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، أَنَّ أَبَا الْعَالِيَةِ الرِّيَاحِيَّ، حَدَّثَهُمْ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَدْعُو بِهِنَّ وَيَقُولُهُنَّ عِنْدَ الْكَرْبِ فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ مُعَاذِ بْنِ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ قَتَادَةَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ " .

(6923) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ), इन कलिमात से दुआ फ़र्माते और परेशानी के वक़्त कहते, 'आगे पहली हदीस से सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि रब्बिस्समावाति व रब्बिल अर्ज़ि की जगह रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि है।

तख़रीज 6923 : इसकी तखरीज हदीस (6858) में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنِي يُوسُفُ بْنُ، عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ قَالَ . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ مُعَاذٍ عَنْ أَبِيهِ وَزَادَ مَعَهُنَّ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ " .

(6924) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) को जब कोई अहम मामला पेश आता तो यह दुआ करते, आगे ऊपर वाली रिवायत में इज़ाफ़ा है 'ला इलाहा इल्लल्लाहु रब्बुल अर्शिल करीम'

तख़रीज 6924 : इसकी तख़रीज हदीस (6858) में गुज़र चुकी है।

(23) بَاب : فَضْلِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ

बाब 23 : सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْجُرَيْرِيُّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الْجِسْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سُئِلَ أَىُّ الْكَلاَمِ أَفْضَلُ قَالَ " مَا اصْطَفَى اللَّهُ لِمَلاَئِكَتِهِ أَوْ لِعِبَادِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ

(6925) हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) से पूछा गया कि कौनसा कलाम अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया, 'वह कलाम जो अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्तों या बन्दों के लिए चुन लिया है, यानी 'सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही'

तख़रीज 6925 : सुनन तिर्मिज़ी : 3593.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الْجَسْرِيِّ، مِنْ عَنَزَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَلاَ أُخْبِرُكَ بِأَحَبِّ الْكَلاَمِ إِلَى اللَّهِ " . قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ

(6926) हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क्या मैं तुम्हें यह न बताऊँ, अल्लाह को कौनसा कलाम महबूब है?' मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मुझे ख़बर दीजिए, अल्लाह को कौनसा कलाम महबूब है, आपने फ़र्माया, 'अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब कलाम

أَخْبِرْنِي بِأَحَبِّ الْكَلاَمِ إِلَى اللَّهِ . فَقَالَ " إِنَّ أَحَبَّ الْكَلاَمِ إِلَى اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ "

सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही है।
इसकी तख़रीज हदीस 6863 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : 'सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही' का मआनी है, अल्लाह हर उस बात से और अमल से मुनज़्ज़ा और पाक है जो उसके शायाने शान नहीं है और जिसमें ज़रा भी क़ुसूर या ऐब या नुक़्स का शाइबा है और उसके साथ उन तमाम सिफ़ाते कमाल से मुत्तसिफ़ है, जो उसकी ज़ाते आली के मुनासिब हैं इस तरह यह मुख़्तसर कलिमा इन तमाम सिफ़ात पर हावी हैं, जो सल्बी या ईजाबी तौर पर, उसकी सिफ़त व सना में कही जा सकती हैं और इसलिए यह बोल सबसे अफ़ज़ल भी और अल्लाह को महबूब तरीन भी है।

(24) فَضْلِ الدُّعَآءِ لِلْمُسْلِمِينَ بِظَهْرِ الْغَيْبِ

बाब 24 : मुसलमानों के लिए पसे पुश्त (उसकी ग़ैर मौजूदगी में) दुआ करने की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ حَفْصٍ الْوَكِيعِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ كَرِيزٍ، عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَدْعُو لأَخِيهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ إِلاَّ قَالَ الْمَلَكُ وَلَكَ بِمِثْلٍ " .

(6927) हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जो मुसलमान बन्दा भी अपने भाई की ग़ैर हाज़िरी में उसके लिए दुआ करता है तो फ़रिश्ता कहता है, तुझे भी उसके जैसे हासिल हो।
तख़रीज 6927 : अबूदाऊद : 1534.

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ, अपने मुसलमान भाई के लिए उसकी ग़ैर हाज़िरी में दुआ करना, पसंदीदा अमल है, क्योंकि उसमें इख़्लास होगा, इसीलिए जो दुआ अपने लिए माँगनी है, वह अपने भाई के हक़ में भी माँगें ताकि उसको क़ुबूलियत का मक़ाम हासिल हो।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ سَرْوَانَ، الْمُعَلِّمُ

(6928) हज़रत उम्मे दर्दा (रज़ि.) अपने शौहर से बयान करती हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना 'जो

حَدَّثَنِي طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ كَرِيزٍ، قَالَ حَدَّثَتْنِي أُمُّ الدَّرْدَاءِ، قَالَتْ حَدَّثَنِي سَيِّدِي، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ دَعَا لأَخِيهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ قَالَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِهِ آمِينَ وَلَكَ بِمِثْلٍ " .

अपने भाई के लिए उसकी ग़ैर हाज़िरी में दुआ माँगता है तो उस पर मुक़र्रर फ़रिश्ता, आमीन कहता है और कहता है तुझे भी ऐसा ही मिले।
तख़रीज 6928 : इसकी तख़रीज हदीस (6865) में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَبِي، سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ صَفْوَانَ، - وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَفْوَانَ - وَكَانَتْ تَحْتَهُ الدَّرْدَاءُ قَالَ قَدِمْتُ الشَّامَ فَأَتَيْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ فِي مَنْزِلِهِ فَلَمْ أَجِدْهُ وَوَجَدْتُ أُمَّ الدَّرْدَاءِ فَقَالَتْ أَتُرِيدُ الْحَجَّ الْعَامَ فَقُلْتُ نَعَمْ . قَالَتْ فَادْعُ اللَّهَ لَنَا بِخَيْرٍ فَإِنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَقُولُ " دَعْوَةُ الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ لأَخِيهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ مُسْتَجَابَةٌ عِنْدَ رَأْسِهِ مَلَكٌ مُوَكَّلٌ كُلَّمَا دَعَا لأَخِيهِ بِخَيْرٍ قَالَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِهِ آمِينَ وَلَكَ بِمِثْلٍ " .

(6929) सफ़्वान यानी अब्दुल्लाह बिन सफ़्वान के बेटे, उम्मे दर्दा जिनकी बीवी थी, कहते हैं, मैं शाम (अपने ससुराल) आया, चुनाँचे अबू दर्दा (रज़ि.) के पास उनके घर गया, वह न मिले और मुझे उम्मे दर्दा मिल गईं, उन्होंने पूछा, इस साल तुम्हारा हज्ज करने का इरादा है? मैंने कहा, जी हाँ! उन्होंने कहा, हमारे लिए भी अल्लाह से ख़ैर माँगना, क्योंकि नबी अकरम(ﷺ) फ़र्माते थे, 'इंसान की अपने भाई के लिए पसे पुश्त (ग़ैर हाज़री में) दुआ क़बूल होती है, उसके सिरहाने एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है, जब भी वह अपने भाई के लिए ख़ैर माँगता है, उस पर मुक़र्रर फ़रिश्ता कहता है, आमीन और तुझे भी इसके जैसा हासिल हो।'
तख़रीज 6929 : सहीह बुख़ारी : 2895.

قَالَ فَخَرَجْتُ إِلَى السُّوقِ فَلَقِيتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ فَقَالَ لِي مِثْلَ ذَلِكَ يَرْوِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم .

(6930) वह कहते हैं, मैं बाज़ार के लिए निकला तो अबू दर्दा (रज़ि.) को मिला तो उन्होंने मुझे यही रिवायत नबी अकरम(ﷺ) से सुनाई।
इसकी तख़रीज पहले हदीस में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي، سُلَيْمَانَ بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ وَقَالَ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَفْوَانَ، .

(6931) ऊपर वाली रिवायत इमाम स़ाहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

कुछ नुस्ख़ों में उम्मे दर्दा की जगह दर्दा है और यही सही है कि वह उम्मे दर्दा की बेटी थी।

और यहाँ उम्मे दर्दा से उम्मे दर्दा सुग़्रा (छोटी) है जिसका नाम हुजैमा है और यह इंतिहाई फ़क़ीहा, आ़लिमा और ज़ाहिदा थीं।

इसकी तख़रीज ह़दीस (6866) में गुज़र चुकी है।

(25)بَاب : اِسْتِحْبَابِ حَمْدِ اللَّهِ تَعَالَى بَعْدَ الأَكْلِ وَالشُّرْبِ

बाब 25 : खाने पीने के बाद अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ نُمَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ عَنْ زَكَرِيَّاءَ بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ، مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ لَيَرْضَى عَنِ الْعَبْدِ أَنْ يَأْكُلَ الأَكْلَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا أَوْ يَشْرَبَ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا " .

(6932) ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआ़ला इस बात से राज़ी होता है कि बन्दा खाना खाकर उसकी ह़म्द (शुक्रिया) बयान करे, या पानी पिये तो उस पर उसका शुक्र अदा करे।'

तख़रीज 6932 : जामेअ़ तिर्मिज़ी : 1816.

मुफ़रदातुल ह़दीस : अक्लता, शर्बता : एक बार खाना, एक बार पीना, यानी हर खाने और पीने पर देने वाले का शुक्र अदा करे, कम अज़ कम, अल्ह़म्दु लिल्लाह कहना है। अक्लता, लुक़्मा, शर्बता एक घूँट।

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْرَقُ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ

(6933) यही रिवायत इमाम स़ाहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज पहले ह़दीस में गुज़र चुकी है।

बाब 26 :
दुआ करने वाला अगर जल्दबाज़ी से काम न ले तो दुआ क़ुबूल हो जाती है, जल्दबाज़ कहता है मैंने दुआ की लेकिन क़ुबूल नहीं हुई

(26)بَاب : بَيَانِ أَنَّهُ يُسْتَجَابُ لِلدَّاعِي مَالَمْ يَعَجَلْ فِيَقُوْلُ دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِي

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ، مَوْلَى ابْنِ أَزْهَرَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يُسْتَجَابُ لأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ فَيَقُولُ قَدْ دَعَوْتُ فَلاَ أَوْ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِي " .

(6934) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला इस बात से राज़ी होता है कि बन्दा खाना खाकर उसकी हम्द (शुक्रिया) बयान करे, या पानी पिये तो उस पर उसका शुक्र अदा करे।'

तख़रीज : सहीह बुख़ारी : 6340; अबूदाऊद : 1484; तिर्मिज़ी : 3387; इब्ने माजा : 3853.

µ**फ़ायदा** : बन्दा फ़क़ीर और मोहताज है और अल्लाह ग़नी और बेनियाज़ है, इसलिए बन्दे का काम है, हमेशा उसके दर का फ़क़ीर बना रहे और माँगता रहे और समझे यक़ीनन देर सवेर मेरी दुआ ज़रूर क़ुबूल होगी, क्योंकि यह तो अल्लाह ही जानता है उसकी दुआ किस सूरत में और कब पूरी करनी है, लेकिन बन्दा जब जल्दबाज़ी में मायूस होकर दुआ छोड़ देता है तो वह क़ुबूलियत का इस्तिहक़ाक़ (हक) खो देता है और दुआ की क़ुबूलियत की तीन सूरतें हैं (1) दुआ करने वाला जो कुछ माँगता है, वही मिल जाता है। (2) अल्लाह तआला उसको उससे बेहतर चीज़ अता कर देता है। (3) आख़िरत में उसके लिए अज्रो सवाब जमा कर देता है, इसलिए दुआ छोड़ बैठना, इंतिहाई महरूमी की बात है।

حَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ لَيْثٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّهُ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو

(6935) अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के आज़ादकर्दा ग़ुलाम, अबू उबैदा जो क़ुर्राअ और अहले फ़िक़्ा में शुमार होते थे, बयान करते हैं, मैंने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) को

عُبَيْدٍ، مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَكَانَ مِنَ الْقُرَّاءِ وَأَهْلِ الْفِقْهِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُسْتَجَابُ لأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ فَيَقُولُ قَدْ دَعَوْتُ رَبِّي فَلَمْ يَسْتَجِبْ لِي " .

यह कहते सुना, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुममें से किसी शख़्स की दुआ उस वक़्त तक क़ुबूल होती है, जब तक जल्दबाज़ी करते हुए यह न कहे, मैंने अपने रब से दुआ की थी, मगर वह क़ुबूल ही नहीं हुई।

इसकी तख़रीज हदीस 6869 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مُعَاوِيَةُ، - وَهُوَ ابْنُ صَالِحٍ - عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لاَ يَزَالُ يُسْتَجَابُ لِلْعَبْدِ مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رَحِمٍ مَا لَمْ يَسْتَعْجِلْ " . قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا الاِسْتِعْجَالُ قَالَ " يَقُولُ قَدْ دَعَوْتُ وَقَدْ دَعَوْتُ فَلَمْ أَرَ يَسْتَجِيبُ لِي فَيَسْتَحْسِرُ عِنْدَ ذَلِكَ وَيَدَعُ الدُّعَاءَ " .

(6936) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'बन्दे की दुआ क़ुबूल होती रहती है, बशर्ते कि वह गुनाह और क़तअ रहमी की दुआ न करे, जब तक वह जल्दबाज़ी से काम न ले।' पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! जल्दबाज़ी क्या है? आपने फ़र्माया, 'बन्दा कहता है मैं दुआ कर चुका हूँ, मैं दुआ कर चुका हूँ, लेकिन मैं उसको क़ुबूल होती नहीं देखता और वह दुआ करना छोड़ बैठता है (और नाउम्मीद हो जाता है)।''

मुफ़रदातुल हदीस : यस्तह्सिरु वह थक हार जाता है और दुआ करना छोड़ देता है।

इस किताब के कुल बाब (02) और (15) अहादीस हैं।

كتاب الرقاق

किताबुर्रिक़ाक़
नर्मी का बयान

हदीस नम्बर 6937 से 6951 तक

كتاب الرقاق

51. नर्मी का बयान

(1)
بَاب : اَكْثَرُ اَهْلِ الْجَنَّةِ الْفُقَرَآءُ وَاَكْثَرُ اَهْلِ النَّارِ النِّسَآءُ

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، كُلُّهُمْ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قُمْتُ عَلَى بَابِ الْجَنَّةِ فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا الْمَسَاكِينُ وَإِذَا أَصْحَابُ الْجَدِّ مَحْبُوسُونَ إِلاَّ أَصْحَابَ النَّارِ فَقَدْ أُمِرَ بِهِمْ إِلَى النَّارِ وَقُمْتُ عَلَى بَابِ النَّارِ فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا النِّسَاءُ " .

बाब 1 : अहले जन्नत में फ़ुक़रा ज़्यादा होंगे और अहले दोज़ख़ अक्सर ऒरतें होंगी और ऒरतों के फ़ित्ने का बयान

(6937) इमाम स़ाहब अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों की सनदों से, ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, चुनाँचे उसमें दाख़िल होने वाले उ़मूमन मिस्कीन लोग थे और माल व शर्फ़ वाले लोग, सिवा ये दोज़ख़ियों के रोक लिये गए थे और दोज़ख़ियों की त़रफ़ भेज दिया गया था और मैं दोज़ख़ के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो उसमें दाख़िल होने वाली अक्सर ऒरतें थीं।'

तख़रीज 6937 : स़हीह़ बुख़ारी : 87; ह़दीस : 5196.

फ़ायदा : दुनिया में फ़ुक़रा और मोहताज लोगों की ज़्यादती है और ऐसे लोग आम तौर पर दीनदार भी होते हैं, इसलिए वह जन्नत में जल्द चले जाएँगे और माल व शर्फ़ वाले लोग कम होंगे और उन्हें अपने माल व दौलत और ओहदा व मंसब का हिसाब भी देना होगा, इसलिए वह पीछे रह जाएँगे, लेकिन जिन मालदारों ने जाइज़ तरीक़े से माल कमाया होगा और दीन के लिए ख़र्च किया होगा उनका हिसाब हल्का होगा, वह उसमें दाख़िल नहीं हैं, इस तरह औरतें अपने लअ़न तअ़न और नाशुक्री नीज़ दुनियावी ऐशो इशरत और आराइश व ज़ेबाइश में गिरफ़्तार होने की वजह से दोज़ख़ में ज़्यादा होंगी।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، الْعُطَارِدِيِّ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ قَالَ مُحَمَّدٌ صلى الله عليه وسلم " اطَّلَعْتُ فِي الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ " .

(6938) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैंने जन्नत में झाँका तो उसके अक्सर बाशिन्दे फ़ुक़रा थे और मैंने जब जहन्नम में झाँका तो उसमें अक्सर औरतें थीं।

तख़रीज: सहीह बुख़ारी : 6449; तिर्मिज़ी : 2602.

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الثَّقَفِيُّ، أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6939) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज हदीस 6873 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَشْهَبِ، حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم اطَّلَعَ فِي النَّارِ . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ أَيُّوبَ

(6940) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं कि नबी अकरम(ﷺ) दोज़ख़ में झाँके, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

इसकी तख़रीज हदीस 6873 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، سَمِعَ أَبَا رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ مِثْلَهُ .

(6941) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'आगे ऊपर वाली रिवायत ज़िक्र की है ।

इसकी तख़रीज हदीस 6873 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، قَالَ كَانَ لِمُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ امْرَأَتَانِ فَجَاءَ مِنْ عِنْدِ إِحْدَاهُمَا فَقَالَتِ الأُخْرَى جِئْتَ مِنْ عِنْدِ فُلاَنَةَ فَقَالَ جِئْتُ مِنْ عِنْدِ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ فَحَدَّثَنَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ أَقَلَّ سَاكِنِي الْجَنَّةِ النِّسَاءُ " .

(6942) अबुत् तय्याह (रह.) बयान करते हैं, मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लह की दो बीवियाँ थीं, चुनाँचे वह एक के पास से आए तो दूसरी ने कहा, तुम फ़लाँ औरत के पास से आए हो तो उन्होंने कहा, मैं ह़ज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) के पास से आ रहा हूँ, उन्होंने हमें बताया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत के बाशिन्दों में औरतें कम होंगी।'

फ़ायदा : यानी तुम ख़्वाह मख़्वाह बदगुमानी का शिकार होती हो, इस वजह से तुम्हें जन्नत में दाख़िला मुश्किल से मिलेगा।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الْحَمِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، قَالَ سَمِعْتُ مُطَرِّفًا، يُحَدِّثُ أَنَّهُ كَانَتْ لَهُ امْرَأَتَانِ بِمَعْنَى حَدِيثِ مُعَاذٍ .

(6943) ह़ज़रत मुत़र्रिफ़ (रह.) बयान करते हैं, मेरी दो बीवियाँ थीं, आगे ऊपर वाली रिवायत ज़िक्र है।

तख़रीज 6943 : इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْكَرِيمِ أَبُو زُرْعَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ، عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ كَانَ مِنْ دُعَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيعِ سَخَطِكَ " .

(6944) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) यह दुआ भी करते थे, 'ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरी नेअ़मतों के ज़ाइल हो जाने से और तेरी इनायत कर्दा आफ़ियत फिर जाने से और अचानक तेरी सज़ा, नाराज़गी के आ जाने से और तेरी हर क़िस्म की नाराज़गी से।'

तख़रीज 6944 : अबूदाऊद : 1545.

फ़ायदा : इस ह़दीस से मालूम होता है कि इंसान को हर वक़्त उससे लरज़ाँ व तरसाँ (डरते) रहना चाहिए कि कहीं वह अल्लाह की नेअ़मतों से महरूम होकर उसकी सज़ा और नाराज़गी का मुस्तह़िक़ न ठहर जाए और उससे अल्लाह की पनाह माँगनी चाहिए।

(6945) हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैंने अपने बाद, मर्दों के लिए औरतों से ज़्यादा नुक़्सान पहुँचाने वाला फ़ित्ना कोई नहीं छोड़ा।'

तख़रीज 6945 : सहीह बुख़ारी : 5096; तिर्मिज़ी : 2780; इब्ने माजा : 3998.

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، وَمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً هِيَ أَضَرُّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ " .

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने तबई तौर पर मर्दों के दिलों में औरतों के लिए कशिश (मुहब्बत) रखी है, वह उनके हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) और बातों से जल्द मुतास्सिर (प्रभावित) हो जाते हैं और इंसान उनकी ख़ातिर गुनाह करने पर आमादा हो जाता है, अपनी और दूसरी दोनों क़िस्म की औरतें उसके लिए आज़माइश और फ़ित्ने की वजह बनती हैं।

(6946) हज़रत उसामा बिन ज़ैद और हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'मैंने अपने बाद लोगों में मर्दों के लिए औरतों से ज़्यादा नुक़्सान देने वाला फ़ित्ना नहीं छोड़ा।'

इसकी तख़रीज हदीस 6880 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، وَسُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، جَمِيعًا عَنِ الْمُعْتَمِرِ، قَالَ ابْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ قَالَ أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ، وَسَعِيدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ، أَنَّهُمَا حَدَّثَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِي النَّاسِ فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ ".

(6947) इमाम साहब (रह.) अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

तख़रीज 6947 : इसकी तख़रीज हदीस 6880 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، كُلُّهُمْ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي مَسْلَمَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا نَضْرَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الدُّنْيَا حُلْوَةٌ خَضِرَةٌ وَإِنَّ اللَّهَ مُسْتَخْلِفُكُمْ فِيهَا فَيَنْظُرُ كَيْفَ تَعْمَلُونَ فَاتَّقُوا الدُّنْيَا وَاتَّقُوا النِّسَاءَ فَإِنَّ أَوَّلَ فِتْنَةِ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانَتْ فِي النِّسَاءِ " . وَفِي حَدِيثِ ابْنِ بَشَّارٍ " لِيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ " .

(6948) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'दुनिया शीरीं और सरसब्ज़ व शादाब है और अल्लाह तआ़ला तुम्हें इसमें एक दूसरे का जानशीन बनाने वाला है, ताकि वह जायज़ा ले, तुम कैसे अ़मल करते हो, चुनाँचे दुनिया से बचो और औ़रतों से बचकर रहो, क्योंकि बनी इस्राईल का पहला इम्तिहान (आज़माइश) औ़रतों के ज़रिये हुआ था।' इब्ने बश्शार की ह़दीस में है 'ताकि वह देखे, तुम किस त़रह़ अ़मल करते हो।' यानी फ़-यंज़ुर की जगह लि- यंज़ुर है।

फ़ायदा : दुनिया में अल्लाह तआ़ला ने दो ख़ुसूसियतें रखी हैं, वह क़ल्ब व जिगर को शीरीं होकर मुतास्सिर करती है और सर सब्ज़ व शादाब होकर नज़रों को अपनी त़रफ़ माइल करती है, इस त़रह़ दिल व नज़र दोनों इससे मुतास्सिर होते हैं, ह़ालाँकि इसकी मिठास और सरसब्ज़ी जल्द ही फ़ना का शिकार हो जाती है और ह़ज़रत मूसा (अ़.) के दौर में दुश्मनों ने बल्आ़म बिन बाऊ़रा के मश्वरा से इस्राईली लश्कर में ह़सीन व जमील नौजवान औ़रतें भेजी थीं, जिनसे कुछ फ़ौजियों ने बदकारी कर ली थी, जिसकी वजह से उन पर ताऊ़न (चेचक) का अ़ज़ाब आया था।

(2)
بَاب : قِصَّةِ أَصْحَابِ الْغَارِ

बाब 2 :
ग़ार (गुफ़ा) में फँसने वाले तीन आदमियों का क़िस्सा और नेक आमाल को वसीला बनाना

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ الْمُسَيَّبِيُّ، حَدَّثَنِي أَنَسٌ، - يَعْنِي ابْنَ عِيَاضٍ أَبَا

(6949) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'जबकि तीन आदमी चले थे, उन्हें बारिश ने घेर लिया तो उन्होंने पहाड़ की एक

ضَمْرَةَ - عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " بَيْنَمَا ثَلاَثَةُ نَفَرٍ يَتَمَشَّوْنَ أَخَذَهُمُ الْمَطَرُ فَأَوَوْا إِلَى غَارٍ فِي جَبَلٍ فَانْحَطَّتْ عَلَى فَمِ غَارِهِمْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ فَانْطَبَقَتْ عَلَيْهِمْ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ انْظُرُوا أَعْمَالاً عَمِلْتُمُوهَا صَالِحَةً لِلَّهِ فَادْعُوا اللَّهَ تَعَالَى بِهَا لَعَلَّ اللَّهَ يَفْرُجُهَا عَنْكُمْ . فَقَالَ أَحَدُهُمُ اللَّهُمَّ إِنَّهُ كَانَ لِي وَالِدَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ وَامْرَأَتِي وَلِيَ صِبْيَةٌ صِغَارٌ أَرْعَى عَلَيْهِمْ فَإِذَا أَرَحْتُ عَلَيْهِمْ حَلَبْتُ فَبَدَأْتُ بِوَالِدَىَّ فَسَقَيْتُهُمَا قَبْلَ بَنِيَّ وَأَنَّهُ نَأَى بِي ذَاتَ يَوْمٍ الشَّجَرُ فَلَمْ آتِ حَتَّى أَمْسَيْتُ فَوَجَدْتُهُمَا قَدْ نَامَا فَحَلَبْتُ كَمَا كُنْتُ أَحْلُبُ فَجِئْتُ بِالْحِلاَبِ فَقُمْتُ عِنْدَ رُءُوسِهِمَا أَكْرَهُ أَنْ أُوقِظَهُمَا مِنْ نَوْمِهِمَا وَأَكْرَهُ أَنْ أَسْقِيَ الصِّبْيَةَ قَبْلَهُمَا وَالصِّبْيَةُ يَتَضَاغَوْنَ عِنْدَ قَدَمَىَّ فَلَمْ يَزَلْ ذَلِكَ دَأْبِي وَدَأْبَهُمْ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ

ग़ार में पनाह ली, उनके ग़ार के मुँह पर पहाड़ से एक चट्टान आ पड़ी और वह उन पर बंद हो गई। चुनाँचे उन्होंने एक दूसरे से कहा, अपने उन नेक अच्छे आमाल पर नज़र डालो, जो ख़ास तौर पर तुमने अल्लाह की रज़ा के लिए किये हैं, तो उनमें से एक ने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे माँ बाप बहुत बूढ़े थे और मेरी बीवी थी और मेरे छोटे छोटे बच्चे थे, मैं उनकी ख़ातिर बकरियाँ चराया करता था और जब मैं उनके पास बकरियाँ वापिस लाता, दूध दूहता और सबसे पहले माँ बाप को पिलाता, अपनी औलाद से भी पहले उन्हें पिलाता और सूरते हाल यह पैदा हुई कि एक दिन मुझे चरागाह के दरख़्त दूर ले गए यानी बकरियों को चराता, चराता मैं दूर निकल गया, तो मैं शाम तक न आ सका, जब घर पहुँचा तो देखा कि वह दोनों (वालिदैन) सो चुके हैं, तो मैंने रोज़ की तरह दूध दूहा और दूध लेकर आया और उनके सिरहाने खड़ा हो गया, मुझे नापसंद गुज़रा कि मैं उनको नींद से जगा दूँ और यह भी मुझे बुरा मालूम हुआ कि माँ बाप से पहले बच्चों को दूध पिला दूँ, हालाँकि बच्चे मेरे पैर के पास बिलबिला रहे थे, चिल्ला रहे थे, तो तुलूअे फ़ज्र तक मेरी और उनकी यही हालत रही, यानी मैं दूध लेकर खड़ा रहा, बच्चे रोते रहे और माँ बाप सोए रहे, ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है, मैंने यह काम सिर्फ़ तेरी रज़ा और ख़ुशनुदी के लिए किया था तो तू इस पत्थर को इतना खोल दे कि हम उसमें से आसमान को देखने लगें। चुनाँचे अल्लाह

ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ لَنَا مِنْهَا فُرْجَةً نَرَى مِنْهَا السَّمَاءَ . فَفَرَجَ اللَّهُ مِنْهَا فُرْجَةً فَرَأَوْا مِنْهَا السَّمَاءَ . وَقَالَ الآخَرُ اللَّهُمَّ إِنَّهُ كَانَتْ لِيَ ابْنَةُ عَمٍّ أَحْبَبْتُهَا كَأَشَدِّ مَا يُحِبُّ الرِّجَالُ النِّسَاءَ وَطَلَبْتُ إِلَيْهَا نَفْسَهَا فَأَبَتْ حَتَّى آتِيَهَا بِمِائَةِ دِينَارٍ فَتَعِبْتُ حَتَّى جَمَعْتُ مِائَةَ دِينَارٍ فَجِئْتُهَا بِهَا فَلَمَّا وَقَعْتُ بَيْنَ رِجْلَيْهَا قَالَتْ يَا عَبْدَ اللَّهِ اتَّقِ اللَّهَ وَلاَ تَفْتَحِ الْخَاتَمَ إِلاَّ بِحَقِّهِ . فَقُمْتُ عَنْهَا فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ لَنَا مِنْهَا فُرْجَةً . فَفَرَجَ لَهُمْ . وَقَالَ الآخَرُ اللَّهُمَّ إِنِّي كُنْتُ اسْتَأْجَرْتُ أَجِيرًا بِفَرَقِ أَرُزٍّ فَلَمَّا قَضَى عَمَلَهُ قَالَ أَعْطِنِي حَقِّي . فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ فَرَقَهُ فَرَغِبَ عَنْهُ فَلَمْ أَزَلْ أَزْرَعُهُ حَتَّى جَمَعْتُ مِنْهُ بَقَرًا وَرِعَاءَهَا فَجَاءَنِي فَقَالَ اتَّقِ اللَّهَ وَلاَ تَظْلِمْنِي حَقِّي . قُلْتُ اذْهَبْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ وَرِعَائِهَا فَخُذْهَا . فَقَالَ اتَّقِ اللَّهَ وَلاَ تَسْتَهْزِئْ بِي . فَقُلْتُ إِنِّي لاَ أَسْتَهْزِئُ بِكَ خُذْ ذَلِكَ الْبَقَرَ وَرِعَاءَهَا .

तआला ने पत्थर को इतना हटा दिया कि उन्हें आसमान नज़र आने लगा और दूसरे शख़्स ने कहा, ऐ अल्लाह! सूरते हाल यह है कि मेरे चचा की एक बेटी थी, मैं उससे इस क़द्र इंतिहाई मुहब्बत रखता था, जो मर्दों को ज़्यादा से ज़्यादा औरतों के साथ हो सकती है, मैंने उससे अपने आपको पेश करने का मुतालबा किया (मैंने उससे बदकारी की ख़्वाहिश ज़ाहिर की) उसने कहा, जब तक उसे सौ अशरफ़ी (सोने के सिक्के) न दोगे, ऐसा नहीं हो सकता तो मैंने भरपूर कोशिश करके सौ अशरफ़ियाँ जमा कर लीं और उनको लेकर उसके पास आ गया, फिर जब मैं उसकी दोनों टाँगों के बीच बैठ गया (ताकि अपना काम करूँ) उसने कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे! अल्लाह से डर और मुहर (सील) को जाइज़ तरीक़े से खोल तो मैं उससे खड़ा हो गया (अपना इरादा छोड़ दिया) तो अगर तू जानता है, मैंने यह काम सिर्फ़ तेरी रज़ा के लिए किया था तो हमारे लिए इससे कुशादगी पैदा कर दे तो अल्लाह ने पत्थर को और हटा दिया, तीसरे शख़्स ने कहा, ऐ अल्लाह! मैंने एक फ़रक़ चावल (तीन साअ) पर एक शख़्स को मज़दूर रखा था, जब उसने अपना काम ख़त्म कर लिया तो कहा, मुझे मेरा हक़ (मज़दूरी) दो, चुनाँचे मैंने उसे उससे तै शुदा एक फ़रक़ पेश किया तो उसने उससे बेरग़बती इख़्तियार की, पसंद न किया, (और चला गया) चुनाँचे मैं उन चावलों को हमेशा काश्त करता रहा, यहाँ तक कि मैंने उन

فَأَخَذَهُ فَذَهَبَ بِهِ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ لَنَا مَا بَقِيَ . فَفَرَجَ اللَّهُ مَا بَقِيَ.

(क़ीमत) से गाएँ और उनके चरवाहे जमा कर लिए, फिर वह (बहुत समय बाद) आया और कहा, अल्लाह से डर और मेरा ह़क़ न मार, मैंने कहा, उन गायों और उनके चरवाहों की त़रफ़ जाओ और उनको ले लो तो उसने कहा, अल्लाह से डर और मेरे साथ मज़ाक़ न कर, तो मैंने कहा, मैं तेरे साथ मज़ाक़ नहीं करता, वह गाएँ और उनके चरवाहे ले लो, वह उन्हें लेकर चला गया, तो अगर तू जानता है मैंने यह काम तेरी ख़ुशनूदी की ख़ातिर किया था तो बाक़ी पत्थर को भी हमसे हटा दे, चुनाँचे अल्लाह ने बाक़ी पत्थर को भी हटा दिया।

स़ह़ीह़ बुख़ारी : 2215; वफ़िल मुज़ारअ़ति : 2333.

फ़ायदा : हुज़ूरे अकरम(ﷺ) ने यह वाक़िया अपनी उम्मत को सबक़ आमूज़ी और इ़ब्रत पज़ीरी के लिए सुनाया, इसमें चन्द बातें ख़ुसूसी त़ौर पर तवज्जह देने की है –

1. सबसे अहम और पहली बात तो यह है कि उन तीनों अफ़राद ने अपने अ़मल सिर्फ़ अल्लाह की रज़ाजोई के लिए किये थे और उन आ़माल की इस ख़ुस़ूस़ियत की वजह से, अल्लाह के हुज़ूर पेश किया था, जिससे इख़्लास़ की बरकत व तासीर और क़ुव्वत का इज़्हार होता है, नेक आ़माल के वसीले से दुआ़ करना पसंदीदा है और दुआ़ की क़ुबूलियत का सबब है।

2. उन तीनों अ़मलों में क़द्रे मुश्तरक यह है कि यह अ़मल अल्लाह के हुक्म व मर्ज़ी के मुक़ाबला में अपने नफ़्स को दबाने और उसकी चाहत को क़ुर्बान करने की आ़ला मिसाल हैं, देखिए पहले शख़्स़ का मुजाहिद–ए–नफ़्स किस क़द्र शदीद है कि वह दिन भर जानवरों को जंगल में चराता है, शाम को देर से थका हारा हुआ घर पहुँचता है तो उसका दिल आराम के लिए किस क़द्र बेक़रार और बेचैन होगा, लेकिन चूँकि माँ बाप दूध पिये बग़ैर सो गए थे और यह अल्लाह की रज़ा उसमें समझता था कि वह उनकी नींद व आराम में ख़लल अंदाज़ न हो, जिस वक़्त नींद से ख़ुद उनकी आँख खुले तो यह उनको दूध पिलाए इसलिए यह अपने आराम और राह़त को क़ुर्बान करके उनके सिरहाने खड़ा हो गया, यहाँ तक कि इस त़रह़ सुबह़ हो गई, और उसके मास़ूम, प्यारे प्यारे बच्चे उसके क़दमों में पड़े भूख से रोते चिल्लाते रहे, लकिन उसने बूढ़े माँ बाप के ह़क़ को मुक़द्दम (ऊँचा) ख़्याल करके अल्लाह ही की ख़ुश्नूदी के लिए यह

मुजाहिदा भी किया कि बूढ़े माँ बाप से पहले अपने प्यारे बच्चों को भी दूध न पिलाया।

3. एक दूसरा शख़्स है जो अपनी चचाज़ाद बहन के इश्क में मुब्तला है और पर्दा की पाबन्दी न करने की वजह से उसके घर उसका आना जाना लगा रहता है और वह शादीशुदा है और अपनी घरेलू, मजबूरियों के हाथों मजबूर होकर, आख़िरकार एक मअकूल रक़म तै करके, उसकी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए आमादा हो जाती है और वह मेहनत व मज़दूरी करके उसको रक़म मुहैया कर देता है और उसको ज़िन्दगी की सबसे बड़ी तमन्ना पूरी करने का पूरा पूरा मौक़ा मिल जाता है और कोई रुकावट बाक़ी नहीं रहती तो ठीक उस वक़्त वह अल्लाह की बन्दी, उसे अल्लाह का ख़ौफ़ याद दिलाती है और उसको एहसास हो जाता है। यह इस क़द्र मजबूर और बेबस होकर भी अल्लाह से डर रही है तो वह अपने नफ़्स की ख़्वाहिश लबे बाम पहुँचकर पूरी किये बग़ैर अल्लाह से डरकर उसकी रज़ा तलबी में लग जाता है, हर ख़्वाहिशे नफ़्स रखने वाला इंसान अपने तौर पर अंदाज़ा कर सकता है, यह कितना सख़्त मुजाहिदा है और अल्लाह की रज़ा के मुक़ाबले में अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को क़ुर्बान करने की कितनी आला (ऊँची) मिसाल है।

4. तीसरा शख़्स एक मुक़र्ररा मज़दूरी पर मज़दूर रखता है, आधा दिन गुज़रने के बाद एक और मज़दूर आता है उसको भी मज़दूर रख लेता है, वह आधे दिन में, दूसरे साथियों के बक़द्र पूरे दिन का काम कर डालता है और मालिक उसको दूसरे मज़दूरों के बराबर उज्रत (मेहनताना) दे देता है, एक मज़दूर नाराज़ हो जाता है कि उसको हमारे बराबर मज़दूरी कैसे मिल गई है, मालिक समझता है, तुम्हें तुम्हारी तै शुदा मज़दूरी दे रहा हूँ, तुझे दूसरे को मज़दूरी देने पर ऐतिराज़ करने का हक़ हासिल नहीं है, लेकिन वह नहीं मानता और मज़दूरी छोड़कर नाराज़ होकर चला जाता है तो मालिक उसकी मज़दूरी के चावलों को अपनी ज़मीन में खेती करना शुरू कर देता है, फिर जो पैदावार होती है, वह सब उस मज़दूर की मिल्कियत क़रार देता है, फिर उनको बेचकर जानवर ख़रीद लेता है, अल्लाह उनमें इस क़द्र बढ़ोतरी करता है कि धीरे धीरे ऊँट, बकरियाँ और गाय के रेवड़ तैयार हो जाते हैं कि वह उनकी निगहदाश्त के लिए गुलाम भी ख़रीद लेता है, फिर जब कुछ अर्सा (वक़्त) गुज़रने के बाद मज़दूर आता है तो यह अल्लाह का नेक बन्दा वह सारे हैवानात और गुलाम जो ख़ुद उसकी मेहनत व कोशिश और तवज्जोह से फ़राहम हुए थे वह सबके सब उस मज़दूर के हवाले कर देता है, अब हर शख़्स अंदाज़ा कर सकता है कि अपने नफ़्स की यह कितनी शदीद ख़्वाहिश होगी कि यह दौलत जो मेरी मेहनत और तवज्जह से हासिल हुई और मज़दूर को उसका इल्म तक नहीं है, उसको अपने पास ही रखा जाए, लेकिन उस अल्लाह तआला के बन्दे ने अल्लाह की ख़ुशनूदी की तलब में अपने नफ़्स की इस शदीद ख़्वाहिश को क़ुर्बान किया और वह सारी दौलत उस मज़दूर के हवाले कर दी, जो बिला वजह नाराज़ होकर चला गया था और बात समझाने के बावजूद नहीं माना था।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ، جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، ح وَحَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو كُرَيْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ طَرِيفٍ الْبَجَلِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا أَبِي وَرَقَبَةُ بْنُ مَسْقَلَةَ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَحَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنُونَ ابْنَ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، كُلُّهُمْ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِ أَبِي ضَمْرَةَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ وَزَادُوا فِي حَدِيثِهِمْ " وَخَرَجُوا يَمْشُونَ " . وَفِي حَدِيثِ صَالِحٍ " يَتَمَاشَوْنَ " . إِلاَّ عُبَيْدَ اللَّهِ فَإِنَّ فِي حَدِيثِهِ " وَخَرَجُوا " . وَلَمْ يَذْكُرْ بَعْدَهَا شَيْئًا .

(6950) इमाम साहब यह हदीस अपने बहुत से उस्तादों से बयान करते हैं और उनकी मूसा बिन उक़्बा से रिवायत में यह इज़ाफ़ा है और वह ग़ार से निकलकर चल दिये।' सालेह की रिवायत में यम्शून की जगह यतमाशौन है और उबैदुल्लाह की रिवायत में सिर्फ़ ख़रजू (निकल पड़े) का लफ़्ज़ है।

तख़रीज 6950 : इसकी तख़रीज हदीस नं. (6884) में गुज़र चुकी है। सहीह बुख़ारी : 3465.

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَهْلٍ التَّمِيمِيُّ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَهْرَامَ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ قَالَ ابْنُ سَهْلٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ

(6951) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'तुमसे पहले लोगों में से तीन शख़्स रवाना हुए, यहाँ तक कि सोने के लिए एक ग़ार में पनाह या जगह ली।' आगे ऊपर वाली रिवायत की तरह रिवायत है, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि आपने फ़र्माया, उनमें से एक

صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " انْطَلَقَ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَتَّى آوَاهُمُ الْمَبِيتُ إِلَى غَارٍ " . وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ قَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ " اللَّهُمَّ كَانَ لِي أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ فَكُنْتُ لاَ أَغْبُقُ قَبْلَهُمَا أَهْلاً وَلاَ مَالاً " . وَقَالَ " فَامْتَنَعَتْ مِنِّي حَتَّى أَلَمَّتْ بِهَا سَنَةٌ مِنَ السِّنِينَ فَجَاءَتْنِي فَأَعْطَيْتُهَا عِشْرِينَ وَمِائَةَ دِينَارٍ " . وَقَالَ " فَثَمَّرْتُ أَجْرَهُ حَتَّى كَثُرَتْ مِنْهُ الأَمْوَالُ فَارْتَعَجَتْ " . وَقَالَ " فَخَرَجُوا مِنَ الْغَارِ يَمْشُونَ " .

आदमी ने कहा, 'ऐ अल्लाह! मेरे बूढ़े माँ बाप थे, मैं रात को उनसे पहले अपने अहल और माल को दूध नहीं पिलाता था।' और दूसरे ने कहा, 'उसने मुझसे (बदकारी करने से) इंकार किया, यहाँ तक कि वह ख़ुश्कसाली (अकाल) का शिकार हो गई, तो मेरे पास आई, तो मैंने उसे एक सौ बीस दीनार दिये।' और तीसरे ने कहा, 'तो मैंने उसकी मज़दूरी को बढ़ाया यहाँ तक कि उससे माल में बहुत इज़ाफ़ा हो गया और वह मौजें मारने लगा, और आपने फ़र्माया, वह ग़ार से निकलकर चल पड़े।'

तख़रीज 6951 : स़ह़ीह़ बुख़ारी : 2272.

मुफ़रदातुल ह़दीस : ग़ुबूक़ुन : रात के दूध पीने को कहते हैं और सुबूह़ुन सुबह़ के वक़्त दूध पीना और माल से मुराद नौकर, चाकर या चौपायों के छोटे बच्चे होंगे। (2) अलम्मत बिहा सनतुन : वह क़ह़त़साली (अकाल) में गिरफ़्तार हो गई। सम्मर्तु अज्रहू : मैंने उसकी मज़दूरी को तरक़्क़ी दी, उसमें इज़ाफ़ा किया, इर्तअजब : वह माल अपनी ज़्यादती की वजह से मौजें (लहरे) मारने लगा, इर्तिअ़्जाज : ह़रकत व गर्दिश को कहते हैं।

इस किताब के कुल बाब (12) और (72) अहादीस हैं।

كتاب التوبة

तौबा का बयान

हदीस नम्बर 6952 से 7023 तक

तौबा और उसकी क़बूलियत

तौबा का बाब दरहक़ीक़त अल्लाह की बेपायाँ रहमत, उसके बेकरां अ़फ़्व और अपनी मख़्लूक़ से उसकी हद दर्जा मोहबबत का बाब है। इन्सान अल्लाह की अ़ता करदा रहनुमाई से हट कर गुनाह और नाफ़रमानी का इरतेकाब करता है। हर गुनाह और नाफ़रमानी का वबाल बहुत शदीद है। जब गुनाहगार पछताता है और अपने उसी रब्बे वाजिद की तरफ़ रूजू करता है (पलटता है) जिसकी उसने नाफ़रमानी की होती है तो वह उसे उसके गुनाह के वबाल से और उसकी अपनी बदअमली के बुरे नतीजे से बचा लेता है, फिर अ़जीब ये कि बन्दे के इस बच जाने पर सबसे ज़्यादा ख़ूश, बल्कि ख़ूद अ़ज़ाब से बच जाने वाले बन्दे से भी बढ़ कर उसका रब ख़ूश होता है जो उसे बचाता है।

इससे बढ़ कर ये कि अल्लाह ने अपने हर गुनाहगार बन्दे को ये भी सिखाया है कि वह पशेमानी के मौक़े पर उसी से अ़फ़्व मग़फ़िरत, यानी नाम–ए–आमाल से गुनाहों को मिटा देने के साथ रहमत भी तलब करे। इन्साफ़ का तक़ाज़ा तो ये है कि रहमत व नेमत का मुतालबा अच्छा काम करने के बाद होना चाहिए लेकिन अल्लाह ऐसा रहीम है कि वह गुनाह करने वाले को पछताने के मौक़े पर अ़फ़्वो मग़फ़िरत के ज़रिये से रहमत तलब करने का रास्ता दिखाता है।

उसने सारी कायनात में जितनी रहमत पैदा फ़रमाई है उसका हर जगह हर वक़्त मुज़ाहिरा होता रहता है, माएँ, इन्सानों की हों या जानवरों, दरिन्दों और परिन्दों की, हर वक़्त हर जगह अपने बच्चों पर रहमत व शफ़क़त लुटा रही होती हैं। इंसानों में दूसरे रिश्तों के नतीजे में भी रहमत व शफ़क़त का मुज़ाहिरा हो रहा होता है ये रहमत व शफ़क़त न हो तो कायनात बस्ती न रहे और एक लम्हे में उजड़ जाये। ये सारी रहमत अल्लाह की रहमत का सौवाँ (1/100) हिस्सा है। निन्यानवे हिस्से उसके पास हैं, वह अपनी मख़्लूक़ के लिये उन्हीं को लुटाता है और जब फ़ैसले का दिन आयेगा तो मख़्लूक़ात को अ़ता करदा रहमत के इस हिस्से को भी अपनी रहमत में शामिल कर देगा और फ़ैसला उसकी बुनियाद पर करेगा, उसने इब्तेदाए आफ़रीनश ही में फ़ैसला करते हुये अपने बारे में अपना फ़ैसला लिख कर रख लिया है: 'मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी।'

तौबा के हवाले से बुनियादी शर्त अल्लाह और उसकी बेपायाँ रहमत पर पुख़्ता यक़ीन, उसकी नाराज़ी के ख़ौफ़ के साथ पशेमानी का एहसास और सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ रूजू है। बल्कि अगर ख़ौफ़ के आ़लम में अल्लाह की नाराज़ी से बचने की नियत से कोई ऐसा काम भी कर लिया जो बजाये ख़ूद गुनाह है, अगरचे वह नहीं जानता कि ये गुनाह है, तो अल्लाह उसे भी तौबा के मुतरादिफ़

क़रार देते हुये न सिर्फ़ उसके सारे गुनाह बख़्श देता है बल्कि उसके आख़री गुनाह ही को उसकी बख़्शिश का ज़रिया बना देता है। यही सुलूक उस शख़्स के साथ होगा जिस ने सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के ख़ौफ़ की बिना पर अपने वारिसों को पाबन्द किया कि वह उसकी लाश को जला कर राख हवाओं में उड़ा दें और समन्दरों में बहा दें। ये वसीयत सिर्फ़ अल्लाह की रहमत के शायाने शान हैं कि तौबा करके फिर गुनाह का इरतेकाब करने वाला और बार बार गुनाह करके तौबा के लिये आ खड़ा होने वाला धुत्कार दिये जाने और ग़ज़ब और मलामत के सुलूक के बजाये अर्हमुर्राहिमीम की तरफ़ से इस नवेद का सज़ावार ठहरा दिया जाता है कि तू ये बात जान कर कि तेरा एक ही रब है जो गुनाह पर पकड़ भी लेता है और तौबा करने पर हमेशा बख़्श भी देता है, बार बार जो मेरे पास बख़्शिश के लिये आयेगा तू जा: 'जो चाहे करता फिर मैंने तुम्हें बख़्श दिया।' (हदीस: 6986) लेकिन रहमत गुनाहों की हौसला अफ़ज़ाई नहीं बननी चाहिए। अल्लाह इन्तेहाई ग़य्यूर है, इसलिये उसे फ़हश काम पसन्द नहीं, उसके सामने गुनाह पर इस्रार और अकड़ते हुये नहीं आना चाहिए। तौबा पर इस्रार और आजिज़ाना उसकी मदह, तारीफ़ और हम्द करते हुये आना चाहिए।

ये भी अल्लाह की रहमत का एक अन्दाज़ है कि गुनाह सरज़द हो जाने के बाद इन्सान नेक काम करे, ख़ुसूसन दिल से अल्लाह की इबादत करे, नमाज़ अदा करे तो उसे पता भी नहीं होता और गुनाह बख़्शा जा चुका होता है:(इन्नल हसनाति युज़्हिब्नस्सय्यिआत) गुनाह जितना बड़ा भी हो अगर गुनाहगार सच्चे दिल से तौबा करे तो अल्लाह की बख़्शिश उसकी दस्तगिरी करती है। सच्ची तौबा के लिये निकलने वाले सो आदमियों के क़ातिल की भी बख़्शिश कर दी जाती है। गुनाह पर पशेमानी और अल्लाह का ख़ौफ़ कुछ औक़ात इतना शदीद होता है कि इन्सान अपनी मर्ज़ी से ही दुनिया में मिलने वाली सज़ा को क़बूल कर लेता है। ये बहुत बड़ी तौबा है। जिन लोगों ने हबया-ए-रसूल, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (ﷺ) पर झूठा इल्ज़ाम लगाया उनका जुर्म सिर्फ़ क़ज़फ़ न था, रसूलुल्लाह(ﷺ) का दिल दुखाया, आपकी इज़्ज़त पर हमला किया, बैते नुबूवत पर छींटे फैंके। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस सख़्त आज़माइश का जिस अन्दाज़ में सामना फ़रमाया वह हर मुसलमान के लिये मश्अले राह है। जब हक़ीक़ते हाल की वज़ाहत के लिये वह्य आने में देर हो गई तो आप (ﷺ) ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से फ़रमाया: 'अगर तुम बरी हो तो अल्लाह अनक़रीब तुम्हारी बराअत वाज़ेह कर देगा। अगर ज़र्रा बराबर भी गुनाह हुआ है तो अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करो क्योंकि बन्दा जब गुनाह का ऐतराफ़ कर ले और तौबा कर ले तो अल्लाह तआला तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।' आप(ﷺ) ने ये फ़रमा कर गुनाहगार बन्दों के लिये जो अल्लाह का पैग़ाम है वह पहुँचाया। हज़रत आयशा (ﷺ) तो ताहिरा थीं, अल्लाह ने उनकी बराअत नाज़िल भी फ़रमा दी लेकिन तौबा की क़बूलियत का ऐलान एक बार फिर सारी उम्मत के

सामने आ गया। वह्य में ताख़ीर की हिकमत ये थी कि इल्ज़ाम तराशी करने वाले अपना इल्ज़ाम साबित करने के लिये पूरा ज़ोर लगायें, पूरा वक़्त मिलने के बावजूद वह अदना सी शहादत या कोई क़रीना भी पेश न कर सकें और सबके सामने वाज़ेह हो जाये कि ये एक बे'बुनियाद इल्ज़ाम था। इसके बाद अल्लाह की तरफ़ से बराअत भी, बोहतान तराशने वालों की सज़ा का भी एहतिमाम हो और जिस पाकबाज़ हस्ती पर झूठा इल्ज़ाम लगाकर उसका दिल दुखाया गया उसकी इज़्ज़त भी दोबाला हो जाये। अगर इल्ज़ाम लगते ही अल्लाह की तरफ़ से बराअत आ जाती तो शैतान की तरफ़ से फ़ित्ना अंगेज़ी जारी रहती और वह सब मक़ासिद हासिल न हो सकते जो नुज़ूले वह्य के ज़रिये से हासिल हुये। इस बाब की आख़री हदीस़ में बैते नबूवत की हिफ़ाज़त के हवाले से एक मोजिज़ाना (चमत्कारिक) पहलू बयान किया गया है। इस हदीस़ से साबित होता है कि बैते नबूवत पर इल्ज़ाम लगाने वालों का झूठ हर सूरत में खुल जाता है और बैते नबूवत से मुन्सलिक हर फ़र्द की इज़्ज़त व हुरमत की शहादत क़ुदरत ख़ूद फ़राहम करती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) की एक उम्मे वलद (कनीज़ जो आपके फ़रज़न्द इब्राहीम (ؓ) की वालिदा थीं) पर किसी शख़्स़ के हवाले से इसी तरह का इल्ज़ाम आइद किया गया। आप (ﷺ) ने उस शख़्स़ के बारे में जो ग़ालिबन कोई ग़ैर मुस्लिम गुलाम था, ये फ़ैसला फ़रमा दिया कि हज़रत अ़ली (ؓ) जाकर उसको क़त्ल कर दें। हज़रत अ़ली तशरीफ़ ले गये। वह एक कम गहरे कुएँ के पानी में ख़ूद को ठण्डा कर रहा था। हज़रत अ़ली ने हाथ से पकड़ कर उसे बाहर निकाला तो देखा कि उसका लिंग काटा हुआ था। हज़रत अ़ली ने उसको छोड़ दिया और आकर गवाही दी कि जिस शख़्स़ को मुलव्वस क़रार दिया गया था वह सिरे से इस क़ाबिल ही न था। शैतान और उसके चैले इस बारे में भी झूठे निकले और रूस्वा हुये।

كتاب التوبة

52. तौबा का बयान

बाब 1 : तौबा पर आमादा करना और उस पर ख़ुश होने का बयान

(1)بَابُ : فِي الْحَضِّ عَلَى التَّوْبَةِ وَالْفَرَحِ بِهَا

(6952) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) रसूले अकरम (ﷺ) से बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान है, मैं अपने बन्दे के साथ, उसके अपने बारे में गुमान के मुताबिक़ सुलूक करता हूँ और मैं उसके साथ होता हूँ, जहाँ वह मुझे याद करता है, अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा पर, उससे ज़्यादा ख़ुश होता है, जितना तुममें से कोई शख़्स उस वक़्त ख़ुश होता है जबकि वह जंगल में अपनी गुमशुदा सवारी पा लेता है और जो मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है, मैं उसके एक हाथ क़रीब होता हूँ और जो मुझसे एक हाथ क़रीब होता है, मैं उससे चार हाथ क़रीब होता हूँ और जब वह मेरी तरफ़ चलकर आता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़कर मुतवज्जह होता हूँ।'

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِي، صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ حَيْثُ يَذْكُرُنِي وَاللَّهِ لَلَّهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ مِنْ أَحَدِكُمْ يَجِدُ ضَالَّتَهُ بِالْفَلاَةِ وَمَنْ تَقَرَّبَ إِلَىَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا وَمَنْ تَقَرَّبَ إِلَىَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا وَإِذَا أَقْبَلَ إِلَىَّ يَمْشِي أَقْبَلْتُ إِلَيْهِ أُهَرْوِلُ " .

फ़ायदा : तौबा का मआनी लौटना, वापिस आना है और शरीअत की इस्तिलाह में बन्दे का अल्लाह

तआला की नाफ़र्मानी और मअसियत से, उसकी फ़र्मांबरदारी और इताअत की तरफ़ लौटना है, इस तौबा के लिए ज़रूरी है, इंसान गुनाह से बाज़ आ जाए, उसके इर्तिकाब पर नादिम (शर्मिन्दा) हो, दोबारा न करने का अज़्म (इरादा) और अहद करे, अगर किसी का हक़ दबाया है तो वह अदा करे और जुल्मो ज़्यादती माफ़ करवाए और बक़ौल इमाम इब्नुल मुबारक जिस जिस्म को हराम माल से पाला पोसा है, उसको ग़म व फ़िक्र और परेशानी से हल्का करे, ताकि पाक गोश्त नशोनुमा पाए और अल्लाह की फ़रहत और ख़ुशी उसके शायाने शान है, उसकी तावील और तअ्तील की ज़रूरत नहीं है, यहाँ तौबा की फ़ज़ीलत को एक मिसाल के ज़रिये समझाया गया है, नऊज़ुबिल्लाह! अल्लाह की फ़रह (खुश होने) को इंसान की मसर्रत से तश्बीह देना मत्लूब नहीं है, बाक़ी हदीस की तशरीह पिछली किताब के आग़ाज में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ أَحَدِكُمْ مِنْ أَحَدِكُمْ بِضَالَّتِهِ إِذَا وَجَدَهَا " .

(6953) अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला तुममें से किसी शख़्स की तौबा पर उससे ज़्यादा ख़ुश होता है, जो तुम्हें अपने गुमशुदा सवारी के मिलने पर होती है।'

तख़रीज 6953 : सुनन तिर्मिज़ी : 3538.

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَاهُ .

(6954) इमाम साहब एक और उस्ताद से इसके हम मआनी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِعُثْمَانَ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ الْحَارِثِ

(6955) हारिस बिन सुवैद (रह) बयान करते हैं, मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की बीमारपुर्सी के लिए हाज़िर हुआ, क्योंकि वह बीमार थे तो उन्होंने हमें दो हदीसें सुनाईं, एक अपनी तरफ़ से और एक रसूलुल्लाह (ﷺ) से उन्होंने बताया, मैंने रसूलुल्लाह

بْنِ، سُوَيْدٍ قَالَ دَخَلْتُ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ أَعُودُهُ وَهُوَ مَرِيضٌ فَحَدَّثَنَا بِحَدِيثَيْنِ حَدِيثًا عَنْ نَفْسِهِ وَحَدِيثًا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنْ رَجُلٍ فِي أَرْضٍ دَوِيَّةٍ مَهْلَكَةٍ مَعَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَنَامَ فَاسْتَيْقَظَ وَقَدْ ذَهَبَتْ فَطَلَبَهَا حَتَّى أَدْرَكَهُ الْعَطَشُ ثُمَّ قَالَ أَرْجِعُ إِلَى مَكَانِي الَّذِي كُنْتُ فِيهِ فَأَنَامُ حَتَّى أَمُوتَ . فَوَضَعَ رَأْسَهُ عَلَى سَاعِدِهِ لِيَمُوتَ فَاسْتَيْقَظَ وَعِنْدَهُ رَاحِلَتُهُ وَعَلَيْهَا زَادُهُ وَطَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَاللَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ الْمُؤْمِنِ مِنْ هَذَا بِرَاحِلَتِهِ وَزَادِهِ ".

(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, यक़ीनन अल्लाह अपने मोमिन बन्दे की तौबा से उससे ज़्यादा ख़ुश होता है कि एक आदमी हलाकतखेज़ जंगल में है, उसके पास उसकी सवारी है, जिस पर उसके खाने पीने की चीज़ें हैं, वह सोकर जागता है तो देखता है, उसकी सवारी जा चुकी है, वह उसको तलाश करता है, यहाँ तक कि उसको प्यास लग जाती है तो वह कहता है, मैं वापिस उस जगह जाता हूँ, जहाँ मैं पहले था और सो जाता हूँ, यहाँ तक कि फ़ौत हो जाऊँ, वह अपनी कलाई पर मरने के लिए सिर रखकर सो जाता है, फिर वह जागता है और उसकी सवारी उसके पास खड़ी होती है और उस पर उसका ज़ादे राह और उसका खाना और मशरूब भी मौजूद है तो अल्लाह को अपने मोमिन बन्दे की तौबा से, उससे ज़्यादा ख़ुशी होती है जितनी उसको अपनी सवारी और ज़ादे राह (सफ़र का सामान) मिलने से हुई है।'

तख़रीज 6955 : सहीह बुख़ारी : 6308; जामेअ तिर्मिज़ी : 49; 2497; 2498.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) दविय्यतुन और दाविया : जंगल, बियाबान, बंजर इलाक़ा (2) महलिका: वह जगह जहाँ हलाकत और तबाही का ख़तरा हो।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ قُطْبَةَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " مِنْ رَجُلٍ بِدَاوِيَّةٍ مِنَ الأَرْضِ " .

(6956) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, उसमें फ़ी अर्ज़ि दविय्यतिन की बजाये बिदाविय्यतिम् मिनल अर्ज़ है' मआनी एक ही है।

इसकी तख़रीज हदीस 6890 में गुज़र चुकी है।

(6957) हारिस बिन सुवैद (रह.) बयान करते हैं, मुझे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने दो हदीसें बयान कीं, एक रसूलुल्लाह (ﷺ) से और दूसरी अपनी तरफ़ से, उन्होंने बयान किया रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दे की तौबा से ज़्यादा ख़ुश होता है।' आगे ऊपर वाली रिवायत है। इमाम मुस्लिम (रह.) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की मरफ़ूअ हदीस बयान की है लेकिन दूसरी हदीस जो अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का क़ौल है उसको छोड़ दिया लेकिन इमाम बुख़ारी (रह.) वह हदीस भी बयान करते हैं फ़र्माते हैं मोमिन बन्दे से गुनाह सरज़द हो जाता है वह अपने गुनाहों को यूँ समझता है गोया कि वह पहाड़ के दामन में बैठा है और डर रहा है पहाड़ उस पर गिर न जाए और फ़ाजिर अपने गुनाहों को यूँ समझता है कि मक्खी उसकी नाक पर बैठ गई है तो वह उसको हाथ के इशारे से उड़ा देता है। (किताबुद्दअवात हदीस : 6308)
इसकी तख़रीज हदीस 6890 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ، بْنُ عُمَيْرٍ قَالَ سَمِعْتُ الْحَارِثَ بْنَ سُوَيْدٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ، حَدِيثَيْنِ أَحَدُهُمَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالآخَرُ عَنْ نَفْسِهِ فَقَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ " . بِمِثْلِ حَدِيثِ جَرِيرٍ .

(6958) हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि.) बयान करते हैं, 'यक़ीनन अल्लाह अपने बन्दे की तौबा से उस आदमी से भी ज़्यादा ख़ुश होता है, जो अपना ज़ादे राह (सफ़र का सामान) और मश्क (पानी का थैला) ऊँट पर लादता है, फिर चल पड़ता है, यहाँ तक कि जंगल की ज़मीन पर पहुँचता है तो उसे क़ैलूला

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا أَبُو يُونُسَ، عَنْ سِمَاكٍ، قَالَ خَطَبَ النُّعْمَانُ بْنُ بَشِيرٍ فَقَالَ " لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ مِنْ رَجُلٍ حَمَلَ زَادَهُ وَمَزَادَهُ عَلَى بَعِيرٍ ثُمَّ سَارَ حَتَّى كَانَ بِفَلاَةٍ مِنَ الأَرْضِ

فَأَدْرَكَتْهُ الْقَائِلَةُ فَنَزَلَ فَقَالَ تَحْتَ شَجَرَةٍ فَغَلَبَتْهُ عَيْنُهُ وَانْسَلَّ بَعِيرُهُ فَاسْتَيْقَظَ فَسَعَى شَرَفًا فَلَمْ يَرَ شَيْئًا ثُمَّ سَعَى شَرَفًا ثَانِيًا فَلَمْ يَرَ شَيْئًا ثُمَّ سَعَى شَرَفًا ثَالِثًا فَلَمْ يَرَ شَيْئًا فَأَقْبَلَ حَتَّى أَتَى مَكَانَهُ الَّذِي قَالَ فِيهِ فَبَيْنَمَا هُوَ قَاعِدٌ إِذْ جَاءَهُ بَعِيرُهُ يَمْشِي حَتَّى وَضَعَ خِطَامَهُ فِي يَدِهِ فَلَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ مِنْ هَذَا حِينَ وَجَدَ بَعِيرَهُ عَلَى حَالِهِ " . قَالَ سِمَاكٌ فَزَعَمَ الشَّعْبِيُّ أَنَّ النُّعْمَانَ رَفَعَ هَذَا الْحَدِيثَ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَأَمَّا أَنَا فَلَمْ أَسْمَعْهُ .

(दोपहर का आराम) का वक़्त हो जाता है और वह उतरकर एक पेड़ के नीचे क़ैलूला करता है, तो उसे गहरी नींद आ जाती है और उसका ऊँट खिसक जाता है, चुनाँचे वह बेदार होकर दौड़कर एक टीले पर चढ़ता है, लेकिन उसे कुछ नज़र नहीं आता, फिर वह कोशिश करके दूसरे टीले पर चढ़ता है और उसे कुछ नज़र नहीं आता, फिर वह तीसरे टीले पर चढ़ता है और उसे कुछ नज़र नहीं आता तो वह आगे बढ़कर उस जगह पर आ जाता है, जहाँ उसने दोपहर के वक़्त आराम किया था, वह बैठा ही होता है कि अचानक उसका ऊँट चलता हुआ उसके पास आ जाता है, यहाँ तक कि अपनी महार उसके हाथ में रख देता है, चुनाँचे यक़ीनन अल्लाह अपने बन्दे की तौबा से उस बन्दे की उस वक़्त की ख़ुशी से भी जो अपने ऊँट को उस हाल में देखकर हासिल हुई है, ज़्यादा ख़ुश होता है। सिमाक (रह.) कहते हैं, इमाम शअबी (रह.) का ख़याल है, हज़रत नोमान (रज़ि.) ने इस हदीस को नबी अकरम (ﷺ) की तरफ़ मंसूब किया था लेकिन मैंने उनसे यह नहीं सुना।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَجَعْفَرُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ جَعْفَرٌ حَدَّثَنَا وَقَالَ، يَحْيَى أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ إِيَادِ بْنِ لَقِيطٍ، عَنْ إِيَادٍ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كَيْفَ تَقُولُونَ بِفَرَحِ رَجُلٍ انْفَلَتَتْ مِنْهُ رَاحِلَتُهُ تَجُرُّ زِمَامَهَا بِأَرْضٍ قَفْرٍ لَيْسَ بِهَا طَعَامٌ

(6959) हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम उस इंसान की मसर्रत के बारे में क्या कहते हो जिससे उसकी सवारी छूट गई और अपनी महार (लगाम) एक सुनसान, बेआबो ग्याह ज़मीन जहाँ न खाना (ख़ूराक) है और न पानी खींच रही है और उसका खाना और

وَلاَ شَرَابٌ وَعَلَيْهَا لَهُ طَعَامٌ وَشَرَابٌ فَطَلَبَهَا حَتَّى شَقَّ عَلَيْهِ ثُمَّ مَرَّتْ بِجِذْلِ شَجَرَةٍ فَتَعَلَّقَ زِمَامُهَا فَوَجَدَهَا مُتَعَلِّقَةً بِهِ " . قُلْنَا شَدِيدًا يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَمَا وَاللَّهِ لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ مِنَ الرَّجُلِ بِرَاحِلَتِهِ " . قَالَ جَعْفَرٌ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ إِيَادٍ عَنْ أَبِيهِ .

पीना उस पर है, उसने उसको तलाश किया, यहाँ तक कि वह थक हार गया, फिर वह एक दरख़्त के तने से गुज़री तो उसकी महार अटक गई तो उसने उसे पेड़ के साथ अटका हुआ पाया?' हमने कहा उसको इंतिहाई शदीद ख़ुशी होगी, ऐ अल्लाह के रसूल! तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह की क़सम! अल्लाह को अपने बन्दे की तौबा से ख़ुशी, उस आदमी को अपनी सवारी के हासिल होने पर ख़ुशी से ज़्यादा होती है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، - وَهُوَ عَمُّهُ - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ حِينَ يَتُوبُ إِلَيْهِ مِنْ أَحَدِكُمْ كَانَ عَلَى رَاحِلَتِهِ بِأَرْضِ فَلاَةٍ فَانْفَلَتَتْ مِنْهُ وَعَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَأَيِسَ مِنْهَا فَأَتَى شَجَرَةً فَاضْطَجَعَ فِي ظِلِّهَا قَدْ أَيِسَ مِنْ رَاحِلَتِهِ فَبَيْنَا هُوَ كَذَلِكَ إِذَا هُوَ بِهَا قَائِمَةً عِنْدَهُ فَأَخَذَ بِخِطَامِهَا ثُمَّ قَالَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ اللَّهُمَّ أَنْتَ عَبْدِي وَأَنَا رَبُّكَ . أَخْطَأَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ "

(6960) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'यक़ीनन जब अल्लाह का कोई बन्दा उसकी तरफ़ लौट आता है तो उसको अपने बन्दे की तौबा से उससे ज़्यादा ख़ुशी होती है, जितनी तुममें से किसी को उस वक़्त होती है कि वह सुनसान जंगल में अपनी सवारी पर था तो वह उससे छूट गई, जबकि उसका खाना और पीना उसी पर था तो वह उससे सवारी से नाउम्मीद होकर, एक दरख़्त के पास आया और उसके साया में लेट गया, वह अपनी सवारी से मायूस हो चुका था, वह उस हालत में था कि वह अपनी सवारी को अपने पास खड़ी हुई पाता है, तो वह उसकी महार पकड़ लेता है, फिर मसर्रत की शिद्दत में मदहोश होकर कहता है, ऐ मेरे अल्लाह! तू मेरा बन्दा है और मैं तेरा रब हूँ, मसर्रत (ख़ुशी) के बेपायाँ होने की बिना पर वह चूक गया, (अल्फ़ाज़ उलट दिये)'

फ़ायदा : अगर इंसान ऐसे जंगल में सवार होकर जा रहा हो, जो बिलकुल सुनसान और बेआबो गियाह हो, जहाँ खाने पीने के लिए कोई चीज़ न मिलती हो और वहाँ उसकी सवारी गुम हो जाए, जिसके बग़ैर, वह जंगल का सफ़र तै न कर सकता हो और उसका खाने पीने का सारा सामान भी उस सवारी पर हो और वह उसको तलाश करते करते थक हार जाए और उसको सवारी को पा लेने की उम्मीद मायूसी में बदल जाए तो उसको अपनी मौत यक़ीनी नज़र आती है और फिर अचानक सामाने ज़िन्दगी समेत सवारी मिल जाए तो उसे नई ज़िन्दगी मिलने की बहुत ख़ुशी होती है, यहाँ तक कि वह मारे ख़ुशी से अपने अल्फ़ाज़ पर भी क़ाबू नहीं रख सकता और आपे से बाहर होकर, अपने रब को अपना बन्दा बनाकर उसका रब बन जाता है, गोया कि उसकी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता है और जब अल्लाह का बन्दा उसकी बन्दगी और फ़र्मांबरदारी की तरफ़ लौटता है और गुनाह और मअ़सियत की ज़िन्दगी से बचने का पक्का इरादा कर लेता है तो अल्लाह को उस बेपायाँ मसर्रत पाने वाले बन्दे से भी ज़्यादा ख़ुशी होती है। मालूम होता है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अल्लाह की अपने बन्दे की तौबा से मसर्रत और शादमानी का लिहाज अलग अलग मौक़ों पर किया है इसीलिए मौक़ा और महल के ऐतिबार से उसके बयान में कुछ फ़र्क़ वाक़ेअ हो गया है, अस़ल मक़्सद तो इंसान को तौबा पर आमादा करना और उसकी तर्ग़ीब देना है।

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ مِنْ أَحَدِكُمْ إِذَا اسْتَيْقَظَ عَلَى بَعِيرِهِ قَدْ أَضَلَّهُ بِأَرْضِ فَلاَةٍ " .

(6961) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'यक़ीनन अल्लाह को अपने बन्दे की तौबा से उससे ज़्यादा ख़ुशी होती है, जो तुममें से किसी को उस वक़्त होती है जब वह नींद से जागकर अपने उस ऊँट को पा लेता है जिसे वह जंगल में गुम कर चुका था।'

तख़रीज 6961 : स़हीह बुख़ारी : 6309.

وَحَدَّثَنِيهِ أَحْمَدُ الدَّارِمِيُّ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ، مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(6962) यही रिवायत इमाम स़ाहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

तख़रीज 6962 : इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।

बाब 2 :
तौबा करते हुए बख़्शिश तलब करना गुनाहों के साक़ित (झड़ना) हो जाने का सबब है

(2)

بَاب : فَضِيْلَةِ الْاِسْتِغْفَارِ

(6963) हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) ने मरते वक़्त बताया, मैंने तुमसे एक ऐसी चीज़ छुपाई थी जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'अगर तुम गुनाह न करते होते, अल्लाह ऐसी मख़्लूक़ पैदा करता जो गुनाह करती (और माफ़ी माँगती) वह उन्हें माफ़ कर देता।''

तख़रीज 6963 : जामेअ तिर्मिज़ी : 3539.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ قَيْسٍ، - قَاصِّ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ - عَنْ أَبِي صِرْمَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، أَنَّهُ قَالَ حِينَ حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ كُنْتُ كَتَمْتُ عَنْكُمْ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَوْلاَ أَنَّكُمْ تُذْنِبُونَ لَخَلَقَ اللَّهُ خَلْقًا يُذْنِبُونَ يَغْفِرُ لَهُمْ " .

फ़ायदा : इस हदीस का मतलब यह है, इंसान ख़्वाह जिस क़द्र भी नेकी का एहतिमाम करे और मअ़सियत से किनाराकश रहे, फिर भी वह नेकी करने और बुराई से बचने का हक़ अदा नहीं कर सकता, इसलिए उसे हर वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार का एहतिमाम करना चाहिए, लेकिन कुछ लोग इस हदीस का मफ़्हूम, अपनी ग़लत सोच और ग़लत फ़हमी या बदफ़हमी की बिना पर यह ले सकते थे कि गुनाह करके माफ़ी माँगना, गुनाह न करने से बेहतर है, इसलिए वह गुनाह पर दिलेर हो जाए और अल्लाह की मग़्फ़िरत पर एतिमाद कर ले, हालाँकि माफ़ी माँगना, या उसकी मोहलत व मौक़ा मिलना ज़रूरी नहीं है, जबकि मक़्सद यह है कि गुनाह हो जाए तो मायूस होकर तौबा व इस्तिग़फ़ार से रुकना नहीं चाहिए, तौबा व इस्तिग़फ़ार को हर हालत में अपनाना चाहिए। गोया मक़्सद तो तौबा की तर्ग़ीब व तहरीस है न कि गुनाह करने की तर्ग़ीब व तश्वीक़ (शोक दिलाने की)

(6964) हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'अगर तुम्हारे गुनाह न होते,

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عِيَاضٌ، - وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ

الْفِهْرِيُّ - حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ عُبَيْدِ بْنِ رِفَاعَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ الْقُرَظِيِّ، عَنْ أَبِي صِرْمَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لَوْ أَنَّكُمْ لَمْ تَكُنْ لَكُمْ ذُنُوبٌ يَغْفِرُهَا اللَّهُ لَكُمْ لَجَاءَ اللَّهُ بِقَوْمٍ لَهُمْ ذُنُوبٌ يَغْفِرُهَا لَهُمْ " .

जिनकी वजह से अल्लाह तुम्हें माफ़ करता है तो अल्लाह ऐसे लोगों को लाता, जिनसे गुनाह सरज़द होते और वह उन्हें माफ़ फ़र्माता।

तख़रीज 6964 : इसकी तख़रीज हदीस 6897 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ جَعْفَرٍ الْجَزَرِيِّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الأَصَمِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لَمْ تُذْنِبُوا لَذَهَبَ اللَّهُ بِكُمْ وَلَجَاءَ بِقَوْمٍ يُذْنِبُونَ فَيَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ فَيَغْفِرُ لَهُمْ " .

(6965) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुम गुनाह न करते तो अल्लाह तुम्हें ले जाता और ऐसे लोगों को लाता, जो गुनाह करके बख़्शिश तलब करते, तो वह उन्हें माफ़ कर देता।'

(3)

بَاب : فَضْلِ دَوَامِ الذِّكْرِ وَالْفِكْرِ فِيْ أُمُورِ الْآخِرَةِ، وَالْمُرَاقَبَةِ وَجَوَازِ تَرْكِ ذٰلِكَ فِي بَعْضِ الْأَوْقَاتِ، وَالِاشْتِغَالِ بِالدُّنْيَا

बाब 3 : हमेशा ज़िक्र करने और आख़िरत के मामलात पर ग़ौरो फ़िक्र करने और निगरानी व निगहदाश्त रखने की फ़ज़ीलत और कुछ औक़ात मुराक़बा को नज़र अंदाज़ कर देना और दुनियावी मामलात में मशग़ूल हो जाना।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَقَطَنُ بْنُ نُسَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - أَخْبَرَنَا جَعْفَرٌ، بْنُ

(6966) हज़रत हंज़ला उसय्यिदी (रज़ि.) जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के कातिबों (लिखने वालों) में से थे, बयान करते हैं, मुझे अबू बक्र (रज़ि.) मिले और पूछा, ऐ हंज़ला! कैसे

سُلَيْمَانَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ إِيَاسٍ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ حَنْظَلَةَ الأُسَيِّدِيِّ، قَالَ - وَكَانَ مِنْ كُتَّابِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ - لَقِيَنِي أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ كَيْفَ أَنْتَ يَا حَنْظَلَةُ قَالَ قُلْتُ نَافَقَ حَنْظَلَةُ قَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ مَا تَقُولُ قَالَ قُلْتُ نَكُونُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُذَكِّرُنَا بِالنَّارِ وَالْجَنَّةِ حَتَّى كَأَنَّا رَأْىَ عَيْنٍ فَإِذَا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَافَسْنَا الأَزْوَاجَ وَالأَوْلاَدَ وَالضَّيْعَاتِ فَنَسِينَا كَثِيرًا قَالَ أَبُو بَكْرٍ فَوَاللَّهِ إِنَّا لَنَلْقَى مِثْلَ هَذَا . فَانْطَلَقْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُلْتُ نَافَقَ حَنْظَلَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَمَا ذَاكَ " . قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ نَكُونُ عِنْدَكَ تُذَكِّرُنَا بِالنَّارِ وَالْجَنَّةِ حَتَّى كَأَنَّا رَأْىَ عَيْنٍ فَإِذَا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدِكَ عَافَسْنَا الأَزْوَاجَ وَالأَوْلاَدَ وَالضَّيْعَاتِ نَسِينَا كَثِيرًا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنْ لَوْ تَدُومُونَ عَلَى مَا تَكُونُونَ عِنْدِي وَفِي الذِّكْرِ لَصَافَحَتْكُمُ

हो? मैं ने कहा, हंज़ला मुनाफ़िक़ बन गया है, उन्होंने कहा सुब्हानल्लाह! क्या कह रहे हो? मैंने कहा, हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद होते हैं, आप दोज़ख़ और जन्नत याद दिलाते हैं, यहाँ तक कि वह गोया हमें नज़र आने लगते हैं और जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से चले जाते हैं और अपनी बीवियों बच्चों और जागीर या कारोबार में मशग़ूल हो जाते हैं तो बहुत कुछ भूल जाते हैं, अबू बक्र (रज़ि .) कहने लगे तो अल्लाह की क़सम! ऐसी कैफ़ियत से तो हम भी दो चार होते हैं, चुनाँचे मैं और अबू बक्र दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुँच गए, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हंज़ला मुनाफ़िक़ हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'यह क्या मामला है?' मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम आपके पास मौजूद होते हैं , आप हमें दोज़ख़ और जन्नत के ज़रिये वअ़ज़ व नसीहत फ़र्माते हैं कि वह हमारी आँखों के सामने हैं और जब हम आपके पास से चले जाते हैं, बीवियों बच्चों और कारोबारे हयात (दुनियावी कारोबार) में मशग़ूल हो जाते हैं तो बहुत कुछ भूल जाते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुम हमेशा इसी कैफ़ियत में रहो, जिस पर मेरे पास होते हो और ज़िक्र में लगे रहो तो तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में, फ़रिश्ते, तुमसे मुसाफ़ा करें, लेकिन

الْمَلاَئِكَةُ عَلَى فُرُشِكُمْ وَفِي طُرُقِكُمْ وَلَكِنْ يَا حَنْظَلَةُ سَاعَةً وَسَاعَةً " . ثَلاَثَ مَرَّاتٍ .

ऐ हंज़ला! ऐसा वक़्तन फ़ौक़तन (कभी–कभार) ही होता है।' तीन बार फ़र्माया
जामेअ तिर्मिज़ी : 20; हदीस : 2452; बाब : 59; हदीस : 2514; इब्ने माजा : 4239.

मुफ़रदातुल हदीस : आफ़स्ना : हम घुल मिल जाते हैं, मशग़ूल हो जाते हैं, अज़्ज़यआत, ज़ैअत की जमा है, जागीर, ज़मीन का कारोबार।

फ़ायदा : फ़रिश्तों का वज़ीफ़ा और काम हर वक़्त बग़ैर किसी सुस्ती और कमज़ोरी के ज़िक्रो फ़िक्र में मशग़ूल रहना है और शैतान का वज़ीफ़ा और काम हर वक़्त शर्र व फ़साद में लगे रहना है और इंसान बसा औक़ात ज़िक्रो फ़िक्र में मशग़ूल रहता है और कुछ औक़ात ज़रूरियाते ज़िन्दगी के हुसूल में वक़्त गुज़ारता है, हर वक़्त ज़िक्रो फ़िक्र में मशग़ूल रहना उसके लिए मुम्किन नहीं है, इसलिए हर वक़्त एक कैफ़ियत और हालत का न रहना, निफ़ाक़ नहीं है, कारोबारे ज़िन्दगी में मशग़ूल होना भी इसका फ़ितरी और तबई तक़ाज़ा है, बल्कि ज़िन्दगी के मामलात में हिदायाते इलाही को मल्हूज़ रखना भी ज़िक्र है, हाँ! ज़िन्दगी के अस्बाब हासिल करते वक़्त अल्लाह की नाफ़र्मानी से बचना ज़रूरी है।

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، الْجُرَيْرِيُّ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ حَنْظَلَةَ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَوَعَظَنَا فَذَكَّرَ النَّارَ - قَالَ - ثُمَّ جِئْتُ إِلَى الْبَيْتِ فَضَاحَكْتُ الصِّبْيَانَ وَلاَعَبْتُ الْمَرْأَةَ - قَالَ - فَخَرَجْتُ فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ وَأَنَا قَدْ فَعَلْتُ مِثْلَ مَا تَذْكُرُ . فَلَقِينَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ نَافَقَ حَنْظَلَةُ فَقَالَ " مَهْ " . فَحَدَّثْتُهُ بِالْحَدِيثِ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَأَنَا

(6967) हज़रत हंज़ला (रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे, तो आप(ﷺ) ने हमें नसीहत की और आग (जहन्नम) याद दिलाई, फिर मैं घर आ गया, बच्चों से हंसी मज़ाक़ किया और बीवी से अठखेलियाँ कीं, फिर मैं घर से निकला और अबू बक्र (रज़ि.) को मिला और उन्हें उन चीज़ों से आगाह किया, उन्होंने कहा, जो काम तुम बयान करते हो, यह तो मैं भी कर चुका हूँ, तो हम रसूलुल्लाह (ﷺ) को मिले और मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हंज़ला मुनाफ़िक़ हो गया, आपने फ़र्माया, 'बाज़ रहो, ऐसी बात मत करो।' तो मैंने आपको वाक़िया सुनाया। चुनाँचे अबू बक्र (रज़ि.) ने कहा, मैं भी इस जैसे काम कर चुका हूँ तो आपने फ़र्माया, 'ऐ हंज़ला!

قَدْ فَعَلْتُ مِثْلَ مَا فَعَلَ فَقَالَ " يَا حَنْظَلَةُ سَاعَةً وَسَاعَةً وَلَوْ كَانَتْ تَكُونُ قُلُوبُكُمْ كَمَا تَكُونُ عِنْدَ الذِّكْرِ لَصَافَحَتْكُمُ الْمَلاَئِكَةُ حَتَّى تُسَلِّمَ عَلَيْكُمْ فِي الطُّرُقِ ".

वक़्त फ़ौक़तन किसी किसी घड़ी अगर तुम्हारे दिल इस तरह रहें, जैसे ज़िक्र के वक़्त होते हैं तो फ़रिश्ते तुम्हारे साथ मुसाफ़ा करें, यहाँ तक कि तुम्हें रास्ता में सलाम कहें।'
इसकी तख़रीज हदीस 6900 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَعِيدٍ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ حَنْظَلَةَ التَّمِيمِيِّ الأُسَيِّدِيِّ الْكَاتِبِ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَذَكَّرَنَا الْجَنَّةَ وَالنَّارَ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِهِمَا .

(6968) हज़रत हंज़ला तमीमी, उसय्यिदी (रज़ि.) बयान करते हैं, जो आपके कातिब थे, हम नबी अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे, आपने हमें जन्नत और दोज़ख़ याद दिलाई, आगे ऊपर वाली रिवायत है।
इसकी तख़रीज हदीस 6900 में गुज़र चुकी है।

(4)
بَاب : فِىْ سِعَةِ رَحْمَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَاَنَّهَا سَبَقَتْ غَضَبَهُ

बाब 4 : अल्लाह तआला की रहमत की फरावानी और उसका उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब होना

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ الْخَلْقَ كَتَبَ فِي كِتَابِهِ فَهُوَ عِنْدَهُ فَوْقَ الْعَرْشِ إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي " .

(6969) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब अल्लाह तआला ने मख़्लूक को पैदा करना चाहा, अपने नविश्ता (लेख) में लिखा, जो उसके पास अ़र्श के ऊपर है, मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी।'
तख़रीज 6969 : सहीह बुख़ारी : 3194.

फ़ायदा : अल्लाह की रहमत और उसका ग़ज़ब उसकी शान के मुताबिक़ होगा, जिसकी कैफ़ियत और सूरत का हमें इल्म नहीं है, इसलिए उसके इंकार, तावील व तश्बीह की ज़रूरत नहीं, है और

अल्लाह की रह्मत पहले है और ग़ालिब भी है क्योंकि वह तो बग़ैर किसी इस्तिह्क़ाक़ के ह़ासिल हो रही है और वह हमारे अ़मल के नतीजे ही में ह़ासिल नहीं होती, इसका आग़ाज़ तो माँ के पेट में हो जाता है और उसका ग़ज़ब व नाराज़गी हमारे बुरे आ़माल का नतीजा है, जिसका आग़ाज सिन्ने शऊर और तमीज़ से होता है और रह्मत ग़ालिब भी है कि बदी का बदला एक है और नेकी का बदला कम अज़्कम दस गुना से सात सौ गुना से लेकर बिला ह़द व शुमार है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ سَبَقَتْ رَحْمَتِي غَضَبِي " .

(6970) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत करते हैं, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है, मेरी रह्मत मेरे ग़ज़ब से पहले है।'

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو ضَمْرَةَ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَطَاءِ، بْنِ مِينَاءَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَمَّا قَضَى اللَّهُ الْخَلْقَ كَتَبَ فِي كِتَابِهِ عَلَى نَفْسِهِ فَهُوَ مَوْضُوعٌ عِنْدَهُ إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي".

(6971) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा करने का फ़ैसला किया, अपने नविश्ता में अपने ऊपर लाज़िम क़रार दिया, जो उसके पास रखा हुआ है, मेरी रह्मत, मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब होगी।'

حَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " جَعَلَ اللَّهُ الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ فَأَمْسَكَ عِنْدَهُ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ وَأَنْزَلَ فِي الأَرْضِ جُزْءًا وَاحِدًا فَمِنْ ذَلِكَ الْجُزْءِ تَتَرَاحَمُ الْخَلاَئِقُ حَتَّى تَرْفَعَ الدَّابَّةُ حَافِرَهَا عَنْ وَلَدِهَا خَشْيَةَ أَنْ تُصِيبَهُ " .

(6972) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'अल्लाह तआ़ला ने रह्मत के सौ ह़िस्से ठहराए, चुनाँचे 99वे, अपने पास रोक लिए और ज़मीन में सिर्फ़ एक ह़िस्सा उतारा, उस एक ह़िस्से की बिना पर तमाम मख़्लूक़ एक दूसरे पर मेहरबानी करती है, यहाँ तक कि चौपाए अपने बच्चे से अपना पैर उठा लेता है, इस डर से कि उसको तक्लीफ़ न पहुँचे।'

फ़ायदा : इस ह़दीस में अल्लाह की रह़मत की वुस्अत और कसरत को समझाने के लिए, रह़मत के सौ ह़िस्से बनाए गए, जिनमें से 99वे अल्लाह के पास हैं और तमाम मख़्लूक़ात जिसका कोई ह़द व शुमार नहीं है के पास सिर्फ़ एक ह़िस्सा है, वरना ह़क़ीक़त के एतिबार से अल्लाह की रह़मत ला मह़दूद है और तमाम मख़्लूक़ात की रह़मत मह़दूद है और मह़दूद की ला मह़दूद से कोई निस्बत क़ायम ही नहीं हो सकती और मख़्लूक़ की रह़मत, रिक़्क़ते क़ल्बी (नर्म दिली) का नाम है और ग़ज़ब, ख़ून में हिद्दत और जोश के पैदा होने का नाम है, लेकिन अल्लाह की रह़मत और ग़ज़ब की कैफ़ियत और ह़ालत को जानना मुम्किन नहीं है, वह उसकी आला और अरफ़ा शान के मुताबिक़ है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " خَلَقَ اللَّهُ مِائَةَ رَحْمَةٍ فَوَضَعَ وَاحِدَةً بَيْنَ خَلْقِهِ وَخَبَأَ عِنْدَهُ مِائَةً إِلاَّ وَاحِدَةً" .

(6973) ह़ज़रत अबू हुरैरा(रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआ़ला ने सौ रह़मतें पैदा कीं, तो उनमें से एक को अपनी मख़्लूक़ में रख दिया और एक कम सौ अपने पास छुपा रखीं।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ لِلَّهِ مِائَةَ رَحْمَةٍ أَنْزَلَ مِنْهَا رَحْمَةً وَاحِدَةً بَيْنَ الْجِنِّ وَالإِنْسِ وَالْبَهَائِمِ وَالْهَوَامِّ فَبِهَا يَتَعَاطَفُونَ وَبِهَا يَتَرَاحَمُونَ وَبِهَا تَعْطِفُ الْوَحْشُ عَلَى وَلَدِهَا وَأَخَّرَ اللَّهُ تِسْعًا وَتِسْعِينَ رَحْمَةً يَرْحَمُ بِهَا عِبَادَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(6974) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'अल्लाह की सौ रह़मतें हैं, उनमें से सिर्फ़ एक उसने जिन्नों, इंसानों, हैवानों और कीड़ों मकोड़ों में उतारी है, चुनाँचे वह उसकी बिना पर एक दूसरे पर शफ़्क़त करते हैं, उसके सबब एक दूसरे पर रह़म करते हैं और उसके बाइस वह़शी (जंगली जानवर) अपनी औलाद पर शफ़्क़त करते हैं और अल्लाह ने 99वे रह़मतें मुअख़्ख़र कर दी हैं, उनके सबब क़ियामत के दिन अपने बन्दों पर रह़मत करेगा।'

तख़रीज 6974 : सुनन इब्ने माजा : 4293.

(6975) हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह की सौ रहमतें हैं, उनमें से एक रहमत की वजह से मख़्लूक़ एक दूसरे पर रहम करती हैं और 99वे क़ियामत के लिए हैं।'

حَدَّثَنِي الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ النَّهْدِيُّ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ لِلَّهِ مِائَةَ رَحْمَةٍ فَمِنْهَا رَحْمَةٌ بِهَا يَتَرَاحَمُ الْخَلْقُ بَيْنَهُمْ وَتِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ " .

फ़ायदा : दुनिया में सिर्फ़ एक रहमत का ज़हूर है, जिससे तमाम मख़्लूक़ फ़ैज़याब हो रही है और क़ियामत के दिन रहमत के हक़दार तो सिर्फ़ मोमिन होंगे तो उसका फ़ैज़ कितना वसीअ और आम होगा।

(6976) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(6977) हज़रत सलमान (रज़ि) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला ने जब आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया, सौ रहमतें पैदा कीं, हर रहमते आसमान व ज़मीन की पूराई भराई के बराबर है, चुनाँचे उनमें से एक रहमत ज़मीन में रखी, उसके सबब माँ अपनी औलाद पर शफ़्क़त करती है, वहशी और परिन्दे एक दूसरे पर शफ़्कत करते हैं, तो जब क़ियामत का दिन होगा, उस रहमत से उन सौ को मुकम्मल कर देगा।'

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ سَلْمَانَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ مِائَةَ رَحْمَةٍ كُلُّ رَحْمَةٍ طِبَاقَ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ فَجَعَلَ مِنْهَا فِي الأَرْضِ رَحْمَةً فَبِهَا تَعْطِفُ الْوَالِدَةُ عَلَى وَلَدِهَا وَالْوَحْشُ وَالطَّيْرُ بَعْضُهَا عَلَى بَعْضٍ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ أَكْمَلَهَا بِهَذِهِ الرَّحْمَةِ " .

حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ سَهْلٍ التَّمِيمِيُّ، -وَاللَّفْظُ لِحَسَنٍ - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ، حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، أَنَّهُ قَالَ قَدِمَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِسَبْىٍ فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ السَّبْىِ تَبْتَغِي إِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْىِ أَخَذَتْهُ فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَتَرَوْنَ هَذِهِ الْمَرْأَةَ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ " . قُلْنَا لاَ وَاللَّهِ وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لاَ تَطْرَحَهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَلَّهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هَذِهِ بِوَلَدِهَا " .

(6978) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से रिवायत है कि सूरतेहाल यह है, रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास क़ैदी लाये गए, चुनाँचे क़ैदियों में से एक औरत कुछ तलाश कर रही थी कि अचानक क़ैदियों में से उसे एक बच्चा मिला, उसने उसको पकड़कर अपने पेट से चिमटा लिया और उसे दूध पिलाया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें फ़र्माया, 'क्या तुम्हारा क्या ख़याल है? यह औरत अपने बच्चे को आग में फेंक देगी?' हमने कहा, नहीं! अल्लाह की क़सम! जब तक इसे न डालने का इख़्तियार है (यह नहीं डालेगी) चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह की अपने बन्दों पर इसकी अपने बच्चे पर से रहमत ज़्यादा है।' (यानी इस औरत की जो मुहब्बत अपने बच्चे से है उससे ज्यादा मुहब्बत अल्लाह की अपने बन्दों से है)
तख़रीज 6978 : सहीह बुख़ारी : 5999.

फ़ायदा : इस हदीस से मक़्सद अल्लाह की रहमत को वालिदा की रहमत से तश्बीह देना मक़्सद नहीं है, सिर्फ़ उसकी मुहब्बत और रहमत की ज़्यादती और वुस्अत बयान करना मत्लूब है कि वह अपने मोमिन बन्दों को नज़र अंदाज़ नहीं करेगा, अगर मोमिन बन्दे दोज़ख़ में कुछ वक़्त के लिए जाएँगे तो यह उनके बुरे अमलों और बुराइयों का नतीजा होगा और उसकी रहमत के नतीजे में दोज़ख़ से निकाल लिए जाएँगे।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ، وَابْنُ، حُجْرٍ جَمِيعًا عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ جَعْفَرٍ، قَالَ ابْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، أَخْبَرَنِي الْعَلاَءُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله

(6979) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर मोमिन अल्लाह की सज़ा और उक़ूबत को जान ले, (जो हर गुनाह के लिए तैयार है) तो कोई इंसान (अपने गुनाहों को देखकर) जन्नत की उम्मीद न रखे और अगर काफ़िर

عليه وسلم قَالَ " لَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ مَا عِنْدَ اللَّهِ مِنَ الْعُقُوبَةِ مَا طَمِعَ بِجَنَّتِهِ أَحَدٌ وَلَوْ يَعْلَمُ الْكَافِرُ مَا عِنْدَ اللَّهِ مِنَ الرَّحْمَةِ مَا قَنِطَ مِنْ جَنَّتِهِ أَحَدٌ".

अल्लाह की रहमत जान ले (जो उसके मोमिन बन्दों के लिए है) तो कोई इंसान उसकी जन्नत से मायूस न हो।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مَرْزُوقِ ابْنِ بِنْتِ مَهْدِيِّ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " قَالَ رَجُلٌ لَمْ يَعْمَلْ حَسَنَةً قَطُّ لأَهْلِهِ إِذَا مَاتَ فَحَرِّقُوهُ ثُمَّ اذْرُوا نِصْفَهُ فِي الْبَرِّ وَنِصْفَهُ فِي الْبَحْرِ فَوَاللَّهِ لَئِنْ قَدَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ لَيُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا لاَ يُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ فَلَمَّا مَاتَ الرَّجُلُ فَعَلُوا مَا أَمَرَهُمْ فَأَمَرَ اللَّهُ الْبَرَّ فَجَمَعَ مَا فِيهِ وَأَمَرَ الْبَحْرَ فَجَمَعَ مَا فِيهِ ثُمَّ قَالَ لِمَ فَعَلْتَ هَذَا قَالَ مِنْ خَشْيَتِكَ يَا رَبِّ وَأَنْتَ أَعْلَمُ . فَغَفَرَ اللَّهُ لَهُ " .

(6980) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'एक आदमी ने जिसने कभी कोई नेकी नहीं की थी, अपने घर वालों को कहा, जब वह मर जाए तो उसे जला देना, फिर उसकी आधी राख ख़ुश्की और आधी राख समुन्द्र में बिखेर देना, क्योंकि अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह ने उस पर गिरफ़्त कर सका तो उसे इस क़द्र शदीद अ़ज़ाब देगा, जो कायनात में से किसी को नहीं देगा तो जब वह आदमी फ़ौत हो गया, उन्होंने (घर वालों ने) उसके मश्वरा पर अ़मल किया, चुनाँचे अल्लाह ने ख़ुश्की को हुक्म दिया, उसने उसमें बिखरे हुए ज़र्रात को जमा कर दिये और समुन्द्र को हुक्म दिया, उसने उसमें जो ज़र्रात थे, उनको जमा कर डाला, फिर अल्लाह ने पूछा, ऐ इंसान! तूने यह काम क्यूँ किया? उसने अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे रब! तेरी खशिय्यत व डर की वजह से और तुझे ख़ूब इल्म है, तो अल्लाह ने उसे बख़्श दिया।'

तख़रीज 6980 : सहीह बुख़ारी : 7506.

फ़ायदा : यह इंसान मोमिन था और इसका ख़्याल था, मैंने कोई नेकी नहीं की, हालाँकि अल्लाह तआला ने उसे ख़ूब मालो दौलत से नवाज़ा था और औलाद भी दी थी, जिसके साथ वह बहुत अच्छा सुलूक करता था, लेकिन अपने गुनाहों के मुवाख़िज़ा के डर और ख़ौफ़ की वजह से होशो हवास पर

क़ाबू न रख सका, जिस तरह जंगल में अपनी सवारी और ज़ादे राह पाने वाला मुसाफ़िर अपनी ख़ुशी और मसर्रत में अपने होशो हवास पर क़ाबू न रख सका था, इसलिए एक ग़लत और इंतिहाई नागवार बात कह दी कि अगर अल्लाह ने मुझ पर क़ाबू पा लिया, या गिरफ़्त कर सका तो वह मुझे शदीद अ़ज़ाब देगा, चूँकि यह बात ख़शिय्यत के ग़ल्बे की बिना पर कही गई थी, इसलिए उसको माफ़ कर दिया गया, क्योंकि कामयाबी और कामरानी का मदार और इंहिसार तो अल्लाह के डर और ख़शिय्यत पर ही है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، قَالَ قَالَ لِيَ الزُّهْرِيُّ أَلاَ أُحَدِّثُكَ بِحَدِيثَيْنِ عَجِيبَيْنِ قَالَ الزُّهْرِيُّ أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَسْرَفَ رَجُلٌ عَلَى نَفْسِهِ فَلَمَّا حَضَرَهُ الْمَوْتُ أَوْصَى بَنِيهِ فَقَالَ إِذَا أَنَا مُتُّ فَأَحْرِقُونِي ثُمَّ اسْحَقُونِي ثُمَّ اذْرُونِي فِي الرِّيحِ فِي الْبَحْرِ فَوَاللَّهِ لَئِنْ قَدَرَ عَلَىَّ رَبِّي لَيُعَذِّبُنِي عَذَابًا مَا عَذَّبَهُ بِهِ أَحَدًا . قَالَ فَفَعَلُوا ذَلِكَ بِهِ فَقَالَ لِلأَرْضِ أَدِّي مَا أَخَذْتِ . فَإِذَا هُوَ قَائِمٌ فَقَالَ لَهُ مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ فَقَالَ خَشْيَتُكَ يَا رَبِّ - أَوْ قَالَ - مَخَافَتُكَ . فَغَفَرَ لَهُ بِذَلِكَ " .

(6981) मअ़मर (रह.) बयान करते हैं मुझे ज़ोहरी (रह.) ने कहा, क्या मैं तुम्हें दो अ़जीब हदीसें न सुनाऊँ? मुझे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बताया।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'एक आदमी ने अपने नफ़्स पर ज़्यादती की (मआसी और मुंकरात का इर्तिकाब किया) तो जब उसकी मौत का वक़्त आ पहुँचा, उसने अपने बेटों को वसिय्यत की और कहा, जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना, फिर मेरे जले हुए जिस्म को पीस डालना, फिर मेरी राख को समुन्द्र में उड़ा देना, अल्लाह की क़सम! अगर मेरे रब ने मुझ पर क़ाबू पा लिया तो मुझे इस क़द्र सख़्त अ़ज़ाब देगा जो किसी को नहीं दिया होगा तो उन्होंने उसके साथ यही सुलूक किया तो अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को फ़र्माया, जो लिया है वह अदा करो तो वह फ़ौरन खड़ा हो गया, तो अल्लाह तआ़ला ने उस पर पूछा, जो हरकत तूने की है, तुझे इस पर किस चीज़ ने आमादा किया? उसने अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे रब! तेरी ख़शिय्यत

या तेरे डर ने तो इस बिना पर अल्लाह तआला ने उसे बख़्श दिया।' ज़ोहरी ने मअ़मर से कहा था, क्या मैं तुम्हें दो अ़जीब ह़दीस न सुनाऊँ? उनमें से एक ऊपर वाली है और दूसरी ह़दीस नीचे रिवायत हुई है।

तख़रीज 6981 : सहीह बुख़ारी : 54; 3481; नसाई : 2078; इब्ने माजा : 4255.

(6982) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'एक औरत बिल्ली को बाँधे रखने की वजह से आग में गई, न तो उसने उसे खिलाया और न ही उसने उसे छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े मकोड़े खा लेती कि वह कमज़ोरी से मर गई।' ज़ोहरी (रह़.) ने कहा, मैंने यह दो ह़दीसें इसलिए सुनाई हैं, ताकि न तो कोई इंसान अल्लाह की रह़मत पर भरोसा करके गुनाहों से बेपरवाह हो और न ही गुनाहों के सबब अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद हो।

तख़रीज 6982 : इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।

قَالَ الزُّهْرِيُّ وَحَدَّثَنِي حُمَيْدٌ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " دَخَلَتِ امْرَأَةٌ النَّارَ فِي هِرَّةٍ رَبَطَتْهَا فَلاَ هِيَ أَطْعَمَتْهَا وَلاَ هِيَ أَرْسَلَتْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الأَرْضِ حَتَّى مَاتَتْ هَزْلاً " . قَالَ الزُّهْرِيُّ ذَلِكَ لِئَلاَّ يَتَّكِلَ رَجُلٌ وَلاَ يَيْأَسَ رَجُلٌ .

फ़ायदा : औरत का जहन्नम में दाख़िल होना, इंसान को गुनाहों को मामूली और ह़क़ीर समझने से होशियार करता है और आदमी का वाक़िया गुनाहों की वजह से अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीदी से बचाता है, इसलिए इंसान को गुनाहों के इर्तिकाब से परहेज़ करना और उन पर मुवाख़िज़ा से डरना चाहिए और अगर सरज़द हो जाएँ तो उसकी रह़मत से नाउम्मीद और मायूस नहीं होना चाहिए, तौबा, इस्तिग़फ़ार करनी चाहिए। गोया इंसान पर ख़ौफ़ और रजाअ (उम्मीद) दोनों का असर होना चाहिए।

(6983) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़र्माते हुए सुना, 'एक बन्दे ने अपने नफ़्स पर ज़्यादती की' आगे ऊपर वाली पहली ह़दीस है,

حَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ، سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنِي الزُّبَيْدِيُّ، قَالَ الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

عَوْفٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " أَسْرَفَ عَبْدٌ عَلَى نَفْسِهِ " . بِنَحْوِ حَدِيثِ مَعْمَرٍ إِلَى قَوْلِهِ " فَغَفَرَ اللَّهُ لَهُ " . وَلَمْ يَذْكُرْ حَدِيثَ الْمَرْأَةِ فِي قِصَّةِ الْهِرَّةِ وَفِي حَدِيثِ الزُّبَيْدِيِّ قَالَ " فَقَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لِكُلِّ شَىْءٍ أَخَذَ مِنْهُ شَيْئًا أَدِّ مَا أَخَذْتَ مِنْهُ " .

बिल्ली वाला वाक़िया बयान नहीं किया और ज़ुबैदी की हदीस में है, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने हर उस चीज़ को जिसने उसका कोई ज़र्रा भी लिया था, कहा उससे जो कुछ तूने लिया है, उसको अदा कर।'

तख़रीज 6983 : इसकी तख़रीज हदीस 6915 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، سَمِعَ عُقْبَةَ بْنَ عَبْدِ الْغَافِرِ، يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " أَنَّ رَجُلاً فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ رَاشَهُ اللَّهُ مَالاً وَوَلَدًا فَقَالَ لِوَلَدِهِ لَتَفْعَلُنَّ مَا آمُرُكُمْ بِهِ أَوْ لأُوَلِّيَنَّ مِيرَاثِي غَيْرَكُمْ إِذَا أَنَا مُتُّ فَأَحْرِقُونِي - وَأَكْثَرُ عِلْمِي أَنَّهُ قَالَ - ثُمَّ اسْحَقُونِي وَاذْرُونِي فِي الرِّيحِ فَإِنِّي لَمْ أَبْتَهِرْ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرًا وَإِنَّ اللَّهَ يَقْدِرُ عَلَىَّ أَنْ يُعَذِّبَنِي - قَالَ - فَأَخَذَ مِنْهُمْ مِيثَاقًا فَفَعَلُوا ذَلِكَ بِهِ وَرَبِّي فَقَالَ اللَّهُ مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا فَعَلْتَ فَقَالَ مَخَافَتُكَ . قَالَ فَمَا تَلاَفَاهُ غَيْرُهَا " .

(6984) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से बयान करते हैं कि, 'तुमसे पहले लोगों में से एक आदमी को अल्लाह ने माल और औलाद से नवाज़ा था, चुनाँचे उसने अपनी औलाद से कहा, जो मैं तुम्हें हुक्म देने वाला हूँ, लाज़िमन तुम उस पर अ़मल पैरा होगे या मैं अपनी विरासत तुम्हारे सिवा किसी और को दे दूँगा, जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना, रावी कहता है मेरा ज़न्ने ग़ालिब यही है कि उसने कहा, फिर मुझे पीस डालना और मुझे हवा में उड़ा देना, क्योंकि मैंने अल्लाह के यहाँ, कोई नेकी नहीं भेजी, ज़ख़ीरा नहीं की, क्योंकि अल्लाह मुझे अ़ज़ाब देने की क़ुदरत रखता है (अगर मुझे इसी हालत में दफ़न कर दिया गया) चुनाँचे उसने उनसे पुख़्ता अ़हद लिया, तो उन्होंने उसके साथ यही सुलूक किया, मेरे रब की क़सम! तो अल्लाह तआ़ला ने पूछा, जो काम तूने किया है, उस पर तुझे किस चीज़ ने

आमादा किया? उसने कहा, तेरे ख़ौफ़ ने तो उसे उस ख़ौफ़ के सिवा किसी और चीज़ ने नहीं बचाया, यानी उसके बुरे अ़मलों का तदारुक व इज़ाला ख़ौफ़े इलाही ने किया।'

तख़रीज 6984 : सहीह बुख़ारी : 6481; फ़ित्तौहीद, हदीस : 7508.

मुफ़रदातुल हदीस : राशह : उसको अ़ता किया, अगर रासह हो तो मआनी होगा (माल और औलाद का) सरदार बनाया। अब्तसिर : और हमज़ा को बाअ से बदल देते हैं, अब्तहिर : जमा किया, ज़ख़ीरा किया, यानी आगे भेजा। फ़मा तलाफ़ाहु ग़ैरूहा : उसके गुनाहों की तलाफ़ी और इज़ाला ख़ौफ़े इलाही ही ने किया।

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ قَالَ لِي أَبِي حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، كِلاَهُمَا عَنْ قَتَادَةَ، ذَكَرُوا جَمِيعًا بِإِسْنَادِ شُعْبَةَ نَحْوَ حَدِيثِهِ وَفِي حَدِيثِ شَيْبَانَ وَأَبِي عَوَانَةَ " أَنَّ رَجُلاً مِنَ النَّاسِ رَغَسَهُ اللَّهُ مَالاً وَوَلَدًا " . وَفِي حَدِيثِ التَّيْمِيِّ " فَإِنَّهُ لَمْ يَبْتَئِرْ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرًا " . قَالَ فَسَّرَهَا قَتَادَةُ لَمْ يَدَّخِرْ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرًا . وَفِي حَدِيثِ شَيْبَانَ " فَإِنَّهُ وَاللَّهِ مَا ابْتَأَرَ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرًا " . وَفِي حَدِيثِ أَبِي عَوَانَةَ " مَا امْتَأَرَ " . بِالْمِيمِ .

(6985) इमाम साहब अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों की सनदों से बयान करते हैं, शैबान और अबू अ़वाना की रिवायत है, 'लोगों में से एक आदमी को अल्लाह ने बहुत माल और औलाद दी।' और तैमी की हदीस है 'क्योंकि उसने अल्लाह के यहाँ कोई नेकी ज़ख़ीरा नहीं की' क़तादा (रह.) ने लम यब्तिर की तफ़्सीर लम यद्दख़िर की है, यानी जमा नहीं किया और शैबान की हदीस है 'क्योंकि उसने अल्लाह की क़सम! अल्लाह के यहाँ कोई नेकी जमा नहीं कराई।' और अबू अ़वाना की रिवायत में मब्तअर की जगह है। 'वमम्तअर' यानी बा की जगह मीम है, मआनी हर सूरत में एक ही है।

इसकी तख़रीज हदीस नं. 6917 में गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : रग़ सहुल्लाहु : अल्लाह ने उसको खुला और वाफ़िर दिया, यानी माल और औलाद दोनों बहुत दिये।

बाब 5 : गुनाहों से तौबा क़बूल होती है, अगरचे गुनाह और तौबा बार बार हों।

(5) بَاب : قَبُولِ التَّوْبَةِ مِنَ الذُّنُوبِ وَإِنْ تَكَرَّرَتِ الذُّنُوبُ وَالتَّوْبَةُ

(6986) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल से नक़्ल करते हुए फ़र्माया, 'एक बन्दे ने गुनाह किया, फिर कहा, ऐ अल्लाह! मेरा गुनाह बख़्श दे तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़र्माया, 'मेरे बन्दे ने एक गुनाह किया है और उसे पता है, उसका रब है जो गुनाह बख़्श देता है और गुनाह पर पकड़ करता है, फिर उसने दोबारा गुनाह किया, चुनाँचे कहा, ऐ मेरे रब! मुझे मेरा गुनाह बख़्श दे तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़र्माया, मेरे बन्दे ने एक गुनाह किया है और उसे इल्म है, उसका रब है जो गुनाह बख़्श देता है और गुनाह पर गिरफ़्त भी करता है, फिर उसने तीसरी बार गुनाह किया और अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे रब! मुझे मेरा गुनाह बख़्श दे तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़र्माया, मेरे बन्दे ने एक गुनाह किया है और उसने जान लिया है, उसका रब है जो गुनाह बख़्श देता है और उस पर गिरफ़्त भी कर सकता है, जो चाहे अ़मल करे, (माफ़ी माँग) मैं ने तुझे माफ़ी दे दी,' अ़ब्दुल आ़ला कहते हैं, मुझे याद नहीं है, आपने तीसरी बार कहा, या चौथी बार 'जो चाहे अ़मल कर।'

तख़रीज 6986 : सहीह बुख़ारी : 7507.

حَدَّثَنِي عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِيمَا يَحْكِي عَنْ رَبِّهِ عَزَّ وَجَلَّ قَالَ " أَذْنَبَ عَبْدٌ ذَنْبًا فَقَالَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي . فَقَالَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَذْنَبَ عَبْدِي ذَنْبًا فَعَلِمَ أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِالذَّنْبِ . ثُمَّ عَادَ فَأَذْنَبَ فَقَالَ أَىْ رَبِّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي . فَقَالَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى عَبْدِي أَذْنَبَ ذَنْبًا فَعَلِمَ أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِالذَّنْبِ . ثُمَّ عَادَ فَأَذْنَبَ فَقَالَ أَىْ رَبِّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي . فَقَالَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَذْنَبَ عَبْدِي ذَنْبًا فَعَلِمَ أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِالذَّنْبِ وَاعْمَلْ مَا شِئْتَ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكَ " . قَالَ عَبْدُ الأَعْلَى لاَ أَدْرِي أَقَالَ فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ " اعْمَلْ مَا شِئْتَ " .

(6987) इमाम स़ाहब (रह.) एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं।
इसकी तखरीज पहले गुज़र चुकी है।

قَالَ أَبُو أَحْمَدَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ زَنْجُويَهْ الْقُرَشِيُّ الْقُشَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، بْنُ حَمَّادٍ النَّرْسِيُّ بِهَذَا الإِسْنَادِ .

फ़ायदा : एक इंसान तहे दिल से गुनाह से तौबा करता है और यह इरादा करता है, आइन्दा मैं इस गुनाह को नहीं करूँगा , लेकिन फिर शैत़ान या नफ़्स से मग़लूब (पराजय) होकर गुनाह कर बैठता है और उस पर पशेमान होकर, तहे दिल से फिर तौबा करता है और अ़ज़्म बिल्जज़्म (पक्का इरादा) करता है, आइन्दा मैं इस गुनाह को नहीं करूँगा लेकिन फिर नफ़्स या शैत़ान या कोई बुरा साथी ग़ालिब आ जाता है और वह गुनाह कर बैठता है तो इस त़रह़ बार बार गुनाह और तौबा करता है तो यह तौबा क़बूल होगी या एक गुनाह करता है और इससे ख़ालिस़ तौबा कर लेता है, फिर कोई और गुनाह कर लेता है, इससे तौबा कर लेता है, फिर कोई और गुनाह कर बैठता है, हर बार गुनाह बदल जाता है तो फिर भी तौबा क़बूल हो जाती है, चाहे इस त़रह़ सौ बार गुनाह हो जाए तौबा क़बूल होती रहेगी बशर्ते कि अ़मदन (जान बूझकर) बग़ैर किसी जज़्ब–ए–नफ़्स शैत़ान बुरे साथी के ग़ल्बे के गुनाह न करे।

(6988) एक वाइज़, ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से बयान करता है कि उन्होंने बताया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना 'एक बन्दे ने एक गुनाह किया, ऊपर वाली ह़दीस बयान की, तीन बार ज़िक्र किया, उसने एक गुनाह किया और तीसरी बार कहा, मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया, जो चाहे वह अ़मल करे (बख़्शिश त़लब करता रहे।)'
इसकी तखरीज पहले गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنِي أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ أَبِي طَلْحَةَ قَالَ كَانَ بِالْمَدِينَةِ قَاصٌّ يُقَالُ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ - قَالَ - فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ عَبْدًا أَذْنَبَ ذَنْبًا " . بِمَعْنَى حَدِيثِ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ . وَذَكَرَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ " أَذْنَبَ ذَنْبًا " . وَفِي الثَّالِثَةِ " قَدْ غَفَرْتُ لِعَبْدِي فَلْيَعْمَلْ مَا شَاءَ".

(6989) ह़ज़रत अबू मूसा, नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल रात को अपना हाथ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، قَالَ

سَمِعْتُ أَبَا عُبَيْدَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ النَّهَارِ وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ اللَّيْلِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا" .

फैलाता है, ताकि दिन को गुनाह करने वाला लौट आए और दिन को अपना हाथ फैलाता है ताकि रात को गुनाह करने वाला रुजूअ कर ले, यहाँ तक कि सूरज मग़रिब (पश्चिम) से निकलेगा।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(6990) इमाम स़ाहब (रह़.) यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला दिन रात की हर घड़ी में गुनाहगार की तौबा क़बूल करने के लिए आमादा रहता है और तौबा की क़ुबूलियत का यह सिलसिला क़ियामत तक क़ायम रहेगा।

(6) بَاب : غَيْرَةِ اللَّهِ تَعَالَى وَتَحْرِيمِ الْفَوَاحِشِ

बाब 6 : अल्लाह तआ़ला की ग़ैरत और बेह़याइयों की हुर्मत का बयान

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللَّهِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ وَلَيْسَ أَحَدٌ أَغْيَرَ مِنَ اللَّهِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ" .

(6991) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (बिन मसऊ़द) (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किसी को तारीफ़ पसंदीदा नहीं है, इसी वजह से उसने ख़ुद अपनी तारीफ़ की है और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कोई ग़ैरत वाला नहीं है, इसी वजह से उसने बेह़याई करने से रोका है, उनको ह़राम क़रार दिया है।'

स़ह़ीह़ बुख़ारी : 5220; फ़ित्तौह़ीद : 7403.

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला अपने मख़्लूक़ात की मदह़ व सना का मोह़ताज नहीं है और न ही उसकी मदह़ से उसे कुछ मफ़ाद (फ़ायदा) ह़ासिल हाता है और न ह़म्दो सना के छोड़ने से उसे कुछ नुक़्सान

पहुँचता है, लेकिन उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ और ह़म्दो सना से इंसान को अज्रो सवाब मिलता है, उसके दरजात व मर्तबे बुलंद होते हैं, इस त़रह़ अल्लाह तआ़ला इंसान के दरजात और मर्तबे बुलंद करने की ख़ातिर अपनी मदह़ और तारीफ़ पसंद करता है उसकी अपनी कोई ग़र्ज़ या मफ़ाद उससे वाबस्ता नहीं है। लेकिन इंसान यह नहीं जानता, मुझे उसकी ह़म्दो सना किन अल्फ़ाज़ से करना चाहिए, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उसको सिखाने और बताने के लिए अपनी ख़ुद तारीफ़ बयान की, ताकि इंसान उसके मुताबिक़ तारीफ़ करे, अज्रो सवाब ह़ासिल करे, उसके अंदर गुनाहों से परहेज़ करने का जज़्बा उभरे और उसके ह़ुक़ूक़ व फ़राइज़ को अदा करने का मलका पैदा हो, ख़्याल रहे अल्लाह की मुह़ब्बत और ग़ैरत उसके शायाने शान है, इंसान की मुह़ब्बत और ग़ैरत जैसी नहीं है, इसलिए यह तावील करने की ज़रूरत नहीं है कि इनसे मुराद उनके नताइज और समरात या लवाज़िम हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ أَحَدُ أَغْيَرَ مِنَ اللَّهِ وَلِذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلاَ أَحَدُ أَحَبَّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللَّهِ " .

(6992) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कोई ग़ैरत वाला नहीं है, इसलिए उसने ज़ाहिर और छुपी बेह़याइयों को ह़राम क़रार दिया है और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किसी को तारीफ़ पसंद नहीं है।'

इसकी तखरीज पहले ह़दीस 6923 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، يَقُولُ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ، يَقُولُ قُلْتُ لَهُ آنْتَ سَمِعْتَهُ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ نَعَمْ وَرَفَعَهُ أَنَّهُ قَالَ " لاَ أَحَدَ أَغْيَرُ مِنَ اللَّهِ وَلِذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلاَ أَحَدُ أَحَبَّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللَّهِ وَلِذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ " .

(6993) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) मरफ़ूअ़न रिवायत बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कोई ग़य्यूर नहीं है, इसलिए उसने खुली और छुपी बेह़याइयों को ह़राम क़रार दिया है और न अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किसी को अपनी तारीफ़ पसंद है, इसीलिए उसने अपनी तारीफ़ ख़ुद फ़र्माई है।'

तख़रीज 6993 : सहीह बुख़ारी : 4634; बाब (इन्नमा ह़र्रमा रब्बियल फ़वाह़िश मा ज़हर मिन्हा वमा बत़न) : 4637; तिर्मिज़ी : 96; ह़दीस : 3530.

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ وَلَيْسَ أَحَدٌ أَغْيَرَ مِنَ اللَّهِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ وَلَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ الْعُذْرُ مِنَ اللَّهِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ أَنْزَلَ الْكِتَابَ وَأَرْسَلَ الرُّسُلَ

(6994) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज्ज व जल्ल से ज़्यादा किसी को अपनी तारीफ़ पसंद नहीं है, इस वजह से उसने अपनी तारीफ़ ख़ुद की है और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कोई ग़य्यूर (ग़ैरतमंद) नहीं है, इस वजह से उसने बेहयाईयों को हराम ठहराया है और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किसी को उ़ज़्र क़ुबूल करना या उज़्र व बहाना ख़त्म करना पसंद नहीं है, इस ख़ातिर उसने किताबें उतारी हैं और रसूल भेजे हैं।

मुफ़रदातुल हदीस : व लैस अहदुन अहब्ब इलैहिल उ़ज़्रु मिनल्लाहि : उ़ज़्र का मआ़नी मअ़ज़िरत भी हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला को मअ़ज़िरत पेश करना बहुत पसंद है, क्योंकि यह तौबा ही की एक सूरत है और तौबा का तरीक़ा बयान करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताबों और रसूलों का इंतिज़ाम किया है और उ़ज़्र का मआ़नी, उसका उ़ज़्र और बहाना ख़त्म करना भी मुराद हो सकता है और इसलिए अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताबों और रसूलों का इंतिज़ाम किया है, ताकि किसी के पास कोई उज़्र और बहाना रह न जाए कि मुझे तो पता नहीं था, मैं तो बेख़बर और नाआशना था, तेरी हिदायात व तालीमात से आगाह न था।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ حَجَّاجِ بْنِ أَبِي، عُثْمَانَ قَالَ قَالَ يَحْيَى وَحَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ يَغَارُ وَإِنَّ الْمُؤْمِنَ يَغَارُ وَغَيْرَةُ اللَّهِ أَنْ يَأْتِيَ الْمُؤْمِنُ مَا حَرَّمَ عَلَيْهِ " .

(6995) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआ़ला ग़ैरत खाता है और मोमिन भी ग़ैरत खाता है और अल्लाह उससे ग़ैरत खाता है कि उसका मोमिन बन्दा, हरामकर्दा उमूर का इर्तिकाब करे।'

तख़रीज 6995 : सहीह बुख़ारी : 5222, 5223; तिर्मिज़ी : 1168.

(6996) हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र(रज़ि.) बयान करती हैं, उसने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'अल्लाह तआला से ज़्यादा ग़ैरत वाली कोई चीज़ नही है।'
इसकी तखरीज पहले गुज़र चुकी है।

قَالَ يَحْيَى وَحَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، حَدَّثَهُ أَنَّ أَسْمَاءَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَتْهُ أَنَّهَا، سَمِعَتْ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَيْسَ شَىْءٌ أَغْيَرَ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ " .

(6997) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से बयान करते हैं , फिर हदीस नं. 36 बयान की, उसके साथ हज़रत अस्मा की रिवायत बयान नहीं की।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ، وَحَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. بِمِثْلِ رِوَايَةِ حَجَّاجٍ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ خَاصَّةً وَلَمْ يَذْكُرْ حَدِيثَ أَسْمَاءَ .

(6998) हज़रत अस्मा (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से बयान करती हैं कि आपने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से ज़्यादा ग़य्यूर कोई चीज़ नहीं है।'
तख़रीज 6998 : इसकी तख़रीज हदीस 6927 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ يَحْيَى، بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ أَسْمَاءَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لاَ شَىْءَ أَغْيَرُ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ " .

(6999) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'मोमिन ग़ैरत खाता है और अल्लाह की ग़ैरत बहुत शदीद है।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " الْمُؤْمِنُ يَغَارُ وَاللَّهُ أَشَدُّ غَيْرًا "

(7000) इमाम स़ाहब (रह़.) यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ الْعَلاَءَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

Sherkhan
9825 696 131

बाब 7 : अल्लाह तआला का फ़र्मान है, 'नेकियाँ बुराइयों को ख़त्म कर देती हैं'

(7) بَاب : قَوْلِهِ تَعَلَى اِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو كَامِلٍ فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ الْجَحْدَرِيُّ كِلاَهُمَا عَنْ يَزِيدَ، بْنِ زُرَيْعٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كَامِلٍ - حَدَّثَنَا يَزِيدُ، حَدَّثَنَا التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَجُلاً، أَصَابَ مِنِ امْرَأَةٍ قُبْلَةً فَأَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ لَهُ ذَلِكَ - قَالَ - فَنَزَلَتْ { أَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَىِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ} قَالَ فَقَالَ الرَّجُلُ أَلِيَ هَذِهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " لِمَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ أُمَّتِي ".

(7001) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी ने एक औ़रत का बेसा (किस) लिया, चुनाँचे नबी अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपके सामने उसका ज़िक्र किया, उस पर यह आयत उतरी।' दिन के दोनों किनारों और रात की घड़ियों में नमाज़ क़ायम कीजिए, बिला शुब्हा नेकियाँ बुराइयों को ख़त्म कर देती हैं, यह याद रखने वालों के लिए एक याद देहानी है।' (सूरह हूद आयत : 114)

तो उस आदमी ने पूछा, क्या यह मेरे लिए है? ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़र्माया, 'मेरी उम्मत को जो फ़र्द भी इस पर अ़मल करे, उसके लिए है।

तख़रीज 7001 : सहीह बुख़ारी : 526, तफ़्सीर : 4687; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3113; सुनन इब्ने माजा : 1398; 4254.

फ़ायदा : एक औ़रत एक दुकानदार के पास, खजूरें ख़रीदने आई, दुकानदार अच्छी खजूरें देने के बहाने उसे अपने घर ले गया और उसके साथ बोस व किनार किया, वह एक मुजाहिद की बीवी थी, फिर उसे अपने जुर्म का एहसास हुआ तो वह हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, दोनों ने ख़ामोशी इख़्तियार करने और अपने नफ़्स की पर्दापोशी करके तौबा करने की तल्क़ीन की, लेकिन उसकी बेक़रारी और बेचैनी ने उसे चैन न लेने दिया, वह आप(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो गया, आपने फ़र्माया, क्या तुमने एक मुजाहिद की उसके घर वालों के साथ उस अंदाज़ से न्याबत की है? उसे इंतिहाई सदमा हुआ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सिर झुका लिया, काफ़ी वक़्त

गुज़रने के बाद ऊपर वाली आयात नाज़िल हुई, तरफ़यिन्नहारि (दिन के दोनों अत्राफ़) से मुराद सुबह शाम हैं, इसलिए सुबह व शाम की नमाज़ की तरफ़ इशारा है और ज़ुलफ़न, ज़ुल्फ़तुन की जमा है, जिससे मुराद रात का वह हिस्सा है जो दिन से मुत्तसिल है, यानी रात का इब्तिदाई या आख़िरी हिस्सा, इशा की नमाज़ या तहज्जुद की नमाज़ मुराद है. नेकियाँ बुराइयों को दूर करती हैं, के तीन मफ़्हूम हैं (1) नेकियाँ गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनती हैं और उनसे गुनाहों की नहूसत दूर हो जाती है (2) नेकियाँ करने से इंसान की तबीयत में, बुराई से नफ़रत पैदा हो जाती है और उनके छोड़ने की ताक़त पैदा हो जाती है। (3) जहाँ नेकी होगी, वहाँ ख़ुशहाली पैदा होगी, गुनाह दूर होंगे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ، عَنِ ابْنِ، مَسْعُودٍ أَنَّ رَجُلاً، أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَنَّهُ أَصَابَ مِنِ امْرَأَةٍ إِمَّا قُبْلَةً أَوْ مَسًّا بِيَدٍ أَوْ شَيْئًا كَأَنَّهُ يَسْأَلُ عَنْ كَفَّارَتِهَا - قَالَ - فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ يَزِيدَ .

(7002) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी नबी अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बताया, उसने एक औरत का बोसा लिया, या हाथ से उसे छुआ है या कोई हरकत की है और गोया उसके कफ़्फ़ारा के बारे में पूछा है तो अल्लाह तआला ने आयत उतारी। आगे ऊपर वाली रिवायत है।

इसकी तखरीज हदीस 6932 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَ أَصَابَ رَجُلٌ مِنِ امْرَأَةٍ شَيْئًا دُونَ الْفَاحِشَةِ فَأَتَى عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَعَظَّمَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَتَى أَبَا بَكْرٍ فَعَظَّمَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ يَزِيدَ وَالْمُعْتَمِرِ .

(7003) इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, एक मर्द ने ज़िना से कमतर कोई हरकत, एक औरत के साथ की, फिर वह उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास आया, उन्होंने उसे बड़ा गुनाह क़रार दिया, फिर अबू बक्र (रज़ि.) के पास आया, उन्होंने भी उसे उसके लिए बड़ा गुनाह ठहराया, फिर वह नबी अकरम (ﷺ) के पास आया, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

इसकी तखरीज हदीस 6932 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى -قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، وَالأَسْوَدِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي عَالَجْتُ امْرَأَةً فِي أَقْصَى الْمَدِينَةِ وَإِنِّي أَصَبْتُ مِنْهَا مَا دُونَ أَنْ أَمَسَّهَا فَأَنَا هَذَا فَاقْضِ فِيَّ مَا شِئْتَ . فَقَالَ لَهُ عُمَرُ لَقَدْ سَتَرَكَ اللَّهُ لَوْ سَتَرْتَ نَفْسَكَ - قَالَ - فَلَمْ يَرُدَّ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا فَقَامَ الرَّجُلُ فَانْطَلَقَ فَأَتْبَعَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً دَعَاهُ وَتَلاَ عَلَيْهِ هَذِهِ الآيَةَ { أَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَىِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ} فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ يَا نَبِيَّ اللَّهِ هَذَا لَهُ خَاصَّةً قَالَ " بَلْ لِلنَّاسِ كَافَّةً " .

(7004) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी नबी अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैंने मदीना के आख़िरी किनारे में एक औ़रत से ताल्लुक़ात क़ायम किये बग़ैर उसको पकड़कर उससे फ़ायदा उठाया है तो मैं आपके पास हाज़िर हूँ आप मेरे बारे में जो चाहें फ़ैसला करें तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसे कहा, अल्लाह ने तेरी पर्दापोशी की थी, ऐ काश! तू भी अपने नफ़्स की पर्दापोशी करता लेकिन नबी अकरम (ﷺ) ने उसे कोई जवाब न दिया तो वह आदमी उठकर चला गया, तो नबी अकरम (ﷺ) ने उसके पीछे एक आदमी उसको बुलाने के लिए भेजा और उसे यह आयत सुनाई।' दिन के दोनों अत्राफ़ किनारों में नमाज़ क़ायम कीजिए और रात की घड़ियों में बिला शुब्हा नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती है, यह याद देहानी हासिल करने वालों के लिए याद देहानी है।' तो लोगों में से एक आदमी ने पूछा, 'ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! यह ख़ास तौर पर उसके लिए है? आपने फ़र्माया, 'बल्कि सब लोगों के लिए है।'

अबूदाऊद : 4468; तिर्मिज़ी : 3112.

मुफ़रदातुल हदीस : आलज्तुम्रअतन : एक औ़रत से लुत्फ़ अंदोज़ हुआ हूँ मुआनक़ा और बोसा मुराद है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ الْحَكَمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْعِجْلِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ،

(7005) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत करते हैं, जैसाकि वह ऊपर वाली अहवस़ की रिवायत गुज़री है और

يُحَدِّثُ عَنْ خَالِهِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمَعْنَى حَدِيثِ أَبِي الأَحْوَصِ وَقَالَ فِي حَدِيثِهِ فَقَالَ مُعَاذٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا لِهَذَا خَاصَّةً أَوْ لَنَا عَامَّةً قَالَ " بَلْ لَكُمْ عَامَّةً".

इस हदीस में यह है, हज़रत मुआज़ (रज़ि. ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! यह उस शख़्स के लिए ख़ास है, या हम सबके लिए है? आपने फ़र्माया, 'बल्कि तुम सबके लिए आम है।'
इसकी तख़रीज हदीस 6935 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ إِسْحَاقَ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسٍ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَصَبْتُ حَدًّا فَأَقِمْهُ عَلَىَّ - قَالَ - وَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَصَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا قَضَى الصَّلاَةَ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ حَدًّا فَأَقِمْ فِيَّ كِتَابَ اللَّهِ . قَالَ " هَلْ حَضَرْتَ الصَّلاَةَ مَعَنَا " . قَالَ نَعَمْ . قَالَ " قَدْ غُفِرَ لَكَ " .

(7006) हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी नबी अकरम (ﷺ) के पास आया और पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैंने गुनाह का इर्तिकाब किया है, आप मुझ पर हद क़ायम कीजिए और नमाज़ का वक़्त हो गया तो उसने अल्लाह के रसूल (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी, जब उसने नमाज़ अदा कर ली, कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं ने गुनाह किया है, मुझ पर अल्लाह का क़ानून (हुक्म) जारी फ़रमाइये, आपने पूछा, 'क्या तू हमारे साथ नमाज़ में मौजूद था?' उसने कहा, जी हाँ! आपने फ़र्माया 'तुझे बख़्शा दिया गया है।'
तख़रीज 7006 : सहीह बुख़ारी : 6823.

फ़ायदा : इस पर उलमा-ए-उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि अगर कोई इंसान ऐसे गुनाह का इर्तिकाब करता है, जिस पर हद मुक़र्रर है और वह गुनाह शहादत (गवाही) या इक़रार से साबित होता है तो उस पर हद लगाना ज़रूरी है लेकिन अगर अल्लाह तआला उस गुनाह की पर्दा पोशी करता है और गुनाहगार भी उसका एतिराफ़ (क़ुबूल) नहीं करता तो वह तौबा व इस्तिग़फ़ार से माफ़ हो जाता है। कुछ रिवायात में ज़िना करने का ज़िक्र है तो उसकी वजह यह है कि उसने ज़िना के मुहर्रिकात व दवाई या उसकी पेश ख़ेमा को ज़िना समझ लिया या उसके असब्तु हद्दन मैं हद को पहुँच गया, कहने से रावी ने ज़िना समझ लिया, क्योंकि अगर उसने सराहतन ज़िना का इक़रार व एतिराफ़ कर लिया था तो फिर उससे वज़ाहत तलब करने की क्या ज़रूरत थी कि असल सूरते हाल क्या है, क्योंकि कबीरा गुनाह तौबा से माफ़ हो सकता है, सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने से माफ़ नहीं हो सकता, मगर यह कि नमाज़ की दुआओं में अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली को आम कर लिया जाए, उसको तौबा पर मुश्तमिल मान लिया जाए।

(7007) हज़रत अबू उमामा (रज़ि.) से बयान करते हैं, जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ फ़र्मा थे और हम भी आपके साथ बैठे हुए थे, इस बीच अचानक एक आदमी आया और अर्ज़ करने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं क़ाबिले हद गुनाह का मुर्तकिब हुआ हूँ, लिहाज़ा आप मुझ पर हद क़ायम करें तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसको जवाब देने से ख़ामोशी इख़्तियार की, उसने अपनी बात का फिर एआदा किया और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं हद को पहुँच गया हूँ, इसलिए आप मुझ पर हद क़ायम करें, आपने उसको जवाब देने से सुकूत इख़्तियार किया और नमाज़ खड़ी हो गई, चुनाँचे जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सलाम फेरा, हज़रत अबू उमामा (रज़ि.) बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) घर को लौटे तो उस आदमी ने आपका पीछा किया और मैं भी रसूलल्लाह (ﷺ) के पीछे चल पड़ा, ताकि देखूँ, आप उस आदमी को क्या जवाब देते हैं। वह आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) को जा मिला और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं हद को पहुँच चुका हूँ, आप मुझे हद लगाइये। अबू उमामा (रज़ि.) कहते हैं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे फ़र्माया, 'बताओ जब तुम घर से निकले तो क्या तूने वुज़ू अच्छी तरह नहीं किया था, जब वुज़ू किया था?'' उसने कहा, क्यूँ नहीं! ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़र्माया, 'फिर तू नमाज़ में हमारे साथ शरीक हुआ?' तो उसने कहा, जी

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنَا شَدَّادٌ، حَدَّثَنَا أَبُو أُمَامَةَ، قَالَ بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي الْمَسْجِدِ وَنَحْنُ قُعُودٌ مَعَهُ إِذْ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ حَدًّا فَأَقِمْهُ عَلَىَّ . فَسَكَتَ عَنْهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ أَعَادَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ حَدًّا فَأَقِمْهُ عَلَىَّ . فَسَكَتَ عَنْهُ وَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلَمَّا انْصَرَفَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ أَبُو أُمَامَةَ فَاتَّبَعَ الرَّجُلُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ انْصَرَفَ وَاتَّبَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْظُرُ مَا يَرُدُّ عَلَى الرَّجُلِ فَلَحِقَ الرَّجُلُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ حَدًّا فَأَقِمْهُ عَلَىَّ - قَالَ أَبُو أُمَامَةَ - فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَرَأَيْتَ حِينَ خَرَجْتَ مِنْ بَيْتِكَ أَلَيْسَ قَدْ تَوَضَّأْتَ فَأَحْسَنْتَ الْوُضُوءَ " . قَالَ بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " ثُمَّ شَهِدْتَ الصَّلاَةَ مَعَنَا " . فَقَالَ نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ فَقَالَ

لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ غَفَرَ لَكَ حَدَّكَ - أَوْ قَالَ - ذَنْبَكَ".

हाँ! ऐ अल्लाह के रसूल! तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे फ़र्माया, 'तो अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी हद या गुनाह बख़्श दिया।'

तख़रीज 7007 : सुनन अबूदाऊद : 4381.

फ़ायदा : इन रिवायतों से मज्मूई तौर पर यही साबित होता है कि यहाँ हद से मुराद गुनाह ही है जिसको उसने अपनी ईमानी पुख़्तगी की वजह से बड़ा ख़्याल किया और आपने फ़र्माया, 'वुज़ू और नमाज़ में एक मुसलमान जो अल्लाह तआला से बख़्शिश तलब करता है वुज़ू के बाद अल्लाहुम्मग़् फ़िर ली कहता है तो यही दुआ उसके लिये बख़्शिश की वजह बन जाती है क्योंकि यह दुआएँ अगर शऊर व एहसास के साथ, मआनी पर नज़र रखते हुए पढ़ी जाएँ तो यह तौबा पर मुश्तमिल हैं।

(8) بَاب : قَبُولِ تَوْبَةِ الْقَاتِلِ وَإِنْ كَثُرَ قَتْلُهُ

बाब 8 : क़ातिल की तौबा क़बूल होगी, ख़्वाह उसने कितने ही क़त्ल किये हों।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الصِّدِّيقِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ رَجُلٌ قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ نَفْسًا فَسَأَلَ عَنْ أَعْلَمِ أَهْلِ الأَرْضِ فَدُلَّ عَلَى رَاهِبٍ فَأَتَاهُ فَقَالَ إِنَّهُ قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ نَفْسًا فَهَلْ لَهُ مِنْ تَوْبَةٍ فَقَالَ لاَ . فَقَتَلَهُ فَكَمَّلَ بِهِ مِائَةً

(7008) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुमसे पहली उम्मत में एक आदमी था, उसने 99वे आदमी क़त्ल कर डाले, फिर उसने (लोगों से) ज़मीन के सबसे बड़े आलिम के बारे में पूछा तो उसको एक राहिब का पता बता दिया गया, चुनाँचे वह उसकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा, सूरते हाल यह है, वह 99वे आदमियों को क़त्ल कर चुका है, क्या अब उसके लिए तौबा की गुंजाइश है? राहिब ने कहा, नहीं! उसने उसको भी क़त्ल कर डाला और उसके समेत सौ पूरे कर दिये, फिर उसने ज़मीन के सबसे बड़े आलिम के बारे में पूछा तो (लोगों ने) उसको एक आलिम आदमी का पता बतलाया, (वह उसके पास गया) और

ثُمَّ سَأَلَ عَنْ أَعْلَمِ أَهْلِ الأَرْضِ فَدُلَّ عَلَى رَجُلٍ عَالِمٍ فَقَالَ إِنَّهُ قَتَلَ مِائَةَ نَفْسٍ فَهَلْ لَهُ مِنْ تَوْبَةٍ فَقَالَ نَعَمْ وَمَنْ يَحُولُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ التَّوْبَةِ انْطَلِقْ إِلَى أَرْضِ كَذَا وَكَذَا فَإِنَّ بِهَا أُنَاسًا يَعْبُدُونَ اللَّهَ فَاعْبُدِ اللَّهَ مَعَهُمْ وَلاَ تَرْجِعْ إِلَى أَرْضِكَ فَإِنَّهَا أَرْضُ سَوْءٍ . فَانْطَلَقَ حَتَّى إِذَا نَصَفَ الطَّرِيقَ أَتَاهُ الْمَوْتُ فَاخْتَصَمَتْ فِيهِ مَلاَئِكَةُ الرَّحْمَةِ وَمَلاَئِكَةُ الْعَذَابِ فَقَالَتْ مَلاَئِكَةُ الرَّحْمَةِ جَاءَ تَائِبًا مُقْبِلاً بِقَلْبِهِ إِلَى اللَّهِ . وَقَالَتْ مَلاَئِكَةُ الْعَذَابِ إِنَّهُ لَمْ يَعْمَلْ خَيْرًا قَطُّ . فَأَتَاهُمْ مَلَكٌ فِي صُورَةِ آدَمِيٍّ فَجَعَلُوهُ بَيْنَهُمْ فَقَالَ قِيسُوا مَا بَيْنَ الأَرْضَيْنِ فَإِلَى أَيَّتِهِمَا كَانَ أَدْنَى فَهُوَ لَهُ . فَقَاسُوهُ فَوَجَدُوهُ أَدْنَى إِلَى الأَرْضِ الَّتِي أَرَادَ فَقَبَضَتْهُ مَلاَئِكَةُ الرَّحْمَةِ " . قَالَ قَتَادَةُ فَقَالَ الْحَسَنُ ذُكِرَ لَنَا أَنَّهُ لَمَّا أَتَاهُ الْمَوْتُ نَأَى بِصَدْرِهِ .

पूछा, उसने सौ आदमियों का क़त्ल कर चुका है, क्या उसके लिए तौबा का इम्कान (चान्स) है? तो उसने कहा, हाँ! उसके और तौबा के बीच कौन हाइल (पर्दा) हो सकता है? तुम फ़लाँ फ़लाँ बस्ती की तरफ़ चले जाओ, क्योंकि वहाँ ऐसे लोग हैं, जो अल्लाह की बन्दगी करते हैं, तुम भी उनके साथ रहकर अल्लाह की बन्दगी में मशग़ूल हो जाओ और अपनी सरज़मीन (इलाक़ा) की तरफ़ मत लौटो, क्योंकि वह बुरी सरज़मीन है तो वह चल पड़ा यहाँ तक कि जब उसने आधा रास्ता पार कर लिया, उसे मौत ने आ लिया, चुनाँचे उसके बारे में यानी उसकी रूह लेने के सिलसिले में रहमत के फ़रिश्तों और अज़ाब के फ़रिश्तों में झगड़ा हो गया, रहमत के फ़रिश्तों ने कहा, यह दिल से मुतवज्जह होकर, तौबा करते हुए अल्लाह की तरफ़ बढ़ा और अज़ाब के फ़रिश्तों ने कहा, वाक़िया यह है, इसने कभी नेकी का काम नहीं किया, (इसलिए यह नेक और रहमत का हक़दार कैसे हो सकता है) चुनाँचे उनके पास (अल्लाह के हुक्म से) एक फ़रिश्ता इंसानी शक्ल में आया, दोनों क़िस्म के फ़रिश्तों ने (अपने झगड़ने का) हुक्म मान लिया तो उसने (इंसानी शक्ल में फ़रिश्ते ने) कहा, दोनों ज़मीनों (गुनाह की बस्ती और इबादतगुज़ार बन्दों की बस्ती) के बीच वाले इलाक़े को नाप लो तो जिस बस्ती की तरफ़ ज़्यादा क़रीब हो तो वह उसका बाशिन्दा (रहने वाला) होगा

तो उन्होंने नाप लिया तो उसे उस इलाक़े के ज़्यादा क़रीब पाया, जिसके इरादे से वह जा रहा था, इसलिए उसकी रूह को रहमत के फ़रिश्तों ने अपने क़ब्ज़े में ले लिया।' हसन (रह.) बयान करते हैं, हमें बताया गया, उसे जब मौत ने आ लिया, वह अपने सीने से आगे की तरफ़ बढ़ा।'

तख़रीज 7008 : सहीह बुख़ारी : 54; हदीस : 3470; सुनन इब्ने माजा : 2622.

फ़ायदा : यह क़ातिल, बनी इस्राईल का एक फ़र्द था, मसला पूछने के लिए पहले एक राहिब के पास गया जिस पर अल्लाह की हैबत व जलाल का ग़ल्बा था और वह गुनाह को इंतिहाई नागवार समझता था, उसने सिर्फ़ गुनाह की क़बाहत को मल्हूज रखा और तौबा की अल्लाह के यहाँ मक़्बूलियत और महबूबियत को सामने न रखा और मौक़ा महल्ल की हिक्मत व मस्लिहत को भी न समझ सका, इसलिए उसने कह दिया, तेरी तौबा की गुंजाइश नहीं है, उसने मायूस होकर उसको भी क़त्ल कर डाला, लेकिन चूँकि वह दिल की गहराई से तौबा करना चाहता था, इसलिए दिल की बेक़रारी और बेचैनी की वजह से फिर यह जानने की कोशिश की कि मेरी तौबा की कोई सूरत निकल सकती है या नहीं! इसलिए फिर वह एक आलिम जो साहिबे बसीरत था, उसकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उसने उसको तौबा की सूरत बताई कि जिस बस्ती में रहकर बुरे लोगों की मुहब्बत व रफ़ाक़त (दोस्ती) की वजह से तुमने यह क़त्ल किये हैं, उस बस्ती और उसके बाशिन्दों से किनाराकश हो जाओ, वरना तोबा पर क़ायम नहीं रह सकोगे और उस बस्ती में चले जाओ, जिसके बन्दे अल्लाह के इबादतगुज़ार और फ़र्मांबरदार हैं, ताकि उनकी रफ़ाक़त (सोहबत) में रहकर नेक और अच्छे काम कर सको, चूँकि वह तहे दिल से उस गुनाह से तौबा करने का तहिय्या कर चुका था और अपने अमल से उसने इसका सबूत फ़राहम किया और वह मरते मरते भी, नेक लोगों की बस्ती की तरफ़ बढ़ा और अपने बस की हद तक उसने अपनी तौबा को तौबतन्नसूह बना डाला, इसलिए उसके इस काम को उसकी कामयाबी का सबब बना डाला गया, अगरचे यह वाक़िया बनी इस्राईल का है, लेकिन जुम्हूर उम्मत ने क़ुरआनो सुन्नत के उसूलों की रोशनी में इसको क़बूल किया है कि क़ातिल अगर तहे दिल से तौबा कर ले तो उसकी तौबा क़बूल हो जाएगी और अगरचे उसका तअल्लुक़ हुक़ूक़ुल इबाद यानी बन्दों के हुक़ूक़ से है, जो साहिबे हक़ के माफ़ किये बग़ैर माफ़ नहीं हो सकते, लेकिन अगर गुनाहगार के पास, बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी की कोई सूरत न हो तो वह सच्ची और पक्की तौबा करे और अल्लाह से

दरख़्वास्त करे, या अल्लाह! मेरे पास तो उनके हुक़ूक़ की अदायगी की कोई सूरत नहीं तू ही अपनी तरफ़ से उन्हें अज्रो सिला अ़ता करके, उनको राज़ी कर देना तो अल्लाह उनको राज़ी कर देगा, लेकिन अगर वह बन्दों का हक़ अदा कर सकता है, या उनसे माफ़ी माँग सकता है लेकिन उसके बावजूद वह हक़ अदा नहीं करता, या माफ़ी तलब नहीं करता तो फिर यह तौबा सच्ची और नसूह नहीं होगी।

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا الصِّدِّيقِ النَّاجِيَّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " أَنَّ رَجُلاً قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ نَفْسًا فَجَعَلَ يَسْأَلُ هَلْ لَهُ مِنْ تَوْبَةٍ فَأَتَى رَاهِبًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ لَيْسَتْ لَكَ تَوْبَةٌ . فَقَتَلَ الرَّاهِبَ ثُمَّ جَعَلَ يَسْأَلُ ثُمَّ خَرَجَ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَى قَرْيَةٍ فِيهَا قَوْمٌ صَالِحُونَ فَلَمَّا كَانَ فِي بَعْضِ الطَّرِيقِ أَدْرَكَهُ الْمَوْتُ فَنَأَى بِصَدْرِهِ ثُمَّ مَاتَ فَاخْتَصَمَتْ فِيهِ مَلاَئِكَةُ الرَّحْمَةِ وَمَلاَئِكَةُ الْعَذَابِ فَكَانَ إِلَى الْقَرْيَةِ الصَّالِحَةِ أَقْرَبَ مِنْهَا بِشِبْرٍ فَجُعِلَ مِنْ أَهْلِهَا "

(7009) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि, 'एक आदमी ने 99वे आदमी क़त्ल कर डाले, फिर पूछने लगा, क्या उसकी तौबा की कोई गुंजाइश है? चुनाँचे वह एक राहिब के पास आया और उससे पूछा, उसने जवाब दिया, तेरे लिए तौबा का इम्कान नहीं है तो उसने राहिब को भी क़त्ल कर दिया, फिर पूछने लगा, फिर वह अपनी बस्ती से उस बस्ती की तरफ़ निकल खड़ा हुआ, जिसमें नेक लोग रहते थे तो जब उसने कुछ रास्ता तै कर लिया, उसे मौत ने आ लिया, तो वह अपने सीने से आगे बढ़ा, फिर मर गया तो उसके बारे में रहमत के फ़रिश्तों और अ़ज़ाब के फ़रिश्तों में झगड़ा शुरू हो गया तो वह अच्छी बस्ती की तरफ़ एक बालिश्त ज़्यादा क़रीब था, इसलिए उसको उसके बाशिन्दों में से शुमार किया गया।' (गिना गया)

इसकी तख़रीज हदीस 6939 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : कुछ हज़रात ने इस हदीस से यह इस्तिदलाल किया है कि अगर कोई गुनाहगार औलिया–ए किराम के पास जाकर तौबा करने का इरादा कर ले, अभी वहाँ गया न हो और तौबा न की, तब भी बख़्श दिया जाता है तो अगर उनके पास जाकर उनके हाथ पर बैअ़त कर ले, तौबा करे और उनके वज़ाइफ़ पर अ़मल करे तो उसका मर्तबा व मक़ाम किया होगा, मगर सूरते हाल यह है, उसमें किसी बुज़ुर्ग के पास जाकर, तौबा करने का ज़िक्र ही नहीं है, तौबा तो वह कर चुका है, फिर बुरी बस्ती और बुरे लोगों की रफ़ाक़त (सोहबत) से बचाने के लिए; उसको यह तरीक़ा बताया गया है कि तुम नेक

बस्ती और अच्छे लोगों के साथ रहो, ताकि अपनी तौबा पर क़ायम रह सको और उनके साथ मिलकर इबादत व इत़ाअ़त कर सको, उसमें किसी बुज़ुर्ग के पास जाकर तौबा करना या बैअ़त करना कहाँ से साबित हो गया? सही बात यही है, सावन के अँधे को हर चीज़ हरी ही नज़र आती है और डूबता इंसान तिनके को सहारा बनाता है, जो उसको कभी डूबने से बचा नहीं सकता।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَ حَدِيثِ مُعَاذِ بْنِ مُعَاذٍ وَزَادَ فِيهِ " فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَى هَذِهِ أَنْ تَبَاعَدِي وَإِلَى هَذِهِ أَنْ تَقَرَّبِي " .

(7010) इमाम स़ाहब (रह.) एक और उस्ताद से ऊपर वाली हदीस बयान करते हैं, उसमें यह इज़ाफ़ा है, 'तो अल्लाह तआ़ला ने उस बस्ती को हुक्म दिया, दूर हो जाओ और उसको हुक्म दिया क़रीब हो जाओ।'

इसकी तख़रीज हदीस 6939 में गुज़र चुकी है।

(9) بَابُ : فِدَاءِ الْمُسْلِمِيْنَ بِالْكَافِرِيْنَ

बाब 9 : मुसलमानों के फ़िद्या में काफ़िरों को देना

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، عَنْ أَبِي، بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ دَفَعَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَى كُلِّ مُسْلِمٍ يَهُودِيًّا أَوْ نَصْرَانِيًّا فَيَقُولُ هَذَا فَكَاكُكَ مِنَ النَّارِ " .

(7011) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब क़ियामत का दिन होगा, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल हर मुसलमान के सुपुर्द एक यहूदी और ईसाई कर देगा और फ़र्माएगा, यह तेरा आग से फ़िद्या है।'

फ़ायदा : इस हदीस की तफ़्सीर व तशरीह, हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हदीस से होती है कि हर इंसान की जन्नत और दोज़ख़ में जगह है, मोमिन जब जन्नत में दाख़िल होगा तो उसकी दोज़ख़ में जगह काफ़िर को मिलेगी, क्योंकि वह अपने कुफ़्रिया आ़माल की वजह से दोज़ख़ ही का हक़दार था और काफ़िर की जन्नत वाली जगह, जन्नती को मिलेगी, क्यों कि वह अपने आ़माल की वजह से जन्नत का हक़दार था, इस एतिबार से यहूदी या ईसाई काफ़िर को मुसलमान की फ़काक (फ़िद्या) क़रार दिया गया है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، أَنَّ عَوْنًا، وَسَعِيدَ بْنَ أَبِي بُرْدَةَ، حَدَّثَاهُ أَنَّهُمَا، شَهِدَا أَبَا بُرْدَةَ يُحَدِّثُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يَمُوتُ رَجُلٌ مُسْلِمٌ إِلاَّ أَدْخَلَ اللَّهُ مَكَانَهُ النَّارَ يَهُودِيًّا أَوْ نَصْرَانِيًّا " . قَالَ فَاسْتَحْلَفَهُ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بِاللَّهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ فَحَلَفَ لَهُ - قَالَ - فَلَمْ يُحَدِّثْنِي سَعِيدٌ أَنَّهُ اسْتَحْلَفَهُ وَلَمْ يُنْكِرْ عَلَى عَوْنٍ قَوْلَهُ .

(7012) औन और सईद बिन अबी बुर्दा (रज़ि.) बयान करते हैं कि हमारी मौजूदगी में अबू बुर्दा (रह़.) ने ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अपने वालिद से, नबी अकरम (ﷺ) की ह़दीस सुनाई कि आपने फ़र्माया, 'जो मुसलमान भी इंतिक़ाल करता है, अल्लाह उसकी जगह दोज़ख़ में किसी यहूदी या ईसाई को भेज देता है।' तो ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने उनसे (अबू बुर्दा से) तीन बार यह क़सम ली कि उस अल्लाह की क़सम! जिसके सिवा कोई लायक़े बन्दगी नहीं है, मुझे मेरे वालिद ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यह ह़दीस सुनाई है। अबू बुर्दा (रह़.) ने उन्हें क़सम दे दी। क़तादा (रह़.) कहते हैं, सईद ने क़सम लेने का तज़्किरा नहीं किया, लेकिन औन के इस क़ौल का इंकार भी नहीं किया।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، جَمِيعًا عَنْ عَبْدِ الصَّمَدِ بْنِ عَبْدِ الْوَارِثِ أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَ حَدِيثِ عَفَّانَ وَقَالَ عَوْنُ بْنُ عُتْبَةَ

(7013) इमाम स़ाहब (रह़.) दो और उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, इस बशारत (खुशख़बरी) पर इंतिहाई ख़ुश हुए और उन्हें ख़्याल हुआ, कहीं अबू बुर्दा (रह़.) को भूल चूक न लाह़िक़ हो गई हो, इसलिए इत्मिनान व वसूक़ (विश्वास) हासिल करने के लिए क़सम दी, क्योंकि अगर अबू बुर्दा (रह़.) को इस ह़दीस में निस्यान व ख़ता का ख़दशा या शक होता तो वह क़सम न उठाते। ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और इमाम शाफ़ेई (रह़.) से मंक़ूल है कि यह ह़दीस मुसलमानों के लिए इंतिहाई उम्मीद अफ़्ज़ा है कि अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को जन्नत में दाख़िल कर देगा।

(7014) हजरत अबू बुर्दा (रह.) अपने वालिद (अबू मूसा अशअरी) से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम (स.) ने फ़र्माया, 'क़ियामत के दिन कुछ मुसलमान पहाड़ों जितने गुनाह लेकर आएँगे तो अल्लाह उन्हें बख़्श देगा और उन्हें यहूद व नस़ारा पर रख देगा।' मेरे ख़याल में उन्होंने यही कहा, अबू रौह ने कहा, मुझे मालूम नहीं, यह शक किसको हुआ, अबू बुर्दा (रह.) कहते हैं, मैंने यह ह़दीस उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को सुनाई तो उन्होंने कहा, क्या तेरे वालिद ने तुझे यह रिवायत नबी अकरम (स.) से सुनाई थी? मैंने कहा, जी हाँ!

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَبَلَةَ بْنِ أَبِي رَوَّادٍ، حَدَّثَنَا حَرَمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ، حَدَّثَنَا شَدَّادٌ أَبُو طَلْحَةَ الرَّاسِبِيُّ، عَنْ غَيْلاَنَ بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ نَاسٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ بِذُنُوبٍ أَمْثَالِ الْجِبَالِ فَيَغْفِرُهَا اللَّهُ لَهُمْ وَيَضَعُهَا عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى " . فِيمَا أَحْسِبُ أَنَا . قَالَ أَبُو رَوْحٍ لاَ أَدْرِي مِمَّنِ الشَّكُّ . قَالَ أَبُو بُرْدَةَ فَحَدَّثْتُ بِهِ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ فَقَالَ أَبُوكَ حَدَّثَكَ هَذَا عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قُلْتُ نَعَمْ .

फ़ायदा : मुसलमान की तौबा व इस्तिग़फ़ार से और तस्बीह़ व तह़मीद से गुनाह माफ़ हो जाते हैं, लेकिन काफ़िरों के गुनाह माफ़ नहीं होते, पहाड़ों जैसे गुनाह मुसलमानों को माफ़ हो जाएँगे, क्योंकि यह ज़ाब्ता है, 'नेकियाँ बुराइयों को ख़त्म कर देती हैं।' लेकिन यहूदो नस़ारा के काफ़िरों को यह गुनाह माफ़ नहीं हो सकेंगे और मुसलमानों के यह गुनाह काफ़िरों पर इसलिए रख दिये जाएँगे, क्योंकि वह उसका सबब और ज़रिया बने थे, इसलिए अल्लाह तआला का फ़र्मान है, 'वह अपने गुनाह भी उठाएँगे और अपने गुनाहों के साथ और गुनाह भी।' (सूरह अ़न्कबूत : 13) यहूदियों और ईसाइयों का मुसलमानों को बुराइयों की दअवत देना आज जुर्मे आ़म है और ज़राये इब्लाग़ और जदीद उ़लूम की सूरत में मुसलमानों को उनके दीन से बरगश्ता करने उनमें इल्ह़ाद और ज़िन्दीक़ियत पैदा करने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं, उन ही की तह़रीक व दअवत से लिब्रिज़्म और सेकूलरिज़्म की आवाज़ मुसलमानों के अहले इ़ल्म की तरफ़ से उठाई जा रही है।

(7015) स़फ़्वान बिन मुहरिज़ (रह.) बयान करते हैं, एक आदमी ने ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से पूछा, नज्वा (सरगोशी) के बारे में, आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) को क्या

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هِشَامٍ الدَّسْتَوَائِيِّ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ، قَالَ قَالَ رَجُلٌ لاِبْنِ

عُمَرَ كَيْفَ سَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ فِي النَّجْوَى قَالَ سَمِعْتُهُ يَقُولُ " يُدْنَى الْمُؤْمِنُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ رَبِّهِ عَزَّ وَجَلَّ حَتَّى يَضَعَ عَلَيْهِ كَنَفَهُ فَيُقَرِّرُهُ بِذُنُوبِهِ فَيَقُولُ هَلْ تَعْرِفُ فَيَقُولُ أَىْ رَبِّ أَعْرِفُ . قَالَ فَإِنِّي قَدْ سَتَرْتُهَا عَلَيْكَ فِي الدُّنْيَا وَإِنِّي أَغْفِرُهَا لَكَ الْيَوْمَ . فَيُعْطَى صَحِيفَةَ حَسَنَاتِهِ وَأَمَّا الْكُفَّارُ وَالْمُنَافِقُونَ فَيُنَادَى بِهِمْ عَلَى رُءُوسِ الْخَلاَئِقِ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ " .

फ़र्माते हुए सुना है? उन्होंने कहा, मैंने आपको यह फ़र्माते सुना है, 'क़ियामत के दिन मोमिन को अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल के क़रीब किया जाएगा, यहाँ तक कि वह उस पर अपना पहलू जो उसके शायाने शान है, रखेगा यानी दूसरों से ओट में कर लेगा और उससे उसके गुनाहों का इक़रार करवायेगा, तो कहेगा, क्या पहचानते हो? वह कहेगा, हाँ! मेरे रब! मैं पहचानता हूँ। अल्लाह कहेगा, दुनिया में मैं तेरी पर्दापोशी कर चुका हूँ और आज मैं तुम्हें यह गुनाह बख़्श देता हूँ, चुनाँचे उसे उसकी नेकियों का आ़माल नामा दे दिया जाएगा, रहे काफ़िर और मुनाफ़िक़ तो उनके बारे में तमाम लोगों के सामने ऐ़लान कर दिया जाएगा, यही लोग हैं जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बाँधा था।'

तख़रीज 7014 : सहीह बुख़ारी : 2441; तफ़्सीर : 4685; अदब : 6070; व फ़ित्तौहीद : 7514; इब्ने माजा : 183.

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं गुनाहगार मुसलमान दो क़िस्म के हैं (1) वह मुसलमान जिनके गुनाहों का तअल्लुक़ अल्लाह के हुक़ूक़ से है, उनकी दो क़िस्में हैं। (अ) जिनके गुनाह को अल्लाह ने दुनिया में छुपाया, उनके गुनाहों की आख़िरत में भी पर्दापोशी होगी। (ब) जिनके गुनाह दुनिया में लोगों के सामने ज़ाहिर हो गए उनकी पर्दापोशी नहीं होगी। (2) वह मुसलमान जिनके गुनाहों का तअल्लुक़ हुक़ूक़ुल इबाद से है, उनकी भी दो क़िस्में हैं (अ) उनकी बुराइयाँ नेकियों से ज़्यादा होंगी, यह आग में जाएँगे, फिर सज़ा भुगतकर या सिफ़ारिश से दोज़ख़ से निकाल लिए जाएँगे। (ब) वह मुसलमान जिनकी नेकियाँ और बुराइयाँ बराबर होंगी। यह एक दूसरे को बदला देकर, जन्नत में चले जाएँगे। (तक्मिला जिल्द 6 पेज 40)

बाब 10 : हज़रत कअ़ब बिन मालिक और उनके दोनों साथियों की तौबा का बयान

(10) بَاب : حَدِيثِ تَوْبَةِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ وَصَاحِبَيْهِ

(7016) इमाम इब्ने शिहाब (रह.) बयान करते हैं कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक के लिए निकले और आपका इरादा रूम (ईरान) और शाम (इराक़) के अ़रब ईसाईयों से जंग था, इब्ने शिहाब, हज़रत कअ़ब बिन मालिक के फ़रज़न्द, अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब की रिवायत बयान करते हैं, यह हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रह.) के नाबीना हो जाने के बाद उनकी औलाद में से, उनके रहबर थे, हज़रत अ़ब्दुल्लाह कहते हैं, मैंने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) की ज़ुबान से ग़ज़्व-ए-तबूक में रसूलुल्लाह (ﷺ) से पीछे रह जाने का वाक़िया सुना है, हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने बताया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जितनी लड़ाइयाँ लड़ी हैं, मैं कभी भी जंगे तबूक के सिवा, आपसे पीछे नहीं रहा, बाक़ी जंगे बद्र में भी मैं पीछे रहा और आपने उससे पीछे रह जाने वाले किसी को भी सरजनिश नहीं की, क्योंकि उसमें तो रसूलुल्लाह (ﷺ) और मुसलमान क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िला पर हमला करने के इरादे से निकले थे, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने उनके और उनके दुश्मनों के बीच बग़ैर किसी साबिक़ा मंसूबे या ऐलाने जंग के मुडभेड़ करवा दी और मैं अ़क़बा की रात रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हाज़िर हो चुका था, जबकि हमने आपके साथ, इस्लाम पर पुख़्ता

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ مَوْلَى بَنِي أُمَيَّةَ أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ ثُمَّ غَزَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم غَزْوَةَ تَبُوكَ وَهُوَ يُرِيدُ الرُّومَ وَنَصَارَى الْعَرَبِ بِالشَّامِ . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَأَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ كَانَ قَائِدَ كَعْبٍ مِنْ بَنِيهِ حِينَ عَمِيَ قَالَ سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حَدِيثَهُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ قَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ لَمْ أَتَخَلَّفْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا قَطُّ إِلاَّ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ غَيْرَ أَنِّي قَدْ تَخَلَّفْتُ فِي غَزْوَةِ بَدْرٍ وَلَمْ يُعَاتِبْ أَحَدًا تَخَلَّفَ عَنْهُ إِنَّمَا خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ

صلى الله عليه وسلم وَالْمُسْلِمُونَ يُرِيدُونَ عِيرَ قُرَيْشٍ حَتَّى جَمَعَ اللَّهُ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ عَدُوِّهِمْ عَلَى غَيْرِ مِيعَادٍ وَلَقَدْ شَهِدْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيْلَةَ الْعَقَبَةِ حِينَ تَوَاثَقْنَا عَلَى الإِسْلاَمِ وَمَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِهَا مَشْهَدَ بَدْرٍ وَإِنْ كَانَتْ بَدْرٌ أَذْكَرَ فِي النَّاسِ مِنْهَا وَكَانَ مِنْ خَبَرِي حِينَ تَخَلَّفْتُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ أَنِّي لَمْ أَكُنْ قَطُّ أَقْوَى وَلاَ أَيْسَرَ مِنِّي حِينَ تَخَلَّفْتُ عَنْهُ فِي تِلْكَ الْغَزْوَةِ وَاللَّهِ مَا جَمَعْتُ قَبْلَهَا رَاحِلَتَيْنِ قَطُّ حَتَّى جَمَعْتُهُمَا فِي تِلْكَ الْغَزْوَةِ فَغَزَاهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي حَرٍّ شَدِيدٍ وَاسْتَقْبَلَ سَفَرًا بَعِيدًا وَمَفَازًا وَاسْتَقْبَلَ عَدُوًّا كَثِيرًا فَجَلاَ لِلْمُسْلِمِينَ أَمْرَهُمْ لِيَتَأَهَّبُوا أُهْبَةَ غَزْوِهِمْ فَأَخْبَرَهُمْ بِوَجْهِهِمُ الَّذِي يُرِيدُ وَالْمُسْلِمُونَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَثِيرٌ وَلاَ يَجْمَعُهُمْ كِتَابُ حَافِظٍ - يُرِيدُ بِذَلِكَ الدِّيوَانَ - قَالَ كَعْبٌ فَقَلَّ رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَتَغَيَّبَ يَظُنُّ أَنَّ

अ़हदो पैमान बाँधा था और मैं इस बात को पसंद नहीं करता कि अ़क़बा की रात की बजाये, बद्र में हाजिर होता, अगरचे ग़ज़्व–ए–बद्र का लोगों में चर्चा ज़्यादा है, मेरे जंगे तबूक में रसूलुल्लाह (ﷺ) से पीछे रह जाने का वाक़िया यह है कि मैं अपनी उम्र में कभी भी उस वक़्त से ज़्यादा क़वी और ख़ुशहाल नहीं हुआ, जितना मैं उस ग़ज़्व–ए–तबूक में आपके साथ शरीक न होने के वक़्त था, अल्लाह की क़सम! इससे पहले मैंने कभी दो ऊँटनियाँ जमा नहीं की थीं यहाँ तक कि मैंने उस ग़ज़्वे के लिए दो ऊँटनियाँ इकट्ठी कर ली थीं, रसूलुल्लाह (ﷺ) उसमें इंतिहाई शदीद गर्मी में निकले, आपको दूर दराज़ का सफ़र और जंग दरपेश था और कसीर तादाद दुश्मन का सामना था। चुनाँचे आपने मुसलमानों के सामने पूरा मामला वाज़ेह कर दिया था, ताकि वह अपने जंग की पूरी तैयारी कर लें, तो आपने उन्हें बता दिया, आप किस त़रफ़ जाना चाहते हैं, मुसलमानों की आपके साथ बहुत बड़ी तादाद थी और किसी रजिस्टर में उनका नाम दर्ज न था। हज़रत कअ़ब बिन मालिक कहते हैं, जो आदमी भी उससे ग़ायब होना चाहता, वह समझता था कि उसका मामला पोशीदा (छुपा हुआ) ही रहेगा।जब तक उसके बारे में अल्लाह तआ़ला से वह्य (पैग़ाम) नाज़िल नहीं होगी,। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस ग़ज़्वा के लिए उस वक़्त निकले, जब फल पक गए हो साये घने हो गये और मैं उनकी त़रफ़ (फल और साए) की त़रफ़) बहुत माइल था, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके साथ मुसलमान

ذَلِكَ سَيَخْفَى لَهُ مَا لَمْ يَنْزِلْ فِيهِ وَحْيٌ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَغَزَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تِلْكَ الْغَزْوَةَ حِينَ طَابَتِ الثِّمَارُ وَالظِّلاَلُ فَأَنَا إِلَيْهَا أَصْعَرُ فَتَجَهَّزَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَالْمُسْلِمُونَ مَعَهُ وَطَفِقْتُ أَغْدُو لِكَىْ أَتَجَهَّزَ مَعَهُمْ فَأَرْجِعُ وَلَمْ أَقْضِ شَيْئًا . وَأَقُولُ فِي نَفْسِي أَنَا قَادِرٌ عَلَى ذَلِكَ إِذَا أَرَدْتُ . فَلَمْ يَزَلْ ذَلِكَ يَتَمَادَى بِي حَتَّى اسْتَمَرَّ بِالنَّاسِ الْجِدُّ فَأَصْبَحَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم غَادِيًا وَالْمُسْلِمُونَ مَعَهُ وَلَمْ أَقْضِ مِنْ جَهَازِي شَيْئًا ثُمَّ غَدَوْتُ فَرَجَعْتُ وَلَمْ أَقْضِ شَيْئًا فَلَمْ يَزَلْ ذَلِكَ يَتَمَادَى بِي حَتَّى أَسْرَعُوا وَتَفَارَطَ الْغَزْوُ فَهَمَمْتُ أَنْ أَرْتَحِلَ فَأُدْرِكَهُمْ فَيَا لَيْتَنِي فَعَلْتُ ثُمَّ لَمْ يُقَدَّرْ ذَلِكَ لِي فَطَفِقْتُ إِذَا خَرَجْتُ فِي النَّاسِ بَعْدَ خُرُوجِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَحْزُنُنِي أَنِّي لاَ أَرَى لِي أُسْوَةً إِلاَّ رَجُلاً مَغْمُوصًا عَلَيْهِ فِي النِّفَاقِ أَوْ رَجُلاً مِمَّنْ عَذَرَ اللَّهُ مِنَ الضُّعَفَاءِ وَلَمْ يَذْكُرْنِي

तैयार हो गए और मैं सुबह निकलता ताकि उनके साथ ही तैयारी कर लूँ और शाम को लौटता और मैंने कुछ न किया होता और जी में सोचता, मेरी हालत बहुत अच्छी है, जब चाहूँगा उसकी तैयारी कर लूँगा, मेरी यही हालत जारी रही, यहाँ तक लोगों ने ज़ोरो शोर से तैयारी कर ली और एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ), मुसलमानों को साथ लेकर रवाना हो गए और मैंने अभी तक कोई तैयारी नहीं की थी, फिर मैं घर से निकला और शाम को वापिस लौटा और मैंने कुछ नहीं किया था, मेरी लगातार यही हालत जारी रही थी कि मुसलमान तेज़ रफ़्तार हो गए और लड़ने वाले बहुत आगे निकल गए, चुनाँचे मैंने सफ़र इख़्तियार करके उन तक पहुँचने का इरादा कर लिया, ऐ काश! मैं यह काम कर लेता, फिर मुझे उसकी तौफ़ीक़ न मिल सकी, (मेरे लिए मुक़द्दर न हुई), जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के जाने के बाद मैं लोगों में निकलता तो मुझे यह चीज़ परेशान करती कि मुझे अपने लिए कोई नमूना न मिलता, मगर ऐसा इंसान जिस पर निफ़ाक़ की तोहमत है, या उन कमज़ोर लोगों में से है जिनको अल्लाह ने मअ़ज़ूर क़रार दिया है और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे तबूक पहुँचने तक याद न किया, चुनाँचे तबूक में लोगों में बैठे हुए आपने पूछा, कअ़ब बिन मालिक को क्या हुआ?' बनू सलमा के एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! उसको उसकी दो चादरों और अपने दोनों जाँबों पर देखने ने रोक लिया है। यानी अपनी जवानी और लिबास पर फ़रेफ़्ता है तो मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) ने उस आदमी को कहा, तूने

رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى بَلَغَ تَبُوكًا فَقَالَ وَهُوَ جَالِسٌ فِي الْقَوْمِ بِتَبُوكَ " مَا فَعَلَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ " . قَالَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ يَا رَسُولَ اللَّهِ حَبَسَهُ بُرْدَاهُ وَالنَّظَرُ فِي عِطْفَيْهِ . فَقَالَ لَهُ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ بِئْسَ مَا قُلْتَ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا . فَسَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَبَيْنَمَا هُوَ عَلَى ذَلِكَ رَأَى رَجُلاً مُبَيِّضًا يَزُولُ بِهِ السَّرَابُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كُنْ أَبَا خَيْثَمَةَ " . فَإِذَا هُوَ أَبُو خَيْثَمَةَ الأَنْصَارِيُّ وَهُوَ الَّذِي تَصَدَّقَ بِصَاعِ التَّمْرِ حِينَ لَمَزَهُ الْمُنَافِقُونَ . فَقَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ فَلَمَّا بَلَغَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَدْ تَوَجَّهَ قَافِلاً مِنْ تَبُوكَ حَضَرَنِي بَثِّي فَطَفِقْتُ أَتَذَكَّرُ الْكَذِبَ وَأَقُولُ بِمَ أَخْرُجُ مِنْ سَخَطِهِ غَدًا وَأَسْتَعِينُ عَلَى ذَلِكَ كُلَّ ذِي رَأْيٍ مِنْ أَهْلِي فَلَمَّا قِيلَ لِي إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَدْ أَظَلَّ قَادِمًا زَاحَ عَنِّي الْبَاطِلُ حَتَّى عَرَفْتُ

बहुत बुरी बात कही है। ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हमारे इल्म की हद तक तो वह अच्छा आदमी है तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ामोश रहे, उस दौरान आपने एक सफ़ेद पोश आदमी देखा, जिससे रेगिस्तान (सराब) हरकत करता महसूस होता था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अबू ख़ैसमा हो' तो वो अबू ख़ैसमा अंसारी ही था, यह वही सहाबी है जिसके एक साअ खजूर के सदक़ा पर उसे मुनाफ़िक़ों ने तअनो तश्नीअ का निशाना बनाया था। हज़रत कअब बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं, जब मुझे यह ख़बर मिली कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तबूक से वापसी के लिए रुख़ कर लिया है, मुझे ग़म व घबराहट ने आ लिया और मुझे झूठे बहाने याद आने लगे और मैं सोचता, मैं कल आपकी नाराज़ी से कैसे निकलूँगा? और मैं उसके लिए अपने घर के तमाम अहले राय से मदद लेने लगा तो जब मुझे यह कहा गया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आने ही वाले हैं (बिलकुल क़रीब पहुच गए हैं) तो यह ग़लत बातें मेरे दिलो दिमाग़ से निकल गईं यहाँ तक कि मुझे यक़ीन हो गया कि मैं झूठी बहाने बाजी करके आप(ﷺ) से हर्गिज़ बच नहीं सकता। चुनाँचे मैंने आपसे सच बोलने का अज़्म (इरादा) कर लिया और सुबह सवेरे रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ ले आए और आपकी आदते मुबारका थी कि जब भी आप सफ़र से वापिस तशरीफ़ लाते तो आग़ाज़ मस्जिद से करते, उसमें दो रकअत नमाज़ पढ़ते फिर लोगों से मुलाक़ात के लिए बैठ जाते तो जब आपने ऐसे ही किया तो आपके पास पीछे छोड़े जाने वाले लोग आ गए,

أَنِّي لَنْ أَنْجُوَ مِنْهُ بِشَىْءٍ أَبَدًا فَأَجْمَعْتُ صِدْقَهُ وَصَبَّحَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَادِمًا وَكَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ بَدَأَ بِالْمَسْجِدِ فَرَكَعَ فِيهِ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ جَلَسَ لِلنَّاسِ فَلَمَّا فَعَلَ ذَلِكَ جَاءَهُ الْمُخَلَّفُونَ فَطَفِقُوا يَعْتَذِرُونَ إِلَيْهِ وَيَحْلِفُونَ لَهُ وَكَانُوا بِضْعَةً وَثَمَانِينَ رَجُلاً فَقَبِلَ مِنْهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلاَنِيَتَهُمْ وَبَايَعَهُمْ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمْ وَوَكَلَ سَرَائِرَهُمْ إِلَى اللَّهِ حَتَّى جِئْتُ فَلَمَّا سَلَّمْتُ تَبَسَّمَ تَبَسُّمَ الْمُغْضَبِ ثُمَّ قَالَ " تَعَالَ " . فَجِئْتُ أَمْشِي حَتَّى جَلَسْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ لِي " مَا خَلَّفَكَ " . أَلَمْ تَكُنْ قَدِ ابْتَعْتَ ظَهْرَكَ " . قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي وَاللَّهِ لَوْ جَلَسْتُ عِنْدَ غَيْرِكَ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا لَرَأَيْتُ أَنِّي سَأَخْرُجُ مِنْ سَخَطِهِ بِعُذْرٍ وَلَقَدْ أُعْطِيتُ جَدَلاً وَلَكِنِّي وَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُ لَئِنْ حَدَّثْتُكَ الْيَوْمَ حَدِيثَ كَذِبٍ تَرْضَى بِهِ عَنِّي لَيُوشِكَنَّ اللَّهُ أَنْ يُسْخِطَكَ عَلَىَّ وَلَئِنْ حَدَّثْتُكَ حَدِيثَ صِدْقٍ تَجِدُ عَلَىَّ فِيهِ إِنِّي لأَرْجُو

वह उ़ज्र, बहाने पेश करने लगे और आपके सामने क़समें खाने लगे, वह अस्सी (80) से कुछ ज़्यादा आदमी थे, चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे उनके ज़ाहिर को (बिला तहक़ीक़ व तंक़ीद) क़बूल कर लिया, और उनको बैअ़त में ले लिया और उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ कर दी और उनके बातिन (अन्दर की हालत) को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया यहाँ तक कि मैं ह़ाज़िर हुआ तो जब मैंने सलाम किया तो आप नाराज़ी से (फ़ीकी) तौर पर मुस्कुराए, फिर कहा, 'आओ आगे आओ।' तो मैं (शर्म व नदामत से) चलता हुआ आगे आया, यहाँ तक कि आपके सामने बैठ गया तो आपने (नाराज़गी के लहजे में) फ़र्माया, 'तू क्यूँ पीछे रह गया? क्या तूने अपनी सवारी नहीं ख़रीद ली थी?' मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह की क़सम अगर मैं आपके सिवा किसी दुनियादार के सामने बैठता तो मैं सोचता कि मैं अभी कोई बहाना करके उसकी नाराज़गी से निकल जाऊँगा क्यों कि मुझे बात बनाने की क़ुदरत ह़ासिल है, लेकिन मैं अल्लाह की क़सम! ख़ूब जान चुका हूँ, अगर मैंने आज आपसे झूठी बात कही, जिससे आप मुझसे राज़ी हो जाएँगे तो जल्द ही अल्लाह (आपको ह़क़ीक़त से आगाह करके) आपको मुझसे नाराज़ कर देगा और अगर मैं आपसे सच्ची बात कहूँ, आप मुझसे नाराज़ हो जाएँगे और मैं अल्लाह से उस पर अच्छे अंजाम (हुस्ने नतीजा) की उम्मीद रखता हूँ, अल्लाह की क़सम! मेरे पास कोई उ़ज्र नहीं है, अल्लाह की क़सम! मैं कभी इतना क़वी और ख़ुशहाल

فِيهِ عُقْبَى اللَّهِ وَاللَّهِ مَا كَانَ لِي عُذْرٌ وَاللَّهِ مَا كُنْتُ قَطُّ أَقْوَى وَلاَ أَيْسَرَ مِنِّي حِينَ تَخَلَّفْتُ عَنْكَ . قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَمَّا هَذَا فَقَدْ صَدَقَ فَقُمْ حَتَّى يَقْضِيَ اللَّهُ فِيكَ " . فَقُمْتُ وَثَارَ رِجَالٌ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ فَاتَّبَعُونِي فَقَالُوا لِي وَاللَّهِ مَا عَلِمْنَاكَ أَذْنَبْتَ ذَنْبًا قَبْلَ هَذَا لَقَدْ عَجَزْتَ فِي أَنْ لاَ تَكُونَ اعْتَذَرْتَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمَا اعْتَذَرَ بِهِ إِلَيْهِ الْمُخَلَّفُونَ فَقَدْ كَانَ كَافِيَكَ ذَنْبَكَ اسْتِغْفَارُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَكَ . قَالَ فَوَاللَّهِ مَا زَالُوا يُؤَنِّبُونَنِي حَتَّى أَرَدْتُ أَنْ أَرْجِعَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأُكَذِّبَ نَفْسِي - قَالَ - ثُمَّ قُلْتُ لَهُمْ هَلْ لَقِيَ هَذَا مَعِي مِنْ أَحَدٍ قَالُوا نَعَمْ لَقِيَهُ مَعَكَ رَجُلاَنِ قَالاَ مِثْلَ مَا قُلْتَ فَقِيلَ لَهُمَا مِثْلُ مَا قِيلَ لَكَ - قَالَ - قُلْتُ مَنْ هُمَا قَالُوا مُرَارَةُ بْنُ رَبِيعَةَ الْعَامِرِيُّ وَهِلاَلُ بْنُ أُمَيَّةَ الْوَاقِفِيُّ - قَالَ - فَذَكَرُوا لِي رَجُلَيْنِ

नहीं हुआ, जितना आपसे पीछे रहने के वक़्त था, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'रहा यह तो उसने सच्ची बात कह दी है तो उठ जाओ यहाँ तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे बारे में फ़ैसला कर दे।' तो मैं उठ खड़ा हुआ और बनू सलमा के कुछ आदमी उठकर मेरे पीछे हो लिए, और उन्होंने मुझे कहा, अल्लाह की क़सम! हम नहीं जानते इससे पहले तूने कोई गुनाह किया हो तो क्या तुम इतना भी न कर सके कि दूसरे पीछे रहने वालों की त़रह तुम भी कोई उ़ज़्र रसूलुल्लाह (ﷺ) को पेश कर देते और तुम्हारे गुनाह की माफ़ी के लिए, रसूलुल्लाह (ﷺ) का तेरे लिए बख़्शिश त़लब करना काफ़ी हो जाता। कअ़ब कहते हैं, वह लोग मुझे लगातार सरज़निश व तौबीख़ करते रहे, यहाँ तक कि मैंने इरादा कर लिया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास वापिस जाकर, अपने बयान की तक्ज़ीब (झुठलाना) कर दूँ, फिर मैंने उनसे पूछा, क्या मेरे अ़लावा किसी और के साथ भी यही सुलूक हुआ है? उन्होंने कहा, हाँ! तेरे अ़लावा दो और आदमियों के साथ यही सुलूक हुआ है, उन्होंने भी वही कहा, जो तुमने कहा और उन्हें भी वही कहा गया, जो तुझे कहा गया। मैंने पूछा, वह दो कौन हैं? उन्होंने कहा, मुरारा बिन रबीआ़ आ़मिरी और हिलाल बिन उमय्या तो उन्होंने मेरे सामने दो नेक आदमियों का ज़िक्र किया, जो जंगे बद्र में शरीक हो चुके थे और वह नमूना बनने के अहल थे तो मैं उन दोनों का हाल सुनकर घर चला गया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हम तीनों से मुसलमानों को बातचीत करने से रोक दिया, बाक़ी पीछे रह

صَالِحَيْنِ قَدْ شَهِدَا بَدْرًا فِيهِمَا أُسْوَةٌ - قَالَ -فَمَضَيْتُ حِينَ ذَكَرُوهُمَا لِي . قَالَ وَنَهَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْمُسْلِمِينَ عَنْ كَلاَمِنَا أَيُّهَا الثَّلاَثَةُ مِنْ بَيْنِ مَنْ تَخَلَّفَ عَنْهُ - قَالَ - فَاجْتَنَبَنَا النَّاسُ - وَقَالَ - تَغَيَّرُوا لَنَا حَتَّى تَنَكَّرَتْ لِي فِي نَفْسِيَ الأَرْضُ فَمَا هِيَ بِالأَرْضِ الَّتِي أَعْرِفُ فَلَبِثْنَا عَلَى ذَلِكَ خَمْسِينَ لَيْلَةً فَأَمَّا صَاحِبَاىَ فَاسْتَكَانَا وَقَعَدَا فِي بُيُوتِهِمَا يَبْكِيَانِ وَأَمَّا أَنَا فَكُنْتُ أَشَبَّ الْقَوْمِ وَأَجْلَدَهُمْ فَكُنْتُ أَخْرُجُ فَأَشْهَدُ الصَّلاَةَ وَأَطُوفُ فِي الأَسْوَاقِ وَلاَ يُكَلِّمُنِي أَحَدٌ وَآتِي رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأُسَلِّمُ عَلَيْهِ وَهُوَ فِي مَجْلِسِهِ بَعْدَ الصَّلاَةِ فَأَقُولُ فِي نَفْسِي هَلْ حَرَّكَ شَفَتَيْهِ بِرَدِّ السَّلاَمِ أَمْ لاَ ثُمَّ أُصَلِّي قَرِيبًا مِنْهُ وَأُسَارِقُهُ النَّظَرَ فَإِذَا أَقْبَلْتُ عَلَى صَلاَتِي نَظَرَ إِلَىَّ وَإِذَا الْتَفَتُّ نَحْوَهُ أَعْرَضَ عَنِّي حَتَّى إِذَا طَالَ ذَلِكَ عَلَىَّ مِنْ جَفْوَةِ الْمُسْلِمِينَ مَشَيْتُ حَتَّى تَسَوَّرْتُ جِدَارَ حَائِطِ أَبِي قَتَادَةَ وَهُوَ ابْنُ عَمِّي

जाने वालों को नज़र अंदाज कर दिया, चुनाँचे लोग हमसे अलग थलग हो गए और हमारे लिए तब्दील हो गए, यहाँ तक कि मेरे लिए ज़मीन ही बदल गई, यह वह ज़मीन ही नहीं थी जिसको मैं पहचानता था, इस तरह हम पचास रातों तक ठहरे रहे, मेरे दोनों साथी वह तो बेबस हो गए और अपने घरों में बैठकर रोने लगे, लेकिन मैं उनके मुक़ाबला में जवान और ताक़तवर था, इसलिए मैं घर से निकलता, नमाज़ में हाज़िर होता, बाजारों में घूमता फिरता, मगर मेरे साथ कोई भी बातचीत न करता और मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़रीब आकर सलाम अर्ज़ करता, जबकि आप नमाज़ के बाद अपनी जगह तशरीफ़ फ़र्मा होते, और दिल में सोचता, क्या आपने सलाम का जवाब देने के लिए अपने होंठ हिलाए हैं या नहीं? फिर मैं आपके क़रीब ही नमाज़ पढ़ता और आपको कंखियों से देखता तो जब मैं अपनी नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह होता, आप मेरी तरफ़ देखते और जब मैं आपकी तरफ़ मुतवज्जह होता तो आप चेहरा फेर लेते यहाँ तक कि जब मेरे लिए मुसलमानों की सख़्ती दराज़ हो गई तो मैं चला और चचाज़ाद भाई अबू क़तादा जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थे, उसके बाग़ की चार दीवारी को फलाँगा और उसे सलाम कहा तो अल्लाह की क़सम! उसने भी मेरे सलाम का जवाब न दिया, चुनाँचे मैंने उससे कहा, ऐ अबू क़तादा! मैं तुमसे अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें इल्म है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से मुहब्बत करता हूँ। वह ख़ामोश रहा तो मैंने उसे दोबारा क़सम देकर पूछा तो वह

وَأَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَوَاللَّهِ مَا رَدَّ عَلَيَّ السَّلاَمَ فَقُلْتُ لَهُ يَا أَبَا قَتَادَةَ أَنْشُدُكَ بِاللَّهِ هَلْ تَعْلَمَنَّ أَنِّي أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ قَالَ فَسَكَتَ فَعُدْتُ فَنَاشَدْتُهُ فَسَكَتَ فَعُدْتُ فَنَاشَدْتُهُ فَقَالَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ . فَفَاضَتْ عَيْنَاىَ وَتَوَلَّيْتُ حَتَّى تَسَوَّرْتُ الْجِدَارَ فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي فِي سُوقِ الْمَدِينَةِ إِذَا نَبَطِيٌّ مِنْ نَبَطِ أَهْلِ الشَّامِ مِمَّنْ قَدِمَ بِالطَّعَامِ يَبِيعُهُ بِالْمَدِينَةِ يَقُولُ مَنْ يَدُلُّ عَلَى كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ - قَالَ -فَطَفِقَ النَّاسُ يُشِيرُونَ لَهُ إِلَيَّ حَتَّى جَاءَنِي فَدَفَعَ إِلَيَّ كِتَابًا مِنْ مَلِكِ غَسَّانَ وَكُنْتُ كَاتِبًا فَقَرَأْتُهُ فَإِذَا فِيهِ أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّهُ قَدْ بَلَغَنَا أَنَّ صَاحِبَكَ قَدْ جَفَاكَ وَلَمْ يَجْعَلْكَ اللَّهُ بِدَارِ هَوَانٍ وَلاَ مَضْيَعَةٍ فَالْحَقْ بِنَا نُوَاسِكَ . قَالَ فَقُلْتُ حِينَ قَرَأْتُهَا وَهَذِهِ أَيْضًا مِنَ الْبَلاَءِ . فَتَيَامَمْتُ بِهَا التَّنُّورَ فَسَجَرْتُهَا بِهَا حَتَّى إِذَا مَضَتْ أَرْبَعُونَ مِنَ الْخَمْسِينَ وَاسْتَلْبَثَ الْوَحْىُ إِذَا رَسُولُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَأْتِينِي فَقَالَ إِنَّ

चुप रहा, मैंने तीसरी बार क़सम देकर पूछा तो उसने कहा, अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं। चुनाँचे मेरी आँखों से आँसू बह निकले और मैं लौट आया, यहाँ तक कि दीवार फाँद गया, उन्हीं हालात में मैं मदीना के बाज़ार में गुज़र रहा था कि अचानक शाम (इराक) के किसानों में से एक किसान जो ग़ल्ला (अनाज) लेकर आया था और उसे मदीना में बेचना चाहता था, पूछ रहा था कि कौन कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) का पता देगा तो लोग मेरी तरफ़ इशारा करके बताने लगे, यहाँ तक कि वह मेरे पास आ गया और शाहे गस्सान का ख़त मेरे सुपुर्द किया, मैं लिखना पढ़ना जानता था तो मैंने उसे पढ़ा और उसमें यह लिखा था, सलाम व दुआ के बाद, सूरते हाल यह है कि हमें ख़बर मिली है तेरे साथी (नबी) ने तेरे साथ बदसुलूकी का मामला किया है, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ज़लीलो ख़्वार होने और नज़र अंदाज़ करने (तबाह व बर्बाद होने) की जगह के लिए नहीं पैदा किया है, हमारे पास आ जाओ हम तुम्हारे साथ हमदर्दी, ख़ैरख़्वाही करेंगे तो मैंने उसको पढ़कर जी में कहा, यह एक और इम्तिहान है। चुनाँचे मैंने उसे लेकर तन्नूर (आग की भट्टी) का रुख़ किया और उसे उसमें जला दिया यहाँ तक कि जब पचास में से चालीस रातें गुज़र गईं और वह्य (पैग़ाम) रुकी रही। अचानक रसूलुल्लाह (ﷺ) का एक फ़रिस्तादा मेरे पास आता है और पैग़ाम देता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हें हुक्म देते हैं, तुम अपनी बीवी से किनाराकश हो जाओ, मैंने पूछा, उसे तलाक़ दे दूँ या मैं क्या

رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَأْمُرُكَ أَنْ تَعْتَزِلَ امْرَأَتَكَ . قَالَ فَقُلْتُ أُطَلِّقُهَا أَمْ مَاذَا أَفْعَلُ قَالَ لاَ بَلِ اعْتَزِلْهَا فَلاَ تَقْرَبَنَّهَا - قَالَ - فَأَرْسَلَ إِلَى صَاحِبَىَّ بِمِثْلِ ذَلِكَ - قَالَ - فَقُلْتُ لاِمْرَأَتِي الْحَقِي بِأَهْلِكِ فَكُونِي عِنْدَهُمْ حَتَّى يَقْضِيَ اللَّهُ فِي هَذَا الأَمْرِ - قَالَ - فَجَاءَتِ امْرَأَةُ هِلاَلِ بْنِ أُمَيَّةَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ شَيْخٌ ضَائِعٌ لَيْسَ لَهُ خَادِمٌ فَهَلْ تَكْرَهُ أَنْ أَخْدُمَهُ قَالَ " لاَ وَلَكِنْ لاَ يَقْرَبَنَّكِ " . فَقَالَتْ إِنَّهُ وَاللَّهِ مَا بِهِ حَرَكَةٌ إِلَى شَىْءٍ وَوَاللَّهِ مَا زَالَ يَبْكِي مُنْذُ كَانَ مِنْ أَمْرِهِ مَا كَانَ إِلَى يَوْمِهِ هَذَا . قَالَ فَقَالَ لِي بَعْضُ أَهْلِي لَوِ اسْتَأْذَنْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي امْرَأَتِكَ فَقَدْ أَذِنَ لاِمْرَأَةِ هِلاَلِ بْنِ أُمَيَّةَ أَنْ تَخْدُمَهُ - قَالَ - فَقُلْتُ لاَ أَسْتَأْذِنُ فِيهَا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَمَا يُدْرِينِي مَاذَا يَقُولُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا اسْتَأْذَنْتُهُ فِيهَا

करूँ? उसने कहा, बस अलग हो जाओ, उसके क़रीब न जाना और इस क़िस्म का पैग़ाम आपने मेरे दोनों साथियो को भेजा तो मैंने अपनी बीवी से कहा, अपने पियर (माँ–बाप के यहाँ) चली जाओ और उनके यहाँ रहो, यहाँ तक कि अल्लाह तआला इस मामले का फ़ैसला कर दे, मगर हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) की बीवी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपसे अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) बूढ़े हो गए हैं, कमज़ोर है, उसके पास कोई ख़ादिम नहीं है, क्या आप इस बात को पसंद नहीं करते हैं कि मैं उसकी ख़िदमत करूँ। आपने फ़र्माया, 'नहीं! मगर वह तुम्हारे क़रीब न जाए।' वह बोली, अल्लाह की क़सम! उसे किसी चीज़ की ख़्वाहिश नहीं है, अल्लाह की क़सम! उसे तो जिस दिन से यह मामला पेश आया है, आज तक रोने के सिवा कोई काम ही नहीं है। हज़रत कअब कहते हैं, मुझे भी किसी अज़ीज़ ने कहा, ऐ काश! तुम भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपनी बीवी के बारे में इजाज़त तलब कर लो।' क्योंकि आपने हिलाल बिन उमय्या की बीवी को उसकी ख़िदमत करने की इजाज़त दे दी है। तो मैंने कहा, मैं इसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से इजाज़त तलब नहीं करूँगा और मुझे क्या पता है, मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) क्या फ़र्माएँगे जब मैं आपसे उसके बारे में इजाज़त माँगूगा, क्योंकि मैं तो जवान आदमी हूँ तो उस हालत में मैं दस रातें रहा और हमारे साथ बातचीत से मना किये हुए पचास रातें मुकम्मल हो गईं फिर मैंने पचास्वीं

وَأَنَا رَجُلٌ شَابٌّ - قَالَ - فَلَبِثْتُ بِذَلِكَ عَشْرَ لَيَالٍ فَكَمُلَ لَنَا خَمْسُونَ لَيْلَةً مِنْ حِينَ نُهِيَ عَنْ كَلاَمِنَا - قَالَ - ثُمَّ صَلَّيْتُ صَلاَةَ الْفَجْرِ صَبَاحَ خَمْسِينَ لَيْلَةً عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِنَا فَبَيْنَا أَنَا جَالِسٌ عَلَى الْحَالِ الَّتِي ذَكَرَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ مِنَّا قَدْ ضَاقَتْ عَلَىَّ نَفْسِي وَضَاقَتْ عَلَىَّ الأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ سَمِعْتُ صَوْتَ صَارِخٍ أَوْفَى عَلَى سَلْعٍ يَقُولُ بِأَعْلَى صَوْتِهِ يَا كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ أَبْشِرْ - قَالَ - فَخَرَرْتُ سَاجِدًا وَعَرَفْتُ أَنْ قَدْ جَاءَ فَرَجٌ . - قَالَ - فَآذَنَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم النَّاسَ بِتَوْبَةِ اللَّهِ عَلَيْنَا حِينَ صَلَّى صَلاَةَ الْفَجْرِ فَذَهَبَ النَّاسُ يُبَشِّرُونَنَا فَذَهَبَ قِبَلَ صَاحِبَىَّ مُبَشِّرُونَ وَرَكَضَ رَجُلٌ إِلَىَّ فَرَسًا وَسَعَى سَاعٍ مِنْ أَسْلَمَ قِبَلِي وَأَوْفَى الْجَبَلَ فَكَانَ الصَّوْتُ أَسْرَعَ مِنَ الْفَرَسِ فَلَمَّا جَاءَنِي الَّذِي سَمِعْتُ صَوْتَهُ يُبَشِّرُنِي فَنَزَعْتُ لَهُ ثَوْبَىَّ فَكَسَوْتُهُمَا إِيَّاهُ بِبِشَارَتِهِ وَاللَّهِ مَا أَمْلِكُ غَيْرَهُمَا يَوْمَئِذٍ وَاسْتَعَرْتُ ثَوْبَيْنِ . فَلَبِسْتُهُمَا فَانْطَلَقْتُ

रात की सुबह की नमाज़ अपने घरों में से एक घर की छत पर पढ़ी और मैं उस हालत में बैठा हुआ, जिसका तज़्किरा अल्लाह तआला ने हमारे बारे में किया, मेरे लिए मेरी जान भी तंग हो गई थी और ज़मीन भी बावजूद फ़राख़ होने के मुझ पर तंग हो गई थी, मैंने सलअ पहाड़ पर चढ़कर बुलंद आवाज़ से पुकारने वाले की आवाज़ सुनी, वह बुलंद आवाज़ से कह रहा था, ऐ कअब बिन मालिक! ख़ुश हो जाओ तो मैं सज्दे में गिर गया और मैंने जान लिया, कुशादगी आ चुकी है (हमारी मुश्किल हल हो गई है) हज़रत कअब (रज़ि.) कहते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ के बाद, अल्लाह तआला की तरफ़ से हमारी तौबा क़बूल होने की लोगों को ख़बर दी। चुनाँचे लोग हमें ख़बर (ख़ुशख़बरी) देने के लिए मस्जिद से निकले, मेरे दोनों साथियों की तरफ़ भी ख़ुशख़बरी देने वाले गए, मेरी तरफ़ भी एक आदमी ने घोड़े को दौड़ाया और असलम क़बीला का एक आदमी पैदल भागा और वह पहाड़ पर चढ़ गया तो आवाज़ घोड़े से तेज़ साबित हुई। (आवाज़ घोड़े से पहले पहुँच गई) तो जब वह आदमी बशारत देने के लिए मेरे पास आया, जिसकी आवाज़ मैंने सुन ली थी तो मैंने दोनों कपड़े उतारकर बशारत की ख़ुशी में उसको दे दिये। अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मेरे पास उनके सिवा कोई कपड़े न थे, मैंने माँगकर दो कपड़े पहने और रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ चल पड़ा (रास्ते में) लोग मुझे फ़ौज की फ़ौज मिलते थे और तौबा क़बूल होने पर मुबारक देते थे और कहते थे, अल्लाह तआला की तरफ़ से तौबा

أَتَأَمَّمُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَتَلَقَّانِي النَّاسُ فَوْجًا فَوْجًا يُهَنِّئُونِي بِالتَّوْبَةِ وَيَقُولُونَ لِتَهْنِئْكَ تَوْبَةُ اللَّهِ عَلَيْكَ . حَتَّى دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جَالِسٌ فِي الْمَسْجِدِ وَحَوْلَهُ النَّاسُ فَقَامَ طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ يُهَرْوِلُ حَتَّى صَافَحَنِي وَهَنَّأَنِي وَاللَّهِ مَا قَامَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ غَيْرُهُ . قَالَ فَكَانَ كَعْبٌ لاَ يَنْسَاهَا لِطَلْحَةَ . قَالَ كَعْبٌ فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ وَهُوَ يَبْرُقُ وَجْهُهُ مِنَ السُّرُورِ وَيَقُولُ " أَبْشِرْ بِخَيْرِ يَوْمٍ مَرَّ عَلَيْكَ مُنْذُ وَلَدَتْكَ أُمُّكَ " . قَالَ فَقُلْتُ أَمِنْ عِنْدِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمْ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَقَالَ " لاَ بَلْ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ " . وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا سُرَّ اسْتَنَارَ وَجْهُهُ كَأَنَّ وَجْهَهُ قِطْعَةُ قَمَرٍ - قَالَ - وَكُنَّا نَعْرِفُ ذَلِكَ - قَالَ - فَلَمَّا جَلَسْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ صلى الله عليه

क़बूल होने पर तुम्हें मुबारक हो, यहाँ तक कि मैं मस्जिद में दाख़िल हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) भी मस्जिद में तशरीफ़ फ़र्मा थे और आपके आसपास लोग बैठे हुए थे, चुनाँचे त़लहा बिन उ़बैदुल्लाह दौड़कर मेरे पास आए मेरे साथ मुसाफ़ा किया और मुझे मुबारकबाद दी। अल्लाह की क़सम! मुहाजिरीन में से उनके सिवा कोई दूसरा आदमी न उठा और ह़ज़रत कअ़ब, त़लहा (रज़ि.) का यह अंदाज़ न भूलते थे। ह़ज़रत कअ़ब (रज़ि.) कहते हैं, जब मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को सलाम पेश किया और आपका चेहरा ख़ुशी से दमक रहा था, आपने फ़र्माया, 'ख़ुश हो जाओ, आज तुम पर वह दिन आया है कि जबसे तेरी माँ ने तुम्हें पैदा किया है, इससे बेहतर दिन तुम पर नहीं आया।' कअ़ब (रज़ि.) कहते हैं, मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह तौबा की क़ुबूलियत आपकी त़रफ़ से है, या अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है? तो आपने फ़र्माया, 'मेरी त़रफ़ से नहीं, बल्कि अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है।' और रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुश होते तो आपका चेहरा इस त़रह चमकता जैसे वह चाँद का एक टुकड़ा है और हम आपकी यह कैफ़ियत पहचानते थे जब मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने आकर बैठा तो मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अपनी तौबा की ख़ुशी में, अपने माल से, अल्लाह और उसके रसूल के लिए स़दक़ा करते हुए, अलग होता हूँ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'चुनाँचे कुछ माल अपने लिए रख लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है।' तो मैंने कहा, फिर मैं ख़ैबर वाला

وسلم . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَمْسِكْ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ " . قَالَ فَقُلْتُ فَإِنِّي أُمْسِكُ سَهْمِيَ الَّذِي بِخَيْبَرَ - قَالَ - وَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ إِنَّمَا أَنْجَانِي بِالصِّدْقِ وَإِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ لاَ أُحَدِّثَ إِلاَّ صِدْقًا مَا بَقِيتُ - قَالَ - فَوَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ أَنَّ أَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ أَبْلاَهُ اللَّهُ فِي صِدْقِ الْحَدِيثِ مُنْذُ ذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى يَوْمِي هَذَا أَحْسَنَ مِمَّا أَبْلاَنِي اللَّهُ بِهِ وَاللَّهِ مَا تَعَمَّدْتُ كَذْبَةً مُنْذُ قُلْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى يَوْمِي هَذَا وَإِنِّي لأَرْجُو أَنْ يَحْفَظَنِيَ اللَّهُ فِيمَا بَقِيَ . قَالَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَحِيمٌ * وَعَلَى الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ { حَتَّى

माल अपने लिए रखता हूँ और मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह ने मुझे सच बोलने की वजह से नजात दी है और मैं अपनी तौबा के शुक्रिया में अ़हद करता हूँ, मैं अपनी पूरी ज़िन्दगी सच बोलूँगा, अल्लाह की क़सम! जबसे मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यह अ़हद किया है, मैं नहीं जानता कि अल्लाह तआ़ला ने किसी मुसलमान को सच बोलने की इतनी अच्छी तौफ़ीक़ दी हो, जितनी अच्छी तौफ़ीक़ मुझे मर्हमत फ़र्माई है, अल्लाह की क़सम! जबसे मैंने अल्लाह के रसूल (ﷺ) से यह अ़हद किया है, आज तक कभी झूठ बोलने का इरादा नहीं किया और मैं उम्मीद करता हूँ कि बाक़ी बची ज़िन्दगी में भी अल्लाह तआ़ला मुझे झूठ से महफ़ूज़ रखेग और अल्लाह तआ़ला ने यह आयते मुबारका उतारीं, 'अल्लाह तआ़ला ने, नबी, मुहाजिरीन और अंसार पर मेहरबानी फ़र्माई, जिन्होंने बड़ी तंगी के वक़्त उसका साथ दिया था, इसके बाद कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कजी की त़रफ़ माइल होना चाहते थे, फिर अल्लाह ने उन पर नज़रे रह़मत की, बेशक वह उन पर निहायत मेहरबान और रह़म करने वाला है और उन तीन आदमियों पर भी (रह़मत की निगाह की) जिनका मामला उठा रखा गया था, यहाँ तक कि जब ज़मीन अपनी वुस्अ़त के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी अपनी जानें भी उन पर तंग हो गईं और उन्होंने अंदाज़ा कर लिया कि अल्लाह के सिवा उनके लिए कोई पनाह की जगह नहीं , फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी की ताकि वह तौबा करें, अल्लाह

तआला यक़ीनन तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला है।' ऐ ईमानवालों! अल्लाह से डरते रहो और रास्तबाज़ (सच्चे) लोगों का साथ इख़्तियार करो।' (सूरह तौबा आयत नम्बर 117 से 119)

हज़रत कअब (रज़ि.) कहते हैं, अल्लाह की क़सम! इस्लाम लाने के बाद अल्लाह तआला ने मेरे ख़्याल में मुझ पर इतना बड़ा एहसान कभी नहीं किया, जितना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में सच बोलने की तौफ़ीक़ देकर किया और मुझे आपसे झूठ नहीं बुलवाया, वरना मैं भी दूसरे झूठ बोलने वालों की तरह हलाक हो जाता, जब वह्य नाज़िल हुई तो अल्लाह तआला ने उन झूठ बोलने वालों के हक़ में इतनी संगीन बात कही, जो किसी के हक़ में भी नहीं कही, अल्लाह तआला ने फ़र्माया, 'जब तुम उनके पास लौटकर आओगे तो वह तुम्हारे सामने यक़ीनन अल्लाह की क़समें उठाएँगे ताकि तुम उनसे ऐराज़ (यानी स़र्फ़े नज़र) करो, तो तुम उनसे ऐराज़ करो, क्योंकि वह नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है, यह उनके कामों का बदला है जो वह करते रहे, वह तुम्हारे सामने क़समें उठाएँगे, ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, अगर तुम उनसे राज़ी हो भी जाओ तो भी अल्लाह ऐसे नाफ़र्मान लोगों से राज़ी नहीं होगा।' (सूरह तौबा आयत नम्बर 95, 96)

हज़रत कअब (रज़ि.) कहते हैं, हम तीनों का मामला उन लोगों से मुअख़्ख़र कर दिया जिन लोगों का उज़्र रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके क़समें खाने की वजह से क़ुबूल कर लिया था, आपने

بَلَغَ } يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ{ قَالَ كَعْبٌ وَاللَّهِ مَا أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ مِنْ نِعْمَةٍ قَطُّ بَعْدَ إِذْ هَدَانِي اللَّهُ لِلإِسْلاَمِ أَعْظَمَ فِي نَفْسِي مِنْ صِدْقِي رَسُولَ اللَّهُ صلى الله عليه وسلم أَنْ لاَ أَكُونَ كَذَبْتُهُ فَأَهْلِكَ كَمَا هَلَكَ الَّذِينَ كَذَبُوا إِنَّ اللَّهَ قَالَ لِلَّذِينَ كَذَبُوا حِينَ أَنْزَلَ الْوَحْىَ شَرَّ مَا قَالَ لأَحَدٍ وَقَالَ اللَّهُ } سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رِجْسٌ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ * يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لاَ يَرْضَى عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ{ قَالَ كَعْبٌ كُنَّا خُلِّفْنَا أَيُّهَا الثَّلاَثَةُ عَنْ أَمْرِ أُولَئِكَ الَّذِينَ قَبِلَ مِنْهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ حَلَفُوا لَهُ فَبَايَعَهُمْ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمْ وَأَرْجَأَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَمْرَنَا حَتَّى قَضَى اللَّهُ فِيهِ فَبِذَلِكَ قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ } وَعَلَى الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا{ وَلَيْسَ الَّذِي ذَكَرَ

اللَّهُ مِمَّا خُلِّفْنَا تَخَلُّفَنَا عَنِ الْغَزْوِ وَإِنَّمَا هُوَ تَخْلِيفُهُ إِيَّانَا وَإِرْجَاؤُهُ أَمْرَنَا عَمَّنْ حَلَفَ لَهُ وَاعْتَذَرَ إِلَيْهِ فَقَبِلَ مِنْهُ .

उनसे बैअत ली और उनके हक़ में इस्तिग़फ़ार भी किया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमारा मामला मुअख़्ख़र कर दिया, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उसके बारे में फ़ैसला फ़र्माया।

'और उन तीन अफ़राद पर भी अल्लाह ने नज़रे रहमत की, जिनका मामला मुअख़्ख़र रखा गया था।' जिस ताख़ीर का अल्लाह तआला ने ज़िक्र किया है, इससे मुराद हमारा जंग से पीछे रहना नहीं है, बल्कि इससे मुराद इसका हमें मुअख़्ख़र करना और हमारा मामला उन लोगों से मुअख़्ख़र करना है, जिन्होंने क़समें उठाई थीं और आपके सामने उ़ज्र पेश किये थे और आपने उनके उ़ज़्र को क़ुबूल कर लिया था।

तख़रीज 7016 : सहीह बुख़ारी : किताबुल मग़ाज़ी : 4418; बाब बद्र की जंग का क़िस्सा : 3951; किताबुल वसाया : 2757; किताबुल् जिहाद : 2947; किताबुल् मनाक़िब : 3556; और किताबुल मनाक़िब अल अंसार : 3889; किताबुत्तफ़्सीर : 4673; बाब लक़द ताबल्लाहु अलन्नबिय्यि वल्मुहाजिरीना वल्अंसारिल्लज़ीना : 4676; और बाब व अलस्सलातिल् लजीना ख़ुल्लिफ़ू हत्ता इज़ा ज़ाक़त अ़लैहिम : 4677; और बाब या अय्युहल लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाह : 4678; किताबुल इस्तिअ़ज़ान : 2655; किताबुन् नुज़ूर : 6690; किताबुल अह़काम : 7225;

अबूदाऊद : 2202; नसाई : 2423, 2624, 2325.

मुफ़रदातुल ह़दीस : (1) अ़ला ग़ैरि मीआदिन : बग़ैर किसी पेशगी प्रोग्राम या मुआहिदा के। (2) लैलतुल अ़क़बा : इससे मुराद तीसरी लैलतुल अ़क़बा जिसमें मदीना के कबीले औस व ख़ज़रज ने अपने सत्तर या पचहत्तर सरकर्दा नुमाइन्दे चुन करके बाक़ायदा मुआहिदा करने के लिए भेजे थे, चुनाँचे यह लोग उस घाटी में आपको मिले, जिसके क़रीब जम्रा अ़क़्बा यानी बड़ा शैत़ान है और उन्होंने अपने क़बीलों की तरफ़ से आपसे अ़हदो पैमान किये और ह़लफ़ उठाए, उसमें ह़ज़रत कअ़ब बिन

मालिक (रज़ि.) ने अपने क़बीले की तरफ़ से अहदो पैमान किया था और उस मुआहिदा की तक्मील में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था और उसके लिए सर तोड़ कोशिशा की थी, इसलिए वह उसको अपने मफ़ाख़िर में शुमार करते हैं। (3) व इन कानत बद्रन अज़्क-र फ़िन्नास : अगरचे बद्र सबसे पहला ग़ज़्वा होने और यौमे फ़ुरक़ान होने की बिना पर लोगों में ज़्यादा मशहूर है, लेकिन वह बग़ैर किसी एहतिमाम व तैयारी के इत्तिफ़ाक़ी तौर पर पेश आ गया था, इसलिए मेरे नज़दीक लैलतुल अक़बा की अहमियत ज़्यादा है, क्योंकि वह आपकी और मुसलमानों की हिज्रत का पेश ख़ेमा बनी और मदीना दारुल हिज्रा ठहरा और उसके नतीजे में ग़ज़्व-ए-बद्र पेश आया। (4) फ़जला लिल्मुस्लिमीन अम्रहुम : जंगी सफ़रों में आपकी आदते मुबारका तौरिया करने की थी, जिधर जाना होता, उसका खुल्लम खुल्ला इज़्हार न करते, लेकिन जंगे तबूक के मौक़े पर, सफ़र की दराज़ी और रास्ता की मुश्किलात और दुश्मन की महारत व कसरत के पेशेनज़र साफ़ साफ़ और वाज़ेह तौर पर मंज़िले मक़्सूद का तअय्युन फ़र्मा दिया, ताकि लोग उनके मुताबिक़ पूरी तरह तैयार होकर निकलें, इसलिए उस जंग के लिए आपके साथ तीस हजार मुजाहिद निकले, जिनमें दस हज़ार सवार थे, उनके अलावा कुछ और नौकर चाकर वग़ैरह भी थे, लेकिन उनका रिकार्ड रखने के लिए किसी रजिस्टर में उनके नामों का इन्द्राज नहीं किया था इसलिए मुनाफ़िक़ और कमज़ोर ईमान वाले लोग यही समझते थे वह्य की आमद के बग़ैर किसी की ग़ैर हाज़िरी का पता नहीं चल सकेगा। (5) हीना ताबतिस्सिमार वज़्ज़िलाल : जबकि फल पक चुके थे और साये घने हो चुके थे और लोग उन दिनों अपने घरों में रहने के बहुत मोहताज और शाइक़ थे, क्योंकि यही फल ही उनकी गुज़रान और मईशत की बुनियाद थे और गर्मी की शिद्दत की वजह से घने सायों में बैठना मरग़ूब था, इसलिए हज़रत कअब (रज़ि.) कहते हैं। (6) व अना इलैहा अस्अर : मैं उनकी तरफ़ बहुत माइल था। (7) लम यज़ल ज़ालिक यतमादा बी : मैं तैयारी के सिलसिले में आजकल के बीच मुतरद्दिद (कन्फ़्युज़न में) रहा। (8) हत्तस्तमर्र बिन्नासिल जिद्दु : यहाँ तक कि लोगों ने बड़े ज़ोरो शोर और एहतिमाम व कोशिश से निकलने की तैयारी कर ली। (9) वलम अक़ज़ि मिन जहाज़ी (ﷺ) शैअन : और मैं अपनी तैयारी के सिलसिले में कुछ न कर सका। (10) व तफ़ारतल ग़ज़्वु और मुजाहिद बहुत आगे निकल गए। (11) मग़्मूसन अलैहि फ़िन्निफ़ाक़: जिन पर निफ़ाक़ का इल्ज़ाम और तोहमत थी और उसकी बिना पर हक़ीर व ज़लील तसव्वुर होते थे। (12) हबसहू बुर्दाहु वन्नज़्रू इत्फ़ैहि : अपनी चादरों की ख़ूबसूरती और अपने तनो मंद और सेहतमंद जिस्म के घमण्ड ने उसे रोक लिया है, रजुलन मुबय्यिज़ा : सफ़ेद पोश आदमी, यज़ूलु बिहिस्सराब : उससे रेगिस्तान में दिक़्क़त व इज़्तिराब पैदा हो रहा था, यानी वह दूर से सराब में आता नज़र आ रहा था। (13) कुन अबा खैसमा : ऐ अल्लाह! यह अबू खैसमा हो, जो अपना वाक़िया यूँ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को तबूक रवाना हुए चंद दिन ही गुज़रे थे कि एक दिन शदीद गर्मी पड़ रही थी, मैं दोपहर को अपने बाग़ में गया तो देखा, मेरी दोनो बीवियों ने खजूर के दरख़्तों और अंगूर की बेलों के

सायबानों के नीचे अपनी अपनी जगह को पानी छिड़ककर ख़ूब ठण्डा कर रखा है और ठण्डे मीठे पानी की सुराहियाँ तैयार पड़ी हैं, खाना तैयार है, ज्यों ही उन्होंने अ़रीश (छप्पर) में क़दम रखा, अपनी बीवियों और खाने पीने के सामाने ऐशो इशरत को देखा तो बेसाख़्ता उनकी ज़ुबान से निकला, सुब्हानल्लाह! अल्लाह का रसूल (ﷺ) जिसकी तमाम अगली पिछली कोताहियों की मग़्फ़िरत की बशारत उन्हें दुनिया ही में मिल चुकी है, वह शदीद गर्मी में रेत के रेगिस्तानों में सफ़र की मशक़्क़त बर्दाश्त करे और अबू खैसमा सरसब्ज़ दरख़्तों के ख़ुश्क साया में हसीनो जमील बीवियों के साथ बैठकर लज़ीज़ खाने खाए, ठण्डा पानी पिये और दादे ऐशो इशरत दे। अल्लाह की क़सम! यह हर्गिज़ इंसाफ़ नहीं है, इसलिए उन्होंने अपनी बीवियों से कहा, तुम इसी वक़्त मेरी सवारी और सामाने सफ़र तैयार कर दो, ताकि मैं जल्द ही, रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो जाऊँ, चुनाँचे दोनों फ़र्माबरदार बीवियों ने उसी वक़्त आबकशी (सिंचाई) के ऊँट पर उनका सामाने सफ़र बाँधा और उन्होंने उसी वक़्त तने तंहा तबूक की राह ली। यहाँ तक कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दूर से, एक सफ़ेदपोश तने तन्हा सवार को सराब के थपेड़ों में देखा तो फ़ौरन ज़ुबान से निकला (14) कुन अबा **खैसमा :** अबू खैसमा हो तो वह वही थे। (15) लमजहुल मुनाफ़िक़ून : मुनाफ़िक़ों ने उसे अपनी तंज़ व तअ़न और तह़क़ीर का निशाना बनाया। (16) तवज्जह क़ाफ़िला : वापसी का रुख़ कर लिया, ह़ज़रनी सिदक़ुहू : आपसे सच्ची बात कहने का पुख़्ता अ़हद कर लिया। (17) लक़द उअ़्तीतु जदला : मुझे फ़स़ाहत व बलाग़त और ज़ोरे बयान और लताफ़ते लिसानी से नवाज़ा गया है और मैं बेहतरीन उ़ज़्र बहाना करके अपनी स़फ़ाई पेश कर सकता हूँ। (18) तजिदु अ़लय्या : आप मुझ पर नाराज़ हो जाएँगे, हिलाल बिन उमय्या और मुरारा बिन रबीअ़ आ़मिरी को शुरकाए बद्र में से क़रार दिया गया है। ह़ाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह़.) ने ज़ादुल मआ़द जिल्द 3 पेज 505 मत्बूआ दारे अह्याउत्तुरास इस्लामी में लिखा है कि अहले मग़ाज़ी और मुअर्रिख़ीन में से किसी ने भी उन दोनों बुज़ुर्गों का नाम अस्ह़ाबे बद्र में ज़िक्र नहीं किया और होना भी ऐसा ही चाहिए, क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) बद्री का मुक़ातआ नहीं किया और न ही उन्हें कोई दूसरी सज़ा दी, ह़ालाँकि उन्होंने राज़ इफ़्शा करने का जुर्म किया था, कहाँ जंग से पीछे रह जाना और कहाँ राज़ इफ़्शा करने का जुर्म, इस त़रह़ इब्ने क़य्यिम (रह़.) ने अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी से अबू बक्र असरम का क़ौल नक़्ल किया है कि ज़ोहरी के फ़ज़्ल, ह़िफ़्ज़ और इत्क़ान में कोई शुब्हा नहीं है और उनकी इस ग़लती के सिवा मेरे सामने कोई ग़लती नहीं है लेकिन मुरारा बिन रबीअ़ आ़मिरी हैं उनको मुरारा बिन रबीअ़ उ़मरी कहना सही नहीं और हिलाल बिन उमय्या का बद्र में शरीक होना उसके अ़लावा किसी ने ज़िक्र नहीं किया, यह उनकी ग़लती है और ग़लती से कोई इंसान मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता। (19) मा ज़ालू युअन्निबूननी : वह मुझे मुसलसल सरजनिश व तौबीख़ व मलामत करते रहे। (20) इस्तकाना : वह दोनों झुक गए, झेंप गए, कुन्तु अशब्बल क़ौमि व अज्लदहुम : मैं तीनों में से जवान और ताकतवर था। ह़त्ता तसव्वर्तु

: यहाँ तक कि मैं दीवार पर चढ़ गया। (21) नबतिय्य : किसान, काश्तकार, बि दारि हवान वला मज़्यअति : ज़िल्लत व रुस्वाई का घर और जहाँ हुक़ूक़ का तहफ़्फ़ुज़ न हो, बल्कि ज़ाया हों, तयामम्तु : हज़रत कअब ने अपनी कुव्वते ईमानी और अल्लाह और उसके रसूल की हक़ीक़ी व सच्ची मुहब्बत की बिना पर, दुश्मन के उस हमले को भी सह लिया, हालाँकि शुअरा माल व दौलत और शाही दरबारों के बड़े रसिया होते हैं, इसलिए उन्होंने उस शाहीनामा को तन्नूर की नज़र कर दिया। (22) तयामम्तु : मैंने रुख़ किया। (23) इस्तल्बसल वह्‌यु : वह्‌य के नुज़ूल में ताख़ीर (देर) हो गई। (24) औफ़ा अ़ला सल्इ : वह सल्अ पहाड़ पर चढ़ गया, जहाँ हज़रत कअब ख़ैमा बना चुके थे।

फ़आज़न रसूलुल्लाहि (ﷺ) : हुज़ूरे अकरम (ﷺ), हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर में थे, तो रात के आख़िरी तिहाई में क़ुबूलियते तौबा की आयात उतरीं, चूँकि हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) हज़रत कअब (रज़ि.) के मामले से दिलचस्पी लेती थीं और उन पर करम फ़र्मा थीं, इसलिए आपने उन्हें उसी वक़्त हज़रत कअब (रज़ि.) की तौबा की क़ुबूलियत से आगाह कर दिया और उन्होंने उसी वक़्त हज़रत कअब (रज़ि.) की तरफ़ पैग़ाम भेजना चाहा, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रोक दिया और फ़र्माया, 'लोग तुम्हारे घर इज्दहाम (भीड़) करेंगे और तुम्हें सोने नहीं देंगे, इसलिए आपने सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद, उनकी तौबा की क़ुबूलियत का ऐलान किया तो हज़रत हम्ज़ा बिन अ़म्र असलमी पैदल, हज़रत कअब (रज़ि.) को बशारत देने के लिए दौड़े और हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (रज़ि.) ने अपना घोड़ा दौड़ाया। (25) अन अन्ख़लअ मिम् माली : मैं अपने सारे माल से अलग हो जाता हूँ, सारा माल अल्लाह की राह में सदक़ा करता हूँ। (26) अम्सिक बअ़ज़ मालिक : अपना कुछ माल रोक लो, कुछ रिवायतों में तिहाई माल का सदक़ा तेरे लिए काफ़ी है, जिससे सवाब होता, अहलो अ़याल और घरेलू ज़रूरियात का लिहाज़ रखना ज़रूरी है, उनको नज़र अंदाज़ करके सारा माल सदक़ा कर देना सही नहीं है। (27) अब्लाहुल्लाहु : इस पर अल्लाह ने इन्आम व एहसान फ़र्माया। (28) अन ला अकूना कज़ब्तुहू : मैंने आपसे झूठ नहीं बोला।

फ़ायदा : यह हदीस फ़साहत व बलाग़त का एक इंतिहाई आला नमूना है, जिसमें हज़रत कअब (रज़ि.) ने अपने जज़्बात व एहसासात और दिली कैफ़ियात की बेहतरीन अंदाज से तर्जुमानी की है। सहाबा किराम (रज़ि.) का जज़्ब–ए–इताअत व फ़र्मांबरदारी नुमायाँ किया है और आपका सहाबा किराम के साथ तर्ज़े अ़मल और प्यार, उम्दा पैराये में बयान किया है, मसर्रत के वक़्त आपके रुख़ अनवर की अक्कासी की है, सिद्क़ व सच्चाई का हुस्ने अंजाम बताया है और अल्लाह तआला के एहसान व इन्आम से इस्तिहक़ाक़ पैदा करने के लिए जिस ईसार व क़ुर्बानी की ज़रूरत है, उसका नक़्शा हसीन अंदाज़ से खींचा है और इस हदीस से उलमा ने जो अहम फ़ायदे व नताइज अख़ज़ (निकाले) किये हैं, हम आख़िर में उनका ख़ुलासा बयान करेंगे।

(7017) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

तख़रीज 7017 : इसकी तख़रीज हदीस नं. (6947) में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا حُجَيْنُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِإِسْنَادِ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ، سَوَاءً .

(7018) उबैदुल्लाह बिन कअब (रह.) जो हज़रत कअब (रज़ि.) के नाबीना हो जाने के बाद उनकी रहनुमाई करते थे, बयान करते हैं कि मैंने हज़रत कअब बिन मालिक से उनके गज़्व-ए तबूक में रसूलुल्लाह (ﷺ) से पीछे रह जाने का वाक़िया उनकी अपनी ज़ुबान से सुना, आगे ऊपर वाली हदीस है जिसमें यह इज़ाफ़ा है। रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी ग़ज़्वा के लिए निकलना चाहते थे तो आम तौर पर तौरिया से काम लेते हुए और जहत (दिशा) का ज़िक्र करते, यहाँ तक कि यह ग़ज़्वा आ गया, (तो आपने उसका तज़्किरा सराहतन फ़र्माया) और ज़ोहरी के भतीजे ने अपनी इस हदीस में , हज़रत अबू ख़ैसमा और उनके नबी अकरम (ﷺ) के साथ जा मिलने का ज़िक्र नहीं किया।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ، اللَّهِ بْنِ مُسْلِمٍ ابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ عَنْ عَمِّهِ، مُحَمَّدِ بْنِ مُسْلِمٍ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ، بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، وَكَانَ، قَائِدَ كَعْبٍ حِينَ عَمِيَ قَالَ سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حَدِيثَهُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَزَادَ فِيهِ عَلَى يُونُسَ فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَلَّمَا يُرِيدُ غَزْوَةً إِلاَّ وَرَّى بِغَيْرِهَا حَتَّى كَانَتْ تِلْكَ الْغَزْوَةُ . وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِ ابْنِ أَخِي الزُّهْرِيِّ أَبَا خَيْثَمَةَ وَلُحُوقَهُ بِالنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم .

(7019) हज़रत उबैदुल्लाह बिन कअब जो हज़रत कअब (रज़ि.) के नाबीना हो जाने के बाद उनके रहबर थे और अपनी क़ौम में सबसे बड़े आलिम थे और अपनी क़ौम में सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथियों की

وَحَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، -وَهُوَ ابْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ - عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ عَمِّهِ، عُبَيْدِ اللَّهِ

بْنِ كَعْبٍ وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ حِينَ أُصِيبَ بَصَرُهُ وَكَانَ أَعْلَمَ قَوْمِهِ وَأَوْعَاهُمْ لأَحَادِيثِ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ سَمِعْتُ أَبِي كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ وَهُوَ أَحَدُ الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ تِيبَ عَلَيْهِمْ يُحَدِّثُ أَنَّهُ لَمْ يَتَخَلَّفْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا قَطُّ غَيْرَ غَزْوَتَيْنِ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَقَالَ فِيهِ وَغَزَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِنَاسٍ كَثِيرٍ يَزِيدُونَ عَلَى عَشْرَةِ آلاَفٍ وَلاَ يَجْمَعُهُمْ دِيوَانُ حَافِظٍ .

अहादीस को याद रखते थे, वह बयान करते हैं, मैंने अपने वालिद कअब (रज़ि.) बिन मालिक से जो उन तीन में एक हैं, जिनकी तौबा क़बूल की गई, बयान करते हुए सुना कि वह रसूलुल्लाह (ﷺ) से आप किसी ग़ज़्वा से जो आपने किया, कभी पीछे नहीं रहे, सिवाये ग़ज़्वा (बद्र, तबूक) के और ऊपर वाली हदीस बयान की, उसमें यह भी है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बहुत से लोगों के साथ में जो दस हज़ार से ज़ाइद थे, जिहाद किया और किसी महफ़ूज़ रखने वाले दफ़्तर या रजिस्टर में उनका नाम दर्ज न था।

फ़ायदा : (1) दुश्मन की साज़िशों और जंगी तैयारियों को नाकाम करने के लिए दुश्मन के क़ाफ़िले पर हमला करना और माले ग़नीमत बनाना जाइज़ है, इस बिना पर ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर हमला क़ाफ़िला पर करना मक़्सूद था। (2) अहले अ़क़बा की फ़ज़ीलत, हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने जंगे बद्र में हाज़िरी को उससे बेहतर ख़्याल नहीं किया। (3) अमीरे लश्कर को चाहिए अगर दूरदराज़ का सफ़र दरपेश न हो तो वह किसी मुहिम पर रवानगी के लिए तौरिया व तअ़रीज़ से काम ले, ताकि दुश्मन जासूसी न कर सके। (4) इंसान से अगर कोई ख़ैर और नेकी का काम रह जाए तो उस पर अफ़सोस करे और यह तमन्ना करे, ऐ काश! मैं यह काम कर लेता, हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने कहा था, या लैतनी फ़अ़ल्तु (5) अगर कोई शख़्स मुसलमान की ग़ीबत करे तो उसकी तर्दीद करना, हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) ने कहा था, बिअस मा क़ुल्त (तूने जो कहा अच्छा नहीं कहा) (6) सिद्क़ व सच्चाई और उस पर साबित क़दमी और इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत, ख़्वाह उसकी ख़ातिर मशक़्क़त से दो चार होना पड़े, क्योंकि उसका अंजाम और नतीजा बेहतर है। (7) अपने कलाम में ज़ोरऔर ताकीद पैदा करने के लिए क़सम के मुतालबा के बग़ैर क़सम उठाना, जैसकि हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने बार बार क़सम उठाई है। (8) सफ़र से वापसी पर महल्ले की मस्जिद में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना और अगर लोग उससे मुलाक़ात के ख़्वाहिशमंद हों तो उनके लिए मस्जिद में कुछ देर बैठे रहना। (9) अगर किसी फ़साद का अंदेशा न हो तो लोगों के ज़ाहिरी अहवाल पर हुक्म लगाना और उनके बातिन को अल्लाह के सुपुर्द करना, आपने मुनाफ़िक़ों के उ़ज़्रों को क़बूल फ़र्मा लिया था और उनके हक़ में

दुआए मग़्फ़िरत भी कर दी थी, जिससे मालूम होता है, आप लोगों के बातिन से आगाह न थे। (10) गुनाहगार और मअ़्सियतकार लोगों से मुआशरती (समाजी) बायकाट करना और ज़जर व तौबीख़ की ख़ातिर उससे सलाम व कलाम बन्द करना। (11) जब इंसान से कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो उस पर इज़्हारे नदामत करना और रोना। (12) नमाज़ में किसी की तरफ़ नज़र चुराकर देखना और उसकी तरफ़ तवज्जह करना नमाज़ को बातिल नहीं करता। (13) किसी ज़रूरत और मस्लिहत के तहत जिस काग़ज़ पर अल्लाह का नाम हो, उसको जलाना जाइज़ है, जैसाकि हज़रत कअ़ब ने शाहे ग़स्सान का ख़त जला दिया था और उसमें अल्लाह का नाम लिखा हुआ था। (14) रसूलुल्लाह (ﷺ) का नज़रें बचाकर, हज़रत कअ़ब (रज़ि.) को देखना जिससे मालूम हुआ, आपने ज़ाहिरी लिहाज़ से मुक़ातिआ किया था, दिल में उनकी मुहब्बत मौजूद थी। (15) सलाम कहना और उसका जवाब देना भी कलाम है, इसलिए हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने सलाम का जवाब न दिया। (16) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअत को अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों की मुहब्बत पर तर्जीह देना कि हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने ऐसे ही किया था। (17) जिस चीज़ से फ़ित्ना व फ़साद में मुब्तला होने का अंदेशा हो, उससे परहेज़ और इज्तिनाब करना, हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने अपनी बीवी से ख़िदमत लेने की इजाज़त तलब न की और शाहे ग़स्सान के ख़त को जला दिया। (18) किसी शख़्स का अपनी बीवी को तलाक़ की निय्यत के बग़ैर यह कहना 'अपने मायके चली जाओ' तलाक़ नहीं है। (19) किसी ख़ुश कुन ख़बर पर सज्द-ए-शुक्र बजा लाना, किसी नेअ़मत व कामयाबी के हासिल करने पर लोगों का मुबारकबाद देना। (20) ख़ुशख़बरी देने वाले को इन्आम देना, लिबास वग़ैरह देना। (21) इमाम व रहनुमा का अपने साथियों की ख़ुशी और मसर्रत के मौक़े पर मसर्रत व फ़रहत का इज़्हार करना। (22) किसी कर्ब व तक्लीफ़ के ज़ाइल होने या नेअ़मत के हासिल होने पर सदक़ा करना। (23) सारे माल का सदक़ा करने वाले को जबकि अहलो अ़याल के तंगी में मुब्तला होने का अंदेशा हो कुछ माल अपने पास रख लेने का मश्वरा देना और सारे माल के सदक़े से रोक देना। (24) जो अ़मल कामयाबी व कामरानी के हासिल होने की वजह हो, उस पर दवाम व हमेशगी करना जैसाकि हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने सच बोलने का इल्तिज़ाम किया। (25) जब जिहाद फ़र्ज़े ऐन हो, अमीर नफ़ीरे आ़म का हुक्म दे तो उससे पीछे रहना क़ाबिले गिरफ़्त है। (26) क़ुबूलियते तौबा का दिन एक मुसलमान के लिए बेहतरीन दिन है। (27) किसी मुसीबत में गिरफ़्तार को दूसरे मुसीबतज़दा को अपने लिए नमूना बनाना चाहिए। (28) अपने साथियों का मुआशरती बायकाट करना, अपनी ज़मीन और अपने आपसे वहशत महसूस करने का बाइस बनना, उसके अच्छा और बेहतर होने की दलील है। (29) अल्लाहु व रसूलुहू आ'लम! यह कहना कलाम नहीं है, इस तरह ज़ुबान से कुछ कहे बग़ैर इशारा से किसी की निशानदेही कर देना, मुक़ातिआ के मुनाफ़ी नहीं है। (30) नेक और अच्छे लोगों का इम्तिहान भी कमज़ोर ईमान वालों के मुक़ाबले में सख़्त होता है।

बाब 11 :
इफ़्क और तोहमत लगाने वालों की तौबा की क़ुबूलियत का बयान

(7020) इमाम ज़ोहरी (रह.) से रिवायत है कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब, उ़र्वा बिन ज़ुबैर, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने, नबी अकरम (ﷺ) की बीवी ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से इस वाक़िया के बारे में ह़दीस बयान की। जब तोहमत लगाने वालों ने उन पर तोहमत लगाई और अल्लाह तआ़ला ने उनकी बातों से उनकी बरा'त फ़र्माई। उन सबने मुझे उन (आ़इशा) की ह़दीस का कुछ ह़िस्सा बयान किया, उनमें से कुछ इस ह़दीस को अपने दूसरे साथियों से ज़्यादा याद रखने वाले और बेहतर त़रीक़े (अंदाज़ व उस्लूब) से बयान करने वाले थे, मैंने हर एक से ह़दीस का वह ह़िस्सा याद किया, जो उसने मुझे सुनाया। उन सबकी ह़दीस से एक दूसरे की तस्दीक़ होती है, उन सबने बताया नबी अकरम (ﷺ) की बीवी, ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया, रसूलुल्लाह (ﷺ) का त़रीक़ा था, जब आप सफ़र पर जाने का इरादा करते तो अपनी बीवियों के बीच क़ुरआ अन्दाजी करते तो उनमें से जिसका क़ुरआ (नाम की पर्ची) निकल आता, रसूलुल्लाह (ﷺ) उसको अपने साथ ले जाते। चुनाँचे मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ गई, यह

(11)
بَاب : فِيْ حَدِيثِ الْإِفْكِ

حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، الأَيْلِيُّ ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ ابْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، وَالسِّيَاقُ، حَدِيثُ مَعْمَرٍ مِنْ رِوَايَةِ عَبْدٍ وَابْنِ رَافِعٍ قَالَ يُونُسُ وَمَعْمَرٌ جَمِيعًا عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَعَلْقَمَةُ بْنِ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَبَرَّأَهَا اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكُلُّهُمْ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنْ حَدِيثِهَا وَبَعْضُهُمْ كَانَ أَوْعَى لِحَدِيثِهَا مِنْ بَعْضٍ وَأَثْبَتَ اقْتِصَاصًا وَقَدْ وَعَيْتُ عَنْ كُلِّ

وَاحِدٍ مِنْهُمُ الْحَدِيثَ الَّذِي حَدَّثَنِي وَبَعْضُ حَدِيثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا ذَكَرُوا أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ فَأَيَّتُهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَعَهُ - قَالَتْ عَائِشَةُ - فَأَقْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا فَخَرَجَ فِيهَا سَهْمِي فَخَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَذَلِكَ بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ فَأَنَا أُحْمَلُ فِي هَوْدَجِي وَأُنْزَلُ فِيهِ مَسِيرَنَا حَتَّى إِذَا فَرَغَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ غَزْوِهِ وَقَفَلَ وَدَنَوْنَا مِنَ الْمَدِينَةِ آذَنَ لَيْلَةً بِالرَّحِيلِ فَقُمْتُ حِينَ آذَنُوا بِالرَّحِيلِ فَمَشَيْتُ حَتَّى جَاوَزْتُ الْجَيْشَ فَلَمَّا قَضَيْتُ مِنْ شَأْنِي أَقْبَلْتُ إِلَى الرَّحْلِ فَلَمَسْتُ صَدْرِي فَإِذَا عِقْدِي مِنْ جَزْعِ ظَفَارِ قَدِ انْقَطَعَ فَرَجَعْتُ فَالْتَمَسْتُ عِقْدِي فَحَبَسَنِي ابْتِغَاؤُهُ وَأَقْبَلَ الرَّهْطُ الَّذِينَ كَانُوا يَرْحَلُونَ لِي فَحَمَلُوا هَوْدَجِي

पर्दा वाली आयात उतरने के बाद का वाक़िया है पूरे सफ़र में कजावे में बैठी बिठाई ऊँट पर सवार की जाती और उसमें मुझे उतार लिया जाता। यहाँ तक कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) जंग से फ़ारिग़ होकर वापिस आए और हम मदीना के क़रीब पहुँच गए एक रात आपने कूच का ऐलान किया, जब उन्होंने कूच का ऐलान किया तो मैं उठकर चल पड़ी यहाँ तक कि लश्कर से दूर निकल गई तो जब मैं क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होकर अपने कजावे की तरफ़ बढ़ी तो मैंने अपने सीने को टटोला तो मालूम हुआ कि मेरा ज़िफ़ार के ख़ुरमोहरों का हार टूटकर गिर गया है तो मैं वापिस उसे ढूँढने चली गई और उसकी तलाश में रुकी रही, वह लोग जो मेरा कजावा (पालकी) कसते थे, उन्होंने मेरा होदज उठाया और मैं जिस ऊँट पर सवार होती थी, उस पर कस दिया और वह यह समझते थे कि मैं उसमें हूँ, उस ज़माने में औरतें हल्की फुल्की होती थीं, उनके जिस्म गुदाज़ और भारी नहीं होते थे, क्योंकि वह कम ख़ूराक खाती थीं, इसलिए उन्होंने कजावे के बोझ को न मानूस महसूस न किया, जब उठाकर उन्होंने उसे कस दिया और मैं नौ उम्र थी, उन्होंने ऊँट को उठाया और चल पड़े, लश्कर के चले जाने के बाद मुझे हार मिल गया तो मैं लश्करगाह की तरफ़ वापिस आई (वहाँ कोई मौजूद न था) किसी बुलाने वाले और जवाब देने वाले की आवाज़ सुनाई नहीं देती थी तो मैंने अपनी उस जगह का रुख़ किया, जहाँ मैंने रात गुज़ारी थी और मैं समझती थी कि लोग जल्द ही मुझे गुम पाएँगे तो मेरी तरफ़ लेने के लिए आएँगे,

مُنْذُ ...

مجھے

फ़फ़ रहल्लूहु

فَرَحَلُوهُ عَلَى بَعِيرِيَ الَّذِي كُنْتُ أَرْكَبُ وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنِّي فِيهِ - قَالَتْ - وَكَانَتِ النِّسَاءُ إِذْ ذَاكَ خِفَافًا لَمْ يُهَبَّلْنَ وَلَمْ يَغْشَهُنَّ اللَّحْمُ إِنَّمَا يَأْكُلْنَ الْعُلْقَةَ مِنَ الطَّعَامِ فَلَمْ يَسْتَنْكِرِ الْقَوْمُ ثِقَلَ الْهَوْدَجِ حِينَ رَحَلُوهُ وَرَفَعُوهُ وَكُنْتُ جَارِيَةً حَدِيثَةَ السِّنِّ فَبَعَثُوا الْجَمَلَ وَسَارُوا وَوَجَدْتُ عِقْدِي بَعْدَ مَا اسْتَمَرَّ الْجَيْشُ فَجِئْتُ مَنَازِلَهُمْ وَلَيْسَ بِهَا دَاعٍ وَلاَ مُجِيبٌ فَتَيَمَّمْتُ مَنْزِلِي الَّذِي كُنْتُ فِيهِ وَظَنَنْتُ أَنَّ الْقَوْمَ سَيَفْقِدُونِي فَيَرْجِعُونَ إِلَيَّ فَبَيْنَا أَنَا جَالِسَةٌ فِي مَنْزِلِي غَلَبَتْنِي عَيْنِي فَنِمْتُ وَكَانَ صَفْوَانُ بْنُ الْمُعَطَّلِ السُّلَمِيُّ ثُمَّ الذَّكْوَانِيُّ قَدْ عَرَّسَ مِنْ وَرَاءِ الْجَيْشِ فَادَّلَجَ فَأَصْبَحَ عِنْدَ مَنْزِلِي فَرَأَى سَوَادَ إِنْسَانٍ نَائِمٍ فَأَتَانِي فَعَرَفَنِي حِينَ رَآنِي وَقَدْ كَانَ يَرَانِي قَبْلَ أَنْ يُضْرَبَ الْحِجَابُ عَلَيَّ فَاسْتَيْقَظْتُ بِاسْتِرْجَاعِهِ حِينَ عَرَفَنِي فَخَمَّرْتُ وَجْهِي بِجِلْبَابِي وَوَاللَّهِ مَا يُكَلِّمُنِي كَلِمَةً وَلاَ سَمِعْتُ مِنْهُ كَلِمَةً غَيْرَ اسْتِرْجَاعِهِ حَتَّى أَنَاخَ رَاحِلَتَهُ فَوَطِئَ عَلَى

मुझे अपनी जगह बैठे बैठे नींद आ गई और मैं सो गई। स़फ़्वान बिन मुअ़त्तल सुलमी ज़क्वानी (रज़ि.) ने रात लश्कर के पीछे गुजार दी थी तो वह रात के आख़िरी हिस़्से में चले और सुबह के वक़्त मेरी क़यामगाह पर पहुँच गए तो उन्होंने एक सोये हुए इंसान की स़ूरत देखी तो वह मेरे पास आए और मुझे देखते ही पहचान लिया, क्योंकि वह मुझ पर पर्दा करने का हुक्म नाज़िल होने से पहले, मेरा चेहरा देख चुके थे, जब उन्होंने मुझे पहचानकर इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा, मैं जाग पड़ी तो मैंने अपनी बड़ी चादर से अपना चेहरा ढाँप लिया, अल्लाह की क़सम! उसने मेरे साथ कोई बात नहीं की और न मैंने (इन्ना लिल्लाह) के सिवा उनकी ज़ुबान से कुछ सुना, उन्होंने अपनी ऊँटनी बिठा दी और उसके हाथ पर अपना पैर रखा तो मैं उस पर सवार हो गई और वह ऊँटनी की महार पकड़कर आगे आगे चलने लगे, यहाँ तक कि हम लश्कर में आ पहुँचे, जबकि वह ऐ़न दोपहर के वक़्त पड़ाव कर चुके थे तो मेरे मामले में हलाक होने वाले हलाक हो गए और उसमें बड़ा रोल (किरदार) अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन अबी सलूल ने अदा किया, चुनाँचे हम मदीना पहुँच गए और जब हम मदीना पहुँच गए, मैं एक माह बीमार हो गई, लोग तोहमत लगाने वालों की तोहमत फैलाते और और मशहूर करते रहे और मुझे उसका बिलकुल पता न था, हाँ! मुझे अपनी उस बीमारी में यह बात खटकती और परेशान करती थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ से वह लुत़्फ़ो मेहरबानी नज़र नहीं आती थी, जिसका

يَدِهَا فَرَكِبْتُهَا فَانْطَلَقَ يَقُودُ بِي الرَّاحِلَةَ حَتَّى أَتَيْنَا الْجَيْشَ بَعْدَ مَا نَزَلُوا مُوغِرِينَ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ فَهَلَكَ مَنْ هَلَكَ فِي شَأْنِي وَكَانَ الَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَىٍّ ابْنُ سَلُولَ فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَاشْتَكَيْتُ حِينَ قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ شَهْرًا وَالنَّاسُ يُفِيضُونَ فِي قَوْلِ أَهْلِ الإِفْكِ وَلاَ أَشْعُرُ بِشَىْءٍ مِنْ ذَلِكَ وَهُوَ يَرِيبُنِي فِي وَجَعِي أَنِّي لاَ أَعْرِفُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم اللُّطْفَ الَّذِي كُنْتُ أَرَى مِنْهُ حِينَ أَشْتَكِي إِنَّمَا يَدْخُلُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَيُسَلِّمُ ثُمَّ يَقُولُ " كَيْفَ تِيكُمْ " . فَذَاكَ يَرِيبُنِي وَلاَ أَشْعُرُ بِالشَّرِّ حَتَّى خَرَجْتُ بَعْدَ مَا نَقِهْتُ وَخَرَجَتْ مَعِي أُمُّ مِسْطَحٍ قِبَلَ الْمَنَاصِعِ وَهُوَ مُتَبَرَّزُنَا وَلاَ نَخْرُجُ إِلاَّ لَيْلاً إِلَى لَيْلٍ وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ نَتَّخِذَ الْكُنُفَ قَرِيبًا مِنْ بُيُوتِنَا وَأَمْرُنَا أَمْرُ الْعَرَبِ الأُوَلِ فِي التَّنَزُّهِ وَكُنَّا نَتَأَذَّى بِالْكُنُفِ أَنْ نَتَّخِذَهَا عِنْدَ بُيُوتِنَا فَانْطَلَقْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ وَهِيَ بِنْتُ أَبِي رُهْمِ بْنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ

मुज़ाहिरा आप मेरी बीमारी के मौक़े पर किया करते थे। बस रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाते, सलाम कहते, फिर पूछते, 'कैसी हो?' यह चीज़ मुझे शक व शुब्हा में डालती, लेकिन मुझे शरारत का इल्म नहीं था, जब बीमारी की नक़ाहत व कमज़ोरी के बाद मैं उम्मे मिस्तह (रज़ि.) के साथ मनासिअ की तरफ़ निकली, जो हमारी क़ज़ाए हाजत (पेशाब पाखाने) की जगह थी और हम सिर्फ़ रात को ही निकला करते थे और यह उस वक़्त की बात है, जबकि हमने घरों के क़रीब बैतुल-खला (शौचालय) नहीं बनाए थे और बाहर निकलने के बारे में हमारा मामला पहले अरबों की तरह था, हम अपने घरों के पास बैतुलख़ला बनाने से अज़िय्यत (तक्लीफ़) महसूस करते थे, मैं और उम्मे मिस्तह (रज़ि.) दोनों क़ज़ाए हाजत के लिए निकलीं। वह अबू रूहम बिन मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ की बेटी थीं और उनकी वालिदा सख़र बिन आमिर की बेटी, अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़ाला थीं, उनका बेटा मिस्तह बिन असासा बिन अब्बाद बिन मुत्तलिब था, जब हम क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हुईं तो मैं और अबू रूहम की बेटी, मेरे घर की तरफ़ वापिस आईं तो उम्मे मिस्तह अपनी चादर में उलझकर गिरने लगीं, उस पर उसने कहा, मिस्तह हलाक हो गया तो मैंने उनसे कहा, आपने बहुत बुरी बात कही है, क्या आप ऐसे शख़्स को बुरा भला कहती हैं, जो जंगे बद्र में शरीक हो चुका है, उन्होंने कहा, बीबी, आपने वह बात नहीं सुनी, जो उसने कही है? मैंने पूछा उसने क्या कहा है? तो उन्होंने मुझे

مَنَافٍ وَأُمُّهَا ابْنَةُ صَخْرِ بْنِ عَامِرٍ خَالَةُ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ وَابْنُهَا مِسْطَحُ بْنُ أُثَاثَةَ بْنِ عَبَّادِ بْنِ الْمُطَّلِبِ فَأَقْبَلْتُ أَنَا وَبِنْتُ أَبِي رُهْمٍ قِبَلَ بَيْتِي حِينَ فَرَغْنَا مِنْ شَأْنِنَا فَعَثَرَتْ أُمُّ مِسْطَحٍ فِي مِرْطِهَا فَقَالَتْ تَعِسَ مِسْطَحٌ . فَقُلْتُ لَهَا بِئْسَ مَا قُلْتِ أَتَسُبِّينَ رَجُلاً قَدْ شَهِدَ بَدْرًا . قَالَتْ أَىْ هَنْتَاهُ أَوَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالَ قُلْتُ وَمَاذَا قَالَ قَالَتْ فَأَخْبَرَتْنِي بِقَوْلِ أَهْلِ الإِفْكِ فَازْدَدْتُ مَرَضًا إِلَى مَرَضِي فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي فَدَخَلَ عَلَىَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ " كَيْفَ تِيكُمْ " . قُلْتُ أَتَأْذَنُ لِي أَنْ آتِيَ أَبَوَىَّ قَالَتْ وَأَنَا حِينَئِذٍ أُرِيدُ أَنْ أَتَيَقَّنَ الْخَبَرَ مِنْ قِبَلِهِمَا . فَأَذِنَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَجِئْتُ أَبَوَىَّ فَقُلْتُ لأُمِّي يَا أُمَّتَاهُ مَا يَتَحَدَّثُ النَّاسُ فَقَالَتْ يَا بُنَيَّةُ هَوِّنِي عَلَيْكِ فَوَاللَّهِ لَقَلَّمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ قَطُّ وَضِيئَةٌ عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا وَلَهَا ضَرَائِرُ إِلاَّ كَثَّرْنَ عَلَيْهَا - قَالَتْ - قُلْتُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَقَدْ تَحَدَّثَ النَّاسُ بِهَذَا

तोहमत लगाने वालों की बात सुनाई, जिससे मेरी बीमारी बहुत ज़्यादा बढ़ गई तो जब मैं घर वापिस पहुँची, रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए, सलाम कहा, फिर पूछा, 'तुम कैसी हो?' मैंने कहा, क्या आप मुझे मेरे वालिदैन के घर जाने की इजाज़त देते हैं? आइशा (रज़ि.) कहती हैं, उससे मेरी ग़र्ज़ यह थी कि मैं उनसे उस ख़बर का यक़ीन हासिल कर लूँ। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इजाज़त दे दी तो मैं अपने वालिदैन के पास आई और अपनी माँ से पूछा, ऐ अम्मी! लोग क्या बातें कर रहे हैं? वह बोलीं, बेटी! इसको अहमियत न दो, जब किसी आदमी की ख़ूबसूरत बीवी होती है, जिससे वह मुहब्बत करता है तो उसकी सौकनें (शौहर को मुतनफ़्फ़िर करने के लिए) बहुत बातें बनाती हैं। आइशा (रज़ि.) कहती हैं, मैंने कहा, सुब्हानल्लाह! लोग ऐसी बातें कर रहे हैं? तो मैं रात भर रोती रही, न मेरे आँसू थमे और न मुझे नींद आई। फिर मैं दिन को भी रोती रही, जब इतना अर्सा वह्य न आई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपनी बीवी से अलग होने के सिलसिले में मश्वरे के लिए बुलाया, रहे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) तो उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस इल्म के मुताबिक़ जो उन्हें आपकी बीवी साहिबा की बराअत के सिलसिले में था और उस मुहब्बत के मुताबिक़ जो वह दिल में उनके बारे में रखते थे, मश्वरा दिया, कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)वह आपकी बीवी हैं, हमें तो उनकी ख़ूबियों के सिवा किसी चीज़ का इल्म

قَالَتْ فَبَكَيْتُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَصْبَحْتُ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ ثُمَّ أَصْبَحْتُ أَبْكِي وَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ حِينَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْىُ يَسْتَشِيرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ - قَالَتْ - فَأَمَّا أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ فَأَشَارَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالَّذِي يَعْلَمُ مِنْ بَرَاءَةِ أَهْلِهِ وَبِالَّذِي يَعْلَمُ فِي نَفْسِهِ لَهُمْ مِنَ الْوُدِّ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هُمْ أَهْلُكَ وَلاَ نَعْلَمُ إِلاَّ خَيْرًا . وَأَمَّا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ لَمْ يُضَيِّقِ اللَّهُ عَلَيْكَ وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ وَإِنْ تَسْأَلِ الْجَارِيَةَ تَصْدُقْكَ - قَالَتْ - فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَرِيرَةَ فَقَالَ " أَىْ بَرِيرَةُ هَلْ رَأَيْتِ مِنْ شَىْءٍ يَرِيبُكِ مِنْ عَائِشَةَ " . قَالَتْ لَهُ بَرِيرَةُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنْ رَأَيْتُ عَلَيْهَا أَمْرًا قَطُّ أَغْمِصُهُ عَلَيْهَا أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنْ عَجِينِ أَهْلِهَا فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ - قَالَتْ - فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى

नहीं है, लेकिन अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए कोई तंगी नहीं रखी, उसके सिवा भी बहुत सी औ़रतें हैं, आप (हर वक़्त घर में रहने वाली) लौण्डी से पूछ लें, वह आपको सच सच बता देगी, चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बरीरा (रज़ि.) को बुलाया और पूछा, 'ऐ बरीरा (रज़ि.)! क्या आ़इशा के किरदार में तूने कोई शुब्हा व शक में डालने वाली बात देखी है?' बरीरा (रज़ि.) ने आपसे कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको दीने हक़ देकर भेजा है, मैंने उनमें इससे ज़्यादा कोई ऐ़ब (बुराई) नहीं देखा कि वह नौ उ़म्र लड़की है, आटा गूंधकर रख देती है और ख़ुद सो जाती है और घर की बकरी आकर उसे खा जाती है। आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन अबी सलूल के बारे में उ़ज़्र ख़्वाही की और मिम्बर पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'ऐ मुसलमानों की जमाअ़त! मुझे इस आदमी के बारे में कोई मअ़ज़ूर समझेगा, जिसकी त़रफ़ से मुझे अपनी बीवी के बारे में तक्लीफ़ पहुँची है। अल्लाह की क़सम! मैं अपनी बीवी के बारे में स़लाह़ व नेकोकारी के सिवा कुछ नहीं जानता और जिस आदमी का वह नाम लेते हैं, उसके बारे में भी मैं सिवाये स़लाह़ और नेकोकारी के कुछ नहीं जानता और वह जब भी मेरे घर आया है, मेरे साथ आया है, यह सुनकर सअ़द बिन मुआ़ज़ अंसारी (रज़ि.) खड़े हुए और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपको मअ़ज़ूर जानता हूँ,

الله عليه وسلم عَلَى الْمِنْبَرِ فَاسْتَعْذَرَ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُبَيٍّ ابْنِ سَلُولَ - قَالَتْ - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ " يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ مَنْ يَعْذِرُنِي مِنْ رَجُلٍ قَدْ بَلَغَ أَذَاهُ فِي أَهْلِ بَيْتِي فَوَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ خَيْرًا وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا وَمَا كَانَ يَدْخُلُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ مَعِي " . فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ أَنَا أَعْذِرُكَ مِنْهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ كَانَ مِنَ الأَوْسِ ضَرَبْنَا عُنُقَهُ وَإِنْ كَانَ مِنْ إِخْوَانِنَا الْخَزْرَجِ أَمَرْتَنَا فَفَعَلْنَا أَمْرَكَ - قَالَتْ - فَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَهُوَ سَيِّدُ الْخَزْرَجِ وَكَانَ رَجُلاً صَالِحًا وَلَكِنِ اجْتَهَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ فَقَالَ لِسَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللَّهِ لاَ تَقْتُلُهُ وَلاَ تَقْدِرُ عَلَى قَتْلِهِ . فَقَامَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَهُوَ ابْنُ عَمِّ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فَقَالَ لِسَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللَّهِ لَنَقْتُلَنَّهُ فَإِنَّكَ مُنَافِقٌ تُجَادِلُ عَنِ الْمُنَافِقِينَ فَثَارَ الْحَيَّانِ الأَوْسُ وَالْخَزْرَجُ حَتَّى هَمُّوا أَنْ يَقْتَتِلُوا

अगर उसका हमारे क़बीला औस से तअल्लुक़ होता तो मैं अभी उसकी गर्दन अलग कर देता और अगर वह हमारे बिरादर क़बीला ख़ज़रज से तअल्लुक़ रखता है तो आप हमें जो हुक्म दें, हम वह करने के लिए तैयार हैं तो यह सुनकर ख़ज़रज के सरदार सअद बिन उबादा (रज़ि.) मुख़ातिब होकर कहने लगे, तू झूठ बोलता है, अल्लाह की क़सम! तू उसको क़त्ल नहीं कर सकता और न तुझमें उसको क़त्ल करने की ताक़त है। यह सुनकर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) जो सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के चचाज़ाद भाई थे, खड़े हुए और सअद बिन उबादा (रज़ि.) से कहा, तू झूठ बोलता है, अल्लाह की बक़ा की क़सम! हम उसे ज़रूर क़त्ल करेंगे, तू तो मुनाफ़िक़ है और मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से झगड़ता है। यह देखकर दोनों क़बीला औस व ख़ज़रज भड़क उठे, यहाँ तक कि उन्होंने बाहमी जंगो जिदाल का इरादा कर लिया और रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर खड़े थे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) बराबर फ़रीक़ैन को ठण्डा करते रहे, यहाँ तक कि वह ख़ामोश हो गए और रसूलुल्लाह (ﷺ) भी ख़ामोश हो गए। हज़रत आइशा (रज़ि.) कहती हैं, उस दिन मैं सारा दिन रोती रही, न मेरे आँसू थमते थे और न मुझे नींद आती थी, फिर मैं आने वाली रात भी रोती रही, न मेरे आँसू रुकते थे और न मुझे नींद आती थी और मेरे वालिदैन समझते थे, रोते रोते मेरा जिगर फट जाएगा, मैं रो रही थी और मेरे माँ बाप मेरे पास बैठे हुए थे कि एक अंसारी औरत ने मुझसे अंदर आने की इजाज़त चाही, मैंने उसे इजाज़त दे दी, वह भी बैठकर रोने लगी, इस तरह

हम मौजूद थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ ले आए, अस्सलामु अलैकुम कहा और बैठ गए, जबसे मुझ पर तोहमत लगी, आप उस वक़्त से मेरे पास नहीं बैठे, एक माह हो चुका था, मेरे बारे में आपकी तरफ़ वह्य नहीं उतर रही थी। आइशा (रज़ि.) कहती हैं, बैठकर आपने तशह्हुद पढ़ा, फिर फ़र्माया, 'अम्मा बअद! ऐ आइशा! वाक़िया यह है कि मुझे तेरे बारे में ऐसी ऐसी बात पहुँची है, अगर तू बरी है तो जल्द ही यक़ीनन अल्लाह तेरी बराअत कर देगा और अगर तू गुनाह कर चुकी है तो अल्लाह तआला से बख़्शिश माँग और तौबा कर, क्योंकि जब बन्दा अपने गुनाह का इक़रार कर लेता है, फिर तौबा करता है तो अल्लाह तआला तौबा क़बूल कर लेता है।' आइशा (रज़ि.) कहती हैं, जब आपने अपनी बात ख़त्म की तो मेरे आँसू थम गए, यहाँ तक कि मैं अपनी आँखों में एक क़तरा भी महसूस नहीं करती थी, चुनाँचे मैंने अपने वालिद से कहा, आप मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात का जवाब दें तो उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को क्या जवाब दूँ तो मैंने अपनी माँ से कहा, आप ही मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह (ﷺ) को जवाब दें, उन्होंने भी कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानती कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को क्या जवाब दूँ। चुनाँचे मैंने कहा और मैं अभी नौ उम्र लड़की थी, क़ुरआन भी ज़्यादा नहीं पढ़ा था, मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे खूब मालूम है कि आपने यह बात सुनी है और आप लोगों के दिलों में जगह पकड़

وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَائِمٌ عَلَى الْمِنْبَرِ فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَتُوا وَسَكَتَ - قَالَتْ - وَبَكَيْتُ يَوْمِي ذَلِكَ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ ثُمَّ بَكَيْتُ لَيْلَتِي الْمُقْبِلَةَ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ وَأَبَوَاىَ يَظُنَّانِ أَنَّ الْبُكَاءَ فَالِقٌ كَبِدِي فَبَيْنَمَا هُمَا جَالِسَانِ عِنْدِي وَأَنَا أَبْكِي اسْتَأْذَنَتْ عَلَىَّ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَأَذِنْتُ لَهَا فَجَلَسَتْ تَبْكِي - قَالَتْ - فَبَيْنَا نَحْنُ عَلَى ذَلِكَ دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَلَّمَ ثُمَّ جَلَسَ - قَالَتْ - وَلَمْ يَجْلِسْ عِنْدِي مُنْذُ قِيلَ لِي مَا قِيلَ وَقَدْ لَبِثَ شَهْرًا لاَ يُوحَى إِلَيْهِ فِي شَأْنِي بِشَىْءٍ - قَالَتْ - فَتَشَهَّدَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ جَلَسَ ثُمَّ قَالَ " أَمَّا بَعْدُ يَا عَائِشَةُ فَإِنَّهُ قَدْ بَلَغَنِي عَنْكِ كَذَا وَكَذَا فَإِنْ كُنْتِ بَرِيئَةً فَسَيُبَرِّئُكِ اللَّهُ وَإِنْ كُنْتِ أَلْمَمْتِ بِذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرِي اللَّهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ فَإِنَّ الْعَبْدَ إِذَا اعْتَرَفَ بِذَنْبٍ ثُمَّ تَابَ تَابَ اللَّهُ

عَلَيْهِ " . قَالَتْ فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَقَالَتَهُ قَلَصَ دَمْعِي حَتَّى مَا أُحِسُّ مِنْهُ قَطْرَةً فَقُلْتُ لأَبِي أَجِبْ عَنِّي رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِيمَا قَالَ . فَقَالَ وَاللَّهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ لأُمِّي أَجِيبِي عَنِّي رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ وَاللَّهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ وَأَنَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ لاَ أَقْرَأُ كَثِيرًا مِنَ الْقُرْآنِ إِنِّي وَاللَّهِ لَقَدْ عَرَفْتُ أَنَّكُمْ قَدْ سَمِعْتُمْ بِهَذَا حَتَّى اسْتَقَرَّ فِي نُفُوسِكُمْ وَصَدَّقْتُمْ بِهِ فَإِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي بَرِيئَةٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ لاَ تُصَدِّقُونِي بِذَلِكَ وَلَئِنِ اعْتَرَفْتُ لَكُمْ بِأَمْرٍ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ لَتُصَدِّقُونَنِي وَإِنِّي وَاللَّهِ مَا أَجِدُ لِي وَلَكُمْ مَثَلاً إِلاَّ كَمَا قَالَ أَبُو يُوسُفَ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ . قَالَتْ ثُمَّ تَحَوَّلْتُ فَاضْطَجَعْتُ عَلَى فِرَاشِي - قَالَتْ - وَأَنَا وَاللَّهِ حِينَئِذٍ أَعْلَمُ

चुकी है और आप इसको सच समझते हैं, अब अगर मैं आपसे कहूँ, मैं इससे बरी हूँ और अल्लाह जानता है मैं बरी हूँ तो आप इसको सच नहीं मानेंगे और अगर मैं तुम्हारे सामने इस मामला को क़बूल कर लूँ और अल्लाह तआला जानता है कि मैं इससे बरी हूँ तो आप इसको सच मान लेंगे। अल्लाह की क़सम! मैं अपने और आपके मुनासिब हाल यूसुफ़ (अ.) के वालिद की मिसाल ही समझती हूँ, उन्होंने कहा था, तो सब्र ही मेरे लिए बेहतर है और जो बातें तुम बनाते हो, उनमें अल्लाह ही से मदद चाहती हूँ फिर मैं मुँह फेरकर अपने बिस्तर पर लेट गई। आइशा (रज़ि.) कहती हैं, मुझे अल्लाह की क़सम! उस वक़्त यक़ीन था कि मैं चूँकि बरी हूँ और अल्लाह मेरी बरा'त के सबब, मेरी बरा'त ज़ाहिर कर देगा, लेकिन अल्लाह की क़सम! मेरा ख़याल यह नहीं था कि अल्लाह तआला मेरे बारे में कुरआन उतारेगा, जो पढ़ा जाएगा, मैं अपने आपको उससे बहुत हक़ीर जानती थी कि अल्लाह तआला मेरे बारे में ऐसी कलाम करेगा, जिसकी हमेशा तिलावत होती रहेगी, लेकिन मुझे यह उम्मीद थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नींद में ऐसा ख़्वाब देखेंगे, जिससे अल्लाह मेरी बरा'त ज़ाहिर कर देगा, वह कहती हैं, अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी जगह से उठे नहीं थे और घर में मौजूद लोगों में से भी कोई बाहर नहीं गया था, यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपने नबी पर वह्य नाज़िल की और वह्य के वक़्त जिस तरह आपको पसीना आता था, वह शुरू हो गया, यहाँ तक कि आपकी

أَنِّي بَرِيئَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ مُبَرِّئِي بِبَرَاءَتِي وَلَكِنْ وَاللَّهِ مَا كُنْتُ أَظُنُّ أَنْ يُنْزَلَ فِي شَأْنِي وَحْىٌ يُتْلَى وَلَشَأْنِي كَانَ أَحْقَرَ فِي نَفْسِي مِنْ أَنْ يَتَكَلَّمَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فِيَّ بِأَمْرٍ يُتْلَى وَلَكِنِّي كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَرَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي النَّوْمِ رُؤْيَا يُبَرِّئُنِي اللَّهُ بِهَا قَالَتْ فَوَاللَّهِ مَا رَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَجْلِسَهُ وَلاَ خَرَجَ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ أَحَدٌ حَتَّى أَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى نَبِيِّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخَذَهُ مَا كَانَ يَأْخُذُهُ مِنَ الْبُرَحَاءِ عِنْدَ الْوَحْىِ حَتَّى إِنَّهُ لَيَتَحَدَّرُ مِنْهُ مِثْلُ الْجُمَانِ مِنَ الْعَرَقِ فِي الْيَوْمِ الشَّاتِ مِنْ ثِقَلِ الْقَوْلِ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَيْهِ - قَالَتْ - فَلَمَّا سُرِّيَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَضْحَكُ فَكَانَ أَوَّلَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا أَنْ قَالَ " أَبْشِرِي يَا عَائِشَةُ أَمَّا اللَّهُ فَقَدْ بَرَّأَكِ " . فَقَالَتْ لِي أُمِّي قُومِي إِلَيْهِ فَقُلْتُ وَاللَّهِ لاَ أَقُومُ إِلَيْهِ وَلاَ أَحْمَدُ إِلاَّ اللَّهَ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ بَرَاءَتِي - قَالَتْ - فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ]

पेशानी से मोतियों की तरह पसीने की बूँदें गिरने लगी, यह इंतिहाई सर्द दिन था, यह उस वह्य का बोझ (सक़्ल) या शिद्दत थी जो आप पर उतारी गई, जब आपसे यह कैफ़ियत दूर हो गई तो आप हँस रहे थे और आपने सबसे पहली बात यह कही, 'ऐ आइशा (रज़ि.)! ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआला ने तो तेरी बरा'त ज़ाहिर कर दी है।' चुनाँचे मेरी वालिदा ने मुझसे कहा, उठ और आपसे मिल, मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं हर्गिज़ उठकर आपके पास नहीं जाऊँगी और अल्लाह के सिवा किसी का शुक्रिया अदा नहीं करूँगी, उसने मेरी बरा'त नाज़िल की है, वह बयान करती हैं, अल्लाह तआला ने यह आयात उतारीं, 'वह लोग जिन्होंने तोहमत की बातें की हैं, वह तुम ही में से एक टोला है।' (सूरह नूर आयत 11) दस आयात उतारीं। चुनाँचे अल्लाह तआला ने मेरी बरा'त के लिए यह आयात उतारीं तो अबू बक्र (रज़ि.) ने जो मिस्तह को उसकी अपने साथ रिश्तेदारी और उसकी गुर्बत की वजह से ख़र्च दिया करते थे कहा अल्लाह की क़सम! आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने की वजह से मैं आइन्दा कभी उसको कुछ ख़र्च नहीं दूँगा। उस पर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह आयत उतारी, 'तुममें से अहले फ़ज़्ल और फ़राख़ी वाले लोगों को यह क़सम नहीं खानी चाहिए कि वह क़राबतदारों, मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिज्रत करने वालों को कुछ नहीं देंगे, उन्हें चाहिए कि माफ़ कर दें और दरगुज़र करें, क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (सूरह नूर

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ} عَشْرَ آيَاتٍ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ هَؤُلاَءِ الآيَاتِ بَرَاءَتِي - قَالَتْ - فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحٍ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ وَفَقْرِهِ وَاللَّهِ لاَ أُنْفِقُ عَلَيْهِ شَيْئًا أَبَدًا بَعْدَ الَّذِي قَالَ لِعَائِشَةَ . فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { وَلاَ يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَى} إِلَى قَوْلِهِ } أَلاَ تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ{ قَالَ حِبَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ هَذِهِ أَرْجَى آيَةٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ . فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَاللَّهِ إِنِّي لأُحِبُّ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لِي . فَرَجَعَ إِلَى مِسْطَحٍ النَّفَقَةَ الَّتِي كَانَ يُنْفِقُ عَلَيْهِ وَقَالَ لاَ أَنْزِعُهَا مِنْهُ أَبَدًا . قَالَتْ عَائِشَةُ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَأَلَ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم عَنْ أَمْرِي " مَا عَلِمْتِ أَوْ مَا رَأَيْتِ " . فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحْمِي سَمْعِي وَبَصَرِي وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ إِلاَّ خَيْرًا . قَالَتْ عَائِشَةُ وَهِيَ الَّتِي كَانَتْ تُسَامِينِي مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ

आयत 22)

ह़िब्बान बिन मूसा बयान करते हैं, अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा, अल्लाह की किताब की यह आयत सबसे ज़्यादा उम्मीद अफ़्ज़ा है, यह आयत सुनकर अबू बक्र (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे यह बात पसंद है कि अल्लाह तआ़ला मुझे बख़्श दे, फिर उन्होंने मिस्तह (रज़ि.) को वह खर्च देना शुरू कर दिया, जो वह उन्हें दिया करते थे और कहा, मैं उससे कभी यह खर्च नहीं रोकूँगा। हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे मामले में नबी अकरम (ﷺ) की बीवी ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) से भी पूछा था कि 'तूने क्या जाना है, या क्या देखा है?' उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जो कुछ मैंने अपने कान से नहीं सुना और आँख से नहीं देखा) मैं उससे अपने कान और आँख को बचाती हूँ।' अल्लाह की क़सम! सिवाये नेकोकारों के मुझे कुछ मालूम नहीं। आइशा (रज़ि.) कहती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीवियों में से यही मेरा मुक़ाबला किया करती थीं, मगर तक़्वा व परहेज़गारी की वजह से अल्लाह तआ़ला ने इनको महफ़ूज़ रखा, हाँ! इनकी बहन ह़म्ना बिन्ते जह़श इनकी ख़ातिर लड़ने लगीं और हलाक होने वालों में हलाक हो गईं यानी तोहमत लगाने वालों का साथ दिया।

जोहरी (रह.) कहते हैं यह वह ह़दीस है जो इस गिरोह के लोगों के बारे में हम तक पहुँची है और यूनुस की ह़दीस में है, ह़म्ना को तअ़स्सुब व

صلى الله عليه وسلم فَعَصَمَهَا اللَّهُ بِالْوَرَعِ وَطَفِقَتْ أُخْتُهَا حَمْنَةُ بِنْتُ جَحْشٍ تُحَارِبُ لَهَا فَهَلَكَتْ فِيمَنْ هَلَكَ . قَالَ الزُّهْرِيُّ فَهَذَا مَا انْتَهَى إِلَيْنَا مِنْ أَمْرِ هَؤُلَاءِ الرَّهْطِ . وَقَالَ فِي حَدِيثِ يُونُسَ احْتَمَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ .

ह़मिय्यत ने तोहमत लगाने पर उभारा था।

तख़रीज 7020 : स़ह़ीह़ बुख़ारी : किताबुश्शहादात : 2637; किताबुल मग़ाज़ी, बाब 12 ह़दीस : 4025; किताबुत्तफ़्सीर : 4690; बाब लौ ला इज़ा समिअ़्तुमूह... : 4750; किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर : 6662; बाब अल्यमीनु फ़ीमा ला यम्लिकु... : 6679; किताबुल जिहाद : 2879; किताबुत्तौहीद : 7500; ह़दीस 7545.

मुफ़रदातुल ह़दीस : (1) बअ़द मा उंज़िलल ह़िजाब : जबकि पर्दे का हुक्म नाज़िल हो चुका, इसलिए मैं होदज में बापर्दा बैठी थी और होदज उठाने वाले मुझे देख नहीं सके, पर्दे का हुक्म ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की शादी के मौक़े पर नाज़िल हुआ, जो 5 हिज्री में हुई। और बक़ौल कुछ चार हिज्री या पाँच के आग़ाज में हुई।' (2) आज़नू बिर्रह़ील : बाब तफ़ाउल या तफ़्ईल से है, इत्तिलाअ़ दी, रवानगी और कूच का ऐलान किया। (3) इ़क़्द मिन जज़्इ़ जफ़ार : इ़क़्द क़लादा हार, जज़्उ़न : ख़ुर्मुहरे, सफ़ेदी माइल स्याह यम्नी मुन्के। (4) जफ़ार : यमन की एक बस्ती का नाम है। (5) लम युहब्बिल्ना : बाब तफ़्ईल, इफ़्आल और नसर यंसुरु से आता है, वह गोश्त और चर्बी से भारी नहीं हुई थी, यानी गोश्त और चर्बी ज़्यादा नहीं हुए थे। (6) अल्अ़ल्क़ह मिनत्तआमि : कम मिक़्दार और थोड़ा सा खाना, चूँकि औ़रतें कम ख़ोर थीं, इसलिए उनका वज़न कम होता था, भारी भरकम होने की वजह से वज़न ज़्यादा न था, इसलिए होदज उठाने वालों को पता न चल सका कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) होदज में मौजूद नहीं है, उन्होंने मअ़मूल के मुताबिक़ कजावा उठाकर ऊँट पर कस दिया। (7) कुन्तु जारियतन ह़दीसतस सिन्न : मैं नो उ़म्र लड़की थी, इसलिए वज़न भी कम था, ज़ेवरात से मुह़ब्बत थी और तजुर्बा न होने की वजह से किसी को ख़बर दिये बग़ैर क़ज़ाए ह़ाजत के लिए चली गई और हार की गुमशुदगी की किसी को ख़बर किये बग़ैर उसको तलाश में निकल खड़ी हुई। (8) यतम्मम्तु मंज़िलल्लज़ी कुन्तु फ़ीहि : जिस जगह रात गुज़ारी थी, उस जगह का क़स्द किया, अपने होशो ह़वास को क़ायम रख, बदह़वास होकर इधर उधर नहीं गई, ताकि जब उनको गुमशुदगी का इ़ल्म हो तो उन्हें उनकी जगह से आसानी के साथ तलाश किया जा सके। (9) ग़लबत्नी ऐनी फ़निम्तु : आँखों पर नींद का ग़ल्बा हुआ तो मैं सो गई, यानी इत्मिनान व सुकून को बरक़रार रखा, जिससे नींद आ गई, वरना परेशानी और इज़्तिराब की ह़ालत में नींद न आती और जंगल में अकेली होने की वजह से डर जाती, या अल्लाह का उन पर करम व फ़ज़्ल था, उनको सुला दिया, ताकि वह जंगल की वह़शत व ख़ौफ़ से मह़फ़ूज रहें, क़द अ़र्रस मिंव्वराइल जैशि : उन्होंने रात का आख़िरी ह़िस्सा लश्कर के पीछे गुज़ारा ताकि सुबह़ उठकर गिरी पड़ी चीज़ उठाकर

लश्कर वालों को पहुँचा दें, इसलिए वह सुबह के क़रीब उठकर चल पड़े, क्योंकि रात जल्द वह उठ नहीं सकते थे। (10) अस्सवाद : शख़्सियत शक्लो सूरत (11) फ़स्तैक़ज़्तु बि इस्तिर जाइही : मैं उनके इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन पढ़ने से बेदार हो गई, क्योंकि हज़रत सफ़्वान (रज़ि.) पर्दा के नुज़ूल से पहले, हज़रत आइशा (रज़ि.) को देख चुके थे, पर्दा बक़ौल कुछ तीन या चार हिज्री को उतर चुका था, लेकिन अकसरियत के नज़दीक हज़रत ज़ैनब की शादी 5 हिज्री में हुई है और पर्दा उस मौक़े पर नाज़िल हुआ था, वह हज़रत आइशा (रज़ि.) के पीछे रह जाने पर हैरान हो गए और परेशानी के इज़ाला के लिए यह कलिमात कहे फ़ख़म्मर्तु वज्ही : मैंने अपना चेहरा ढाँप लिया, अगर अज़्वाजे मुतह्हरात को चेहरा ढाँपने की ज़रूरत महसूस होती थी, जो मोमिनों की माएँ हैं तो फिर किसी और औरत को चेहरा खुला रखने की इजाज़त कैसे मिल सकती है। (12) मूग़िरीना फ़ी नह्रिल जहीरा : नह्र गर्मी शिद्दत को कहते हैं, नह्रुल ज़हीर बिलकुल दोपहर के वक़्त नह्र हर चीज़ के आग़ाज़ को कहते हैं, मक़्सद यह है, हम उस वक़्त पहुँचे जब सूरज इंतिहाई बुलंदी पर पहुँच चुका था। (13) तवल्ला किब्रा : बड़े हिस्से का ज़िम्मेदार, अब्दुल्लाह बिन उबय था। (14) अफ़ाज़ फ़िल्क़ौलि का मआनी है, उसने बढ़ चढ़कर बात की। (15) युरीबुनी : राबहू व अराबहू का मआनी है उसको वहम और शक में मुब्तला कर दिया, क़ल्क़ व इज़्तिराब में डाल दिया। (16) नक़ाहत, बीमारी की कमज़ोरी और नाक़िहुन उस बीमार को कहते हैं, जो अभी अभी बीमार से सेह्हतयाब हुआ हो और तंदुरुस्ती पूरी तरह बहाल न हुई हो। (17) मनासिअ : मन्सउन की जमा है, मदीना के बाहर एक खुला मैदान और फुतबर्ज़ यानी क़ज़ाए हाजत की जगह था, कुनुफ़, कनीफ़ की जमा है, पर्दा वाली जगह, मुराद लेट्रिन है। (18) फ़ित्तनज़्ज़हि : अरब लोग घरों मे बैतुलख़ला बनाने से इज्तिनाब करते थे, या बचते थे। (19) मिर्त : ऊन की चादर। (20) असरत उम्मु मिस्तह : उम्मे मिस्तह का पैर चादर में अटकर फिसल गया, इस रिवायत से मालूम होता है कि उम्मे मिस्तह का पैर वापसी पर फिसला था, लेकिन बुख़ारी की रिवायत से मालूम होता है, यह वाक़िया जाते हुए पेश आया, इसलिए दोनों रिवायात में तआरुज़ है, इसलिए एक रिवायत में वहम है, सिर्फ़ फ़रग़्ना मिन शअ्निना की तावील से तत्बीक़ की कोशिश करना, एक तकल्लुफ़ है, तअस : ऐन पर फ़तहा और कसरा दोनों पढ़े जा सकते हैं, ठोकर खाई, हलाक हो गया, उसको शर्र ने लाज़िम पकड़ा, चेहरे के बल गिरा। (21) अय हन्ता : ऐ यह औरत, ऐ दीवानी! चूँकि हज़रत आइशा (रज़ि.) को लोगों की शरारतों और मक्कारियों का इल्म न था, इसलिए उन्हें उन अल्फ़ाज़ से याद किया कि तुम बहुत ग़फ़्लत से काम लेती हो। (22) हव्विनी अलैकि : उसको अहमियत न दे, अपने लिए आसानी पैदा कर। (23) वज़िय्यतुन : ख़ूबसूरत और हसीन औरत। (24) यह मज़ाअत बमआनी हुस्नो जमाला से माख़ूज़ है।

(25) इल्ला कस्सरना अलैहा : इस पर बहुत उयूब लगाती हैं, हज़रत आइशा (रज़ि.) की वालिदा ने इंतिहाई जहानत व फ़तानत से काम लेते हुए हज़रत आइशा (रज़ि.) के ग़म व हुज़्न को हल्का करने की

कोशिश की कि तुम इंतिहाई ह़सीनो जमील हो, अपने शौहर की मह़बूबा हो, ऐसी औ़रतों के बारे में लोग बातें बनाते ही रहते हैं, तुम्हारे साथ कोई अनहोना वाक़िया पेश नहीं आया, यह कोई नई चीज़ नहीं है, इसलिए इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है, अगरचे उनकी सोकनों की त़रफ़ से ऐसी कोई बात सामने नहीं आई थी, लेकिन ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की हमशीरा ह़ज़रत ह़म्ना उसमें ह़िस्सा ले रही थीं और वालिदैन ने जानने के बावजूद इसीलिए ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) को आगाह नहीं किया था कि वह बीमार और नो उ़म्र होने की वजह से बहुत परेशान होंगी और बीमारी में इज़ाफ़ा हो जाएगा, लेकिन उम्मे मिस्तह़ (रज़ि.) की त़रफ़ से जब उन्हें पता चल गया तो वालिदा ने इंतिहाई शॉर्ट अंदाज़ में बात को हल्का करते हुए उन्हें तसल्ली दी, लेकिन इतने में एक अंस़ारी औ़रत ने आकर वालिदा की मौजूदगी में वाक़िया की पूरी दास्तान सुना दी। इसलिए उन्हें वाक़िया का यक़ीन हो गया तो उन्होंने पूछा, क्या वालिद स़ाह़ब को पता है, मेरे शौहर रसूलुल्लाह (ﷺ) को पता है, जब वालिदा ने बताया, दोनों को पता है तो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की परेशानी में इंतिहाई इज़ाफ़ा हो गया और वह ग़श खाकर गिर गईं। (26) ला यरक़अली दम्अ़ : मेरे आँसू बन्द नहीं होते थे, ला अक्तह़िलु बिनौमिन : मुझे नींद नहीं आती थी। ह़ज़रत उसामा ने कहा, हुम अहलुक वला नअ़्लमुल अखीरा : वह आपकी बीवी हैं और हम उनकी नेकी व स़लाह़ के सिवा कुछ नहीं जानते। ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) ने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को आ़इशा और उसके वालिद से बड़ी मुह़ब्बत है और आ़इशा (रज़ि.) की स़िफ़त व अ़स्मत और ह़स़ानत व दयानत उससे बहुत बुलंद व बाला है कि उस ख़बासत का गुबार भी उनको छू सके और रसूलुल्लाह (ﷺ)(ﷺ) का मक़ाम व मर्तबा अल्लाह तआ़ला के यहाँ इस क़द्र रफ़ीअ़ और अ़ज़ीम है कि यह बात वहमो गुमान में भी नहीं आ सकती कि वह आपकी मह़बूबा, आपके जिगरी दोस्त, यारे ग़ार, स़िद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की नेक व पारसा, दुख़्तर को उस रज़ालत, ज़िल्लत से दो चार करेगा, जिसके साथ तोहमत बाज़ों ने उनको मुलव्विस किया है, क्योंकि एक नापाक औ़रत अपने जैसे नापाक मर्द ही के लिए ज़ेब है, जैसाकि इर्शादे बारी है, ख़बीस औ़रतें, ख़बीस मर्दों के लिए हैं और ख़बीस मर्द, ख़बीस औ़रतों के लायक़ हैं और पाक औ़रतें, पाक मर्दों के मुनासिब हैं और पाक मर्द, पाक औ़रतों के लायक़ हैं। सूरह नूर आयत (26)। (27) लम युज़िय्यक़िल्लाह अ़लैक : अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए कोई तंगी नहीं रखी, उसके सिवा भी बहुत सी औ़रतें हैं, ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने आपको त़लाक़ देने का मश्वरा दिया, क्योंकि वह अपनी फ़हम और फ़रासत के मुत़ाबिक़ आप जिस ग़म व अन्दोह में मुब्तला थे, उससे नजात की यही सूरत समझते थे और वह आपके ह़क़ में उसमें ख़ैरख़्वाही और मस्लिह़त समझते थे, ताकि रसूलुल्लाह (ﷺ) परेशानी और क़ल्क़ व इज़्तिराब से निकल कर सुकूने क़ल्ब ह़ास़िल कर सकें, फिर उसके बाद वाक़िया की तह़क़ीक़ व तफ़्तीश से अस़ल सूरते ह़ाल वाक़ेअ़ हो जाएगी। ह़ालाँकि उससे और मसाइल, पैचीदगियाँ पैदा हो सकती थी, आपकी बीवी के इस किरदार की वजह से आप पर मज़ीद कीचड़ उछाला जाता, अबू बक्र (रज़ि .) को भी निशाना बनाया जाता और

दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात के बारे में भी शुकूक पैदा होते। (28) तस्अलिल जारिया तस्दुक़्क : लौण्डी से पूछ लें , वह आपको सचमुच बता देगी, चूँकि लौण्डी उमूमन घर में ही रहती है, इसलिए उस पर घर वालों के तमाम हालात रोशन होते हैं , कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं रह सकती और जब आपने हज़रत बरीरा से पूछा और हज़रत अली (रज़ि.) ने बड़े सख़्त अंदाज़ में तल्ख़ कलामी करते हुए पूछा ताकि कोई यह न समझे, पूरी छान बीन से काम नहीं लिया गया तो लौण्डी ने कहा, मैंने उसमें कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी। (29) अग़्मिस्हू अलैहा : जिसके सबब में उस पर ऐब लगा सकूँ। कुछ रिवायतों में है, मैं तो उनके ऐब व हुनर को इस तरह जानती हूँ जिस तरह सुनार खोटे खरे को जानता है, अल्लाह की क़सम! आइशा सोने से ज़्यादा खरी हैं और जो कुछ लोग कहते हैं, अगर उन्होंने वह फ़ेअल किया है तो अल्लाह तआला आपको उसकी ख़बर दे देगा, इस तरह हज़रत बरीरा (रज़ि) ने इंतिहाई सूझ बूझ और अक़्लमंदी का सबूत दिया, अगर लौण्डी कमअक़्ली का सबूत देती, सख़्ती और मारपीट से डरकर ग़लत बात कह देती तो शायद हज़रत आइशा (रज़ि.) का यह फ़र्माना कि जब मुझे उस तोहमत का इल्म हुआ तो मैंने इरादा किया कि किसी कुएँ में छलाँग लगाकर ज़िन्दगी का ख़ात्मा कर लूँ, हक़ीक़त का रूप धारण कर लेता और अबू बक्र को इतना सदमा और ग़म होता, जिसका तसव्वुर मुम्किन नहीं है और यह झूटी तोहमत भी एक हक़ीक़त बन जाती और फ़ित्ना का दरवाज़ा खुल जाता, जिसको बंद करना बहुत मुश्किल होता, इस वाक़िया की पूरी तफ़्सीलात के लिए देखिए। (30) मुख़्तसर सीरतुल उसूल तनाम अन अजीन अहलिहा : आटा गूँधकर रख देती है, ख़ुद सो जाती है और घरेलू बकरी आकर खा जाती है, इस क़द्र ग़फ़्लत शिआर और सादा लोह लड़की से इस हरकत का इर्तिकाब कैसे मुम्किन है। (31) फ़स्तअज़्र मिन अब्दिल्लाह बिन उबय : अब्दुल्लाह बिन उबय के बारे में उज़्र ख़्वाही की, ऐसे आदमी को तलब किया, जो आपको इंसाफ़ दिलाए, अगर मैं उसको उसकी हरकत पर सज़ा दूँ तो मुझे कोई मअज़ूर समझेगा। (32) मय यअज़िर्नी : मेरी मदद कौन करेगा और मदद करने वाले को उज़ैर कहते हैं। (33) फ़क़ाम सअद बिन मुआज़ : हज़रत सअद बिन मुआज़, ग़ज़्व–ए–ख़न्दक़ से मुत्तसिल ग़ज़्व–ए–कुरैज़ा में फ़ौत हो गए हैं और ग़ज़्व–ए–अहज़ाब 4 हिज्री या पाँच हिज्री शव्वाल में पेश आया और ग़ज़्व–ए–मरीसिया जिसमें वाक़िया इफ़्क पेश आया है, यह बक़ौल अहले सीरत 5 हिज्री या 6 हिज्री शअबान में पेश आया, इसलिए सही बात यही है कि यहाँ सअद बिन मुआज़ का ज़िक्र किसी रावी का वहम है, जैसकि इब्ने हज़म, इब्ने अब्दुल बर्र, इब्नुल अरबी, कुर्तुबी और क़ाज़ी अयाज़ (रहि.) का मौक़िफ़ है (उम्दतुल क़ारी जिल्द 6 पेज 366) और हाफ़िज़ इब्ने हजर का यह मौक़िफ़ दुरुस्त नहीं है, जिसको साहिबे अर्रहीक़ुल मख़्तूम ने तर्जीह दी है कि ग़ज़्व–ए–मरीसिया या ग़ज़्व–ए– बनी मुस्तलिक़ शअबान 5 हिज्री में पेश आया, क्योंकि वाक़िया इफ़्क की तशहीर के बाद क़ल्क़ व इज़्तिराब और ग़म व अन्दोह की फ़िज़ा में ग़ज़्व–ए–ख़ंदक़ की तैयारी के लिए इस क़द्र तवील व अरीज़ और गहरी ख़ंदक़ खोदना मुम्किन नहीं है, हदीस में सय्यदुल औस, औस का

सरदार था और मशहूर सरदार ह़ज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) ही थे, इसलिए रावी ने उनका नाम ज़िक्र कर दिया, अगर यह तस्लीम कर लिया जाए कि ग़ज़्व-ए- अह़ज़ाब 5 हिज्री शव्वाल में पेश आया और ग़ज़्व-ए- बनू मुस्तलिक़ 5 हिज्री शअ़बान में पेश आया तो फिर ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक़ पहले पेश आया और दो माह बाद ग़ज़्व-ए- अह़ज़ाब पेश आया तो फिर ह़ज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) का ज़िक्र करने में कोई इश्काल नहीं रहता लेकिन यह इश्काल बहरहाल रहेगा जैसाकि हमने ऊपर बयान किया है कि ऐसी फ़िज़ा में त़वील व अ़रीज़ ख़ंदक़ खोदना मुश्किल है नीज़ कुछ अह़ादीस से मालूम होता है और क़ुरआन का अंदाज़ और उस्लूब भी यह बयान करता है कि ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की आपसे शादी ग़ज़्व-ए-अह़ज़ाब के बाद हुई है और पर्दे का हुक्म उनकी शादी के मौक़े पर हुआ है मगर यह तस्लीम कर लिया जाए कि उनकी शादी तीन चार हिज्री में ग़ज़्व-ए-अह़ज़ाब से पहले हुई है। ह़ालाँकि वह उसैद बिन हुज़ैर थे, जो ह़ज़रत सअ़द के चचाज़ाद भाई थे, उन्होंने कहा, अना अअ़्ज़िरुका : मैं आपकी मदद करूँगा, अगर उसका तअ़ल्लुक़ हमारे क़बीला औस से होता तो मैं अभी उसकी गर्दन उड़ा देता, जबकि वह हमारे बिरादर क़बीला ख़ज़रज से तअ़ल्लुक़ रखता है तो आप हमें जो हुक्म दें, हम वह करने के लिए तैयार हैं, नफ़्सियाती और क़बाइली रिवायात के मुत़ाबिक़ यह बत सही न थी, अगर वह यह कहते हैं, चूँकि वह हमारे बिरादर क़बीला ख़ज़रज से है, इसलिए आप उनके सरदार को हुक्म दें, आप जो भी हुक्म देंगे वह फ़ौरन उसकी तअ़मील करेंगे तो ह़ज़रत सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की ह़मिय्यत व ग़ैरत का जज़्बा न भड़कता और जो सूरतेहाल पैदा हो गई, वह पैदा न होती और ह़ज़रत सअ़द बिन उबादा (रज़ि.) यह न कहते, अल्लाह की क़सम! तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की नुसरत व ह़िमायत मक़्सूद नहीं है तुम तो सिर्फ़ जाहिलियत के दौर के ह़सद व कीना की बिना पर मौक़े का फ़ायदा उठाना चाहते हो, अगर यह तुम्हारे क़बीला का फ़र्द होता तो तुम कभी उसका क़त्ल होना पसंद न करते और बाक़ी बह़्स व मुबाह़िसा उस तल्ख़ी की फ़िज़ा का नतीजा है। वरना ह़ज़रत सअ़द बिन उ़बादा न मुनाफ़िक़ थे और न ही अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ के त़रफ़दार और ह़िमायती, उस सूरते ह़ाल के बाद त़बई त़ौर पर ह़ज़रत आ़इशा के ग़म व हुज़्न में इज़ाफ़ा हो गया, क्योंकि अपने वालिदैन के घर से रसूलुल्लाह (ﷺ) के घर आ चुकी थीं, वहीं उनके वालिदैन उनके पास आए और अंसारी औ़रत आई और अ़स्र की नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास आकर उस वाक़िया के बाद पहली दफ़ा बैठे और उनसे पूछा कि अगर तुमने गुनाह का इर्तिकाब कर लिया है तो उसका इक़रार व एतिराफ़ करके तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लो, चूँकि उस मामला की तशहीर हो चुकी थी, इसलिए उस पर पर्दा डालने की कोशिश मुम्किन न थी, अगर सिर्फ़ उन्हीं को पता होता तो फिर पर्दा डालना बेहतर होता, ह़ज़रत आ़इशा का ग़म व हुज़्न इंतिहा को पहुँच चुका था, इसलिए उनके आँसू थम गए या आपके इस फ़र्मान से तसल्ली हो गई कि अगर तुम इस इल्ज़ाम से बरी हो तो जल्द ही अल्लाह तुम्हारी बरा'त ज़ाहिर कर देगा, वालिदैन ने बरात का इज़्हार इसलिए न किया कि उनकी बरा'त करने पर तोहमत तराशी करने वाले

यह कह देते कि वालिदैन तो अपनी औलाद की बरा'त करते ही हैं, इसलिए हज़रत आइशा को जवाब ख़ुद ही देना पड़ा और उन्होंने इंतिहाई मतानत व संजीदगी से इंतिहाई वसूक़ व एतिमाद के साथ जवाब दिया और फिर जब आप पर वह्य का नुज़ूल शुरू हुआ तो वह पूरी तरह मुत्मइन थीं और वालिदैन इंतिहाई परेशान और ख़ौफ़ज़दा थे और जब अल्लाह तआला ने उनकी बरा'त का इज़्हार कर दिया तो उन्होंने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और एक महबूबा बीवी की हैसियत से नाज़ व तदम्मुल का इज़्हार करते हुए आपका शुक्रिया अदा न किया और कहने लगीं, तुममें से किसी ने मेरी बरा'त नहीं की। (34) अल्बुरहा : सख़्ती और शिद्दत, सख़्त बुख़ार, शदीद हिद्दत व गर्मी। (35) लयतहद्दरु : गिरने लगे, उतरने लगे, जुमान : मोती। हज़रत आइशा (रज़ि.) की बरा'त में दस आयात का नुज़ूल हुआ, फिर जब हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) ने हक़ीक़ते वाक़िया खुल जाने के बाद हज़रत मिस्तह (रज़ि.) को खर्च न देने की क़सम खाई, तो दो और आयात का नुज़ूल हुआ और उनके साथ उसूली हिदायत के तौर पर, बाद वाली तीन आयात भी उतरीं, इस तरह इस वाक़िया के बारे में सोलह आयात उतरीं। (36) तुसामीनी : मर्तबा और रिफ़अत में मेरी बराबरी चाहती थीं या अपने हुस्नो जमाल और रसूलुल्लाह (ﷺ) के यहाँ अपने मक़ाम व मर्तबे की वजह से मुझसे फ़ख़्र और मुक़ाबला करती थीं।

फ़ायदा : वाक़िया इफ़्क, वाक़िया सुलह हुदैबिया और क़िस्स-ए-कअब बिन मालिक, यह तीनों वाक़ियात मुख़्तलिफ़ इंसानों की नफ़्सियात और उसकी ख़ूबियों और ख़ामियों को समझने के लिए इंतिहाई अहमियत के हामिल हैं, जिनमें हमारे लिए बहुत से सबक़ और इब्रतें हैं हम इंतिहाई इख़्तिसार के साथ कुछ बातों की तरफ़ लग्वी मआनी की तशरीह में इशारा करते हैं और फिर कुछ ज़रूरी फ़वाइद इस बाब के आख़िर में बयान करेंगे, तफ़्सील के तालिब (चाहत रखने वाला) फ़तहुलबारी और नववी की तरफ़ रुजूअ करें।

وَحَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، ح وَحَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، الْحُلْوَانِيُّ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحِ، بْنِ كَيْسَانَ كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، . بِمِثْلِ حَدِيثِ يُونُسَ وَمَعْمَرٍ بِإِسْنَادِهِمَا . وَفِي حَدِيثِ فُلَيْحٍ اجْتَهَلَتْهُ

(7021) इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते है, फुलैह की हदीस में मअमर की तरह इह्तमलत्हुल हमिय्यतु, इसे मुश्तइल कर दिया, जाहिलाना काम करवाया है और सालेह की हदीस में यूनुस की तरह इज्तहल्तहू : (आमादा किया, उभारा) और सालेह की हदीस में यह इज़ाफ़ा भी है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) उसको पसंद नहीं करती थीं कि उनके सामने हज़रत हस्सान (रज़ि.) को बुरा भला

الْحَمِيَّةُ كَمَا قَالَ مَعْمَرٌ . وَفِي حَدِيثِ صَالِحٍ احْتَمَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ . كَقَوْلِ يُونُسَ وَزَادَ فِي حَدِيثِ صَالِحٍ قَالَ عُرْوَةُ كَانَتْ عَائِشَةُ تَكْرَهُ أَنْ يُسَبَّ عِنْدَهَا حَسَّانُ وَتَقُولُ فَإِنَّهُ قَالَ فَإِنَّ أَبِي وَوَالِدَهُ وَعِرْضِي لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وِقَاءُ وَزَادَ أَيْضًا قَالَ عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ وَاللَّهِ إِنَّ الرَّجُلَ الَّذِي قِيلَ لَهُ مَا قِيلَ لَيَقُولُ سُبْحَانَ اللَّهِ فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا كَشَفْتُ عَنْ كَنَفِ أُنْثَى قَطُّ . قَالَتْ ثُمَّ قُتِلَ بَعْدَ ذَلِكَ شَهِيدًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ . وَفِي حَدِيثِ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ مُوعِرِينَ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ مُوغِرِينَ . قَالَ عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قُلْتُ لِعَبْدِ الرَّزَّاقِ مَا قَوْلُهُ مُوغِرِينَ قَالَ الْوَغْرَةُ شِدَّةُ الْحَرِّ .

कहा जाए और फ़र्माती थीं, उसने नबी अकरम (ﷺ) के दिफ़ा में कहा है।

'बिला शुब्हा मेरा बाप, मेरा दादा और मेरी इ़ज़्ज़त तुम्हारी इ़ज़्ज़त के मुक़ाबले में मुहम्मद (ﷺ) की इ़ज़्ज़त के लिए ढाल है।'

और इसमें यह इज़ाफ़ा भी है, ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! वह आदमी जिस पर इल्ज़ाम तराशी की गई थी, उसने कहा, सुब्हानल्लाह! उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैंने तो आज तक किसी औ़रत का सतर नहीं खोला, आ़इशा (रज़ि.) कहती हैं, बाद में उसने अल्लाह की राह में शहादत ह़ासिल की। यअ़क़ूब बिन इब्राहीम की रिवायत में मूग़िरीन फ़ी नह़्रिल जहीरा है और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत में मूग़िरीन है और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ से जब इसका मआ़नी पूछा गया तो उसने कहा, अल्वग़्र गर्मी की शिद्दत को कहते हैं।

इसकी तख़रीज ह़दीस नं. (6951) में गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल ह़दीस : कनफ़ुन : वह कपड़ा जो औ़रत के बदन को छुपाये होता है, क्योंकि अभी तक ह़ज़रत सफ़्वान बिन मुअ़त्तल (रज़ि.) ने शादी नहीं की थी, बाद में उन्होंने शादी कर ली थी।
मूग़िरीन : वग़्र से मुश्तक है रास्ता का दुश्वार गुज़ार होना।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامِ، بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ لَمَّا ذُكِرَ مِنْ شَأْنِي الَّذِي ذُكِرَ وَمَا عَلِمْتُ بِهِ قَامَ

(7022) ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं, जब मेरे बारे में इल्ज़ाम तराशी की गई और मुझे इसका इल्म ही न था, रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़िताब फ़र्माने के लिए उठे, कलिम-ए-शहादत पढ़ा, फिर अल्लाह के शायाने शान उसकी ह़म्दो सना बयान की, फिर फ़र्माया,

रَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَطِيبًا فَتَشَهَّدَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ " أَمَّا بَعْدُ أَشِيرُوا عَلَىَّ فِي أُنَاسٍ أَبَنُوا أَهْلِي وَايْمُ اللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي مِنْ سُوءٍ قَطُّ وَأَبَنُوهُمْ بِمَنْ وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَطُّ وَلاَ دَخَلَ بَيْتِي قَطُّ إِلاَّ وَأَنَا حَاضِرٌ وَلاَ غِبْتُ فِي سَفَرٍ إِلاَّ غَابَ مَعِي " . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِقِصَّتِهِ وَفِيهِ وَلَقَدْ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَيْتِي فَسَأَلَ جَارِيَتِي فَقَالَتْ وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا عَيْبًا إِلاَّ أَنَّهَا كَانَتْ تَرْقُدُ حَتَّى تَدْخُلَ الشَّاةُ فَتَأْكُلَ عَجِينَهَا أَوْ قَالَتْ خَمِيرَهَا - شَكَّ هِشَامٌ - فَانْتَهَرَهَا بَعْضُ أَصْحَابِهِ فَقَالَ اصْدُقِي رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى أَسْقَطُوا لَهَا بِهِ فَقَالَتْ سُبْحَانَ اللَّهِ وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا إِلاَّ مَا يَعْلَمُ الصَّائِغُ عَلَى تِبْرِ الذَّهَبِ الأَحْمَرِ . وَقَدْ بَلَغَ الأَمْرُ ذَلِكَ الرَّجُلَ الَّذِي قِيلَ لَهُ فَقَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ وَاللَّهِ مَا كَشَفْتُ عَنْ كَنَفِ أُنْثَى قَطُّ . قَالَتْ عَائِشَةُ وَقُتِلَ شَهِيدًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ . وَفِيهِ أَيْضًا مِنَ الزِّيَادَةِ وَكَانَ الَّذِينَ تَكَلَّمُوا بِهِ

'अम्मा बअ़द! मुझे उन लोगों के बारे में मश्वरा दो, जिन्होंने मेरी अहलिया पर तोहमत लगाई है, अल्लाह की क़सम! मैंने कभी अपनी बीवी में कोई बुराई नहीं देखी और जिस शख़्स के साथ उन पर तोहमत लगाई है, अल्लाह की क़सम! मैंने उसमें भी कभी कोई बुराई नहीं देखी और वह कभी मेरे घर में मेरी ग़ैर मौजूदगी में नहीं आया और जब मैं किसी सफ़र में घर से ग़ायब हुआ तो वह भी मेरे साथ ही घर से बाहर गया, उसके बाद पूरा वाक़िया बयान किया और उसमें यह भी है, रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे घर तशरीफ़ लाए और मेरी लौण्डी से पूछा तो उसने कहा, अल्लाह की क़सम! मैंने उसमें कोई ऐ़ब नहीं देखा, हाँ इतनी बात है, वह सो जाती है और घरेलू बकरी आकर उसका गूँधा हुआ आटा खा जाती है, या ख़मीरा आटा खा जाती है तो आपके कुछ अह़बाब ने लौण्डी को डाँटा और कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) को सच सच बता, यहाँ तक कि उन्होंने तोहमत की तस़रीह़ भी की तो उसने हैरत व इस्तिअ़जाब से कहा, सुब्हानल्लाह! अल्लाह की क़सम! मैं तो इनकी ह़क़ीक़त को इस त़रह़ जानती हूँ जिस त़रह़ सुनार ख़ालिस सोने की सुर्ख़ डाली को जानता है, यानी उनमें कोई ऐ़ब नहीं है और जब उस आदमी तक बात पहुँची जिसके साथ तोहमत लगाई गई थी तो उसने कहा, सुब्हानल्लाह! अल्लाह की क़सम! मैंने तो कभी किसी औ़रत का सतर नहीं खोला, ह़ज़रत

مِسْطَحٌ وَحَمْنَةُ وَحَسَّانُ وَأَمَّا الْمُنَافِقُ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ أُبَيٍّ فَهُوَ الَّذِي كَانَ يَسْتَوْشِيهِ وَيَجْمَعُهُ وَهُوَ الَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ وَحِمْنَةُ .

आइशा (रज़ि.) कहती हैं, वह अल्लाह की राह में शहीद हो गए थे और उसमें यह इज़ाफ़ा भी है, जिन लोगों ने यह तोहमत लगाई थी, वह मिस्तह, हम्ना और हस्सान (रज़ि.) थे, रहा मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबय तो वह उसको कुरेद कर निकालता और फैलाता था, उसका उसमें बड़ा हिस्सा है।

सहीह बुख़ारी : किताबुल एअ्तिसाम : 7369; किताबुत्तफ़्सीर : 4757; जामेअ तिर्मिज़ी : 3180.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अबनू अहली : मेरी बीवी पर ऐब और तोहमत लगाई। (2) अस्क़तू लहा बिही : उसको यह बात खुलकर कही या उसे नाज़ेबा अल्फ़ाज़ कहे। (3) यस्तौशीहि : पूछ पूछकर और कुरैदकर उसको निकालता था, फिर उसको फैलाता था, तशहीर करता था।

नोट... : हज़रत मुग़ीस (रज़ि.) की बीवी हज़रत बरीरा (रज़ि.) को हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़तहे मक्का के बाद ख़रीदकर आज़ाद किया, बाद की आज़ादी की वजह से उनको हज़रत आइशा (रज़ि.) की लौण्डी कहा गया है, या इस वजह से कि वह अपनी आज़ादी से पहले भी हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास रहती थीं और उनकी ख़िदमत करती थी, या इससे मुराद नबी अकरम (ﷺ)(ﷺ) की लौण्डी है, उसका नाम भी बरीरा था।

फ़ायदा : (1) अजनबी लोग पर्देदार औरत की ख़िदमत कर सकते हैं और औरत ऊँट पर सवार होकर कजावा में बैठ सकती है और सफ़र में अपने शौहर के साथ जा सकती है, ख़्वाह वह जंगी सफ़र ही क्यूँ न हो। (2) औरत सफ़र में अपने ज़ेवरात पहन सकती है और क़ज़ाए हाजत के लिए शौहर की इजाज़त के बग़ैर जंगल में जा सकती है। (3) इंसान को अपनी चीज़ का ख़्याल रखना चाहिए और उसको ज़ाया होने से बचाना चाहिए, गुमशुदगी की सूरत में उसको तलाश करना चाहिए। (4) कुछ आदमियों को लश्कर के पीछे रखना चाहिए, ताकि पीछे रह जाने वाली चीज़ या लश्कर से बिछड़ जाने वाले को लश्कर के साथ मिलाया जा सके। (5) अगर कोई इंसान ख़ासकर कोई औरत किसी जगह अपने घर वालों से बिछड़ जाए तो वह उसी जगह ठहरे ताकि उसको तलाश करना आसान हो। (6) अजनबी औरतों के साथ हुस्ने अदब से पेश आना और उनसे सिर्फ़ बक़द्रे ज़रूरत बातचीत करना और ख़ल्वत में उसके साथ चलने की ज़रूरत पेश आ जाए तो उसके आगे आगे चलना, ताकि उसके जिस्म का कोई हिस्सा उसको नज़र न आए और औरत अजनबी मर्द से अपना चेहरा ढाँप लेगी चाहे वह नेक व

मुत्तक़ी इंसान ही क्यूँ न हों। (7) क़ाबिले एहतिराम शख़्सियत के साथ ईसार व क़ुर्बानी का मामला करना और उसकी ख़ातिर मशक़्क़त व कुल्फ़त बर्दाश्त करना, हज़रत सफ़्वान (रज़ि.) ख़ुद पैदल चले और हज़रत आइशा को सवार किया। (8) शौहर का अपनी बीवी के साथ हुस्ने मुआशरत इख़्तियार करना और मुहब्बत से पेश आना और उस पर कोई इल्ज़ाम लगे तो लुत्फ़ो करम में कमी करना, ताकि बीवी महसूस करके उसकी वजह पूछे और अपनी कोताही का इज़ाला या माज़रत करे। (9) बीमार पर अगर कोई तोहमत लगे तो उसके सामने उसका इज़्हार न किया जाए, ताकि उसकी बीमारी में इज़ाफ़ा न हो और अपने तौर पर उस तोहमत की तहक़ीक़ व तफ़्तीश करना ताकि हक़ीक़ते हाल से आगाही हासिल हो और बिला तहक़ीक़ किसी को मुज्रिम न करार दिया जाए। (10) बीवी का अपने शौहर के साथ नाज़ो तज़ल्लुल का रवैया, उसके अदबो एहतिराम के मुनाफ़ी नहीं है।

बाब 12 : हरमे नबवी (ﷺ) की शक व शुब्हा से बरा'त करना

(12)باب : بَرَآءَةِ حَرَمِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِنَ الرِّيبَةِ

(7023) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) की उम्मे वलद (हज़रत मारिया क़िब्तिया) से मुत्तहम किया जाता था, चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को फ़र्माया, 'जाओ! उसकी गर्दन उड़ा दो।' तो हज़रत अली (रज़ि.) उसके पास पहुँचे और वह ठण्डक हासिल करने के लिए एक कूएँ में गुस्ल कर रहा था, तो हज़रत अली (रज़ि.) ने उससे कहा, बाहर निकल! उसने उन्हें अपना हाथ पकड़ा दिया और उन्होंने उसे निकाल लिया, देखा तो उसका अज़्वे मख़्सूस कटा हुआ था, उसका अज़्वे तनासुल (लिंग) नहीं था इसलिए हज़रत अली (रज़ि.) उसके क़त्ल से रुक गए फिर नबी अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَجُلاً، كَانَ يُتَّهَمُ بِأُمِّ وَلَدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِعَلِيٍّ " اذْهَبْ فَاضْرِبْ عُنُقَهُ " . فَأَتَاهُ عَلِيٌّ فَإِذَا هُوَ فِي رَكِيٍّ يَتَبَرَّدُ فِيهَا فَقَالَ لَهُ عَلِيٌّ اخْرُجْ . فَنَاوَلَهُ يَدَهُ فَأَخْرَجَهُ فَإِذَا هُوَ مَجْبُوبٌ لَيْسَ لَهُ ذَكَرٌ فَكَفَّ عَلِيٌّ عَنْهُ ثُمَّ أَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ لَمَجْبُوب

अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! उसके बदन का ख़ास हिस्सा (लिंग) कटा हुआ है, उसका अज़्वे तनासुल तो है ही नहीं।

फ़ायदा : हदीस से साबित होता है कुछ दफ़ा इंसान पर बिला वजह, बदज़न्नी से काम लेते हुए तोहमत लगा दी जाती है, जैसाकि यह आदमी क़िब्ती था बक़ौल कुछ हज़रत मारिया का चचाज़ाद था और उन ही के साथ मिस्र से आया था और हज़रत मारिया क़िब्तिया से अपने वतन का बाशिन्दा होने की वजह से बातचीत कर लेता था तो लोगों ने उस पर यह इल्ज़ाम लगा दिया और लोगों के कहने पर आपने उसको क़त्ल करने का हुक्म दे दिया जब हक़ीक़त सामने आई तो हज़रत अ़ली (रज़ि.) क़त्ल करने से रुक गए और आपको आकर आगाह किया, जिससे मालूम हुआ क़ाज़ी तो गवाहों का पाबन्द है, झूट और सच के ज़िम्मेदार वह हैं, बाक़ी रहा यह मसला कि वह मुनाफ़िक़ आदमी था, आपने किसी और सबब से क़त्ल का हुक्म दिया था तो उस पर यह सवाल पैदा होता है, फिर आपने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को सबब क्यूँ न बताया, ताकि वह क़त्ल करने से बाज़ न रहते और अगर वह्य से आपको उसके अ़ज़्वे तनासुल के कटे होने का इल्म हो गया था तो आपने ख़ुद ही लोगों को यह क्यूँ न बता दिया। अगर हज़रत अ़ली (रज़ि.) बग़ैर तफ्तीश व तहक़ीक़ के क़त्ल कर देते तो फिर ख़्वाह मख़्वाह आपकी उम्मे वलद मुत्तहम ठहरती। चूँकि यह रिवायत इंतिहाई मुज्मल (शॉर्ट) है, मालूम नहीं हज़रत अ़ली (रज़ि.) के बताने के बाद कि उसका अ़ज़्वे मख़्सूस नहीं है आपने क्या कहा, इसलिए उसके बग़ैर कोई क़तई बात नहीं कही जा सकती, अ़सल मक़्सद सिर्फ़ हरमे नबवी की उन बुरी हरकात से बरा'त का इज़्हार है।

इस किताब के कुल बाब 20 और 106 अहादीस हैं।

كتاب صفات المنافقين وأحكامهم

मुनाफ़िक़ों की सिफ़ात और उनके अहकाम

हदीस नम्बर 7024 से 7234 तक

मुनाफ़िक़ीन की सिफ़ात और उनके बारे में अहकाम

ईमान इन्सानी फ़ितरत की ख़ालिस़ और सेहतमन्द हालत है। इसमें इन्सान अल्लाह के साथ अपने हक़ीक़ी रिश्ते और वादे पर क़ाइम होता है। कुफ़्र इस रिश्ते और अल्लाह से किये गये वादे का इन्कार है। निफ़ाक़ दिल की एक ऐसी बीमारी है जिसमें इन्सान अल्लाह के साथ अपने अस़ल रिश्ते और उस रिश्ते के तहफ़्फ़ुज़ के लिये अल्लाह के साथ किये गये वादे को भी तोड़ चुका होता है और उसके साथ शदीद तज़बज़ुब और बेयक़ीनी के मर्ज़ में भी गिरफ़्तार होता है। जो शख़्स़ पक्का मुनाफ़िक़ हो वह काफ़िर होता है लेकिन अपनी ज़िन्दगी कुफ़्र के मुताबिक़ गुज़ारने की भी हिम्मत नहीं रखता। जिधर से मफ़ाद ज़्यादा हास़िल हो ख़ूद को उस कैंप से वाबस्ता करने की कोशिश करता है, इसी तरह जिस तरफ़ उसे दुनियावी मफ़ाद की उम्मीद ज़्यादा होती है वह उसी तरफ़ का रूख़ करता है। मोमिन की उम्मीद और ख़ौफ़ दोनों का मेहवर (केन्द्र) अल्लाह की ज़ात होती है। उ़मूमन कुफ़्र व निफ़ाक़ एक साथ मौजूद होते हैं। किसी में निफ़ाक़ का पहलू ग़ालिब होता है, वह मुनाफ़िक़ कहलाता और किसी में कुफ़्र का, उसको काफ़िर कहा जाता है। निफ़ाक़ की कुछ ख़ुसूस़ियात उसमें भी ज़रूर मौजूद होती हैं, इसलिये अल्लाह ने कई जगहों पर काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों और उनकी मुश्तरका बुरी ख़स़लतों का ज़िक्र एक साथ किया है। मिस़ाल के तौर पर देखिये। (सूरह तौबा 73–87)

रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय कभी अपनी क़ौम के मजबूर करने से मारे बाँधे रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ किसी सफ़र में शरीक भी हुआ लेकिन अन्दर से सफ़र की हर तकलीफ़ पर कुड़ता भी रहा और ये कोशिश भी करता रहा कि उसकी क़ौम रसूलुल्लाह(ﷺ) की हिमायत से दस्तकश हो जाये। मफ़ाद परस्त इन्सान में बुज़दिली और रज़ालत दोनों इकट्ठी हो जाती हैं। निफ़ाक़ कुफ़्र के साथ साथ इन दोनों और इस तरह की दूसरी गन्दी सिफ़ात का मजमूआ होता है, इसलिये मुनाफ़िक़ जहन्नम के सबसे नीचे तबक़े का मुस्तहिक़ होता है।

निफ़ाक़ का ये सिलसिला रसूलुल्लाह(ﷺ) की हिजरत के बाद मदीना में सामने आया, जब अहले मदीना की अक्स़रियत ईमान लाने के बाद रसूलुल्लाह(ﷺ) की इताअ़त में एक मुनज़्ज़म (सिस्टेमेटिक) क़ुव्वत बनना शुरू हूई। बाद के दूसरे मारकों में मुसलमानों की फ़तह के बाद कुछ दूसरे अ़रब क़बाइल के यहाँ भी निफ़ाक़ नमूदार होना शुरू हो गया। रसूलुल्लाह(ﷺ) को मालूम था कि कौन कौन लोग मुनाफ़िक़ हैं। उनके निफ़ाक़ की शिद्दत का भी आपको पता था, इसके बावजूद आप(ﷺ) ने उनके बारे में तहम्मुल और बरदाश्त की पॉलिसी पर अ़मल फ़रमाया। हमेशा उनकी ज़ाहिरी बातों के मुताबिक़ उनसे सुलूक किया। ये लोग जिहाद में शरीक न होते और झूठे उ़ज़्र पेश करते तो आप(ﷺ)

उनके झूठ से आगाह होने के बावजूद उनके उ़ज़्र तस्लीम फ़रमा लेते बल्कि उनके साथ तज्दीदे बैअ़त भी फ़रमाते और मग़फ़िरत की दुआ भी करते। इसमें बहुत सी हिकमतें पोशीदा थीं। अहम तरीन ये हैं कि आप(ﷺ) को वह्य के ज़रिये से आगाह कर दिया जाता था कि कौन सच्चा मोमिन है और कौन मुनाफ़िक़ लेकिन आपके बाद ऐसा मुमकिन न था। आप(ﷺ) का उन लोगों से तआमुल क़यामत तक के लिये नमून-ए-अमल था, इसलिये हमेशा ज़ाहिरी हालत के मुताबिक़ सुलूक करना ज़रूरी था। (2) आप ख़्वाहिश और उम्मीद रखते थे कि ये लोग किसी न किसी तरह सही तौर पर इस्लाम से वाबस्ता हो जायें, इसलिये उनको ढील देनी ज़रूरी थी। (3) उनके साथ सख़्ती करने से उनके दूसरे रिश्तेदार पुरानी क़बाइली अ़सबियत की बिना पर उनके हमदर्द बन जाते और ख़तरा था कि इस तरह वह दीन के हवाले से फ़ित्ने में मुबतला हो जायेंगे। (4) अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के बेटे अ़ब्दुल्लाह(رضي الله عنه) की तरह सबके इन्तेहाई क़रीबी रिश्तेदार मुख़्लिस मोमिन थे। उन्हें जज़्बाती सदमों से महफ़ूज़ रखना ज़रूरी था। (5) ये लोग उ़मूमन मालदार, अपने अपने क़बाइल में बा'हैसियत, शक्ल व हैयत और तर्ज़े ज़िन्दगी के ऐतबार से मुअस्सिर और बा'रसूख़ लोग थे जैसा कि अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया है: 'जब आप उनको देखें तो उनके जिस्म आपको अच्छे लगेंगे, अगर वह बात करें तो आप उनकी बात सुनेंगे, ऐसे (अकड़े हूये) हैं जैसे सहारे से खड़े किये हूये लकड़ी के शहतीर हों (लेकिन अन्दर से ये हाल है कि) अगर कोई भी चीख़ बलन्द हो तो समझते हैं उन्हीं पर बला आई है। यही दुशमन हैं, उनसे बच कर रहें, अल्लाह उन्हें हलाक करे! ये कहाँ से फिरे जाते हैं।' (अल मुनाफ़िक़ूनः 63/4) उनको खुली दुशमनी की तरफ़ धकेलने के बजाये उनके शर को कम अज़ कम सतह पर रखना बेहतर हिकमते अमली थी। रसूलुल्लाह(ﷺ) तहम्मुल से काम लेते हूये उनसे सर्फ़े नज़र भी करते थे और एक हद से आगे निकलने से ख़ौफ़ज़दा भी रखते थे, और उनके मोमिन लवाहिक़ीन से अच्छा सुलूक करके मुनाफ़िक़ीन को ग़लत कामों में अपनों की हिमायत से महरूम भी रखा जाता था।

ये अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ) के तमाम दुशमनों की मुश्तरका ख़ुसूसियत है कि वह बेयक़ीनी का शिकार होते हैं। काफ़िर जो कुफ़्र अपनी ज़बानों से ज़ाहिर करते हैं, इस पर भी उन्हें पुख़्ता यक़ीन नहीं होता। अबू जहल ने जब अपने साथियों समेत ये कहा: 'ऐ अल्लाह! अगर ये (क़ुर्आन) तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर दर्दनाक अ़ज़ाब ले आ।' (अल अनफ़ाल: 8/32) तो उस वक़्त भी उनको यक़ीन न था कि, नऊ़ज़ूबिल्लाह, क़ुर्आन अल्लाह का पैग़ाम नहीं, रसूलुल्लाह(ﷺ) का घड़ा हुआ है, इसलिये चुपके चुपके इस्तेग़फ़ार भी करते जा रहे थे।

यही हाल यहूद का था। उन्हें मालूम था कि रसूलुल्लाह(ﷺ) सच्चे रसूल हैं, वह आपके पास आकर आपसी बातें भी कहते थे जो एक रसूल के सामने कही जा सकती हैं, जिनमें आपके पैग़ाम की तस्दीक़ का पहलू या आपसे अपनी किताब और अपने दीन की किसी बात की तस्दीक़ चाहने का पहलू

मौजूद होता था लेकिन इसके बावजूद आप पर ईमान नहीं लाते थे। यहूद आपकी ख़िदमत में आकर आख़िरत के हवाले से जो बातें कहते थे वह आपकी तालीमात की तस्दीक़ करने वाली होती थीं। रूह के बारे में उन्होंने जो पूछा उसमें अगरचे उनकी फ़ित्ना अंगेज़ी की ख़्वाहिश शामिल थी लेकिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने जवाब में वही बात फ़रमाई जो तौरात में मौजूद थी।

यहूद के बाद क़ुरैश की उन जैसी सिफ़ात का तज़किरा है। ख़ुफ़िया इस्तेग़फ़ार के अलावा क़हत से निजात के लिये मुश्रिकीन के सरदार अबू सुफ़ियान मक्का से चल कर रसूलुल्लाह(ﷺ) से दुआ की दरख़्वास्त के लिये आये लेकिन उस वक़्त भी ईमान की तौफ़ीक़ न हूई। जिन मुश्रिकीन ने ख़ुद किसी बड़े मोजिज़े का मुतालबा किया था वह शक़्क़े क़मर जैसा मोजिज़ा देख कर और अच्छी तरह का मुशाहिदा करके भी ईमान न लाये हालांकि उनके दिल व दिमाग़ रसूलुल्लाह(ﷺ) की सच्चाई की शहादत दे रहे थे मगर यक़ीन की मतलूबा सतह पर नहीं पहुँच सके। अल्लाह तआला ने उन क़ुरैश के साथ भी तहम्मुल का मामला फ़रमाया और उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा मोहलत दी ताकि मफ़तूह और बेबस हो जाने के बाद बिल आख़िर ये भी इस्लाम में दाख़िल हो गये। रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ से तालीफ़े क़ुलूब के बे मिसाल मुज़ाहिरों ने उनको इस्लाम का सच्चा पेरोकार भी बना दिया। इस तरह ये निजात हासिल करने के क़ाबिल हो गये, वरना क़यामत के रोज़ कुफ़्र पर उठते तो दुनिया व माफ़ीहा (जो कुछ दुनिया में है) देकर भी निजात हासिल न कर पाते, मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों की ज़ाहिरी दुनियावी हालत अच्छी होती है, उसकी वजह ये नहीं कि जिस तरह वह समझते हैं या दूसरे नादान ख़्याल करते हैं कि उन पर अल्लाह का बहुत फ़ज़ल है बल्कि उन्हें दुनिया ही में सब कुछ दे दिया जाता है, यहाँ वह ऐश व आराम की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और आख़िरत की दाइमी ज़िन्दगी की तमाम नेमतों से महरूम हो जाते हैं। दूसरी तरफ़ मोमिन दुनिया ही में मुश्किलात बरदाश्त कर लेता है और आख़िरत में दाइमी नेमतों से शाद काम होता है। दुनिया की नेमतें इतनी बेवक़अत और आरज़ी हैं कि काफ़िर को अज़ाब की एक डुबकी दुनिया की नेमतों की याद तक से महव कर देगी जबकि मोमिन को नेमतों के जहाँ में दाख़िल होते ही याद भी न रहेगा कि दुनिया में कभी मशक़्क़त उठाई थी या नहीं। मोमिन दुनिया में मशक़्क़तें उठा कर भी हमेशा ख़ैर फैलाता रहा उसका उसे बेहिसाब अज्र मिलेगा। ये इस पर अल्लाह की ख़ुसूसी रहमत होगी और निजात हक़ीक़त में रहमत ही से हासिल होती है, इसके लिये इन्सान के अपने आमाल काफ़ी नहीं हो सकते। आख़िर में ये बयान किया गया है कि जब निजात अल्लाह की अता करदा तौफ़ीक़ और उसकी रहमत पर मुन्हसिर (डिपेंड) है तो किसी इन्सान को ये ख़्याल नहीं करना चाहिए कि दूसरों की हिदायत का सारा इन्हिसार उसकी कोशिशों पर है, इसलिये वह दिन रात वाज़ व नसीहत में न लगा रहे। उसका असर उलटा ये हो सकता है कि सुनने वाले उकताहट का शिकार होकर हिदायत क़बूल करने से मज़ीद दूर हो सकते हैं।

كتاب صفات المنافقين وأحكامهم

53 : मुनाफ़िक़ों की सिफ़ात और उनके अहकाम

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، أَنَّهُ سَمِعَ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ، يَقُولُ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي سَفَرٍ أَصَابَ النَّاسَ فِيهِ شِدَّةٌ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَىٍّ لأَصْحَابِهِ لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى يَنْفَضُّوا مِنْ حَوْلِهِ . قَالَ زُهَيْرٌ وَهِيَ قِرَاءَةُ مَنْ خَفَضَ حَوْلَهُ . وَقَالَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ - قَالَ - فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَأَخْبَرْتُهُ بِذَلِكَ فَأَرْسَلَ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُبَىٍّ فَسَأَلَهُ فَاجْتَهَدَ يَمِينَهُ مَا فَعَلَ فَقَالَ كَذَبَ زَيْدٌ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - فَوَقَعَ فِي نَفْسِي مِمَّا قَالُوهُ شِدَّةٌ حَتَّى أَنْزَلَ اللَّهُ تَصْدِيقِي } إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ{ قَالَ ثُمَّ دَعَاهُمُ النَّبِيُّ صلى الله

(7024) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) बयान करते हैं, हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ निकले, उसमें लोगों को बहुत तक्लीफ़ पहुँची तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने अपने साथियों से कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथियों पर उस वक़्त तक कुछ ख़र्च न करे, जब तक वह उससे अलग न हो जाएँ, ज़ुहैर कहते हैं, जो लोग हौलहू पर ज़ेर पढ़ते हैं, वह उससे पहले मिन का इज़ाफ़ा करते हैं और उस (अ़ब्दुल्लाह बिन उबय) ने कहा, अगर हम मदीना लौट गए तो इ़ज़्ज़त वाले, उससे ज़िल्लत वालों को निकाल देंगे। हज़रत ज़ैद बिन अरकम (रज़ि.) कहते हैं, मैंने नबी अकरम(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको यह बात बता दी, आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय को बुलवाया और उससे पूछा, उसने ज़ोरदार क़सम खाई कि उसने यह काम नहीं किया और कहा, ज़ैद ने रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास झूठ बोला है, चुनाँचे लोगों की बातों

عليه وسلم لِيَسْتَغْفِرَ لَهُمْ - قَالَ - فَلَوَّوْا رُءُوسَهُمْ . وَقَوْلُهُ } كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ{ وَقَالَ كَانُوا رِجَالاً أَجْمَلَ شَىْءٍ .

से मेरे दिल में बहुत रंज हुआ, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरी तस्दीक़ में सूरह मुनाफ़िक़ून की यह आयात उतारीं, फिर नबी अकरम(ﷺ) ने उन्हें बुलवाया, ताकि उनके लिए मग़्फ़िरत तलब करें तो उन्होंने अपने सिर झटक दिये, अल्लाह ने उनके बारे में फ़र्माया, गोया वह दीवारों के साथ लगी लकड़ियाँ हैं, (उनका किरदार इंसानों वाला नहीं है) हालाँकि वह ख़ूबसूरत इंसान थे।

तख़रीज 7024 : सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4900, 4901, 4903, 4904.

फ़ायदा : यह बनी मुस्तलिक़ का वाक़िया है, जिसमें एक मुहाजिर और एक अंसार का वाक़िया पेश आया था, उस मौक़े पर अब्दुल्लाह बिन उबय ने इंतिहाई क़बीह और नाज़ेबा बातें की थीं और फिर क़समें उठाकर उनसे मुकर गया था।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي شَيْبَةَ - قَالَ ابْنُ عَبْدَةَ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا، يَقُولُ أَتَى النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم قَبْرَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُبَىٍّ فَأَخْرَجَهُ مِنْ قَبْرِهِ فَوَضَعَهُ عَلَى رُكْبَتَيْهِ وَنَفَثَ عَلَيْهِ مِنْ رِيقِهِ وَأَلْبَسَهُ قَمِيصَهُ فَاللَّهُ أَعْلَمُ .

(7025) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) अब्दुल्लाह बिन उबय की क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और उसे उसकी क़ब्र से निकालकर अपने ज़ानू पर रखा, उस पर अपना लुआबे मुबारक फूँका और उसे अपनी क़मीस पहनाई, हक़ीक़ते हाल से अल्लाह ख़ूब आगाह है।

तख़रीज 7025 : सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़ : 1270; बाब (हल युख़्रजुल मय्यित मिनल क़ब्रि.. : 1350; किताबुल जिहाद वस्सियर : 3008; किताबुल् लिबास : 5795; सुनन नसाई : 1900, 1901; बाब इख़्राजुल मय्यित मिनल लहद...: 2018.

حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ جَاءَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُبَىٍّ بَعْدَ مَا أُدْخِلَ حُفْرَتَهُ ‏.‏ فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ سُفْيَانَ

(7026) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के दफ़न करने के बाद उसके पास पहुँचे, आगे ऊपर वाली हदीस है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ لَمَّا تُوُفِّيَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَىٍّ ابْنُ سَلُولَ جَاءَ ابْنُهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَأَلَهُ أَنْ يُعْطِيَهُ قَمِيصَهُ يُكَفِّنُ فِيهِ أَبَاهُ فَأَعْطَاهُ ثُمَّ سَأَلَهُ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِيُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَقَامَ عُمَرُ فَأَخَذَ بِثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُصَلِّي عَلَيْهِ وَقَدْ نَهَاكَ اللَّهُ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ إِنَّمَا خَيَّرَنِي اللَّهُ فَقَالَ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً وَسَأَزِيدُهُ عَلَى سَبْعِينَ ‏"‏ ‏.‏ قَالَ إِنَّهُ مُنَافِقٌ ‏.‏ فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(7027) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल फ़ौत हो गया, उसका बेटा अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बिन अ़ब्दुल्लाह रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे दरख़्वास्त की कि आप उसे अपनी क़मीस़ इनायत करें, वह उसे अपने वालिद का कफ़न बनाए तो आपने उसे अपनी क़मीस़ अ़ता की, फिर उसने आपसे दरख़्वास्त की कि आप उसकी नमाज़े जनाज़ा अदा कराएँ, चुनाँचे आप उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिए खड़े हुए तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) उठे, रसूलुल्लाह(ﷺ) का कपड़ा पकड़कर अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह(ﷺ)!क्या आप उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएँगे, हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने आपको उस पर नमाज़ पढ़ने से मना किया है तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह ने मुझे इख़्तियार दिया है, अल्लाह का फ़र्मान है, उनके लिए बख़्शिश तलब करें या बख़्शिश तलब न करें, अगर तुम उनके लिए सत्तर (70)

فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ } وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ{

दफ़ा भी बख़्शिश तलब करोगे (अल्लाह उन्हें माफ़ नहीं करेगा) और मैं सत्तर (70) बार से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा।'

हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, वह तो मुनाफ़िक़ है, तो आपने उस पर नमाज़ पढ़ी, चुनाँचे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह आयत उतारी, 'आप उनमें से जो भी मर जाए, कभी उसकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें और न उसकी क़ब्र पर खड़े हों।' (तौबा : आयत 84)

बुख़ारी किताब फ़ज़ाइले सहाबा : 6157

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ الْقَطَّانُ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ وَزَادَ قَالَ فَتَرَكَ الصَّلاَةَ عَلَيْهِمْ .

(7028) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी रिवायत बयान करते हैं, उसमें यह इज़ाफ़ा है, चुनाँचे आपने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़नी छोड़ दी। किताब फ़ज़ाइले सहाबा : 6158

फ़ायदा : हुज़ूरे अकरम(ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल की ख़्वाहिश और उसके बेटे की दरख़्वास्त पर क्योंकि बेटा ख़ालिस और सच्चा मोमिन था, उसकी तक्रीम और अपनी वुस्अत ज़र्फ़ी और रहम दिली और शफ़्क़त की बिना पर, कफ़न के लिए अपनी क़मीस दी, लुआबे मुबारक (थूक) उसके मुँह में डाला और उसकी नमाज़े जनाजा पढ़ाई, आपके ताख़ीर (देरी) से पहुँचने के सबब वह उसे उसकी क़ब्र में उतार चुके थे, आपने ईफ़ाए वादा करते हुए उनको क़ब्र से निकलवाया, क़मीस पहनाई, लुआबे दहन उसके मुँह में डाला और हज़रत उमर (रज़ि.) के रोकने के बावजूद नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और हज़रत उमर (रज़ि.) को जवाब दिया, ऐ उमर (रज़ि.)! मुझे इस्तिग़फ़ार से मना नहीं किया गया, इख़्तियार दिया गया है, अब यह अल्लाह की मर्ज़ी है, उसे माफ़ करे या न करे, लेकिन मेरे लिए तो यह तर्ज़े अमल मुनासिब है, जैसे कि जिनके लिए कुफ़्र मुक़र्रर हो चुका था और उन्हें दौलते ईमान से महरूम रहना था, लेकिन आप उनको इन्जार व तब्लीग़ करते रहे, चुनाँचे आपके नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से बहुत से मुनाफ़िक़, आपके वुस्अते अख़्लाक़ और बुलंद ज़र्फ़ी देखकर मुसलमान हो गए, नीज़ बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में यह तसरीह मौजूद है कि अगर मैं समझता उसको माफ़ी मिल सकती है तो मैं सत्तर से भी ज़्यादा बार इस्तिग़फ़ार करता, जिससे मालूम होता है कि आप भी यह

समझते थे कि मेरा इस्तिग़फ़ार उसके हक़ में मुफ़ीद नहीं है, लेकिन इस्लाम के हक़ में मुफ़ीद है, जैसे कि इमाम तबरी (रह.) ने लिखा है, आपने फ़र्माया था, मेरी क़मीस और मेरा उस पर नमाज़ पढ़ने से उसको कोई फ़ायदा नहीं होगा, लेकिन मुझे यह उम्मीद है, मेरे इस तर्ज़े अमल से उसकी क़ौम के एक हज़ार आदमी मुसलमान हो जाएँगे (जामिउल बयान, जिल्द 10 पेज 142. तबअ बौलूक़ (मुतीअ कुब्रा) मिस्र) लेकिन आख़िरकार वह्ये इलाही के ज़रिये सरीह तौर पर मुनाफ़िक़ीन का जनाज़ा पढ़ने और उनके कफ़न, दफ़न में हिस्सा लेने से रोक दिया गया, क्योंकि उस तर्ज़े अमल से मुनाफ़िक़ीन की हिम्मत अफ़ज़ाई और मोमिनों की दिल शिकस्तगी का एहतिमाल था, इसलिए आपने उसके बाद किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़ा की नमाज़ नहीं पढ़ी।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي، مَعْمَرٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ اجْتَمَعَ عِنْدَ الْبَيْتِ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ قُرَشِيَّانِ وَثَقَفِيٌّ أَوْ ثَقَفِيَّانِ وَقُرَشِيٌّ قَلِيلٌ فِقْهُ قُلُوبِهِمْ كَثِيرٌ شَحْمُ بُطُونِهِمْ فَقَالَ أَحَدُهُمْ أَتَرَوْنَ اللَّهَ يَسْمَعُ مَا نَقُولُ وَقَالَ الآخَرُ يَسْمَعُ إِنْ جَهَرْنَا وَلاَ يَسْمَعُ إِنْ أَخْفَيْنَا وَقَالَ الآخَرُ إِنْ كَانَ يَسْمَعُ إِذَا جَهَرْنَا فَهُوَ يَسْمَعُ إِذَا أَخْفَيْنَا . فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ وَلاَ جُلُودُكُمْ} الآيَةَ .

(7029) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं, बैतुल्लाह के पास तीन शख़्स दो क़ुरैशी और एक सक़फ़ी आया, या दो सक़फ़ी और एक क़ुरैशी जमा हुए, उनके दिलों में सूझ बूझ कम थी और उनके पेटों की चर्बी बहुत थी, चुनाँचे उनमें से एक ने कहा, तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह हमारी बात सुनता है? दूसरे ने कहा, अगर बुलंद आवाज़ हो तो सुनता है अगर हम पस्त आवाज़ में पोशीदा बात करें, नहीं सुनता और तीसरे ने कहा, अगर वह हमारी बुलंद बातचीत सुनता है तो फिर वह तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें और तुम्हारे चमड़े गवाही देंगे, बल्कि तुम यह समझते थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से कामों को नहीं जानता।' (सूरह फ़ुस्सिलत आयत 22)
सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4817, और हदीस : 4817; किताबुत्तौहीद : 7521; जामेअ तिर्मिज़ी : 3248.

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है, आम तौर पर भारी भरकम और मोटे पेटों वाले, अक़्ल व फ़रासत से महरूम होते हैं और आयत से यह साबित होता है कि क़ियामत के दिन इंसान के आज़ा

(अंग) व जवारेह़ और उसके रोंगटे उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगे, इंसान दूसरों से तो छुप सकता है, लेकिन अपने जिस्म और आज़ा से कैसे छुप सकता है, लेकिन उसे यह एहसास ही नहीं है, मेरे जिस्म और आज़ा ही अपने हर हर अमल का इज़्हार कर देंगे।

وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ خَلاَّدٍ الْبَاهِلِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ وَهْبِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، ح وَقَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، بِنَحْوِهِ

(7030) इमाम स़ाहब अपने दो और उस्तादों से उसके हम मआनी रिवायत बयान करते हैं।

तख़रीज 7030 : जामेअ तिर्मिज़ी : 3250, इसकी तख़रीज ह़दीस 6960 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيٍّ، - وَهُوَ ابْنُ ثَابِتٍ - قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ يَزِيدَ، يُحَدِّثُ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم خَرَجَ إِلَى أُحُدٍ فَرَجَعَ نَاسٌ مِمَّنْ كَانَ مَعَهُ فَكَانَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِيهِمْ فِرْقَتَيْنِ قَالَ بَعْضُهُمْ نَقْتُلُهُمْ . وَقَالَ بَعْضُهُمْ لاَ . فَنَزَلَتْ } فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ{

(7031) ह़ज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) ग़ज़्व-ए-उहुद के लिए निकले तो आपके साथ जाने वाले कुछ लोग वापिस आ गए तो नबी अकरम(ﷺ) के साथी उनके बारे में दो ह़िस्सों में बट गए, उनमें से कुछ ने कहा, हम उनको क़त्ल करेंगे, कुछ ने कहा, नहीं तो यह आयत उतरी, 'तुम्हें क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गिरोह बन गए हो।' (निसाअ आ. 88)

सहीह बुख़ारी किताब फ़ज़ाइले मदीना : 1884; किताबुल मग़ाज़ी : 4050; किताबुत्तफ़्सीर : 4589; जामेअ तिर्मिज़ी : 3028.

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ

(7032) इमाम स़ाहब दो और उस्तादों से इसके हम मआनी रिवायत बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज ह़दीस 6962 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : जंगे उहुद के मौक़े पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल की राय या मश्वरा क़बूल नहीं किया गया था, इस बहाना से वह अपने तीन सौ साथियों को लेकर वापिस मदीना लौट आया था।

حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ سَهْلٍ التَّمِيمِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي، مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، الْخُدْرِيِّ أَنَّ رِجَالاً، مِنَ الْمُنَافِقِينَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانُوا إِذَا خَرَجَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِلَى الْغَزْوِ تَخَلَّفُوا عَنْهُ وَفَرِحُوا بِمَقْعَدِهِمْ خِلاَفَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَإِذَا قَدِمَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم اعْتَذَرُوا إِلَيْهِ وَحَلَفُوا وَأَحَبُّوا أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَنَزَلَتْ { لاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلاَ تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ}

(7033) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के अ़हदे मुबारक में कुछ मुनाफ़िक़ लोग, जब नबी अकरम(ﷺ) जंग के लिए निकलते, आपसे पीछे रह जाते और रसूलुल्लाह(ﷺ) से पीछे रह जाने पर ख़ुश होते तो जब नबी अकरम(ﷺ) तशरीफ़ ले आते तो आपके सामने उ़ज़्र और बहाने पेश करते और क़समें खाते और पसंद करते कि जो काम उन्होंने नहीं किया, उस पर उनकी ता'रीफ़ की जाए तो आयत नाज़िल हुई, 'जो लोग अपने किये पर ख़ुश होते और चाहते हैं जो काम उन्होंने नहीं किये, उन पर उनकी ता'रीफ़ की जाए, उनके बारे में ख़्याल न कीजिए, उन्हें अ़ज़ाब से बच जाने वाले न समझिये उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।' (आले इमरान : आयत 88)

तख़रीज 7033 : सहीह बुख़ारी 4567.

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि सूरह आले इमरान की यह आयत उन मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी है जो जान बूझकर जिहाद के लिए नबी अकरम(ﷺ) से पीछे रह जाते थे, और फिर जब आप लड़ाई से वापिस तशरीफ़ ले आते तो झूठे बहाने पेश करते और क़समें खाकर अपनी जाँ निसारी और वफ़ादारी का यक़ीन दिलाते और अपनी झूठी वफ़ादारी की ता'रीफ़ की ख़्वाहिश करते, लेकिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की अगली रिवायत से मालूम होता है, यह उन यहूद के बारे में उतरी है, जो हुज़ूरे अकरम(ﷺ) के सामने कित्माने इल्म करते थे और फिर अपने उस अ़मल पर ख़ुश होते थे और आपको ख़िलाफ़े वाक़िया बात बताकर चाहते थे, आप उनके उस अ़मल की ता'रीफ़ करें, यानी उनके झूठ और

कित्मान पर उनकी ता'रीफ़ करें, जिससे मालूम हुआ, दोनों का तर्ज़े अमल उसका मिस्दाक़ है, गोया असल मक़्सद यह है कि किसी फ़र्द को, वह मुसलमान हो या मुनाफ़िक़ या यहूदी किसी बुरे काम के करने पर ख़ुश नहीं होना चाहिए, भला करके इतराना नहीं चाहिए और जो अच्छा काम नहीं किया, उस पर तारीफ़ की ख़्वाहिश नहीं करनी चाहिए और दूसरों के काम का क्रेडिट ख़ुद नहीं लेना चाहिए, बल्कि अच्छा काम करने के बाद भी मदह सराई की तवक़्क़ोअ या ख़्वाहिश नहीं करनी चाहिए।

(7034) हुमैद (रह.) बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) बयान करते हैं कि मरवान (रज़ि.) ने अपने दरबान से कहा, ऐ अबू राफ़ेअ! हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पास जाओ और पूछो, अगर हममें से हर वह फ़र्द जो अपने किये पर ख़ुश होता है और जो काम नहीं किया, उस पर तारीफ़ चाहता है, अज़ाब से दो चार होगा तो फिर हम सबको अज़ाब से गुज़रना पड़ेगा तो इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया, तुम्हारा इस आयत से क्या तअल्लुक़? यह आयत तो बस अहले किताब के बारे में उतरी है, फिर हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने आयत पढ़ी, 'उस वक़्त को याद करो, जब उन्होंने उन लोगों से अहद लिया, जिन्हें किताब दी गई थी कि तुम उसे अच्छी तरह बयान करोगे और उसे छुपाओगे नहीं तो उन्होंने उस अहद को पसे पुश्त फेंक दिया और उसके बदले हक़ीर (हल्का) माल हासिल किया, इंतिहाई बुरी चीज़ है जो वह ले रहे हैं।' और इब्ने अब्बास ने यह आयत पढ़ी 'वह लोग जो अपने किये पर ख़ुश होते हैं और चाहते हैं, जो काम उन्होंने नहीं किया उस पर उनकी तारीफ़ की जाए, ख़्याल न करें।'

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ، بْنُ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، أَنَّ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ مَرْوَانَ قَالَ اذْهَبْ يَا رَافِعُ - لِبَوَّابِهِ - إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَقُلْ لَئِنْ كَانَ كُلُّ امْرِئٍ مِنَّا فَرِحَ بِمَا أَتَى وَأَحَبَّ أَنْ يُحْمَدَ بِمَا لَمْ يَفْعَلْ مُعَذَّبًا لَنُعَذَّبَنَّ أَجْمَعُونَ . فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ مَا لَكُمْ وَلِهَذِهِ الآيَةِ إِنَّمَا أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِي أَهْلِ الْكِتَابِ . ثُمَّ تَلاَ ابْنُ عَبَّاسٍ { وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلاَ تَكْتُمُونَهُ} هَذِهِ الآيَةَ وَتَلاَ ابْنُ عَبَّاسٍ { لاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا} وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ سَأَلَهُمُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَنْ شَىْءٍ فَكَتَمُوهُ إِيَّاهُ وَأَخْبَرُوهُ بِغَيْرِهِ فَخَرَجُوا قَدْ أَرَوْهُ أَنْ قَدْ أَخْبَرُوهُ بِمَا

سَأَلَهُمْ عَنْهُ وَاسْتَحْمَدُوا بِذَلِكَ إِلَيْهِ وَفَرِحُوا بِمَا أَتَوْا مِنْ كِتْمَانِهِمْ إِيَّاهُ مَا سَأَلَهُمْ عَنْهُ .

(आले इमरान : 187, 188) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, नबी अकरम(ﷺ) ने उनसे किसी चीज़ के बारे में पूछा तो उन्होंने छुपा लिया और आपको कोई और चीज़ बता दी और आप यह ज़ाहिर करते हुए निकले कि उन्होंने आपको वह चीज़ बता दी है, जिसके बारे में आपने उनसे सवाल किया और उस तर्ज़े अ़मल से आपसे तारीफ़ की ख़्वाहिश की और आपने उनसे जिसके बारे में सवाल किया था, उसके आपसे छुपाने पर ख़ुश हुए।'
सहीह बुख़ारी 4568; तिर्मिज़ी : 3014.

फ़ायदा : हज़रत मरवान (रज़ि.) का मक़्सद यह था कि हममें से हर फ़र्द अपने नेक अ़मल पर ख़ुश होता है और बसा औक़ात ऐसे नेक काम पर तारीफ़ का ख़्वाहाँ होता है, जो दरहक़ीक़ उसका काम नहीं है तो अगर यह तर्ज़े अ़मल अ़ज़ाब का सबब है तो फिर हममें से हर एक अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ ठहरेगा तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया, यह आयते मुबारका उन यहूद के बारे में नाज़िल हुई है, जो नबी अकरम(ﷺ) से कुछ बातें छुपाते थे और उस कित्मान (छुपाने) पर शादाँ थे, इस तरह आपको ख़िलाफ़े हक़ीक़त और ख़िलाफ़े वाक़िया जवाब देते थे और चाहते थे कि अल्लाह का रसूल और मुसलमान, उनके इस ख़िलाफ़े वाक़िया जवाब पर उनकी तारीफ़ करें तो गोया सबबे अ़ज़ाब, कित्माने इल्म पर ख़ुश होना और झूठे जवाब पर तारीफ़ की ख़्वाहिश करना है और मुसलमान इस तर्ज़े अ़मल से बचते हैं, इसलिए वह इस आयत का मिस्दाक़ नहीं हैं, यह मक़्सद नहीं है कि अगर मुसलमान, यहूदियों वाला वतीरा इख़्तियार कर लें तो फिर भी वह इसका मिस्दाक़ नहीं होंगे।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ بْنُ الْحَجَّاجِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ قَيْسٍ، قَالَ قُلْتُ لِعَمَّارٍ أَرَأَيْتُمْ صَنِيعَكُمْ هَذَا الَّذِي صَنَعْتُمْ فِي أَمْرِ عَلِيٍّ أَرَأْيًا رَأَيْتُمُوهُ أَوْ شَيْئًا عَهِدَهُ إِلَيْكُمْ رَسُولُ

(7035) क़ैस (रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) से पूछा, बताइए आपने हज़रत अ़ली (रज़ि.) का मामला में जो वतीरा (मदद व नुसरत) अपनाया, क्या यह तर्ज़े अ़मल तुम्हारी अपनी सोच थी, जो तुमने सोची या ऐसी चीज़ जिसकी तल्क़ीन तुम्हें रसूल(ﷺ) ने की थी तो उन्होंने जवाब दिया

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ مَا عَهِدَ إِلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا لَمْ يَعْهَدْهُ إِلَى النَّاسِ كَافَّةً وَلَكِنْ حُذَيْفَةُ أَخْبَرَنِي عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " فِي أَصْحَابِي اثْنَا عَشَرَ مُنَافِقًا فِيهِمْ ثَمَانِيَةٌ لاَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ثَمَانِيَةٌ مِنْهُمْ تَكْفِيكَهُمُ الدُّبَيْلَةُ وَأَرْبَعَةٌ " . لَمْ أَحْفَظْ مَا قَالَ شُعْبَةُ فِيهِمْ .

रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें किसी ऐसी चीज़ की तल्क़ीन नहीं फ़र्माई, जिसकी ताकीद सब लोगों को न की हो, लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने मुझे नबी अकरम(ﷺ) से बताया कि नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मेरे साथियों में बारह मुनाफ़िक़ हैं (यानी मेरे मानने वालों में से) उनमें से आठ उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेंगे, जब तक ऊँट सूई के नाके से न गुज़र जाए, उनमें से आठ के लिए दुबैला (पेट का फोड़ा) काफ़ी होगा और चार' के बारे में मुझे याद नहीं है (यानी अस्वद को) कि शोबा ने क्या कहा था।

फ़ायदा : हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) का मक़्सद यह था कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ग़ज़्व–ए–तबूक से वापसी के वक़्त 12 मुनाफ़िक़ों के बारे में, जिन्होंने आपको क़त्ल करने की नापाक साज़िश की थी, बताया था मुसलमानों में जंग इन्हीं की साजिश का नतीजा थी, जिसमें हम हज़रत अ़ली (रज़ि.) को हक़ पर समझते थे, इसलिए हमने उनका साथ दिया, उनमें से आठ मुनाफ़िक़ दुबैला (ताऊन या पेट का फोड़ा) के ज़रिये वासिले जहन्नम हुए, दुबैला की मज़ीद तशरीह अगली रिवायत में आ रही है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ، قَالَ قُلْنَا لِعَمَّارٍ أَرَأَيْتَ قِتَالَكُمْ أَرَأْيًا رَأَيْتُمُوهُ فَإِنَّ الرَّأْىَ يُخْطِئُ وَيُصِيبُ أَوْ عَهْدًا عَهِدَهُ إِلَيْكُمْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ مَا عَهِدَ إِلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم شَيْئًا لَمْ

(7036) क़ैस बिन उ़बाद (रह.) बयान करते हैं, हमने हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) से पूछा, लड़ाई में हिस्सा लेने के बारे में बताएँ, क्या यह तुम्हारी सोच थी, जो तुमने सोची? क्योकि राय ख़ता भी हो सकती है और दुरूस्त भी, या यह तल्क़ीन थी जो तुम्हें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने की थी? तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें किसी ऐसी चीज़ की तल्क़ीन नहीं की जिसकी तल्क़ीन सब लोगों को न की हो और कहा रसूलुल्लाह(ﷺ) ने

يَعْهَدْهُ إِلَى النَّاسِ كَافَّةً . وَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ فِي أُمَّتِي " . قَالَ شُعْبَةُ وَأَحْسِبُهُ قَالَ حَدَّثَنِي حُذَيْفَةُ . وَقَالَ غُنْدَرٌ أُرَاهُ قَالَ " فِي أُمَّتِي اثْنَا عَشَرَ مُنَافِقًا لاَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلاَ يَجِدُونَ رِيحَهَا حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ثَمَانِيَةٌ مِنْهُمْ تَكْفِيكَهُمُ الدُّبَيْلَةُ سِرَاجٌ مِنَ النَّارِ يَظْهَرُ فِي أَكْتَافِهِمْ حَتَّى يَنْجُمَ مِنْ صُدُورِهِمْ " .

फ़र्माया, 'मेरी उम्मत में।' शोबा कहते हैं, मेरा ख़्याल है, हज़रत अम्मार (रज़ि.) ने कहा, मुझे हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बताया, ग़ुंदर कहते हैं, मेरा ख़्याल है आपने फ़र्माया, 'मेरी उम्मत में बारह मुनाफ़िक़ ऐसे हैं, जो जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे और न उसकी महक महसूस करेंगे, यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में दाख़िल हो जाए, उनमें से आठ के लिए दुबैला काफ़ी होगा, यानी आग का चराग़ जो उनके कँधों में ज़ाहिर होगा, यहाँ तक कि उनके सीनों में फूटेगा, यानी सीनों से निकलेगा।'

मुफ़रदातुल हदीस : यंजुम : ज़ाहिर होगा या निकलेगा।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الْكُوفِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ جُمَيْعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الطُّفَيْلِ، قَالَ كَانَ بَيْنَ رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْعَقَبَةِ وَبَيْنَ حُذَيْفَةَ بَعْضُ مَا يَكُونُ بَيْنَ النَّاسِ فَقَالَ أَنْشُدُكَ بِاللَّهِ كَمْ كَانَ أَصْحَابُ الْعَقَبَةِ قَالَ فَقَالَ لَهُ الْقَوْمُ أَخْبِرْهُ إِذْ سَأَلَكَ قَالَ كُنَّا نُخْبَرُ أَنَّهُمْ أَرْبَعَةَ عَشَرَ فَإِنْ كُنْتَ مِنْهُمْ فَقَدْ كَانَ الْقَوْمُ خَمْسَةَ عَشَرَ وَأَشْهَدُ بِاللَّهِ أَنَّ اثْنَىْ عَشَرَ مِنْهُمْ حَرْبٌ لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الأَشْهَادُ وَعَذَرَ ثَلاَثَةً قَالُوا مَا سَمِعْنَا مُنَادِيَ رَسُولِ اللَّهِ

(7037) हज़रत अबू तुफ़ैल (रज़ि.) बयान करते हैं कि जंगे तबूक की घाटी वालों में से एक का हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से झगड़ा हुआ, जैसा कि लोगों में हो ही जाता है तो उसने कहा, मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ, अहले अक़्बा कितने अश्ख़ास थे? तो लोगों ने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से कहा जब यह आपसे पूछ रहा है तो आप उसे बता दें, हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा, हमें बताया जाता था, वह चौदह थे, अगर तू भी उनके साथ था तो वह लोग पन्द्रह हो गए और मैं अल्लाह को गवाह बनाकर कहता हूँ, उनमें से बारह वह हैं जो दुनिया में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे अल्लाह और उसके रसूल से जंग करने वाले होंगे और आपने तीन की मअ़ज़िरत क़बूल

صلى الله عليه وسلم وَلاَ عَلِمْنَا بِمَا أَرَادَ الْقَوْمُ ‏.‏ وَقَدْ كَانَ فِي حَرَّةٍ فَمَشَى فَقَالَ ‏"‏ إِنَّ الْمَاءَ قَلِيلٌ فَلاَ يَسْبِقُنِي إِلَيْهِ أَحَدٌ ‏"‏ ‏.‏ فَوَجَدَ قَوْمًا قَدْ سَبَقُوهُ فَلَعَنَهُمْ يَوْمَئِذٍ ‏.‏

की, उन्होंने कहा, हमने रसूलुल्लाह(ﷺ) के मुनादी की आवाज़ नहीं सुनी थी और न हमें पता था, उन लोगों का इरादा क्या है। हुज़ूरे अकरम(ﷺ) संगरेज़ों में चल रहे थे तो आपने फ़र्माया, 'आगे थोड़ा सा पानी आने वाला है तो मुझसे पहले उस पर कोई न जाए।' तो आपने कुछ लोगों को पाया कि वह आपसे पहले पानी पर पहुँच चुके हैं तो आपने उन पर लानत भेजी।

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) ने जंगे तबूक से वापसी पर ऐलान करवाया कि फ़लाँ घाटी से रसूलुल्लाह(ﷺ) गुज़रेंगे, इसलिए उधर कोई न जाए, हज़रत हुज़ैफ़ा आपकी ऊँटनी की महार पकड़कर चल रहे थे और अ़म्मार (रज़ि.) पीछे से हाँकते थे, एक जगह पर कुछ आदमी कपड़े से सिर लपेटे हुए ऊँटों पर सवार आए और पीछे से अ़म्मार (रज़ि.) पर हल्ला बोल दिया, अ़म्मार (रज़ि.) ने मुड़कर उनके ऊँटों के मुँह पर डण्डे बरसाए, आपने देखा तो 'बस बस' कहा, जब आप घाटी से उतरकर ऊँटनी से नीचे उतरे तो अ़म्मार भी वापिस पहुँच गए, आपने पूछा, अ़म्मार! तुमने उनको पहचाना है?' उन्होंने कहा, मैंने ऊँटों को तो पहचान लिया है, लेकिन सवारों ने अपने सिर और चेहरे कपड़ों में छुपाए हुए थे। (तफ़्सील के लिए देखिए मुख़्तसर सीरते रसूल, जामिउल उ़लूमिल असरिया, जहलम पेज नम्बर 637)

उस सफ़र में वापसी पर यह वाक़िया पेश आया कि आपको बताया कि पानी कम है तो आपने ऐलान करवा दिया, मुझसे पहले कोई शख़्स चश्मा पर न जाए, लेकिन आपसे कुछ लोग पहले पहुँच गए तो आपने उन पर लानत भेजी, यह लोग मअतब बिन क़शिया, हारिस बिन यज़ीद ताई, वुदैआ बिन साबित और ज़ैद बिन मुईत थे और यह चारों मुनाफ़िक़ थे।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ مَنْ يَصْعَدُ الثَّنِيَّةَ ثَنِيَّةَ الْمُرَارِ فَإِنَّهُ يُحَطُّ عَنْهُ مَا حُطَّ عَنْ بَنِي

(7038) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया 'घाटी पर यानी मुरार की घाटी पर कौन चढ़ेगा, क्योंकि उससे गुनाह इस तरह झड़ जाएँगे, जिस तरह बनी इस्राईल से झड़ गए थे तो उस पर सबसे पहले हमारे यानी बनू ख़ज़रज के घोड़े चढ़े, फिर लोगों का ताँता

إِسْرَائِيلَ " . قَالَ فَكَانَ أَوَّلَ مَنْ صَعِدَهَا خَيْلُنَا خَيْلُ بَنِي الْخَزْرَجِ ثُمَّ تَتَامَّ النَّاسُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَكُلُّكُمْ مَغْفُورٌ لَهُ إِلاَّ صَاحِبَ الْجَمَلِ الأَحْمَرِ " . فَأَتَيْنَاهُ فَقُلْنَا لَهُ تَعَالَ يَسْتَغْفِرْ لَكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ وَاللَّهِ لأَنْ أَجِدَ ضَالَّتِي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لِي صَاحِبُكُمْ . قَالَ وَكَانَ رَجُلٌ يَنْشُدُ ضَالَّةً لَهُ .

बँध गया तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम सबको बख़्शा दिया जाएगा, सिवा लाल ऊँट वाले के।' चुनाँचे हम उसके पास आए और उसे कहा आओ! ताकि रसूलुल्लाह(ﷺ) तेरे लिए बख़्शिश तलब करें तो उसने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरे लिए मेरी गुमशुदा चीज़ का मिल जाना, उससे ज़्यादा महबूब है कि तुम्हारा साथी, मेरे लिए बख़्शिश तलब करे और वह आदमी अपनी गुमशुदा चीज़ तलाश कर रहा था।

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ يَصْعَدُ ثَنِيَّةَ الْمُرَارِ أَوِ الْمَرَارِ " . بِمِثْلِ حَدِيثِ مُعَاذٍ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ وَإِذَا هُوَ أَعْرَابِيٌّ جَاءَ يَنْشُدُ ضَالَّةً لَهُ .

(7039) हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'सनिय्या मुरार या मुरार पर कौन चढ़ेगा?' आगे ऊपर वाली रिवायत है, हाँ! यह फ़र्क़ है उसमें यह है कि वह एक जँगली था जो अपनी गुमशुदा चीज़ तलाश कर रहा था।

फ़ायदा : सनिय्यतुल मुरार वह घाटी है, जिसमें हुदैबिया के सफ़र में आपकी ऊँटनी बैठ गई थी, उस पर आपने साथियों को घाटी के ऊपर चढ़ने की तर्ग़ीब दिलाई, ताकि पता चल सके, क़ुरैश के घोड़े किधर हैं, कुछ का ख़्याल है, लाल ऊँट का मालिक जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ था लेकिन यह सही नहीं है, क्योंकि जद बिन क़ैस तो लश्कर के साथ आया था, अगरचे उसने बैअते रिज़्वान में शिर्कत नहीं की थी।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - وَهُوَ ابْنُ الْمُغِيرَةِ - عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كَانَ مِنَّا رَجُلٌ مِنْ بَنِي النَّجَّارِ قَدْ قَرَأَ الْبَقَرَةَ وَآلَ عِمْرَانَ

(7040) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं हम बनू नज्जार में से एक आदमी था, जो सूरह बक़रह् और आले इमरान पढ़ चुका था और रसूलुल्लाह(ﷺ) के लिए लिखा करता था, वह भाग गया यहाँ तक कि अहले किताब से जा मिला और

وَكَانَ يَكْتُبُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَانْطَلَقَ هَارِبًا حَتَّى لَحِقَ بِأَهْلِ الْكِتَابِ - قَالَ - فَرَفَعُوهُ قَالُوا هَذَا قَدْ كَانَ يَكْتُبُ لِمُحَمَّدٍ فَأُعْجِبُوا بِهِ فَمَا لَبِثَ أَنْ قَصَمَ اللَّهُ عُنُقَهُ فِيهِمْ فَحَفَرُوا لَهُ فَوَارَوْهُ فَأَصْبَحَتِ الأَرْضُ قَدْ نَبَذَتْهُ عَلَى وَجْهِهَا ثُمَّ عَادُوا فَحَفَرُوا لَهُ فَوَارَوْهُ فَأَصْبَحَتِ الأَرْضُ قَدْ نَبَذَتْهُ عَلَى وَجْهِهَا ثُمَّ عَادُوا فَحَفَرُوا لَهُ فَوَارَوْهُ فَأَصْبَحَتِ الأَرْضُ قَدْ نَبَذَتْهُ عَلَى وَجْهِهَا فَتَرَكُوهُ مَنْبُوذًا .

उन्होंने उसे बुलन्द मुक़ाम दिया कहने लगे ये मुहम्मद(ﷺ) के लिये लिखा करता था। चुनाँचे वह उस पर फ़रेफ़्ता हो गए, थोड़े अर्सा के बाद अल्लाह ने उनमें उसकी गर्दन तोड़ दी, (उसे हलाक कर दिया) तो उन्होंने उसके लिए गड्ढा खोदकर उसे छुपा दिया (दफ़न कर दिया) तो ज़मीन ने उसे अपनी सतह पर बाहर फेंक दिया (उसे क़बूल न किया) फिर उन्होंने उसके लिए दोबारा क़ब्र खोदी और उसमें दफ़न कर दिया, ज़मीन ने फिर उसे बाहर अपनी सतह पर फेंक दिया, फिर उन्होंने तीसरी बार उसके लिए गड्ढा खोदा और उसे दफ़न कर दिया, ज़मीन ने फिर अपने ऊपर बाहर फेंक दिया, चुनाँचे उन्होंने उसे बाहर फेंका हुआ ही छोड़ दिया।

फ़ायदा : अहले किताब ने इर्तिदाद इख़्तियार करने वाले मुनाफ़िक़ को बहुत इज़्ज़त व एहतिराम दिया, लेकिन अल्लाह तआला ने उसे दुनिया ही में सामाने इब्रत बना दिया, उसको इब्रतनाक मौत से दो चार किया, फिर उसे ज़मीन ने क़ुबूल करने से इंकार कर दिया, तीन बार गहरा गड्ढा खोदकर दफ़न किया, क्योंकि वह समझते थे, मुसलमान उसको बाहर फेंकते हैं, आख़िर उन्हें एहसास हो गया, यह तो अल्लाह की तरफ़ से सज़ा है, फिर उसे बाहर ही पड़ा रहने दिया और वह लोगों के लिए इब्रत की निशानी बना।

حَدَّثَنِي أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - يَعْنِي ابْنَ غِيَاثٍ - عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ فَلَمَّا كَانَ قُرْبَ الْمَدِينَةِ هَاجَتْ رِيحٌ شَدِيدَةٌ تَكَادُ أَنْ

(7041) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) एक सफ़र से वापिस आए तो जब मदीना के क़रीब पहुँचे तो शदीद आँधी चली कि सवार दफ़न होने के क़रीब हो गए। (ख़तरा पैदा हो गया आँधी सवार को उठा ले जाएगी) हज़रत जाबिर (रज़ि.) के ख़याल में रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'यह

تَدْفِنَ الرَّاكِبَ فَزَعَمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بُعِثَتْ هَذِهِ الرِّيحُ لِمَوْتِ مُنَافِقٍ " . فَلَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ فَإِذَا مُنَافِقٌ عَظِيمٌ مِنَ الْمُنَافِقِينَ قَدْ مَاتَ .

आँधी किसी मुनाफ़िक़ की मौत के लिए भेजी गई है।' तो जब आप मदीना पहुँचे तो मुनाफ़िक़ों में से एक बहुत बड़ा मुनाफ़िक़ मर चुका था।

حَدَّثَنِي عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو مُحَمَّدٍ النَّضْرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ، مُوسَى الْيَمَامِيُّ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، حَدَّثَنَا إِيَاسٌ، حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ، عُدْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً مَوْعُوكًا - قَالَ - فَوَضَعْتُ يَدِي عَلَيْهِ فَقُلْتُ وَاللَّهِ مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ رَجُلاً أَشَدَّ حَرًّا . فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَشَدَّ حَرًّا مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ هَذَيْنِكَ الرَّجُلَيْنِ الرَّاكِبَيْنِ الْمُقَفِّيَيْنِ " . لِرَجُلَيْنِ حِينَئِذٍ مِنْ أَصْحَابِهِ .

(7042) इयास (रह.) अपने वालिद (सलमा बिन अक्वा रज़ि.) से बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ एक बुख़ार में मुब्तला शख़्स की एयादत के लिए गए तो मैंने उस पर अपना हाथ रखा, चुनाँचे मैंने कहा अल्लाह की क़सम! मैंने आज तक इस क़द्र गर्म बदन आदमी नहीं देखा तो नबी अकरम(ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या मैं तुम्हें क़ियामत के दिन इससे भी गर्म बदन आदमी के बारे में न बताऊँ? यह दो सवार आदमी जो चेहरे फेरे हुए हैं।' यह दो आदमी उस वक़्त आपके साथियों में से थे।

फ़ायदा : मुनाफ़िक़ों को आपके साथियों में से इसलिए शुमार किया जाता है, क्योंकि वह कलिमा पढ़ने वाले थे और आप पर ईमान लाने का दावा करते थे और सहाबा किराम को उनके बातिन (असलियत) का पता न था।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالاَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِي الثَّقَفِيَّ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ،

(7043) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुनाफ़िक़ की मिसाल उस बकरी की तरह है जो बकरियों में हैरान व परेशान घूमती फिरती है, कभी इसकी तरफ़ भागती है, कभी उसकी तरफ़ दौड़ती है।'

عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَثَلُ الْمُنَافِقِ كَمَثَلِ الشَّاةِ الْعَائِرَةِ بَيْنَ الْغَنَمَيْنِ تَعِيرُ إِلَى هَذِهِ مَرَّةً وَإِلَى هَذِهِ مَرَّةً " .

मुफ़रदातुल ह़दीस : अल्आइरा : ह़ैरान व परेशान होकर इधर उधर घूमने वाली जिसको पता ही नहीं, मेरा रेवड़ कौनसा है, मुझे किसके साथ जाना है, यही ह़ालत मुनाफ़िक़ की है, न वह काफ़िरों के साथ खड़ा होता है और न ही मुसलमानों का साथ इख़्तियार करता है, तईरु : आती जाती है, घूमती फिरती है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيَّ - عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " تَكِرُّ فِي هَذِهِ مَرَّةً وَفِي هَذِهِ مَرَّةً " .

(7044) ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) इस फ़र्क़ के साथ ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'वह कभी उस रेवड़ की त़रफ़ मुड़ती है और कभी इसकी त़रफ़।

तख़रीज 7044 : सुनन नसाई : 5052.

मुफ़रदातुल ह़दीस : तकिर्रु : मुड़ती है, घूमती है।

(1) بَاب : صِفَةِ الْقِيَامَةِ وَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ

बाब 1 : क़ियामत, जन्नत और जहन्नम के अह़वाल (हालात)

حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنِي الْمُغِيرَةُ، -يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّهُ لَيَأْتِي الرَّجُلُ الْعَظِيمُ السَّمِينُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لاَ يَزِنُ عِنْدَ اللَّهِ جَنَاحَ بَعُوضَةٍ اقْرَءُوا { فَلاَ نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا} " .

(7045) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'वाक़िया यह है कियामत के दिन एक बड़ा मोटा ताज़ा आदमी आएगा, जिसका अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी वज़न नहीं होगा, यह आयत पढ़ लो, 'हम क़ियामत के दिन उन्हें कोई वज़न नहीं देंगे, यानी बुरे अ़मलों की वजह से उसकी कोई क़द्रो मंज़िलत नहीं होगी।' (सूरह कहफ़ : 105)

स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4729.

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا فُضَيْلٌ، - يَعْنِي ابْنَ عِيَاضٍ - عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ السَّلْمَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ جَاءَ حَبْرٌ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ أَوْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى إِصْبَعٍ وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالْجِبَالَ وَالشَّجَرَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالْمَاءَ وَالثَّرَى عَلَى إِصْبَعٍ وَسَائِرَ الْخَلْقِ عَلَى إِصْبَعٍ ثُمَّ يَهُزُّهُنَّ فَيَقُولُ أَنَا الْمَلِكُ أَنَا الْمَلِكُ . فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تَعَجُّبًا مِمَّا قَالَ الْحَبْرُ تَصْدِيقًا لَهُ ثُمَّ قَرَأَ ‏{‏ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ‏}‏

(7046) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बयान करते हैं, एक यहूदी आ़लिम नबी अकरम(ﷺ) के पास आया तो कहा ऐ मुहम्मद(ﷺ)! या ऐ अबुल क़ासिम! अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन आसमानों को एक उँगली पर रखेगा और ज़मीनों को एक उँगली पर उठाएगा और पहाड़ों और दरख़्तों को एक उँगली से पकड़ेगा, पानी और नमुदार ज़मीन को एक उँगली पर उठाएगा और बाक़ी तमाम मख़्लूक़ को एक उँगली पर उठाएगा, फिर उनको हरकत देगा, हिलाएगा और फ़र्माएगा, मैं ही हक़ीक़ी बादशाह हूँ, मैं ही असल बादशाह हूँ,। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) यहूदी आ़लिम की बात पर तअ़ज्जुब करते हुए और उसकी तस्दीक़ करते हुए हँस पड़े, फिर यह आयत पढ़ी 'उन लोगों ने अल्लाह की क़द्र नहीं की, जैसाकि उसकी क़द्रो मंज़िलत का हक़ है, क़ियामत के दिन सारी ज़मीनें उसकी मुट्ठी में होंगी और आसमान उसके दाएँ हाथ में लिपटे होंगे, वह पाक और बालातर है, उनसे जिनको यह लोग शरीक ठहराते हैं।' (सूरह ज़ुमर आयत 67)

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4811; किताबत्तौहीद : 7414; और बाब की हदीस : 7513; सुनन तिर्मिज़ी : 3238; हदीस : 3239.

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला इस कायनात का ख़ालिक़ है और उसके सिवा हर चीज़ मख़्लूक़ है, इसलिए उसके हाथ, उँगली और उसकी मुट्ठी की हक़ीक़त व माहियत को जानना मख़्लूक़ के बस में नहीं है, जब उसका दीदार होगा तो फिर उनके बारे में मामूली शुद बुद हासिल हो सकेगी , हदीस का

असल मक़्सद उसकी क़ुदरत व ताक़त और इक़्तिदार व ग़ल्बा का बयान करना है कि हर चीज़ उसके क़ब्ज़ा में है और हैच है, इस हक़ीक़त को समझने के बावजूद लोग उसकी क़द्रो मंज़िलत को मल्हूज़ नहीं रखते और बेधड़क उसकी नाफ़र्मानी और सरकशी इख़्तियार करते हैं।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، كِلاَهُمَا عَنْ جَرِيرٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَ جَاءَ حَبْرٌ مِنَ الْيَهُودِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ فُضَيْلٍ وَلَمْ يَذْكُرْ ثُمَّ يَهُزُّهُنَّ . وَقَالَ فَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ تَعَجُّبًا لِمَا قَالَ تَصْدِيقًا لَهُ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " { وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ} " . وَتَلاَ الآيَةَ .

(7047) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास एक यहूदी आया, लेकिन उसमें उनके बुलाने का ज़िक्र नहीं है और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा कि आप इस क़द्र हँसे कि आपकी कुचलियाँ ज़ाहिर हो गईं, आपने उसके क़ौल पर ताज्जुब किया और उसकी तस्दीक़ की, फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'इन्होंने अल्लाह की उस तरह क़द्र, तज़ीम नहीं की, जैसाकि उसकी क़द्र करने का हक़ है।' यह आयत पढ़ी।

इसकी तख़रीज हदीस 6977 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، قَالَ سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ، يَقُولُ سَمِعْتُ عَلْقَمَةَ، يَقُولُ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ جَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالشَّجَرَ وَالثَّرَى عَلَى إِصْبَعٍ وَالْخَلاَئِقَ عَلَى إِصْبَعٍ ثُمَّ يَقُولُ أَنَا الْمَلِكُ أَنَا الْمَلِكُ . قَالَ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم ضَحِكَ

(7048) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि अहले किताब में से एक शख़्स रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया और कहा, ऐ अबुल क़ासिम(ﷺ)! अल्लाह तआला तमाम आसमानों को एक उँगली पर और ज़मीनों को एक उँगली पर, दरख़्तों और गीली मिट्टी को एक उँगली पर और तमाम मख़्लूक़ को एक उँगली पर उठाएगा, फिर फ़र्माएगा मैं ही बादशाह हूँ, मैं ही बादशाह हूँ, चुनाँचे मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा, आप हँस पड़े यहाँ तक कि आपकी कुचलियाँ ज़ाहिर हो गईं, फिर आपने पढ़ा, उन लोगों ने अल्लाह

حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ ثُمَّ قَرَأَ { وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ{

की इस तरह क़द्रो तअ़ज़ीम नहीं की जिस तरह करने का हक़ था।

तख़रीज 7048 : सहीह बुख़ारी, किताबुत तौहीद : 7415; और हदीस : 7451.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي، شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِهِمْ جَمِيعًا وَالشَّجَرَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالثَّرَى عَلَى إِصْبَعٍ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِ جَرِيرٍ وَالْخَلاَئِقَ عَلَى إِصْبَعٍ . وَلَكِنْ فِي حَدِيثِهِ وَالْجِبَالَ عَلَى إِصْبَعٍ . وَزَادَ فِي حَدِيثِ جَرِيرٍ تَصْدِيقًا لَهُ تَعَجُّبًا لِمَا قَالَ .

(7049) इमाम साहब अपने कई उस्तादों से यह रिवायत बयान करते हैं, उन सबकी रिवायत में है, दरख़्तों को एक उँगली पर और गीली मिट्टी को एक उँगली पर, जरीर की हदीस में यह नहीं है, तमाम मख़्लूक़ात को एक उँगली पर लेकिन उसकी हदीस में है और पहाड़ों को एक उँगली पर और जरीर की हदीस मे यह इज़ाफ़ा है, उसने जो कुछ कहा, उसकी तस्दीक़ और उस पर तअज्जुब करते हुए।

इसकी तख़रीज हदीस 6979 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، كَانَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَقْبِضُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى الأَرْضَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَطْوِي السَّمَاءَ بِيَمِينِهِ ثُمَّ يَقُولُ أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ " .

(7050) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत के दिन अल्लाह तबारक व तआ़ला ज़मीन को मुट्ठी में लेगा और आसमानों को अपने दाएँ हाथ में लपेट लेगा, फिर कहेगा, मैं हूँ बादशाह! कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह?'

तख़रीज 7050 : सहीह बुख़ारी, किताबुर रिक़ाक़ : 6519; किताबुत्तौहीद : 7382; इब्ने माजा : 192.

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ حَمْزَةَ، عَنْ سَالِمِ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَطْوِي اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ السَّمَوَاتِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُمَّ يَأْخُذُهُنَّ بِيَدِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ يَقُولُ أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ الْجَبَّارُونَ أَيْنَ الْمُتَكَبِّرُونَ ثُمَّ يَطْوِي الأَرَضِينَ بِشِمَالِهِ ثُمَّ يَقُولُ أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ الْجَبَّارُونَ أَيْنَ الْمُتَكَبِّرُونَ " .

(7051) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अ़ज़्ज़ व जल्ल क़ियामत के दिन आसमानों को लपेट लेगा, फिर उन्हें अपने दाएँ हाथ में पकड़ेगा, फिर कहेगा, मैं हूँ बादशाह! कहाँ हैं जबर करने वाले? कहाँ है तकब्बुर करने वाले? फिर ज़मीनों को अपने बाएँ हाथ में लपेट लेगा, फिर कहेगा मैं हूँ बादशाह! कहाँ है जबर करने वाले? कहाँ हैं तकब्बुर करने वाले?'

तख़रीज 7051 : सहीह बुख़ारी, किताबुत् तौहीद : 7413; अबूदाऊद : 4732.

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ مِقْسَمٍ، أَنَّهُ نَظَرَ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ كَيْفَ يَحْكِي رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَأْخُذُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ سَمَوَاتِهِ وَأَرَضِيهِ بِيَدَيْهِ فَيَقُولُ أَنَا اللَّهُ - وَيَقْبِضُ أَصَابِعَهُ وَيَبْسُطُهَا - أَنَا الْمَلِكُ " حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى الْمِنْبَرِ يَتَحَرَّكُ مِنْ أَسْفَلِ شَىْءٍ مِنْهُ حَتَّى إِنِّي لأَقُولُ أَسَاقِطٌ هُوَ بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(7052) उ़बैदुल्लाह बिन मिक़्सम (रह.) से रिवायत है कि उसने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की त़रफ़ देखा वह कैसे रसूलुल्लाह(ﷺ) से नक़्ल करते हैं, आपने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल अपने आसमानों और अपनी ज़मीनों को अपने दोनों हाथों में पकड़ेगा और कहेगा, मैं हूँ अल्लाह! और अपनी उँगलियों को समेटेगा और फैलाएगा, मैं हूँ बादशाह।' यहाँ तक कि मैंने मिम्बर को देखा, वह नीचे तक से ह़रकत कर रहा था यहाँ तक कि मैं दिल में कह रहा था, क्या वह रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ गिर जाएगा?'

इब्ने माजा : 198; किताबुज़्ज़ुहद : 4275.

फ़ायदा : उँगलियों के क़ब्ज़ व बसत़ का तअ़ल्लुक़ अगर अल्लाह तआ़ला से है तो फिर उसकी कैफ़ियत व ह़क़ीक़त को जानना मुम्किन नहीं है और अगर उसका तअ़ल्लुक़ नबी अकरम(ﷺ) से है तो

फिर आपने आसमानों और ज़मीनों के फैलाव और समेटने की तरफ़ इशारा किया कि यह इस तरह समेट लिए जाएँगे, अल्लाह के क़ब्ज़ व बसत की कैफ़ियत बयान करना मक़सद नहीं है, क्योंकि उसकी किसी सिफ़त को तश्बीह देना सही नहीं है, वह तो लै–स कमिस्लिही शैउन है। (उस जैसा कोई नहीं)

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ عُبَيْدِ، اللَّهِ بْنِ مِقْسَمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُولُ " يَأْخُذُ الْجَبَّارُ عَزَّ وَجَلَّ سَمَوَاتِهِ وَأَرَضِيهِ بِيَدَيْهِ " . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ يَعْقُوبَ

(7053) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को मिम्बर पर देखा और आप फ़र्मा रहे थे, 'जब्बार अज़्ज़ व जल्ल अपने आसमानों और अपनी ज़मीनों को अपने दोनों हाथों में पकड़ लेगा।' फिर ऊपर वाली हदीस बयान की।

इसकी तख़रीज हदीस 6983 में गुज़र चुकी है।

(2) بَابُ : اِبْتِدَاءِ الْخَلْقِ آدَم عَلَيْهِ السَّلَامِ

बाब 2 : तख़्लीक़ का आग़ाज़ और आदम (अ.) की पैदाइश

حَدَّثَنِي سُرَيْجُ بْنُ يُونُسَ، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالاَ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ، عَنْ أَيُّوبَ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَافِعٍ، مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِيَدِي فَقَالَ " خَلَقَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ التُّرْبَةَ يَوْمَ السَّبْتِ وَخَلَقَ فِيهَا الْجِبَالَ يَوْمَ الأَحَدِ وَخَلَقَ الشَّجَرَ يَوْمَ الاِثْنَيْنِ وَخَلَقَ الْمَكْرُوهَ يَوْمَ الثُّلاَثَاءِ وَخَلَقَ النُّورَ يَوْمَ الأَرْبِعَاءِ وَبَثَّ فِيهَا الدَّوَابَّ يَوْمَ الْخَمِيسِ وَخَلَقَ آدَمَ

(7054) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़र्माया, 'अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने मिट्टी (ख़ाक, ज़मीन) को हफ़्ते के दिन पैदा किया और उसमें पहाड़ इतवार के दिन पैदा किये और दरख़्त सोमवार को पैदा किये और नापसंदीदा चीज़ों को मंगल के दिन पैदा किया और नूर (रोशनी) को बुध के दिन पैदा किया, और ज़मीन में चौपाये जुमेरात के दिन फैलाए और आदम (अ.) को तमाम मख़्लूक़ात के बाद, जुम्अे के दिन अस्र के बाद, जुम्आ की घड़ियों में से आख़िरी घड़ी में, अस्र से शाम तक पैदा किया।

عَلَيْهِ السَّلاَمُ بَعْدَ الْعَصْرِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فِي آخِرِ الْخَلْقِ وَفِي آخِرِ سَاعَةٍ مِنْ سَاعَاتِ الْجُمُعَةِ فِيمَا بَيْنَ الْعَصْرِ إِلَى اللَّيْلِ " .

फ़ायदा : कुछ हदीसों से मालूम होता है कि मंगल के दिन तक्लीफ़देह और नापसंदीदा चीज़ों के साथ, मज़बूत व मुस्तहकम चीज़ों को, जो ज़िन्दगी के लिए क़ियाम और तदबीर का बाइस हैं, जैसे लोहा और मअ्दनियात (कानों) को भी पैदा किया और बुध के दिन नूर के साथ नून (मछली) और समुन्द्रों को भी पैदा किया और हज़रत आदम (अ.) की तख़्लीक़, कायनात की तख़्लीक़ के फ़ौरन बाद नहीं हुई, बल्कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश के बाद किसी और जुम्अ़े के दिन हुई है, इसलिए यह हदीस उन क़ुरआनी आयात के मुनाफ़ी (ख़िलाफ़) नहीं है, जिनमें यह बयान किया गया है कि आसमान व ज़मीन और इन दोनों के बीच की तख़्लीक़ छः दिन में हुई है। क़ुरआन मजीद से साबित होता है कि ज़मीन और ज़मीनी चीज़ें चार दिन में पैदा की गई हैं और फिर दो दिन में आसमान और उसकी चीज़ें पैदा की गई हैं। (सूरह हामीम सज्दा : 1, 2) और इस आयत से मालूम होता है यह दोनों ज़मीनी चीज़ें भी पैदा की गई हैं।

बाब 3 : दोबारा उठना और क़ियामत के दिन ज़मीन की हालत का बयान

(3) بَابُ : فِي الْبَعْثِ وَالنُّشُورِ، وَصِفَةِ الأَرْضِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

(7055) हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत के दिन लोग सफ़ेद ज़मीन पर जो सुर्ख़ी माइल होगी, जैसाकि मेदे की रोटी होती है, जमा किये जाएँगे और उस ज़मीन में किसी शख़्स के लिए कोई निशान नहीं होगा, यानी कोई घर, इमारत और निशान न होगा, साफ़ चटियल मैदान होगी।

तख़रीज 7055 : इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي، كَثِيرٍ حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمِ بْنُ دِينَارٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى أَرْضٍ بَيْضَاءَ عَفْرَاءَ كَقُرْصَةِ النَّقِيِّ لَيْسَ فِيهَا عَلَمٌ لأَحَدٍ " .

फ़ायदा : इस ह़दीस से मालूम होता है, क़ियामत के दिन ज़मीन मेदे की पकी हुई सुर्ख़ी माइल गोल रोटी की त़रह़ होगी, जिस पर किसी क़िस्म का घर, इमारत और निशाने राह नहीं होगा, बिलकुल स़ाफ़ चटियल मैदान होगी, जिस पर किसी क़िस्म का गुनाह और मअ़सियत का इर्तिकाब नहीं किया गया होगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ دَاوُدَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَنْ قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ } يَوْمَ تُبَدَّلُ الأَرْضُ غَيْرَ الأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ{ فَأَيْنَ يَكُونُ النَّاسُ يَوْمَئِذٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ " عَلَى الصِّرَاطِ " .

(7056) ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के इस फ़र्मान के बारे में सवाल किया 'जिस दिन ज़मीन को दूसरी ज़मीन से बदल दिया जाएगा और आसमानों को भी।' तो उस वक़्त लोग कहाँ होंगे, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)? आप(ﷺ) ने फ़र्माया, पुल स़िरात पर।'

जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3121; इब्ने माजा : 4279.

फ़ायदा : क़ियामत और आख़िरत के ह़ालात की सही ह़क़ीक़त और कैफ़ियत को उनके वुक़ूअ़ पज़ीर होने से पहले जानना मुम्किन नहीं है, इसलिए उन पर इज्माली त़ौर पर ईमान लाना ही ज़रूरी है।

(4) بَابُ : نُزُلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ

बाब 4 : अहले जन्नत की मेहमान नवाज़ी, इब्तिदाई ज़ियाफ़त

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تَكُونُ الأَرْضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ خُبْزَةً وَاحِدَةً يَتَكَفَّؤُهَا الْجَبَّارُ بِيَدِهِ كَمَا يَكْفَأُ أَحَدُكُمْ

(7057) ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत के दिन ज़मीन एक रोटी होगी, जब्बार (कन्टोलर) अहले जन्नत की मेहमानी के लिए, अपने हाथ में इस तरह उलट पलट करेगा, जिस त़रह़ तुममें से कोई शख़्स सफ़र में अपनी रोटी उलटता पलटता है।' अबू सईद (रज़ि.) बयान करते हैं, इतने में एक यहूदी आदमी आ गया और कहने लगा, ऐ अबुल

خُبْزَتَهُ فِي السَّفَرِ نُزُلاً لأَهْلِ الْجَنَّةِ " . قَالَ فَأَتَى رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ بَارَكَ الرَّحْمَنُ عَلَيْكَ أَبَا الْقَاسِمِ أَلاَ أُخْبِرُكَ بِنُزُلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ " بَلَى " . قَالَ تَكُونُ الأَرْضُ خُبْزَةً وَاحِدَةً - كَمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم -قَالَ فَنَظَرَ إِلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ قَالَ أَلاَ أُخْبِرُكَ بِإِدَامِهِمْ قَالَ " بَلَى " . قَالَ إِدَامُهُمْ بَالاَمُ وَنُونٌ . قَالُوا وَمَا هَذَا قَالَ ثَوْرٌ وَنُونٌ يَأْكُلُ مِنْ زَائِدَةِ كَبِدِهِمَا سَبْعُونَ أَلْفًا .

क़ासिम! रहमान आप पर बरकतें नाज़िल करे, क्या मैं आपको क़ियामत के दिन अहले जन्नत की इब्तिदाई ज़ियाफ़त के बारे में न बताऊँ? आपने फ़र्माया, 'क्यूँ नहीं।' उसने कहा, ज़मीन एक रोटी होगी (जैसाकि रसूलुल्लाह(ﷺ) बता चुके थे) उस पर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमारी तरफ़ देखा, फिर हँस पड़े, यहाँ तक कि आपकी कुचलियाँ ज़ाहिर हो गईं, उसने कहा, क्या मैं आपको उनके सालन की ख़बर न दूँ? आपने फ़र्माया, 'नहीं! उसने कहा, उनका सालन बालाम और नून होगें। सहाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा, यह क्या हैं? उसने कहा, बैल और मछली। उनके जिगर के बढ़े हुए टुकड़े से सत्तर हज़ार अफ़राद खाएँगे।

तख़रीज 7057 : सहीह बुख़ारी : 6520.

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि क़ियामत के दिन जन्नत में जाने वालों के लिए ज़मीन रोटी की तरह बन जाएगी और वह उसको बैल और मछली के गोश्त के साथ खाएँगे, ताकि मैदाने महशर में वह भूख से महफ़ूज़ हो जाएँ और अल्लाह तआला उसको अपने हाथ से उलट पलट कर रोटी की तरह फैला देगा, ताकि उसको खाना आसान हो जाए।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لَوْ تَابَعَنِي عَشَرَةٌ مِنَ الْيَهُودِ لَمْ يَبْقَ عَلَى ظَهْرِهَا يَهُودِيٌّ إِلاَّ أَسْلَمَ " .

(7058) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर मुझ पर यहूद के दस (बड़े उलमा) ईमान ले आएँ तो मदीना के तमाम यहूदी मुसलमान हो जाएँ।'

यहूद में बहुत से रुसुल ईमान ले आएँ, इससे मुराद यहूद के दस रईस और लीडर हैं जिनकी यहूद पैरवी करते थे, यहूदी अवाम में से तो बहुत से मुसलमान हो गए थे जैसाकि बनू नज़ीर

का सरदार अबू यासिर बिन अख़्तब, हुई बिन अख़्तब, कअ़ब बिन अशरफ़ और राफ़ेअ़ बिन अबी हुक़ैक़ थे उनमें से कोई भी ईमान नहीं लाया था इसी त़रह़ बनू क़ैनुक़ाअ़ और बनू क़ुरैज़ा के सरदार भी ईमान नहीं लाए।
तख़रीज 7058 : सहीह बुख़ारी : 3941.

बाब 5 : यहूदियों का नबी अकरम(ﷺ) से रूह़ के बारे में सवाल करना और अल्लाह का फ़र्मान 'वह आपसे रूह़ के बारे में सवाल करते हैं।'

(5) بَابُ : سُؤَالِ الْيَهُودِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم عَنِ الرُّوحِ، وَقَوْلِهِ تَعَالَى: (يَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ) الْآيَةَ

حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ بَيْنَمَا أَنَا أَمْشِي، مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي حَرْثٍ وَهُوَ مُتَّكِئٌ عَلَى عَسِيبٍ إِذْ مَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ فَقَالُوا مَا رَابَكُمْ إِلَيْهِ لاَ يَسْتَقْبِلُكُمْ بِشَىْءٍ تَكْرَهُونَهُ . فَقَالُوا سَلُوهُ فَقَامَ إِلَيْهِ بَعْضُهُمْ فَسَأَلَهُ عَنِ الرُّوحِ - قَالَ - فَأَسْكَتَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ شَيْئًا فَعَلِمْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ - قَالَ - فَقُمْتُ

(7059) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (बिन मसऊ़द) (रज़ि.) बयान करते हैं जबकि मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ एक खेत में चल रहा था और आपने खजूर की छड़ी का सहारा लिया हुआ था तो आप यहूदियों के एक गिरोह के पास से गुज़रे तो उन्होंने एक दूसरे से कहा, उनसे रूह़ के बारे में सवाल करो, दूसरों ने कहा, तुम्हें उनसे यह सवाल करने की क्या ज़रूरत है? वह तुम्हें ऐसा जवाब न दे दे, जो तुम्हें नापसंद हो, दूसरों ने कहा, इनसे सवाल करो तो उनमें से कुछ ने आपके पास आकर आपसे रूह़ के बारे में सवाल किया, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) चुप रहे और उसे कोई जवाब न दिया तो मैं जान गया कि आपकी त़रफ़ वह़्य नाज़िल की जा रही है तो अपनी जगह से

مَكَانِي فَلَمَّا نَزَلَ الْوَحْيُ قَالَ ‏{‏ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً‏}‏

उठ खड़ा हुआ, चुनाँचे जब वह्य उतर चुकी, आपने फ़र्माया, 'वह आपसे रूह के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए, रूह मेरे रब के अम्र से है और तुम बहुत ही कम इल्म दिये गए हो।' (सूरह इस्रा : 85)

तख़रीज 7059 : सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म : 125; किताबुत्तफ़्सीर : 4721; किताबुल एअ तिसाम : 7297; किताबुत्तौहीद : 7456; हदीस : 7462; जामेअ तिर्मिज़ी : 3141.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) मा राबकुम इलैहि : तुमको इस सवाल पर किस शक व शुब्हा ने आमादा किया। (2) ला यस्तक़्बिलुकुम बि शैइन : तुम्हें वह कोई ऐसा जवाब न दे दें, जो तुम्हें नापसंद हो, जिससे उसकी नबुव्वत साबित होती है।

फ़ायदा : जिस रूह के बारे में यहूद ने क़ुरैश के उक्साने पर सवाल किया था, उससे क्या मुराद है, उसके बारे में इख़्तिलाफ़ है, कुछ के नज़दीक उससे मुराद रूहे हयात है, जिससे इन्स व जिन्न जिन्दा हैं , कुछ के नज़दीक, जिब्रील है और कुछ के नज़दीक ईसा (अ.) और कुछ के नज़दीक मुराद वह्य है जिससे क़ल्ब व रूह को ज़िदगी हासिल होती है और (कज़ालिका औहैना इलैका रूहम् मिन अम्रिना) से उस आख़िरी क़ौल की ताईद होती है और वह्य की हक़ीक़त वह जान सकता है जिस पर उसका नुज़ूल होता है, दूसरों के लिए उसका समझना मुम्किन नहीं है। इस हदीस की कुछ रिवायात से मालूम होता है यह सवाल बराहे रास्त यहूद ने मदीना मुनव्वरा में हिज्रत के बाद किया था जैसाकि सराहतन आ रहा है फ़ी हर्सिल मदीना लेकिन यह आयत सूरह बनी इस्राईल की है जिससे मालूम हुआ यह सवाल मुश्रिकीने मक्का ने किया था तो इस हदीस से मालूम होता है यहूदियों ने मक्का के क़ुरैशियों को बताया कि वह यह सवाल करें फिर हिज्रत के बाद बराहे रास्त सवाल किया तो फिर नुज़ूले वह्य का मआनी होगा आपके तवज्जह पहले नाज़िल शुदा आयत की तरफ़ मब्ज़ूल की गई है कि किसी मजीद जवाब की ज़रूरत नहीं है इतना जवाब ही काफ़ी है इसलिए आयत दोबारा उतरी कहने की ज़रूरत नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ

(7060) इमाम साहब अपने चार उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी रिवायत बयान करते हैं, उसमें अब्दुल्लाह (रज़ि.)

إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِي حَرْثٍ بِالْمَدِينَةِ . بِنَحْوِ حَدِيثِ حَفْصٍ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ وَكِيعٍ وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً . وَفِي حَدِيثِ عِيسَى بْنِ يُونُسَ وَمَا أُوتُوا . مِنْ رِوَايَةِ ابْنِ خَشْرَمٍ.

बयान करते हैं, मैं नबी अकरम(ﷺ) के साथ मदीना की खेत में चल रहा था। वकीअ की रिवायत में है, वमा उतीतुम मिनल इल्म है और इब्ने खसरम की रिवायत में वमा ऊतू : उनको नहीं दिया गया।

तख़रीज 7060 : इसकी तख़रीज हदीस 6990 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ إِدْرِيسَ، يَقُولُ سَمِعْتُ الأَعْمَشَ، يَرْوِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فِي نَخْلٍ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِهِمْ عَنِ الأَعْمَشِ وَقَالَ فِي رِوَايَتِهِ وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً .

(7061) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) नख़्लिस्तान में खजूर की छड़ी का सहारा लिए हुए थे, आगे ऊपर वाली रिवायत है और उस रिवायत में है (वमा उतीतुम मिनल इल्मि इल्ला क़लीला) तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है।

तख़रीज 7061 : इसकी तख़रीज हदीस 9571 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ الأَشَجُّ، - وَاللَّفْظُ لِعَبْدِ اللَّهِ - قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ خَبَّابٍ، قَالَ كَانَ لِي عَلَى الْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ دَيْنٌ فَأَتَيْتُهُ أَتَقَاضَاهُ فَقَالَ لِي لَنْ أَقْضِيَكَ حَتَّى تَكْفُرَ

(7062) हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) बयान करते हैं, मेरा आस़ बिन वाइल के ज़िम्मे क़र्ज़ था, मैं उसके पास उसका मुतालबा करने के लिए गया तो उसने मुझे कहा, मैं उस वक़्त तक हर्गिज़ तेरा क़र्ज़ अदा नहीं करूँगा जब तक तुम मुहम्मद(ﷺ) का इंकार न करो तो मैंने उसे कहा, मैं हर्गिज़ मुहम्मद(ﷺ) का इंकार नहीं करूँगा, यहाँ तक कि तू मर जाए और फिर

بِمُحَمَّدٍ - قَالَ -فَقُلْتُ لَهُ إِنِّي لَنْ أَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ حَتَّى تَمُوتَ ثُمَّ تُبْعَثَ . قَالَ وَإِنِّي لَمَبْعُوثٌ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ فَسَوْفَ أَقْضِيكَ إِذَا رَجَعْتُ إِلَى مَالٍ وَوَلَدٍ . قَالَ وَكِيعٌ كَذَا قَالَ الأَعْمَشُ قَالَ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ { أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لأُوتَيَنَّ مَالاً وَوَلَدًا{ إِلَى قَوْلِهِ } وَيَأْتِينَا فَرْدًا{

दोबारा उठाया जाए। उसने कहा, क्या मुझे मौत के बाद उठाया जाएगा? तो मैं उस वक़्त तेरा क़र्ज़ चुका दूँगा, जब मैं माल और औलाद दिया जाऊँगा तो इस पर यह आयत नाज़िल हुई, 'क्या आपने उसके बारे में जाना, जिसने हमारी आयात का इंकार किया और कहता है, मुझे माल और औलाद से नवाज़ा जाएगा, क्या वह ग़ैब से आगाह हो गया है, या उसने रहमान से कोई अहद कर लिया है, हर्गिज़ नहीं! जो कुछ वह कहता है, हम उसको लिख लेंगे और उसका अज़ाब बढ़ा देंगे और जिसकी यह बात करता है, उसके वारिस तो हम होंगे और यह अकेला हमारे पास आएगा।' (मरियम आयत 77 से 80)

सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ : 2091; किताबुल इजारा : 2275; किताबुत्तफ़्सीर : 4732, 4733, 4734, 4735; जामेअ तिर्मिज़ी : 3162.

फ़ायदा : हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) ने आस़ बिन वाइल को जवाब दिया, मैं उस वक्त तक मुहम्मद(ﷺ) का इंकार नहीं करूँगा जब तक तू दोबारा ज़िन्दा न हो और ज़ाहिर है दोबारा ज़िन्दगी क़ियामत को मिलेगी और क़ियामत के बाद ईमान और कुफ़्र का मौक़ा और महल ख़त्म हो चुका होगा और उनके नताइज और अंजाम का ज़ुहूर होगा, इसलिए यह एतिराज़ पैदा नहीं होता कि हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कुफ़्र को दोबारा उठने पर मुअल्लक़ किया है और आस़ ने मज़ाक़ व इस्तिहज़ा करते हुए कहा, (क्योंकि दोबारा उठने पर ईमान नहीं रखता) मुझे उसी वक़्त माल और औलाद मिलेगा तो मैं तेरा क़र्ज़ अदा कर दूँगा।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا

(7063) इमाम स़ाहब अपने चार उस्तादों की सनदों से यही रिवायत बयान करते हैं, जरीर (रह.) की हदीस में है, मैं जाहिलियत के दौर में लौहार था तो मैंने आस़ बिन वाइल

ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَ حَدِيثِ وَكِيعٍ وَفِي حَدِيثِ جَرِيرٍ قَالَ كُنْتُ قَيْنًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَعَمِلْتُ لِلْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ عَمَلاً فَأَتَيْتُهُ أَتَقَاضَاهُ

के लिए काम किया (तलवार बनाकर दी) तो मैं उसकी मज़दूरी के माँगने के लिए उसके पास आया।

इसकी तख़रीज हदीस 6993 में गुज़र चुकी है।

(6) بَابُ : فِي قَوْلِهِ تَعَالَى (وَمَاكَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنتَ فِيهِمْ)

बाब 6 : अल्लाह का फ़र्मान है, 'अल्लाह तआला इन्हें आपकी इनमें मौजूदगी की हालत में अ़ज़ाब देना नहीं चाहता।'

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ الزِّيَادِيِّ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ قَالَ أَبُو جَهْلٍ اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ . فَنَزَلَتْ } وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ * وَمَا لَهُمْ أَلاَّ يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ{ إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

(7064) ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, अबू जहल ने दुआ की ऐ अल्लाह! अगर यही (क़ुरआन) ह़क़ है, जो तेरी त़रफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश बरसा दे, या हमें किसी अलमनाक अ़ज़ाब से दो चार करदे तो यह आयत उतरी, 'अल्लाह ऐसा नहीं है कि आपकी मौजूदगी में इन पर अ़ज़ाब भेजे और अल्लाह इनको अ़ज़ाब देने वाला नहीं है, जबकि वह इस्तिग़्फ़ार कर रहे हैं।' और उन्हें क्या तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल है कि अल्लाह इनको अ़ज़ाब न दे, ह़ालाँकि वह मस्जिदे ह़राम से रोक रहे हैं, जबकि वह ह़क़ीक़तन उसके मुतवल्ली नहीं हैं, उसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तक़ी (ह़ुदूद के पाबन्द) ही हो सकते हैं, लेकिन उनमें से अक्सर इस ह़क़ीक़त को नहीं जानते।' (अन्फ़ाल आयत 33, 34)

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4648, 4649.

फ़ायदा : हुज़ूरे अकरम(ﷺ) की हिज्रत से पहले आपका मक्का में क़ियाम, अहले मक्का के लिए अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहने का बाइस था और हिज्रत के बाद कमज़ोर मुसलमानों का पीछे रह जाना और इस्तिग़फ़ार करना हिफ़ाज़त का सबब था, जब वह भी हिज्रत कर गए तो फिर उनसे मक्का छीन लिया गया, जो उनके लिए अ़ज़ाब था।

बाब 7 : अल्लाह का फ़र्मान है, 'इंसान अपने आपको मुस्तग़नी (खुशहाल) देखकर सरकश हो जाता है।'

(7) بَابُ : قَوْلِهِ (إِنَّ الإِنْسَانَ لَيَطْغَى، أَنَّ رَآهُ اسْتَغْنَى)

(7065) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, अबू जहल ने कहा, क्या मुहम्मद(ﷺ) तुम्हारे सामने अपना चेहरा ख़ाक आलूद करते हैं, यानी सज्दा करते हैं, कहा गया, हाँ! उसने कहा, मुझे लात और उ़ज़्ज़ा की क़सम! अगर मैंने उसे ऐसा करते देख लिया तो मैं उसकी गर्दन रौंद डालूँगा, या उसका चेहरा मिट्टी में खाक आलूद कर दूँगा। चुनाँचे वह रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आया जबकि आप नमाज़ पढ़ रहे थे, उसने ख़्याल किया कि वह आपकी गर्दन रौंद डालेगा। अचानक लोगों ने देखा कि वह उल्टे पैर लौट रहा है और अपने हाथों से अपने आपको बचा रहा है तो उससे पूछा गया, तुम्हें क्या हो गया? तो उसने कहा, मेरे और उनके बीच आग की एक ख़ंदक़ थी, हौल (हैबत व दहशत) और बाज़ू (पंख) हैं। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया 'अगर वह मेरे क़रीब आता तो फ़रिश्ते उसका एक एक हिस्सा उचक लेते।' उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी। रावी कहते हैं

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الْقَيْسِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، عَنْ أَبِيهِ، حَدَّثَنِي نُعَيْمُ بْنُ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ أَبُو جَهْلٍ هَلْ يُعَفِّرُ مُحَمَّدٌ وَجْهَهُ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ قَالَ فَقِيلَ نَعَمْ . فَقَالَ وَاللاَّتِ وَالْعُزَّى لَئِنْ رَأَيْتُهُ يَفْعَلُ ذَلِكَ لأَطَأَنَّ عَلَى رَقَبَتِهِ أَوْ لأُعَفِّرَنَّ وَجْهَهُ فِي التُّرَابِ - قَالَ - فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يُصَلِّي زَعَمَ لِيَطَأَ عَلَى رَقَبَتِهِ - قَالَ - فَمَا فَجِئَهُمْ مِنْهُ إِلاَّ وَهُوَ يَنْكِصُ عَلَى عَقِبَيْهِ وَيَتَّقِي بِيَدَيْهِ - قَالَ - فَقِيلَ لَهُ مَا لَكَ فَقَالَ إِنَّ بَيْنِي وَبَيْنَهُ لَخَنْدَقًا مِنْ نَارٍ وَهَوْلاً وَأَجْنِحَةً . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى

الله عليه وسلم " لَوْ دَنَا مِنِّي لاَخْتَطَفَتْهُ الْمَلاَئِكَةُ عُضْوًا عُضْوًا " . قَالَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لاَ نَدْرِي فِي حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ أَوْ شَىْءٌ بَلَغَهُ { كَلاَّ إِنَّ الإِنْسَانَ لَيَطْغَى * أَنْ رَآهُ اسْتَغْنَى * إِنَّ إِلَى رَبِّكَ الرُّجْعَى * أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَى * عَبْدًا إِذَا صَلَّى * أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَى * أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَى * أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى{ - يَعْنِي أَبَا جَهْلٍ - { أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَى * كَلاَّ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ * نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ * فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ * سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ * كَلاَّ لاَ تُطِعْهُ} زَادَ عُبَيْدُ اللَّهِ فِي حَدِيثِهِ قَالَ وَأَمَرَهُ بِمَا أَمَرَهُ بِهِ . وَزَادَ ابْنُ عَبْدِ الأَعْلَى فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ يَعْنِي قَوْمَهُ .

मालूम नहीं है, यह बात हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हदीस में है, या उनके शागिर्द को किसी दूसरे से पहुँची है।

'हर्गिज़ ऐसा नहीं चाहिए, ये हक़ीक़त है कि इंसान सरकशी इख़्तियार करता है, जबकि अपने आपको बेनियाज़ देखता है, यक़ीनन उसे अपने रब की तरफ़ लौटना है, क्या तुमने उसे देखा, जो मना करता है, बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ता है, बताइए अगर वह हिदायत याफ़्ता होता, या तक़्वा का हुक्म देता हो, ज़रा सोचो, अगर वह झुठलाता हो और मुँह मोड़ता हो, क्या इसे पता नहीं है कि अल्लाह देख रहा है, यक़ीनन अगर वह बाज़ न आया तो हम उनको पेशानी के बाल पकड़कर घसीटेंगे, वह पेशानी जो झूठी, ख़ताकार है, तो वह अपने अहले मज्लिस को बुला ले, हम भी अपने अज़ाब के फ़रिश्तों को बुला लेंगे, हर्गिज़ नहीं! आप इसकी बात न मानिए।' सूरह अलक़ आयत 6 से 19

उबैदुल्लाह की हदीस में यह इज़ाफ़ा है अल्लाह ने उसे हुक्म दिया, जो उसने अपने आवान (तआवुन करने वाले) व अंसार (मदद करने वाले) को हुक्म दिया था। इब्ने अब्दुल आला ने इज़ाफ़ा किया, वह अपनी मज्लिस यानी अपनी क़ौम को बुला ले।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) हल युअफ़्फ़िरु वज्हहू : अफ़र (ख़ाक, मिट्टी) क्या वह अपने चेहरे पर मिट्टी मलता है, सज्दा करता है। (2) अर् रुज्आ : वापसी, रुजूअ, यह हासिले मसदर है। (3) नादिया : सोसायटी, मज्लिस, टोली और पार्टी मुराद है। (4) ज़बानिया, ज़िब्निया की जमा है, दिफ़ाअ करने वाले, बॉडीगार्ड मुराद वह फ़रिश्ते हैं , जो ख़ास नोइयत की मुहिम्मात पर भेजे जाते हैं।

फ़ायदा : इस ह़दीस से उस इंतिज़ाम का इज़्हार हो रहा है, जो अल्लाह तआला अपने रसूलों की ह़िफ़ाज़त के लिए फ़र्माता है, ताकि उनके दुश्मन उनको जरर न पहुँचा सकें और आयात में उन सरमायादारों और लीडरों की अक्कासी की गई है, जो अपने मालो दौलत के ग़ुरूर में मुब्तला होकर सरकशी और तुग़्यान इख़्तियार करते हैं, और जिसने सब कुछ दिया है उससे ही ऐराज़ करते हैं। चूँकि दिमाग़ का सामने वाला ह़िस्सा जिसे नासिया कहा गया है, वही मुज्रिमाना प्लानिंग करता है, ज़ुल्मो ज़्यादती का मर्कज़ (सेन्टर) है, इसीलिए चोटी पकड़कर घसीटने का ज़िक्र किया गया है और उसे झूठी, ख़ताकार क़रार दिया गया है।

बाब 8 :
धूएँ का बयान

(8)بَابُ : الدُّخَانِ

(7066) इमाम मसरूक़ (रह.) बयान करते हैं, हम अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के पास बैठे हुए थे और वह हमारे बीच लेटे हुए थे, चुनाँचे उनके पास एक आदमी आकर कहने लगा, ऐ अब्दुर्रह़मान! कूफ़ा के दरवाज़े किन्दा नामी के पास एक वाइज़ क़िस्सा गो बयान कर रहा है, उसका नज़रिया यह है कि दुख़ान (धूआँ) की निशानी ज़ाहिर हो गई तो काफ़िरों के साँस रोक देगी और मोमिनों को उससे ज़ुकाम की कैफ़ियत पैदा होगी तो अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बैठ गए और ग़ुस्सा की कैफ़ियत में कहने लगे, ऐ लोगों! अल्लाह से डरो तुममें से जिस किसी चीज़ का इल्म है, वह अपने इल्म के मुताबिक़ बात करे और जिसे इल्म नहीं है, उसको अल्लाहु आ'लम कहना चाहिए, क्योंकि तुम्हारे लिए ज़्यादा इल्मी रवैया यही है, जिस चीज़ का पता नहीं है, उसके बारे में कह दे, अल्लाह ही ख़ूब

أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ جُلُوسًا وَهُوَ مُضْطَجِعٌ بَيْنَنَا فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنَّ قَاصًّا عِنْدَ أَبْوَابِ كِنْدَةَ يَقُصُّ وَيَزْعُمُ أَنَّ آيَةَ الدُّخَانِ تَجِيءُ فَتَأْخُذُ بِأَنْفَاسِ الْكُفَّارِ وَيَأْخُذُ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ كَهَيْئَةِ الزُّكَامِ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ وَجَلَسَ وَهُوَ غَضْبَانُ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا اللَّهَ مَنْ عَلِمَ مِنْكُمْ شَيْئًا فَلْيَقُلْ بِمَا يَعْلَمُ وَمَنْ لَمْ يَعْلَمْ فَلْيَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ فَإِنَّهُ أَعْلَمُ لأَحَدِكُمْ أَنْ يَقُولَ لِمَا لاَ يَعْلَمُ اللَّهُ أَعْلَمُ فَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ قَالَ لِنَبِيِّهِ صلى الله

عليه وسلم } قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ{ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَمَّا رَأَى مِنَ النَّاسِ إِدْبَارًا فَقَالَ " اللَّهُمَّ سَبْعٌ كَسَبْعِ يُوسُفَ " . قَالَ فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ حَصَّتْ كُلَّ شَىْءٍ حَتَّى أَكَلُوا الْجُلُودَ وَالْمَيْتَةَ مِنَ الْجُوعِ وَيَنْظُرُ إِلَى السَّمَاءِ أَحَدُهُمْ فَيَرَى كَهَيْئَةِ الدُّخَانِ فَأَتَاهُ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ إِنَّكَ جِئْتَ تَأْمُرُ بِطَاعَةِ اللَّهِ وَبِصِلَةِ الرَّحِمِ وَإِنَّ قَوْمَكَ قَدْ هَلَكُوا فَادْعُ اللَّهَ لَهُمْ - قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ } فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ * يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ{ إِلَى قَوْلِهِ } إِنَّكُمْ عَائِدُونَ{ . قَالَ أَفَيُكْشَفُ عَذَابُ الآخِرَةِ } يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنْتَقِمُونَ{ فَالْبَطْشَةُ يَوْمَ بَدْرٍ وَقَدْ مَضَتْ آيَةُ الدُّخَانِ وَالْبَطْشَةُ وَاللِّزَامُ وَآيَةُ الرُّومِ

जानता है, क्योंकि अल्लाह बरतर बुज़ुर्ग ने अपने नबी(ﷺ) को फ़र्माया है, 'कह दीजिए मैं उस पर तुमसे किसी मज़दूरी का तालिब नहीं हूँ और न मैं तकल्लुफ़ करने वालों में से हूँ।' (सूरह साद : आ. 86)

बिला शुब्हा जब रसूलुल्लाह (स. ने देखा, लोग दीन को क़ुबूल करने से रूगर्दानी कर रहे हैं तो दुआ की, ऐ अल्लाह! इन पर सात साला क़हत भेज, जैसाकि हज़रत यूसुफ़ (अ.) के दौर में सात साल क़हत पड़ा था तो उन्हें ख़ुश्कसाली ने आ लिया, जिसने हर चीज़ को ख़त्म कर डाला, यहाँ तक कि क़ुरैश ने भूख के सबब चमड़े और मुरदार खाए और उनमें से कोई आसमान को देखता तो उसे धूएँ की कैफ़ियत नज़र आती, उन हालात में आपके पास अबू सुफ़्यान आकर कहने लगा, ऐ मुहम्मद(ﷺ)! आप अल्लाह की इताअत और सिला रहमी का हुक्म देने आए हैं और आपकी क़ौम भूख से हलाक हो रही है तो उनकी ख़ातिर अल्लाह से दुआ कीजिए, इस सिलसिले में अल्लाह ने फ़र्माया, 'उस दिन का इंतिज़ार करें, जब आसमान से सरीह धुआँ ज़ाहिर होगा, जो लोगों पर छा जाएगा, जो अलमनाक अज़ाब होगा (कहेंगे) ऐ हमारे रब! हमसे इस अज़ाब को दूर कर दे, हम ईमान ले आएँगे, उस वक़्त उन्हें नसीहत कहाँ कारगर होगी, हालाँकि उनके पास रसूले मुबीन (खोल खोलकर बयान करने वाला) आ चुका है, फिर उन्होंने उससे मुँह मोड़ा और कहने लगे,

यह तो सिखाया पढ़ाया दीवाना है।' हम थोड़ी देर अज़ाब हटा देंगे मगर तुम फिर वही करोगे जो पहले करते रहे।' (दुख़ान आयत 10 से 15)। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, क्या आख़िरत का अज़ाब हटा दिया जाएगा? जिस दिन हम सख़्त गिरफ़्त करेंगे, फिर इंतिक़ाम लेकर रहेंगे।' (आ. 16) तो पकड़ से मुराद, बद्र का दिन है, धुएँ वाली निशानी गुज़र चुकी है, इस तरह पकड़, लुज़ाम (क़त्लो क़ैद) व रूम (ईरान) की फ़तह गुज़र चुकी है।

सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिस्क़ा : 1007; हदीस : 1020; किताबुत्तफ़्सीर : 4693; ह: 4809; बाब 30, ह: 4774; ह: 4821; ह : 4822; ह : 4823; ह : 4824; जामेअ तिर्मिज़ी : 3254.

फ़ायदा : हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के नज़दीक सूरह दुख़ान में, जिस धूएँ का ज़िक्र किया गया है उससे मुराद वह ख़्याली और तसव्वुराती धुआँ है, जो कुरैशे मक्का को भूख की वजह से नज़र आता था, हालाँकि कुरआन में जिस धूएँ का ज़िक्र है, वह हक़ीक़ी और सरीह धुआँ है, जो सब लोगों को नज़र आएगा, इसलिए हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने उससे क़ियामत वाला धुआँ ही मुराद लिया है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) का क़ौल भी यही है और आगे हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद (रज़ि.) की मरफ़ूअ रिवायत आ रही है वह भी उसकी मुईद (ताईदी) है और कुछ ज़ईफ़ अहादीस में यही बात मुख़्तलिफ़ सहाबा से नक़्ल है, इसी तरह बत्शा कुब्रा से मुराद, हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के नज़दीक बद्र का दिन है, जबकि दूसरी तफ़्सीर के मुताबिक़ क़ियामत की पकड़ मुराद है और हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के इस एतिराज़ से कि क्या क़ियामत का अज़ाब कुछ वक़्त के लिए हटाया जाएगा, का यह जवाब दिया है कि इससे मुराद यह है, अगर हम तुमसे अज़ाब हटा दें और तु फिर दुनिया में लौटा दें तो तुम फिर भी वही कुफ़्र करोगे, जो पहले करते थे, या काशिफ़ुल अज़ाब से मुराद यह है कि अगरचे अज़ाब आने के अस्बाब मुकम्मल हो चुके हैं और अज़ाब तुम्हारे क़रीब आ चुका है, मगर कुछ दिनों के लिए हम उसे मुअख़्ख़र (लेट) कर देते हैं, जैसाकि हज़रत यूनुस (अ.) की क़ौम पर अज़ाब आया नहीं था, सिर्फ़ अज़ाब के आसार नज़र आए थे, लेकिन कुरआन में उसको (कशफ़्ना अन्हुमुल अज़ाब) (हमने उनसे अज़ाब हटा लिया) से तअ्बीर किया है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ، الأَشَجُّ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ صُبَيْحٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ جَاءَ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ رَجُلٌ فَقَالَ تَرَكْتُ فِي الْمَسْجِدِ رَجُلاً يُفَسِّرُ الْقُرْآنَ بِرَأْيِهِ يُفَسِّرُ هَذِهِ الآيَةَ } يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ{ قَالَ يَأْتِي النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ دُخَانٌ فَيَأْخُذُ بِأَنْفَاسِهِمْ حَتَّى يَأْخُذَهُمْ مِنْهُ كَهَيْئَةِ الزُّكَامِ . فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ مَنْ عَلِمَ عِلْمًا فَلْيَقُلْ بِهِ وَمَنْ لَمْ يَعْلَمْ فَلْيَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ فَإِنَّ مِنْ فِقْهِ الرَّجُلِ أَنْ يَقُولَ لِمَا لاَ عِلْمَ لَهُ بِهِ اللَّهُ أَعْلَمُ . إِنَّمَا كَانَ هَذَا أَنَّ قُرَيْشًا لَمَّا اسْتَعْصَتْ عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم دَعَا عَلَيْهِمْ بِسِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ فَأَصَابَهُمْ قَحْطٌ وَجَهْدٌ حَتَّى جَعَلَ الرَّجُلُ يَنْظُرُ إِلَى السَّمَاءِ فَيَرَى بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا كَهَيْئَةِ الدُّخَانِ مِنَ الْجَهْدِ وَحَتَّى أَكَلُوا

(7067) इमाम मसरूक़ (रह.) बयान करते हैं, हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) के पास एक आदमी आकर कहने लगा, मैं मस्जिद में एक ऐसे आदमी को छोड़कर आया हूँ जो क़ुरआन की तफ़्सीर सिर्फ़ अपनी राय (अ़क़्ल) से करता है, वह इस आयत 'जिस दिन आसमान पर स़रीह़ धुआँ ज़ाहिर होगा।' की तफ़्सीर करता है कि क़ियामत के दिन लोगों पर एक धुआँ तारी होगा, जो उनकी साँस को रोक देगा यहाँ तक कि उन पर ज़ुकाम की सी कैफ़ियत छा जाएगी तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, जिसको पुख़्ता इल्म हो, वह उसे बयान करे और जिसे इल्म न हो, वह कह दे, अल्लाह ही ख़ूब जानता है, क्योंकि इंसान के समझदार होने की अ़लामत है कि जिस चीज़ का उसे इल्म नहीं है, वह कह दे, अल्लाह ही ख़ूब जानता है। यह वाक़िया यूँ है, जब क़ुरैश ने नबी अकरम(ﷺ) की नाफ़र्मानी की तो आपने उनके ख़िलाफ़ यूसुफ़ (अ.) के दौर जैसे क़हतसाली के सालों के मुसल्लत करने की दुआ की, उसके नतीजे में उन्हें क़हत और मशक़्क़त के सबब धुआँ नज़र आता यहाँ तक कि उन्होंने हड्डियाँ खाईं, उन हालात में नबी अकरम(ﷺ) के पास एक आदमी आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मुज़र के लिए अल्लाह से माफ़ी तलब कीजिए (हिदायत माँगिये) क्योंकि वह हलाक हो रहे हैं तो आपने फ़र्माया, 'मुज़र के लिए?' (जो नाफ़र्मान और मुश्रिक हैं) तुम तो बहुत जुर्अत

الْعِظَامَ فَأَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ اسْتَغْفِرِ اللَّهَ لِمُضَرَ فَإِنَّهُمْ قَدْ هَلَكُوا فَقَالَ " لِمُضَرَ إِنَّكَ لَجَرِيءٌ " . قَالَ فَدَعَا اللَّهَ لَهُمْ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلاً إِنَّكُمْ عَائِدُونَ} قَالَ فَمُطِرُوا فَلَمَّا أَصَابَتْهُمُ الرَّفَاهِيَةُ - قَالَ - عَادُوا إِلَى مَا كَانُوا عَلَيْهِ - قَالَ - فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ } فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ * يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ{ } يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنْتَقِمُونَ{ قَالَ يَعْنِي يَوْمَ بَدْرٍ .

कर रहे हो (जो काफ़िरों के लिए बख़्शिश माँग रहे हो) चुनाँचे आपने उनके लिए (बारिश की) दुआ की। उस पर अल्लाह ने यह आयत नाज़िल की, 'हम कुछ वक़्त के लिए अज़ाब दूर कर देंगे, मगर तुम फिर पहली हरकतों की तरफ़ लौट आओगे।' आपकी दुआ के नतीजे में बारिश बरसा दी गई, लेकिन जब उन्हें ख़ुशहाली मयस्सर आई तो वह पहली हालत की तरफ़ लौट आए, उस सिलसिले में यह आयत भी नाज़िल हुई, 'उस दिन का इंतिज़ार करो, जब आसमान पर सरीह धुआँ ज़ाहिर होगा, जो लोगों पर छा जाएगा, यह अलमनाक अज़ाब होगा। (आ. 10 से 12)। जिस दिन हम उन पर सख़्त गिरफ़्त करेंगे तो हम इंतिक़ाम लेकर रहेंगे। (आ. 16) इससे मुराद बद्र का दिन है।

इसकी तख़रीज हदीस 6997 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के नज़दीक बद्र के दिन गिरफ़्त, उनकी बद अहदी (वादा ख़िलाफ़ी) और बेवफ़ाई का नतीजा थी, लेकिन असल गिरफ़्त तो क़ियामत को होगी, दुनिया की गिरफ़्त तो उसका हल्का सा इशारा और तम्हीद है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ خَمْسٌ قَدْ مَضَيْنَ الدُّخَانُ وَاللِّزَامُ وَالرُّومُ وَالْبَطْشَةُ وَالْقَمَرُ .

(7068) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, पाँच पेशीनगोइयाँ गुज़र चुकी हैं, अद्दुख़ान (धुआँ) (जंगे बद्र में) लिज़ाम (क़त्लो क़ैद) रूमियों की फ़तह, बद्र की पकड़ और इंशिक़ाक़े क़मर (चाँद के दो टुकड़े)

तख़रीज 7068 : सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4767; हदीस : 4820; हदीस : 4825.

حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(7069) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज हदीस 6999 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عَزْرَةَ، عَنِ الْحَسَنِ الْعُرَنِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ الْجَزَّارِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أُبَىِّ، بْنِ كَعْبٍ فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ { وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الأَدْنَى دُونَ الْعَذَابِ الأَكْبَرِ } قَالَ مَصَائِبُ الدُّنْيَا وَالرُّومُ وَالْبَطْشَةُ أَوِ الدُّخَانُ . شُعْبَةُ الشَّاكُّ فِي الْبَطْشَةِ أَوِ الدُّخَانِ .

(7070) हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान, 'हम इन्हें बड़े अ़ज़ाब से पहले हल्के अ़ज़ाब से दो चार करेंगे, हल्के अ़ज़ाब का ज़ायक़ा ज़रूर चखाएँगे। सूरह अलिफ़ लाम मीम सज्दा आयत 21, फ़र्माते हैं इससे मुराद दुनिया की तकालीफ़ व मसाइब हैं, फ़तहे रूम, पकड़ या दुख़ान है, बतशा है या दुख़ान, शोबा को शक है।

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4767; हदीस : 4820; हदीस : 4825.

बाब 9 : इंशिक़ाक़े क़मर , चाँद का फटना

(9) بَاب : اِنْشِقَاقِ الْقَمَرِ

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ أَبِي، نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِشِقَّتَيْنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اشْهَدُوا " .

(7071) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के अ़हदे मुबारक में चाँद फट कर दो टुकड़े हो गया था, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'गवाह हो जाओ।'

तख़रीज 7071 : सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब : 3636; किताबुल मनाक़िबुल अंसार : 3869, 3871; किताबुत्तफ़्सीर : 4864, 4865; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3285, 3286.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ جَمِيعًا عَنْ أَبِي، مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي كِلاَهُمَا، عَنِ الأَعْمَشِ، ح وَحَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - أَخْبَرَنَا ابْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمِنًى إِذَا انْفَلَقَ الْقَمَرُ فِلْقَتَيْنِ فَكَانَتْ فِلْقَةٌ وَرَاءَ الْجَبَلِ وَفِلْقَةٌ دُونَهُ فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اشْهَدُوا " .

(7072) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं, जबकि हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ मिना में थे तो चाँद दो टुकड़ों में बट गया, एक टुकड़ा पहाड़ के पीछे था और दूसरा टुकड़ा आगे था। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें फ़र्माया, 'गवाह रहना।'

तख़रीज 7072 : इसकी तख़रीज हदीस 7002 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِلْقَتَيْنِ فَسَتَرَ الْجَبَلُ فِلْقَةً وَكَانَتْ فِلْقَةٌ فَوْقَ الْجَبَلِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ اشْهَدْ " .

(7073) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में चाँद दो हिस्सो में बट गया, एक टुकड़े को पहाड़ ने (अपने पीछे) छुपा लिया और एक टुकड़ा पहाड़ के ऊपर था। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'ऐ अल्लाह! गवाह रहना।'

तख़रीज 7073 : इसकी तख़रीज हदीस 7002 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : चाँद का टुकड़े होना, आपका एक अ़ज़ीम (बड़ा) मोजिज़ा है, जिसे बहुत से सहाबा किराम (रज़ि.) ने बयान किया है और क़ुरआन मजीद में भी इसका ज़िक्र मौजूद है। कुछ रिवायात में है, मक्का के काफ़िरों ने यह देखकर कहा, अबू कब्शा के बेटे ने तुम पर जादू कर दिया है, मुसाफ़िरों का

इंतिज़ार करो, अगर उन्होंने भी तुम्हारी तरह शक़्क़े क़मर (चाँद के फटने को) देखा हो तो फिर यह सच है, अगर उन्होंने तुम्हारी तरह चाँद को फटता न देखा हो तो यह जादू है, जो तुम पर उसने किया है, आने वालों से पूछा गया तो हर जहत (दिशा) से आने वाले मुसाफ़िरों ने उसकी गवाही दी।'

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِثْلَ ذَلِكَ .

(7074) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से इस क़िस्म की रिवायत बयान करते हैं।

तख़रीज 7074 : जामेअ तिर्मिज़ी : 2182; किताबुत्तफ़्सीर : 3288.

وَحَدَّثَنِيهِ بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، بِإِسْنَادِ ابْنِ مُعَاذٍ عَنْ شُعْبَةَ، نَحْوَ حَدِيثِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِ ابْنِ أَبِي عَدِيٍّ فَقَالَ " اشْهَدُوا اشْهَدُوا

(7075) यही रिवायत इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं, हाँ! इब्ने अबी अदी (रह.) की हदीस में है कि आपने फ़र्माया, 'गवाह हो जाओ, गवाहा हो जाओ।'

इसकी तख़रीज हदीस 7005 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ أَهْلَ، مَكَّةَ سَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ يُرِيَهُمْ آيَةً فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ مَرَّتَيْنِ .

(7076) हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि मक्का वालों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से ख़्वाहिश की कि आप उन्हें कोई निशानी (मोजिज़ा) दिखाएँ तो आपने उन्हें दो बार इंशिक़ाक़े क़मर दिखाया।'

तख़रीज 7076 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3637; किताबुत्तफ़्सीर : 4867.

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، بِمَعْنَى حَدِيثِ شَيْبَانَ .

(7077) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुत्तफ़्सीर : 3286.

फ़ायदा : मर्रतैन का मआनी यह नहीं है कि चाँद दो बार फटा था, बल्कि मआनी यह है कि एक बार एक टुकड़ा दिखाया और दूसरी बार दूसरा टुकड़ा दिखाया, या उन्हें दो बार कहा, देख लो, इसलिए अगली रिवायत में मर्रतैन की जगह फ़िर्क़तैन का लफ़्ज़ है। शिक़्क़तुन, फ़िल्क़तुन, फ़िरक़तुन तीनों लफ़्ज़ हम मआनी हैं, जिनसे मुराद टुकड़ा है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَأَبُو دَاوُدَ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَأَبُو دَاوُدَ كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ انْشَقَّ الْقَمَرُ فِرْقَتَيْنِ . وَفِي حَدِيثِ أَبِي دَاوُدَ انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

(7078) इमाम साहब अपने दो उस्तादों से बयान करते हैं, हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा, चाँद दो टुकड़ों में बट गया, अबूदाऊद की हदीस में है, रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में चाँद फट गया।

तख़रीज 7078 : सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर : 4864.

حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ قُرَيْشٍ التَّمِيمِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ بَكْرِ بْنِ مُضَرَ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ إِنَّ الْقَمَرَ انْشَقَّ عَلَى زَمَانِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(7079) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में चाँद शक़्क़ हो गया।

तख़रीज 7079 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3638; किताबुल मनाक़िब फ़िल अंसार : 3870; किताबुत्तफ़्सीर : 4866.

फ़ायदा : हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने लिखा है बहुत से मुसाफ़िरों ने बताया कि उन्होंने हिन्दुस्तान में एक हैकल देखा जिस पर लिखा हुआ था ये उस रात तामीर हुआ जिसमें चाँद फटा था इब्ने कसीर जि0 6 स0 177 और चाँद के फटने का वाक़िया मालाबार में नज़र आया था। तारीख़े फ़रिश्ता 2/488-489.

(10)

بَاب : لَا أَحَدَ أَصْبَرُ عَلَى أَذًى مِنَ اللَّهِ

बाब 10 : अज़िय्यतनाक या तक्लीफ़देह बातों को अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से बढ़कर कोई बर्दाश्त करने वाला नहीं है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَأَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ أَحَدَ أَصْبَرُ عَلَى أَذًى يَسْمَعُهُ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ إِنَّهُ يُشْرَكُ بِهِ وَيُجْعَلُ لَهُ الْوَلَدُ ثُمَّ هُوَ يُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ " .

(7080) ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से बढ़कर कोई अज़िय्यतनाक बातों को बर्दाश्त करने वाला नहीं हैं, उसके साथ शरीक क़रार दिये जाते हैं और उसके लिए औलाद क़रार दी जाती है, फिर भी वह ऐसे लोगों को आ़फ़ियत व तन्दुरुस्ती इनायत फ़र्माता है और उन्हें रिज़्क़ से नवाज़ता है।'

तख़रीज 7080 : सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब : 6099; किताबुत्तौहीद : 7378.

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला शरीक व सहीम और औलाद व बीवी से बुलंद व बाला और पाक व मुनज़्ज़ा है, वह किसी चीज़ का मोहताज नहीं है, लेकिन मुश्रिक उसके लिए शरीक और औलाद साबित करते हैं और उसकी बेनियाज़ी का इंकार करते हैं, उसके बावजूद वह उन्हें सेह़त व आ़फ़ियत और माल व दौलत से नवाज़ता है और फ़ौरन उनका मुवाख़िज़ा नहीं फ़र्माता और क़ुदरत व त़ाक़त के बावजूद इंतिक़ाम नहीं लेता और अल्लाह का स़ब्र, उसकी शाने रफ़ीअ़ के लायक़ होगा, उसकी कुम्बा और ह़क़ीक़त को बयान करना मुम्किन नहीं है और न ही तावील या तश्बीह व तअ़्त़ील की ज़रूरत है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي

(7081) इमाम स़ाहब अपने दो और उस्तादों से ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) की, नबी अकरम(ﷺ) से रिवायत बयान करते हैं, मगर उसमें आपका यह बोल 'अल्लाह के लिए

عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ إِلاَّ قَوْلَهُ " وَيُجْعَلُ لَهُ الْوَلَدُ " . فَإِنَّهُ لَمْ يَذْكُرْهُ .

औलाद ठहराई जाती है' मौजूद नहीं है।

तख़रीज 7081 : इसकी तखरीज हदीस 7011 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ، جُبَيْرٍ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ قَيْسٍ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا أَحَدٌ أَصْبَرَ عَلَى أَذًى يَسْمَعُهُ مِنَ اللَّهِ تَعَالَى إِنَّهُمْ يَجْعَلُونَ لَهُ نِدًّا وَيَجْعَلُونَ لَهُ وَلَدًا وَهُوَ مَعَ ذَلِكَ يَرْزُقُهُمْ وَيُعَافِيهِمْ وَيُعْطِيهِمْ " .

(7082) हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस (अबू मूसा) (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तक्लीफ़देह बात सुनकर, अल्लाह से ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला कोई नहीं है।' लोग उसके मद्दे मुक़ाबिल ठहराते हैं और उसके लिए औलाद क़रार देते हैं, उसके बावजूद वह उन्हें रोज़ी देता है, आफ़ियत बख़्शता है, और (माल व दौलत) अता फ़र्माता है।'

इसकी तख़रीज हदीस 7011 में गुज़र चुकी है।

(11) بَابُ : طَلَبِ الْكَافِرِ الْفِدَاءَ بِمِلْءِ الأَرْضِ ذَهَبًا

बाब 11 : काफ़िरों का ज़मीन भरकर सोना फ़िद्या के तौर पर देने की ख़्वाहिश करना

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَقُولُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى لأَهْوَنِ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا لَوْ كَانَتْ لَكَ الدُّنْيَا

(7083) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला सबसे हल्के अज़ाब वाले दोज़ख़ी से कहेगा, अगर तेरे पास दुनिया व उसके बीच जो कुछ है तो क्या तू उसको बतौर फ़िद्या (आग से बचने के लिए) दे देगा तो वह कहेगा, हाँ! अल्लाह फ़र्मायेगा मैंने तुमसे उससे बहुत कम, आसान चीज़ का

وَمَا فِيهَا أَكُنْتَ مُفْتَدِيًا بِهَا فَيَقُولُ نَعَمْ فَيَقُولُ قَدْ أَرَدْتُ مِنْكَ أَهْوَنَ مِنْ هَذَا وَأَنْتَ فِي صُلْبِ آدَمَ أَنْ لاَ تُشْرِكَ - أَحْسَبُهُ قَالَ - وَلاَ أُدْخِلَكَ النَّارَ فَأَبَيْتَ إِلاَّ الشِّرْكَ " .

मुत़ालबा किया था, जबकि तू अभी आदमी की पुश्त में था कि तुम शिर्क न करना, (मेरा ख़याल है, आपने फ़र्माया) और मैं तुम्हें आग में दाख़िल नहीं करूँगा, लेकिन तूने शिर्क करने पर इसरार किया।'

तख़रीज 7083 : सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया : 3334; किताबुर्रिक़ाक़ : 6557.

फ़ायदा : अन्त फ़ी सुल्बि आदम : तू आदम की पुश्त (पीठ) में था, से मीसाक़े रुबूबियत या अ़हदे अलस्तु की त़रफ़ इशारा है, जिसको क़ुरआन मजीद में (वइज़ अखज़ रब्बुका मिम बनी आदम... आखिर आयत तक) में बयान किया गया है कि इंसानों को दुनिया में पैदा करने से पहले ही यह बता दिया गया था और उनसे पुख़्ता वादा लिया गया था कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराना, इंसानी फ़ित़रत, अ़क़्लो शऊर और अम्बिया व रुसुल और कुतुब व स़ह़ीफ़े के ज़रिये उस अ़हद की याद देहानी कराई गई, लेकिन इंसानों की अक्सरियत उसके बावजूद शिर्क के मूज़ी (ख़तरनाक) मर्ज़ में मुब्तला होकर जहन्नम का ईंधन बन रही है।

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ إِلاَّ قَوْلَهُ " وَلاَ أُدْخِلَكَ النَّارَ " . فَإِنَّهُ لَمْ يَذْكُرْهُ .

(7084) इमाम साहब एक और उस्ताद से, ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की ऊपर वाली ह़दीस बयान करते हैं, मगर उसमें आपका क़ौल 'और मैं तुम्हें आग में दाख़िल नहीं करूँगा।' बयान नहीं किया।

इसकी तख़रीज ह़दीस 7014 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ

(7085) ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत के दिन काफ़िर से कहा जाएगा, बताओ अगर तेरे पास ज़मीन भरकर सोना हो तो क्या तुम उसको बत़ौर फ़िद्या दे दोगे? वह कहेगा हाँ! तो उसे कहा जाएगा

" يُقَالُ لِلْكَافِرِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَرَأَيْتَ لَوْ كَانَ لَكَ مِلْءُ الأَرْضِ ذَهَبًا أَكُنْتَ تَفْتَدِي بِهِ فَيَقُولُ نَعَمْ . فَيُقَالُ لَهُ قَدْ سُئِلْتَ أَيْسَرَ مِنْ ذَلِكَ " .

तुमसे उससे बहुत आसान चीज़ का मुतालबा किया गया था।'
सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6538.

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، ح وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِي ابْنَ عَطَاءٍ - كِلاَهُمَا عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " فَيُقَالُ لَهُ كَذَبْتَ قَدْ سُئِلْتَ مَا هُوَ أَيْسَرُ مِنْ ذَلِكَ " .

(7086) हज़रत अनस (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से ऊपर वाली रिवायत इस फ़र्क़ से बयान करते हैं, 'तो उसे कहा जाएगा, तुम झूठ बोलते हो, तुमसे ऐसी चीज़ का मुतालबा किया गया था, जो उससे बहुत आसान थी।'
सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6538.

फ़ायदा : कज़ब्त : तुम झूठ बोलते हो, का मक़्सद यह है, अगर तुम्हें दुनिया में दोबारा भेज दिया जाए तो तुम यह फ़िद्या और तावान अदा करने के लिए तैयार नहीं होओगे, क्योंकि तुमने उससे इंतिहाई आसान और सहल काम भी नहीं किया, अगरचे आख़िरत में वह अ़ज़ाब से नजात पाने के लिए दुनिया व मा फ़ीहा (जो कुछ दुनिया में है) देने के लिए तैयार होगा, इसलिए अल्लाह का फ़र्मान, 'और अगर उन्हें दोबारा दुनिया में भेजा जाए तो फिर वही करेंगे, जिससे उन्हें मना किया गया था, यह दरअस़ल झूठे हैं।' (अन्आम : 28)

(12)
بَابُ : يُحْشَرُ الْكَافِرُ عَلَى وَجْهِهِ

बाब 12 : काफ़िर को चेहरे के बल उठाया जाएगा

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا يُونُسُ، بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَجُلاً، قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ

(7087) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क़ियामत के दिन काफ़िर को उसके चेहरे के बल कैसे उठाया जाएगा? आपने फ़र्माया, 'क्या जिसने उसे दुनिया में उसके दोनों पैर पर चलाया है, वह

يُحْشَرُ الْكَافِرُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ " أَلَيْسَ الَّذِي أَمْشَاهُ عَلَى رِجْلَيْهِ فِي الدُّنْيَا قَادِرًا عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " . قَالَ قَتَادَةُ بَلَى وَعِزَّةِ رَبِّنَا .

इस पर क़ादिर नहीं है कि उसे क़ियामत के दिन उसको चेहरे के बल चला दे।' क़तादा (रह.) ने कहा क्यूँ नहीं! हमारे रब की इ़ज़्ज़त व क़ुदरत की क़सम!

तख़रीज 7087 : सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर : 4760; किताबुर्रिक़ाक़ : 6523.

फ़ायदा : अह़वाले क़ियामत को दुनिया के ह़ालात पर क़ियास करने के नतीजे में और क़ुदरते इलाही से सर्फ़े नज़र करने की बिना पर बहुत सी बातों को अजीब ख़याल किया जाता है, ह़ालाँकि आख़िरत के ह़ालात को दुनिया पर क़ियास करना (आँकना) सही नहीं है, जिस त़रह़ दुनिया की ज़िन्दगी को माँ के पेट वाली ज़िन्दगी पर क़यास करना सही नहीं है, इसी त़रह़ क़ुदरते इलाही को नज़र अन्दाज़ करके किसी चीज़ को समझने की कोशिश करना इश्काल व एतिराज़ का बाइस है, अगर क़ुदरते इलाही पर नज़र हो तो किसी क़िस्म का इश्काल या शको शुब्हा पैदा नहीं होता।

(13) بَابُ : صَبْغِ أَنْعَمِ أَهْلِ الدُّنْيَا فِى النَّارِ وَصَبْغِ أَشَدِّهِمْ بُؤْسًا فِى الْجَنَّةِ

बाब 13 : दुनिया में सबसे ज़्यादा ख़ुशहाल और आसूदातर शख़्स को जहन्नम में डुबकी देना और सबसे ज़्यादा मशक़्क़त और तक्लीफ़ वाले को जन्नत में ग़ोता देना

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُؤْتَى بِأَنْعَمِ أَهْلِ الدُّنْيَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُصْبَغُ فِي النَّارِ صَبْغَةً ثُمَّ يُقَالُ يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ خَيْرًا قَطُّ هَلْ مَرَّ بِكَ نَعِيمٌ قَطُّ فَيَقُولُ لاَ وَاللَّهِ يَا رَبِّ . وَيُؤْتَى

(7088) ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जहन्नमियों में से क़ियामत के दिन उस शख़्स को लाया जाएगा, जिसको दुनिया में सबसे ज़्यादा नेमतों वाली आसूदा ज़िन्दगी मिली थी। चुनाँचे उसे आग में एक ग़ोता दिया जाएगा, फिर पूछा जाएगा, ऐ आदम के बेटे! क्या कभी तूने किसी क़िस्म की ख़ैर, आराम देखा? क्या कभी तुम्हें कोई नेमत ह़ासिल

بِأَشَدِّ النَّاسِ بُؤْسًا فِي الدُّنْيَا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيُصْبَغُ صَبْغَةً فِي الْجَنَّةِ فَيُقَالُ لَهُ يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ بُؤْسًا قَطُّ هَلْ مَرَّ بِكَ شِدَّةٌ قَطُّ فَيَقُولُ لاَ وَاللَّهِ يَا رَبِّ مَا مَرَّ بِي بُؤْسٌ قَطُّ وَلاَ رَأَيْتُ شِدَّةً قَطُّ " .

हुई? वह कहेगा, नहीं! अल्लाह की क़सम! ऐ मेरे रब! और दुनिया में सबसे ज़्यादा तंगहाल और तक्लीफ़देह ज़िन्दगी गुज़ारने वाले को अहले जन्नत में से लाया जाएगा, तो उसे जन्नत में एक ग़ोता दिया जाएगा और उससे पूछा जाएगा, ऐ आदम के बेटे! क्या कभी तूने शिद्दत और सख़्ती देखी? क्या कभी तुझ पर शिद्दत का गुज़र हुआ? वह कहेगा, नहीं अल्लाह की क़सम! ऐ मेरे रब! मुझ पर कभी किसी शिद्दत (तंगी) का गुज़र नहीं हुआ और न मैंने कभी सख़्ती देखी।'

तख़रीज-7088 : सुनन नसाई : 3160.

फ़ायदा : आज दुनिया की जिन नेमतों और आसाइशों पर हम फ़रेफ़्ता (दीवाने) हो रहे हैं और उनके असीर हैं, उनकी वक़्अत और हैसियत सिर्फ़ इतनी है, वह दोज़ख की एक ही डुबकी से भूल जायेगा और उनका सारा नशा ख़त्म हो जाएगा और दुनिया की जिन सख़्तियों और तक्लीफ़ों से हम भागते हैं और उनकी ख़ातिर दीन व शरीअत को नज़र अन्दाज़ करते हैं, वह इस क़द्र बेवक़्अत और हक़ीर हैं कि जन्नत में एक ही डुबकी से भूल जायेगा और यह एहसास नहीं रहेगा कि कभी मेरा किसी सख़्ती और तक्लीफ़ व शिद्दत से भी वास्ता पड़ा था।

(14)

بَاب : جَزَاءِ الْمُؤْمِنِ بِحَسَنَاتِهِ فِى الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

बाब 14 : मोमिन को उसकी नेकियों का दुनिया और आख़िरत में सिला मिलेगा और काफ़िर को जल्द ही उसकी नेकियों का सिला दुनिया ही में मिल जाता है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى، عَنْ قَتَادَةَ،

(7089) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'यक़ीनन अल्लाह मोमिन की किसी नेकी की हक़ तल्फ़ी नहीं फ़र्माता, उसकी वजह से

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ لاَ يَظْلِمُ مُؤْمِنًا حَسَنَةً يُعْطَى بِهَا فِي الدُّنْيَا وَيُجْزَى بِهَا فِي الآخِرَةِ وَأَمَّا الْكَافِرُ فَيُطْعَمُ بِحَسَنَاتِ مَا عَمِلَ بِهَا لِلَّهِ فِي الدُّنْيَا حَتَّى إِذَا أَفْضَى إِلَى الآخِرَةِ لَمْ تَكُنْ لَهُ حَسَنَةٌ يُجْزَى بِهَا " .

दुनिया में भी दिया जाता है और उसका आख़िरत में भी सिला मिलेगा, रहा काफ़िर तो उसने जो नेकियाँ अल्लाह के लिए की हैं, उनके सबब दुनिया में रिज़्क़ दिया जाता है, यहाँ तक कि जब वह आख़िरत में पहुँचेगा तो उसके पास कोई नेकी नहीं होगी, जिसका उसे सिला या बदला दिया जाएगा।'

फ़ायदा : काफ़िर दुनिया में जो अच्छे काम अल्लाह की ख़ुशनुदी और रज़ा के लिए करता है, उसका बदला उसे दुनिया ही में मिल जाता है, लेकिन मोमिन, आख़िरत के अज्रो सवाब के लिए, नेक अमल करता है, इसलिए उसे उनका बदला आख़िरत में मिलेगा और दुनिया में उसे जो कुछ मिल रहा है, वह सिर्फ़ अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम है, नेकियों की जज़ा या बदला नहीं है, जज़ा सिर्फ़ आख़िरत में ही मिलेगी, जो कि अगली आयत में आ रहा है।

حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ النَّضْرِ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ حَدَّثَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الْكَافِرَ إِذَا عَمِلَ حَسَنَةً أُطْعِمَ بِهَا طُعْمَةً مِنَ الدُّنْيَا وَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَإِنَّ اللَّهَ يَدَّخِرُ لَهُ حَسَنَاتِهِ فِي الآخِرَةِ وَيُعْقِبُهُ رِزْقًا فِي الدُّنْيَا عَلَى طَاعَتِهِ " .

(7090) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं कि, 'काफ़िर जब कोई नेकी का काम करता है तो उसे उसके सबब दुनिया ही में उम्दा खाना खिला दिया जाता है और रहा मोमिन तो अल्लाह तआला उसके लिए उसकी नेकियों को आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाता है और उसकी इताअत के नतीजे में दुनिया में उसे रिज़्क़ फ़राहम करता है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرُّزِّيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ عَطَاءٍ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِهِمَا .

(7091) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत के जैसी ही रिवायत बयान करते हैं।

बाब 15 : मोमिन की मिसाल (खेती की सी) है और काफ़िर की मिसाल (सनूबर के दरख़्त) की सी है।

(15)

بَاب : مَثَلُ الْمُؤْمِنِ وَمَثَلُ الْكَافِرِ

(7092) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मोमिन की मिसाल खेती की सी है, हमेशा हवा उसको झुकाती रहती है और मोमिन को भी हमेशा आज़माइश व इब्तिला या मुसीबत से दो चार होना पड़ता है और मुनाफ़िक़ की मिसाल ज़मीन में मज़बूती से पेवस्त दरख़्त की सी है जो उस वक़्त तक हिलता नहीं है, जब तक उसे काट न लिया जाए।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الزَّرْعِ لاَ تَزَالُ الرِّيحُ تُمِيلُهُ وَلاَ يَزَالُ الْمُؤْمِنُ يُصِيبُهُ الْبَلاَءُ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ كَمَثَلِ شَجَرَةِ الأَرْزِ لاَ تَهْتَزُّ حَتَّى تَسْتَحْصِدَ " .

तख़रीज 7092 : जामेअ तिर्मिज़ी : 2866.

फ़ायदा : मोमिन की मिसाल एक खेती की सी है, जिसे हवाएँ हमेशा हिलाती रहती है वह इधर उधर झुकता रहता है और यही चीज़ उसके नशो नुमा और फलने फूलने का बाइस बनती है इसी तरह मोमिन हमेशा बीमारियों और मसाइब व तकालीफ़ से दो चार होता रहता है, जो उसके गुनाहों की बख़्शिश और रफ़अे दरजात का सबब बनती हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ की मिसाल मज़बूत दरख़्त की है, जिसकी जड़ें ज़मीन में पेवस्त होती हैं और हवाएँ उसको हरकत नहीं दे सकतीं, इस तरह मुनाफ़िक़ के लिए बीमारियाँ और मसाइब व मुश्किलात गुनाहों का कफ़्फ़ारा का सबब नहीं बनते और उसको उनसे कोई सबक़ या इब्रत हासिल नहीं होती कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ व इनाबत करते, इस तरह वह कुछ मोमिन से कम मसाइब व तकालीफ़ का शिकार होता है, यहाँ तक कि उसका एक ही बार सख़्त मुवाख़िज़ा होगा, जिससे वह बच नहीं सकेगा, जिस तरह सनूबर के दरख़्त को काट दिया जाता है।

Sherkhan
9825 696 131

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِ عَبْدِ الرَّزَّاقِ مَكَانَ قَوْلِهِ تُمِيلُهُ " تُفِيئُهُ " .

(7093) यही रिवायत दो और उस्तादों से अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की सनद से बयान करते हैं और उसमें तुमीलुहू की जगह तुफ़ीउहू है, मआ़नी दोनों का झुकाना, माइल करना है।

इसकी तख़रीज हदीस 7023 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنِي ابْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، كَعْبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الْخَامَةِ مِنَ الزَّرْعِ تُفِيئُهَا الرِّيحُ وَتَصْرَعُهَا مَرَّةً وَتَعْدِلُهَا أُخْرَى حَتَّى تَهِيجَ وَمَثَلُ الْكَافِرِ كَمَثَلِ الأَرْزَةِ الْمُجْذِيَةِ عَلَى أَصْلِهَا لاَ يُفِيئُهَا شَىْءٌ حَتَّى يَكُونَ انْجِعَافُهَا مَرَّةً وَاحِدَةً " .

(7094) हज़रत कअ़ब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मोमिन की मिसाल तरोताज़ा और कच्ची खेती की सी है, जिसे हवा झुकाती है, कभी गिराती है और कभी सीधा करती है, यहाँ तक कि वह पुख़्ता होकर पक जाती है और काफ़िर की मिसाल ज़मीन में पेवस्त सनूबर की है, जो अपनी जड़ पर खड़ा रहता है, उसे कोई चीज़ हिला नहीं सकती, यहाँ तक कि दरख़्त एक ही बार उखड़ जाता है।

तख़रीज 7094 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मर्ज़ : 5643.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) ख़ामा : अँखवाँ, ज़मीन से निकलने वाली सूई, इब्तिदाई अंगूरी। (2) अल् मुज़्जिया : गुज़री हुई, ज़मीन में पेवस्त। (3) इन्जिआफ़ : उखड़ना।

फ़ायदा : एक मोमिन मुसीबतों और तक्लीफ़ों से मुतास्सिर होता है अपने हालात को सही करने की कोशिश करता है, लेकिन काफ़िर मुसीबतों व तक्लीफ़ों से मुतास्सिर होकर अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की तरफ़ रुख नहीं करता, यहाँ तक कि मौत के सख़्त थपेड़ों से दो चार हो जाता है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ

(7095) हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मोमिन की मिसाल नर्म व नाज़ुक खेती की सी है जिसे हवाएँ झुकाती रहती हैं,

الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الْخَامَةِ مِنَ الزَّرْعِ تُفِيئُهَا الرِّيَاحُ تَصْرَعُهَا مَرَّةً وَتَعْدِلُهَا حَتَّى يَأْتِيَهُ أَجَلُهُ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ مَثَلُ الأَرْزَةِ الْمُجْذِيَةِ الَّتِي لاَ يُصِيبُهَا شَىْءٌ حَتَّى يَكُونَ انْجِعَافُهَا مَرَّةً وَاحِدَةً " .

कभी गिराती हैं और कभी सीधा खड़ा कर देती हैं, यहाँ तक कि उसका वक़्ते मुक़र्ररा आ जाता है और मुनाफ़िक़ की मिसाल ज़मीन में गड़े हुए सनूबर की सी है, जिसे कोई आफ़त मुतास्सिर नहीं करती, यहाँ तक कि वह एक ही बार उखड़ जाता है।'

وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم غَيْرَ أَنَّ مَحْمُودًا قَالَ فِي رِوَايَتِهِ عَنْ بِشْرٍ " وَمَثَلُ الْكَافِرِ كَمَثَلِ الأَرْزَةِ " . وَأَمَّا ابْنُ حَاتِمٍ فَقَالَ " مَثَلُ الْمُنَافِقِ " . كَمَا قَالَ زُهَيْرٌ .

(7096) यही रिवायत इमाम साहब, मुहम्मद बिन हातिम और मुहम्मद बिन ग़ैलान से बयान करते हैं, महमूद की रिवायत में है, 'काफ़िर की मिसाल सनूबर की सी है।' और इब्ने अबी हातिम कहते हैं 'मुनाफ़िक़ की मिसाल।' जैसाकि ऊपर वाली रिवायत में है।

इसकी तख़रीज हदीस 7025 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ هَاشِمٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ الْقَطَّانُ - عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، - قَالَ ابْنُ هَاشِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، وَقَالَ ابْنُ بَشَّارٍ، عَنِ ابْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، - عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ وَقَالاَ جَمِيعًا فِي حَدِيثِهِمَا عَنْ يَحْيَى، " وَمَثَلُ الْكَافِرِ مَثَلُ الأَرْزَةِ " .

(7097) यही रिवायत इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से करते हैं, दोनों कहते हैं, 'काफ़िर की मिसाल सनूबर की सी है।'

तख़रीज 7097 : इसकी तख़रीज हदीस 7025 में गुज़र चुकी है।

बाब 16 : मोमिन की मिसाल खजूर के दरख़्त की सी है

(16) باب : مَثَلُ الْمُؤْمِنِ مَثَلُ النَّخْلَةِ

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، -وَاللَّفْظُ لِيَحْيَى -قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ -أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ، اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ مِنَ الشَّجَرِ شَجَرَةً لاَ يَسْقُطُ وَرَقُهَا وَإِنَّهَا مَثَلُ الْمُسْلِمِ فَحَدِّثُونِي مَا هِيَ " . فَوَقَعَ النَّاسُ فِي شَجَرِ الْبَوَادِي . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ وَوَقَعَ فِي نَفْسِي أَنَّهَا النَّخْلَةُ فَاسْتَحْيَيْتُ ثُمَّ قَالُوا حَدِّثْنَا مَا هِيَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ فَقَالَ " هِيَ النَّخْلَةُ " . قَالَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعُمَرَ قَالَ لأَنْ تَكُونَ قُلْتَ هِيَ النَّخْلَةُ أَحَبُّ إِلَىَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا .

(7098) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'बिला शुब्हा दरख़्तों में एक दरख़्त ऐसा है, जिसके पत्ते गिरते नहीं हैं और वह मुसलमान की त़रह (फ़ायदेमंद) है तो मुझे बताओ, वह कौनसा दरख़्त है?' लोग जंगलात के दरख़्तों के बारे में सोचने लगे, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं, मेरे दिल में ख़याल आया वह ख़ुजूर का दरख़्त है लेकिन मैंने (छोटो होने के सबब बताने से) शर्म महसूस किया फिर स़हाबा ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हमें बताइए, वह कौनसा दरख़्त है? तो आपने फ़र्माया, 'वह खुजूर का दरख़्त है।' ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं, मैंने अपनी शर्म का ज़िक्र ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से किया, उन्होंने कहा, अगर तुम यह कह देते, यह खुजूर का दरख़्त है तो तू मुझे फ़लाँ फ़लाँ चीज़ से ज़्यादा अ़ज़ीज़ होता।'

तख़रीज 7098 : सहीह बुख़ारी : 61.

फ़ायदा : इस ह़दीस से मालूम होता है, त़लबा (विद्यार्थियों) की मालूमात और ज़हानत का जायज़ा लेना सही है, हुज़ूरे अकरम(ﷺ) खुजूर का गाभा खा रहे थे तो आपने सवाल किया कि वह दरख़्त कौनसा है जिसके पत्ते नहीं झड़ते और वह मुसलमान की त़रह़ हर एतिबार से नफ़ाबख़्श और फ़ैज़रसाँ है, जिस त़रह़ मुसलमान मुजस्सम–ए–फ़ैज़ और पैकरे ख़ैर है, उसके किसी ह़िस्से से लोगों को तक्लीफ़ नहीं पहुँचती, इस त़रह़ इसका कोई ह़िस्सा और चीज़ बेकार नहीं जाता। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) जुम्मार के क़रीना से समझ गए कि यह खुजूर का दरख़्त है, लेकिन किबारे सहाबा का ज़हन उस क़रीने

की तरफ़ न गया, लेकिन हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बड़ों का एहतिराम में सवाल का जवाब देने से शर्मो हया महसूस की, जो एक पसंदीदा नेमत है, लेकिन बड़ों की ख़ामोशी की सूरत में जबकि जवाब देने में पहल नहीं की थी, जवाब देना अदबो एहतिराम के मुनाफ़ी न था, इसीलिए हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, अगर तुम यह जवाब दे देते तो मुझे सुर्ख़ ऊँटों से भी ज़्यादा महबूब होता, क्योंकि यह चीज़ रसूलुल्लाह(ﷺ) की शाबाशी और दुआ की वजह बनती।

(7099) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, एक दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपने साथियों से पूछा, 'मुझे उस दरख़्त का पता दो जिसकी मिसाल मोमिन की सी है।' तो लोग जंगलात के दरख़्तों में से किसी दरख़्त का ज़िक्र करने लगे, इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं, मेरे नफ़्स या दिल में यह बात डाली गई कि यह खुजूर का दरख़्त है तो मैं बताने का इरादा करने लगा तो मैंने लोगों की उम्रें देखकर बातचीत करने से हैबत महसूस की तो जब सब ख़ामोश रहे, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'यह खुजूर का दरख़्त है।'

सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म : 61; किताबुल बुयूअ : 2209; किताबुल अत्इमा : 5444, 5448.

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْغُبَرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ، الضُّبَعِيِّ عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا لأَصْحَابِهِ " أَخْبِرُونِي عَنْ شَجَرَةٍ مَثَلُهَا مَثَلُ الْمُؤْمِنِ " . فَجَعَلَ الْقَوْمُ يَذْكُرُونَ شَجَرًا مِنْ شَجَرِ الْبَوَادِي . قَالَ ابْنُ عُمَرَ وَأُلْقِيَ فِي نَفْسِي أَوْ رُوعِي أَنَّهَا النَّخْلَةُ فَجَعَلْتُ أُرِيدُ أَنْ أَقُولَهَا فَإِذَا أَسْنَانُ الْقَوْمِ فَأَهَابُ أَنْ أَتَكَلَّمَ فَلَمَّا سَكَتُوا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " هِيَ النَّخْلَةُ " .

(7100) इमाम मुजाहिद (रह.) कहते हैं, मैं मदीना तक हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) का रफ़ीक़े सफ़र बना तो मैंने उनसे रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ से एक हदीस सुनी, उन्होंने बताया, हम नबी अकरम(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे, चुनाँचे आपके पास खुजूर का गूदा लाया गया।' आगे ऊपर वाली रिवायत बयान की।

इसकी तख़रीज हदीस 7030 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، قَالَ صَحِبْتُ ابْنَ عُمَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ فَمَا سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلاَّ حَدِيثًا وَاحِدًا قَالَ كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَأُتِيَ بِجُمَّارٍ . فَذَكَرَ بِنَحْوِ حَدِيثِهِمَا .

मुफ़रदातुल हदीस : जुम्मार : खुजूर के क़ल्ब (वस्त, दरम्यान) से निकलने वाला गूदा, जिसे अहले अ़रब खाते थे।

(7101) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास खुजूर का गूदा लाया गया, आगे ऊपर वाली रिवायत के मुताबिक़ है।

तख़रीज 7101 : इसकी तख़रीज हदीस 7030 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا سَيْفٌ، قَالَ سَمِعْتُ مُجَاهِدًا، يَقُولُ سَمِعْتُ ابْنَ، عُمَرَ يَقُولُ أُتِيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِجُمَّارٍ ‏.‏ فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِهِمْ ‏.‏

(7102) हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास थे तो आपने फ़र्माया, 'मुझे उस दरख़्त का पता दो, जो मुसलमान आदमी के मुशाबेह या उसकी तरह है, उसके पत्ते नहीं थे।' इमाम मुस्लिम (रह.) के शागिर्द इब्राहीम (रह.) कहते हैं, शायद इमाम मुस्लिम (रह.) ने आगे कहा और वह अपना फल देता है, दूसरों के यहाँ भी मैंने ऐसे ही पाया कि वह हर वक़्त अपना फल नहीं देता। हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) कहते हैं, मेरे दिल में ख़्याल आया, यह खुजूर का दरख़्त है और मैंने हज़रत अबू बक्र और हज़रत उ़मर (रज़ि.) को ख़ामोश देखा तो बोलना या कुछ कहना पसंद न किया, चुनाँचे हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा, अगर तुम बता देते तो मुझे फ़लाँ फ़लाँ चीज़ से ज़्यादा महबूब होता।'

तख़रीज 7102 : सहीह बुख़ारी : 4698.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ ‏"‏ أَخْبِرُونِي بِشَجَرَةٍ شِبْهِ أَوْ كَالرَّجُلِ الْمُسْلِمِ لاَ يَتَحَاتُّ وَرَقُهَا ‏"‏ ‏.‏ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لَعَلَّ مُسْلِمًا قَالَ وَتُؤْتِي أُكُلَهَا ‏.‏ وَكَذَا وَجَدْتُ عِنْدَ غَيْرِي أَيْضًا وَلاَ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ ‏.‏ قَالَ ابْنُ عُمَرَ فَوَقَعَ فِي نَفْسِي أَنَّهَا النَّخْلَةُ وَرَأَيْتُ أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ لاَ يَتَكَلَّمَانِ فَكَرِهْتُ أَنْ أَتَكَلَّمَ أَوْ أَقُولَ شَيْئًا فَقَالَ عُمَرُ لأَنْ تَكُونَ قُلْتَهَا أَحَبُّ إِلَىَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا ‏.‏

फ़ायदा : इमाम मुस्लिम के शागिर्द इब्राहीम बिन सुफ़्यान और दूसरे तलामिज़ा (शागिर्दों) की रिवायत में 'ला तुअ्ती उकुलहा' है कि वह हर वक़्त फल नहीं देता और यह बात वाक़िया के ख़िलाफ़ है, इसलिए इमाम इब्राहीम कहते हैं, शायद हम से सुनने या बयान करने में ग़लती हो गई है, इमाम

मुस्लिम (रह़.) ने तुअ्ती उकुलहा ही कहा हो, उ़लमा-ए-ह़दीस क़ाज़ी अयाज़ वग़ैरह ने उसका जवाब यह दिया है ला अपनी जगह सही है लेकिन इसका तअ़ल्लुक़ तुअती से नहीं है, बल्कि अस़्ल यूँ है ला यतह़ातु वर्कुहा वला, वला न उसके पत्ते गिरते हैं, न फ़लाँ चीज़ है और न फ़लाँ आगे है तुअ्ती उकुलहा कुल्ल ह़ीन वह हर मौसम में अपना फल देता है, लेकिन रावी ने मअ़तूफ़ चीज़ों को बयान नहीं किया, इस त़रह़ ला का तअ़ल्लुक़ तुअ्ती से महसूस होने लगा और ग़लत़ मफ़्हूम पैदा हो गया। लेकिन रावी ने मअ़्तूफ़ चीज़ों को बयान नहीं किया, इस त़रह़ ला का तअ़ल्लुक़ तुअ्ती से महसूस होने लगा और ग़लत़ मफ़्हूम पैदा हो गया।

बाब 17 :
शैत़ान का (शर पर) बर अंगेख़्ता करना और लोगों को फ़ित्ना फ़साद में मुब्तला करने के लिए अपनी पार्टियों और दस्तों को भेजना और हर इंसान का एक शैत़ान साथी है।

(17)
بَاب : تَحْرِيشِ الشَّيْطَانِ وَبَعْثِهِ سَرَايَاهُ لِفِتْنَةِ النَّاسِ

(7103) ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने नबी अकरम(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'बिला शुब्हा शैत़ान इस वक़्त इससे मायूस हो चुका है कि नमाज़ी लोग जज़ीर–ए–अ़रब में उसकी परस्तिश करें, लेकिन वह बाहमी लड़ाई के लिए भड़काने की कोशिश करता है।'

तख़रीज 7103 : जामेअ तिर्मिज़ी : 1937.

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيِسَ أَنْ يَعْبُدَهُ الْمُصَلُّونَ فِي جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَلَكِنْ فِي التَّحْرِيشِ بَيْنَهُمْ " .

मुफ़रदातुल ह़दीस : तह़रीश : भड़काना, बर अंगेख़्ता करना।

फ़ायदा : इस ह़दीस से साबित होता है कि शैत़ान इस बात से मायूस हो चुका है कि अ़रब के लोग बुतपरस्ती की त़रफ़ की लौट जाएँ और जज़ीर–ए–अ़रब पर काफ़िरों का तसल्लुत़ व ग़ल्बा हो, लेकिन वह उनके बीच फित्ना व फ़साद डालना और बाहमी अ़दावत व दुश्मनी पैदा करने से मायूस नहीं हुआ,

इसलिए बाहमी फ़ित्ना फ़साद की आग भड़काने और उनमें इख़्तिलाफ़ व इफ़्तिराक़ पैदा करने के लिए पूरा ज़ोर लगाता है, इसलिए आज तक जज़ीरा अ़रब में बुतपरस्ती नहीं हुई, लेकिन इसका यह मतलब नहीं हुई, बुतपरस्ती के सिवा, शिर्क की कोई और शक्ल भी पैदा नहीं होगी, लोग नेक लोगों या अम्बिया और मलाइका के बारे में किसी ग़ुलू का शिकार नहीं होंगे और उनकी क़ब्रों से इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा नहीं करेंगे।

(7104) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ كِلاَهُمَا عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(7105) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'इब्लीस का तख़्त समुन्द्र पर है, चुनाँचे वह अपने दस्ते भेजता है, जो लोगों के बीच फ़ित्ना फ़साद पैदा करते हैं, उसके नज़दीक सबसे बड़े मर्तबे वाला वह है जो सबसे बड़ा फ़ित्ना बरपा करता है।'

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ عَرْشَ إِبْلِيسَ عَلَى الْبَحْرِ فَيَبْعَثُ سَرَايَاهُ فَيَفْتِنُونَ النَّاسَ فَأَعْظَمُهُمْ عِنْدَهُ أَعْظَمُهُمْ فِتْنَةً " .

(7106) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'इब्लीस अपना अ़र्श (तख़्त) पानी पर रखता है, फिर वह अपने दस्ते रवाना करता है और उसका सबसे ज़्यादा क़रीबी वह है जो सबसे बड़ा फ़ित्ना गर हो, उनमें से कोई आकर कहता है, मैंने यह काम किया, यह काम किया तो वह कहता है तूने कुछ नहीं किया, फिर उनमें से कोई आकर कहता है, मैंने उसका पीछा नहीं छोड़ा, यहाँ तक कि उसके और उसकी बीवी

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ -قَالاَ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ إِبْلِيسَ يَضَعُ عَرْشَهُ عَلَى الْمَاءِ ثُمَّ يَبْعَثُ سَرَايَاهُ فَأَدْنَاهُمْ مِنْهُ مَنْزِلَةً أَعْظَمُهُمْ فِتْنَةً يَجِيءُ أَحَدُهُمْ فَيَقُولُ فَعَلْتُ كَذَا وَكَذَا فَيَقُولُ مَا صَنَعْتَ شَيْئًا قَالَ ثُمَّ يَجِيءُ أَحَدُهُمْ فَيَقُولُ

مَا تَرَكْتُهُ حَتَّى فَرَّقْتُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ امْرَأَتِهِ - قَالَ - فَيُدْنِيهِ مِنْهُ وَيَقُولُ نِعْمَ أَنْتَ " . قَالَ الأَعْمَشُ أُرَاهُ قَالَ " فَيَلْتَزِمُهُ " .

के बीच जुदाई पैदा कर दी तो वह उसे अपने क़रीब करता है और कहता है, वाक़ेई तुमने काम किया है।' आमश कहते हैं , मेरा ख़याल है, आपने फ़र्माया, 'चुनाँचे वह उसे अपने साथ चिमटा लेता है, गले लगा लेता है।'

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है मियाँ बीवी में फ़िराक़ और जुदाई पैदा करना, शैतान का सबसे बढ़कर महबूब मशग़ला है, और यही सबसे बड़ा फ़ित्ना है जिसको बरपा करने वाला शैतान को बहुत महबूब है क्योंकि मियाँ बीवी मुआशरा की बुनियादी इकाई है, उनके बाहमी तनाज़ा से दो ख़ानदान और उनके मुतअल्लिक़ीन और मुतवस्सिलीन (जुड़े लोग) मुतास्सिर होते हैं और फ़ित्ना व फ़साद का मैदान बहुत वसीअ और गहरा हो जाता है, जो बसा औक़ात क़त्लो ग़ारत तक पहुँच जाता है।

حَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " يَبْعَثُ الشَّيْطَانُ سَرَايَاهُ فَيَفْتِنُونَ النَّاسَ فَأَعْظَمُهُمْ عِنْدَهُ مَنْزِلَةً أَعْظَمُهُمْ فِتْنَةً "

(7107) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि उसने नबी अकरम(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'शैतान अपने दस्ते रवाना करता है, चुनाँचे वह लोगों को फ़ित्ने में डालते हैं, उसके नज़दीक उसका दर्जा सबसे बुलंद होता है जो सबसे बढ़कर फ़ित्ना पैदा करता है।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ وَقَدْ وُكِّلَ بِهِ قَرِينُهُ مِنَ الْجِنِّ " . قَالُوا وَإِيَّاكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " وَإِيَّاىَ إِلاَّ أَنَّ اللَّهَ أَعَانَنِي عَلَيْهِ فَأَسْلَمَ فَلاَ يَأْمُرُنِي إِلاَّ بِخَيْرٍ " .

(7108) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुममें से हर एक के साथ, उसका एक जिन्न साथी लगा दिया गया है।' साथियों ने पूछा और आपके साथ भी? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'मेरे साथ भी, लेकिन अल्लाह तआ़ला उसके ख़िलाफ़ मेरी मदद करता है, इसलिए मैं उससे महफ़ूज़ रहता हूँ, या वह मुतीअ़ हो गया है और मुझे सिर्फ़ ख़ैर और भलाई का मश्वरा ही देता है।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि हर मुसलमान के साथ एक शैतान साथी लगा हुआ है जो उसको राहे रास्त से भटकाने की कोशिश करता है और उसे ग़लत मश्वरा देता है, उससे सिर्फ़ नबी अकरम(ﷺ) महफ़ूज़ हैं , वह आपको अच्छा मश्वरा ही देता है, ग़लत मश्वरा देने की जसारत नहीं कर सकता, अगर अस्लमु बाब समिआ से मुज़ारेअ मुतकल्लिम का सेग़ा बनाएँ तो मआनी होगा, मैं महफ़ूज़ रहता हूँ, अगर अस्लम अकरम के वज़न पर माज़ी का सेग़ा हो तो मआनी होगा, वह मुतीअ व फ़र्माबरदार बन गया है और अल्लाह की क़ुदरत से यह भी बाहर नहीं , अगर वह मुसलमान और मोमिन बन जाए, बहर हाल हमें हर वक़्त शैतान से होशियार और चौकन्ना रहने की ज़रूरत है, वह हर वक़्त दाव में रहता है।

حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - يَعْنِيَانِ ابْنَ مَهْدِيٍّ - عَنْ سُفْيَانَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ عَمَّارِ بْنِ رُزَيْقٍ، كِلاَهُمَا عَنْ مَنْصُورٍ، بِإِسْنَادِ جَرِيرٍ . مِثْلَ حَدِيثِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ سُفْيَانَ " وَقَدْ وُكِّلَ بِهِ قَرِينُهُ مِنَ الْجِنِّ وَقَرِينُهُ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ " .

(7109) इमाम साहब अपने दो उस्तादों से इस फ़र्क़ के साथ यह हदीस बयान करते हैं कि, 'उस पर एक शैतान साथी मुक़र्रर है और एक साथी फ़रिश्तों में से है।'

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि हर मुसलमान को शैतान के दाव और फ़रेब से आगाह करने के लिए उसके साथ एक फ़रिश्ता भी लगा हुआ है जो उसको अच्छा और सही मश्वरा देता है, अब यह इंसान की अपनी मर्ज़ी है कि वह शैतान के मश्वरे को क़ुबूल करता है या फ़रिश्ते के मश्वरे को।

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو صَخْرٍ، عَنِ ابْنِ، قُسَيْطٍ حَدَّثَهُ أَنَّ عُرْوَةَ حَدَّثَهُ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم حَدَّثَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَرَجَ مِنْ عِنْدِهَا لَيْلاً . قَالَتْ فَغِرْتُ عَلَيْهِ فَجَاءَ فَرَأَى مَا أَصْنَعُ

(7110) नबी अकरम(ﷺ) की ज़ोजा मोहतरमा हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) एक रात उनके यहाँ से निकले तो उस पर ग़ैरत आ गई (क्योंकि मैंने समझा, आप किसी दूसरी बीवी के यहाँ तशरीफ़ ले गए हैं) आप आए ता आपने देखा मैं किस तरह पेचो ताब खा रही हूँ, चुनाँचे आपने फ़र्माया, 'तुम्हें क्या हो

فَقَالَ " مَا لَكِ يَا عَائِشَةُ أَغِرْتِ " . فَقُلْتُ وَمَا لِي لاَ يَغَارُ مِثْلِي عَلَى مِثْلِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَقَدْ جَاءَكِ شَيْطَانُكِ " . قَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَوَمَعِيَ شَيْطَانٌ قَالَ " نَعَمْ " . قُلْتُ وَمَعَ كُلِّ إِنْسَانٍ قَالَ " نَعَمْ " . قُلْتُ وَمَعَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " نَعَمْ وَلَكِنْ رَبِّي أَعَانَنِي عَلَيْهِ حَتَّى أَسْلَمَ " .

गया है? ऐ आइशा! क्या तुम ग़ैरत खा गई हो? तो मैंने कहा, यह कैसे हो सकता है कि मेरे जैसी आप जैसे के बारे में ऐसी ग़ैरत न खाए, मेरे जैसी आप पर ग़ैरत क्यूँ नहीं खाएगी? चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क्या तुम्हारे पास, तुम्हारा शैतान आ चुका है?' मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या मेरे साथ शैतान है? आपने फ़र्माया, 'हाँ!' मैंने कहा और हर इंसान के साथ? आपने फ़र्माया, 'हाँ!' मैंने कहा और आपके साथ भी? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'हाँ!' लेकिन मेरे रब ने उसके ख़िलाफ़ मेरी मदद फ़र्माई है, यहाँ तक कि मैं महफ़ूज़ हो गया हूँ, या वह फ़र्मांबरदार मुसलमान हो गया है।'

(18)
بَاب : لَنْ يَدْخُلَ اَحَدُ الْجَنَّةَ بِعَمَلِهِ بَلْ بِرَحْمَةِ اللّٰهِ تَعَالَى

बाब 18 : कोई इंसान सिर्फ़ अपने अमलों के बदले जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, बल्कि अल्लाह की रहमत उसका सबब होगी।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ بُكَيْرٍ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لَنْ يُنْجِيَ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ " . قَالَ رَجُلٌ وَلاَ إِيَّاكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " وَلاَ إِيَّاىَ إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِيَ اللَّهُ مِنْهُ بِرَحْمَةٍ وَلَكِنْ سَدِّدُوا " .

(7111) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुममें से किसी शख़्स को उसका अमल नजात नहीं देगा।' एक आदमी ने पूछा, 'ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! और आपको भी नहीं? आपने फ़र्माया, 'और मुझे भी नहीं।' मगर यह कि अल्लाह मुझे अपनी रहमत से ढाँप ले लेकिन तुम दुरुस्तगी इख़्तियार करो।'

फ़ायदा : जन्नत में दाख़िला का सबब सिर्फ़ इंसान का अमल नहीं बन सकता, क्योंकि अमल की तौफ़ीक़ और उसकी क़ुबूलियत दोनों अल्लाह के फ़ज़्लो करम और रहमत का नतीजा हैं, नीज़ इंसानी अमल किसी क़द्र बुलंद व बाला हो, हक़ तो यह है, हक़ अदा न हुआ का मिस्दाक़ है और एक महदूद अमल, ला महदूद जज़ा का सबब भी नहीं बन सकता, इसलिए अमल का जन्नत का सबब बनाना यह भी उसकी रहमत है, गोया अमले इंसानी जन्नत में दाख़िला का सबब है, लेकिन उसको सबब बनाना, रहमते इलाही का नतीजा है, इसलिए आयते मुबारका

'अपने अमलों के सबब जन्नत में जाएगा।' (नहल : 32)

और **'उस जन्नत के वारिस तुम अमलों के सबब ठहराए गए हो।'** (ज़ुख़रुफ़ : 72)

इस हदीस और आयत में मुख़ालिफ़त या मुनाफ़ात नहीं है क्योंकि आयत में बा सबबिया है और हदीस में नफ़्से एवज और बदला की है कि अमलों के एवज या बदला में नहीं बल्कि अमल अल्लाह की रहमत का सबब हैं और रहमत ही जन्नत में दाख़िला का सबब है और इस हदीस में मुख़ालिफ़त या मुनाफ़ात नहीं है, इसलिए आपने सदा (सेहत व दुरुस्तगी) को इख़्तियार करने का हुक्म दिया है, ताकि यह तर्ज़े अमल रहमते इलाही का सबब बन सके।

وَحَدَّثَنِيهِ يُونُسُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّدَفِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو، بْنُ الْحَارِثِ عَنْ بُكَيْرِ بْنِ الأَشَجِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَفَضْلٍ " . وَلَمْ يَذْكُرْ " وَلَكِنْ سَدِّدُوا " .

(7112) इमाम साहब यही रिवायत थोड़े फ़र्क़ से एक और उस्ताद से बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'अपनी रहमत व फ़ज़्ल से।' और लेकिन राहे रास्त और दुरुस्तगी इख़्तियार करो का तज़्किरा नहीं किया।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَا مِنْ أَحَدٍ يُدْخِلُهُ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ " . فَقِيلَ وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي رَبِّي بِرَحْمَةٍ " .

(7113) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'किसी को भी सिर्फ़ उसके अमल जन्नत में नहीं ले जाएँगे।' पूछा गया और आपको भी नहीं? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'और मुझे भी नहीं, मगर यह कि मेरा रब, मुझे रहमत से ढाँप ले।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " لَيْسَ أَحَدُ مِنْكُمْ يُنْجِيهِ عَمَلُهُ " . قَالُوا وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِيَ اللَّهُ مِنْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَرَحْمَةٍ " . وَقَالَ ابْنُ عَوْنٍ بِيَدِهِ هَكَذَا وَأَشَارَ عَلَى رَأْسِهِ " وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِيَ اللَّهُ مِنْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَرَحْمَةٍ "

(7114) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुममें से किसी को सिर्फ़ उसके अमल नजात नहीं दिला सकेंगे।' सहाबा किराम ने अर्ज़ किया और आपको भी नहीं? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'मुझे भी नहीं, मगर यह कि अल्लाह तआला मुझे अपनी बख़्शिश और रहमत से ढाँप ले।' इब्ने औन ने इस तरह हाथ के इशारे से अपने सिर को ढाँप लिया और कहा, 'और मुझे भी नहीं, मगर यह कि अल्लाह तआला मुझे अपनी बख़्शिश और रहमत से ढाँप ले।'

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لَيْسَ أَحَدٌ يُنْجِيهِ عَمَلُهُ " . قَالُوا وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَدَارَكَنِيَ اللَّهُ مِنْهُ بِرَحْمَةٍ" .

(7115) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'किसी को भी उसका अमल नजात नहीं दिलवा सकेगा।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने कहा और आपको भी नहीं? आपने फ़र्माया, 'और मुझे भी नहीं।' मगर यह कि अल्लाह अपनी रहमत मेरे शामिल हाल कर दे।'

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَبَّادٍ، يَحْيَى بْنُ عَبَّادٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ، مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ" لَنْ يُدْخِلَ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ " . قَالُوا وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِيَ اللَّهُ مِنْهُ بِفَضْلٍ وَرَحْمَةٍ

(7116) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुममें से किसी को उसका अमल जन्नत में नहीं ले जा सकेगा।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने कहा और अपको भी नहीं? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'और मुझे भी नहीं।' मगर यह कि मुझे अल्लाह अपने फ़ज़्ल और रहमत से ढाँप ले।

तख़रीज 7116 : सहीह बुख़ारी : 5673.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَارِبُوا وَسَدِّدُوا وَاعْلَمُوا أَنَّهُ لَنْ يَنْجُوَ أَحَدٌ مِنْكُمْ بِعَمَلِهِ " . قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَلاَ أَنْتَ قَالَ " وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِيَ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَفَضْلٍ " .

(7117) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'राहे रास्त और दुरुस्तगी के क़रीब रहो और राहे रास्त पर चलो और यक़ीन कर लो, तुममें से कोई भी अपने अ़मल से नजात नहीं पा सकेगा।' स़हाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप भी नहीं ? आपने फ़र्माया, 'मैं भी नहीं यहाँ तक कि अल्लाह मुझे अपनी रहमत और फ़ज़्ल से ढाँप ले।'

फ़ायदा : मुसलमान के लिए सही तर्ज़े अ़मल यही है कि वह इफ़रात व तफ़रीत़ कमी व बेशी से बचते हुए राहे रास्त पर चलता रहे, या कम अज़्कम राहे रास्त के क़रीब क़रीब रहने की कोशिश करे, क्योकि इफ़रात व तफ़रीत दोनों ही राहे रास्त से दूर ले जाने वाली चीजें हैं और यह उस सूरत में मुम्किन है, जब इंसान अल्लाह तआला से उसकी तौफ़ीक़ की दरख़्वास्त करता रहे और अल्लाह तआला अपनी रहमत व फ़ज़्ल से इंसान को उसकी तौफ़ीक़ बख़्श दे, इस तरह हर फ़र्दे बशर हर वक़्त अल्लाह तआला की रहमत का मोहताज है, अल्लाह तआला सब मुसलमानों पर अपनी रहमत और फ़ज़्ल का साया रखे।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِثْلَهُ .

(7118) हज़रत जाबिर (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِالإِسْنَادَيْنِ جَمِيعًا كَرِوَايَةِ ابْنِ نُمَيْرٍ

(7119) इमाम साहब एक और उस्ताद से दोनों स़हाबा अबू हुरैरा, जाबिर (रज़ि.) से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ وَزَادَ " وَأَبْشِرُوا " .

(7120) इमाम स़ाहब अपने दूसरे उस्तादों से अबू हुरैरा (रज़ि.) की ऊपर वाली हदीस, इस इज़ाफ़ा से बयान करते हैं, 'और ख़ुश हो जाओ।'

حَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا مَعْقِلٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لاَ يُدْخِلُ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ وَلاَ يُجِيرُهُ مِنَ النَّارِ وَلاَ أَنَا إِلاَّ بِرَحْمَةٍ مِنَ اللَّهِ ".

(7121) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़रमाते हुए सुना, 'तुममें से किसी को उसका अमल जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकेगा, और न उसे आग से बचाएगा और न मुझे, मगर अल्लाह की रहमत से।'

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ، عُقْبَةَ ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا مُوسَى، بْنُ عُقْبَةَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، يُحَدِّثُ عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهَا كَانَتْ تَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا فَإِنَّهُ لَنْ يُدْخِلَ الْجَنَّةَ أَحَدًا عَمَلُهُ " . قَالُوا وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِيَ اللَّهُ مِنْهُ بِرَحْمَةٍ وَاعْلَمُوا أَنَّ أَحَبَّ الْعَمَلِ إِلَى اللَّهِ أَدْوَمُهُ وَإِنْ قَلَّ ".

(7122) नबी अकरम(ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती थीं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, 'दुरुस्तगी इख़्तियार करो।' उसके क़रीब क़रीब रहो।' और ख़ुश हो जाओ, क्योंकि किसी को उसका अमल जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकेगा।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा और आपको भी नहीं? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'और मुझे भी नहीं, मगर यह कि अल्लाह मुझे अपनी रहमत से ढाँप ले और जान लो, अल्लाह को वही अमल पसंद है, जिस पर दवाम (हमेशगी) किया जाए, अगरचे थोड़ा हो।'

तख़रीज 7122 : सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक : 6464, 6467.

وَحَدَّثَنَاهُ حَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، بْنُ الْمُطَّلِبِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ " وَأَبْشِرُوا ".

(7123) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, लेकिन उसमें 'और ख़ुश हो जाओ।' का ज़िक्र नहीं है।

तख़रीज 7123 : इसकी तख़रीज हदीस 7053 में गुज़र चुकी है।

बाब 19 : अमल ज़्यादा करना और इबादत में सई व कोशिश या मेहनत करना

(19)باب : اِكْثَارِ الْاَعْمَالِ وَالاجْتِهَادِ فِى الْعِبَادَةِ

(7124) हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) ने (इतनी देर तक) नमाज़ पढ़ी कि आपके क़दम सूज गए, चुनाँचे आपसे पूछा गया, क्या आप इस क़द्र मशक़्क़त बर्दाश्त करते हैं, हालाँकि अल्लाह ने आपके अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर दिये हैं तो आपने फ़र्माया, 'क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ।'

सहीह बुख़ारी, किताबुत् तहज्जुद : 1130; किताबुत्तफ़्सीर : 4836; किताबुर्रिक़ाक़ : 6471; जामेअ तिर्मिज़ी : 412; नसाई : 1643; इब्ने माजा : 1419.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ، شُعْبَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم صَلَّى حَتَّى انْتَفَخَتْ قَدَمَاهُ فَقِيلَ لَهُ أَتَكَلَّفُ هَذَا وَقَدْ غَفَرَ اللَّهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ فَقَالَ " أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا " .

(7125) हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने इस क़द्र क़ियाम किया, यहाँ तक कि आपके क़दम सूज गए। सहाबा किराम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, अल्लाह आपके अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर चुका है। आपने फ़र्माया, 'तो क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ?'

इसकी तख़रीज हदीस 7055 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ، سَمِعَ الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ، يَقُولُ قَامَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم حَتَّى وَرِمَتْ قَدَمَاهُ قَالُوا قَدْ غَفَرَ اللَّهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ . قَالَ " أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا " .

(7126) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) जब नमाज़ पढ़ते, इस क़द्र क़ियाम करते, यहाँ तक कि आपके पैर फट जाते, हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप इस

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَهَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو صَخْرٍ، عَنِ ابْنِ قُسَيْطٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله

عليه وسلم إِذَا صَلَّى قَامَ حَتَّى تَفَطَّرَ رِجْلاَهُ قَالَتْ عَائِشَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَصْنَعُ هَذَا وَقَدْ غُفِرَ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ فَقَالَ " يَا عَائِشَةُ أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا " .

क़द्र मशक़्क़त बर्दाश्त करते हैं, हालाँकि आपके अगले पिछले गुनाह माफ़ किये जा चुके हैं? तो आपने फ़र्माया, 'ऐ आइशा! तो क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ?'

फ़ायदा : ज़न्ब का इत्लाक़ बहुत वसीअ है, जो काम किसी की शान व मक़ाम से फ़रोतर हो, या ख़िलाफ़े औला हो, उसको भी 'ज़न्ब' कहते हैं और उससे बढ़कर कुफ़्र व शिर्क तक भी उसका इत्लाक़ होता है, यहाँ मुराद वह काम हैं, जो आपके बुलंद व बाला मक़ाम से फ़रोतर (हल्के) थे, या ख़िलाफ़े औला थे और बक़ौल क़ाज़ी सुलेमान (रह.) इससे मुराद वह इल्ज़ामात हैं जो हिज्रत से पहले और हिज्रत के बाद आप पर लगाए गए थे, तफ़्सील के लिए रहमतुल लिल आलमीन में देखिए, पीर करमशाह ने यह मआनी नक़्ल किया, लेकिन क़ाज़ी साहब का नाम नहीं लिया। (ज़ियाउल क़ुरआन, जि : 5 पेज 532 से 533) यह मआनी करना तकल्लुफ़ से ख़ाली नहीं है, क्योंकि मूसा (अ.) के वाक़िया (व लहुम अलय्य ज़ंबुन फ़अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून) (शुअरा : 14) से इस्तिदलाल किया है। और इस ज़न्ब को मूसा (अ.) ख़ुद ज़ुल्म से ताबीर करके माफ़ी की दरख़्वास्त करते हैं (क़ाला रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर ली फ़ग़फ़रलहू इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर रहीम) (सूरह क़सस : 16) इसलिए आप(ﷺ) का इबादत में इस क़द्र मशक़्क़त बर्दाश्त करना मग़्फ़िरत के शुक्र के तौर पर था कि जब अल्लाह तआला ने मुझ पर यह करम व फ़ज़्ल फ़र्माया है कि मेरे तमाम ज़न्ब माफ़ कर दिये हैं तो मुझे उस नेमत व करम का शुक्र अदा करना चाहिए। इससे मालूम हुआ शुक्र जिस तरह ज़ुबान से अदा किया जाता है उसी तरह अमल से भी शुक्र अदा किया जाता है, जैसाकि फ़र्माने बारी तआला है (इअ़्मलू आला दाऊद शुक्रन) (सबा : 13)

(20) بَاب : الِاقْتِصَادِ فِيْ الْمَوْعِظَةِ

बाब 20 : वअज़ व नसीहत में एतिदाल

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، -وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ

(7127) शक़ीक़ (रह.) बयान करते हैं, हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के दरवाज़े पर उनके इंतिज़ार में बैठे हुए थे कि हमारे पास से यज़ीद बिन मुआविया नख़ई (रह.) गुज़रे तो हमने उनसे कहा, हज़रत

شَقِيقٍ، قَالَ كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ بَابِ عَبْدِ اللَّهِ نَنْتَظِرُهُ فَمَرَّ بِنَا يَزِيدُ بْنُ مُعَاوِيَةَ النَّخَعِيُّ فَقُلْنَا أَعْلِمْهُ بِمَكَانِنَا . فَدَخَلَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَلْبَثْ أَنْ خَرَجَ عَلَيْنَا عَبْدُ اللَّهِ فَقَالَ إِنِّي أُخْبَرُ بِمَكَانِكُمْ فَمَا يَمْنَعُنِي أَنْ أَخْرُجَ إِلَيْكُمْ إِلاَّ كَرَاهِيَةُ أَنْ أُمِلَّكُمْ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَتَخَوَّلُنَا بِالْمَوْعِظَةِ فِي الأَيَّامِ مَخَافَةَ السَّآمَةِ عَلَيْنَا .

अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को हमारी मौजूदगी से आगाह करो, वह उनके पास गए और जल्द ही हमारे पास अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) आ गए और कहने लगे, मुझे तुम्हारी आमद की ख़बर दी जाती है, मगर मैं इसलिए तुम्हारे पास नहीं आता कि मैं तुम्हें उक्ताहट में मुब्तला करना नापसंद करता हूँ, क्योंकि रसूलुल्लाह(ﷺ) मुख़्तलिफ़ अय्याम में वअ़ज़ो नसीहत के वक़्त हमारा ध्यान रखते थे कि कहीं हम उक्ता न जाएँ।

सहीह बुख़ारी, किताबुल इ़ल्म : 68; किताबुद्दअ़वात : 6411; तिर्मिज़ी : 2855, 2855मी.

फ़ायदा : रसूलुल्लाह(ﷺ) के तर्ज़े अ़मल से यह बात साबित होती है, वअ़जो नसीहत में इस क़द्र तूल बयानी (लम्बी गुफ़्तगू) से काम नहीं लेना चाहिए कि लोग उकता जाएँ, अगर रोज़ाना वअ़ज़ो नसीहत कहना हो तो कम वक़्त लेना चाहिए, या फिर वक़्फ़ा वक़्फ़ा से कुछ दिन छोड़कर वअ़ज़ करना चाहिए, हाँ! ता'लीम व तदरीस का काम रोज़ाना किया जाएगा।

حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، ح وَحَدَّثَنَا مِنْجَابُ بْنُ الْحَارِثِ التَّمِيمِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ مُسْهِرٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالاَ أَخْبَرَنَا عِيسَى، بْنُ يُونُسَ ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَهُ . وَزَادَ مِنْجَابٌ فِي رِوَايَتِهِ عَنِ ابْنِ مُسْهِرٍ قَالَ الأَعْمَشُ وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ مِثْلَهُ .

(7128) इमाम साहब अपने कुछ दूसरे उस्तादों से भी यही रिवायत बयान करते हैं।

तख़रीज 7128 : इसकी तख़रीज हदीस 7058 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، -وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ شَقِيقٍ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ كَانَ عَبْدُ اللَّهِ يُذَكِّرُنَا كُلَّ يَوْمِ خَمِيسٍ فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنَّا نُحِبُّ حَدِيثَكَ وَنَشْتَهِيهِ وَلَوَدِدْنَا أَنَّكَ حَدَّثْتَنَا كُلَّ يَوْمٍ . فَقَالَ مَا يَمْنَعُنِي أَنْ أُحَدِّثَكُمْ إِلاَّ كَرَاهِيَةُ أَنْ أُمِلَّكُمْ . إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَتَخَوَّلُنَا بِالْمَوْعِظَةِ فِي الأَيَّامِ كَرَاهِيَةَ السَّآمَةِ عَلَيْنَا .

(7129) अबू वाइल (रह.) बयान करते हैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) हमें हर जुमेरात को वअ़ज़ किया करते थे, तो उनसे एक आदमी ने कहा, ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान! हम आपकी बातचीत पसंद करते हैं और उसके ख़्वाहिशमंद हैं और हम चाहते हैं, आप हमें रोज़ाना वअ़ज़ फ़र्माया करें तो उन्होंने जवाब दिया, मुझे तुम्हें रोज़ाना वअ़ज़ करने से सिर्फ़ यह चीज़ मानेअ (रूकावट) है कि मैं तुम्हें उक्ताहट में मुब्तला करना पसंद नहीं करता, क्योंकि रसूलुल्लाह(ﷺ) हमारी उक्ताहट को नापसंद करते हुए, वअ़ज़ करने में हमारा ख़्याल और ध्यान रखते हुए मुख़्तलिफ़ दिनों में वअ़ज़ करते।

सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म : 70.

फ़ायदा : हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने अंसारी साथी के साथ बारी मुक़र्रर की हुई थी, एक दिन हज़रत उ़मर (रज़ि.) आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते और एक दिन अंसारी साथी, इस तरह ता'लीम व तअ़ल्लुम का सिलसिला रोज़ाना जारी रहता।

इस किताब के कुल बाब 20 और 105 अहादीस हैं।

كتاب الجنة وصفة نعيمها وأهلها

जन्नत, उसकी नेअ़मतों और जन्नतियों का बयान

हदीस नम्बर 7130 से 7234 तक

जन्नत, उसकी नेमतें और अहले जन्नत

जन्नत अल्लाह की रज़ा का बलन्द तरीन मक़ाम है। अल्लाह अपने बन्दों को अपनी रज़ा, अपने क़ुर्ब और अपने जमाल की लज़्ज़तों और दूसरी नेमतों से सरफ़राज़ करने के लिये, जिनसे सही तौर पर लज़्ज़तयाब होना इन्सान की मौजूदा ख़िल्क़त की सलाहियतों के बस से बाहर है, इन्सान को अज़ सरे नौ ख़िल्क़त अ़ता फ़रमायेगा। अल्लाह की जो नेमतें उसके बन्दों के लिये तैयार की गई हैं, मौजूदा ज़िन्दगी में न उनका इदराक किया जा सकता है न तसव्वुर। समाअ़त के ज़रिये से भी उनका एहाता मुमकिन नहीं। इस बात का अन्दाज़ा इस तरह किया जा सकता है कि मौजूदा ज़िन्दगी में जो नेमतें मयस्सर हैं वह इतनी घटिया, बेवक़अ़त और आ़रज़ी हैं कि उनको जहन्नम के रास्तों में बिखेर दिया गया है। वह उससे ज़्यादा वक़अ़त नहीं रखतीं। जो नेमतें अल्लाह की रज़ा की बलन्द तरीन मन्ज़िल में मयस्सर होंगी उनके बारे में यही कहा जा सकता है; 'किसी इन्सान को मालूम नहीं कि उनके लिये क्या क्या कुछ छुपा कर रखा गया है।' (अस्सज्दा: 32/17)

अगर रक़्बे और नेमतों के हज्म ही की बात की जाये तो जन्नत की वुस्अ़त और उसकी हर चीज़ इतनी बड़ी है कि मौजूदा ज़िन्दगी में इन्सान उसके साइज़ और हज्म का इदराक नहीं कर सकता। एक दरख़्त ही इतना बड़ा होगा कि उसके नीचे एक सवार सो साल भी चलता रहे तो उसके साये को उ़बूर (पार) नहीं कर सकेगा।

इस दुनिया में ख़ूश हाली की इन्तेहा बदहाली पर होती है और बदहाली की ख़ूशहाली पर। कोई नेमत मिले तो थोड़ी सी मोहलत के लिये मिलती है। जन्नत में अल्लाह की रज़ा जिससे तमाम क़िस्म की नेमतें वाबस्ता मोहलतों और वक़्फ़ों के दाइरों से बाहर हमेशा हमेशा के लिये होगी, उसकी नेमतें भी हमेशा हमेशा के लिये होंगी।

अहले ईमान के मरातिब इतने बलन्द होंगे कि उनके क़ुर्ब की बात तो रही एक तरफ़, उनको अच्छी तरह देखना भी मुमकिन न होगा। ऐसे नज़र आयेंगे जैसे बलन्दी पे सितारे नज़र आते हैं। महबूबे रब्बुल आ़लमीन के नज़ार-ए-जमाल की ख़ातिर अपने माल और अपने अहल व अ़याल की क़ुर्बानी की क़ीमत भी सस्ती होगी। तमाम अहले जन्नत के हुस्न व जमाल में हर दम इज़ाफ़े की ये कैफ़ियत होगी कि जन्नत के बाज़ार से वापस आयेंगे तो घर वालों को नज़र आयेगा कि उनके हुस्न व जमाल में इज़ाफ़ा हो चुका है और आने वालों को अपने घर वाले हसीन तर नज़र आयेंगे। सबसे ऊँचे दर्जे के लोग चाँद की तरह और उनके बाद तारों की तरह दिखते होंगे। तमाम अहले जन्नत का जमाल रोज़ बरोज़, बल्कि हर घड़ी बढ़ने वाला होगा। इस कैफ़ियत का दुनिया में तसव्वुर तक नहीं किया जा सकता। उनके जमाल को गिनाने वाली कोई बात उनके वजूद में नहीं होगी, तरह तरह के माकूलात और मुशरूबात की नेमतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे

लेकिन वह नेमतें इतनी लतीफ़ होंगी कि उनका कोई हिस्सा फ़ोज़्ला (गन्दगी) न बनेगा। पेशाब पाख़ाने की हाजत न होगी। एक डकार से सब कुछ जुज़्वे बदन बन जायेगा। उनका पसीना तक कस्तूरी की तरह ख़ूशबूदार होगा। ये हर ऐतबार से मुकम्मल जमाल है जिसमें कहीं कोई ख़ामी मौजूद नहीं।

मुआशरती ज़िन्दगी सिर्फ़ लुत्फ़, मोहब्बत और मुवानसत से इबारत होगी, कोई मनफ़ी जज़्बा किसी के दिल में भी पैदा नहीं होगा। अल्लाह की हम्द व सना साँसों की तरह जिस्म में बसी होगी। ये अब्दी नेमतें होंगी जिनके ज़वाल का कोई ख़दशा नहीं होगा। दुनिया में नेक मोमिन ने मुश्किलों भरी ज़िन्दगी गुज़ारी होगी। सरकशों और ज़ालिमों के ज़ुल्म सहे होंगे, मामूली दर्जे के लोग होंगे। अब इन तमाम तकलीफ़ों का इज़ाला हो जायेगा। उनके जिस्म हज़रत आदम (عليه السلام) के जिस्म की तरह ऊँचे लम्बे चौड़े होंगे और अच्छी तरह हर क़िस्म की नेमतों का लुत्फ़ उठायेंगे। दूसरी तरफ़ जहन्नम इन्सानी तसव्वुर व इदराक से बड़ी, अज़ाबों से भरी हूई है। उसकी गहराई में वह सरकश लोग दाख़िल होंगे जो दुनिया में तकब्बुर, नख़ूव्वत, जब्र और ज़ुल्म के मुजस्समे थे। जहन्नम की वुस्अतें इतनी होंगी कि सारे बुरे लोग इसमें डाल दिये जायेंगे, तब भी उसकी भूख नहीं मिटेगी। अहले जहन्नम का अज़ाब जहन्नम में दाख़िल होने से भी पहले शुरू हो चुका होगा। लोग अपने अपने आमाल के मुताबिक मैदाने हश्र में अपने पसीने में डूबे खड़े होंगे। जिन पर रहमत हो जायेगी उनकी बख़्शिश हो जायेगी। अल्लाह की रहमत उसके ग़ज़ब से कहीं ज़्यादा वसीअ है, इसलिये जहन्नम में दाख़िले के बाद भी बहुत लोगों को उसकी रहमत का सहारा मिलेगा और जहन्नम से निकाल कर उनकी हालत दुरूस्त करके उनको जन्नत की तरफ़ भेजा जायेगा, फिर अहले जन्नत और अहले जहन्नम दोनों के सामने मौत को ख़त्म कर दिया जायेगा और जो शख़्स जहाँ होगा हमेशा के लिये उसी का मुस्तहिक़ हो जायेगा। जहन्नम का अज़ाब भी मुसल्सल बरक़रार रहेगा। बड़े बड़े मुशरिक जिस तरह शिर्क की नई रस्में निकालने वाला अम्र बिन लुहय बिन क़ुमअ बिन ख़न्दफ़ था, दाइमी अज़ाब में मुब्तला होंगे। दुनिया में अपने हुस्न को फ़ित्ना बनाने वाली औरतें जहन्नम भर देंगे। ऐसी जहन्नम जिसका तअफ़्फ़ुन दूर दूर के फ़ासलों तक फैला होगा। हिसाब से पहले हश्र की हौलनाकियाँ और यौमे क़यामत के मसाइब और उनसे भी पहले क़ब्रों के अन्दर नेक लोगों का आरामदेह क़याम और काफ़िरों का ख़ौफ़नाक इन्तेज़ार और मुख़्तलिफ़ शक्लों में उन पर मुसल्लत अज़ाब ऐसा होगा कि अगर लोग दुनिया की ज़िन्दगी में इससे आगाह हो जायें तो अपने मर्दों को दफ़न करना छोड़ दें।

किताब के आख़िर में इमाम मुस्लिम ने वह अहादीस बयान की हैं जिनमें बताया गया है कि निजात, जिसकी भी होगी, सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की रहमत से होगी। अल्लाह तआला हमें अपनी रहमत से नवाज़ दे और अपने ग़ज़ब से अपनी पनाह में रखे। ये दुआ है जिसकी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी उम्मत को तलक़ीन फ़रमाई।

كتاب الجنة وصفة نعيمها وأهلها

54 : जन्नत, उसकी नेअ़मतों और जन्नतियों का बयान

(1) بَابُ صِفَةِ الْجَنَّةِ

बाब 1 : जन्नत की सिफ़ात

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، وَحُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " حُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ وَحُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ" .

(7130) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जन्नत को तकालीफ़ से घेर दिया गया है और दोज़ख़ को दिल पसंद (ख़्वाहिशात) से घेर दिया गया है।'
तख़रीज 7130 : सुनन तिर्मिज़ी : 2559.

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنِي وَرْقَاءُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ

(7131) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

मुफ़रदातुल हदीस : मकारिह : मकरूह की जमा है, ऐसे काम और अ़मल जो मेहनत व मशक़्क़त के मुत्क़ाज़ी हैं , जिनकी ख़ातिर ख़्वाहिशात और लज़्ज़त अंगेज़ चीज़ों से रोकना पड़ता है।
फ़ायदा : जन्नत इंतिहाई राहत और आराम की जगह है, इसलिए उसको हासिल करने के लिए मेहनत तलब और सब्र आज़मा आमाल करने पड़ते हैं और दोज़ख़ इंतिहाई तक्लीफ़ और मज़र्रत रसाँ मक़ाम

है, इसलिए उसके हुसूल के लिए किसी मेहनत व मशक़्क़त की ज़रूरत नहीं है, बल्कि मनमानी करके और ख़्वाहिशात का असीर गुलाम बनकर, इंसान उसमें दाख़िल हो जाएगा किसी पाबन्दी और रुकावट की ज़रूरत नहीं है।

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا وَقَالَ، سَعِيدٌ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ " . مِصْدَاقُ ذَلِكَ فِي كِتَابِ اللَّهِ { فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ}

(7132) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का इर्शाद है, मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह चीज़ें तैयार की हैं, जिनको न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना है और न किसी इंसान के दिल में उनका कभी ख़्याल गुज़रा है।' इसकी तस्दीक़ अल्लाह की किताब की यह आयत करती है, कोई शख़्स उन नेअ़्मतों को नहीं जानता, जो उनके लिए छुपाकर रखी गई हैं, जिनमें उनकी आँखों की ठण्डक का सामान है, यह उनके उन अ़मलों का बदला है जो वह करते रहे हैं। (सूरह सज्दा : 17)

सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़ : 3244; किताबुत्तफ़्सीर : 4779; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3197.

फ़ायदा : इस आयत और हदीस में नेक बन्दों के लिए बशारत दी गई है कि दौरे आख़िरत में उनको ऐसी आ़ला क़िस्म की नेअ़्मतें मिलेंगी, जो दुनिया में किसी को नसीब नहीं हुई, बल्कि किसी आँख ने उनको देखा भी नहीं और न किसी कान ने उन का हाल सुना और न किसी इंसान के दिल में कभी उनका ख़्याल ही आया, अल्लाह तआ़ला हमें अपने उन नेक बन्दों में शामिल करे, आमीन! इस आयते मुबारका में जन्नत की नेअ़्मतों को अ़मलों का बदला क़रार दिया गया है लेकिन जन्नत में दाख़िला अल्लाह की रहमत व फ़ज़्ल की बुनियाद पर होगा और रहमत व फ़ज़्ल का सबब इंसान के आ़माले सालेहा होंगे।

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله

(7133) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का इर्शाद है मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी चीज़ें तैयार

करके ज़ख़ीरा कर रखी हैं, जिनको किसी आँख ने देखा नहीं है, न किसी कान ने सुना है और न किसी इंसान के दिल में उनका ख़्याल गुज़रा है उनका ज़िक्र छोड़िये, जिनसे अल्लाह ने तुम्हें आगाह कर दिया है।'

عليه وسلم قَالَ " قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ ذُخْرًا بَلْهَ مَا أَطْلَعَكُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ " .

(7134) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का इर्शाद है, मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी चीज़ें ज़ख़ीरा करके रख छोड़ी हैं, जिनको न किसी आँख ने देखा है, न किसी कान से सुना है और न किसी इंसान के दिल में उनका ख़्याल गुज़रा है, सिवा उनके जिनकी तुम्हें ख़बर दी है, फिर आपने यह आयत पढ़ी, 'किसी इंसान को इल्म नहीं है कि उनके लिए किस क़िस्म की आँखों की ठण्डक छुपा रखी है।'

तख़रीज 7134 : सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर : 4779; सुनन इब्ने माजा : 3228.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ، نُمَيْرٍ - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ ذُخْرًا بَلْهَ مَا أَطْلَعَكُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ " . ثُمَّ قَرَأَ { فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ}

(7135) हज़रत सहल बिन साइदी (रज़ि.) बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की एक ऐसी मज्लिस में हाज़िर हुआ, जिसमें आपने जन्नत के बारे में बताया, जन्नत की नेअ़मतों के बारे में बयान करने के बाद फ़र्माया, 'उसमें ऐसी ऐसी नेअ़मतें हैं, जिनको किसी आँख ने देखा नहीं है, न किसी कान ने सुना है और न किसी इंसान के दिल में उनका ख़्याल गुज़रा है।' फिर आपने यह आयत पढ़ी 'उनके पहलू, बिस्तरों से अलग रहते हैं, वह अपने रब को ख़ौफ़ और उम्मीद से पुकारते हैं और जो

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَهَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي أَبُو صَخْرٍ، أَنَّ أَبَا حَازِمٍ، حَدَّثَهُ قَالَ سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ، يَقُولُ شَهِدْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَجْلِسًا وَصَفَ فِيهِ الْجَنَّةَ حَتَّى انْتَهَى ثُمَّ قَالَ صلى الله عليه وسلم فِي آخِرِ حَدِيثِهِ " فِيهَا مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ " .

ثُمَّ اقْتَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ ﴿ تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ * فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ .

रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है, उससे ख़र्च करते हैं, कोई नहीं जानता कि उनकी आँखों की ठण्डक की क्या चीज़ें उनके लिए छुपा रखी गई हैं, यह उन अ़मलों का बदला है जो वह किया करते थे। इस हदीस और आयते मुबारका से मालूम हुआ जन्नत में सिर्फ़ वही नेअ़मतें नहीं हैं जिनका ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में मौजूद है बल्कि उनके सिवा भी बेशुमार नेअ़मतें हैं जिनका इल्म जन्नत में दाख़िले के बाद होगा।

(2)

بَابُ : إِنَّ فِىْ الْجَنَّةِ شَجَرَةٌ يَسِيْرُ الرَّاكِبُ فِىْ ظِلِّهَامَائَةَ عَامٍ لَا يَقْطَعُهَا

बाब 2 : जन्नत में एक पेड़ है, जिसके साये में सवार इंसान एक सौ (100) साल तक चलेगा, लेकिन उससे गुज़र नहीं सकेगा।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ سَنَةٍ " .

(7136) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवयत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत में एक पेड़ है, जिसके साये में सवार सौ (100) साल चलेगा।'

तख़रीज 7136 : सुनन तिर्मिज़ी : 2523.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ وَزَادَ " لاَ يَقْطَعُهَا " .

(7137) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से ऊपर वाली रिवायत इस इज़ाफ़ा के साथ बयान करते हैं कि 'उसको पार न कर सकेगा।'

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا الْمَخْزُومِيُّ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ أَبِي، حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لاَ يَقْطَعُهَا " .

(7138) हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से रिवायत है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत में एक ऐसा पेड़ है कि सवार उसके साये में सौ (100) साल चलेगा और फिर भी उसको पार न कर सकेगा।'

सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6552, 6553.

قَالَ أَبُو حَازِمٍ فَحَدَّثْتُ بِهِ النُّعْمَانَ بْنَ أَبِي عَيَّاشٍ الزُّرَقِيَّ، فَقَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ فِي الْجَنَّةِ شَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ الْجَوَادَ الْمُضَمَّرَ السَّرِيعَ مِائَةَ عَامٍ مَا يَقْطَعُهَا " .

(7139) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत में एक ऐसा पेड़ है कि बेहतरीन तर्बियत याफ़्ता घोड़े पर सवार सौ (100) साल चलेगा और उसको पार न कर सकेगा।'

इसकी तखरीज हदीस में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने जो नेअ़मतें और राहत के सामान अपने बन्दों के लिए जन्नत में पैदा किये हैं, उनमें से एक क़िस्म के वह तवील (लम्बा) व अरीज़ सायादार दरख़्त हैं, जिनका साया इतने वसीअ रक़बा पर पड़ता है कि बेहतरीन और तर्बियत याफ़्ता घोड़े पर सवार भी सौ साल में उसको तै नहीं कर सकेगा।

(3)
بَابُ : إِحْلاَلِ الرِّضْوَانِ عَلَى أَهْلِ الْجَنَّةِ فَلاَ يَسْخَطُ عَلَيْهِمْ أَبَدًا

बाब 3 : अल्लाह तआला जन्नतियों से ख़ुश हो जाएगा और कभी उनसे नाराज़ नहीं होगा।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَهْمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، أَخْبَرَنَا مَالِكُ، بْنُ أَنَسٍ ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ

(7140) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला जन्नतियों से फ़र्माएगा, ऐ अहले जन्नत! वह अ़र्ज़ करेंगे, ऐ हमारे रब! हम हाज़िर हैं, तेरी इताअ़त के लिए हाज़िर हैं, हर क़िस्म की ख़ैर तेरे क़ब्ज़े में है, जिसको जो चाहें

يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ لأَهْلِ الْجَنَّةِ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ . فَيَقُولُونَ لَبَّيْكَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ . فَيَقُولُ هَلْ رَضِيتُمْ فَيَقُولُونَ وَمَا لَنَا لاَ نَرْضَى يَا رَبِّ وَقَدْ أَعْطَيْتَنَا مَا لَمْ تُعْطِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ فَيَقُولُ أَلاَ أُعْطِيكُمْ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ فَيَقُولُونَ يَا رَبِّ وَأَىُّ شَىْءٍ أَفْضَلُ مِنْ ذَلِكَ فَيَقُولُ أُحِلُّ عَلَيْكُمْ رِضْوَانِي فَلاَ أَسْخَطُ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ أَبَدًا " .

अ़ता करें, वह कहेगा, क्या तुम ख़ुश हो? यानी जन्नत की नेअ़मतों पर मुत्मइन हो? वह जवाब देंगे, हम क्यूँ राज़ी और ख़ुश न होंगे, ऐ हमारे रब! तूने हमें वह कुछ अ़ता कर दिया है, जो अपनी मख़्लूक़ में से किसी को नहीं दिया है तो अल्लाह कहेगा, क्या मैं तुम्हें उससे भी अफ़ज़ल (बरतर) चीज़ न दूँ? वह अ़र्ज़ करेंगे, ऐ हमारे रब! इनसे अफ़ज़ल कौनसी चीज़ है? अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा, मैं तुम्हें अपनी दाइमी और अबदी रज़ामन्दी इनायत करता हूँ, उसके बाद अब मैं कभी तुम पर नाराज़ न होऊँगा।'
सहीह बुख़ारी, किताबुर् रिक़ाक़ : 6549; किताबुत्तौहीद : 7518; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 2555.

फ़ायदा : इस ह़दीस से मालूम हुआ, अल्लाह की रज़ा जन्नत और उसकी सारी नेअ़मतों से बहुत ही आ'ला और बाला है, इसलिए फ़र्माया,
'अल्लाह की रज़ा और ख़ुशनूदी हर चीज़ से बढ़कर है।' (सूरह तौबा : 72)
और लज़्ज़त व मसर्रत में ऐलाने रज़ा से बढ़कर दीदारे इलाही है।

(4) بَابُ : تَرَائِى أَهْلَ الْغُرَفِ كَمَايُرَى الْكَوْكَبُ فِي السَّمَاءِ

बाब 4 : अहले जन्नत, बालाख़ाना वालों को इस त़रह देखेंगे, जिस त़रह आसमान में सितारे को देखा जाता है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيَّ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ لَيَتَرَاءَوْنَ الْغُرْفَةَ فِي الْجَنَّةِ كَمَا تَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ فِي السَّمَاءِ "

(7141) ह़ज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अहले जन्नत, जन्नत में, बालाख़ाना इस त़रह एक दूसरे को दिखाएँगे, जिस त़रह तुम आसमान में सितारे को एक दूसरे को दिखाते हो।'

(7142) अबू ह़ाज़िम (रह.) कहते हैं, मैंने यह ह़दीस नोमान बिन अबी अ़याश (रह.) को सुनाई तो उन्होंने कहा, मैंने ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को यह बयान करते सुना, 'जिस त़रह़ तुम आसमान के मश्रिक़ी या मग़्रिबी किनारे में रोशन सितारे को देखते हो।'

قَالَ فَحَدَّثْتُ بِذَلِكَ النُّعْمَانَ بْنَ أَبِي عَيَّاشٍ، فَقَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، يَقُولُ كَمَا تَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ الدُّرِّيَّ فِي الأُفُقِ الشَّرْقِيِّ أَوِ الْغَرْبِيِّ " .

(7143) इमाम स़ाह़ब अपने एक और उस्ताद से दोनों स़ह़ाबा से यही रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْمَخْزُومِيُّ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، بِالإِسْنَادَيْنِ جَمِيعًا نَحْوَ حَدِيثِ يَعْقُوبَ .

मुफ़रदातुल ह़दीस : ग़ुर्फ़ा : बालाख़ाना, चबारा; दुर्री : रोशन चमकदार।
फ़ायदा : इस ह़दीस से साबित होता है अहले जन्नत के दरजात व मर्तबों में बहुत फ़र्क़ होगा, यहाँ तक कि निचले दर्जे वाले, आ़ला त़ब्क़ा वाले, अहले ग़ुर्फ़ा को इस त़रह़ नज़र उठाकर देखेंगे, जिस त़रह़ मश्रिक़ी व मग़्रिबी किनारे के सितारे को नज़र उठाकर देखा जाता है।

(7144) ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अहले जन्नत अपने से ऊपर बालाख़ाना वालों को इस त़रह़ देखेंगे, जिस त़रह़ तुम उस रोशन सितारे को देखते हो, जो दूर मश्रिक़ी या मग़्रिबी किनारे में जा रहा होता है, इस फ़र्क़ व इम्तियाज़ की बिना पर जो उनमें बाहमी होगा।' स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! वह अम्बिया के मक़ामात होंगे, दूसरे लोग उन तक न पहुँच सकेंगे। आपने फ़र्माया, ' क्यूँ नहीं! उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, यह वह लोग होंगे, जो अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने रसूलों की तस्दीक़

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ يَحْيَى بْنِ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ لَيَتَرَاءَوْنَ أَهْلَ الْغُرَفِ مِنْ فَوْقِهِمْ كَمَا تَتَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ الدُّرِّيَّ الْغَابِرَ مِنَ الأُفُقِ مِنَ الْمَشْرِقِ أَوِ الْمَغْرِبِ لِتَفَاضُلِ مَا بَيْنَهُمْ " . قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ تِلْكَ مَنَازِلُ الأَنْبِيَاءِ لاَ يَبْلُغُهَا غَيْرُهُمْ .

قَالَ " بَلَى وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ رِجَالٌ آمَنُوا بِاللَّهِ وَصَدَّقُوا الْمُرْسَلِينَ".

की।' यानी जिन्होंने दिल की गहराईयों से सही और हक़ीक़ी अमलन तस्दीक़ की।
सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़ : 3256.

मुफ़रदातुल हदीस : अल्ग़ाबिर : चलने वाला, जाने वाला।

(5)
باب : فِيْمَنْ يَوَدُّ رُؤْيَةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَهْلِهِ وَمَالِهِ

बाब 5 : अहल व माल ख़र्च करके, नबी अकरम (ﷺ) के दीदार का शौक़ रखने वाले।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " مِنْ أَشَدِّ أُمَّتِي لِي حُبًّا نَاسٌ يَكُونُونَ بَعْدِي يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ رَآنِي بِأَهْلِهِ وَمَالِهِ " .

(7145) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'मेरी उम्मत में से, मुझसे इंतिहाई शदीद मुहब्बत रखने वाले, ऐसे लोग मेरे बाद होंगे, उनमें से एक पसंद करेगा, ऐ काश! अपना अहल और माल ख़र्च करके मुझे देख सके।'

(6)
بَابُ : فِيْ سُوقِ الْجَنَّةِ وَمَا يَنَالُوْنَ فِيْهَامِنْ النَّعِيْمِ وَالْجَمَالِ

बाब 6 : जन्नत का बाज़ार और उसमें जो नेअ्मतें और जमाल हासिल हो सकेगा

حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ، سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْجَبَّارِ الْبَصْرِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَسُوقًا يَأْتُونَهَا كُلَّ جُمُعَةٍ فَتَهُبُّ رِيحُ الشَّمَالِ

(7146) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत में एक बाज़ार है, जिसमें लोग हर जुम्अे को आया करेंगे, चुनाँचे शिमाली हवा चलेगी और उनके चेहरों और कपड़ों को (कस्तूरी या ख़ुश्बू) से भर देगी, जिससे उनके हुस्नो जमाल में इज़ाफ़ा हो

فَتَحْثُو فِي وُجُوهِهِمْ وَثِيَابِهِمْ فَيَزْدَادُونَ حُسْنًا وَجَمَالاً فَيَرْجِعُونَ إِلَى أَهْلِيهِمْ وَقَدِ ازْدَادُوا حُسْنًا وَجَمَالاً فَيَقُولُ لَهُمْ أَهْلُوهُمْ وَاللَّهِ لَقَدِ ازْدَدْتُمْ بَعْدَنَا حُسْنًا وَجَمَالاً . فَيَقُولُونَ وَأَنْتُمْ وَاللَّهِ لَقَدِ ازْدَدْتُمْ بَعْدَنَا حُسْنًا وَجَمَالاً " .

जाएगा, तो वह अपने घर वालों की तरफ़ लौटेंगे, उनके हुस्नो जमाल में भी इज़ाफ़ा हो चुका होगा तो उनके घर वाले उनसे कहेंगे, अल्लाह की क़सम! तुम हमारे पास से जाने के बाद हुस्नो जमाल में बढ़ गए हो तो वह जवाब देंगे तुम भी, अल्लाह की क़सम! हमारे जाने के बाद हुस्नो जमाल में बढ़ गए हो।'

फ़ायदा : जन्नत में जुम्आ को बाज़ार लगेगा, ताकि लोग एक दूसरे को मिल सकें, अल्लाह तआ़ला की ज़ियारत कर सकें, जिससे उनके हुस्नो जमाल में इज़ाफ़ा हो और उसका अ़क्स उनकी बीवियों पर भी पड़े, या वह शिमाली हवा इधर उनके घर में भी चलेगी और जन्नत के जुम्अे की कैफ़ियत दुनिया के जुम्अे वाली नहीं होगी, क्योंकि वहाँ सूरज और चाँद और दिन, रात नहीं होंगे।

(7)
بَابُ : أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ وَصِفَاتُهُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ

बाब 7 : जन्नत में दाख़िल होने वाला पहला गिरोह उसकी शक्लो सूरत चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगी और उनकी सिफ़ात और उनकी बीवियाँ

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَيَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، - وَاللَّفْظُ لِيَعْقُوبَ - قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدٍ، قَالَ إِمَّا تَفَاخَرُوا وَإِمَّا تَذَاكَرُوا الرِّجَالُ فِي الْجَنَّةِ أَكْثَرُ أَمِ النِّسَاءُ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ أَوَلَمْ يَقُلْ أَبُو الْقَاسِمِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أَوَّلَ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ وَالَّتِي تَلِيهَا عَلَى

(7147) मुहम्मद बिन सीरीन (रह.) बयान करते हैं, लोगों ने फ़ख़्रो मुबाहात के लिए कहा, या बाहमी मुबाहिसा किया कि जन्नत में मर्द ज़्यादा होंगे या औ़रतें? तो हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने कहा, क्या अबुल क़ासिम (ﷺ) ने यह नहीं फ़र्माया, 'जन्नत में दाख़िल होने वाला यह पहला गिरोह, उसकी सूरत चौदहवीं के माहे कामिल की सी होगी और जो गिरोह उसके बाद होगा, वह आसमान के सबसे ज़्यादा रोशन और जगमगाते सितारे की

أَضْوَإِ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ اثْنَتَانِ يُرَى مُخُّ سُوقِهِمَا مِنْ وَرَاءِ اللَّحْمِ وَمَا فِي الْجَنَّةِ أَعْزَبُ " .

तरह होगी, उनमें से हर शख़्स की दो बीवियाँ होंगी, जिनकी पिण्डलियों का मग़्ज़, गोश्त के अंदर से दिखाई देगा और जन्नत में कोई इंसान कुँवारा नहीं रहेगा।'

मुफ़रदातुल हदीस : (1) जुम्रा : गिरोह जमाअत। (2) उज़्वउन : रोशनी में सबसे ज़्यादा चमकदार। (3) ज़ुर्रिय्युन : रोशन (4) अअ़्ज़ब या अ़ज़्बुन : ग़ैर शादीशुदा मुजर्रद, कुँवारा।

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، قَالَ اخْتَصَمَ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ أَيُّهُمْ فِي الْجَنَّةِ أَكْثَرُ فَسَأَلُوا أَبَا هُرَيْرَةَ فَقَالَ قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ عُلَيَّةَ .

(7148) हज़रत इब्ने सीरीन (रह.) बयान करते हैं, कि मर्दों और औरतों का झगड़ा हुआ कि जन्नत में, किसकी तादाद ज़्यादा होगी, चुनाँचे उन्होंने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने ऊपर वाली रिवायत बयान की।

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، - يَعْنِي ابْنَ زِيَادٍ - عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ " . ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، -وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ أَوَّلَ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ وَالَّذِينَ يَلُونَهُمْ عَلَى أَشَدِّ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً لاَ يَبُولُونَ وَلاَ يَتَغَوَّطُونَ وَلاَ يَمْتَخِطُونَ وَلاَ يَتْفُلُونَ أَمْشَاطُهُمُ الذَّهَبُ وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ

(7149) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि, 'जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होने वाला गिरोह उसकी शक्ल चौदहवीं रात के बद्रे कामिल की सी होगी और जो लोग उनके बाद होंगे, उनकी शक्ल सबसे ज़्यादा रोशन सितारे की तरह होगी, जो आसमान में जगमगाता है, वह न बोल (पेशाब) करेंगे और न पाखाना, न उन्हें थूक आएगी और न नाक की रीज़श, उनकी कँघियाँ सोने की होंगी और उनका पसीना कस्तूरी की तरह होगा, उनकी अंगेठियाँ ऊद की होंगी, उनकी बीवियाँ बड़ी बड़ी आँखो वाली हूरें होंगी, उनके अख़्लाक़ यक्साँ होंगे, उनकी शक्ल अपने बाप आदम की तरह होगी और उनका क़द साठ हाथ बुलंद होगा।

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3327; • इब्ने माजा : 4333.

وَمَجَامِرُهُمُ الأَلُوَّةُ وَأَزْوَاجُهُمُ الْحُورُ الْعِينُ
أَخْلاَقُهُمْ عَلَى خُلُقِ رَجُلٍ وَاحِدٍ عَلَى صُورَةِ
أَبِيهِمْ آدَمَ سِتُّونَ ذِرَاعًا فِي السَّمَاءِ " .

मुफ़रदातुल हदीस : (1) ला यतग़व्वतून : वो रफ़अे हाजत (पेशाब–पाखाना) नहीं करेंगे। (2) ला यम्तख़ितून : नाक की रीज़श नहीं आएगी। (3) रश्हुहुमुल मिस्क : उनका पसीना कस्तूरी होगा (4) मजामिरुहुम मिज्मरह् की जमा है। अंगेठी (5) अलुव्वा : लकड़ी जो अंगेठी में सुलगाई जाती है।
फ़ायदा : जन्नत की हर ग़िज़ा, कसीफ़ मादा से पाक और इस क़द्र लतीफ़ और नूरानी होगी कि उससे पेट में किसी क़िस्म का फ़ुज़्ला तैयार नहीं होगा और उनका हुस्नो जमाल चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगा, उनकी सीरत, किरदार और अख़्लाक़ में उनकी शक्लो सूरत की तरह यक्सानियत होगी।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ عَلَى أَشَدِّ نَجْمٍ فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً ثُمَّ هُمْ بَعْدَ ذَلِكَ مَنَازِلُ لاَ يَتَغَوَّطُونَ وَلاَ يَبُولُونَ وَلاَ يَمْتَخِطُونَ وَلاَ يَبْزُقُونَ أَمْشَاطُهُمُ الذَّهَبُ وَمَجَامِرُهُمُ الأَلُوَّةُ وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ أَخْلاَقُهُمْ عَلَى خُلُقِ رَجُلٍ وَاحِدٍ عَلَى طُولِ أَبِيهِمْ آدَمَ سِتُّونَ ذِرَاعًا " . قَالَ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ عَلَى خُلُقِ رَجُلٍ . وَقَالَ أَبُو كُرَيْبٍ عَلَى خَلْقِ رَجُلٍ . وَقَالَ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ عَلَى صُورَةِ أَبِيهِمْ.

(7150) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी उम्मत का जन्नत में दाख़िल होने वाला पहला गिरोह चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगा फिर उनसे बाद में आने वाले आसमान के सबसे ज़्यादा रोशन सितारे की तरह होंगे, फिर उसके बाद उनके मुख़्तलिफ़ मरातिब होंगे, वह पाख़ाना पेशाब नहीं करेंगे और न नाक साफ़ करेंगे, न थूकेंगे, उनकी कँघियाँ सोने की होंगी और उनकी अंगेठियों में ऊद सुलगती होंगी, उनका पसीना कस्तूरी होगा, उनके अख़्लाक़ एक इंसान की तरह यानी यक्साँ, एक जैसे होंगे, उनका क़द काठी अपने बाप आदम की तरह साठ हाथ होगा।' इब्ने अबी शैबा कहते हैं, एक आदमी की तरह ख़ुल्क़ होगा और अबू कुरैब कहते हैं, एक आदमी की तरह बनावट होगी, यानी जिस्मानी बनावट यक्साँ होगी। इब्ने अबी शैबा कहते हैं, अपने बाप की शक्ल पर होंगे। सुनन इब्ने माजा : 4333.

बाब 8 : जन्नत और अहले जन्नत की सिफ़ात और उनका जन्नत में सुबह व शाम तस्बीह कहना

(8) بَابُ : فِىْ صِفَاتِ الْجَنَّةِ وَأَهْلِهَا وَتَسْبِيْحِهِمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَلِجُ الْجَنَّةَ صُورَتُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ لاَ يَبْصُقُونَ فِيهَا وَلاَ يَمْتَخِطُونَ وَلاَ يَتَغَوَّطُونَ فِيهَا آنِيَتُهُمْ وَأَمْشَاطُهُمْ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَمَجَامِرُهُمْ مِنَ الأَلُوَّةِ وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ يُرَى مُخُّ سَاقِهِمَا مِنْ وَرَاءِ اللَّحْمِ مِنَ الْحُسْنِ لاَ اخْتِلاَفَ بَيْنَهُمْ وَلاَ تَبَاغُضَ قُلُوبُهُمْ قَلْبٌ وَاحِدٌ يُسَبِّحُونَ اللَّهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا " .

(7151) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह (रह.) को सुनाई हुई हदीसों में से एक हदीस यह है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा, उसकी सूरत चौदहवीं रात के चाँद की सूरत होगी, न वह उसमें थूकेंगे और न नाक साफ़ करेंगे, न रफ़ओ हाजत (शौच) करेंगे, उनके बर्तन और कँघियाँ सोने, चाँदी की होंगी और उनकी अंगेठियाँ ऊद की, उनका पसीना कस्तूरी का होगा और उनमें से हर एक की दो बीवियाँ होंगी, हुस्नो जमाल की बिना पर उनकी पिण्डलियों का मग़ज़ उनके गोश्त के अंदर से नज़र आएगा, उनमें किसी क़िस्म का इख़्तिलाफ़ और बाहमी बुग़्ज़ न होगा, सबके दिल एक दिल जैसे होंगे, वह सुबह व शाम यानी हर दम अल्लाह की तस्बीह बयान करेंगे।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِعُثْمَانَ - قَالَ عُثْمَانُ حَدَّثَنَا وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ " إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ يَأْكُلُونَ فِيهَا

(7152) हज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'अहले जन्नत, जन्नत में खाएँगे भी और पियेंगे भी लेकिन न तो उन्हें थूक आएगा और न पेशाब और पाख़ाना होगा और न वह नाक साफ़ करेंगे।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा तो

وَيَشْرَبُونَ وَلاَ يَتْفُلُونَ وَلاَ يَبُولُونَ وَلاَ يَتَغَوَّطُونَ وَلاَ يَمْتَخِطُونَ " . قَالُوا فَمَا بَالُ الطَّعَامِ قَالَ " جُشَاءٌ وَرَشْحٌ كَرَشْحِ الْمِسْكِ يُلْهَمُونَ التَّسْبِيحَ وَالتَّحْمِيدَ كَمَا يُلْهَمُونَ النَّفَسَ".

खाने का क्या होगा? आपने फ़र्माया, 'डकार होगी और कस्तूरी के पसीने की तरह पसीना होगा, यानी गिज़ा डकार और पसीना से हजम हो जाएगी और बस अल्लाह की तस्बीह व तहमीद उनकी ज़ुबानों पर इस तरह जारी होगी, जिस तरह साँस जारी रखा जाता है।'

तख़रीज 7152 : सुनन अबूदाऊद : 4741.

फ़ायदा : जन्नत में खाना और जन्नती गिज़ा इस क़द्र लतीफ़ होगी कि खुशगवार डकार और पसीना के रास्ते से मेअ्दा खाली और हल्का हो जाया करेगा और जिस्म में किसी क़िस्म का फ़ुज़्ला पैदा नहीं होगा, जिसके खारिज करने की जरूरत पेश आए और साँस की तरह हर दम तस्बीह व तहमीद ज़ुबानों पर जारी रहेगा, किसी क़िस्म की कुल्फ़त व मशक़्क़त और तवज्जह या एहतिमाम की जरूरत नहीं होगी।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ " كَرَشْحِ الْمِسْكِ " .

(7153) इमाम स़ाहब यही हदीस दो और उस्तादों से (कशहिल मिस्क) कस्तूरी के पसीने की तरह तक बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज हदीस 7081 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَحَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي عَاصِمٍ، -قَالَ حَسَنٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، - عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ، عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَأْكُلُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فِيهَا وَيَشْرَبُونَ وَلاَ يَتَغَوَّطُونَ وَلاَ يَمْتَخِطُونَ وَلاَ يَبُولُونَ وَلَكِنْ طَعَامُهُمْ ذَاكَ جُشَاءٌ كَرَشْحِ الْمِسْكِ يُلْهَمُونَ التَّسْبِيحَ وَالْحَمْدَ كَمَا يُلْهَمُونَ النَّفَسَ " . قَالَ وَفِي حَدِيثِ حَجَّاجٍ " طَعَامُهُمْ ذَلِكَ "

(7154) हजरत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अहले जन्नत, जन्नत में खाएँग पिएँगे लेकिन न पाखाना करेंगे, न थूकेंगे और न पेशाब आएगा लेकिन उनका खाना वह खुशगवार डकार की सूरत में होगा, जिससे कस्तूरी की ख़ुश्बू आएगी, उन्हें तस्बीह और हम्द इस तरह इल्क़ाअ की जाएगी, जिस तरह साँस का इल्हाम किया जाता है।' हज्जाज की हदीस में है 'उनका यह खाना।'

(7155) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत इस फ़र्क़ के साथ बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'उन्हें तस्बीह़ व तक्बीर उस तरह इल्हाम की जाएगी जिस तरह उन्हें साँस इल्हाम किया जाता है।' यानी तस्बीह व तक्बीर साँस की तरह हर दम जुबानों पर जारी होगी।

وَحَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى الأُمَوِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " وَيُلْهَمُونَ التَّسْبِيحَ وَالتَّكْبِيرَ كَمَا يُلْهَمُونَ النَّفَسَ " .

बाब 9 : अहले जन्नत की नेअ़्मतें दाइमी (हमेशगी) हैं, अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है, 'उन्हें आवाज़ दी जाएगी, यह वह जन्नत है, जिसके वारिस तुम्हें तुम्हारे अ़मलों के सबब बनाया गया है।'

(9) بَابُ : فِي دَوَامِ نَعِيمِ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَقَوْلِهِ تَعَالَى (وَنُودُوٓا۟ أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُم تَعْمَلُونَ)

(7156) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जो शख़्स जन्नत में दाख़िल हो जाएगा, उसे हमेशा नेअ़्मतें ह़ासिल रहेंगी।' वह कभी तंगह़ाली से दो चार नहीं होगा, न उसके कपड़े बोसीदा होंगे और न जवानी खत्म होगी।'

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يَنْعَمُ لاَ يَبْأَسُ لاَ تَبْلَى ثِيَابُهُ وَلاَ يَفْنَى شَبَابُهُ "

फ़ायदा : जन्नत सबात व क़रार (हमेशगी) की जगह है, वहाँ किसी क़िस्म का तग़य्युर और तब्दीली नहीं होगी।

(7157) ह़ज़रत अबू सईद और ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'एक पुकारने वाला,

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لإِسْحَاقَ - قَالاَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ،

قَالَ قَالَ الثَّوْرِيُّ فَحَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ، أَنَّ الأَغَرَّ، حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، وَأَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يُنَادِي مُنَادٍ إِنَّ لَكُمْ أَنْ تَصِحُّوا فَلاَ تَسْقَمُوا أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَحْيَوْا فَلاَ تَمُوتُوا أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَشِبُّوا فَلاَ تَهْرَمُوا أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَنْعَمُوا فَلاَ تَبْتَئِسُوا أَبَدًا " . فَذَلِكَ قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ { وَنُودُوا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ{

(जन्नतियों को मुख़ातब करके) पुकारेगा, तुम्हारा हक़ है कि हमेशा तन्दुरुस्त रहो, इसलिए तुम कभी बीमार नहीं पड़ोगे और तुम्हारे लिए जिन्दगी और हयात ही है, इसलिए अब तुम्हें कभी मौत नहीं आएगी और तुम्हारे लिए जवानी और शबाब ही है, चुनाँचे तुम कभी बूढ़े नहीं होगे और तुम्हारे लिए सुख और चैन ही है, तो कभी तुम्हें तंगी और तक्लीफ़ न होगी।' क्योंकि अल्लाह तआला का फ़र्मान है उन्हें आवाज़ दी जाएगी यह वह जन्नत है जिसके वारिस तुम्हें तुम्हारे अ़मलो की वजह से बनाया गया है।

तख़रीज 7157 : जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3246.

फ़ायदा : जन्नत सिर्फ़ आराम और राहत का दाइमी और ला जवाल घर है, जो कभी फ़ना पज़ीर नहीं होगा, उसको दवाम और सबात हासिल है, उसमें किसी क़िस्म की तब्दीली या फ़साद का गुज़र नहीं होगा, इसलिए वहाँ किसी तकलीफ़ का या किसी तक्लीफ़देह हालत का गुज़र नहीं होगा, न वहाँ बीमारी आएगी और न मौत आएगी, न बुढ़ापा किसी को सताएगा, न जवानी ढलेगी और न किसी और किस्म की तंगी और परेशानी किसी जन्नती को लाहिक़ होगी, इसलिए जब जन्नती, जन्नत में चले जाएँगे तो शुरू ही में अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से अबदी ज़िन्दगी और दाइमी राहत का मुज़्दा (खुशखबरी) सुनाकर, उनको मुत्मइन कर दिया जाएगा और अल्लाह के इस इर्शाद में उस त़रफ़ इशारा है, 'उन्हें निदा आएगी यह वह जन्नत है, जिसके वारिस तुम उन अ़मलों की वजह से बनाए गए हो, जो तुम करते रहे हो।' (आराफ़ : 43)

बाब 10 : जन्नत के ख़ेमों की कैफ़ियत और उनमें मोमिनों के किस क़द्र अहल होंगे

(10) بَابُ فِي صِفَةِ خِيَامِ الْجَنَّةِ وَمَا لِلْمُؤْمِنِينَ فِيهَا مِنَ الأَهْلِينَ

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي قُدَامَةَ، - وَهُوَ الْحَارِثُ بْنُ عُبَيْدٍ - عَنْ أَبِي، عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " إِنَّ لِلْمُؤْمِنِ فِي الْجَنَّةِ لَخَيْمَةً مِنْ لُؤْلُؤَةٍ وَاحِدَةٍ مُجَوَّفَةٍ طُولُهَا سِتُّونَ مِيلاً لِلْمُؤْمِنِ فِيهَا أَهْلُونَ يَطُوفُ عَلَيْهِمُ الْمُؤْمِنُ فَلاَ يَرَى بَعْضُهُمْ بَعْضًا " .

(7158) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'मोमिन के लिए जन्नत में एक ख़ेमा होगा, जो एक ख़ोलदार मोती का होगा, जिसकी लम्बाई साठ मील होगी, उसमें उनके अहल होंगे, मोमिन उनके पास चक्कर लगाएँगे और वह एक दूसरे को देख नहीं सकेंगे।'

सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़ : 3243; किताबुत्तफ़्सीर : 4879; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 2528.

وَحَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الْجَوْنِيُّ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " فِي الْجَنَّةِ خَيْمَةٌ مِنْ لُؤْلُؤَةٍ مُجَوَّفَةٍ عَرْضُهَا سِتُّونَ مِيلاً فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهْلٌ مَا يَرَوْنَ الآخَرِينَ يَطُوفُ عَلَيْهِمُ الْمُؤْمِنُ " .

(7159) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत में मोमिन का ख़ोलदार मोती का एक ख़ेमा होगा, जिसकी चौड़ाई साठ मील होगी, हर कोने में उसके अहल होंगे, जो दूसरों को देख नहीं सकेंगे, मोमिन उनका चक्कर लगाएँगे।'

इस हदीस की तखरीज ह. (7087) में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : जन्नत में मोमिन का ख़ेमा साठ मील लम्बा और साठ मील चौड़ा और साठ मील ऊँचा होगा, यानी तूल अ़र्ज़ और अ़मक़ बराबर होंगे और हर कोने में उसके अहल होंगे, अगर अहल से मुराद बीवी है तो मआ़नी होगा हर जन्नती की दो से ज़ाइद बीवियाँ होंगी, इसलिए क़ाज़ी अ़याज़ और हाफ़िज़ इब्ने हजर वग़ैरह का यह नज़रिया है कि हर जन्नती की दो बीवियाँ, दुनिया की औ़रतों से होंगी और बाक़ी जन्नत की औ़रतों से होंगी, या फिर उससे मुराद मुतअ़ल्लिक़ीन ख़दम व हश्म (नौकर चाकर) होंगे और बीवियाँ साफ़ गो होंगी।

क्योंकि बक़ौल ह़ाफ़िज इब्ने क़य्यिम, ह़जरत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) की इस रिवायत के सिवा दो से जाइद बीवियों की कोई रिवायत भी सही नहीं है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ، عَنْ أَبِي، عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مُوسَى بْنِ قَيْسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ" الْخَيْمَةُ دُرَّةٌ طُولُهَا فِي السَّمَاءِ سِتُّونَ مِيلاً فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهْلٌ لِلْمُؤْمِنِ لاَ يَرَاهُمُ الآخَرُونَ".

(7160) ह़ज़रत अबू मूसा बिन क़ैस (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ख़ेमा एक मोती का होगा जिसकी बुलंदी साठ मील होगी, उसके हर कोने में मोमिन के अहल होंगे, जिनको दूसरे देख नहीं सकेंगे।

तख़रीज 7160 : इस हदीस की तखरीज ह़दीस (7087) में गुज़र चुकी है।

(11)

بَابُ : مَافِي الدُّنْيَا مِنْ أَنْهَارِ الْجَنَّةِ

बाब 11 : दुनिया में कौनसी नहरें जन्नत से हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَعَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ" سَيْحَانُ وَجَيْحَانُ وَالْفُرَاتُ وَالنِّيلُ كُلٌّ مِنْ أَنْهَارِ الْجَنَّةِ " .

(7161) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सैहान, जैह़ान, फ़ुरात और नील यह सब जन्नत के दरिया हैं।'

फ़ायदा : सैहान और जैह़ान शामी सरह़द पर वाक़ेअ दो नहरें (दरिया) हैं, जो सैहून और जैहून (उज़्बेकिस्तान के दो दरिया हैं) अलग हैं, फ़ुरात, इराक़ में वाक़ेअ है और नील मिस्र में, उनका मम्बा और सरचश्मा जन्नत में है, क़ाज़ी अ़याज़, नववी, हाफिज इब्ने हजर, मुल्ला अ़ली क़ारी वग़ैरह

(रहि.) का यही नजरिया है लेकिन इसकी हकीक़त और कैफ़ियत को जानना हमारी अक़्ल की दस्तरस (पहुँच) से बाहर है।

बाब 12 : जन्नत में ऐसे लोग दाख़िल होंगे, जिनके दिल परिन्दों के दिलों की तरह होंगे

(12) بَابُ : يَدْخُلُ الْجَنَّةَ أَقْوَامٌ أَفْئِدَتُهُمْ مِثْلُ أَفْئِدَةِ الطَّيْرِ

(7162) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत में ऐसे लोग दाख़िल होंगे जिनके दिल, परिन्दों के दिलों की तरह होंगे।'

حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ اللَّيْثِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، - يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَدْخُلُ الْجَنَّةَ أَقْوَامٌ أَفْئِدَتُهُمْ مِثْلُ أَفْئِدَةِ الطَّيْرِ " ‏

फ़ायदा : परिन्दों के दिल हसद व बुग़्ज़ से पाक है, हुसूले रिज्क में उनका एतिमाद भरोसा अल्लाह पर है और उनमें बहुत नर्मी और गुदाज है, ख़ौफ़ व खशिय्यत का गल्बा है, जन्नत में जाने वाले बहुत से लोग इन सिफात से मुत्तसिफ हैं।

(7163) हजरत हम्माम बिन मुनाब्बिह (रह.) को हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने बहुत सी अहादीस लिखवाईं, उनमें से एक हदीस यह है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया, उनका तूल साठ हाथ था, चुनाँचे पैदा करने के बाद फ़र्माया, 'जाओ उस जमाअ़त को सलाम कहो, वह फ़रिश्तों की जमाअ़त बैठी हुई थी। चुनाँचे सुनो, वह तुम्हें किस तरह सलाम कहते हैं,

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا بِهِ أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏.‏ فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ خَلَقَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ آدَمَ عَلَى صُورَتِهِ طُولُهُ سِتُّونَ ذِرَاعًا فَلَمَّا خَلَقَهُ قَالَ

اذْهَبْ فَسَلِّمْ عَلَى أُولَئِكَ النَّفَرِ وَهُمْ نَفَرٌ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ جُلُوسٌ فَاسْتَمِعْ مَا يُجِيبُونَكَ فَإِنَّهَا تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ ذُرِّيَّتِكَ قَالَ فَذَهَبَ فَقَالَ السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ فَقَالُوا السَّلاَمُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ - قَالَ - فَزَادُوهُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ - قَالَ - فَكُلُّ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ آدَمَ وَطُولُهُ سِتُّونَ ذِرَاعًا فَلَمْ يَزَلِ الْخَلْقُ يَنْقُصُ بَعْدَهُ حَتَّى الآنَ ".

वही तुम्हारा और तुम्हारी औलद का सलाम होगा, तो वह गए और कहा, अस्सलामु अलैकुम। उन्होंने कहा, अस्सलामु अलैक व रहमतुल्लाह, इस तरह उन्होंने रहमतुल्लाह का इज़ाफ़ा किया। चुनाँचे जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा, उसकी सूरत आदमी जैसी होगी और उसका तूल साठ हाथ होगा, उसके बाद अब तक लोगों का क़द कम होता रहा।'
सहीह बुखारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया : 3326; किताबुल इस्तिअ़्ज़ान : 6227.

फ़ायदा : आदम (अ.) की सूरत के बारे में तफ़्सील किताबुल बिर्र वस्सिला में गुज़र चुकी है और सलाम के जवाब में व अलैकुमुस्सलाम कहना बेहतर है, अगरचे अस्सलामु अ़लैकुम कहना भी सही है।

(13)

بَابٌ: فِيْ شِدَّةِ حَرِّنَارِ جَهَنَّمَ وَبُعْدِ قَعْرِهَا وَمَا تَأْخُذُمِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ

बाब 13 : जहन्नम की आग की शिद्दत और उसकी गहराई की मसाफ़त और अ़जाब दिये गए लोगों की कैफ़ियत

حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ خَالِدٍ الْكَاهِلِيِّ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " يُؤْتَى بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لَهَا سَبْعُونَ أَلْفَ زِمَامٍ مَعَ كُلِّ زِمَامٍ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ يَجُرُّونَهَا " .

(7164) हजरत अब्दुल्लाह (बिन मसऊ़द) (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जहन्नम को लाया जाएगा उस दिन उसकी सत्तर (70) लगामें होंगी हर लगाम के साथ सत्तर (70) हजार फरिश्ते होंगे जो उसे खींच रहे होंगे।'
जामेअ़ तिर्मिज़ी : 2573, ह़दीस 2573.

फ़ायदा : कियामत के वाक़ियात की कैफियत और हकीकत को इस जहान (दुनिया) में समझना मुम्किन नहीं है, इज्माली तौर पर ईमान लाना जरूरी है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " نَارُكُمْ هَذِهِ الَّتِي يُوقِدُ ابْنُ آدَمَ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنْ حَرِّ جَهَنَّمَ " . قَالُوا وَاللَّهِ إِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " فَإِنَّهَا فُضِّلَتْ عَلَيْهَا بِتِسْعَةٍ وَسِتِّينَ جُزْءًا كُلُّهَا مِثْلُ حَرِّهَا " .

(7165) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम्हारी दुनिया की यह आग, जिसे आदम का बेटा (इंसान) जलाता है, जहन्नम की गर्मी के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने अर्ज किया, अल्लाह की कसम! यह काफ़ी थी, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़र्माया, 'दोजख की आग दुनिया की आग पर उनहत्तर(69) दर्जा बढ़ा दी गई है और हर दर्जा की हरारत (तपिश) दुनिया की आग के बराबर है।'

फ़ायदा : इस दुनिया की आग की किस्मों में भी दर्ज-ए-हरारत में बहुत तफ़ावुत व फ़र्क़ है, घास फूस की आग, लकड़ी की आग, पत्थर के कोयलों की आग, बमों और ऐटम बम की आग, इस तरह आख़िरत में दोजख की आग का दर्ज-ए-हरारत आम आग के मुकाबले में उनहत्तर दर्जा ज़्यादा होगा और उसकी हिक्मत अल्लाह तआला ही जानता है कि उसने उसकी हरारत में इतनी बढ़ोतरी क्यों की है, हमें तो अल्लाह के क़हर व जलाल से डरना और दोजख की आग से बचने की फिक्र करनी चाहिए। अआजनल्लाहु मिन्हा बि कर्मिही व फ़ज़्लिही।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِ حَدِيثِ أَبِي الزِّنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا " .

(7166) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद की सनद से बयान करते हैं, सिर्फ इतना फर्क है कि आपने कुल्लिहा की जगह कुल्लहुन्ना फ़र्माया, मक़्सद एक ही है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، حَدَّثَنَا خَلَفُ بْنُ خَلِيفَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنْ أَبِي، حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ

(7167) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे कि आपने किसी चीज के गिरने की आवाज सुनी तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जानते हो

صلى الله عليه وسلم إِذْ سَمِعَ وَجْبَةً فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " تَدْرُونَ مَا هَذَا " . قَالَ قُلْنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ . قَالَ " هَذَا حَجَرٌ رُمِيَ بِهِ فِي النَّارِ مُنْذُ سَبْعِينَ خَرِيفًا فَهُوَ يَهْوِي فِي النَّارِ الآنَ حَتَّى انْتَهَى إِلَى قَعْرِهَا "

यह क्या है?' हमने अर्ज किया, अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं। आपने फ़र्माया, 'यह एक पत्थर है, जो सत्तर (70) साल पहले आग (जहन्नम) में फेंका गया था, चुनाँचे वह अब तक गिर रहा था, यहाँ तक कि उसकी गहराई तक पहुँच गया है।'

फ़ायदा : जहन्नम में पत्थर गिरने की आवाज खर्के आदत के तौर पर सुना दी गई थी।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " هَذَا وَقَعَ فِي أَسْفَلِهَا فَسَمِعْتُمْ وَجْبَتَهَا " .

(7168) यही रिवायत इमाम साहब दो और उस्तादों से बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'यह पत्थर उसकी तह में गिरा है, चुनाँचे तुमने उसके गिरने की आवाज सुनी है।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ قَالَ قَتَادَةُ سَمِعْتُ أَبَا نَضْرَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ سَمُرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ مِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى كَعْبَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ إِلَى حُجْزَتِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ إِلَى عُنُقِهِ " .

(7169) हजरत समुरा (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने नबी अकरम (ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'दोजखियों में कुछ वह होंगे, जिन्हें आग उनके टख़्नों तक पकड़ेगी और उनमें से कुछ को कमरों तक पकड़ेगी और कुछ को आग गर्दन तक पकड़ेगी।'

फ़ायदा : दोजख में सब लोग एक ही दर्जा और एक ही हाल में नहीं होंगे, बल्कि उनके गुनाहों और जुर्मों के एतिबार से उनके अजाब में कमी बेशी होगी आग लोगों के टख्नों से लेकर उनकी गर्दनों तक जराइम (गुनाहों) के मुताबिक़ पकड़ेगी।

حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِي ابْنَ عَطَاءٍ - عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ،

(7170) हजरत समुरा बिन जुन्दुब (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'कुछ लोगों को आतिशे दोजख,

قَالَ سَمِعْتُ أَبَا نَضْرَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى كَعْبَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى حُجْزَتِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ تَأْخُذُهُ النَّارُ إِلَى تَرْقُوَتِهِ

उनके टख़्नों तक पकड़ेगी और कुछ को आग उनके ज़ानूओं तक पकड़ेगी और उनमें से कुछ को उनकी कमर तक पकड़ेगी और उनमें से कुछ को आग उनकी हँसली तक पकड़ेगी।'

حَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَجَعَلَ مَكَانَ حُجْزَتِهِ حَقْوَيْهِ .

(7171) यही रिवायत इमाम साहब दो और उस्तादों से बयान करते हैं और उसमें हुज्ज़तिही की जगह हक़्वैहि है, दोनों पहलुओं तक जहाँ चादर (तहबन्द) बाँधी जाती है।

(14)
بَابٌ : النَّارُ يَدْخُلُهَا الْجَبَّارُونَ، وَالْجَنَّةُ يَدْخُلُهَا الضُّعَفَاءُ

बाब 14 : आग में जब्बार (मग़रूर व सरकश) और जन्नत में कम हैसियत वाले लोग दाख़िल होंगे

حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " احْتَجَّتِ النَّارُ وَالْجَنَّةُ فَقَالَتْ هَذِهِ يَدْخُلُنِي الْجَبَّارُونَ وَالْمُتَكَبِّرُونَ . وَقَالَتْ هَذِهِ يَدْخُلُنِي الضُّعَفَاءُ وَالْمَسَاكِينُ فَقَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لِهَذِهِ أَنْتِ عَذَابِي أُعَذِّبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ - وَرُبَّمَا قَالَ أُصِيبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ - وَقَالَ لِهَذِهِ

(7172) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'दोजख और जन्नत में झगड़ा हुआ, चुनाँचे आग ने कहा, मुझमें सरकश और मुतकब्बिर लोग दाख़िल होंगे, (ताकि मैं उन्हें सबक सिखाऊँ) और जन्नत ने कहा, मुझमें कमजोर और मिस्कीन लोग दाख़िल होंगे (ताकि मैं उनकी शानो मक़ाम बुलंद करूँ) चुनाँचे अल्लाह अज्ज़ व जल्ल जहन्नम को फ़र्माएगा, तू मेरा अजाब है तेरे जरिये मैं जिसे चाहूँगा, दुख दूँगा या मुसीबत पहुँचाऊँगा और जन्नत से कहेगा तू

أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ وَلِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْكُمَا مِلْؤُهَا " .

मेरी रहमत है, तेरे जरिये मैं जिस पर चाहूँगा रहमत नाजिल करूँगा और तुममें से हर एक को भर दूँगा।'

फ़ायदा : जन्नत और जहन्नम का यह मुकालमा (बातचीत) या मुबाहिसा (बहस) हकीकी मअनों में होगा, अल्लाह तआ़ला हर चीज की ज़ुबान को समझता है गोया ज़ुबाने क़ाल से मुबाहिसा होगा, ज़ुबाने हाल से नहीं और जन्नत में अकसरियत उन लोगों की होगी, जो अहले दुनिया की नजर में कम मर्तबा लोग थे, अगरचे अल्लाह के यहाँ उनका मक़ाम व मर्तबा बहुत बुलंद था।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنِي وَرْقَاءُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تَحَاجَّتِ النَّارُ وَالْجَنَّةُ فَقَالَتِ النَّارُ أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ وَالْمُتَجَبِّرِينَ . وَقَالَتِ الْجَنَّةُ فَمَا لِي لاَ يَدْخُلُنِي إِلاَّ ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ وَعَجَزُهُمْ . فَقَالَ اللَّهُ لِلْجَنَّةِ أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي . وَقَالَ لِلنَّارِ أَنْتِ عَذَابِي أُعَذِّبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي وَلِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْكُمْ مِلْؤُهَا فَأَمَّا النَّارُ فَلاَ تَمْتَلِئُ . فَيَضَعُ قَدَمَهُ عَلَيْهَا فَتَقُولُ قَطْ قَطْ . فَهُنَالِكَ تَمْتَلِئُ وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ" .

(7173) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'दोजख़ और जन्नत में झगड़ा हुआ तो आग ने कहा, मुझे मुतकब्बिरों और सरकशों के लिए तर्जीह दी गई है और जन्नत ने कहा तो मुझे क्या हुआ है, मुझमें तो सिर्फ कमजोर और कम मर्तबा और बेबस लोग दाखिल होंगे तो अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से फ़र्माया तू मेरी रहमत है, तेरे ज़रिये मैं अपने बन्दो में से जिस पर चाहूँगा, रहम करूँगा और आग से कहा, तू मेरा अ़ज़ाब है, तेरे ज़रिये मैं अपने बन्दों में से जिसको चाहूँगा, अ़ज़ाब दूँगा और तुममें से हर एक भर दिया जाएगा, लेकिन आग पुर नहीं होगी तो अल्लाह उस पर अपना क़दम रखेगा तो वह पुकार उठेगी बस बस! तब वह भर जाएगी और उसका कुछ हिस्सा कुछ की तरफ़ सुकड़ेगा।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَوْنٍ الْهِلاَلِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو سُفْيَانَ، - يَعْنِي مُحَمَّدَ بْنَ حُمَيْدٍ - عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ،

(7174) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत और जहन्नम में झगड़ा हुआ।' आगे ऊपर वाली हदीस बयान की।

أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " احْتَجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ " . وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ أَبِي الزِّنَادِ .

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَحَاجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ فَقَالَتِ النَّارُ أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ وَالْمُتَجَبِّرِينَ . وَقَالَتِ الْجَنَّةُ فَمَا لِي لاَ يَدْخُلُنِي إِلاَّ ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ وَغِرَّتُهُمْ قَالَ اللَّهُ لِلْجَنَّةِ إِنَّمَا أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي . وَقَالَ لِلنَّارِ إِنَّمَا أَنْتِ عَذَابِي أُعَذِّبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي . وَلِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْكُمَا مِلْؤُهَا فَأَمَّا النَّارُ فَلاَ تَمْتَلِئُ حَتَّى يَضَعَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى رِجْلَهُ تَقُولُ قَطْ قَطْ قَطْ . فَهُنَالِكَ تَمْتَلِئُ وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ وَلاَ يَظْلِمُ اللَّهُ مِنْ خَلْقِهِ أَحَدًا وَأَمَّا الْجَنَّةُ فَإِنَّ اللَّهَ يُنْشِئُ لَهَا خَلْقًا " .

(7175) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हजरत इमाम इब्ने मुनब्बिह् (रह.) को सुनाई हुई हदीसों में से एक हदीस यह है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत और दोजख़ में मुकालमा हुआ (बातचीत हुई) तो आग ने कहा, मुझे मुतकब्बिरों और सरकशों के लिए तर्जीह दी है (कि मैं उनके कस बल निकालूँ) और जन्नत ने कहा, तो मुझे क्या है, मुझमें सिर्फ़ कमजोर, ह़क़ीर और सादा लोह लोग दाखिल होंगे (मैं उनको बुलंद करूँगी) अल्लाह तआला ने जन्नत से फ़र्माया तू तो बस मेरी रहमत है, मैं अपने बन्दों में से जिस पर चाहूँगा तेरे जरिये रहम करूँगा और आग से कहा तू तो बस मेरा अ़जाब है, तेरे जरिये मैं अपने बन्दों में से जिसको चाहूँगा अ़ज़ाब दूँगा और तुममें से हर एक भर दिया जाएगा लेकिन वह तो नहीं भरेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना पैर रखेगा, वह कहेगी, बस! बस! तब वह भर जाएगी और उसका कुछ ह़िस्सा दूसरे कुछ की तरफ़ सुकड़ेगा और अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा, लेकिन जन्नत तो उसके लिए मख़्लूक़ पैदा करेगा।'

सहीह बुखारी, किताबुत् तफ़्सीर : 4850.

وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " احْتَجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ " . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ إِلَى قَوْلِهِ " وَلِكِلَيْكُمَا عَلَىَّ مِلْؤُهَا " . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ مِنَ الزِّيَادَةِ .

(7176) हजरत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत और दोजख में मुबाहसा हुआ।' आगे हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) की रिवायत की तरह यहाँ तक है। 'और तुम दोनों को मैं भरकर रहूँगा।' उसके बाद वाला इज़ाफ़ा बयान नहीं किया।

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَزَالُ جَهَنَّمُ تَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ . حَتَّى يَضَعَ فِيهَا رَبُّ الْعِزَّةِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدَمَهُ فَتَقُولُ قَطْ قَطْ وَعِزَّتِكَ . وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ " .

(7177) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जहन्नम यही क़हती रहेगी, क्या और है? यहाँ तक कि रब्बुल इ़ज़्ज़त तआ़ला उसमें अपना कदम रख देगा तो वह कह उठेगी, बस! बस! तेरी इ़ज़्ज़त की कसम और उसका कुछ हिस्सा, कुछ हिस्से की तरफ़ सिकुड़ जाएगा।'

तख़रीज 7177 : सहीह बुखारी, किताबुल ईमान : 1661; जामेअ तिर्मिजी : 3272.

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ، الْعَطَّارِ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِ شَيْبَانَ .

(7178) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत के हम मआ़नी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرُّزِّيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ عَطَاءٍ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ ‏{‏ يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ‏}‏

(7179) इमाम साहब अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के फ़र्मान, उस वक़्त का ख्याल करो जब हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गई है और वह कहेगी, क्या और मिल जाएगा

فَأَخْبَرَنَا عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " لاَ تَزَالُ جَهَنَّمُ يُلْقَى فِيهَا وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ حَتَّى يَضَعَ رَبُّ الْعِزَّةِ فِيهَا قَدَمَهُ فَيَنْزَوِي بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ وَتَقُولُ قَطْ قَطْ بِعِزَّتِكَ وَكَرَمِكَ . وَلاَ يَزَالُ فِي الْجَنَّةِ فَضْلٌ حَتَّى يُنْشِئَ اللَّهُ لَهَا خَلْقًا فَيُسْكِنَهُمْ فَضْلَ الْجَنَّةِ "

(क़ाफ़ आयत 30) कि हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'जहन्नम में मुसलसल लोग झोंके जाएँगे और वह कहेगी, क्या और हैं, यहाँ तक कि रब्बुल इज़्ज़त, उसमें अपना कदम रख देगा तो उसका कुछ हिस्सा कुछ की तरफ़ सिमटेगा और वह कहेगी, बस! बस! तेरी कुव्वत और करम की क़सम! और जन्नत का हिस्सा बचा रहेगा, यहाँ तक कि अल्लाह उसके लिए और मख़्लूक़ पैदा करेगा और उसको जन्नत के फ़ाज़िल हिस्से में आबाद किया जाएगा।'
सहीह बुखारी, किताबुत् तौहीद : 7384.

फ़ायदा : इन हदीसों में अल्लाह के क़दम का जिक्र है, अल्लाह का कदम मख़्लूक़ के क़दम की तरह नहीं है, वह उसके शायाने शान है इसलिए उसकी कैफियत या शक्लो सूरत को नहीं जाना जा सकता।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ - أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَبْقَى مِنَ الْجَنَّةِ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَبْقَى ثُمَّ يُنْشِئُ اللَّهُ تَعَالَى لَهَا خَلْقًا مِمَّا يَشَاءُ " .

(7180) हजरत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जन्नत का जिस क़द्र हिस्सा मंजूर होगा, बचा रहेगा, फिर अल्लाह तआला उसके लिए जैसी मख़्लूक़ चाहेगा पैदा करेगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ - قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي

(7181) हजरत अबू सईद (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'कियामत के दिन मौत को लाया जाएगा गोया कि वह सुर्मयी मेंढा है, अबू कुरैब ने यह इजाफ़ा किया है, चुनाँचे उसे जन्नत और

سَعِيدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُجَاءُ بِالْمَوْتِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَأَنَّهُ كَبْشٌ أَمْلَحُ - زَادَ أَبُو كُرَيْبٍ - فَيُوقَفُ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ - وَاتَّفَقَا فِي بَاقِي الْحَدِيثِ - فَيُقَالُ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ هَلْ تَعْرِفُونَ هَذَا فَيَشْرَئِبُّونَ وَيَنْظُرُونَ وَيَقُولُونَ نَعَمْ هَذَا الْمَوْتُ - قَالَ - وَيُقَالُ يَا أَهْلَ النَّارِ هَلْ تَعْرِفُونَ هَذَا قَالَ فَيَشْرَئِبُّونَ وَيَنْظُرُونَ وَيَقُولُونَ نَعَمْ هَذَا الْمَوْتُ -قَالَ - فَيُؤْمَرُ بِهِ فَيُذْبَحُ - قَالَ - ثُمَّ يُقَالُ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ خُلُودٌ فَلاَ مَوْتَ وَيَا أَهْلَ النَّارِ خُلُودٌ فَلاَ مَوْتَ " . قَالَ ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم { وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لاَ يُؤْمِنُونَ} وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى الدُّنْيَا .

जहन्नम के बीच खड़ा किया जाएगा (बाक़ी हदीस में इब्ने अबी शैबा और अबू कुरैब मुत्तफ़िक़ हैं) तो कहा जाएगा, ऐ जन्नतियों! क्या तुम इसको पहचानते हो? चुनाँचे वह सिर ऊपर उठाएँगे और देखकर कहेंगे, हाँ! यह मौत है और कहा जाएगा, ऐ दोजखियों! क्या तुम इसे पहचानते हो? वह गर्दन उठाकर देखेंगे और कहेंगे, हाँ! यह मौत है, तो उस को जिब्ह करने का हुक्म दिया जाएगा। चुनाँचे उसे ज़िब्ह कर दिया जाएगा, फिर कहा जाएगा ऐ अहले जन्नत! हमेशगी है, मौत नहीं आएगी और ऐ अहले जहन्नम! हमेशगी है मौत नहीं है।' फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह आयत तिलावत की 'इन्हें हसरत के दिन से डराइए, जब हर काम का फैसला किया जाएगा, जबकि अब भी यह लोग ग़फ़्लत में हैं और ईमान नहीं ला रहे।' (मरयम आयत 39) और अपने हाथ से दुनिया की तरफ़ इशारा किया।

तख़रीज 7181 : सहीह बुखारी, किताबुत् तफ़्सीर : 4730; जामेअ तिर्मिज़ी : 3156.

फ़ायदा : मौत भी एक मख़्लूक़ है, अल्लाह ने फ़र्माया,

(सूरह मुल्क : 2) अल्लाह ने मौत और हयात को पैदा किया 'कियामत के दिन अल्लाह मौत को मेंढे की शक्ल देगा और यह चीज़ अल्लाह की क़ुदरत से दूर नहीं है, उससे कोई महाल और नामुम्किन चीज़ लाज़िम नहीं आती, या कहकर कि इंक़िलाबे हक़ाइक़ (हक़ीक़तों को बदलना) महाल(असम्भव) है, इसकी तावील करना सही नहीं है, आखिरत को दुनिया पर क़यास करना, कुदरत को इंसानी साँचा में ढालना ही दरहकीकत गुमराही का मम्बअ और सरचश्मा है।

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ

(7182) हजरत अबू सईद (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, 'जब

الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي، سَعِيدٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا أُدْخِلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ وَأَهْلُ النَّارِ النَّارَ قِيلَ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ " . ثُمَّ ذَكَرَ بِمَعْنَى حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " فَذَلِكَ قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ " . وَلَمْ يَقُلْ ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. وَلَمْ يَذْكُرْ أَيْضًا وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى الدُّنْيَا .

अहले जन्नत को जन्नत में दाखिल कर दिया जाएगा और अहले दोज़ख़ को आग में, तो कहा जाएगा, 'ऐ अहले जन्नत!' फिर ऊपर वाली रिवायत की तरह रिवायत बयान की, हाँ! इतना फ़र्क़ है कि आपने फ़र्माया, 'अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के इस क़ौल में इसको बयान किया गया है।' यह नहीं कहा, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पढ़ा और अपने हाथ से दुनिया की तरफ़ इशारा करना भी बयान नहीं किया।

इसकी तखरीज हदीस 7110 में गुजर चुकी है।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنِي وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا نَافِعٌ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ، قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يُدْخِلُ اللَّهُ أَهْلَ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ وَيُدْخِلُ أَهْلَ النَّارِ النَّارَ ثُمَّ يَقُومُ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ فَيَقُولُ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ لاَ مَوْتَ وَيَا أَهْلَ النَّارِ لاَ مَوْتَ كُلٌّ خَالِدٌ فِيمَا هُوَ فِيهِ

(7183) हजरत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह अहले जन्नत को जन्नत में दाख़िल करेगा और अहले दोजख को दोजख में दाखिल कर देगा फिर उनके बीच एक ऐलान करने वाला खड़ा होगा और कहेगा ऐ अहले जन्नत! मौत नहीं है। और ऐ अहले दोजख़! मौत नहीं आएगी जो शख़्स जहाँ है वहीं हमेशा रहेगा।

तख़रीज 7183 : सहीह बुखारी, किताबुर् रिक़ाक़ : 6544

फ़ायदा : इन हदीसों से साबित होता है कि जन्नत और दोजख़ और उनके बाशिन्दे, हमेशा हमेशा बाक़ी रहेंगे उनमें से कोई चीज़ फना होने वाली नहीं है।

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ

(7184) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो

مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، أَنَّ أَبَاهُ، حَدَّثَهُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ، عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا صَارَ أَهْلُ الْجَنَّةِ إِلَى الْجَنَّةِ وَصَارَ أَهْلُ النَّارِ إِلَى النَّارِ أُتِيَ بِالْمَوْتِ حَتَّى يُجْعَلَ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ ثُمَّ يُذْبَحُ ثُمَّ يُنَادِي مُنَادٍ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ لاَ مَوْتَ وَيَا أَهْلَ النَّارِ لاَ مَوْتَ . فَيَزْدَادُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَرَحًا إِلَى فَرَحِهِمْ وَيَزْدَادُ أَهْلُ النَّارِ حُزْنًا إِلَى حُزْنِهِمْ " .

जाएँगे और दोजखी दोजख में पहुँच जाएँगे, मौत को लाया जाएगा यहाँ तक कि उसे जन्नत और ज़हन्नम के बीच रखकर जिब्ह कर दिया जाएगा, फिर ऐलान करने वाला ऐलान करेगा, ऐ अहले जन्नत! अब मौत नहीं आएगी और ऐ दोजखियों! अब मौत नहीं है। चुनाँचे अहले जन्नत की मसर्रत में मसर्रत का इजाफ़ा हो जाएगा और अहले दोजख के ग़म व हुज़्न में ग़म व हुज़्न का इजाफ़ा होगा।'

तख़रीज 7184 : सहीह बुख़ारी, किताबुर रिक़ाक़ : 6548.

حَدَّثَنِي سُرَيْجُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ هَارُونَ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " ضِرْسُ الْكَافِرِ أَوْ نَابُ الْكَافِرِ مِثْلُ أُحُدٍ وَغِلَظُ جِلْدِهِ مَسِيرَةُ ثَلاَثٍ " .

(7185) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'काफिर की दाढ़ या काफिर की कुचली उहुद पहाड़ की तरह होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन की मसाफत के बराबर होगी।'

फ़ायदा : जब काफिर दोजख में पहुँच जाएँगे तो अल्लाह तआला अपनी क़ुदरते कामिला से काफिर के हर अज़्व (अंग) और हर चीज़ को ख़ूब मोटा ताजा करके उसकी जसामत और क़द काठी में बहुत इजाफ़ा कर देगा, ताकि उसके जिस्म के हर हिस्से को खूब खूब अज़ाब हो और यह काम अल्लाह के लिए कोई मुश्किल नहीं है कि वह जिस्म के हकीकी और असली अजज़ा (हिस्सों) को फुलाकर उनका जहम (साइज) इतना बड़ा कर दे कि दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर हो जाए और खाल के जलने के बाद, वह उस खाल को दोबारा ले आए, जैसकि जिस्म के गलने सड़ने के बाद या जलाने के बाद दोबारा उस जिस्म और उन्हीं हिस्सों को ज़िन्दा करके हिसाब किताब लेगा और आज जब कुछ खुसूसी किस्म के जहाज़ ऊपर बहुत बुलंदी पर जाते हैं तो उनके जिस्म बहुत ज़्यादा फूल जाते हैं।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَأَحْمَدُ بْنُ عُمَرَ الْوَكِيعِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، يَرْفَعُهُ قَالَ " مَا بَيْنَ مَنْكِبَىِ الْكَافِرِ فِي النَّارِ مَسِيرَةُ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ لِلرَّاكِبِ الْمُسْرِعِ " . وَلَمْ يَذْكُرِ الْوَكِيعِيُّ " فِي النَّارِ " .

(7186) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) मरफ़ूअ़ हदीस बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'आग में काफिर के दो कँधों के बीच की दूरी तीन दिन की मसाफ़त के बराबर होगी, जबकि उसको तेज़ रफ़्तार सवार तै करे।' वकीई ने 'फ़िन्नारि' आग में, बयान नहीं किया।

सहीह बुखारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6551.

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنِي مَعْبَدُ بْنُ خَالِدٍ، أَنَّهُ سَمِعَ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ الْجَنَّةِ " . قَالُوا بَلَى . قَالَ صلى الله عليه وسلم " كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَعَّفٍ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لأَبَرَّهُ " . ثُمَّ قَالَ " أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ " . قَالُوا بَلَى . قَالَ " كُلُّ عُتُلٍّ جَوَّاظٍ مُسْتَكْبِرٍ "

(7187) हजरत हारिसा बिन वहब (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'क्या मैं तुम्हें अहले जन्नत के बारे में न बताऊँ?' सहाबा किराम ने कहा, ज़रूर! आपने फ़र्माया, 'यह कमजोर शख़्स, जिसको जईफ़ ख़्याल किया जाता हो, अगर वह अल्लाह के ऐतिमाद पर क़सम खा ले तो वो उसे पूरा कर दे।' फिर फ़र्माया 'क्या मैं तुम्हें अहले दोजख के बारे में न बताऊँ?' उन्होंने अ़र्ज़ किया, क्यूँ नहीं! आपने फ़र्माया, 'हर वह शख़्स जो बदख़ू, भारी भरकम पेटू और मुतकब्बिर हो।'

सहीह बुखारी, किताबुत्तफ़सीर : 4918; किताबुल अदब : 6071; किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर : 6657; जामेअ तिर्मिज़ी : 2650; सुनन इब्ने माजा : 4116.

मुफर्रिदातुल हदीस : (1) ऊ़तुल्लुन : बहुत खाने वाला, सख्त मिजाज, बदख़ू, सरकश, बदगो गुनाहगार, झगड़ालू। (2) जव्वाज़ : तकब्बुर से चलने वाला, मग़रूर, उज्जड, अखखड़, बिस्यारखोर, भारी भरकम।

फ़ायदा : जन्नत में अकसरियत उन लोगों की होगी, जो ज़ईफ़, कमदस्त, मुतवाज़ेअ और गुमनाम होंगे, लोग उनको कमतर और हकीर ख़्याल करेंगे लेकिन अल्लाह के यहाँ उनका मक़ाम व मर्तबा बहुत बुलंद होगा, इस वजह से अगर वह अल्लाह के करम पर भरोसा करते हुए किसी चीज़ पर क़सम

खा ले तो अल्लाह उसकी क़सम को पूरा कर देगा, या किसी चीज़ का सवाल करके कह दे, अल्लाह की क़सम, ऐसे ही होगा तो अल्लाह उसकी दुआ क़ुबूल कर लेगा।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " أَلاَ أَدُلُّكُمْ " .

(7188) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयना करते हैं , सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि यहाँ अला उख़्बिरुकुम की जगह अला अदुल्लुकुम है, क्या मैं तुम्हारी रहनुमाई न करूँ।'

इस हदीस की तखरीज हदीस 7116 में गुजर चुकी है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَعْبَدِ بْنِ خَالِدٍ، قَالَ سَمِعْتُ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ الْخُزَاعِيَّ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ الْجَنَّةِ كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَعِّفٍ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لأَبَرَّهُ أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ كُلُّ جَوَّاظٍ زَنِيمٍ مُتَكَبِّرٍ " .

(7189) हजरत हारिसा बिन वहब ख़ुज़ाई (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'क्या मैं तुम्हें अहले जन्नत के बारे में ख़बर न दूँ?' हर कम हैसियत जिसको हकीर ख्याल किया जाता है, अगर वह अल्लाह के भरोसे पर क़सम उठा ले तो अल्लाह उसको पूरा कर दे, क्या मैं तुम्हें अहले दोज़ख़ के बारे में न बताऊँ? हर बिस्यारख़ोर, बदअसल और मुतकब्बिर।'

इस हदीस की तखरीज हदीस 7116 में गुजर चुकी है।

मुफरिंदातुल हदीस : ज़नीम : कमीना, लईम, बदअस़ल, दुसरे ख़ानदान में अपने आपको दाखिल करने वाला।

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " رُبَّ أَشْعَثَ مَدْفُوعٍ بِالأَبْوَابِ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لأَبَرَّهُ " .

(7190) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'कुछ बार, परागन्दा बाल, जिसको दर-दर से ठुकरा दिया जाता है, अगर वह अल्लाह के भरोसे पर क़सम खा ले तो अल्लाह उसको पूरा कर देता है।'

मुफरिंदातुल हदीस : (1) अश्अस : परागन्दा और बिखरे हुए बालों वाला। (2) मदफ़ूअ़ : जिसको धुत्कार दिया जाए।

(7191) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़म्अ़ा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खिताब किया, और उसमें (ह़ज़रत सालेह अ़. की) ऊँटनी का जिक्र किया और उसकी कूँचें काटने वाले का जिक्र किया, चुनाँचे फ़र्माया, 'जब क़ौम का सबसे बड़ा बदबख़्त उठा, यानी उसके लिए वह शख़्स था, जो ग़ालिब, सरकश व मुफ़्सिद और अपने खानदान की पनाह व हिफ़ाजत रखने वाला उठा, जैसे अबू ज़म्अ़ा है।' फिर आपने औ़रतों का जिक्र किया और उनको नसीहत की, फिर फ़र्माया, 'तुममें से कोई शख़्स अपनी बीवी को क्यूँ मारता है?' अबू बक्र की रिवायत में है, 'लौण्डी की मार।' और अबू कुरैब की रिवायत में है, 'गुलाम को मारने की तरह, शायद उस दिन के आख़िर में, वह उसे तअ़ल्लुक़ात क़ायम करने की ज़रूरत महसूस करे।' फिर उन्हें आवाज़ से हवा ख़ारिज करने पर हँसने के सिलसिले में नसीहत की, तो फ़र्माया, 'तुममें से कोई शख़्स, अपने फेअ़ल पर क्यूँ हँसता है?'

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3377; किताबुत्तफ़्सीर : 4942; किताबुन्निकाह़ : 5204; किताबुल अदब : 6042; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3343; सुनन इब्ने माजा : 1983.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ، عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَمْعَةَ، قَالَ خَطَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ النَّاقَةَ وَذَكَرَ الَّذِي عَقَرَهَا فَقَالَ " إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا انْبَعَثَ بِهَا رَجُلٌ عَزِيزٌ عَارِمٌ مَنِيعٌ فِي رَهْطِهِ مِثْلُ أَبِي زَمْعَةَ " . ثُمَّ ذَكَرَ النِّسَاءَ فَوَعَظَ فِيهِنَّ ثُمَّ قَالَ " إِلاَمَ يَجْلِدُ أَحَدُكُمُ امْرَأَتَهُ " . فِي رِوَايَةِ أَبِي بَكْرٍ " جَلْدَ الأَمَةِ " . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي كُرَيْبٍ " جَلْدَ الْعَبْدِ وَلَعَلَّهُ يُضَاجِعُهَا مِنْ آخِرِ يَوْمِهِ " . ثُمَّ وَعَظَهُمْ فِي ضَحِكِهِمْ مِنَ الضَّرْطَةِ فَقَالَ " إِلاَمَ يَضْحَكُ أَحَدُكُمْ مِمَّا يَفْعَلُ " .

मुफर्रिदातुल हदीस : (1) अ़ज़ीज़ : ताक़तवर, सब पर ग़ालिब, मग़रूर (2) आ़रिम : बदख़ुल्क़, शरीर, मुफ़्सिद फ़ित्ना परदाज़ (3) मनीअ़ : मजबूत, क़वी जिस पर कोई क़ाबू न पा सके, यह आदमी क़िदार बिन सालिफ़ नामी था।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رَأَيْتُ عَمْرَو بْنَ لُحَىِّ بْنِ قَمَعَةَ بْنِ خِنْدِفَ أَبَا بَنِي كَعْبٍ هَؤُلاَءِ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ " .

(7192) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैंने उन बनू कअब के बाप, अम्र बिल लुह्य बिन क़मआ बिन ख़िन्दिफ़ को आग में अपनी अँतड़ियाँ घसीटते हुए देखा।'

फ़ायदा : अम्र बिन लुह्य, पहला शख़्स है जिसने दीने इब्राहीमी में तब्दीली की और बुतों की पूजा पाठ शुरू की और शाम के बनू अमालिक़ा से, हुबल नामी बुत लाकर मक्का मुकर्रमा में कअबा के क़रीब गाड़ दिया।

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَحَسَنٌ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنِي وَقَالَ، الآخَرَانِ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، يَقُولُ إِنَّ الْبَحِيرَةَ الَّتِي يُمْنَعُ دَرُّهَا لِلطَّوَاغِيتِ فَلاَ يَحْلُبُهَا أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ وَأَمَّا السَّائِبَةُ الَّتِي كَانُوا يُسَيِّبُونَهَا لآلِهَتِهِمْ فَلاَ يُحْمَلُ عَلَيْهَا شَىْءٌ . وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " رَأَيْتُ عَمْرَو بْنَ عَامِرٍ الْخُزَاعِيَّ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ وَكَانَ أَوَّلَ مَنْ سَيَّبَ السُّيُوبَ " .

(7193) हजरत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) बयान करते हैं, बह़ीरा वह जानवर है, जिसका दूध बुतों के लिए रोक लिया जाता था, चुनाँचे उनको कोई शख़्स अपने लिए नहीं दूहता था और साइबा वह जानवर है, जिसे लोग अपने मअबूदाने बातिला के लिए छोड़ देते थे और उन पर कोई चीज़ नहीं लादी जाती थी। इब्नुल मुसय्यिब (रह.) बयान करते हैं, हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने बताया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैंने अम्र बिन आमिर खुज़ाई को आग में अपनी अँतड़ियाँ घसीटते हुए देखा और वह पहला शख़्स है जिसने हैवानों को बुतों के लिए छोड़ा था।'

सहीह बुखारी, किताबुत् तफ़्सीर : 4623.

मुफ़रदातुल हदीस : सुयूब : साइबा की जमा है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ

(7194) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अहले नार के दो गिरोह मैंने नहीं देखे, एक ऐसे लोग

رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " صِنْفَانِ مِنْ أَهْلِ النَّارِ لَمْ أَرَهُمَا قَوْمٌ مَعَهُمْ سِيَاطٌ كَأَذْنَابِ الْبَقَرِ يَضْرِبُونَ بِهَا النَّاسَ وَنِسَاءٌ كَاسِيَاتٌ عَارِيَاتٌ مُمِيلاَتٌ مَائِلاَتٌ رُءُوسُهُنَّ كَأَسْنِمَةِ الْبُخْتِ الْمَائِلَةِ لاَ يَدْخُلْنَ الْجَنَّةَ وَلاَ يَجِدْنَ رِيحَهَا وَإِنَّ رِيحَهَا لَتُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ كَذَا وَكَذَا " .

जिनके पास गायों के दुमों जैसे कोड़े होंगे, जिनसे लोगों को मारेंगे, दूसरा गिरोह ऐसी औरतें जो लिबास पहनने के बावजूद नँगी होंगी, वह दूसरों को अपनी तरफ़ माइल करेंगी और ख़ुद उनकी तरफ़ माइल होंगी, उनके सिर बुख़्ती ऊँटों की कोहानों की तरह एक तरफ़ झुके होंगे, वह जन्नत में दाख़िल न होंगी और न उसकी ख़ुश्बू पाएँगी, हालाँकि उसकी ख़ुश्बू इतनी इतनी दूरी से पाई जाती है।'

सहीह बुखारी, किताबुल् लिबास : 5547

मुफ़रदातुल हदीस : (1) कासियातुन आरियात : (1) अल्लाह की नेअ्मतों से मल्बूस और शुक्र से आरी। (2) कपड़ों में मल्बूस, अच्छे कामों, आख़िरत की फिक्र और इताअत के एहतिमाम व तवज्जह से आरी व खाली (3) तंग चुस्त और कसा हुआ लिबास पहनेंगी, जिससे उनके बदन का उभार नजर आ जाएगा। (4) बारीक और नीम उरियाँ पहनने वाली जिसके अंदर उनका जिस्म नुमायाँ होगा। **(2) माइलात :** अल्लाह की इबादत व इताअत, अपनी इज़्ज़त व शर्मगाह की हिफ़ाज़त और पर्दा से बेरुख़ी इख़्तियार करने वाली, नाज़ो नख़रे से चलने वाली, मर्दों की तरफ़ झुकने और माइल होने वाली। **(3) मुमीलात :** दूसरी औरतों को अपनी तरह बेराह रवी पर डालने वाली, अपने कँधों को झटका देने वाली, मर्दों को अपनी ज़ेबो ज़ीनत से दअवते नजारा देकर अपनी तरफ़ रागिब करने वाली **(4) रुऊसुहुन्न कअस्निमतिल बुख़्त :** उनके सिर बुख़्ती ऊँटों की तरह एक तरफ़ झुके होंगे यानी वह अपने सिरों पर कोई चीज़ बाँधकर उसको बड़ा बनाएँगी, या मर्दों की तरफ़ सिर झुकाएँगी और नजर नीची नहीं करेंगी, या अपने बालों को सिर के दरम्यान इकट्ठा कर लेंगी, जिससे वह एक तरफ़ झुकेंगे।

फ़ायदा : नबी अकरम (ﷺ) की पेशीनगोई पूरी हो चुकी है, डण्डा फ़ोर्स मुख़्तलिफ़ शक्लों में ज़ुल्मो ज़्यादती के लिए वुजूद में आ चुकी है और फेशन परस्त, हुस्नो जमाल का इज़्हार करने के लिए शम्अ़े मेहफ़िल बनने वाली रंग बिरंग क़िस्म की औरतें सामने आ चुकी हैं, उरियानी व फ़हहाशी नित नए रंग इख़्तियार कर रही है, ब्यूटी पार्लर, नए नए अंदाज़ सामने ला रहे हैं।

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا زَيْدٌ، - يَعْنِي ابْنَ حُبَابٍ - حَدَّثَنَا أَفْلَحُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَافِعٍ، مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا

(7195) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर तुमने लम्बी उम्र पाई तो जल्दी ऐसे लोग

هُرَيْرَةَ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُوشِكُ إِنْ طَالَتْ بِكَ مُدَّةٌ أَنْ تَرَى قَوْمًا فِي أَيْدِيهِمْ مِثْلُ أَذْنَابِ الْبَقَرِ يَغْدُونَ فِي غَضَبِ اللَّهِ وَيَرُوحُونَ فِي سَخَطِ اللَّهِ " .

देखोगे यानी पुलिस जिनके हाथों में गायों की दुमों जैसे कोड़े या डण्डे होंगे, वह सुबह अल्लाह के ग़ज़ब में करेंगे, और शाम अल्लाह की नाराज़गी में करेंगे।'

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالُوا حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ حَدَّثَنَا أَفْلَحُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَافِعٍ، مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنْ طَالَتْ بِكَ مُدَّةٌ أَوْشَكْتَ أَنْ تَرَى قَوْمًا يَغْدُونَ فِي سَخَطِ اللَّهِ وَيَرُوحُونَ فِي لَعْنَتِهِ فِي أَيْدِيهِمْ مِثْلُ أَذْنَابِ الْبَقَرِ " .

(7196) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'अगर तुमने लम्बी जिन्दगी पाई तो बहुत जल्द ऐसे लोगों को देखोगे जो सुबह अल्लाह की नाराज़गी में करेंगे और शाम उसकी लअनत में, उनके हाथों में गायों की दुमों जैसी चीज़ होगी।'

(15) بَاب : فَنَآءِ الدُّنْيَا وَبَيَانِ الْحَشْرِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

बाब 15 : दुनिया के फ़ना और क़ियामत के दिन के ह़श्र (इज्तिमाअ) का बयान

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي وَمُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ أَعْيَنَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ، حَاتِمٍ -

(7197) इमाम साहब अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों की सनदों से बनू फ़िहर के फ़र्द हज़रत मुस्तौरिद (रज़ि.) से बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह की क़सम! दुनिया की आख़िरत के मुक़ाबले में मिसाल बस ऐसी है जैसाकि तुममें से कोई अपनी एक उँगली दरिया में डालकर निकाल

وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا قَيْسٌ، قَالَ سَمِعْتُ مُسْتَوْرِدًا، أَخَا بَنِي فِهْرٍ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَاللَّهِ مَا الدُّنْيَا فِي الآخِرَةِ إِلاَّ مِثْلُ مَا يَجْعَلُ أَحَدُكُمْ إِصْبَعَهُ هَذِهِ - وَأَشَارَ يَحْيَى بِالسَّبَّابَةِ - فِي الْيَمِّ فَلْيَنْظُرْ بِمَ يَرْجِعُ " . وَفِي حَدِيثِهِمْ جَمِيعًا غَيْرَ يَحْيَى سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ ذَلِكَ . وَفِي حَدِيثِ أَبِي أُسَامَةَ عَنِ الْمُسْتَوْرِدِ بْنِ شَدَّادٍ أَخِي بَنِي فِهْرٍ وَفِي حَدِيثِهِ أَيْضًا قَالَ وَأَشَارَ إِسْمَاعِيلُ بِالإِبْهَامِ .

ले, यहया ने शहादत की उँगली की तरफ़ इशारा किया, फिर देख ले, पानी की कितनी मिक़्दार उसके साथ लगकर आई है, उँसामा की हदीस में है, इस्माईल ने अंगूठे से इशारा किया।

तख़रीज 7197 : जामेअ़ तिर्मिज़ी : 2323; सुनन इब्ने माजा : 4108.

फ़ायदा : मत़लब यह है कि दुनिया की मुद्दत और लज़्ज़त आख़िरत के दवाम व हमेशगी और उसकी नेअ़मतों के मुक़ाबले में इतनी ही बेहकीकत और बेवक़अ़त हैं, जितना कि दरिया के मुक़ाबले में उँगली पर लगा पानी और यह मिसाल भी दरहकीकत सिर्फ़ समझाने के लिए दी गई है, वरना दरअसल दुनिया को आख़िरत के मुक़ाबले में यह निस्बत भी नहीं है, क्योंकि यह दुनिया और इसकी हर चीज़ महदूद और मुत्नाही, यानी फ़ानी और आ़रज़ी है और आख़िरत ला महदूद और ग़ैर मुतनाही, यानी दाइमी और अबदी (हमेशा हमेशा के लिये) है और रियाज़ी का मुसल्लमा क़ायदा है कि महदूद व मुतनाही को ला महदूद और ग़ैर मुतनाही के साथ कोई निस्बत नहीं दी जा सकती, अब उस शख़्स से ज़्यादा महरूम और ख़सारा वाला कौन हो सकता है, जो दुनिया को ह़ासिल करने के लिए तो ख़ूब जद्दो जहद करता है, मगर आख़िरत की तैयारी की तरफ़ से बिलकुल ग़ाफ़िल, बेनियाज और लापरवाह है।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ حَاتِمِ بْنِ أَبِي صَغِيرَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله

(7198) हजरत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'क़ियामत के दिन लोगों को नंगे पैर, नंगे बदन और बग़ैर ख़त्ना के जमा किया जाएगा।' मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के

عليه وسلم يقولُ " يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً " . قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ النِّسَاءُ وَالرِّجَالُ جَمِيعًا يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَالَ صلى الله عليه وسلم " يَا عَائِشَةُ الأَمْرُ أَشَدُّ مِنْ أَنْ يَنْظُرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ "

रसूल (ﷺ)! औरतों और मर्दों को, जबकि वह एक दूसरे को देख रहे होंगे? आपने फ़र्माया, 'ऐ आइशा! मामला इससे संगीन होगा कि वह एक दूसरे को देखें।'

सहीह बुखारी, किताबुर् रिक़ाक़ : 6527; नसाई : 2083; सुनन इब्ने माजा : 4276.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) हुफ़ात : हाफ़िन की जमा है, नंगा पैर। (2) उ़रात आ़रिन की जमा है, बरहना बदन, बेलिबास। (3) ग़ुर्लुन : अग़्रल की जमा है, ग़ैर मख़्तून (बग़ैर ख़त्ना के)

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है, लोगों का ह़श्र, उस अंदाज़ से होगा, जिस अंदाज़ से वह दुनिया में आए थे, आ़माल के सिवा, उनके पास दुनिया की कोई चीज़ नहीं होगी, जैसकि क़ुरआन मजीद में है, 'जिस तरह हमने तुम्हारी तख़्लीक़ की इब्तिदा की थी, इस तरह उसका एआ़दा करेंगे।' अम्बिया आयत नम्बर 104 और ह़ालात की दहशत और ख़तरनाकी की बिना पर कोई किसी की तरफ़ देखेगा ही नहीं, उसके बाद लिबास पहनाया जाएगा।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ حَاتِمِ، بْنِ أَبِي صَغِيرَةَ بِهَذَا الإِسْنَادِ وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِهِ " غُرْلاً " .

(7199) इमाम साहब यही हदीस दो और उस्तादों से बयान करते हैं, लेकिन उसमें ग़ैर मख़्तून होने का ज़िक्र नहीं है।

इसकी तखरीज हदीस 7127 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي، عُمَرَ قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ، بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَخْطُبُ وَهُوَ يَقُولُ " إِنَّكُمْ مُلاَقُو اللَّهِ مُشَاةً حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً " . وَلَمْ يَذْكُرْ زُهَيْرٌ فِي حَدِيثِهِ يَخْطُبُ .

(7200) हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने नबी अकरम (ﷺ) को ख़ुत्बा देते हुए यह फ़र्माते हुए सुना, 'यक़ीनन तुम अल्लाह को मिलोगे, नंगे पैर, नंगे जिस्म, ग़ैर मख़्तून, पैदल चलकर।' ज़ुहैर की हदीस में ख़ुत्बे का ज़िक्र नहीं है।

तख़रीज 7200 : सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6524, 6525.

(7201) इमाम साहब अपने मुख्तलिफ़ उस्तादों की सनदों से इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बयान करते है, रसूलुल्लाह (ﷺ) हममें वअ़ज़ व नसीहत के लिए ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए, चुनाँचे फ़र्माया, 'ऐ लोगों! तुम्हारा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ह़श्र, नंगे पैर, बरहना बदन और बिला ख़त्ना होगा, जिस त़रह़ हमने तुम्हारी पैदाइश की इब्तिदा की है, इस तरह उसका एआ़दा भी करेंगे, यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है और हम उसे पूरा करके रहेंगे।' (अम्बिया आयत नम्बर 104) ख़बरदार! क़ियामत के दिन, तमाम मख़्लूक़ से पहले इब्राहीम (अ़.) को लिबास पहनाया जाएगा, ख़बरदार! बेशक, मेरी उम्मत के कुछ लोगों को लाया जाएगा, चुनाँचे उन्हें बाएँ तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा तो मैं कहूँगा, ऐ मेरे रब! मेरे मानने वाले हैं तो जवाब दिया जाएगा, आपको मालूम नहीं है, इन्होंने आपके बाद क्या नए काम किये, तो मैं कहूँगा जैसाकि नेक बन्दे ह़ज़रत ईसा (अ़.) ने कहा, मैं इनका निगरान था, जब तक मैं इनमें मौजूद रहा, फिर तूने मुझे वापिस बुला लिया, फिर तू ही इन पर निगरान था और तू हर चीज़ पर गवाह है, अगर तू इनको सजा दे तो वह तेरे ही बन्दे हैं और अगन तू इन्हें माफ़ कर दे तो बिला शुब्हा तू ग़ालिब और दाना है।' (सूरह माइदा : 170 और 118)

आपने फ़र्माया, 'मुझे जवाब दिया जाएगा

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي كِلاَهُمَا، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى -قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَطِيبًا بِمَوْعِظَةٍ فَقَالَ " يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّكُمْ تُحْشَرُونَ إِلَى اللَّهِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً } كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ{ أَلاَ وَإِنَّ أَوَّلَ الْخَلاَئِقِ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ أَلاَ وَإِنَّهُ سَيُجَاءُ بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ يَا رَبِّ أَصْحَابِي . فَيُقَالُ إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ . فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ { وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ * إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ} قَالَ فَيُقَالُ لِي إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ " . وَفِي حَدِيثِ وَكِيعٍ وَمُعَاذٍ " فَيُقَالُ إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ " .

जबसे आप इनसे जुदा हुए हैं, तब से यह लगातार अपनी ऐड़ियों के बल दीन से फिरते रहे हैं।' वकीअ और मुआज़ की हदीस में है, 'चुनाँचे कहा जाएगा, आपको मालूम नहीं है, इन्होंने आपके बाद नई बातें दीन के अंदर पैदा कर लीं थीं।'

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3349; और बाब (वज़्कुरु फ़िल् किताबि मरयम...) : 3447; किताबुत्तफ़्सीर : 4625; और बाब (इन तुअज्ज़िब्हुम फ़इन्नहुम...) : 4740; और बाब (कमा बदाना अव्वल ...) : 4740; किताबुर्रिक़ाक़ : 6526; जामेअ तिर्मिज़ी : 2423; किताबुत्तफ़्सीर : 3167; नसाई : 2081, 2086.

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि सबसे पहले लिबास हज़रत इब्राहीम (अ) को पहनाया जाएगा क्योंकि उन्हें बरहना करके आग के अलाव में फेंका गया था और यह एक जुज़्ई फ़ज़ीलत है जिससे हजरत इब्राहीम (अ.) की हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर बरतरी लाज़िम नहीं आती, इसलिए किसी तावील की ज़रूरत नहीं है। हदीस की तौजीह व तफ़्सीर पीछे गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، قَالاَ جَمِيعًا حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى ثَلاَثِ طَرَائِقَ رَاغِبِينَ رَاهِبِينَ وَاثْنَانِ عَلَى بَعِيرٍ وَثَلاَثَةٌ عَلَى بَعِيرٍ وَأَرْبَعَةٌ عَلَى بَعِيرٍ وَعَشَرَةٌ عَلَى بَعِيرٍ وَتَحْشُرُ بَقِيَّتَهُمُ النَّارُ تَبِيتُ مَعَهُمْ حَيْثُ بَاتُوا وَتَقِيلُ

(7202) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोगों का हश्र तीन गिरोहों या तीन जमाअतों की शक्ल में होगा, एक क़िस्म, रग़बत रखने वाले (अल्लाह की रहमत) डरने वाले (अपने गुनाहों के मुवाख़िज़ा से) दूसरी क़िस्म, दो एक ऊँट पर, तीन एक ऊँट पर, चार एक ऊँट पर, यहाँ तक कि दस एक ऊँट पर, तीसरी क़िस्म : बाक़ी लोग जिनको आग जमा करेगी, जहाँ वह रात बसर करेंगे, वह भी उनके साथ रात गुज़ारेगी, जहाँ वह क़ैलूला करेंगे, वहीं वह आराम करेगी, जहाँ वह सुबह करेंगे, उनके

مَعَهُمْ حَيْثُ قَالُوا وَتُصْبِحُ مَعَهُمْ حَيْثُ أَصْبَحُوا وَتُمْسِي مَعَهُمْ حَيْثُ أَمْسَوْا " .

साथ ही वह सुबह करेगी और जहाँ वह शाम करेंगे उनके साथ वहीं आग शाम करेगी।'

तख़रीज 7202 : सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6522; नसाई : 2081, 2084.

फ़ायदा : इस हदीस से मुराद, लोगों को क़ियामत के क़रीब आग के डर से महफ़ूज़ जगह की तरफ़ जाना है, यह आग क़अ़रे अ़दन से निकलेगी, लोग उससे बचने के लिए, महफ़ूज़ जगहों की तरफ़ भागेंगे, ख़ुशहाल और आसूदा लोग अच्छे ज़ादे राह और सवारियों के साथ, महफ़ूज़ जगह की रग़बत रखते हुए और अपनी जगह रहने से डरकर निकलेंगे, दूसरा गिरोह सवारियों की क़िल्लत की वजह से दो दो तीन तीन यहाँ तक कि दस साथी मिलकर एक ऊँट पर बारी बारी सवार होकर चल पड़ेंगे, तीसरे गिरोह को कोई सवारी न मिल सकेगी, वह पैदल भाग खड़े होंगे, आग उनका पीछा नहीं छोड़ेगी, हर वक़्त हर जगह उनके साथ रहेगी।

(16) بَاب : فِيْ صِفَةِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

बाब 16 : क़ियामत के होलनाक मनाज़िर का बयान

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالُوا حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنُونَ ابْنَ سَعِيدٍ - عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم { يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ} قَالَ " يَقُومُ أَحَدُهُمْ فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ الْمُثَنَّى قَالَ " يَقُومُ النَّاسُ " . لَمْ يَذْكُرْ يَوْمَ .

(7203) हजरत इब्ने ड़मर (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से बयान करते हैं, जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के हुज़ूर खड़े होंगे (मुतफ़्फ़िफ़ीन : 6) आपने फ़र्माया, 'उनमें से कुछ अपने आधे कानों तक पसीने में खड़े होंगे।' इब्नुल मुसन्ना की रिवायत में यक़ूमुन्नास से पहले यौम का लफ़्ज नहीं है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ الْمُسَيَّبِيُّ، حَدَّثَنَا أَنَسٌ يَعْنِي ابْنَ عِيَاضٍ، ح وَحَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ

(7204) इमाम साहब ऊपर वाली रिवायत, अपने बहुत से उस्तादों की सनदों से, नाफ़ेअ (रह.) के वास्ते ही से बयान करते हैं, मूसा

سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، كِلاَهُمَا عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ، بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، وَعِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ، اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ يَحْيَى حَدَّثَنَا مَعْنٌ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو نَصْرٍ التَّمَّارُ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ، بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ، ح وَحَدَّثَنَا الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، كُلُّ هَؤُلاَءِ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمَعْنَى حَدِيثِ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ . غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ وَصَالِحٍ " حَتَّى يَغِيبَ أَحَدُهُمْ فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ " .

बिन उ़क़्बा और स़ालेह़ के अल्फ़ाज़ यह हैं, 'उनमें से कुछ अपने निस्फ़ कानों तक पसीने में ग़ायब हो जाएगा।'

तख़रीज 7204 : सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6531; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 2422मीम) किताबुत्तफ़्सीर : 3336; सुनन इब्ने माजा : 4278; सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4938; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 2422; किताबुत्तफ़्सीर : 3330.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِنَّ الْعَرَقَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَيَذْهَبُ فِي الأَرْضِ سَبْعِينَ بَاعًا وَإِنَّهُ لَيَبْلُغُ إِلَى أَفْوَاهِ النَّاسِ أَوْ إِلَى آذَانِهِمْ " . يَشُكُّ ثَوْرٌ أَيَّهُمَا قَالَ .

(7205) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत के दिन पसीना सत्तर (70) बाअ़ तक ज़मीन में चलाया जाएगा और वह लोगों के चेहरों या उनके कानों तक पहुँचेगा।' सौर को शक है कि उस्ताद ने कौनसा लफ़्ज़ कहा।

तख़रीज 7205 : सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6532.

फ़ायदा : दोनों हाथ फैलाए जाएँ तो एक बाअ़ बनता है।

حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى أَبُو صَالِحٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ، جَابِرٍ حَدَّثَنِي سُلَيْمُ بْنُ عَامِرٍ، حَدَّثَنِي الْمِقْدَادُ بْنُ الأَسْوَدِ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " تُدْنَى الشَّمْسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْخَلْقِ حَتَّى تَكُونَ مِنْهُمْ كَمِقْدَارِ مِيلٍ " . قَالَ سُلَيْمُ بْنُ عَامِرٍ فَوَاللَّهِ مَا أَدْرِي مَا يَعْنِي بِالْمِيلِ أَمَسَافَةَ الأَرْضِ أَمِ الْمِيلَ الَّذِي تُكْتَحَلُ بِهِ الْعَيْنُ . قَالَ " فَيَكُونُ النَّاسُ عَلَى قَدْرِ أَعْمَالِهِمْ فِي الْعَرَقِ فَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى كَعْبَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى حَقْوَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يُلْجِمُهُ الْعَرَقُ إِلْجَامًا " . قَالَ وَأَشَارَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِيَدِهِ إِلَى فِيهِ .

(7206) हजरत मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'क़ियामत के दिन, सूरज मख़्लूक़ से क़रीब किया जाएगा, यहाँ तक कि वह उनसे एक मील के बक़द्र रह जाएगा।' सुलैम बिन आमिर (रह.) कहते हैं, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता, मील से इनकी मुराद क्या थी, क्या ज़मीन की मसाफ़त या वह मील जिससे आँखों में सुर्मा डाला जाता है, आपने फ़र्माया, 'लोग अपने आमाल के बक़द्र पसीना में शराबोर होंगे (यानी जिस क़द्र आमाल ज़्यादा बुरे होंगे, उस क़द्र पसीना ज़्यादा छूटेगा) उनमें कुछ टख़्नों तक पसीने में होंगे और उनमें से कुछ का पसीना उनके घुटनों तक होगा और कुछ का उनके कूल्हों के ऊपर तक (यानी कमर तक) और कुछ वह होंगे जिनका पसीना उनके मुँह का अच्छी तरह लगाम बन रहा होगा।' और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने हाथ से अपने दहने मुबारक (मुबारह मुँह) की तरफ़ इशारा करके दिखाया।

तख़रीज 7206 : जामेअ तिर्मिज़ी : 2421.

फ़ायदा : क़ियामत में पेश आने वाले इन वाक़ियात व मनाज़िर की वाक़ेई और हक़ीक़ी सूरत का सही तसव्वुर इस दुनिया में मुकम्मल तौर पर नहीं किया जा सकता, पूरा इंकिशाफ़ बस उस वक़्त होगा, जब इंसान हक़ाइक़ (रियलिटी) से दो चार होगा, और यह मनाजिर इसकी आँखों के सामने आ जाएँगी, क्योंकि आख़िरत के उमूर को दुनिया पर क़यास नहीं किया जा सकता।

बाब 17 : वह सिफ़ात व ख़साइल, जिनसे दुनिया में लोगों को जन्नती और दोज़ख़ी होने की शनाख़्त हो जाती है।

(17)

بَاب : الصِّفَاتِ الَّتِى يُعْرَفُ بِهَا فِى الدُّنْيَا اَهْلُ الْجَنَّةِ وَاَهْلُ النَّارِ

(7207) हजरत एयाज बिन ह़िमार मुजाशेई (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक दिन अपने ख़ित़ाब में फ़र्माया, 'ख़बरदार! मुझे मेरे रब ने हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें उन बातों की तालीम दूँ, जिनसे तुम नावाकिफ़ हो और अल्लाह तआला ने आज के दिन मुझे उनकी तालीम दी है (अल्लाह का फ़र्मान है कि) जो माल मैंने अपने किसी बन्दे को इनायत किया है, वह उसके लिए हलाल है (किसी को अपने त़ौर पर किसी चीज़ के ह़राम ठहराने का ह़क़ हासिल नहीं है) और मैंने अपने तमाम बन्दों को ह़नीफ़ (अल्लाह के लिए यक्सू होने वाले) पैदा किया है और उनके पास शैतान आए, उन्होंने अल्लाह के दीन (ज़ाब्ता-ए-ह़यात) से फेर दिया या हटा दिया और जो चीज़ें मैंने बन्दों के लिए हलाल ठहराई थीं, उन्होंने वह उनके लिए ह़राम ठहरा दीं और शैतानों ने उन्हें हुक्म (मश्वरा) दिया कि मेरे साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहराएँ जिसके बारे में मैंने कोई दलील व बुरहान नहीं उतारी और अल्लाह तआला ने अहले जमीन पर नजर दौड़ाई तो उनमें से अहले किताब के चंद सही दीन पर बाक़ी रहने वालों के सिवा तामम अ़रब और अ़जम के लोगों से नाराज़ हुआ, (क्योंकि

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارِ بْنِ عُثْمَانَ، - وَاللَّفْظُ لأَبِي غَسَّانَ وَابْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ الْمُجَاشِعِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ ذَاتَ يَوْمٍ فِي خُطْبَتِهِ " أَلاَ إِنَّ رَبِّي أَمَرَنِي أَنْ أُعَلِّمَكُمْ مَا جَهِلْتُمْ مِمَّا عَلَّمَنِي يَوْمِي هَذَا كُلُّ مَالٍ نَحَلْتُهُ عَبْدًا حَلاَلٌ وَإِنِّي خَلَقْتُ عِبَادِي حُنَفَاءَ كُلَّهُمْ وَإِنَّهُمْ أَتَتْهُمُ الشَّيَاطِينُ فَاجْتَالَتْهُمْ عَنْ دِينِهِمْ وَحَرَّمَتْ عَلَيْهِمْ مَا أَحْلَلْتُ لَهُمْ وَأَمَرَتْهُمْ أَنْ يُشْرِكُوا بِي مَا لَمْ أُنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا وَإِنَّ اللَّهَ نَظَرَ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ فَمَقَتَهُمْ عَرَبَهُمْ وَعَجَمَهُمْ إِلاَّ بَقَايَا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَقَالَ إِنَّمَا بَعَثْتُكَ لأَبْتَلِيَكَ وَأَبْتَلِيَ بِكَ وَأَنْزَلْتُ عَلَيْكَ كِتَابًا لاَ يَغْسِلُهُ

الْمَاءُ تَقْرَؤُهُ نَائِمًا وَيَقْظَانَ وَإِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أُحَرِّقَ قُرَيْشًا فَقُلْتُ رَبِّ إِذًا يَثْلَغُوا رَأْسِي فَيَدَعُوهُ خُبْزَةً قَالَ اسْتَخْرِجْهُمْ كَمَا اسْتَخْرَجُوكَ وَاغْزُهُمْ نُغْزِكَ وَأَنْفِقْ فَسَنُنْفِقَ عَلَيْكَ وَابْعَثْ جَيْشًا نَبْعَثْ خَمْسَةً مِثْلَهُ وَقَاتِلْ بِمَنْ أَطَاعَكَ مَنْ عَصَاكَ . قَالَ وَأَهْلُ الْجَنَّةِ ثَلاَثَةٌ ذُو سُلْطَانٍ مُقْسِطٌ مُتَصَدِّقٌ مُوَفَّقٌ وَرَجُلٌ رَحِيمٌ رَقِيقُ الْقَلْبِ لِكُلِّ ذِي قُرْبَى وَمُسْلِمٍ وَعَفِيفٌ مُتَعَفِّفٌ ذُو عِيَالٍ - قَالَ - وَأَهْلُ النَّارِ خَمْسَةٌ الضَّعِيفُ الَّذِي لاَ زَبْرَ لَهُ الَّذِينَ هُمْ فِيكُمْ تَبَعًا لاَ يَتْبَعُونَ أَهْلاً وَلاَ مَالاً وَالْخَائِنُ الَّذِي لاَ يَخْفَى لَهُ طَمَعٌ وَإِنْ دَقَّ إِلاَّ خَانَهُ وَرَجُلٌ لاَ يُصْبِحُ وَلاَ يُمْسِي إِلاَّ وَهُوَ يُخَادِعُكَ عَنْ أَهْلِكَ وَمَالِكَ " . وَذَكَرَ الْبُخْلَ أَوِ الْكَذِبَ " وَالشِّنْظِيرُ الْفَحَّاشُ " . وَلَمْ يَذْكُرْ أَبُو غَسَّانَ فِي حَدِيثِهِ " وَأَنْفِقْ فَسَنُنْفِقَ عَلَيْكَ".

वह अक़ीदा और अ़मल के फ़साद व बिगाड़ में मुब्तला थे) (और मुझे) फ़र्माया, मैंने तुम्हें मब्ऊस किया है, ताकि तेरा (तेरे सब्र व शकीब का) इम्तिहान लूँ और तेरे ज़रिये लोगों को आज़माऊँ (कि वह तेरी तस्दीक़ करते हैं या नहीं) और मैंने तुझ पर ऐसी किताब उतारी है, जिसे पानी धो नहीं सकता (यानी वह सीनों में महफ़ूज़ होगी) तुम उसको नींद और बेदारी में (यानी हर हालत में) पढ़ोगे और अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं क़ुरैश को जला दूँ (उनको जंग की भट्टी में झोंकूँ) तो मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे रब! तब तो वह मेरा सिर कुचल देंगे और उसको रोटी की तरह बना कर छोड़ देंगे (कूट कूटकर रोटी की तरह फैला देंगे) उसने फ़र्माया उनको इस तरह निकाल दो जिस तरह इन्होंने तुम्हें निकाल दिया (यानी ऐलान करो कि जज़ीरतुल अरब में कोई काफ़िर और मुश्रिक नहीं रह सकता) उनसे जंग लड़ो, हम तुझे अस्बाब व वसाइल मुहैया करेंगे, ख़र्च करो, हम तुम पर ख़र्च करेंगे, लश्कर भेजो, हम उससे पाँच गुना लश्कर भेजेंगे (फ़रिश्तों से मदद करेंगे) और अपने इताअ़त गुज़ारों को लेकर अपने नाफ़र्मानों से जंग लड़ो और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, 'अहले जन्नत तीन क़िस्म के लोग हैं, साहिबे इख़्तियार व इक़्तिदार जो आ़दिल, सदक़ा करने वाला और नेकी की तौफ़ीक़ दिया गया हो, वह इंसान जो अपने तमाम रिश्तेदारों और मुसलमानों के लिए मेहरबान और नर्म दिल हो, वह इंसान जो

पाकदामन हो और अ़यालदार होने के बावजूद सवाल करने से बचता हो, या ह़राम कमाने से परहेज़ करता हो, अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, 'पाँच क़िस्म के इंसान दोज़ख़ी हैं कमजोर जिसके पास अ़क़्ल न हो (जो उसे ग़लत़ और नाजाइज़ उमूर से रोके) जो तुम्हारे ज़ेरेदस्त बनकर रहें, न अहल चाहते हैं और न माल (अपनी कोई राय और सोच नहीं है), वह नाख़ुन जिसकी ह़िर्स छुप न सके, मामूली चीज़ में भी खयानत करे, या वह ख़ाइन कि अगर उस पर त़मअ़ वाली चीज़ भी ज़ाहिर हो जाए तो वह खयानत करे और वह इंसान जो सुबह व शाम हर दम तुम्हें, तुम्हारे अहल और माल के बारे में धोखा देता है और अल्लाह तआ़ला ने बुख़्ल या झूट का भी जिक्र किया (यानी बख़ील और झूठे का) और शिंत़ीर, बदगो या फ़ह़्हश गो कहते हैं।' अबू ग़स्सान ने अपनी ह़दीस में (ख़र्च करो मैं तुम पर ख़र्च करूँगा) बयान नहीं किया।

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है (1) हमें आपने उन बातों की तालीम दी है, जिनके हम मोहताज थे, लेकिन उनसे नावाकिफ़ थे। (2) हलाल व हराम ठहराना अल्लाह का ह़क़ है, बन्दों को अपने तौर पर किसी चीज़ के ह़राम ठहराने का हक हासिल नहीं है। (3) अल्लाह तआ़ला ने तमाम इंसानों को ह़नीफ़ यानी अल्लाह के लिए यक्सू होने वाले, उसकी इताअत व फ़र्मांबरदारी की इस्तिअ़दाद रखने वाले बनाया है। (4) इंसान कुफ़्रो शिर्क और मअ़्सियत व नाफ़र्मानी का रास्ता शैतान के पीछे लगकर इख़्तियार करता है, वही उसको दीन से बरगश्ता करता है। (5) रसूलुल्लाह (ﷺ) की बिअ़्सत के वक़्त तमाम अ़रब व अ़जम चंद अहले किताब के सिवा अ़क़ीदा और अ़मल के फ़साद का शिकार थे और अल्लाह की नाराज़ी के मुस्तह़िक़ थे, ऐसे ह़ालात में अल्लाह तआ़ला ने आपको मब्ऊस फ़र्माया, जिसमें आपका और लोगों का इम्तिहान है कि कौन अपना अपना फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी किस अंदाज़ में अदा करता है। (6) अल्लाह तआ़ला ने आप पर ऐसी किताब नाज़िल की

जो लोगों के सीनों में महफ़ूज़ हो जाने वाली है, जिसकी मुहब्बत दिलों में इस क़द्र बैठने वाली है कि उससे मुहब्बत करने वाले उनको सोते और जागते दोनों हालतों में पढ़ते हैं। (7) अल्लाह तआ़ला गर्म व सर्द तमाम हालात में अपने नबी की मदद फ़र्माता है और उसको ज़रूरत के तमाम सामान और वसाइल मुहैया करता है। (8) जन्नतियों और जहन्नमियों के ख़साइल और आ़दात को बयान किया, उस आईना (काँच) में हर इंसान अपना चेहरा देख सकता है।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَلَمْ يَذْكُرْ فِي حَدِيثِهِ " كُلُّ مَالٍ نَحَلْتُهُ عَبْدًا حَلاَلٌ " .

(7208) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, लेकिन उसमें 'जो माल मैंने किसी बन्दे को अ़ता किया है, हलाल है' का जिक्र नहीं है।

حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بِشْرٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ هِشَامٍ، - صَاحِبِ الدَّسْتَوَائِيِّ - حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم خَطَبَ ذَاتَ يَوْمٍ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَقَالَ فِي آخِرِهِ قَالَ يَحْيَى قَالَ شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ سَمِعْتُ مُطَرِّفًا فِي هَذَا الْحَدِيثِ .

(7209) हजरत एयाज बिन हिमार (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक दिन ख़िताब फ़र्माया, 'आगे ऊपर वाली रिवायत है और क़तादा के इस हदीस के मुतर्रिफ़ से सिमाअ़ की तसरीह है। (कतादा मुदल्लिस रावी है।)

وَحَدَّثَنِي أَبُو عَمَّارٍ، حُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنِ الْحُسَيْنِ، عَنْ مَطَرٍ، حَدَّثَنِي قَتَادَةُ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ، أَخِي بَنِي مُجَاشِعٍ قَالَ قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ يَوْمٍ خَطِيبًا فَقَالَ " إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي " . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمِثْلِ حَدِيثِ هِشَامٍ

(7210) हजरत एयाज बिन हिमार (रज़ि.) जो क़बीला मुजाशेअ़ के फर्द हैं , बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन हममें ख़िताब फ़र्माने के लिए खड़े हुए तो फ़र्माया, 'अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है।' आगे हदीस बयान की और उसमें यह इज़ाफ़ा है 'अल्लाह तआ़ला ने मेरी त़रफ़ वह्य की है, तवाजोअ़ और आजिज़ी इख़्तियार करो, यहाँ तक कि कोई शख़्स दूसरे पर फ़ख़्र न करे और न कोई शख़्स दूसरे पर ज़्यादती करे।' और

عَنْ قَتَادَةَ وَزَادَ فِيهِ " وَإِنَّ اللَّهَ أَوْحَى إِلَىَّ أَنْ تَوَاضَعُوا حَتَّى لاَ يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ وَلاَ يَبْغِي أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ " . وَقَالَ فِي حَدِيثِهِ " وَهُمْ فِيكُمْ تَبَعًا لاَ يَبْغُونَ أَهْلاً وَلاَ مَالاً " . فَقُلْتُ فَيَكُونُ ذَلِكَ يَا أَبَا عَبْدِ اللَّهِ قَالَ نَعَمْ وَاللَّهِ لَقَدْ أَدْرَكْتُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَرْعَى عَلَى الْحَىِّ مَا بِهِ إِلاَّ وَلِيدَتُهُمْ يَطَؤُهَا .

इस हदीस में है, 'वह तुम्हारे ताबेअ हैं और अहल और माल के ख़्वाहिशमंद या मुतलाशी नहीं।' क़तादा (रह.) कहते हैं, मैंने अपने उस्ताद मुतर्रिफ़ से पूछा, ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! ऐसा भी होता है? उन्होंने कहा, हाँ! मैंने ऐसे लोगों को जाहिलियत के दौर में पाया है, एक शख़्स क़बीला की बकरियों को सिर्फ़ इस पर चराता है कि वह उनकी लौण्डी से ताल्लुक़ात क़ायम करता है (इसके सिवा कोई और मज़दूरी या उज्रत नहीं चाहता।)

(18)
بَاب: عَرْضِ مَقْعَدِ الْمَيِّتِ مِنَ الْجَنَّةِ أَوْ النَّارِ عَلَيْهِ وَإِثْبَاتِ عَذَابِ الْقَبْرِ وَالتَّعَوُّذِ مِنْهُ

बाब 18 : मय्यित पर उसका जन्नत और दोज़ख़ का ठिकाना पेश करना, क़ब्र के अ़ज़ाब के इस्बात और उससे पनाह चाहने का बयान।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، قَالَ قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا مَاتَ عُرِضَ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ إِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَمِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَمِنْ أَهْلِ النَّارِ يُقَالُ هَذَا مَقْعَدُكَ حَتَّى يَبْعَثَكَ اللَّهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(7211) हजरत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुममें से कोई जब मर जाता है तो हर सुबह व शाम उसके सामने उसका ठिकाना पेश किया जाता है, अगर वह जन्नतियों में से है तो जन्नतियों के मक़ाम से और अगर दोज़ख़ियों में से है तो दोज़खियों के मक़ाम से और कहा जाता है, यह तेरा होने वाला ठिकाना है, यहाँ तक कि क़ियामत के दिन, अल्लाह तुझे उसकी तरफ़ उठाएगा।'

सहीह बुखारी, किताबुल जनाइज़ : 1379; नसाई : 2071.

फ़ायदा : क़ब्र में सुबह व शाम (रोज़ाना) जन्नतियों को अपना मक़ाम देखकर, जो मसर्रत व शादमानी हासिल होगी और दोज़खियों को अपनी जगह देखकर जो रंजो कुल्फ़त होगी, उसका इस दुनिया में कोई अंदाज़ा नहीं हो सकता और न उसकी कैफ़ियत को जानना हमारे लिए मुम्किन है, क्योंकि उसका तअ़ल्लुक़ एक ऐसे जहान (बरज़ख़) से है, जिसका मुशाहिदा हमने नहीं किया है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " إِذَا مَاتَ الرَّجُلُ عُرِضَ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ إِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَالْجَنَّةُ وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَالنَّارُ " . قَالَ " ثُمَّ يُقَالُ هَذَا مَقْعَدُكَ الَّذِي تُبْعَثُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(7212) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब आदमी फ़ौत हो जाता है तो सुबह व शाम उस पर उसका ठिकाना पेश किया जाता है, अगर वह जन्नती है तो जन्नत और अगर दोजख़ी है तो आग, आपने फ़र्माया, 'फिर कहा जाता है, यह तेरा वह ठिकाना है जिसकी तरफ़ तुम्हें क़ियामत के दिन उठाया जाएगा।'

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ جَمِيعًا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، قَالَ ابْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، قَالَ وَأَخْبَرَنَا سَعِيدٌ الْجُرَيْرِيُّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ أَبُو سَعِيدٍ وَلَمْ أَشْهَدْهُ مِنَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَلَكِنْ حَدَّثَنِيهِ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ بَيْنَمَا النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فِي حَائِطٍ لِبَنِي النَّجَّارِ عَلَى بَغْلَةٍ لَهُ وَنَحْنُ مَعَهُ إِذْ حَادَتْ بِهِ فَكَادَتْ تُلْقِيهِ وَإِذَا أَقْبُرٌ سِتَّةٌ أَوْ خَمْسَةٌ أَوْ أَرْبَعَةٌ - قَالَ كَذَا كَانَ يَقُولُ الْجُرَيْرِيُّ - فَقَالَ " مَنْ يَعْرِفُ أَصْحَابَ

(7213) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, यह हदीस बयान करते वक़्त मैं नबी अकरम (ﷺ) की मज्लिस में हाजिर नहीं था, लेकिन यह मुझे हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि.) ने सुनाई है कि एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) क़बीला बनू नज्जार के एक बाग़ से, अपने खच्चर पर सवार होकर गुज़र रहे थे और हम भी आपके साथ थे, अचानक आपका खच्चर रास्ते से हटा, क़रीब था कि वह (बिदकने की वजह से) आपको गिरा दे, अचानक नजर पड़ी तो वहाँ छः, पाँच या चार क़ब्रें थीं, (जरीर रावी ऐसे ही बयान करते थे) तो आपने पूछा 'इन क़ब्रों के मुर्दों से कौन वाक़िफ़ है?' चुनाँचे एक आदमी ने कहा, मैं (जानता हूँ) आपने फ़र्माया, 'तो यह लोग कब

هَذِهِ الأَقْبُرِ " . فَقَالَ رَجُلٌ أَنَا . قَالَ " فَمَتَى مَاتَ هَؤُلاَءِ " . قَالَ مَاتُوا فِي الإِشْرَاكِ . فَقَالَ " إِنَّ هَذِهِ الأُمَّةَ تُبْتَلَى فِي قُبُورِهَا فَلَوْلاَ أَنْ لاَ تَدَافَنُوا لَدَعَوْتُ اللَّهَ أَنْ يُسْمِعَكُمْ مِنْ عذابِ الْقَبْرِ الَّذِي أَسْمَعُ مِنْهُ " . ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ " تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ " . قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ فَقَالَ " تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ " . قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ . قَالَ " تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ " . قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ قَالَ " تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ " . قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ .

मरे थे?' उस शख़्स ने कहा, यह मुश्रिक (शिर्क करते) मरे थे। (यानी ज़माना शिर्क में) तो आपने फ़र्माया, 'इस उम्मत की इन क़ब्रों में आज़माइश की जाती है, या यह लोग अ़ज़ाब में मुब्तला हैं, अगर यह ख़ौफ़ न होता कि तुम मुर्दों को दफ़न न कर सकोगे तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि क़ब्र के अ़ज़ाब से जितना कुछ मैं सुन रहा हूँ, वह तुमको भी सुना दे।' फिर आपने अपना रुख़ हमारी तरफ़ किया, (हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए) और फ़र्माया, 'आग के अ़ज़ाब से अल्लाह से पनाह तलब करो।' सबने कहा, हम दोज़ख़ के अ़ज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं। आपने फ़र्माया, 'क़ब्र के अ़ज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो।' सबने कहा, हम क़ब्र के अ़ज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं। आपने फ़र्माया, 'सब फ़ित्नों से जाहिरी फ़ित्नों से भी और बातिनी फ़ित्नों से भी (खुले और छुपे) अल्लाह की पनाह माँगो, सबने कहा, हम सब ज़ाहिरी और बातिनी फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह माँगते हैं। आपने फ़र्माया, 'दज्जाल के फित्ने से अल्लाह की पनाह माँगो, सबने कहा, हम दज्जाल के फ़ित्ने से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

फ़ायदा : अहादीस से मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला ने बरज़ख़ के अ़ज़ाब को जिन्न व इंस से मख़्फ़ी रखा है, इनको उसका पता बिलकुल नहीं चलता, लेकिन इनके अलावा दूसरी मख़्लूक़ात को इसका कुछ इदराक व एह्सास हो जाता है। बनू नज्जार के बाग़ में जिन लोगों की क़ब्रें थीं उन पर अ़ज़ाब हो रहा था, आप जिस ख़च्चर पर सवार थे, उसको उसका एह्सास हुआ और उस पर असर पड़ा, लेकिन आपके अस्हाब व रुफ़क़ा (साथियों) को उसका कोई एहसास नहीं हुआ और आप उस अ़ज़ाब को सुन रहे थे, इसलिए आपने साथियों को फ़र्माया, 'क़ब्र के अ़ज़ाब की जो कैफ़ियत अल्लाह

तआला ने मुझ पर मुंकशिफ़ (ज़ाहिर) कर दी है, अगर अल्लाह तआला वह कैफ़ियत तुम पर मुंकशिफ़ करदे और तुम्हें भी मुर्दों की चीख़ो पुकार सुना दे तो उसका ख़तरा है कि तुम्हें मौत से इतनी दहशत हो जाए कि तुम इनको दफ़न भी न कर सको, इसलिए मैं अल्लाह से यह दुआ नहीं करता कि वह तुम्हें भी सुना दे हक़ीक़त यह है कि मरने वालों पर मरने के बाद जो कुछ गुजरता है, अगर हम सब उसको देख लें या सुन लें तो हम कोई काम काज न कर सकें और दुनिया का निजाम दरहम बरहम हो जाए, उसके बाद नबी अकरम (ﷺ) ने उन चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जह किया, जिनसे बचने की हमें फ़िक्र करनी चाहिए, चूँकि हर क़िस्म के अ़ज़ाब और फ़ित्ना से बचाने वाला, बस अल्लाह ही है, इसलिए हमें हमेशा उससे पनाह की दरख़्वास्त करनी चाहिए कि वह हमें दोजख़ के अ़ज़ाब, क़ब्र के अ़ज़ाब और हर क़िस्म के ज़ाहिरी व बातिनी, खुले और पोशीदा फ़ित्नों से पनाह दे।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَوْلاَ أَنْ لاَ تَدَافَنُوا لَدَعَوْتُ اللَّهَ أَنْ يُسْمِعَكُمْ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ " .

(7214) हजरत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर यह ख़दशा न होता कि तुम मुर्दों को दफ़न नहीं कर सकोगे तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि वह तुम्हें क़ब्र का अ़ज़ाब सुना दे।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، كُلُّهُمْ عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ جَمِيعًا عَنْ يَحْيَى الْقَطَّانِ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنِي عَوْنُ، بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ الْبَرَاءِ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى

(7215) इमाम साहब अपने बहुत से उस्तादों की सनदों से हजरत अबू अय्यूब (रज़ि.) से रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सूरज गुरूब होने के बाद बाहर तशरीफ़ ले गए तो एक आवाज़ सुनी, चुनाँचे फ़र्माया, 'यहूदियों को उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा है।'

तख़रीज 7215 : सहीह बुखारी, किताबुल जनाइज़ : 1375; नसाई : 2058.

الله عليه وسلم بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ فَسَمِعَ صَوْتًا فَقَالَ " يَهُودُ تُعَذَّبُ فِي قُبُورِهَا " .

(7216) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, 'बन्दा (मरने के बाद) जब अपनी क़ब्र में रख दिया जाता है और उसके साथी उससे पुश्त फेरकर चल देते हैं, यक़ीनन वह उनकी जूतियों की आवाज़ सुनता है। आपने फ़र्माया, 'उस वक़्त उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं वह उसको बिठाते हैं, फिर उससे पूछते हैं, तुम उस शख़्स के बारे में क्या कहते थे? आपने फ़र्माया, 'पस जो सच्चा मोमिन होता है तो वह कहता है मैं गवाही देता हूँ (क्योंकि वह दुनिया में गवाही देता रहा है) कि वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।' आपने फ़र्माया, 'उसे कहा जाता है (ईमान न लाने की सूरत में) दोज़ख़ में जो जगह तुम्हारी थी उसको देख लो, अल्लाह तआ़ला ने अब तुम्हें उसकी जगह, जन्नत में एक ठिकाना दे दिया है।' अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, 'चुनाँचे वह उन दोनों जगहों को एक साथ देख लेगा।' क़तादा बयान करते हैं और हमें बताया गया, उसके लिए उसकी क़ब्र सत्तर (70) हाथ वसीअ़ कर दी जाती है और उसे दोबारा उठाए जाने तक तरोताज़ा नेअ़्मतों से भर दिया जाता है।

तख़रीज 7216 : नसाई : 2049.

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ " . قَالَ " يَأْتِيهِ مَلَكَانِ فَيُقْعِدَانِهِ فَيَقُولاَنِ لَهُ مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ " . قَالَ " فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَيَقُولُ أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ " . قَالَ " فَيُقَالُ لَهُ انْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ قَدْ أَبْدَلَكَ اللَّهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ " . قَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فَيَرَاهُمَا جَمِيعًا " . قَالَ قَتَادَةُ وَذُكِرَ لَنَا أَنَّهُ يُفْسَحُ لَهُ فِي قَبْرِهِ سَبْعُونَ ذِرَاعًا وَيُمْلأُ عَلَيْهِ خَضِرًا إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ .

फ़ायदा : अरब लोग अपने मुर्दों को क़ब्रों में दफ़न करते थे और वह आ़म तौर पर इसी तरीक़े से आगाह थे इसलिए आ़म रिवाज के मुताबिक़ आपने क़ब्र में रखने का ज़िक्र किया, वरना अल्लाह के फ़रिश्ते सवाल व जवाब हर मरने वाले से करते हैं, ख़्वाह उसका जिस्म क़ब्र में दफ़न किया जाए या दरिया में बहाया जाए, ख़्वाह आग में जलाया जाए, या गोश्तख़ोर दरिन्दे खा जाए, क्योंकि यह सब कुछ बराहे रास्त और असली तौर पर रूह के साथ होता है और जिस्म ख़्वाह कहीं भी हो और किसी हाल में हो, वह तब्अ़न उससे मुतास्सिर होता है, जिस तरह दुनिया में तक्लीफ़ व मुसीबत या राहत व आराम और लज्जत की कैफियत बराहे रास्त जिस्म पर तारी होती है और रूह उससे तब्अ़न मुतास्सिर होती है, आखिरत में उसके बरअ़क्स होगा, वहाँ बराहे रास्त रूह मुतास्सिर होगी और जिस्म उससे तब्अ़न मुतास्सिर होगा। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने लिखा है, किसी सही हदीस से यह बात साबित नहीं होती कि क़ब्र में मय्यित के सामने नबी अकरम (ﷺ) होते हैं और हाज़ा से यह साबित नहीं होता कि आप सामने होते हैं, इसके लिए जहन में मौजूद होना काफ़ी है। (तक्मिला जिल्द 6 पेज 241) बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में सराहत के साथ मौजूद है कि फ़रिश्ता पूछता है मा तक़ूलु फ़ी हाज़र्रजुलि मुहम्मद, तुम उस आदमी मुहम्मद (ﷺ) के बारे में क्या राय रखते थे कुछ रिवायात में अर्रजुलुल्लज़ी बुइसा फ़ीकुम जिस आदमी को तुम्हारे अंदर भेजा गया था।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِنْهَالٍ الضَّرِيرُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ الْمَيِّتَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ إِنَّهُ لَيَسْمَعُ خَفْقَ نِعَالِهِمْ إِذَا انْصَرَفُوا " .

(7217) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'मय्यित को जब क़ब्र में रख दिया जाता है तो वह वापिस जाने वालों की वापसी के वक़्त उनकी जूतियों की आहट सुनता है।'

सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़ : 1374; अबू दाऊद : 3231; वफ़िस्सुन्ना : 4752; नसाई : 2048; और बाब मस्अलतुल काफ़िर : 2050.

حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِي ابْنَ عَطَاءٍ - عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ " . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ شَيْبَانَ عَنْ قَتَادَةَ .

(7218) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, 'बन्दा (मरने के बाद) जब क़ब्र में रख दिया जाता है और उसके साथी उसके पास से वापिस फिरते हैं।' आगे हदीस नम्बर 70 की तरह है।

इस हदीस की तखरीज हदीस 7146 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارِ بْنِ عُثْمَانَ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " { يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ} قَالَ " نَزَلَتْ فِي عَذَابِ الْقَبْرِ فَيُقَالُ لَهُ مَنْ رَبُّكَ فَيَقُولُ رَبِّيَ اللَّهُ وَنَبِيِّي مُحَمَّدٌ صلى الله عليه وسلم . فَذَلِكَ قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ { يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الآخِرَةِ} " .

(7219) हजरत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन्हें क़ौले साबित (कलिमा त़य्यिबा) से साबित क़दम रखता है।' (इब्राहीम : 27)

आपने फ़र्माया, 'यह आयत अ़ज़ाबे क़ब्र के बारे में उतरी है, उससे पूछा जाता है, तेरा रब कौन है? तो वह कहता है, मेरा रब अल्लाह है और मेरे नबी (मुहम्मद) हैं, अल्लाह अ़ज्ज़ व जल्ल के इस क़ौल में उसकी त़रफ़ इशारा है (जो लोग ईमान लाए, उन्हें अल्लाह क़ौले साबित (कलिमा तय्यिबा) से दुनिया की ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आख़िरत में भी साबित क़दम रखेगा।'

तख़रीज 7219 : सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़ : 1369; किताबुत्तफ़्सीर : 4699; सुनन अबूदाऊद : 4750; जामेअ तिर्मिज़ी : 3320; नसाई : 2056; सुनन इब्ने माजा : 4269.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ قَالُوا حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - يَعْنُونَ ابْنَ مَهْدِيٍّ - عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، { يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الآخِرَةِ} قَالَ نَزَلَتْ فِي عَذَابِ الْقَبْرِ .

(7220) हजरत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) बयान करते हैं कि 'जो लोग ईमान लाए, उन्हें अल्लाह क़ौले साबित (कलिमा शहादत) से दुनिया की ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आख़िरत में भी साबित क़दम रखेगा।' क़ब्र के अ़ज़ाब के बारे में नाज़िल हुई है।

तख़रीज 7220 : नसाई : 2055.

फ़ायदा : कुरआनो सुन्नत की नुसूस से यह साबित होता है कि अज़ाबे क़ब्र का तअल्लुक़ बदन और रूह दोनों से है लेकिन बक़ौले हाफ़िज इब्ने हजर, अज़ाब का तअल्लुक़, रूह और जसद दोनों से है, लेकिन असली और हकीकी तअल्लुक़ रूह से है और तब्अन जसद भी उसके साथ दुख, दर्द और लज्जत व नेअ्मत से मुतास्सिर होता है, लेकिन अहले दुनिया को उसका पता नहीं चलता, अगर क़ब्र खोदकर मुर्दा को देख भी लिया जाए तो फिर अभी एहसास नहीं होता। (तक्मिला जिल्द 6 पेज 241) जिस तरह ख़्वाब में लज़्ज़त या तक्लीफ़ बराहे रास्त दरअसल रूह के लिए होती है और जिस्म तब्अन उससे मुतास्सिर होता है, इस तरह ख़्वाब में जो लज़्ज़त या तक्लीफ़ ख़्वाब देखने वाले को होती है, उसके साथ लेटने वाला, उसको महसूस नहीं करता, जुम्हूर अहले सुन्नत का मौक़िफ़ यही है, मजीद अक़्वाल नीचे दर्ज हैं।

(1) ख़्वारिज और कुछ मोतज़िला के नज़दीक, क़ब्र में अज़ाब नहीं होता है, यह क़ौल सरीह नुसूस के ख़िलाफ़ है।

(2) क़ब्र का अज़ाब सिर्फ़ काफ़िर को होता है, लेकिन यह क़ौल जो कुछ मोतज़िला का है, अहादीस के ख़िलाफ़ है।

(3) सवाल व अज़ाब का तअल्लुक़ सिर्फ़ रूह से है, यह इब्ने हज़्म का नज़रिया है, जो सही नहीं है, क्योंकि फ़रिश्ते सवाल बिठाकर करते हैं और इसका तअल्लुक़ जसद से है।

(4) अज़ाब सिर्फ़ बदन को होता है, इब्ने जरीर और कुछ उलमा का यही नजरिया है, लेकिन जब इताअत व मअ्सियत बदन और रूह दोनों ने मिलकर की है तो अज़ाब व सवाब सिर्फ़ एक को क्यूँ।

(7221) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'जब मोमिन की रूह निकलती है तो दो फ़रिश्ते उसको वसूल करके, उसे ऊपर ले जाते हैं।' हम्माद कहते हैं, आपने रूह की ख़ुश्बू और मुश्क का ज़िक्र किया, आपने फ़र्माया, 'आसमान वाले कहते हैं, पाकीज़ा रूह है, जो ज़मीन की तरफ़ से आई है, अल्लाह तुझ पर रहमत करे और उस बदन पर भी जिसे तू आबाद किये हुए थी, फिर उसे उसके रब अज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ ले जाया जाता है, फिर वह फ़र्माता है, उसे वक़्ते मुक़र्ररा (बरज़ख़) तक के लिए ले जाओ,

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا بُدَيْلٌ، عَنْ عَبْدِ، اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ " إِذَا خَرَجَتْ رُوحُ الْمُؤْمِنِ تَلَقَّاهَا مَلَكَانِ يُصْعِدَانِهَا " . قَالَ حَمَّادٌ فَذَكَرَ مِنْ طِيبِ رِيحِهَا وَذَكَرَ الْمِسْكَ . قَالَ " وَيَقُولُ أَهْلُ السَّمَاءِ رُوحٌ طَيِّبَةٌ جَاءَتْ مِنْ قِبَلِ الأَرْضِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكِ وَعَلَى جَسَدٍ كُنْتِ تَعْمُرِينَهُ . فَيُنْطَلَقُ بِهِ إِلَى رَبِّهِ عَزَّ وَجَلَّ ثُمَّ يَقُولُ انْطَلِقُوا بِهِ إِلَى آخِرِ الأَجَلِ " . قَالَ "

وَإِنَّ الْكَافِرَ إِذَا خَرَجَتْ رُوحُهُ -قَالَ حَمَّادٌ وَذَكَرَ مِنْ نَتْنِهَا وَذَكَرَ لَعْنًا - وَيَقُولُ أَهْلُ السَّمَاءِ رُوحٌ خَبِيثَةٌ جَاءَتْ مِنْ قِبَلِ الأَرْضِ . قَالَ فَيُقَالُ انْطَلِقُوا بِهِ إِلَى آخِرِ الأَجَلِ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَرَدَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم رَيْطَةً كَانَتْ عَلَيْهِ عَلَى أَنْفِهِ هَكَذَا .

आपने फ़र्माया, 'और काफ़िर जब उसकी रूह निकलती है, हम्माद कहते हैं, आपने उसकी बदबू और लानत का ज़िक्र किया और आसमान वाले कहते हैं, पलीद रूह, ज़मीन की तरफ़ से आई है, तो कहा जाता है, इसको आख़िर मुद्दत के लिए (सिज्जीन) ले जाओ।' हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (बदबू के ज़िक्र पर) अपनी चादर का पल्लू इस तरह अपनी नाक पर डाल लिया।

फ़ायदा : हर इंसान की दो अजलें हैं, एक दुनिया में अजल मौत, दूसरी मौत के बाद, बरज़ख़ी, अजल, जिसके बाद हिसाब किताब के लिए उठाया जाएगा, उसके नतीजे में इंसान जन्नत और दोज़ख़ में दाख़िल होगा। इस हदीस में मोमिन और काफ़िर इंसान की रूह की कैफ़ियत को बयान किया गया है और उनके ठिकाने की तरफ़ भी इशारा किया गया है।

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عُمَرَ بْنِ سَلِيطٍ الْهُذَلِيُّ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، قَالَ قَالَ أَنَسٌ كُنْتُ مَعَ عُمَرَ ح وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كُنَّا مَعَ عُمَرَ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ فَتَرَاءَيْنَا الْهِلاَلَ وَكُنْتُ رَجُلاً حَدِيدَ الْبَصَرِ فَرَأَيْتُهُ وَلَيْسَ قَالَ - فَجَعَلْتُ أَقُولُ - أَحَدٌ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَآهُ غَيْرِي لِعُمَرَ أَمَا تَرَاهُ فَجَعَلَ لاَ يَرَاهُ - قَالَ - يَقُولُ عُمَرُ سَأَرَاهُ وَأَنَا مُسْتَلْقٍ عَلَى فِرَاشِي . ثُمَّ

(7222) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम हज़रत उमर (रज़ि.) के साथ, मक्का और मदीना के बीच थे, हमने चाँद देखने की कोशिश की। मैं तेज़ नजर इंसान था, इसलिए मैंने चाँद देख लिया और मेरे सिवा कोई यह नहीं कहता था कि मैंने चाँद देख लिया है तो मैं हज़रत उमर (रज़ि.) को कहने लगा कि आप उसे देख नहीं रहे हैं? तो वह उन्हें नज़र नहीं आ रहा था। हज़रत उमर (रज़ि.) कहने लगे, मैं भी अपने बिस्तर पर लेटकर देख लूँगा, फिर हजरत उमर (रज़ि.) अहले बद्र के बारे में बताने लगे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बद्र के दिन से एक दिन पहले हमें अहले बद्र के (मक़्तूलीन मुश्रिकीन को) मरने की जगहें बताने लगे, फ़र्माते थे, 'अगर अल्लाह ने

أَنْشَأَ يُحَدِّثُنَا عَنْ أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يُرِينَا مَصَارِعَ أَهْلِ بَدْرٍ بِالأَمْسِ يَقُولُ " هَذَا مَصْرَعُ فُلاَنٍ غَدًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ " . قَالَ فَقَالَ عُمَرُ فَوَالَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ مَا أَخْطَئُوا الْحُدُودَ الَّتِي حَدَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ - فَجُعِلُوا فِي بِئْرٍ - بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ فَانْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى انْتَهَى إِلَيْهِمْ فَقَالَ " يَا فُلاَنَ بْنَ فُلاَنٍ وَيَا فُلاَنَ بْنَ فُلاَنٍ هَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَكُمُ اللهُ وَرَسُولُهُ حَقًّا فَإِنِّي قَدْ وَجَدْتُ مَا وَعَدَنِي اللَّهُ حَقًّا " . قَالَ عُمَرُ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تُكَلِّمُ أَجْسَادًا لاَ أَرْوَاحَ فِيهَا قَالَ " مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا أَقُولُ مِنْهُمْ غَيْرَ أَنَّهُمْ لاَ يَسْتَطِيعُونَ أَنْ يَرُدُّوا عَلَىَّ شَيْئًا " .

चाहा तो कल इस जगह फ़लाँ गिरेगा।' चुनाँचे हजरत उमर (रज़ि.) बताते हैं, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ देकर भेजा, जिन जगहों की हुज़ूर (ﷺ) ने ताईन फ़र्मा दी थी, वह उससे नहीं चूके (वहीं वहीं गिरे, जहाँ जहाँ आपने निशानदेही फ़र्माई थी।' फिर उन्हें एक कूएँ में एक दूसरे पर डाल दिया गया, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) चलकर, उनके पास पहुँच गए और फ़र्माया, 'फ़लाँ बिन फ़लाँ, ऐ फ़लाँ के बेटे! क्या अल्लाह और उसके रसूल ने तुम्हें जो धमकी दी थी, उसे तुमने ठीक ठीक पा लिया? क्योंकि अल्लाह ने मुझसे जो वादा किया था, मैंने उसमें मौजूद होता पा लिया।' हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप उन जिस्मों से किस तरह बात कर रहे हैं, जिनमें रूह (ज़िन्दगी) नहीं है? आपने फ़र्माया, 'मैं उनसे जो कुछ कह रहा हूँ, तुम उनसे ज़्यादा नहीं सुन रहे हो, मगर उनके बस में नहीं है कि वह मुझे कोई जवाब दे सकें।'
तख़रीज 7222 : नसाई : 2073.

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि मक़्तूलीने बद्र ने आपकी बात सुन ली थी, वह जवाब की ताक़त नहीं रखते थे, असल हकीकत यही है कि मुर्दे सुनते नहीं हैं और न हम उनको सुना सकते हैं, लेकिन अल्लाह तआ़ला उनको कोई चीज़ सुनाना चाहे तो वह क़ादिरे मुत्लक़ है, वह जो चाहे कर सकता है, इसलिए जहाँ नुसूस (सहीह अहादीस) से यह बात साबित हो जाए कि मुर्दों ने फ़लाँ चीज़ सुन ली है, या फ़लाँ चीज़ सुनते हैं (जैसे जूतियों की चाप) तो उसको तस्लीम कर लिया जाएगा लेकिन उनकी बुनियाद पर क़यासी घोड़े दौड़ाकर हर बात सुनने का दावा करना या उनसे इस्तिग़ासा करना सही नहीं है, जबकि अल्लाह तआ़ला अपने रसूल को मुख़ातब करके फ़र्मा चुका है (वमा अन्त बि मुस्मिइन मन फ़िल् क़ुबूर) क़ब्र वालों को सुनाना, आपके बस में भी नहीं है तो दूसरे कैसे सुना सकते हैं।

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ، مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تَرَكَ قَتْلَى بَدْرٍ ثَلاَثًا ثُمَّ أَتَاهُمْ فَقَامَ عَلَيْهِمْ فَنَادَاهُمْ فَقَالَ " يَا أَبَا جَهْلِ بْنَ هِشَامٍ يَا أُمَيَّةَ بْنَ خَلَفٍ يَا عُتْبَةَ بْنَ رَبِيعَةَ يَا شَيْبَةَ بْنَ رَبِيعَةَ أَلَيْسَ قَدْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا فَإِنِّي قَدْ وَجَدْتُ مَا وَعَدَنِي رَبِّي حَقًّا " . فَسَمِعَ عُمَرُ قَوْلَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ يَسْمَعُوا وَأَنَّى يُجِيبُوا وَقَدْ جَيَّفُوا قَالَ " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا أَقُولُ مِنْهُمْ وَلَكِنَّهُمْ لاَ يَقْدِرُونَ أَنْ يُجِيبُوا " . ثُمَّ أَمَرَ بِهِمْ فَسُحِبُوا فَأُلْقُوا فِي قَلِيبِ بَدْرٍ .

(7223) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तीन दिन तक मक़्तूलीने बद्र को पड़े रहने दिया, फिर उनके पास आए और उनके पास खड़े होकर उनको आवाज़ दी, 'ऐ अबू जहल बिन हिशाम, ऐ उमय्या बिन ख़ल्फ़, ऐ उ़त्बा बिन रबीअ़ा, ऐ शैबा बिन रबीअ़ा, क्या अल्लाह ने तुमसे जो वादा किया था, उसको वाक़ेअ़ होते हुए पा लिया।' क्यों कि मैंने तो मेरे साथ मेरे रब ने जो वादा किया था, उसको शुद्नी (वाक़ेअ़ होते) पा लिया।' तो हजरत उ़मर (रज़ि.) ने नबी अकरम (ﷺ) का कलाम सुना तो अ़र्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह कैसे सुनेंगे और कैसे जवाब दे सकेंगे जबकि यह लाश बन चुके हैं? आपने फ़र्माया, 'उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं उनसे जो कह रहा हूँ, तुम उनसे ज़्यादा नहीं सुन रहे हो, लेकिन उन्हें जवाब देने की क़ुदरत हासिल नहीं है।' फिर आपने उनके बारे में खींचने का हुक्म दिया तो उन्हें खींचकर बद्र के गड्ढे (कुएँ) में डाल दिया गया।'

फ़ायदा : सुम्म अ—म—र बिहिम का यह मक़्सद नहीं है कि उन्हें आपके उनको मुख़ातब करने के बाद गड्ढे या कच्चे कूएँ में डाला गया, बल्कि यह मआनी है कि ख़िताब के अ़लावा उनसे यह सुलूक भी किया गया, जैसाकि सूरह बलद में आ़माल के तज़्किरा के बाद फ़र्माया **(सुम्मा काना मिनल्लज़ीना आमनू)** कि यह बात भी है कि वह मोमिन हो।' और उमय्या बिन ख़ल्फ़ अगरचे गड्ढे में नहीं डाला गया था क्योंकि भारी भरकम होने की वजह से वह फूलकर फट गया था लेकिन उसको उन लाशों के करीब ही रखकर मिट्टी और पत्थरों से छुपा दिया गया था, इसलिए आपने उसको भी मुख़ातब किया, नीज़ इस हदीस से यह बात साबित होती है कि सहाबा किराम यही समझते थे कि मुर्दे सुनते नहीं हैं, इसलिए उन्होंने हैरत जदा होकर आपसे सवाल किया कि आप उन लाशों से क्यूँकर मुख़ातिब हैं।

حَدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ حَمَّادٍ الْمَعْنِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي طَلْحَةَ، ح وَحَدَّثَنِيهِ مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ ذَكَرَ لَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ، قَالَ لَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ وَظَهَرَ عَلَيْهِمْ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ أَمَرَ بِبِضْعَةٍ وَعِشْرِينَ رَجُلاً -وَفِي حَدِيثِ رَوْحٍ بِأَرْبَعَةٍ وَعِشْرِينَ رَجُلاً - مِنْ صَنَادِيدِ قُرَيْشٍ فَأُلْقُوا فِي طَوِيٍّ مِنْ أَطْوَاءِ بَدْرٍ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ .

(7224) हजरत अबू त़लहा (रज़ि.) बयान करते हैं, जब बद्र का दिन पेश आया और उन पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ालिब आ गए तो आपने बीस से ऊपर (रौह की हदीस में चौबीस आदमी हैं) कुरैशी सरदारों के बारे में हुक्म दिया तो उन्हें बद्र के कुँओं में से एक कूंएँ में डाल दिया गया, आगे ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी रिवायत बयान की।

तख़रीज 7224 : सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस्सियर : 3065; किताबुल मग़ाज़ी : 3976; मुत़व्वलन। अबूदाऊद : 2695; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 1551.

(19) بَابُ : اِثْبَاتِ الْحِسَابِ

बाब 19 : हि़साब (मुहा़सबा) का इस्बात (कि मुहा़सबा होगा)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، جَمِيعًا عَنْ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ حُوسِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عُذِّبَ " . فَقُلْتُ أَلَيْسَ قَدْ قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا} فَقَالَ " لَيْسَ ذَاكِ الْحِسَابُ إِنَّمَا ذَاكِ الْعَرْضُ مَنْ نُوقِشَ الْحِسَابَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عُذِّبَ " .

(7225) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जिसका क़ियामत के दिन मुनाक़शा हुआ, (तूने यह काम क्यूँ किया?) उसे अ़ज़ाब होगा।' मैंने अ़र्ज़ किया, क्या अल्लह तआला का यह फ़र्मान नहीं है, उसका जल्द ही आसान मुहा़सबा किया जाएगा? आपने फ़र्माया, 'यह मुनाक़शा नहीं है, यह तो बस पेशी है, जिसका क़ियामत के दिन हि़साब में मुनाक़शा हुआ, उसे अ़ज़ाब होगा।'

सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर : 4939; किताबुर्रिक़ाक़ : 6537; जामेअ़ तिर्मिज़ी : 3337.

حَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، وَأَبُو كَامِلٍ قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ.

(7226) इस क़िस्म की रिवायत मुसन्निफ़ दो और उस्तादों से बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज हदीस 7154 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : मुहासबा या हिसाब की दो सूरतें हैं (1) इंसान के सामने उसके गुनाह पेश करके, उससे ऐतिराफ़ व इक़रार करवाकर, उसको माफ़ कर देना, जैसाकि हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) की रिवायत, किताबुत्तौबा में अल्लाह की बन्दे के साथ बातचीत के सिलसिले में गुज़र चुकी है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन मोमिन को अपने क़रीब कर लेगा और उसको अपने कन्फ़ (पहलू) में लेकर उससे उसके गुनाहों का इक़रार करवाएगा और पूछेगा हल तअ्रिफ़ु क्या इनको पहचानते हो? वह अर्ज़ करेगा, पहचानता हूँ, अल्लाह कहेगा, मैंने दुनिया में तेरे इन गुनाहों पर पर्दा डाला और आज तुम्हें माफ़ करता हूँ, इसको हिसाबंय्यसीरा (आसान हिसाब) से तअ्बीर किया गया। गोया मुत्लक़ बिला क़ैद हिसाब से मुराद मुनाकशा है और हिसाबे यसीर जिसमें यसीर की क़ैद है उससे मुनाक़शा मुराद नहीं है बल्कि सिर्फ़ पेशी मुराद है। (2) मुहासबा, मुनाक़शा के मआनी में है कि उससे पूछा जाएगा और यह गुनाह क्यूँ किया था, जिससे यह सवाल हो गया, वह मारा गया और दोज़ख़ का शिकार हो गया।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بِشْرِ بْنِ الْحَكَمِ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، - يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ الْقَطَّانَ - حَدَّثَنَا أَبُو يُونُسَ الْقُشَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَيْسَ أَحَدٌ يُحَاسَبُ إِلاَّ هَلَكَ " . قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَيْسَ اللَّهُ يَقُولُ حِسَابًا يَسِيرًا قَالَ " ذَاكِ الْعَرْضُ وَلَكِنْ مَنْ نُوقِشَ الْحِسَابَ هَلَكَ " .

(7227) हजरत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जिसका मुहासबा हो गया, वह मारा गया, मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या अल्लाह का यह फ़र्मान नहीं है, हिसाबंय्यसीरा होगा? आपने फ़र्माया, 'वह सिर्फ़ पेशी है, लेकिन जिसका मुहासबा के वक़्त मुनाक़शा हो गया, हलाक हो जाएगा।'

तख़रीज 7227 : सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर : 4939; किताबुर्रिक़ाक़ : 6537.

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنِي يَحْيَى، - وَهُوَ الْقَطَّانُ - عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى

(7228) हजरत आइशा (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) से बयान करती हैं, आपने फ़र्माया, 'जिसका हिसाब के वक़्त मुनाक़शा हुआ हलाक हो जाएगा।' आगे ऊपर वाली

الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ نُوقِشَ الْحِسَابَ هَلَكَ " . ثُمَّ ذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ أَبِي يُونُسَ.

रिवायत बयान की।

तख़रीज 7228 : सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर : 4939; किताबुर्रिक़ाक़ : 6536, 6537, 6537; जामेअ तिर्मिज़ी : 3337, व ह़दीस : 3337.

(20)
بَاب : الأَمْرِ بِحُسْنِ الظَّنِّ بِاللَّهِ تَعَالَى عِنْدَ الْمَوْتِ

बाब 20 : मौत के वक़्त अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान रखने का हुक्म

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَبْلَ وَفَاتِهِ بِثَلاَثٍ يَقُولُ " لاَ يَمُوتَنَّ أَحَدُكُمْ إِلاَّ وَهُوَ يُحْسِنُ بِاللَّهِ الظَّنَّ " .

(7229) हजरत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने नबी अकरम(ﷺ) से आपकी वफ़ात के तीन दिन पहले सुना,आप फ़र्मा रहे थे, 'तुममें से हर एक को मौत उस ह़ालत में आए कि उसका अल्लाह के बारे में गुमान अच्छा हो।'

सुनन अबूदाऊद : 3113; सुनन इब्ने माजा : 4167.

फ़ायदा : ज़िन्दगी में इंसान पर रजा और उम्मीद की बजाय ख़ौफ़ व ख़शिय्यत का ग़ल्बा होना चाहिए ताकि वह गुनाहों और बद आमालियों से परहेज़ कर सके और ज़्यादा से ज़्यादा अच्छे अमल कर सके लेकिन जब मौत का वक़्त आए और इंसान समझे कि अब मेरा बचना मुश्किल है तो फिर अपने आमाल की बजाय, अल्लाह की रह़मत व मग़्फ़िरत का उम्मीदवार हो और ख़ौफ़ व खशिय्यत पर उम्मीद व रजा का ग़ल्बा हो, क्यों कि इंसान अल्लाह की रह़मत का मोह़ताज है और उसकी रह़मत के सबब ही अमल क़ुबूल किये जाएँगे (और गुनाहों से बख़्शिश मिलेगी।)

وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(7230) इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों की सनदों से आमश ही से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

इसकी तखरीज हदीस 7158 में गुज़र चुकी है।

(7231) हजरत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से आपकी अपनी मौत से तीन दिन पहले यह फ़र्माते सुना, 'तुममें से हर शख़्स को मौत उस ह़ालत में होनी चाहिए कि वह अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल से हुस्ने ज़न रखता हो।'

وَحَدَّثَنِي أَبُو دَاوُدَ، سُلَيْمَانُ بْنُ مَعْبَدٍ حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، عَارِمٌ حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ، مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا وَاصِلٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَبْلَ مَوْتِهِ بِثَلاَثَةِ أَيَّامٍ يَقُولُ " لاَ يَمُوتَنَّ أَحَدُكُمْ إِلاَّ وَهُوَ يُحْسِنُ الظَّنَّ بِاللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ " .

(7232) हजरत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'हर बन्दा उस ह़ालत पर उठाया जाएगा जिस पर वह फ़ौत हुआ था।'

तख़रीज 7232 : सुनन इब्ने माजा : 4320.

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالاَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " يُبْعَثُ كُلُّ عَبْدٍ عَلَى مَا مَاتَ عَلَيْهِ " .

फ़ायदा : इंसान जिस अ़क़ीदे और अ़मल पर फ़ौत होता है, उस अ़क़ीदा और अ़मल पर उसको उठाया जाएगा और इंसान उसी अ़क़ीदे व अ़मल पर फ़ौत होता है जिस पर ज़िन्दगी भर क़ायम रहा था इसलिए इंसान को अ़क़ीदा और अ़मल दुरुस्तगी और स़ेह़त की फ़िक्र करनी चाहिए, क्योंकि मालूम नहीं ज़िन्दगी का चराग़ कब गुल हो जाए और अगर मौत का पहले एह़सास हो जाए तो फिर अल्लाह से अ़फ़्वो व दरगुज़र की उम्मीद रखे।

(7233) इमाम स़ाहब अपने एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, उसमें है, मैंने सुना, का ज़िक्र नहीं है।

इसकी तखरीज हदीस 7161 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ وَقَالَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَلَمْ يَقُلْ سَمِعْتُ .

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ أَخْبَرَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ" .

(7234) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'जब अल्लाह तआला किसी क़ौम को अ़ज़ाब में गिरफ़्तार करने का इरादा करता है, तो वह तमाम (अच्छे बुरे) अफ़राद पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़र्मा देता है, फिर उन्हें अपने अपने अ़मलों पर उठाया जाएगा।'

तख़रीज 7234 : सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन : 7109.

फ़ायदा : इस ह़दीस से मालूम होता है कुछ दफ़ा दुनियावी अ़ज़ाब में, बुरे लोगों के साथ, अच्छे लोग भी अ़ज़ाब का शिकार हो जाते हैं, लेकिन आख़िरत में, हर इंसान को जज़ा व सज़ा अपने अपने आ़माल के मुताबिक़ मिलेगी, गुनहगार उ़क़ूबत व सज़ा का मुस्तहि़क़ (हक़दार) होगा और इताअ़त गुज़ार अज्रो सवाब का।

इस किताब के कुल बाब 28 और 182 अहादीस हैं।

كتاب الفتن وأشراط الساعة

फ़ित्नो और अलामाते क़ियामत का बयान

हदीस नम्बर 7235 से 7416 तक

फ़ित्ने और अलामाते क़यामत

अम्बिया-ए-किराम (عليهم السلام) ने इन्सानों के नाम अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाते हुये आग़ाज़ इस बात से किया कि आरज़ी दुनियवी ज़िन्दगी के इख़्तिताम पर हर इन्सान को एक मुश्किल मर्हला दरपेश है। मौजूदा ज़िन्दगी के बारे में बाज़पुर्सी होगी। जो नाकाम हो जायेगा वह दर्दनाक अ़ज़ाब का शिकार हो जायेगा। सबसे पहले रसूल हज़रत नूह (عليه السلام) ने अपने पैग़ाम का आग़ाज़ इस तरह किया; 'ऐ मेरी क़ौम! बिलाशुब्हा मैं तुम्हें खुल्लम खुला डराने वाला हूँ।' (नूह: 71/2) और सबसे आख़री रसूल(ﷺ) ने सबसे पहले ख़िताबे आम में पैग़ाम का आग़ाज इन अल्फ़ाज़ से किया: 'बिलाशुब्हा मैं सख़्त अ़ज़ाब के आने से पहले तुम्हें डराने वाला हूँ।' (स़हीह बुख़ारी, हदीस़: 4770)

इन्सान दुनिया के मामलात में जिस तरह मुस्तग़र्क (डूबा हुआ) होता है उसे अपने मक़्सदे ज़िन्दगी पर ग़ौर करने और आख़िरत की कामयाबी का रास्ता इख़्तियार करने पर आमादा करने का इसके अ़लावा और कोई तरीक़ा भी नहीं कि उसे ज़िन्दगी के हतमी अन्जाम, यानी मौत और उसके माबअ़द की तरफ़ मुतवज्जा करके झिन्झोडा जाये और अब्दी नाकामी के अ़वाक़िब से डराया जाये। रसूलुल्लाह(ﷺ) सबसे आख़री नबी हैं। आपसे पहले के अम्बिया अपने अपने बाद आने वाले अम्बिया व रसूल, ख़ुसूस़न नबी-ए-आख़िरूज़्ज़मान की आमद की ख़बर देते और हुसूले निजात के लिये उनकी इताअ़त की तल्क़ीन करते थे। आप(ﷺ) के बाद किसी और रसूल को नहीं आना, अब क़यामत आनी है। ये इन्सानियत के लिये बेदार होने का आखरी मौक़ा है आप(ﷺ) ने बतौर नज़ीरी पूरी शिद्दत से इन्सानियत को झिंझोड़ा और जगाया बिअ़्सत के बाद क़ुर्आन मजीद की जो सूरतें इब्तेदाई सालों में नाज़िल हूईं उनमें क़यामत की इस तरह मन्ज़र कशी की गई है कि एक सलीमुल फ़ित्र इन्सान लरज़ जाता है और अल्लाह के ख़ौफ़ और क़यामत की हौलनाकियों पर मुज़्तरिब हो जाता है। किसी और आसमानी किताब में इस अन्दाज़ से इतनी ताकीद और तकरार से क़यामत की मन्ज़रकशी नहीं मिलती।

क़यामत के हवाले से रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ज़्यादा ज़ोर इस पहलू पर दिया कि वह इन्तेहाई क़रीब है, वह इस तरह आपकी बिअ़्सत के क़रीब तर है जिस तरह अंगुश्ते शहादत और उसके साथ की ऊँगली बाहम क़रीब क़रीब हैं।

जिस तरह बारिश की आमद का सिलसिला आँधी, फिर ठण्डी हवाओं, फिर बादलों की आमद, फिर गरज और चमक से शुरू होता है और फिर अचानक बारिश बरसने लगती है, इसी तरह क़यामत आने की इब्तेदाई निशानियाँ रसूलुल्लाह(ﷺ) के अ़हदे मुबारक ही में शुरू हो गईं, आपको ख़्वाब में

दिखाया गया कि वह वहशी अक़वाम, जो अपने अपने इलाक़ों तक महदूद रखी गई हैं, क़यामत से पहले बड़े पैमाने पर इन्सानों और वसाइले ज़िन्दगी की तबाही का बाइस बनेंगी, उनके रास्ते की रूकावटें दूर होने का अमल शुरू हो गया है। अभी अरबों के उरूज का आग़ाज़ हुआ ही था कि आपको ये भी मुशाहिदा कराया गया कि जब अरबों को शौकत व रिफ़अत नसीब होगी तो साथ ही इस शर का भी आग़ाज़ हो जायेगा जो उनकी तबाही और ज़वाल का सबब बनेगा। उनके उरूज का ये ज़माना लम्बा नहीं, उनको हासिल होने वाली शौकत व हशमत जल्द ही दूसरों के हाथों में चली जायेगी।

आप(ﷺ) साथियों समेत मदीना की ऊँची इमारतों में से एक इमारत पर तशरीफ़ फ़रमा थे तो आलमे मिसाल में आपको दिखाया गया कि ख़ूद आपके शहर मदीना पर नाज़िल होने वाले फ़ित्नों के मुक़द्दमात की बरसात शुरू हो गई है जो आम इन्सानों की आँखों से ओझल हैं। इसमें कोई शक नहीं कि फ़ुतूहात के नतीजे में हासिल होने वाले अमवाल, मनासिब और फिर कुछ अर्से बाद दूर दराज़ इलाक़ों के अरब जिन्होंने मदीना का रूख़ किया और फिर अजमी लोग जो अपनी अपनी सोच लेकर ग़ुलामों वग़ैरह की सूरत में मदीना पहुँचे, उन्होंने ऐसे अफ़कार को हवा दी जिनकी बिना पर अव्वलीन मुसलमानों के दरम्यान न सिर्फ़ इख़्तिलाफ़ात पैदा हुये बल्कि ख़ून रेज़ी का भी आग़ाज हो गया। क़यामत के मुक़द्दमात के तौर पर बिल्कुल इब्तेदाई फ़ित्ने जो मुसलमान मुआशरे यहाँ तक कि मदीना में दराए (पाँव पसारने लगे), वह मुसलमानों के बाहमी इख़्तिलाफ़ ही की सूरत में थे। हज़रत उमर(رضي الله عنه) के ज़माने तक उन पर सख़्ती से कण्टोल रहा। उसके बावजूद वह न सिर्फ़ कसरत से मदीना में दाख़िल होने लगे बल्कि उनकी कुव्वत और तादाद में बहुत इज़ाफ़ा हो गया। हज़रत उमर (رضي الله عنه) ही उनके आगे बन्द दरवाज़ा थे लेकिन इन फ़ित्नों की कुव्वत ने ये दरवाज़ा तोड़ दिया। हज़रत उमर (رضي الله عنه) को शहीद कर दिया गया और फ़ित्नों का रास्ता खुल गया।

मुसलमानों के बाहमी इख़्तिलाफ़ात और ख़ूनरेज़ी के बारे में रसूलुल्लाह(ﷺ) ने न सिर्फ़ सहाबा को ख़बरदार किया बल्कि इस दौरान में निजात के रास्ते की निशानदेही भी की जिस पर चल कर मुसलमान तबाही से बच सकते थे।

आप(ﷺ) ने जहाँ जज़ीर-ए-अरब के इर्द गिर्द ताक़तवर तरीन और अमीर तरीन सलतनतों के ख़िलाफ़ मुसलमानों की कामयाबी की पेशीनगोई फ़रमाई, जिस पर सुनने वालों की अक़्लें दंग रह गईं, वहाँ आपने इस बात से भी ख़बरदार फ़रमाया कि दुनिया भर के ख़ज़ाने दस्तरस में आ जाने के बाद मुसलमानों की आज़माइश का सख़्त तरीन दौर शुरू हो जायेगा। मुख़ासमत और ख़ाना जंगी का ख़तरनाक दौर शुरू हो जायेगा, फ़ित्ने ऐसे होंगे जो अक्सरियत को अपनी लपेट में ले लेंगे। वही बचेगा जो उनसे दूर रहने में कामयाब हो जायेगा। आम मुआशरे से किनारा कशी इख़्तियार कर लेगा, दुनियावी

मामलात में अपनी तगो दो को महदूद कर लेगा। बैठने वाला खड़े होने वाले से और खड़े होने वाला चलने वाले से बेहतर होगा, आपस के इख़्तिलाफ़ात एक दूसरे की गर्दनें काटने पर मुन्तज होंगे। आपने अपने अ़हदे मुबारक के फ़ौरन बाद से लेकर क़यामत तक नमूदार होने वाली क़यामत की अ़लामात (निशानियों) की ख़बर दी। आपने स़हाबा के इज्तेमाआ़त में ख़ुत्बात इरशाद फ़रमाये और ऐसे मुअस्सिर (पुर असर) अन्दाज़ में आने वाले वाक़ियात की तफ़्सीलात बयान फ़रमाईं कि स़हाबा ज़ारो क़तार रोते रहे। ये कुछ फ़ित्ने छोटे थे, कुछ बड़े, सुनने वालों और आगे उनसे सुनने वालों ने अपनी अपनी याददाश्त के मुताबिक़ बयान किया। ज़रूरत पड़ने पर मुताल्लिक़ा हिस़्सा बयान किया, इसलिये इस तर्तीब का एहतिमाम बरक़रार न रह सका जो बयान करते वक़्त मल्हूज़ थी, लेकिन बयान की हूई निशानियाँ अपनी अस़ल तर्तीब के मुताबिक़ सामने आने लगीं और क़यामत तक सामने आती रहेंगी। अ़हदे रिसालत से आज तक और आज से क़यामत तक का कोई दौर ऐसा नहीं जो इन अ़लामात के ज़ुहूर से ख़ाली हो। इन्सानियत को बिलउ़मूम और उम्मते मुस्लिमा को बिलख़ुसूस़ तसल्सुल से याददेहानी कराई जा रही है कि अब फ़ुलां निशानी सामने आ गई है, अब क़यामत का वक़्त और क़रीब आ गया है। किसी सोचने समझने और अपने अन्जाम पर नज़र रखने वाले इन्सान के पास ये कहने का कोई मौक़ा नहीं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की बताई हूई क़यामत की निशानियाँ भूली बिसरी बातें बन गई थीं, इसलिये हम ग़फ़लत का शिकार हो गये। अल्लाह ने इस बात का पूरा एहतिमाम फ़रमाया हुआ है; 'ताकि जो हलाक हो वह वाज़ेह दलील से हलाक हो और जो ज़िन्दा रहे वह वाज़ेह दलील से ज़िन्दा रहे और बिलाशुब्हा अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।' (अल अनफ़ाल: 8/42) रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इन्सानी ज़िन्दगी के यक्सर तब्दील हो जाने, ज़मीन और दरयाओं में से ख़ज़ाने निकल आने, शदीद और तबाहकुन जंगें, पहले बड़ी क़ुव्वतों की मुसलमानों के हाथों तबाही, फिर सलतनते रूमा के वारिस़ों (अहले मग़रिब) की क़ुव्वत में इज़ाफ़े, उनकी शौकत व हशमत, उनकी तरफ़ से इकट्ठे होकर मुसलमानों पर यलग़ार और मुसलमानों की तरफ़ से उनके जान तोड़ मुक़ाबले, ज़मीन धँस जाने समेत बड़ी बड़ी क़ुदरती आफ़ात और बड़े पैमाने पर इन्सानी तबाही के वाक़ियात समेत आइन्दा के वाक़ियात की मुफ़स्स़ल निशानदेही फ़रमाई। इसी तरह आप(ﷺ) के सरज़मीने अ़रब की आबादी, शहरे मदीना की बहुत ज़्यादा वुसअ़त और ऐसे तूफ़ानों के बारे में भी ख़बरदार फ़रमाया जो इन्सानों को समन्दरों की नज़र कर देंगे। (हदीस़: 7286) स़हाबा और उनके शागिर्दों ने अपने अपने अन्दाज़ में इन पेशीनगोईयों को रिवायत किया। किसी ने दस बड़ी निशानियाँ गिनवाईं, किसी ने मुस्तक़बिल में पेश आने वाले चन्द बड़े वाक़ियात की तरफ़ इशारा करके बयान किया, किसी ने अ़हदे रिसालत के फ़ोरी बाद के अ़हद की निशानियों का ज़िक्र किया और किसी ने क़यामत से ज़रा पहले की निशानियाँ तफ़्स़ील से बयान कीं।

उस सिम्त की भी निशानदेही की गई जहाँ से बड़े बड़े फ़ित्ने नमूदार होंगे। ये भी बताया गया कि इन फ़ित्नों की वजह से लोगों के लिये ज़िन्दगी नाक़ाबिले बरदाश्त हो जायेगी और मौत की तमन्ना की जाने लगेगी। यहूद के किरदार, दज्जाल के साथ उनकी यकजाई, नाम निहाद मुसलमानों की तरफ़ से शर की क़ुव्वतों की हिमायत और मुख़्लिस मोमिनों की इस्तेक़ामत व जुर्अत और उनकी तरफ़ से अल्लाह की राह में शहादत की आरज़ू और उनके हाथों यहूद और मुश्रेकीन के बड़े जत्थे की शिकस्त की भी तफ़्सील से ख़बर दी गई।

सबसे तफ़्सीली तज़किरा दज्जाल का है जो सबसे बड़ा फ़ित्ना बरपा करेगा। वह अहले ज़मीन की अक्सरियत को गुमराह करेगा, ज़मीन के ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा करेगा और शर का सबसे बड़ा नुमाइन्दा होगा। रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी उम्मत को सबसे ज़्यादा दज्जाल के फ़ित्ने से ख़बरदार किया। आप(ﷺ) ने बताया कि आपके बाद तीस के क़रीब दज्जाल नमूदार होंगे और आख़िर में मसीह दज्जाल आयेगा। वह ख़ैर की क़ुव्वतों के लिए सबसे बड़ा ख़तरा होगा। ये बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि दज्जालों के सिलसिले का आग़ाज़ रसूलुल्लाह(ﷺ) के अहदे मुबारक ही में हो गया। इब्ने साइद या इब्ने सय्याद मदीना के एक यहूदी घराने का बच्चा था। इसमें कई ऐसी ख़स्लतें मौजूद थीं कि ख़ूद रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बनफ़्से नफ़ीस इसके हवाले से तहक़ीक़ करनी ज़रूरी समझी। आपने एक से ज़्यादा बार उसकी हक़ीक़त जानने की कोशिश फ़रमाई और इशारा फ़रमाया कि ये न सबसे बड़ा दज्जाल है, न उसकी ये हैसियत है कि बहुत बड़ा फ़ित्ना बर्पा कर सके, आपने इस बात की तर्दीद नहीं फ़रमाई कि ये दज्जालों के सिलसिले से ताल्लुक़ रखता है, लेकिन उसे क़त्ल करने की भी इजाज़त नहीं दी, मुसलमानों के लिये उसका मामला उलझा रहा, उसने अपने किरदार से अपना मुशाहिदा करने वालों को हमेशा इसके बारे में ग़ौर करने पर उकसाया कि वह सोचें असल दज्जाल कैसा होगा और ये किस तरह उस दज्जाल से कम तर है। आपके ज़माने में मुसैलिमा कज़्ज़ाब सामने आया। अस्वद अनसी और सज्जाह औरत भी आपकी रहलत के फ़ौरन बाद नुमायाँ हो कर सामने आये। उनका मामला वाज़ेह था कि दज्जालों के सिलसिले की कड़ियाँ हैं, ये मुसलमानों के हाथ अपने अन्जाम को पहुँचे। क़यामत तक दज्जालों के ज़हूर की हिकमत यही नज़र आती है कि मुसलमान अपने दीन के साथ अपनी वाबस्तगी को उस्तवार और शर से नफ़रत बरक़रार रखें, क़यामत से ग़ाफ़िल न हो जायें।

मसीह दज्जाल के ज़हूर के वक़्त मुसलमान मुख़्तलिफ़ कड़ी आज़माइशों में घिरे होंगे, फिर उस वक़्त हज़रत ईसा (عليه السلام) का नुज़ूल होगा। उनके हाथ से दज्जाल हलाक होगा और उनकी आमद और शरीयते मुहम्मदी(ﷺ) पर अमल से मुसलमानों को तक़वियत मिलेगी। इसके बावजूद फ़ित्नों और आज़माइशों का सिलसिला मुन्क़तअ नहीं होगा। याजूज माजूज का फ़ित्ना इस क़द्र बड़ा होगा कि हज़रत

ईसा (عليه السلام) और मुसलमानों की इज्तेमाई क़ुव्वत भी उनके मुक़ाबले की सकत न रखती होगी। वह इन वहशियों के रास्ते से हट जायेंगे और उनके ख़िलाफ़ अपने सबसे बड़े और सबसे मुअस्सिर (पुर असर) हथियार, यानी अल्लाह के सामने ज़ारी और उसके हुज़ूर दुआओं से काम लेंगे और अल्लाह तआला उन्हें इस आफ़ते उ़ज़्मा से निजात अ़ता फ़रमायेगा। मुसलमानों को इसके बारे में मुकम्मल शरहे स़दर हास़िल होगी कि फ़ित्नों, आज़माइशों, आफ़तों और शर से निजात के लिये उनकी तरफ़ से जितनी भी कोशिश की जाये हक़ की फ़तह अस़ल में स़िर्फ़ और स़िर्फ़ अल्लाह की ताईद और नुस़रत से होती है। जिस फ़ित्ने के मुक़ाबिल आने से भी वह लाचार थे उससे भी अल्लाह ने उनको निजात अ़ता फ़रमाई है। ये हलावते ईमान से स़ही तौर पर लज़्ज़त याब होने का मौक़ा होगा, फिर हक़ को उ़रूज हास़िल होगा। दुनिया में ख़ैर और नेकी का राज होगा, अल्लाह की हैरान कुन नेमतों की बोहतात हो जायेगी। ये ज़मीन पर हक़ व बातिल के मारके में हक़ की मुकम्मल फ़तह का मरहला होगा और इसके साथ इसी ज़मीन पर बनी आदम के क़याम और इम्तेहान का सिलसिला अन्जाम तक पहुँच जायेगा। अब यहाँ से औलादे आदम की ज़िन्दगी की बिसात लपेटे जाने का आग़ाज हो जायेगा। अहले ईमान की रूहों को एक दिल लुभाने वाली ख़ुशबूदार हवा यहाँ से आ़लमे बाला में मुन्तक़िल कर देगी। स़िर्फ़ वह लोग बाक़ी रह जायेंगे जिनके दिल ईमान से यक्सर (बिल्कुल) ख़ाली होंगे। उन्हें कुफ़्र, सरकशी और बातिल परस्ती की इन्तेहा तक पहुँचने की छूट दी जायेगी और जब वह गन्दगी की इन्तेहा को पहुँच जायेंगे तो स़ूरे इस्राफ़ील की चिंघाड़ उनका ख़ातिमा कर देगी।
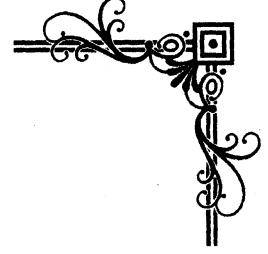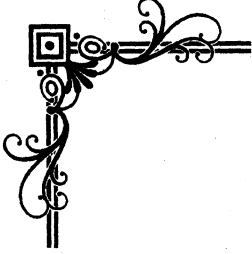
كتاب الفتن وأشراط الساعة

55 : फ़ित्नों और अलामाते क़ियामत का बयान

(1)

بَابُ : اقْتِرَابِ الْفِتَنِ، وَفَتْحِ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ

बाब 1 : फ़ित्ने के दौर का क़रीब आ जाना और याजूज माजूज के बन्द का खुल जाना

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ زَيْنَبَ، بِنْتِ أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ، عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم اسْتَيْقَظَ مِنْ نَوْمِهِ وَهُوَ يَقُولُ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ " . وَعَقَدَ سُفْيَانُ بِيَدِهِ عَشَرَةً . قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ قَالَ " نَعَمْ إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ " .

(7235) हजरत ज़ैनब बिन्ते ज़हश (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) अपनी नींद से यह फ़र्माते हुए बेदार हुए, 'अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं है, अरबों के लिए उस शर्र से तबाही है जो क़रीब आ चुका है, इस वक़्त याजूज माजूज के बन्द में इतना सूराख़ हो चुका है।' सुफ़्यान ने उसकी वजाहत के लिए दस के अदद की गिरह लगाई, यानी अंगूठा और शहादत की उँगली से हल्क़ा बनाया, मैं ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या हम नेक बन्दों के मौजूद होने के बावजूद हलाक हो जाएँगे? आपने फ़र्माया, 'हाँ!' जब फ़िस्क़ो फ़िजूर की ख़बासत व गंदगी बढ़ जाएगी।'

तख़रीज 7235 : सहीह बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया : 3346; किताबुल मनाक़िब : 3598; किताबुल फ़ितन : 7135; जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2187; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन.

फ़ायदा : याजूज माजूज कौन हैं और बन्द जो उनको रोके हुए है, वह कहाँ है, इसमें बहुत इख़्तिलाफ़ है, यह ह़ाशिया इतनी तफ़्सील का मुतह़म्मिल नहीं है (यहाँ सब कुछ लिखने की गुन्जाइश नहीं है), तफ़्सील के त़ालिब (ख़्वाहिशमंद) मौलाना आज़ाद की तफ़्सीर सूरह कहफ़ और मौलाना ह़िफ़्ज़ुर्रह़मान की किताब, क़िस़सुल क़ुरआन का मुत़ालअ़ा करें, या ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुस्सलाम भटवी (रह़.) की तफ़्सीर देखें ह़दीस का मक़्सूद यह है कि फ़ित्नों के ज़ुहूर का आग़ाज़ क़रीब आ चुका है क्योंकि बन्द में मामूली सा सूराख़ हो चुका है, जिससे वह लोग बाहर नहीं निकल सकते, लेकिन यह इस बात की अ़लामत है कि फ़ित्नों का ज़ुहूर हुआ चाहता है, फ़ित्नों का आग़ाज़ हजरत उ़मर (रज़ि.) की शहादत से हुआ और उसमें वुस्अ़त ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की शहादत से हुई और आ़म तबाही व हलाकत उस वक़्त होगी जब फ़िस्क़ो फ़िजूर का दौर दौरा होगा, चंद अच्छे लोग उसके ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकेंगे, इसलिए वह भी साथ ही हलाक हो जाएँगे, बाद में हर एक को जज़ा व सज़ा अपने अ़मलों के मुत़ाबिक़ मिलेगी, बन्द में सूराख़ मामूली हुआ है जिसको कुछ ने दस के अ़दद के ह़ल्क़ा से ताबीर किया है, जो बड़ा होता है और कुछ ने नव्वे या सौ के अ़दद के ह़ल्क़ा से जो इंतिहाई तंग होता है दरम्यान में ख़ुला नहीं होता है, मक़्सूद उसकी ह़िक़ारत व क़िल्लत को बयान करना है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَسَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَابْنُ، أَبِي عُمَرَ قَالُوا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَزَادُوا فِي الإِسْنَادِ عَنْ سُفْيَانَ، فَقَالُوا عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ حَبِيبَةَ، عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ، عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، .

(7236) इमाम मुस्लिम ने ऊपर वाली रिवायत बहुत से उस्तादों की एक ही सनद से बयान की है, फ़र्क़ यह है कि ऊपर की सनद में तीन स़ह़ाबियात थीं और यहाँ चार स़ह़ाबियात हैं, जो एक दूसरों से बयान करती हैं, यानी ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा, ह़बीबा, (यह दोनों आप(ﷺ) की रबीबा हैं) उम्मे ह़बीबा, ज़ैनब बिन्ते जह़श (यह दोनों ज़ौजा हैं।)

इसकी तखरीज हदीस 7164 में गुज़र चुकी है।

(7237) हजरत ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) की बीवी बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) एक दिन घबराए हुए निकले, आपका चेहरा सुर्ख़ हो चुका था, आप फ़र्मा रहे थे, 'ला इलाहा इल्लल्लाह' अ़रबों के लिए इस शर्र से हलाकत है, जो क़रीब आ चुका है, आज याजूज माजूज की दीवार इतनी खुल चुकी है', आपने अपने अंगूठे और साथ वाली उँगली शहादत से हल्क़ा बनाया, मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या हम हलाक हो जाएँगे, जबकि हममें नेक लोग मौजूद होंगे।' आपने फ़र्माया, 'हाँ! जब गन्दगी बढ़ जाएगी।'

तख़रीज 7237 : इसकी तखरीज हदीस 7164 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ، أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ بِنْتَ أَبِي سُفْيَانَ أَخْبَرَتْهَا أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ زَوْجَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا فَزِعًا مُحْمَرًّا وَجْهُهُ يَقُولُ " لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ " . وَحَلَّقَ بِإِصْبَعِهِ الإِبْهَامِ وَالَّتِي تَلِيهَا . قَالَتْ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ قَالَ " نَعَمْ إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ " .

फ़ायदा : आपने अ़रबों की तख़सीस़ इसलिए की कि उस वक़्त मुसलमानों में उनको अकसरियत और ग़ल्बा ह़ासिल था और हुकूमत व इक़्तिदार पर वही मुतमक्किन थे और ह़दीस से यह भी साबित हुआ, आटे के साथ घुन भी पिस जाता है, बुरों की अकसरियत में नेक लोगों की अक़्लियत भी तबाही से बच नहीं सकती, क्योंकि वह अकसरियत के आगे बंद बाँधने की कोशिश ही नहीं करते, या उनकी कोशिश राइगाँ (बेकार) जाती है।

(7238) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों की सनदों से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज ह़दीस 7164 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ، خَالِدٍ ح وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، بِمِثْلِ حَدِيثِ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِإِسْنَادِهِ .

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ، اللَّهِ بْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ " . وَعَقَدَ وُهَيْبٌ بِيَدِهِ تِسْعِينَ .

(7239) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'इस वक़्त याजूज माजूज के बन्द में इतना सूराख़ खोल दिया गया है।' वुहैब ने अपने हाथ से नव्वे के अदद की गिरह लगाई।

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3347; किताबुल फ़ितन : 7136.

फ़ायदा : दस के अदद की सूरत में अंगूठा शहादत की उँगली की ऊपर वाली लकीर में रखा जाता है और नव्वे की सूरत में सबसे निचली लकीर पर रखा जाता है, मक़्सूद सिर्फ़ क़िल्लत का नक़्शा खींचना है।

(2)
بَابُ : الْخُسَفِ بِالْجَيْشِ الَّذِىْ يؤم الْبَيْتَ

बाब 2 :
वह लश्कर जो बैतुल्लाह का रुख़ करेगा, उसका ज़मीन में धंसना

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ ابْنِ الْقِبْطِيَّةِ، قَالَ دَخَلَ الْحَارِثُ بْنُ أَبِي رَبِيعَةَ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ صَفْوَانَ وَأَنَا مَعَهُمَا، عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ فَسَأَلاَهَا عَنِ الْجَيْشِ الَّذِي يُخْسَفُ بِهِ وَكَانَ ذَلِكَ فِي أَيَّامِ ابْنِ الزُّبَيْرِ فَقَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَعُوذُ عَائِذٌ بِالْبَيْتِ فَيُبْعَثُ إِلَيْهِ بَعْثٌ فَإِذَا

(7240) उबैदुल्लाह बिन क़िब्तिया (रह.) बयान करते हैं, हारिस बिन अबी रबीआ और अब्दुल्लाह बिन सफ़्वान, उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मैं भी उनके साथ था, उन्होंने उनसे उस लश्कर के बारे में पूछा, जिसे धंसा दिया जाएगा और यह हज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) के अहद (ज़माने) की बात है तो हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने जवाब दिया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'एक पनाह लेने वाला, बैतुल्लाह की पनाह लेगा, उसकी तरफ़ एक लश्कर भेजा जाएगा तो जब वह लश्कर एक चटियल मैदान में पहुँचेंगे, उन्हें

धंसा दिया जाएगा' तो मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! तो जो लोग मजबूरन शरीक होंगे उनका क्या बनेगा? आपने फ़र्माया, 'उसको भी उनके साथ धंसा दिया जाएगा लेकिन क़ियामत के दिन उसे अपने निय्यत पर उठाया जाएगा।' अबू जअ़फ़र कहते हैं उस मैदान से मुराद मदीना का मक़ामे बैदा है।
सुनन अबूदाऊद, किताबुल महदी : 4289.

كَانُوا بِبَيْدَاءَ مِنَ الأَرْضِ خُسِفَ بِهِمْ " . فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَكَيْفَ بِمَنْ كَانَ كَارِهًا قَالَ " يُخْسَفُ بِهِ مَعَهُمْ وَلَكِنَّهُ يُبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى نِيَّتِهِ" . وَقَالَ أَبُو جَعْفَرٍ هِيَ بَيْدَاءُ الْمَدِينَةِ .

(7241) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, उसमें यह है कि मैं अबू जअ़फ़र यानी इमाम बाक़िर को मिला और पूछा, उम्मे सलमा (रज़ि.) ने तो यह कहा है, ज़मीन का चटियल मैदान (और उसमें किसी जगह का ज़िक्र नहीं है तो अबू जअ़फ़र ने कहा, यक़ीनन अल्लाह की क़सम! उससे मुराद मदीना का बैदा मक़ाम है।
इसकी तख़रीज हदीस 7169 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَاهُ أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ رُفَيْعٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَفِي حَدِيثِهِ قَالَ فَلَقِيتُ أَبَا جَعْفَرٍ فَقُلْتُ إِنَّهَا إِنَّمَا قَالَتْ بِبَيْدَاءَ مِنَ الأَرْضِ فَقَالَ أَبُو جَعْفَرٍ كَلاَّ وَاللَّهِ إِنَّهَا لَبَيْدَاءُ الْمَدِينَةِ .

(7242) हजरत हफ़्सा (रज़ि.) बयान करती हैं, उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'बैतुल्लाह पर हमले के इरादे से एक लश्कर उसका रुख़ करेगा जब यह लोग चटियल ज़मीन में पहुँचेंगे, उनके बीच वाले हिस्से को धंसा दिया जाएगा और पहला हिस्सा आख़िरी हिस्से को आवाज़ देगा, फिर उन सबको भी धंसा दिया जाएगा बस वह भगोड़ा बचेगा, जो उनके बारे में जाकर ख़बर देगा।'
चुनाँचे एक आदमी ने कहा मैं गवाही देता हूँ,

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لِعَمْرٍو - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ، عُيَيْنَةَ عَنْ أُمَيَّةَ بْنِ صَفْوَانَ، سَمِعَ جَدَّهُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ صَفْوَانَ، يَقُولُ أَخْبَرَتْنِي حَفْصَةُ، أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَيَؤُمَّنَّ هَذَا الْبَيْتَ جَيْشٌ يَغْزُونَهُ حَتَّى إِذَا كَانُوا بِبَيْدَاءَ مِنَ الأَرْضِ يُخْسَفُ بِأَوْسَطِهِمْ وَيُنَادِي أَوَّلُهُمْ آخِرَهُمْ ثُمَّ يُخْسَفُ بِهِمْ فَلاَ يَبْقَى إِلاَّ الشَّرِيدُ

तुमने हज़रत हफ़्सा पर झूठ नहीं बाँधा और मैं हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के बारे में गवाही देता हूँ उन्होंने नबी अकरम(ﷺ) पर झूठ नहीं बाँधा।
नसाई, किताबुल मनासिक : 2879.

الَّذِي يُخْبِرُ عَنْهُمْ " . فَقَالَ رَجُلٌ أَشْهَدُ عَلَيْكَ أَنَّكَ لَمْ تَكْذِبْ عَلَى حَفْصَةَ وَأَشْهَدُ عَلَى حَفْصَةَ أَنَّهَا لَمْ تَكْذِبْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

(7243) हजरत उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'बैतुल्लाह की पनाह ऐसे लोग लेंगे, उनका कोई हामी व मुहाफ़िज़ नहीं होगा, न अददी ताक़त और न साज़ो सामान, उनकी तरफ़ एक लश्कर रवाना किया जाएगा, यहाँ तक कि जब लश्कर ज़मीन के एक चटियल मैदान में पहुँचेगा तो उसे धंसा दिया जाएगा।' अब्दुल्लाह बिन सफ़्वान के शागिर्द, यूसुफ़ (रह.) कहते हैं , उन दिनों अहले शाम यानी यज़ीद का लश्कर मक्का की तरफ़ जा रहा था, चुनाँचे अब्दुल्लाह ने कहा, (हालाँकि वह हज़रत इब्ने ज़ुबैर के साथ शहीद हुए) हाँ! अल्लाह की क़सम! यह वह लश्कर नहीं है, ज़ैद बिन अबी उनैसा कहते हैं, मुझे यही रिवायत एक दूसरी सनद से हज़रत उम्मुल मोमिनीन से पहुँची है, लेकिन उसमें उस लश्कर का ज़िक्र नहीं है, जिसका ज़िक्र अब्दुल्लाह बिन सफ़्वान ने किया है।
तख़रीज 7243 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ، عَمْرٍو حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ الْعَامِرِيِّ، عَنْ يُوسُفَ بْنِ مَاهَكَ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ صَفْوَانَ، عَنْ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " سَيَعُوذُ بِهَذَا الْبَيْتِ - يَعْنِي الْكَعْبَةَ - قَوْمٌ لَيْسَتْ لَهُمْ مَنَعَةٌ وَلاَ عَدَدٌ وَلاَ عُدَّةٌ يُبْعَثُ إِلَيْهِمْ جَيْشٌ حَتَّى إِذَا كَانُوا بِبَيْدَاءَ مِنَ الأَرْضِ خُسِفَ بِهِمْ " . قَالَ يُوسُفُ وَأَهْلُ الشَّامِ يَوْمَئِذٍ يَسِيرُونَ إِلَى مَكَّةَ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ صَفْوَانَ أَمَا وَاللَّهِ مَا هُوَ بِهَذَا الْجَيْشِ . قَالَ زَيْدٌ وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ الْعَامِرِيُّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَابِطٍ، عَنِ الْحَارِثِ، بْنِ أَبِي رَبِيعَةَ عَنْ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، . بِمِثْلِ حَدِيثِ يُوسُفَ بْنِ مَاهَكٍ غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ فِيهِ الْجَيْشَ الَّذِي ذَكَرَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ صَفْوَانَ .

(7244) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नींद में से अपने जिस्म को हरकत दी या हाथ पैर हिलाए,

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ الْفَضْلِ،

الْحُدَّانِيُّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ عَبِثَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي مَنَامِهِ فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ صَنَعْتَ شَيْئًا فِي مَنَامِكَ لَمْ تَكُنْ تَفْعَلُهُ . فَقَالَ " الْعَجَبُ إِنَّ نَاسًا مِنْ أُمَّتِي يَؤُمُّونَ بِالْبَيْتِ بِرَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ قَدْ لَجَأَ بِالْبَيْتِ حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْبَيْدَاءِ خُسِفَ بِهِمْ " . فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الطَّرِيقَ قَدْ يَجْمَعُ النَّاسَ . قَالَ " نَعَمْ فِيهِمُ الْمُسْتَبْصِرُ وَالْمَجْبُورُ وَابْنُ السَّبِيلِ يَهْلِكُونَ مَهْلَكًا وَاحِدًا وَيَصْدُرُونَ مَصَادِرَ شَتَّى يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ عَلَى نِيَّاتِهِمْ " .

चुनाँचे हमने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने अपनी नींद में ऐसा काम किया, जो आपने आज से पहले नहीं किया था। तो आपने फ़र्माया, 'हैरत अंगेज़ बात है, मेरी उम्मत के कुछ लोग एक क़ुरैशी आदमी की ख़ातिर जो बैतुल्लाह की पनाह ले चुका होगा, बैतुल्लाह का रुख़ करेंगे, यहाँ तक कि जब वह ज़मीन के एक चटियल मैदान में पहुँचेंगे, उन्हें धंसा दिया जाएगा।' चुनाँचे हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! रास्ता तो हर क़िस्म के लोगों को जमा कर देता है, आपने फ़र्माया, 'हाँ! उनमें मामला से आगाह, उसकी बसीरत रखने वाले, मजबूर और मुसाफ़िर भी होंगे, सब इकट्ठे हलाक हो जाएँगे और अलग अलग हैसियत से उठेंगे, अल्लाह उन लोगों को उनकी निय्यतों के मुताबिक़ उठाएगा।'

मुफ़रदातुल हदीस : (1) **अबिस** : जिस्म को जुंबिश दी, हाथ पैर हिलाए, मुस्तब्सिर : मामला की बसीरत (सूझ-बूझ) रखने वाला। (2) **यस्दुरून मसादिर शत्ता** : अलग अलग और मुतफ़र्रिक़ तौर पर वापसी होगी, हर एक से उसकी निय्यत व अमल के मुताबिक़ सुलूक होगा।

(3) بَابُ : نُزُوْلِ الْفِتَنِ كَمَوَاقِعِ الْقَطْرِ

बाब 3 : फ़ित्नों का बारिश के क़तरों (बूँदों) की तरह उतरना

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي شَيْبَةَ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ

(7245) हजरत उसामा (रज़ि) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) मदीना के क़िलों में से एक क़िले पर चढ़े, फिर फ़र्माया, 'क्या जो कुछ मैं देख रहा हूँ, तुम देख रहे हो? मैं तुम्हारे घरों के अंदर फ़ित्नों के गिरने की जगह इस

الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ أُسَامَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم أَشْرَفَ عَلَى أُطُمٍ مِنْ آطَامِ الْمَدِينَةِ ثُمَّ قَالَ " هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى إِنِّي لأَرَى مَوَاقِعَ الْفِتَنِ خِلاَلَ بُيُوتِكُمْ كَمَوَاقِعِ الْقَطْرِ

तरह देखता हूँ, जिस तरह बारिश के क़तरे गिरते हैं।'

सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले मदीना : 1878; किताबुल मज़ालिम : 2467; किताबुल मनाक़िब : 3597; किताबुल फ़ितन : 6070.

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(7246) इमाम स़ाहब इसके हम मआनी रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज ह़दीस 7174 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : जब बारिश बरसती है तो वह आम होती है, उससे कोई घर नहीं बचता, इस त़रह तुम्हारे घरों में फ़ित्ने, कसरत से पैदा होने वाले हैं, तुम सब उनका शिकार होंगे, कोई भी उनसे मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहेगा, इस तरह आपकी इस पेशीनगोई का ज़ुहूर, ह़ज़रत उस्मान (रज़ि.) के ख़िलाफ़ बग़ावत और उनकी शहादत से हुआ और उसकी बारिश में जंगे जमल, जंगे सिफ़्फ़ीन वाक़िया ह़र्रा वग़ैरह पेश आए।

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَالْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنِي وَقَالَ، الآخَرَانِ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ، شِهَابٍ حَدَّثَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " سَتَكُونُ فِتَنٌ الْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي وَالْمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي مَنْ تَشَرَّفَ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ وَمَنْ وَجَدَ فِيهَا مَلْجَأً فَلْيَعُذْ بِهِ " .

(7247) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं , रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जल्द ही फ़ित्नों का आग़ाज़ होगा।' बैठने वाला, उनमें खड़े होने वाले से बेहतर होगा और उनमें खड़ा होने वाला, चलने वाले से बेहतर होगा और उनमें चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा, जो भी उनको देखने की कोशिश करेगा वह उसको अपनी त़रफ़ खींच लेंगे, जिस शख़्स़ को उनसे पनाह मिल सके, वह उस पनाह को हासि़ल कर ले।'

तख़रीज 7247 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3601.

फ़ायदा : हुज़ूरे अकरम(ﷺ) का मक़्सद यह है कि इंसान को फ़ित्नों से दूर रहना चाहिए, उनको देखना या उनका जायज़ा लेना भी तबाही व हलाकत में गिरफ़्तार होने का बाइस बन सकता है, इंसान उनसे जिस क़द्र ज़्यादा दूर होगा और उनसे बचने की कोशिश करेगा उतना ही उसके हक़ में बेहतर होगा और जितना उनके क़रीब होता जाएगा उतना ही ज़्यादा नुक़्सान उठाएगा।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَالْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنِي وَقَالَ، الآخَرَانِ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُطِيعِ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنْ نَوْفَلِ بْنِ مُعَاوِيَةَ، . مِثْلَ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ هَذَا إِلاَّ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ، يَزِيدُ " مِنَ الصَّلاَةِ صَلاَةٌ مَنْ فَاتَتْهُ فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ " .

(7248) इमाम साहब अपने तीन उस्तादों की एक ही सनद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं, मगर उसमें यह इज़ाफ़ा है, 'नमाज़ों में एक नमाज़ ऐसी है जिसकी वह रह जाए तो गोया उसका अहल और माल दोनों लुट गए।'

इसकी तख़रीज ह़दीस 7176 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " تَكُونُ فِتْنَةٌ النَّائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْيَقْظَانِ وَالْيَقْظَانُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي فَمَنْ وَجَدَ مَلْجَأً أَوْ مَعَاذًا فَلْيَسْتَعِذْ " .

(7249) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़रमाया, 'फ़ित्ना होगा, सोने वाला उसमें बेदार से बेहतर होगा और जागने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा और उसमें खड़ा होने वाला (उसकी त़रफ़) दौड़ने वाले से बेहतर होगा, चुनाँचे जो शख़्स ठिकाना या पनाह पाए, वह पनाह हासिल कर ले।'

सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन : 7081.

حَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ، الشَّحَّامُ قَالَ انْطَلَقْتُ أَنَا وَفَرْقَدٌ السَّبَخِيُّ، إِلَى

(7250) उस्मान शह्हाम (रह.) बयान करते हैं कि मैं और फ़रक़द सबख़ी, मुस्लिम बिन अबी बक्रा की त़रफ़ चले, वह अपनी ज़मीन में थे, चुनाँचे हम उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूछा कि आपने अपने बाप से फ़ित्नों के बारे में,

مُسْلِمِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ وَهُوَ فِي أَرْضِهِ فَدَخَلْنَا عَلَيْهِ فَقُلْنَا هَلْ سَمِعْتَ أَبَاكَ يُحَدِّثُ فِي الْفِتَنِ حَدِيثًا قَالَ نَعَمْ سَمِعْتُ أَبَا بَكْرَةَ يُحَدِّثُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّهَا سَتَكُونُ فِتَنٌ أَلاَ ثُمَّ تَكُونُ فِتْنَةٌ الْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي فِيهَا وَالْمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي إِلَيْهَا أَلاَ فَإِذَا نَزَلَتْ أَوْ وَقَعَتْ فَمَنْ كَانَ لَهُ إِبِلٌ فَلْيَلْحَقْ بِإِبِلِهِ وَمَنْ كَانَتْ لَهُ غَنَمٌ فَلْيَلْحَقْ بِغَنَمِهِ وَمَنْ كَانَتْ لَهُ أَرْضٌ فَلْيَلْحَقْ بِأَرْضِهِ " . قَالَ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ مَنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ إِبِلٌ وَلاَ غَنَمٌ وَلاَ أَرْضٌ قَالَ " يَعْمِدُ إِلَى سَيْفِهِ فَيَدُقُّ عَلَى حَدِّهِ بِحَجَرٍ ثُمَّ لْيَنْجُ إِنِ اسْتَطَاعَ النَّجَاءَ اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ " . قَالَ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ أُكْرِهْتُ حَتَّى يُنْطَلَقَ بِي إِلَى أَحَدِ الصَّفَّيْنِ أَوْ إِحْدَى الْفِئَتَيْنِ فَضَرَبَنِي رَجُلٌ بِسَيْفِهِ أَوْ يَجِيءُ سَهْمٌ فَيَقْتُلُنِي قَالَ " يَبُوءُ بِإِثْمِهِ وَإِثْمِكَ وَيَكُونُ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ "

कोई हदीस सुनी है? उन्होंने कहा, हाँ! मैंने अबू बक्रा (रज़ि.) को यह हदीस बयान करते सुना, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'सूरते हाल यह है, जल्द ही फ़ित्ने रुनुमा होंगे, ख़बरदार! फिर एक फ़ित्ना होगा, उसमें बैठने वाला उसकी तरफ़ चलने वाले से बेहतर होगा और उसमें चलने वाला उसकी तरफ़ दौड़ने वाले से बेहतर होगा। ख़बरदार! जब यह फ़ित्ना उतरे या वाक़िया हो तो जिस शख़्स के (जंगल में) ऊँट हों तो वह अपने ऊँटों के साथ जा मिले और जिसकी बकरियाँ हों, वह अपनी बकरियों के पास चला जाए और जिसकी ज़मीन (खेत) हो वह अपनी ज़मीन पर चला जाए।' तो एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! फ़र्माएँ जिसके पास ऊँट, बकरियाँ और ज़मीन में से कुछ भी न हो?' आपने फ़र्माया, 'वह अपनी तलवार का रुख़ करे और उसकी धार पत्थर से कूट दे यानी हथियार ज़ाया कर दे, ताकि वह लड़ाई में हिस्सा न ले सके, फिर अगर बच सकता हो तो बच जाए, ऐ अल्लाह! मैंने हक़ पहुँचा दिया? ऐ अल्लाह! क्या मैंने हक़ की तब्लीग़ कर दी, ऐ अल्लाह! क्या मैंने हक़ की तल्क़ीन कर दी चुनाँचे एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! फ़र्माईये अगर मुझे मजबूर करके एक सफ़ या एक पार्टी की तरफ़ ले जाया जाए तो एक आदमी मुझे अपनी तलवार मार दे या कोई तीर आकर मुझे क़त्ल कर दे? आपने फ़र्माया, 'वह अपने गुनाह और तेरे गुनाह लेकर लौटेगा और दोज़ख़ी होगा।'

सुनन अबूदाऊद, किताबुल फ़ितन : 4257.

फ़ायदा : इस फ़ित्ना से मुराद वह फ़ित्ना है, जिसमें इंसान पर हक़ वाज़ेह न हो, या फ़ित्ना में हिस्सा लेने से उसका मज़ीद भड़कना लाज़िम आता हो, फ़ायदे के बजाए नुक़्सान ज़्यादा होता हो, लेकिन अगर हक़ वाज़ेह हो और ज़्यादती करने वाले फ़र्द या अफ़राद को रोकना ज़रूरी हो, या फ़ित्ना ख़त्म हो सकता हो तो फिर हक़ वाले गिरोह का साथ देकर फ़ित्ने का दरवाज़ा बन्द करना चाहिए।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ، بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، كِلاَهُمَا عَنْ عُثْمَانَ الشَّحَّامِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . حَدِيثُ ابْنِ أَبِي عَدِيٍّ نَحْوَ حَدِيثِ حَمَّادٍ إِلَى آخِرِهِ وَانْتَهَى حَدِيثُ وَكِيعٍ عِنْدَ قَوْلِهِ " إِنِ اسْتَطَاعَ النَّجَاءَ " . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(7251) इमाम ऊपर वाली हदीस तीन उस्तादों की सनद से, उ़स्मान शह्हाम की ऊपर वाली सनद से बयान करते हैं, वक़ीअ़ की हदीस 'इनिस्तताअन्नजाअ' अगर वह बच सकता हो' तक है, उसमें बाद वाला हिस़्सा नहीं है और इब्ने अबी अ़दी की रिवायत आख़िर तक है।

तख़रीज 7251 : इसकी तखरीज हदीस 7179 में गुज़र चुकी है।

(4)
بَابُ : إِذَا تَوَاجَهَ الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا

बाब 4 :
अगर दो मुसलमान अपनी तलवारें लेकर एक दूसरे के सामने आ जाएँ

حَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ الْجَحْدَرِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، وَيُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ خَرَجْتُ وَأَنَا أُرِيدُ، هَذَا الرَّجُلَ فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرَةَ فَقَالَ أَيْنَ تُرِيدُ يَا أَحْنَفُ قَالَ قُلْتُ أُرِيدُ نَصْرَ ابْنِ عَمِّ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم -يَعْنِي عَلِيًّا - قَالَ فَقَالَ لِي يَا أَحْنَفُ ارْجِعْ

(7252) अह्नफ़ बिन क़ैस (रह.) बयान करते हैं, मैं उस आदमी (ह़ज़रत अ़ली रज़ि.) की मदद के लिए निकला तो मुझे ह़ज़रत अबू बक्रा (रज़ि.) मिले, कहने लगे, कहाँ का इरादा है ऐ अह्नफ़? मैंने कहा, रसूलुल्लाह(ﷺ) के चचाज़ाद यानी ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की मदद करना चाहता हूँ तो उन्होंने मुझे कहा, ऐ अह्नफ़! वापिस लौट जाओ, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'जब दो मुसलमान तलवारें

فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا تَوَاجَهَ الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ " . قَالَ فَقُلْتُ أَوْ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا الْقَاتِلُ فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ قَالَ " إِنَّهُ قَدْ أَرَادَ قَتْلَ صَاحِبِهِ " .

सोंत कर एक दूसरे के मुक़ाबले में आ जाते हैं तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों दोज़ख़ी बनते हैं, मैंने पूछा या पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! यह क़ातिल है (इसका जहन्नमी होना तो ठीक है) तो मक़्तूल की यह हालत क्यूँ? आपने फ़र्माया, 'वह भी तो अपने साथी को क़त्ल करना चाहता था।'

सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान : 31; किताबुद्दियात : 6875; किताबुल फ़ितन : 7183; सुनन अबू दाऊद : 4268, 4269; नसाई : 4133, 4134.

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है, अगर दो आदमी बिला ज़रूरत एक दूसरे के क़त्ल के दर पे हैं तो दोनों ही अगर अल्लाह ने उन्हें माफ़ न किया तो सज़ा भुगतने के लिए दोज़ख़ में जाएँगे, लेकिन अगर उनमें से एक सिर्फ़ अपने दिफ़ाअ (बचाव) के लिए तलवार उठाता है, दूसरे को क़त्ल करना मक़्सद नहीं है तो फिर वह मअज़ूर होगा। हज़रत अबू बक्रा (रज़ि.) चूँकि हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) की बाहमी जंग, जंगे जमल को खानाजंगी और नुक़्सान की वजह समझते थे, इसलिए उन्होंने अहनफ़ को किसी एक का साथ देने से रोका, लेकिन अहनफ़ चूँकि हज़रत अली (रज़ि.) को हक़ पर ख़्याल करते थे, इसलिए वह बाद में उनके साथ शरीक हो गए थे।

وَحَدَّثَنَاهُ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، وَيُونُسَ، وَالْمُعَلَّى بْنِ زِيَادٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ" .

(7253) हजरत अबू बक्रा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब दो मुसलमान, अपनी अपनी तलवारें लेकर आमने सामने आ जाते हैं तो क़ातिल व मक़्तूल दोनों दोज़ख़ी होते हैं।

इसकी तख़रीज हदीस 7181 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، مِنْ كِتَابِهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ أَيُّوبَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَ حَدِيثِ أَبِي كَامِلٍ عَنْ حَمَّادٍ، إِلَى آخِرِهِ .

(7254) इमाम साहब एक और उस्ताद से हदीस नम्बर 14 की तरह मुकम्मल हदीस बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज हदीस 7181 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا الْمُسْلِمَانِ حَمَلَ أَحَدُهُمَا عَلَى أَخِيهِ السِّلاَحَ فَهُمَا فِي جُرُفِ جَهَنَّمَ فَإِذَا قَتَلَ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ دَخَلاَهَا جَمِيعًا " .

(7255) हजरत अबू बक्रा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'जब दो मुसलमान एक दूसरे पर हथियार उठाते हैं तो वह दोनों जहन्नम के किनारे पर होते हैं तो जब उनमें से एक दूसरे को क़त्ल कर देता है तो दोनों जहन्नम में पहुँच जाते हैं।'

तख़रीज 7255 : सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन : 7083 नसाई : 4127 और हदीस 4127; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 3965.

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتَتِلَ فِئَتَانِ عَظِيمَتَانِ وَتَكُونُ بَيْنَهُمَا مَقْتَلَةٌ عَظِيمَةٌ وَدَعْوَاهُمَا وَاحِدَةٌ " .

(7256) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह (रहि.) को सुनाई हुई हदीसों में से एक यह है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी, जब तक वह दो बड़ी जमाअतें नहीं लड़ेंगी उनके बीच बहुत बड़ी जंग होगी और उनका दावा एक ही होगा।'

तख़रीज 7256 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3609.

फ़ायदा : इन दो अज़ीम गिरोहों से मुराद हज़रत अली और हज़रत मुआविया (रज़ि.) के गिरोह हैं, जो दोनों ही मुसलमान थे और दोनों ही अपने आपको हक़ पर समझते थे और उनके बीच बहुत बड़ी जंग हुई। जिसमें हजारों लोग क़त्ल हुए। हज़रत अली (रज़ि.) का मौकिफ़ यह था कि मैं ख़लीफ़ा हूँ इसलिए अल्लाह के अहकाम की तंफ़ीज़ का तक़ाज़ा यह है कि सब लोग मेरी इताअत व फ़र्मांबरदारी में दाख़िल हों जो उससे बाज़ रहते हैं उनसे जंग करना दुरुस्त है और हजरत मुआविया (रज़ि.) का मौक़िफ़ यह था हज़रत उस्मान (रज़ि.) मज़्लूम शहीद हुए हैं उनसे क़िसास लेना दीन व शरीअत का तक़ाज़ा है और क़ातेलीन हज़रत अली (रज़ि.) की पनाह लिए हैं लिहाज़ा जब तक वह उनसे उस्मान (रज़ि.) का क़िसास (बदला) नहीं लेते उस वक़्त तक उनकी इताअत ज़रूरी नहीं है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَكْثُرَ الْهَرْجُ " . قَالُوا وَمَا الْهَرْجُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " الْقَتْلُ الْقَتْلُ " .

(7257) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी, जब तक क़त्लो ग़ारत आम नहीं होता।' सहाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा, हर्ज से क्या मुराद है? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'क़त्ल क़त्ल' यानी क़त्ल का आम होना।

फ़ायदा : आजकल क़त्लो ग़ारत आम हो रही है, और क़त्ल की संगीनी दिन बदिन कम हो रही है इसको कोई बड़ा जुर्म तसव्वुर नहीं किया जाता।

(5)

بَابُ : هَلاَكِ هٰذِهِ الْأُمَّةِ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ

बाब 5 : इस उम्मत के लोगों की एक दूसरे के ज़रिये हलाकत व बर्बादी

حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ الْعَتَكِيُّ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، كِلاَهُمَا عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، - وَاللَّفْظُ لِقُتَيْبَةَ - حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ، عَنْ ثَوْبَانَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ اللَّهَ زَوَى لِيَ الأَرْضَ فَرَأَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا وَإِنَّ أُمَّتِي سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زُوِيَ لِي مِنْهَا وَأُعْطِيتُ الْكَنْزَيْنِ الأَحْمَرَ وَالأَبْيَضَ وَإِنِّي سَأَلْتُ رَبِّي لأُمَّتِي أَنْ لاَ يُهْلِكَهَا بِسَنَةٍ بِعَامَّةٍ وَأَنْ لاَ يُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ سِوَى أَنْفُسِهِمْ

(7258) हजरत सौबान (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह (स) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला ने मेरे लिए ज़मीन को समेट दिया, चुनाँचे मैंने उसके मश्रिक़ी और मग़्रिबी किनारों को देख लिया और यक़ीनन मेरी उम्मत का इक़्तिदार व हुकूमत वहाँ तक पहुँचेगी, जहाँ तक उसको मेरे लिए समेट दिया गया और मुझे दो ख़ज़ाने सुर्ख़ व सफ़ेद इनायत किये गए (यानी क़ैसर/रूम और किसरा/ईरान के ख़ज़ाने) और मैंने अपने रब से अपनी उम्मत के लिए दुआ की कि वह उस क़हते आम के ज़रिये हलाक न करे और उन पर उनके अपने सिवा दुश्मन को ग़ल्बा और

فَيَسْتَبِيحَ بَيْضَتَهُمْ وَإِنَّ رَبِّي قَالَ يَا مُحَمَّدُ إِنِّي إِذَا قَضَيْتُ قَضَاءً فَإِنَّهُ لاَ يُرَدُّ وَإِنِّي أَعْطَيْتُكَ لأُمَّتِكَ أَنْ لاَ أُهْلِكَهُمْ بِسَنَةٍ بِعَامَّةٍ وَأَنْ لاَ أُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوًّا مِنْ سِوَى أَنْفُسِهِمْ يَسْتَبِيحُ بَيْضَتَهُمْ وَلَوِ اجْتَمَعَ عَلَيْهِمْ مَنْ بِأَقْطَارِهَا - أَوْ قَالَ مَنْ بَيْنَ أَقْطَارِهَا - حَتَّى يَكُونَ بَعْضُهُمْ يُهْلِكُ بَعْضًا وَيَسْبِي بَعْضُهُمْ بَعْضًا " .

तसल्लुत न दे (तमाम मुसलमानों पर काफ़िर ग़ालिब न आ जाएँ) कि वह उनके इक़्तिदार व जमइयत को पामाल कर दे और मुझे मेरे रब ने फ़र्माया, 'ऐ मुहम्मद(ﷺ)! मैं जब कोई फ़ैसला करता हूँ तो उसको टाला नहीं जा सकता और मैंने तुझे तेरी उम्मत के बारे में यह वादा दे दिया है कि मैं उन्हें क़हते आम से हलाक नहीं करूँगा और मैं उन पर उनके सिवा कोई ऐसा दुश्मन मुसल्लत नहीं करूँगा, जो उन सबकी इज़्ज़त व इक़्तिदार को ख़त्म कर दे, अगरचे तमाम रूए ज़मीन के लोग उनके ख़िलाफ़ इकट्ठे हो जाएँ, हाँ! वह ख़ुद ही एक दूसरे को हलाक करेंगे और एक दूसरे को क़ैदी बनाएँगे।

तख़रीज 7258 : सुनन अबूदाऊद, किताबुल फ़ितन : 4252; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2176; सुनन इब्ने माजा : 3952.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अह्मर : यानी दीनार और दिरहम (सोना चाँदी) क्योंकि किसरा का आम सिक्का दीनार था और क़ैसर का दिरहम और उन दोनों पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हुआ। (2) सनतुन आम्मा : ऐसी ख़ुश्कसाली, जो तमाम उम्मते मुस्लिमा को घेर ले और सब उसका शिकार हों, आज तक मुसलमान मुमालिक में ऐसा क़हत (अकाल) नहीं पड़ा। (3) यस्तबीहु बैज़तहुम : उनकी तमाम जमइयत को अपने लिए मुबाह समझे, तमाम मुसलमानों पर ग़ालिब आ जाए, आज तक ऐसा नहीं हुआ कि तमाम मुसलमान इक़्तिदार से महरूम हो गए हों, हाँ! मुसलमान आपस में एक दूसरे को क़त्ल करते रहते हैं और एक दूसरे की क़ैदो बंद का बाइस बनते हैं, दुश्मन उन्हें आपस में लड़ाते रहते हैं।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ،

(7259) हजरत सौबान (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तआला ने मेरे लिए रूए ज़मीन को समेट दिया यहाँ तक कि मैंने उसके मश्रिक़ी और मग़्रिबी

حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ الرَّحَبِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى زَوَى لِيَ الأَرْضَ حَتَّى رَأَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا وَأَعْطَانِي الْكَنْزَيْنِ الأَحْمَرَ وَالأَبْيَضَ " . ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ .

किनारों को देख लिया और अल्लाह ने मुझे दो सुर्ख़ और सफ़ेद ख़ज़ाने इनायत किये।' आगे ऊपर वाली रिवायत की तरह है।

तख़रीज 7259 : इसकी तख़रीज हदीस 7187 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، -وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ حَكِيمٍ، أَخْبَرَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَقْبَلَ ذَاتَ يَوْمٍ مِنَ الْعَالِيَةِ حَتَّى إِذَا مَرَّ بِمَسْجِدِ بَنِي مُعَاوِيَةَ دَخَلَ فَرَكَعَ فِيهِ رَكْعَتَيْنِ وَصَلَّيْنَا مَعَهُ وَدَعَا رَبَّهُ طَوِيلاً ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَيْنَا فَقَالَ صلى الله عليه وسلم " سَأَلْتُ رَبِّي ثَلاَثًا فَأَعْطَانِي ثِنْتَيْنِ وَمَنَعَنِي وَاحِدَةً سَأَلْتُ رَبِّي أَنْ لاَ يُهْلِكَ أُمَّتِي بِالسَّنَةِ فَأَعْطَانِيهَا وَسَأَلْتُهُ أَنْ لاَ يُهْلِكَ أُمَّتِي بِالْغَرَقِ فَأَعْطَانِيهَا وَسَأَلْتُهُ أَنْ لاَ يَجْعَلَ بَأْسَهُمْ بَيْنَهُمْ فَمَنَعَنِيهَا " .

(7260) हजरत सअ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) एक दिन मदीना की बुलंद बस्तियों की तरफ़ से तशरीफ़ लाए, यहाँ तक कि जब बनू मुआविया की मस्जिद से गुजरे तो उसमें दाख़िल होकर दो रकअ़तें पढ़ीं और हमने भी आपके साथ पढ़ीं और आपने अपने रब से तवील दुआ की, फिर हमारी तरफ़ रुख़ फेरकर फ़र्माया, 'मैंने अपने रब से तीन दुआएँ माँगी हैं, चुनाँचे उसने मेरी दो दरख़्वास्तें क़ुबूल कर ली हैं और एक दुआ क़ुबूल नहीं की, मैंने अपने रब से दरख़्वास्त की कि वह मेरी उम्मत को क़हत से हलाक न करे तो अल्लाह ने उसको क़ुबूल कर लिया और मैंने उससे दरख़्वास्त की कि वह मेरी उम्मत को ग़र्क़ करके हलाक न करे तो उसने यह भी क़ुबूल कर ली और मैंने उससे दरख़्वास्त की उनको आपस में न लड़ाए तो उसने यह क़ुबूल नहीं की।'

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ حَكِيمٍ الأَنْصَارِيُّ، أَخْبَرَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ أَقْبَلَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي طَائِفَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَمَرَّ بِمَسْجِدِ بَنِي مُعَاوِيَةَ . بِمِثْلِ حَدِيثِ ابْنِ نُمَيْرٍ .

(7261) हजरत सअ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ आपके साथियों के एक गिरोह में आए तो आपका बनू मुआ़विया की मस्जिद से गुज़र हुआ।' आगे ऊपर वाली रिवायत है।

फ़ायदा : बनू मुआ़विया से मुराद अंसार का एक क़बीला है। और इस हदीस से यह भी साबित हुआ है कि नमाज़ से फ़राग़त के बाद दुआ करने की क़ुबूलियत का ज़्यादा इम्कान होता है।

(6)

بَابُ : إِخْبَارِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِيمَا يَكُونُ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ

बाब 6 : क़ियामे क़ियामत तक होने वाले वाक़ियात से नबी अकरम(ﷺ) का आगाह फ़र्माना

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ أَبَا إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيَّ، كَانَ يَقُولُ قَالَ حُذَيْفَةُ بْنُ الْيَمَانِ وَاللَّهِ إِنِّي لأَعْلَمُ النَّاسِ بِكُلِّ فِتْنَةٍ هِيَ كَائِنَةٌ فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَ السَّاعَةِ وَمَا بِي إِلاَّ أَنْ يَكُونَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَسَرَّ إِلَىَّ فِي ذَلِكَ شَيْئًا لَمْ يُحَدِّثْهُ غَيْرِي وَلَكِنْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ وَهُوَ

(7262) हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं, अल्लाह की क़सम! मैं सब लोगों से ज़्यादा हर उस फ़ित्ने से आगाह हूँ जो मेरे और क़ियामत के बीच वाक़ेअ़ होने वाला है और यह हालत सिर्फ़ इस बिना पर है, मेरी रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इस सिलसिले में कुछ राज़ की बातें सिर्फ़ मुझे बताईं, मेरे सिवा किसी और को वह बातें नहीं बताईं, लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं कि आपने एक मज्लिस में फ़ित्नों के बारे में फ़र्माई और मैं भी उस मज्लिस में मौजूद था, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़ित्नों का शुमार करते हुए फ़र्माया, 'उनमें से तीन

يُحَدِّثُ مَجْلِسًا أَنَا فِيهِ عَنِ الْفِتَنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَعُدُّ الْفِتَنَ " مِنْهُنَّ ثَلاَثٌ لاَ يَكَدْنَ يَذَرْنَ شَيْئًا وَمِنْهُنَّ فِتَنٌ كَرِيَاحِ الصَّيْفِ مِنْهَا صِغَارٌ وَمِنْهَا كِبَارٌ " . قَالَ حُذَيْفَةُ فَذَهَبَ أُولَئِكَ الرَّهْطُ كُلُّهُمْ غَيْرِي

फ़ित्ने ऐसे हैं, जो तक़्रीबन किसी चीज़ को नहीं छोड़ेंगे और उनमें से कुछ फ़ित्ने गर्मियों की आँधियों की तरह हैं, (जो इंतिहाई तक्लीफ़देह होंगे, जिस तरह गर्मी की आँधी झुलसा कर रख देती है।) उनमें से कुछ छोटे होंगे और कुछ बड़े।' हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) कहते हैं, मेरे सिवा उस मज्लिस के तमाम हाज़िरीन फ़ौत हो चुके हैं।

फ़ायदा : हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के फ़ित्नों से ज़्यादा आगाह होने की दो वजहें हैं (1) कुछ राज़ की बातें तो ऐसी थीं कि आपने उनसे सिर्फ़ हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को आगाह किया था। (2) कुछ फ़ित्नों से आपने दूसरों को भी आगाह किया था, लेकिन कुछ लोगों ने याद रखा और कुछ ने भुला दिया, फिर धीरे धीरे वह सब फ़ौत हो गए और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ही बाक़ी रह गए।

وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ عُثْمَانُ حَدَّثَنَا وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَقَامًا مَا تَرَكَ شَيْئًا يَكُونُ فِي مَقَامِهِ ذَلِكَ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلاَّ حَدَّثَ بِهِ حَفِظَهُ مَنْ حَفِظَهُ وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ قَدْ عَلِمَهُ أَصْحَابِي هَؤُلاَءِ وَإِنَّهُ لَيَكُونُ مِنْهُ الشَّىْءُ قَدْ نَسِيتُهُ فَأَرَاهُ فَأَذْكُرُهُ كَمَا يَذْكُرُ الرَّجُلُ وَجْهَ الرَّجُلِ إِذَا غَابَ عَنْهُ ثُمَّ إِذَا رَآهُ عَرَفَهُ .

(7263) हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) एक बार हमारे सामने खड़े हुए और क़ियामत के क़ायम होने तक के तमाम अहम वाक़ियात उसमें बयान कर दिये जिसने उन्हें याद रखा, उसने याद रखा और जिसने भुला दिया, उसने भुला दिया, मेरे उन साथियों को भी इस वाक़िया का इल्म है, और सूरते हाल यह है, उनमें से कुछ चीज़ें मैं भूल चुका हूँ और जब वह वाक़ेअ होती हैं तो वह मुझे याद आ जाती हैं, जिस तरह इंसान को एक ग़ैर हाज़िर हो जाने वाले आदमी का चेहरा याद होता है, फिर वह जब सामने आता है तो वह उसे पहचान लेता है।

तख़रीज 7263 : सहीह बुख़ारी, किताबुल क़द्र : 6604; अबूदाऊद, किताबुल फ़ितन : 4240.

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِلَى قَوْلِهِ وَنَسِيَهُ مَنْ نَسِيَهُ . وَلَمْ يَذْكُرْ مَا بَعْدَهُ .

(7264) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से नसियहू मन नसियहू, जो उस वाक़िया को भूल गया, वह भूल गया, तक बयान करते हैं, उसके बाद वाला हिस्सा बयान नहीं करते।

इसकी तख़रीज हदीस 7192 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ، بْنُ نَافِعٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ حُذَيْفَةَ، أَنَّهُ قَالَ أَخْبَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمَا هُوَ كَائِنٌ إِلَى أَنْ تَقُومَ السَّاعَةُ فَمَا مِنْهُ شَيْءٌ إِلاَّ قَدْ سَأَلْتُهُ إِلاَّ أَنِّي لَمْ أَسْأَلْهُ مَا يُخْرِجُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ مِنَ الْمَدِينَةِ

(7265) हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे क़ियामत बरपा होने तक के वाक़ियात से आगाह किया और मैंने आपसे उनमें से हर चीज़ के बारे में सवाल किया, मगर मैंने आपसे यह सवाल नहीं किया कि अहले मदीना को मदीना से कौनसी चीज़ निकालेगा? यानी अहले मदीना, मदीना से क्यूँ निकल जाएँगे।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है एक ऐसा वक़्त आएगा, जिसमें अहले मदीना, मदीना छोड़ने पर मजबूर हो जाएँगे, लेकिन उसका सबब क्या होगा, यह हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) आपसे पूछ नहीं सके।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(7266) इमाम साहब एक और उस्ताद से इस क़िस्म की रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، وَحَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، جَمِيعًا عَنْ أَبِي عَاصِمٍ، -قَالَ حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، - أَخْبَرَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ، أَخْبَرَنَا عِلْبَاءُ بْنُ أَحْمَرَ، حَدَّثَنِي أَبُو

(7267) हजरत अबू ज़ैद यानी अम्र बिन अख़्तब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और मिम्बर पर चढ़कर हमें ख़िताब फ़र्माया, यहाँ तक कि ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त हो गया तो आपने उतरकर नमाज़ पढ़ाई, फिर मिम्बर

زَيْدٍ، - يَعْنِي عَمْرَو بْنَ أَخْطَبَ - قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْفَجْرَ وَصَعِدَ الْمِنْبَرَ فَخَطَبَنَا حَتَّى حَضَرَتِ الظُّهْرُ فَنَزَلَ فَصَلَّى ثُمَّ صَعِدَ الْمِنْبَرَ فَخَطَبَنَا حَتَّى حَضَرَتِ الْعَصْرُ ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى ثُمَّ صَعِدَ الْمِنْبَرَ فَخَطَبَنَا حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ فَأَخْبَرَنَا بِمَا كَانَ وَبِمَا هُوَ كَائِنٌ فَأَعْلَمُنَا أَحْفَظُنَا .

पर चढ़कर हमें ख़िताब फ़र्माया, यहाँ तक कि अ़स्र का वक़्त हो गया, फिर आपने उतरकर नमाज़ पढ़ाई, फिर आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और हमें ख़िताब फ़र्माया, यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया, चुनाँचे आपने हमें उन बातों से आगाह किया जो हो चुकी थीं और जो होने वाली थीं, तो हममें से ज़्यादा जानने वाला वही है जिसने ज़्यादा याद रखा।

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है, कभी कभार लम्बा ख़िताब (ख़ुत्बा) भी किया जा सकता है क्योंकि आपने दिन भर में सिर्फ़ नमाज़ों के लिए वक़्फ़ा फ़र्माया और दुनिया में पेश आने वाले तमाम अहम वाक़ियात से (जो हो चुके थे और जो होने थे) आगाह किया, जो ज़्यादा याद रखने वाले थे, उन्होंने उनको ज़्यादा याद रखा।

(7)
بَابُ : فِي الْفِتْنَةِ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ الْبَحْرِ

बाब 7 :
वह फ़ित्ना जो समुन्द्र की मौजों की तरह ठाठें मारेगा, यानी बहुत शदीद और आ़म होगा

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ أَبُو كُرَيْبٍ، جَمِيعًا عَنْ أَبِي، مُعَاوِيَةَ قَالَ ابْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ عُمَرَ فَقَالَ أَيُّكُمْ يَحْفَظُ حَدِيثَ رَسُولِ اللَّهِ

(7268) हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि. बयान करते हैं, हम हज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास हाज़िर थे, चुनाँचे उन्होंने पूछा तुममें से किसको फ़ित्ना के बारे में रसूलुल्लाह(ﷺ) की हदीस उसी तरह याद है, जिस तरह आपने फ़र्माई थी? तो मैंने कहा, मुझे! हज़रत उ़मर (रज़ि) ने कहा, तुम इस सिलसिले में बड़े जुर्अतमंद हो, आपने कैसे फ़र्माया था? मैंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना, 'इंसान की उसके

صلى الله عليه وسلم فِي الْفِتْنَةِ كَمَا قَالَ قَالَ فَقُلْتُ أَنَا . قَالَ إِنَّكَ لَجَرِيءٌ وَكَيْفَ قَالَ قَالَ قُلْتُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَنَفْسِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ يُكَفِّرُهَا الصِّيَامُ وَالصَّلاَةُ وَالصَّدَقَةُ وَالأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْىُ عَنِ الْمُنْكَرِ " . فَقَالَ عُمَرُ لَيْسَ هَذَا أُرِيدُ إِنَّمَا أُرِيدُ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ الْبَحْرِ - قَالَ - فَقُلْتُ مَا لَكَ وَلَهَا يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ بَيْنَكَ وَبَيْنَهَا بَابًا مُغْلَقًا قَالَ أَفَيُكْسَرُ الْبَابُ أَمْ يُفْتَحُ قَالَ قُلْتُ لاَ بَلْ يُكْسَرُ . قَالَ ذَلِكَ أَحْرَى أَنْ لاَ يُغْلَقَ أَبَدًا . قَالَ فَقُلْنَا لِحُذَيْفَةَ هَلْ كَانَ عُمَرُ يَعْلَمُ مَنِ الْبَابُ قَالَ نَعَمْ كَمَا يَعْلَمُ أَنَّ دُونَ غَدٍ اللَّيْلَةَ إِنِّي حَدَّثْتُهُ حَدِيثًا لَيْسَ بِالأَغَالِيطِ . قَالَ فَهِبْنَا أَنْ نَسْأَلَ حُذَيْفَةَ مَنِ الْبَابُ فَقُلْنَا لِمَسْرُوقٍ سَلْهُ فَسَأَلَهُ فَقَالَ عُمَرُ .

अहल, माल, जान, औलाद और पड़ौसी के बारे में आज़माइश, उसका कफ़्फ़ारा, रोज़ा, नमाज, सदक़ा, भलाई का हुक्म और बुराई से रोकना बन जाता है।' तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, 'मेरा यह मतलब नहीं है, मेरा मतलब तो वो फ़ित्ना है जो समुन्द्र की लहरों की तरह ठाठें मारेगा तो मैंने कहा, आपका उससे क्या तअल्लुक़, या आपको क्या ख़तरा है? अमीरुल मोमिनीन! आपके और उसके मौक़े के बीच बंद दरवाज़ा है, उन्होंने पूछा, क्या दरवाज़ा तोड़ा जाएगा, या खोला जाएगा? मैंने कहा, खोला नहीं, बल्कि तोड़ा जाएगा, उन्होंने कहा तो फिर वह इस क़ाबिल है कि उसको कभी बंद न किया जा सके तो हमने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से पूछा, क्या हज़रत उमर (रज़ि.) को उस दरवाज़े का इल्म था? उन्होंने कहा, हाँ! जिस तरह उन्हें इल्म था कि कल से पहले रात है, क्योंकि मैंने उन्हें हदीस सुनाई थी जो पहेली या मुअम्मा नहीं थीं। शक़ीक़ (रह.) कहते हैं, हमने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से यह सवाल करने में हैबत महसूस की कि दरवाज़ा कौनसा है? चुनाँचे हमने मसरूक़ (रह.) से कहा, इनसे पूछिए तो उन्होंने उनसे पूछा तो हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने जवाब दिया, उमर (रज़ि.)।

सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात : 525; किताबुज़्ज़कात : 1435; किताबुस्सौम : 1895; किताबुल मनाक़िब : 3586; किताबुल फ़ितन : 7096; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2257; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 3955.

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि एक मुसलमान और मोमिन बन्दे से अपने मुतअल्लिक़ीन के सिलसिले में जो कोताहियाँ और कुसूर सरज़द होते हैं, अपनी फ़राइज़ नमाज़, रोज़ा वग़ैरह उनका कफ़्फ़ारा बन जाते हैं और हजरत उ़मर (रज़ि.) उम्मते मुस्लिमा के फ़ित्नों में मुब्तला होने के सामने एक बन्द दरवाज़ा थे, जब हजरत उ़मर (रज़ि.) की शहादत से यह दरवाज़ा टूट गया, उनकी त़ब्ई मौत से दरवाज़ा न खुला तो उसके बाद मुसलमान या उम्मते इस्लामिया फ़ित्नों से दो चार हो गई, जो अब वक़्तन फ़ौक़तन किसी न किसी शक्ल में ज़ाहिर होते रहते हैं, कभी उनकी शिद्दत कम होती और कभी ज़्यादा और आज उम्मत शदीद फ़ित्नों में मुब्तला है, हर तरफ़ नाम के मुसलमानों का तसल्लुत़ और ग़ल्बा है जो जहनी और फ़िक्री त़ौर पर ग़ैर मुस्लिमों से मरऊ़ब (डरे हुए) बल्कि उनके ग़ुलाम हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عِيسَى، كُلُّهُمْ عَنِ الأَعْمَشِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ. نَحْوَ حَدِيثِ أَبِي مُعَاوِيَةَ وَفِي حَدِيثِ عِيسَى عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، قَالَ سَمِعْتُ حُذَيْفَةَ، يَقُولُ.

(7269) यही रिवायत इमाम साहब अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों से बयान करते हैं।

तख़रीज 7269 : इसकी तख़रीज हदीस 7197 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ جَامِعِ بْنِ أَبِي رَاشِدٍ، وَالأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ قَالَ عُمَرُ مَنْ يُحَدِّثُنَا عَنِ الْفِتْنَةِ، وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ، بِنَحْوِ حَدِيثِهِمْ .

(7270) हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने पूछा, कौन हमें फ़ित्ना के बारे में हदीस सुनाएगा? आगे ऊपर वाली हदीस बयान की।

इसकी तख़रीज हदीस 7197 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ، عَوْنٍ

(7271) हजरत जुन्दुब (रज़ि.) बयान करते हैं, मैं वाक़िया जरआ के दिन आया तो वहाँ एक आदमी बैठा हुआ था, चुनाँचे मैंने कहा,

عَنْ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ جُنْدُبٌ جِئْتُ يَوْمَ الْجَرَعَةِ فَإِذَا رَجُلٌ جَالِسٌ فَقُلْتُ لَيُهَرَاقَنَّ الْيَوْمَ هَا هُنَا دِمَاءٌ . فَقَالَ ذَاكَ الرَّجُلُ كَلاَّ وَاللَّهِ . قُلْتُ بَلَى وَاللَّهِ . قَالَ كَلاَّ وَاللَّهِ . قُلْتُ بَلَى وَاللَّهِ . قَالَ كَلاَّ وَاللَّهِ إِنَّهُ لَحَدِيثُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدَّثَنِيهِ . قُلْتُ بِئْسَ الْجَلِيسُ لِي أَنْتَ مُنْذُ الْيَوْمِ تَسْمَعُنِي أُخَالِفُكَ وَقَدْ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلاَ تَنْهَانِي ثُمَّ قُلْتُ مَا هَذَا الْغَضَبُ فَأَقْبَلْتُ عَلَيْهِ وَأَسْأَلُهُ فَإِذَا الرَّجُلُ حُذَيْفَةُ .

आज यहाँ ख़ूँरेज़ी होगी तो उस आदमी ने कहा, हर्गिज़ नहीं! अल्लाह की क़सम! मैंने कहा, क्यूँ नहीं! अल्लाह की क़सम! उसने कहा, हर्गिज़ नहीं! अल्लाह की क़सम! मैंने कहा, ज़रूर होगी, अल्लाह की क़सम! उसने कहा, हर्गिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! क्योंकि आपकी हदीस है, जो आपने मुझे सुनाई है, मैंने कहा, आप आज के मेरे बहुत बुरे हमनशीन हैं, आप सुन रहे हैं, मैं आपकी ऐसी चीज़ में मुख़ालिफ़त कर रहा हूँ, जो आप रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुन चुके हैं, उसके बावजूद आप मुझे रोकते नहीं हैं? फिर मैंने दिल में कहा, इस गुस्से का क्या फ़ायदा? इसलिए मैं उनसे पूछने के लिए उनकी तरफ़ बढ़ा तो वह आदमी हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) थे।

फ़ायदा : यौमुल जरआ से मुराद वह दिन है, जब हज़रत उस्मान (रज़ि) ने कूफ़ा पर एक आदमी को गवर्नर मुक़र्रर करके भेजा तो लोग कूफ़ा के क़रीब जगह, जरआ तक पहुँच गए कि यह गवर्नर हमें कुबूल नहीं है, हज़रत उस्मान (रज़ि.) से हमारी दरख़्वास्त यह है कि वह हम पर हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) को वाली मुक़र्रर करें, इस बिना पर हज़रत जुन्दुब (रज़ि.) को ख़तरा महसूस हुआ कि यहाँ आपस में जंगो जिदाल होगा, जिससे ख़ूँरेज़ी होगी, क्योंकि अहले कूफ़ा बहुत ज़िद्दी लोग थे, अपनी बात पर अड़ जाते थे और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) जानते थे कि हज़रत उस्मान हलीम और बुर्दबार हैं, इसलिए ख़ूँरेज़ी नहीं होगी, क्योंकि हज़रत हुज़ैफ़ा, रसूलुल्लाह(ﷺ) की हदीस से यह समझते थे कि ख़ूँरेज़ी का दरवाज़ हज़रत उस्मान की शहादत से खुलेगा और हजरत जुन्दुब (रज़ि.) ने ग़ैर शऊरी और ला इल्मी की सूरत में भी रसूलुल्लाह(ﷺ) की हदीस की मुख़ालिफ़त को पसंद नहीं किया, इसलिए हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को न पहचानते हुए उन पर नाराज़गी का इज़्हार किया।

बाब 8 :
क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक फ़ुरात नदी से सोने का पहाड़ ज़ाहिर न हो जाए

(8)
بَابُ : لَاتَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتَّى يَحْسِرَ الْفُرَاتُ عَنْ جَبَلٍ مِنْ ذَهَبٍ

(7272) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी, जब तक दरियाए फ़ुरात से सोने का एक पहाड़ ज़ाहिर न हो, जिस पर लोग लड़ेंगे, चुनाँचे हर सौ (100) में से निन्नान्वे क़त्ल कर दिए जाएँगे, उनमें से हर आदमी जी में कहेगा, शायद बचने वाला मैं ही हूँ।' यानी घमसान की जंग की सूरत में भी हिर्स की बिना पर हर इंसान उसमें घुसेगा।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيَّ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَحْسِرَ الْفُرَاتُ عَنْ جَبَلٍ مِنْ ذَهَبٍ يَقْتَتِلُ النَّاسُ عَلَيْهِ فَيُقْتَلُ مِنْ كُلِّ مِائَةٍ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ وَيَقُولُ كُلُّ رَجُلٍ مِنْهُمْ لَعَلِّي أَكُونُ أَنَا الَّذِي أَنْجُو" .

(7273) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं, उसमें यह इज़ाफ़ा है सुहैल कहते हैं चुनाँचे मेरे वालिद ने कहा, अगर तू उसको देख ले तो हर्गिज़ उसके क़रीब न जाना।

وَحَدَّثَنِي أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ وَزَادَ فَقَالَ أَبِي إِنْ رَأَيْتَهُ فَلاَ تَقْرَبَنَّهُ .

(7274) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़रीब है कि दरियाए फ़ुरात से सोने का ख़ज़ाना (पहाड़ की शक्ल में) ज़ाहिर हो तो जो शख़्स वहाँ मौजूद हो, वह उससे कुछ लेने की कोशिश न करे।'

सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन : 7119; सुनन

حَدَّثَنَا أَبُو مَسْعُودٍ، سَهْلُ بْنُ عُثْمَانَ حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ السَّكُونِيُّ، عَنْ عُبَيْدِ، اللَّهِ عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُوشِكُ الْفُرَاتُ أَنْ

يَحْسِرَ عَنْ كَنْزٍ مِنْ ذَهَبٍ فَمَنْ حَضَرَهُ فَلاَ يَأْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا " .

अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4313; जामेअ तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना : 2569.

حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُوشِكُ الْفُرَاتُ أَنْ يَحْسِرَ عَنْ جَبَلٍ مِنْ ذَهَبٍ فَمَنْ حَضَرَهُ فَلاَ يَأْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا " .

(7275) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़रीब है कि फ़ुरात से सोने का पहाड़ ज़ाहिर हो जाए तो जो शख़्स वहाँ मौजूद हो, वह हर्गिज़ उससे कुछ लेने की कोशिश न करे, या कुछ न ले।'

इसकी तख़रीज हदीस 7203 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، فُضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ وَأَبُو مَعْنٍ الرَّقَاشِيُّ - وَاللَّفْظُ لأَبِي مَعْنٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ، يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ نَوْفَلٍ، قَالَ كُنْتُ وَاقِفًا مَعَ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ فَقَالَ لاَ يَزَالُ النَّاسُ مُخْتَلِفَةً أَعْنَاقُهُمْ فِي طَلَبِ الدُّنْيَا . قُلْتُ أَجَلْ . قَالَ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " يُوشِكُ الْفُرَاتُ أَنْ يَحْسِرَ عَنْ جَبَلٍ مِنْ ذَهَبٍ فَإِذَا سَمِعَ بِهِ النَّاسُ سَارُوا إِلَيْهِ فَيَقُولُ مَنْ عِنْدَهُ لَئِنْ تَرَكْنَا النَّاسَ يَأْخُذُونَ مِنْهُ لَيُذْهَبَنَّ بِهِ كُلِّهِ قَالَ فَيَقْتَتِلُونَ عَلَيْهِ فَيُقْتَلُ مِنْ كُلِّ مِائَةٍ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ " . قَالَ أَبُو كَامِلٍ فِي حَدِيثِهِ قَالَ وَقَفْتُ أَنَا وَأُبَىُّ بْنُ كَعْبٍ فِي ظِلِّ أُجُمِ حَسَّانَ .

(7276) अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नौफ़िल (रह.) बयान करते हैं, मैं हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) के साथ खड़ा हुआ था तो उन्होंने कहा, लोगों की गर्दनें, दुनिया की तलब में हमेशा मुख़्तलिफ़ रहेंगी, मैंने कहा, हाँ! हज़रत कअब (रज़ि.) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'क़रीब है, फ़ुरात से एक सोने का पहाड़ ज़ाहिर हो जाए, तो लोग जब यह बात सुनेंगे, उसकी तरफ़ चल पड़ेंगे, पहाड़ के क़रीब के लोग कहेंगे, अगर हम लोगों को उसके लेने के लिए खुला छोड़ दें तो यह सारा ले जाएँगे, इस वजह से उस पर लड़ पड़ेंगे, चुनाँचे हर सौ (100) में से (99) क़त्ल कर दिये जाएँगे।' अबू कामिल की हदीस में है, मैं और उबय बिन कअब (रज़ि.) हस्सान (रज़ि.) के क़िला के साया में खड़े हुए।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) उजुम : क़िला, जमा आजाम है। (2) आनाक़ : उनुक़ (गर्दन) की जमा है, इससे मुराद लोगों की हिर्स व आज़ को बयान करना है कि आम तौर पर लोग हुसूले दुनिया में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं और यही चीज़ उनमें बाहमी रंजिश व इख़्तिलाफ़ का बाइस बनती है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ يَعِيشَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِعُبَيْدٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، بْنُ آدَمَ بْنِ سُلَيْمَانَ مَوْلَى خَالِدِ بْنِ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنَعَتِ الْعِرَاقُ دِرْهَمَهَا وَقَفِيزَهَا وَمَنَعَتِ الشَّأْمُ مُدْيَهَا وَدِينَارَهَا وَمَنَعَتْ مِصْرُ إِرْدَبَّهَا وَدِينَارَهَا وَعُدْتُمْ مِنْ حَيْثُ بَدَأْتُمْ وَعُدْتُمْ مِنْ حَيْثُ بَدَأْتُمْ وَعُدْتُمْ مِنْ حَيْثُ بَدَأْتُمْ " . شَهِدَ عَلَى ذَلِكَ لَحْمُ أَبِي هُرَيْرَةَ وَدَمُهُ .

(7277) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'इराक़, अपने दिरहम और क़फ़ीज़ को रोक लेगा, शाम अपने मुदी और दीनार को रोक लेगा और मिस्र अपने उरूब और दीनार को रोक लेगा और तुम जहाँ से शुरू हुए थे, उधर ही लौट आओगे और तुमने जहाँ से इब्तिदा की थी, वहीं लौट आओगे और तुमने जहाँ से आग़ाज़ किया था, उधर ही आ जाओगे।' अबू हुरैरा (रज़ि.) का इस हदीस पर गोश्त और ख़ून गवाह है।

तख़रीज 7277 : सुनन अबूदाऊद, किताबुल ख़िराज वल इमारत वल फ़ितन : 3035.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) क़फ़ीज़ : 8 किलो का, एक किलो 1-1/2 साअ का होता है। (2) मुदी : 15 किलो। (3) इर्दब : 24 साअ, एक साअ तक़रीबन 2-1/2 किलो।

फ़ायदा : इस हदीस में मुस्तक़्बिल के लिए, उसके वुक़ूअ के क़तई और यकीनी होने की बिना पर माज़ी का सेग़ा (भूतकाल) इस्तेमाल हुआ कि यह काम होकर रहेगा, आख़िरी ज़माना में , इराक़, शाम और मिस्र के काफ़िरों की कुव्वत व शौकत बढ़ जाएगी, मुसलमान कमज़ोर हो जाएँगे और उन इलाक़ों के लोगों से जिज़्या या ख़राज, ग़ल्ला और रक़म हासिल नहीं कर सकेंगे और मुसलमान जिस तरह आग़ाज़े इस्लाम में ग़रीब थे, तादाद भी कम थी और अस्लहा व हथियार और साज़ो सामान भी कम था, आख़िरी ज़माना में भी इसी तरह अजनबी हो जाएँगे।

बाब 9 :
कुस्तुन्तुनिया की फ़तह, दज्जाल का ज़ुहूर और ईसा बिन मरियम (अ.) का नुज़ूल (उतरना)

(9)
بَابُ : فِيْ فَتْحِ قُسْطَنْطِينِيَّةَ وَخُرُوْجِ الدَّجَّالِ وَنُزُوْلِ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنَا سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَنْزِلَ الرُّومُ بِالأَعْمَاقِ أَوْ بِدَابِقَ فَيَخْرُجُ إِلَيْهِمْ جَيْشٌ مِنَ الْمَدِينَةِ مِنْ خِيَارِ أَهْلِ الأَرْضِ يَوْمَئِذٍ فَإِذَا تَصَافُّوا قَالَتِ الرُّومُ خَلُّوا بَيْنَنَا وَبَيْنَ الَّذِينَ سَبَوْا مِنَّا نُقَاتِلْهُمْ . فَيَقُولُ الْمُسْلِمُونَ لاَ وَاللَّهِ لاَ نُخَلِّي بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ إِخْوَانِنَا . فَيُقَاتِلُونَهُمْ فَيَنْهَزِمُ ثُلُثٌ لاَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ أَبَدًا وَيُقْتَلُ ثُلُثُهُمْ أَفْضَلُ الشُّهَدَاءِ عِنْدَ اللَّهِ وَيَفْتَتِحُ الثُّلُثُ لاَ يُفْتَنُونَ أَبَدًا فَيَفْتَتِحُونَ قُسْطُنْطِينِيَّةَ فَبَيْنَمَا هُمْ يَقْتَسِمُونَ الْغَنَائِمَ قَدْ عَلَّقُوا سُيُوفَهُمْ بِالزَّيْتُونِ إِذْ صَاحَ

(7278) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी, जब तक रूमी (शाम के इलाक़े) आमाक़ या दाबिक़ तक न पहुँच जाएँ, चुनाँचे उनकी तरफ़ मदीना से उस वक़्त के बेहतरीन लोगों का एक लश्कर रवाना होगा, जब वह एक दूसरे के मुक़ाबले में सफ़बन्दी कर लेंगे, रूमी कहेंगे, हमारे और उन लोगों के बीच से निकल जाओ, जिन्होंने हमारे लोगों को क़ैदी बनाया, हम उनसे लड़ेंगे तो मुसलमान कहेंगे, नहीं, अल्लाह की क़सम! हम तुम्हारे और अपने भाईयों के बीच से निकल नहीं सकते, चुनाँचे मुसलमान रूमियों से लड़ेंगे और उन (मुसलमानों) का एक तिहाई हिस्सा शिकस्त खा जाएगा, अल्लाह तआला कभी उनको तौबा की तौफ़ीक़ नहीं देगा, (वह तौबा किये बग़ैर ही फ़ौत हो जाएँगे) और एक तिहाई हिस्सा क़त्ल कर दिया जाएगा, जो अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन शोहदा होंगे और एक तिहाई फ़तहयाब हो जाएँगे, जो कभी फ़ित्ना में मुब्तला नहीं होंगे, चुनाँचे कुस्तुन्तुनिया फ़तह कर लेंगे, इस अस्ना में कि

فِيهِمُ الشَّيْطَانُ إِنَّ الْمَسِيحَ قَدْ خَلَفَكُمْ فِي أَهْلِيكُمْ . فَيَخْرُجُونَ وَذَلِكَ بَاطِلٌ فَإِذَا جَاءُوا الشَّأْمَ خَرَجَ فَبَيْنَمَا هُمْ يُعِدُّونَ لِلْقِتَالِ يُسَوُّونَ الصُّفُوفَ إِذْ أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَيَنْزِلُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ فَأَمَّهُمْ فَإِذَا رَآهُ عَدُوُّ اللَّهِ ذَابَ كَمَا يَذُوبُ الْمِلْحُ فِي الْمَاءِ فَلَوْ تَرَكَهُ لَانْذَابَ حَتَّى يَهْلِكَ وَلَكِنْ يَقْتُلُهُ اللَّهُ بِيَدِهِ فَيُرِيهِمْ دَمَهُ فِي حَرْبَتِهِ "

वह ग़नीमतें तक़सीम कर रहे होंगे और वह अपनी तलवारें ज़ैतून के दरख़्त पर लटका चुके होंगे कि शैतान उनमें चीख़कर कहेगा, तुम्हारे घरवालों में मसीह दज्जाल पहुँच चुका है, चुनाँचे मुसलमान वहाँ से चल पड़ेंगे, हालाँकि यह बात ग़लत होगी और जब वह शाम पहुँच जाएँगे तो मसीह दज्जाल निकलेगा, इस अस्ना में कि वह उससे लड़ने की तैयारी कर रहे होंगे, सफ़बन्दी कर लेंगे कि नमाज़ खड़ी हो जाएगी, चुनाँचे हज़रत ईसा बिन मरियम (अ.) उतरेंगे और उनकी इमामत कराएँगे, तो जब उनको (ईसा को) अल्लाह का दुश्मन (दज्जाल) देख लेगा तो घुलने लगेगा, जिस तरह नमक पानी में घुल जाता है, चुनाँचे ईसा (अ.) उसको छोड़ दें तो वह घुलकर हलाक हो जाए, लेकिन अल्लाह उसको हज़रत ईसा (अ.) के हाथ से क़त्ल करवाएगा, तो वह लोगों को अपने नेज़े में उसका ख़ून दिखाएँगे।'

मुफ़रदातुल हदीस : ख़ल्लू बैनना व बैनल्लज़ीना सबौ मिन्ना : रूमी ईसाई मुसलमानों में फूट डालकर अपना काम निकालने के लिए कहेंगे कि हमें उन लोगों से लड़ने दो, जिन्होंने हमारे लोगों को क़ैदी बनाया, दूसरे लोगों से हमारी कोई लड़ाई नहीं है, इस तरह धोखादेही और फ़रेब से काम निकालना चाहेंगे, लेकिन मुसलमान उनके फ़रेब में नहीं आएँगे, लेकिन बदक़िस्मती आजकल ईसाइयों का यह हरबा कारगर है, वह मुसलमानों में तफ़रीक़ और फूट डालकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, और जैश मिनल मदीना के बारे में दो क़ौल हैं (1) इससे मुराद, मदीनतुन्नबी(ﷺ) है। (2) इससे मुराद शाम का शहर दमिश्क़ या हल्ब है, आमाक़ और दाबिक़, हल्ब के क़रीब वाक़ेअ हैं।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि उसके बाद मसीह दज्जाल और फिर ईसा (अ.) का ज़ुहूर होगा और दज्जाल हज़रत ईसा (अ.) के हाथों अपने अंजाम को पहुँचेगा, इसलिए उसको घुलने नहीं देगा, अगरचे वह घुलना शुरू हो जाएगा।

बाब 10 : क़ियामे क़ियामत के वक़्त रूम यानी ईसाईयों की अक्सरियत होगी

(10) بَابُ : تَقُومُ السَّاعَةُ وَالرُّومُ أَكْثَرُ النَّاسِ

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي اللَّيْثُ، بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ عُلَىٍّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ الْمُسْتَوْرِدُ الْقُرَشِيُّ عِنْدَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " تَقُومُ السَّاعَةُ وَالرُّومُ أَكْثَرُ النَّاسِ " . فَقَالَ لَهُ عَمْرٌو أَبْصِرْ مَا تَقُولُ . قَالَ أَقُولُ مَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ لَئِنْ قُلْتَ ذَلِكَ إِنَّ فِيهِمْ لَخِصَالاً أَرْبَعًا إِنَّهُمْ لأَحْلَمُ النَّاسِ عِنْدَ فِتْنَةٍ وَأَسْرَعُهُمْ إِفَاقَةً بَعْدَ مُصِيبَةٍ وَأَوْشَكُهُمْ كَرَّةً بَعْدَ فَرَّةٍ وَخَيْرُهُمْ لِمِسْكِينٍ وَيَتِيمٍ وَضَعِيفٍ وَخَامِسَةٌ حَسَنَةٌ جَمِيلَةٌ وَأَمْنَعُهُمْ مِنْ ظُلْمِ الْمُلُوكِ .

(7279) हजरत मुस्तौरिद क़ुरशी (रज़ि.) ने हज़रत अम्र बिन आस़ (रज़ि.) के सामने बयान किया, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'क़ियामत क़ायम होगी, जबकि रूमी (ईसाई) सब लोगों से ज़्यादा होंगे।' तो हज़रत अम्र (रज़ि.) ने उनसे कहा, सोच लो, क्या कह रहे हो, उन्होंने कहा, वही कहता हूँ, जो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना है, हज़रत अम्र (रज़ि.) ने कहा, अगर तुम यह कहते हो तो उस (कसरत) का सबब यह है कि उनमें चार ख़ूबियाँ हैं, वह मुसीबत व आज़माइश के वक़्त सब लोगों से बुर्दबार हैं और सबसे ज़्यादा जल्द आज़माइश से होश में आते हैं और सबसे जल्द शिकस्त के बाद हमला करते हैं (बददिल होकर और हौसला हारकर बैठ नहीं जाते) और मिस्कीन, यतीम और कमज़ोर के हक़ में सबसे बेहतर हैं और उनमें एक पाँचवीं सिफ़त है, जो इंतिहाई अच्छी और ख़ूब है और सबसे ज़्यादा बादशाहों के ज़ुल्म से बचाने वाले हैं या सबसे ज़्यादा बादशाहों को हुक्म से रोकने वाले हैं।

फ़ायदा : इस हदीस में हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि.) ने उन ख़साइल और ख़ूबियों को बयान किया, जिनकी बिना पर कोई क़ौम तरक़्क़ी और उरूज हासिल करती है, और उनको अक्सरियत हासिल हो जाती है और यह वह ख़ूबियाँ हैं जो मुसलमानों में होनी चाहिए, लेकिन बद क़िस्मती से मुसलमान उनसे महरूम हो रहे हैं, इसलिए इंहितात व ज़वाल का शिकार हैं और ईसाई बढ़ रहे हैं।

(7280) हजरत मुस्तौरिद क़ुरशी (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'क़ियामत क़ायम होगी, जबकि रूमियों की अकसरियत होगी।' यह हदीस हजरत अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) तक पहुँची तो उन्होंने हज़रत मुस्तौरिद (रज़ि.) से कहा, यह कैसी अहादीस हैं, जो तेरे वास्ते से रसूलुल्लाह(ﷺ) से बयान की जा रही हैं? तो हजरत मुस्तौरिद (रज़ि.) ने कहा, मैं वही बात बयान करता हूँ, जो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी है, तो हजरत अ़म्र (रज़ि.) ने कहा, अगर तुम यह बात कहते हो तो उसकी वजह यह है कि वह फ़ित्ना व आज़माइश के वक़्त सब लोगों से ज़्यादा बुर्दबार हैं, सबसे ज़्यादा मुसीबत का तदारुक और इज़ाला करने वाले हैं और अपने मिस्कीनों और कमज़ोरों के हक़ में सब लोगों से बेहतर हैं।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي أَبُو شُرَيْحٍ، أَنَّ عَبْدَ الْكَرِيمِ بْنَ الْحَارِثِ، حَدَّثَهُ أَنَّ الْمُسْتَوْرِدَ الْقُرَشِيَّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " تَقُومُ السَّاعَةُ وَالرُّومُ أَكْثَرُ النَّاسِ " . قَالَ فَبَلَغَ ذَلِكَ عَمْرَو بْنَ الْعَاصِ فَقَالَ مَا هَذِهِ الأَحَادِيثُ الَّتِي تُذْكَرُ عَنْكَ أَنَّكَ تَقُولُهَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ لَهُ الْمُسْتَوْرِدُ قُلْتُ الَّذِي سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ فَقَالَ عَمْرٌو لَئِنْ قُلْتَ ذَلِكَ إِنَّهُمْ لأَحْلَمُ النَّاسِ عِنْدَ فِتْنَةٍ وَأَجْبَرُ النَّاسِ عِنْدَ مُصِيبَةٍ وَخَيْرُ النَّاسِ لِمَسَاكِينِهِمْ وَضُعَفَائِهِمْ .

बाब 11 : दज्जाल के खुरूज के वक़्त रूमियों का कसीर तादाद मक़्तूलों में बढ़ना

(11)
بَابُ : إِقْبَالِ الرُّومِ فِي كَثْرَةِ الْقَتْلِ عِنْدَ خُرُوجِ الدَّجَّالِ

(7281) युसैर बिन जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, कूफ़ा में सुर्ख़ आँधी उठी तो एक आदमी जिसकी आ़दत और तकिया कलाम था, ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द! क़ियामत आ गई तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) वह टेक लगाए हुए बैठे थे, बैठ गए और फ़र्माने लगे, क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी,

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ عُلَيَّةَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ حُجْرٍ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، الْعَدَوِيِّ عَنْ

يُسَيْرِ بْنِ جَابِرٍ، قَالَ هَاجَتْ رِيحٌ حَمْرَاءُ بِالْكُوفَةِ فَجَاءَ رَجُلٌ لَيْسَ لَهُ هِجِّيرَى إِلاَّ يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ جَاءَتِ السَّاعَةُ . قَالَ فَقَعَدَ وَكَانَ مُتَّكِئًا فَقَالَ إِنَّ السَّاعَةَ لاَ تَقُومُ حَتَّى لاَ يُقْسَمَ مِيرَاثٌ وَلاَ يُفْرَحَ بِغَنِيمَةٍ . ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ هَكَذَا - وَنَحَّاهَا نَحْوَ الشَّأْمِ -فَقَالَ عَدُوٌّ يَجْمَعُونَ لأَهْلِ الإِسْلاَمِ وَيَجْمَعُ لَهُمْ أَهْلُ الإِسْلاَمِ . قُلْتُ الرُّومَ تَعْنِي قَالَ نَعَمْ وَتَكُونُ عِنْدَ ذَاكُمُ الْقِتَالِ رَدَّةٌ شَدِيدَةٌ فَيَشْتَرِطُ الْمُسْلِمُونَ شُرْطَةً لِلْمَوْتِ لاَ تَرْجِعُ إِلاَّ غَالِبَةً فَيَقْتَتِلُونَ حَتَّى يَحْجُزَ بَيْنَهُمُ اللَّيْلُ فَيَفِيءُ هَؤُلاَءِ وَهَؤُلاَءِ كُلٌّ غَيْرُ غَالِبٍ وَتَفْنَى الشُّرْطَةُ ثُمَّ يَشْتَرِطُ الْمُسْلِمُونَ شُرْطَةً لِلْمَوْتِ لاَ تَرْجِعُ إِلاَّ غَالِبَةً فَيَقْتَتِلُونَ حَتَّى يَحْجُزَ بَيْنَهُمُ اللَّيْلُ فَيَفِيءُ هَؤُلاَءِ وَهَؤُلاَءِ كُلٌّ غَيْرُ غَالِبٍ وَتَفْنَى الشُّرْطَةُ ثُمَّ يَشْتَرِطُ الْمُسْلِمُونَ شُرْطَةً لِلْمَوْتِ لاَ تَرْجِعُ إِلاَّ غَالِبَةً فَيَقْتَتِلُونَ حَتَّى يُمْسُوا فَيَفِيءُ هَؤُلاَءِ وَهَؤُلاَءِ كُلٌّ غَيْرُ غَالِبٍ وَتَفْنَى الشُّرْطَةُ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الرَّابِعِ نَهَدَ إِلَيْهِمْ بَقِيَّةُ أَهْلِ الإِسْلاَمِ فَيَجْعَلُ اللَّهُ الدَّبْرَةَ عَلَيْهِمْ فَيَقْتُلُونَ مَقْتَلَةً - إِمَّا قَالَ لاَ يُرَى مِثْلُهَا وَإِمَّا

यहाँ तक कि न विरासत तक़्सीम होगी और न ग़नीमत मिलने पर ख़ुशी होगी, फिर हाथ से शाम की तरफ़ इशारा किया और कहा, मुसलमानों पर ह़मला करने के लिए दुश्मन जमा हो जाएँगे और अहले इस्लाम उनके मुक़ाबले के लिए इकट्ठे होंगे, मैंने पूछा, आपकी मुराद रूमी दुश्मन हैं? ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, हाँ! और उस लड़ाई के वक़्त इंतिहाई शदीद ह़मला होगा, या बहुत से लोग भाग खड़े होंगे, चुनाँचे मुसलमान एक डेथ ग्रूप (मौत का दस्ता) तैयार करेंगे जो ग़ालिब आए बग़ैर वापिस नहीं आएगा, चुनाँचे लड़ पड़ेंगे, यहाँ तक कि रात बीच में ह़ाइल हो जाएगी, दोनों लश्कर इस ह़ाल में लौटेंगे कि कोई भी ग़ल्बा ह़ासिल न कर सकेगा और अगला दस्ता (मौत का दस्ता) हलाक हो जाएगा, फिर मुसलमान मौत के लिए एक और दस्ता आगे करेंगे, जो ग़ालिब आए बग़ैर वापिस नहीं आएगा, चुनाँचे लड़ाई शुरू हो जाएगी, यहाँ तक कि उनके दरम्यान रात ह़ाइल हो जाएगी, चुनाँचे यह दोनों लश्कर ग़ल्बा ह़ासिल किये बग़ैर लौट आएँगे और अगला दस्ता ख़त्म हो जाएगा, मुसलमान फिर एक और दस्ता मौत के लिए आगे करेंगे, जो ग़ल्बा पाए बग़ैर लौट आएँगे और अगला दस्ता ख़त्म हो जाएगा, मुसलमान फिर एक और दस्ता मौत के लिए आगे करेंगे, जो ग़लबा पाए बग़ैर ज़िन्दा वापिस नहीं आएँगे, शाम तक लड़ाई जारी रहेगी और दोनों लश्कर ग़ल्बा ह़ासिल

قَالَ لَمْ يُرَ مِثْلُهَا - حَتَّى إِنَّ الطَّائِرَ لَيَمُرُّ بِجَنَبَاتِهِمْ فَمَا يُخَلِّفُهُمْ حَتَّى يَخِرَّ مَيْتًا فَيَتَعَادُّ بَنُو الأَبِ كَانُوا مِائَةً فَلاَ يَجِدُونَهُ بَقِيَ مِنْهُمْ إِلاَّ الرَّجُلُ الْوَاحِدُ فَبِأَىِّ غَنِيمَةٍ يُفْرَحُ أَوْ أَىُّ مِيرَاثٍ يُقَاسَمُ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ سَمِعُوا بِبَأْسٍ هُوَ أَكْبَرُ مِنْ ذَلِكَ فَجَاءَهُمُ الصَّرِيخُ إِنَّ الدَّجَّالَ قَدْ خَلَفَهُمْ فِي ذَرَارِيِّهِمْ فَيَرْفُضُونَ مَا فِي أَيْدِيهِمْ وَيُقْبِلُونَ فَيَبْعَثُونَ عَشَرَةَ فَوَارِسَ طَلِيعَةً ‏.‏ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ‏"‏ إِنِّي لأَعْرِفُ أَسْمَاءَهُمْ وَأَسْمَاءَ آبَائِهِمْ وَأَلْوَانَ خُيُولِهِمْ هُمْ خَيْرُ فَوَارِسَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ يَوْمَئِذٍ أَوْ مِنْ خَيْرِ فَوَارِسَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ يَوْمَئِذٍ ‏"‏ ‏.‏ قَالَ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ فِي رِوَايَتِهِ عَنْ أُسَيْرِ بْنِ جَابِرٍ ‏.‏

किये बग़ैर लौट आएँगे और अगला दस्ता हलाक हो जाएगा, चुनाँचे जब चौथा दिन होगा तो तमाम बच जाने वाले मुसलमान दुश्मन की तरफ़ बढ़ेंगे तो अल्लाह दुश्मन को शिकस्त दे देगा, चुनाँचे इस क़द्र शदीद जंग होगी, जिसकी मिसाल देखी न जा सकेगी, या जैसी देखी नहीं होगी, यहाँ तक कि परिन्दे उनके पहलूओं से गुज़रेंगे तो वह उनसे गुज़र नहीं सकेंगे, यहाँ तक कि मरकर गिर पड़ेंगे, यानी इतनी लम्बी मसाफ़त में मक़्तूल बिखरे पड़े होंगे कि परिन्दे भी उस मसाफ़त को तै नहीं कर सकेंगे (और लाशों की बदबू से मरकर गिर पड़ेंगे) और एक बाप की औलाद एक दूसरे को गिनेंगे, जो सौ (100) होंगे, चुनाँचे उनमें से एक आदमी ही बच सकेगा तो फिर किस ग़नीमत पर ख़ुशी होगी? या कौनसी विरासत तक़्सीम होगी? वह उस हालत में होंगे कि वह उससे बड़ी मुसीबत के बारे में सुन लेंगे, उन तक एक चीख़ पहुँचेगी कि उनके पीछे उनकी औलाद में दज्जाल आ चुका है तो वह जो कुछ उनके पास होगा, उसको छोड़ देंगे और उसकी तरफ़ बढ़ेंगे और हर पहले दस्ते के तौर पर दस घुड़सवार भेजेंगे, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैं उनके नाम, उनके वालिदों के नाम और उनके घोड़ों के रंग जानता हूँ, वह उस वक़्त रूए ज़मीन के बेहतरीन घुड़सवार होंगे, या उस वक़्त के रूए ज़मीन के बेहतरीन घुड़सवारों में से होंगे।' इब्ने अबी शैबा की रिवायत में युसैर की बजाए उसैर बिन जाबिर है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) **हिज्जीरा** : आदत, तकिया कलाम (2) **ला युक़्समु** : मीरास। (3) **वला युफ़्रहु बि ग़नीमतिन** : इस क़द्र शदीद जंग होगी कि उसमें उस कसरत से लोग मरेंगे कि कोई वारिस बाक़ी नहीं बचेगा और मक़्तूलों की कसरत की बिना पर कोई ग़नीमत और फ़तह पर ख़ुश नहीं हो सकेगा, ग़म व हुज़्न का दौर दौरा होगा। (4) **रद्दतुन शदीदा** : शदीद हमला भागकर पलटना। (5) **शुर्ततुन लिल्मौति** : डेथ ग्रूप, आगे बढ़ने वाला, वह दस्ता जो ग़ल्बा हासिल किये बग़ैर ज़िन्दा वापिस नहीं आएगा। (6) **नहद इलैहिम** : उनकी तरफ़ बढ़ेंगे। (7) **दब्रा** : हजीमत व शिकस्त। (8) **जनबात** : पहलू, अत्राफ़। (9) **यतआदुन** : शुमार करेंगे, गिनेंगे। (10) **बअस**, फ़ित्ना, मुसीबत। (11) **यर्फ़ुज़ूना मा फ़ी अयदीहिम** : हाथों में जो माले ग़नीमत होगा, अहलो अयाल के बारे में परेशान होकर फेंक देंगे। (12) **फ़वारिस** : फ़ारिस की जमा, घुड़सवार। (13) **तलीआ** : हालात का जायज़ा लेने के लिए आगे जाने वाला दस्ता।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْغُبَرِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ، هِلاَلٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ يُسَيْرِ بْنِ جَابِرٍ، قَالَ كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ مَسْعُودٍ فَهَبَّتْ رِيحٌ حَمْرَاءُ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِنَحْوِهِ . وَحَدِيثُ ابْنِ عُلَيَّةَ أَتَمُّ وَأَشْبَعُ

(7282) हजरत युसैर बिन जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैं हजरत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के पास था कि लाल आँधी चली, आगे ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी बयान की, लेकिन इब्ने उलय्या की ऊपर वाली रिवायत ज़्यादा कामिल और सियर हासिल है।

तख़रीज 7282 : इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - يَعْنِي ابْنَ الْمُغِيرَةِ - حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، -يَعْنِي ابْنَ هِلاَلٍ - عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أُسَيْرِ بْنِ جَابِرٍ، قَالَ كُنْتُ فِي بَيْتِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ وَالْبَيْتُ مَلآنُ - قَالَ - فَهَاجَتْ رِيحٌ حَمْرَاءُ بِالْكُوفَةِ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ ابْنِ عُلَيَّةَ .

(7283) हजरत उसैर बिन जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैं हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के घर पर था और घर भरा हुआ था कि कूफ़ा में सुर्ख़ आँधी चली, आगे हदीस नम्बर 37 की तरह (हम मआनी) रिवायत बयान की।

बाब 12 : दज्जाल के ज़ुहूर से पहले मुसलमानों को फ़ुतूहात हासिल होंगी

(12) بَابُ : مَايَكُونُ مِنْ فُتُوحَاتِ الْمُسْلِمِينَ قَبْلَ الدَّجَّالِ

(7284) हजरत नाफ़ेअ बिन उत्बा (रज़ि.) बयान करते हैं, हम एक ग़ज़्वा में रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ थे, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास मग़रिब की तरफ़ से एक क़ौम आई, जिनके कपड़े ऊनी थे, उन्होंने आपको एक टीला के पास पाया, चुनाँचे वह खड़े हुए थे और रसूलुल्लाह(ﷺ) बैठे हुए थे, मेरे जी में आया, उनके पास जाकर उनके और आपके बीच खड़ा हो जाऊँ, वह धोखे से आप पर हमला न कर दें, फिर मैंने सोचा, शायद आप उनसे सरगोशी फ़र्मा रहे हों (राज़ की बात कर रहे हों) चुनाँचे मैं उनके पास आकर उनके और आपके बीच खड़ा हो गया, तो मैंने आपसे चार बोल याद किये, जिन्हें मैं उँगलियों पर गिन रहा था, आपने फ़र्माया, 'तुम जज़ीरतुल अरब में जिहाद करोगे और अल्लाह तुम्हें उस पर फ़तह इनायत करेगा, फिर फ़ारिस से जिहाद करोगे, तो अल्लाह तआला उस पर फ़तह देगा, फिर रूम का रुख़ करोगे तो अल्लाह उस पर फ़तह देगा, फिर दज्जाल से जंग करोगे, तो अल्लाह उस पर फ़तह अता करेगा।' हजरत नाफ़ेअ (रज़ि.) ने कहा, ऐ जाबिर! रूम की फ़तह से पहले हमारे ख़याल में दज्जाल नहीं निकलेगा।

सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4091.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ عُتْبَةَ، قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزْوَةٍ - قَالَ - فَأَتَى النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَوْمٌ مِنْ قِبَلِ الْمَغْرِبِ عَلَيْهِمْ ثِيَابُ الصُّوفِ فَوَافَقُوهُ عِنْدَ أَكَمَةٍ فَإِنَّهُمْ لَقِيَامٌ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَاعِدٌ - قَالَ - فَقَالَتْ لِي نَفْسِي ائْتِهِمْ فَقُمْ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَهُ لاَ يَغْتَالُونَهُ - قَالَ - ثُمَّ قُلْتُ لَعَلَّهُ نَجِيٌّ مَعَهُمْ . فَأَتَيْتُهُمْ فَقُمْتُ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَهُ - قَالَ - فَحَفِظْتُ مِنْهُ أَرْبَعَ كَلِمَاتٍ أَعُدُّهُنَّ فِي يَدِي قَالَ " تَغْزُونَ جَزِيرَةَ الْعَرَبِ فَيَفْتَحُهَا اللَّهُ ثُمَّ فَارِسَ فَيَفْتَحُهَا اللَّهُ ثُمَّ تَغْزُونَ الرُّومَ فَيَفْتَحُهَا اللَّهُ ثُمَّ تَغْزُونَ الدَّجَّالَ فَيَفْتَحُهُ اللَّهُ " . قَالَ فَقَالَ نَافِعٌ يَا جَابِرُ لاَ نَرَى الدَّجَّالَ يَخْرُجُ حَتَّى تُفْتَحَ الرُّومُ .

मुफ़रदातुल हदीस : (1) ला यग़्तालूनहू : वह बेख़बरी में, अचानक धोखे से आपको क़त्ल करने की कोशिश न करें। (2) लअ़ल्लहु नजिय्युन मअ़हुम : शायद आप उनसे राज़दाराना बात कर रहे हों, लेकिन फिर वह ख़तरा के पेशे नज़र बीच में आ खड़े हुए कि अगर राज़ की बात होगी तो आप मुझे वहाँ से हटा देंगे।

फ़ायदा : क़त्ले दज्जाल के सिवा, बाक़ी पेशीनगोइयाँ पूरी हो चुकी हैं।

बाब 13 : क़ियामत से पहले वाक़ेअ होने वाली निशानियाँ

(13) بَابُ : فِيْ الْآيَاتِ الَّتِيْ تَكُوْنُ قَبْلَ السَّاعَةِ

(7285) हजरत हुज़ैफ़ा बिन असीद ग़िफ़ारी (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) हमारे पास पहुँचे, जबकि हम बाहमी मुज़ाकरा (बातचीत) कर रहे थे, चुनाँचे आपने फ़र्माया, 'क्या बातचीत कर रहे हो?' उन्होंने कहा, हम क़ियामत का तज़्किरा कर रहे थे, चुनाँचे आपने फ़र्माया, 'क़ियामत उस वक़्त तक हर्गिज़ क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि तुम उससे पहले दस निशानियाँ देख लो।' तो आपने बताया, धुआँ, दज्जाल, जानवर, सूरज का मग़्रिब से तुलूअ होना, ईसा इब्ने मरियम (अ.) का नुज़ूल, याजूज माजूज, तीन ख़स्फ़ यानी ज़मीन में धंसना, एक ख़स्फ़ मश्रिक़ (पूरब) में, एक ख़स्फ़ मग़्रिब (पश्चिम) में और एक ख़स्फ़ जज़ीरा अ़रब में और आख़िरी निशानी आग होगी जो यमन से निकलेगी और लोगों को उनके महशर (जमा होने की जगह की तरफ़ हाँकेगी।)

حَدَّثَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَابْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ -وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ فُرَاتٍ، الْقَزَّازِ عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ أَسِيدٍ الْغِفَارِيِّ، قَالَ اطَّلَعَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَلَيْنَا وَنَحْنُ نَتَذَاكَرُ فَقَالَ " مَا تَذَاكَرُونَ " . قَالُوا نَذْكُرُ السَّاعَةَ . قَالَ " إِنَّهَا لَنْ تَقُومَ حَتَّى تَرَوْنَ قَبْلَهَا عَشْرَ آيَاتٍ " . فَذَكَرَ الدُّخَانَ وَالدَّجَّالَ وَالدَّابَّةَ وَطُلُوعَ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَنُزُولَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ صلى الله عليه وسلم وَيَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ وَثَلاَثَةَ خُسُوفٍ خَسْفٌ بِالْمَشْرِقِ وَخَسْفٌ

بِالْمَغْرِبِ وَخَسْفٌ بِجَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَآخِرُ ذَلِكَ نَارٌ تَخْرُجُ مِنَ الْيَمَنِ تَطْرُدُ النَّاسَ إِلَى مَحْشَرِهِمْ .

तख़रीज 7285 : सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम : 4311; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 1283; और हदीस 2183 ब; और हदीस 2183 जीम; और हदीस 2183 वाव; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4041; किताबुल आयात : 4055.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अदुख़ान : वह धुआँ जिससे मोमिनों को ज़ुकाम होगा और काफ़िरों के लिए तबाही का बाइस होगा। (2) दाब्बा : वह जानवर जो ज़मीन से निकलेगा और लोगों से बातचीत करेगा। क़ुरआन मजीद में (अख़्रज्ना लहुम दाब्बतुम् मिनल अर्ज़ि तुकल्लिमुहुम) (नम्ल आयत 82) हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे जो उनसे बातचीत करेगा।

फ़ायदा : इस हदीस मे निशानियों का ज़िक्र वक़ूई तर्तीब के मुताबिक़ नहीं है, इसलिए नुज़ूले ईसा और याजूज माजूज से पहले मग़्रिब से सूरज का निकलना ज़िक्र है ह्लाँकि सूरज का पश्चिम से उगना क़ियामत के क़ायम होने की अलामत है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ فُرَاتٍ الْقَزَّازِ، عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، عَنْ أَبِي سَرِيحَةَ، حُذَيْفَةَ بْنِ أَسِيدٍ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فِي غُرْفَةٍ وَنَحْنُ أَسْفَلَ مِنْهُ فَاطَّلَعَ إِلَيْنَا فَقَالَ " مَا تَذْكُرُونَ " . قُلْنَا السَّاعَةَ . قَالَ " إِنَّ السَّاعَةَ لاَ تَكُونُ حَتَّى تَكُونَ عَشْرُ آيَاتٍ خَسْفٌ بِالْمَشْرِقِ وَخَسْفٌ بِالْمَغْرِبِ وَخَسْفٌ فِي جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَالدُّخَانُ وَالدَّجَّالُ وَدَابَّةُ الأَرْضِ وَيَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَطُلُوعُ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَنَارٌ تَخْرُجُ مِنْ قُعْرَةِ عَدَنٍ تَرْحَلُ النَّاسَ " .

(7286) हजरत हुज़ैफ़ा बिन असीद (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) बालाख़ाने में थे और हम आपसे नीचे थे, आपने हमारी तरफ़ झाँककर फ़र्माया, 'तुम किस चीज़ का तज़्किरा कर रहे हो?' हमने कहा, क़ियामत का, आपने फ़र्माया, 'क़ियामत दस निशानियों के ज़ुहूर से पहले नहीं होगी, एक ख़स्फ़ मश्रिक़ में, एक ख़स्फ़ मग़्रिब में और एक खस्फ़ जज़ीर-ए- अरब में, धुआँ, दज्जाल, ज़मीन से निकलने वाला जानवर, याजूज माजूज, सूरज का मग़्रिब से तुलूअ होना, आग जो अदन के आख़िर से निकलेगी और लोगों को कूच पर मजबूर कर देगी।' शोबा यह रिवायत एक दूसरे उस्ताद से

قَالَ شُعْبَةُ وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ رُفَيْعٍ عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ عَنْ أَبِي سَرِيحَةَ . مِثْلَ ذَلِكَ لاَ يَذْكُرُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَقَالَ أَحَدُهُمَا فِي الْعَاشِرَةِ نُزُولُ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ صلى الله عليه وسلم . وَقَالَ الآخَرُ وَرِيحٌ تُلْقِي النَّاسَ فِي الْبَحْرِ .

करते हैं, जो नबी अकरम(ﷺ) का ज़िक्र नहीं करते और दसवीं निशानी एक उस्ताद ने ईसा बिन मरियम (अ़.) का नुज़ूल बताया और दूसरे ने हवा जो लोगों को समुन्द्र में फेंक देगी।

तख़रीज 7286 : इसकी तख़रीज ह़दीस 7214 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ فُرَاتٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الطُّفَيْلِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَرِيحَةَ، قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غُرْفَةٍ وَنَحْنُ تَحْتَهَا نَتَحَدَّثُ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمِثْلِهِ . قَالَ شُعْبَةُ وَأَحْسِبُهُ قَالَ تَنْزِلُ مَعَهُمْ إِذَا نَزَلُوا وَتَقِيلُ مَعَهُمْ حَيْثُ قَالُوا . قَالَ شُعْبَةُ وَحَدَّثَنِي رَجُلٌ هَذَا الْحَدِيثَ عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ عَنْ أَبِي سَرِيحَةَ وَلَمْ يَرْفَعْهُ قَالَ أَحَدُ هَذَيْنِ الرَّجُلَيْنِ نُزُولُ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَقَالَ الآخَرُ رِيحٌ تُلْقِيهِمْ فِي الْبَحْرِ .

(7287) हजरत अबू सरीहा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) एक बालाख़ाना में थे और हम उसके नीचे बाहमी बातचीत कर रहे थे, आगे ऊपर वाली हदीस है। शोबा कहते हैं, मेरा ख़याल है, आग उनके साथ पड़ाव करेगी, जब वह पड़ाव करेंगे और उनके साथ कैलूला करेगी जहाँ वह क़ैलूला करेंगे, शोबा कहते हैं, यह हदीस मुझे एक और आदमी ने भी सुनाई लेकिन उसने उसको मरफ़ूअ़ बयान नहीं किया और उन दोनों आदमियों में से एक ने ईसा बिन मरियम (अ़.) के नुज़ूल का तज़्किरा किया और दूसरे ने कहा, हवा होगी जो लोगों को समुन्द्र में डाल देगी।

इसकी तख़रीज हदीस 7214 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ الْحَكَمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْعِجْلِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ فُرَاتٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الطُّفَيْلِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَرِيحَةَ، قَالَ كُنَّا نَتَحَدَّثُ فَأَشْرَفَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(7288) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद की सनद से अबू सरीहा (रज़ि.) से बयान करते हैं कि हम आपस में बातचीत कर रहे थे, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हम पर झाँका और ऊपर वाली हदीस बयान की।

بِنَحْوِ حَدِيثِ مُعَاذٍ وَابْنِ جَعْفَرٍ . وَقَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ الْحَكَمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ، الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ، عَنْ أَبِي سَرِيحَةَ، بِنَحْوِهِ قَالَ وَالْعَاشِرَةُ نُزُولُ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ . قَالَ شُعْبَةُ وَلَمْ يَرْفَعْهُ عَبْدُ الْعَزِيزِ .

शोबा, अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रुफ़ैअ के वास्ते से ऊपर वाली ह़दीस के हम मआनी रिवायत करते हैं, लेकिन यह मरफ़ूअ नहीं है और दसवीं निशानी, ईसा बिन मरियम (अ़.) का नुज़ूल है।

इसकी तख़रीज हदीस 7214 में गुज़र चुकी है।

(14) بَابُ : لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَخْرُجَ نَارٌ مِّنْ أَرْضِ الْحِجَازِ

बाब 14 : जब तक ह़िजाज़ की सरज़मीन से आग न निकले, क़ियामत क़ायम नहीं होगी

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ اللَّيْثِ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ جَدِّي، حَدَّثَنِي عُقَيْلُ بْنُ، خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّهُ قَالَ قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَخْرُجَ نَارٌ مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ تُضِيءُ أَعْنَاقَ الإِبِلِ بِبُصْرَى "

(7289) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम नहीं होगी, जब तक सरज़मीने ह़िजाज़ से ऐसी आग न निकले, जिससे बस़रा के ऊँटों की गर्दनें चमक उठेंगी।'

फ़ायदा : बस़रा शाम का एक मारूफ़ शहर है, तीन जमादिल आख़िर 654 हिज्री बरोज़ मंगल सुबह की नमाज़ के बाद मदीना मुनव्वरा से बहुत बड़ी आग ज़ाहिर हुई थी, जिसकी रोशनी से बस़रा के ऊँटों

की गर्दनें रोशन हो गई थीं। (तफ़्सील के लिए देखिए अल्बिदाया वन्निहाया जिल्द 3 पेज 187 देखिए तक्लिमा जिल्द 6 पेज 310 से 312 अल मुन्इम 4 पेज 356)

बाब 15 : क़ियामत से पहले मदीना की रिहाइश और आबादी

(15) بَابُ : فِيْ سُكْنَى الْمَدِيْنَةِ وَعِمَارَتِهَا قَبْلَ السَّاعَةِ

حَدَّثَنِي عَمْرُو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي، صَالِحٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَبْلُغُ الْمَسَاكِنُ إِهَابَ أَوْ يَهَابَ " . قَالَ زُهَيْرٌ قُلْتُ لِسُهَيْلٍ فَكَمْ ذَلِكَ مِنَ الْمَدِينَةِ قَالَ كَذَا وَكَذَا مِيلاً .

(7290) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मकानात इहाब या यहाब जगह तक पहुँच जाएँगे (यानी मदीना की आबादी बहुत बढ़ जाएगी और उसके मकानात बहुत दूर तक पहुँच जाएँगे। ज़ुहैर कहते हैं मैंने सुहैल (रह.) से पूछा, यह मदीना किस क़द्र फ़ासले पर है? उन्होंने कहा, इतने इतने मील दूर है (मीलों की तहदीद नहीं मिल सकी) और बक़ौल अ़ल्लामा स़फ़ीउर्रहमान रह. यह ग़रबी हर्रा की तरफ़ वादी अ़क़ीक़ से एक मील की दूरी पर है लेकिन आजकल मकानात उससे बहुत आगे जा चुके हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَيْسَتِ السَّنَةُ بِأَنْ لاَ تُمْطَرُوا وَلَكِنِ السَّنَةُ أَنْ تُمْطَرُوا وَتُمْطَرُوا وَلاَ تُنْبِتُ الأَرْضُ شَيْئًا " .

(7291) हजरत अबू हुरैरा रज़ि .) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'ख़ुश्कसाली यह नहीं है कि बारिश न बरसे, लेकिन क़हत़ यह है कि मुसलसल बारिशें होती रहें और ज़मीन से कोई पेदावार ह़ासिल न हो सके।' यानी ज़मीन कोई चीज़ न उगाए।'

फ़ायदा : आम तौर पर खुश्क साली की सूरत यही होती है कि बारिश नहीं होती और ज़मीन सैराब नहीं होती, इसलिए वह कोई चीज़ नहीं उगाती, लेकिन क़ियामत के क़रीब कहत की शक्ल यह होगी कि बारिश ख़ूब ख़ूब बरसेगी, जिससे ज़मीन को काश्त नहीं किया जा सकेगा और जो कुछ होगा, वह बारिश की कसरत से गल सड़ जाएगा।

(16) بَابُ : الْفِتْنَةِ مِنَ الْمَشْرِقِ مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ

बाब 16 : फ़ित्ने मश्रिक़ की तरफ़ से उठेंगे, जहाँ से शैतान के सींग तुलूअ होते हैं

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رُمْحٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ مُسْتَقْبِلُ الْمَشْرِقِ يَقُولُ " أَلاَ إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا أَلاَ إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ " .

(7292) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से यह सुना, जबकि आपका रुख़ (मदीना से) मश्रिक़ की तरफ़ था, 'ख़बरदार! यक़ीनन फ़ित्ने की सरज़मीन इधर है, ख़बरदार! फ़ित्ना इधर है, जहाँ से शैतान का सींग तुलूअ होता है।
सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन : 793.

फ़ायदा : मदीना से मश्रिक़ में इराक़ वाक़ेअ है और इस्लाम के शुरु इतिहास में तमाम बिदअती फ़िर्क़ों का ज़ुहूर इस सरज़मीन से हुआ है और उम्मत में यह फ़िर्क़े इख़्तिलाफ़ व इंतिशार का बाइस बने हैं, और नजद बुलंद इलाक़े को कहते हैं, इसलिए अल्लामा ख़त्ताबी ने लिखा है, 'मन काना बिल मदीनति काना नजदहू बादियतुल इराक़ व नवाहीहा वहिय मश्रिक़ अहलुल मद्‌यन (तक्मिला जिल्द 6 पेज 315) मदीना में रहने वाले का नजद, इराक़ का सहरा और उसके अतराफ़ हैं और यही अहले मदीना का मश्रिक़ है, इसलिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के बेटे हजरत सालिम (रह.) ने इसका मिस्दाक़ अहले इराक़ को ठहराया जैसकि आगे आ रहा है। (तफ़्सील के लिए देखिए मिन्नतुल मुन्इम जिल्द 4 पेज 357; यह तफ़्सील क़ाबिले दीद है।)

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، ح وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ، سَعِيدٍ

(7293) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हज़रत हफ़्सा (रज़ि .) के दरवाज़े पर खड़े हुए और अपने

كُلُّهُمْ عَنْ يَحْيَى الْقَطَّانِ، قَالَ الْقَوَارِيرِيُّ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ، عُمَرَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَامَ عِنْدَ بَابِ حَفْصَةَ فَقَالَ بِيَدِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ " الْفِتْنَةُ هَا هُنَا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ " . قَالَهَا مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا . وَقَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ فِي رِوَايَتِهِ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عِنْدَ بَابِ عَائِشَةَ .

हाथ से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया, 'फ़ित्ना उधर है, जहाँ से शैतान का सींग तुलूअ होता है।' यह बात आपने दो या तीन बार फ़र्माई और अब्दुल्लाह बिन सईद की रिवायत में है, रसूलुल्लाह(ﷺ) आइशा (रज़ि.) के दरवाज़े पर खड़े हुए (दोनों घरों की जहत (दिशा) एक ही है)।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ وَهُوَ مُسْتَقْبِلُ الْمَشْرِقِ " هَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا هَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا هَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ "

(7294) हजरत सालिम बिन अब्दुल्लाह (रह) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मश्रिक़ की तरफ़ चेहरा करके फ़र्माया, 'ख़बरदार! फ़ित्ना उधर है, ख़बरदार! फ़ित्ना उधर है, ख़बरदार! फ़ित्ना उधर है, जहाँ से शैतान का सींग तुलूअ होता है।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ عِكْرِمَةَ بْنِ عَمَّارٍ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ بَيْتِ عَائِشَةَ فَقَالَ " رَأْسُ الْكُفْرِ مِنْ هَا هُنَا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ " . يَعْنِي الْمَشْرِقَ .

(7295) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) हजरत आइशा (रज़ि.) के घर से निकले और फ़र्माया, 'कुफ़्र की चोटी उधर है, जहाँ से शैतान का सींग नमूदार होता है।' यानी मश्रिक़ से।

وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، - يَعْنِي ابْنَ سُلَيْمَانَ - أَخْبَرَنَا حَنْظَلَةُ، قَالَ سَمِعْتُ سَالِمًا، يَقُولُ سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُشِيرُ بِيَدِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ وَيَقُولُ " هَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا هَا إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا " . ثَلاَثًا " حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ " .

(7296) हजरत इब्ने ड़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना, आप अपने हाथ से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा करते हुए फ़र्मा रहे थे, 'ख़बरदार! फ़ित्ना उधर है, ख़बरदार! फ़ित्ना उधर है, ख़बरदार! फ़ित्ना उधर है।' तीन बार फ़र्माया, 'जहाँ से शैतान के दो सींग नमूदार होते हैं।'

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ أَبَانَ، وَوَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، وَأَحْمَدُ بْنُ عُمَرَ الْوَكِيعِيُّ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبَانَ - قَالُوا حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، بْنِ عُمَرَ يَقُولُ يَا أَهْلَ الْعِرَاقِ مَا أَسْأَلَكُمْ عَنِ الصَّغِيرَةِ وَأَرْكَبَكُمْ لِلْكَبِيرَةِ سَمِعْتُ أَبِي عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ الْفِتْنَةَ تَجِيءُ مِنْ هَا هُنَا " . وَأَوْمَأَ بِيَدِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ " مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ " . وَأَنْتُمْ يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ وَإِنَّمَا قَتَلَ مُوسَى الَّذِي قَتَلَ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ خَطَأً فَقَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لَهُ { وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا} قَالَ أَحْمَدُ بْنُ عُمَرَ فِي رِوَايَتِهِ عَنْ سَالِمٍ لَمْ يَقُلْ سَمِعْتُ .

(7297) फ़ुज़ैल (रह.) बयान करते हैं, मैंने सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र को यह फ़र्माते हुए सुना, ऐ अहले इराक़! (तुम किस क़द्र ज़ीरा छानते हो और ऊँट निगलते हो) तुम छोटे गुनाहों को कुरेदते हो और बड़े गुनाहों का इर्तिकाब करते हो, मैंने अपने वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) को यह कहते सुना, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'फ़ित्ना उधर से आएगा।' और आपने अपने हाथ से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा किया, 'जहाँ से शैतान के दो सींग तुलूअ होते हैं।' और तुम एक दूसरे की गर्दनें उड़ाते हो और मूसा (अ़.) ने तो बस, एक फ़िरऔनी को चूक कर क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला ने उनको मुख़ातब करके फ़र्माया, 'और तूने एक नफ़्स को क़त्ल किया तो हमने तुझे उस ग़म से नजात दी और हमने तुझे मुख़्तलिफ़ (तरह-तरह की) आज़माइशों से गुज़ारा।' (ताहा, आ. 40) अह़मद बिन ड़मर की रिवायत में सालिम ने समिअ़्तु नहीं कहा।

फ़ायदा : मूसा(अ.) ने सिर्फ़ एक क़िब्ती को ग़लती से ग़ैर शऊरी तौर पर, बिला अम्द (बग़ैर इरादे के) क़त्ल किया था, लेकिन उस पर ग़म व हुज़्न में मुब्तला हो गए और तमाम मुसलमानों को शऊरी और इरादी तौर पर क़त्ल करते हुए आर महसूस नहीं करते, छोटे छोटे मसाइल के बारे में बहुत छान बीन करते हो जिससे मालूम होता है कि तुम बहुत मुत्तक़ी और परहेज़गार हो, लेकिन मुसलमानों में तफ़र्का पैदा करना, फ़ित्ने भड़काना, अइम्मा के ख़िलाफ़ प्रोपेगण्डा करना और बग़ावत करना तुम्हारा मअमूल है, इसी तरह हज़रत सालिम (रज़ि.) ने मश्रिक़ का मिस्दाक़ अहले इराक़ को क़रार दिया है।' अहले इराक़ ने मच्छर के खून के बारे में सवाल किया था, जबकि वह हुसैन (रज़ि.) को शहीद कर चुके थे, इससे भी साबित हुआ कि इस हदीस का मिस्दाक़ अहले इराक़ हैं न कि मुक़र्ररकर्दा नजद जिनको अहनाफ़ उसका मिस्दाक़ बनाने के लिए ज़ोर लगाते हैं।

बाब 17 : क़ियामत कायम नहीं होगी यहाँ तक कि दौस क़बीला के लोग ज़ुल्ख़लसा बुत की बन्दगी करने लगेंगे

(17)
بَابُ : لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتَّى تَعْبُدَ دَوْسٌ ذَا الْخَلَصَةِ

(7298) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब तक दौस क़बीला की औरतों के सुरीन ज़ुल्ख़लसा के पास (तवाफ़ करने में) हरकत करने नहीं लगेंगी, क़ियामत क़ायम नहीं होगी।' ज़ुल्ख़लसा तबाला मक़ाम में बुत था, जिसकी जाहिलियत के दौर में बन्दगी करते थे।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ" لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْطَرِبَ أَلَيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ حَوْلَ ذِي الْخَلَصَةِ " . وَكَانَتْ صَنَمًا تَعْبُدُهَا دَوْسٌ فِي الْجَاهِلِيَّةِ بِتَبَالَةَ .

फ़ायदा : क़ियामत उन लोगों पर क़ायम होगी, जो बदतरीन मख़्लूक़ होंगे, जो शर्र में अहले जाहिलियत से भी बढ़कर होंगे, इसलिए उस वक़्त बुतों की इबादत भी शुरू हो चुकी होगी और अहले ईमान उस वक़्त फ़ौत हो चुके होंगे जैसाकि अगली रिवायत में आ रहा है।

(7299) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'शब व रोज़ उस वक़्त तक ख़त्म नहीं होंगे, जब तक लात और उज़्ज़ा की बन्दगी शुरू नहीं हो जाएगी।' तो मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! जब अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल कर दी, 'अल्लाह ही वह ज़ात है, जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने ह़क़ देकर भेजा, ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, अगरचे मुश्रिकों को यह चीज़ नागवार गुज़रे।' तो मैंने ख़्याल कर लिया है, यह वादा मुकम्मल है (इस्लाम के सिवा अब कोई दीन ग़ालिब नहीं होगा।' आपने फ़र्माया, 'जब तक अल्लाह को मंज़ूर होगा, यह ग़ालिब ही रहेगा, फिर अल्लाह एक पाकीज़ा उ़म्दा हवा भेजेगा तो हर उस इंसान की रूह क़ब्ज़ हो जाएगी, जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा, सिर्फ़ वही लोग रह जाएँगे, जो ईमान से ख़ाली होंगे, चुनाँचे वह आबाई (बाप दादों) के दीन की तरफ़ लौटा दिये जाएँगे।'

حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، وَأَبُو مَعْنٍ زَيْدُ بْنُ يَزِيدَ الرَّقَاشِيُّ - وَاللَّفْظُ لأَبِي مَعْنٍ -قَالاَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لاَ يَذْهَبُ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ حَتَّى تُعْبَدَ اللاَّتُ وَالْعُزَّى " . فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُ لأَظُنُّ حِينَ أَنْزَلَ اللَّهُ { هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ} أَنَّ ذَلِكَ تَامًّا قَالَ " إِنَّهُ سَيَكُونُ مِنْ ذَلِكَ مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ يَبْعَثُ اللَّهُ رِيحًا طَيِّبَةً فَتَوَفَّى كُلَّ مَنْ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةِ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ فَيَبْقَى مَنْ لاَ خَيْرَ فِيهِ فَيَرْجِعُونَ إِلَى دِينِ آبَائِهِمْ " .

(7300) इस क़िस्म की रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ، - وَهُوَ الْحَنَفِيُّ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ، بْنُ جَعْفَرٍ بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ.

बाब 18 : क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि एक शख़्स दूसरे शख़्स की क़ब्र के पास से गुज़रेगा और इब्तिला व आज़माइश की बिना पर कहेगा, ऐ काश! इस मय्यित की जगह मैं होता

(18)

بَابٌ : لَّا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبرِ الرَّجُلِ، فَيَتَمَنّٰى أَنْ يَّكُونَ مَكَانَ الْمَيِّتِ، مِنَ الْبَلَاءِ

(7301) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत (उस वक़्त तक) क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि एक शख़्स दूसरे शख़्स की क़ब्र से गुज़रेगा तो कहेगा, ऐ काश! उसकी जगह मैं होता।'
सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन : 7115.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، فِيمَا قُرِئَ عَلَيْهِ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبْرِ الرَّجُلِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي مَكَانَهُ " .

फ़ायदा : क़ियामत से पहले हालात इस क़द्र संगीन और तक्लीफ़देह हो जाएँगे कि लोग मसाइब व मुश्किलात से बचने के लिए मौत की आरज़ू करेंगे, हालाँकि दुनियावी मसाइब और तक्लीफ़ात से बचने के लिए मौत की आरज़ू करना सही नहीं है।

(7302) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, दुनिया ख़त्म नहीं होगी, यहाँ तक कि एक आदमी क़ब्र से गुज़रेगा तो उस पर लोट पोट होगा और कहेगा, ऐ काश! इस क़ब्र वाले की जगह में होता और यह दीन की ख़ातिर नहीं बल्कि सिर्फ़ मुसीबत की बिना पर होगा।'

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ أَبَانَ بْنِ صَالِحٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الرِّفَاعِيُّ، -وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبَانَ - قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِي إِسْمَاعِيلَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ تَذْهَبُ الدُّنْيَا حَتَّى يَمُرَّ

الرَّجُلُ عَلَى الْقَبْرِ فَيَتَمَرَّغُ عَلَيْهِ وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ مَكَانَ صَاحِبِ هَذَا الْقَبْرِ وَلَيْسَ بِهِ الدِّينُ إِلاَّ الْبَلاَءُ " .

तख़रीज 7302 : सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4037.

وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، عَنْ يَزِيدَ، - وَهُوَ ابْنُ كَيْسَانَ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لاَ يَدْرِي الْقَاتِلُ فِي أَىِّ شَىْءٍ قَتَلَ وَلاَ يَدْرِي الْمَقْتُولُ عَلَى أَىِّ شَىْءٍ قُتِلَ "

(7303) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है लोगों पर एक ऐसा वक़्त आएगा, क़ातिल को पता नहीं होगा, उसने क़त्ल क्यूँ किया, किस वजह से किया है और न मक़्तूल को पता होगा, उसे किस वजह से क़त्ल किया गया है।'

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ, एक ऐसा वक़्त आएगा जिसमें क़त्लो ग़ारतगिरी आ़म हो जाएगी और उसको कोई ऐ़ब या गुनाह नहीं समझा जाएगा, बल्कि बिला वजह या बग़ैर किसी वजह से क़त्ल का इर्तिकाब किया जाएगा, शायद जिस दौर से हम गुज़र रहे हैं उसमें यह काम शुरू हो चुका हो, मामूली मामूली और हक़ीर बातों पर क़त्ल हो रहे हैं।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ أَبَانَ، وَوَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ أَبِي إِسْمَاعِيلَ الأَسْلَمِيِّ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ تَذْهَبُ الدُّنْيَا حَتَّى يَأْتِيَ عَلَى النَّاسِ يَوْمٌ لاَ يَدْرِي الْقَاتِلُ فِيمَ قَتَلَ وَلاَ الْمَقْتُولُ فِيمَ قُتِلَ " . فَقِيلَ كَيْفَ يَكُونُ ذَلِكَ قَالَ " الْهَرْجُ . الْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ أَبَانَ

(7304) इमाम साहब अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन अबान और वासिल बिन अ़ब्दुल आ'ला से हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जिसके हाथ में मेरी जान है, उसकी क़सम! दुनिया फ़ना नहीं होगी, यहाँ तक कि लोगों पर ऐसा वक़्त आएगा, क़ातिल को पता नहीं होगा, उसने क़त्ल क्यूँ किया है और न मक़्तूल को इल्म होगा, उसे क्यूँ क़त्ल किया गया है।' तो पूछा गया, यह क्यूँ कर होगा? आपने फ़र्माया, 'क़त्लो ग़ारत आ़म होगी, क़ातिल और मक़्तूल दोनों दोज़ख़ी होंगे।' (क्योंकि दोनों एक दूसरे

के क़त्ल के दर पे थे) इब्ने अबान की रिवायत में है, अबू इस्माईल से मुराद यज़ीद बिन कैसान है और उसने अबू इस्माईल के बाद असलमी नहीं कहा।

قَالَ هُوَ يَزِيدُ بْنُ كَيْسَانَ عَنْ أَبِي إِسْمَاعِيلَ . لَمْ يَذْكُرِ الأَسْلَمِيَّ .

(7305) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से यह बयान करते हैं, 'कअ़बा को एक दो छोटी छोटी पिण्डलियों वाला, यमनी गिराएगा।'

तख़रीज 7305 : सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज : 1591; नसाई, किताबुल मनासिक : 2904.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ سَعْدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم " يُخَرِّبُ الْكَعْبَةَ ذُو السُّوَيْقَتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ " .

नोट : यहाँ से सिर्फ़ अलामाते क़ियामत को बयान करना शुरू कर दिया गया है, कियामत के क़रीब मुसलमान, बैतुल्लाह की हुर्मत को पामाल करेंगे, जिसके नतीजे में वह तबाह व बर्बाद हो जाएँगे, उसके बाद हब्शी आकर उसको ढहा देंगे और वह आबाद नहीं हो सकेगा और क़ियामत क़ायम हो जाएगी।'

(7306) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'कअ़बा को एक छोटी छोटी पिण्डलियों वाला हब्शी बर्बाद करेगा।'

तख़रीज 7306 : सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज : 1596.

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يُخَرِّبُ الْكَعْبَةَ ذُو السُّوَيْقَتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ " .

(7307) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'एक दो छोटी छोटी पिण्डलियों वाला हब्शी अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के घर को बर्बाद करेगा।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي الدَّرَاوَرْدِيَّ - عَنْ ثَوْرِ بْنِ، زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " ذُو السُّوَيْقَتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ يُخَرِّبُ بَيْتَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ " .

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنْ ثَوْرِ بْنِ، زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاهُ

(7308) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि एक क़हत़ानी ज़ाहिर होगा, जो लोगों को अपने डण्डे से हाँकेगा।'

तख़रीज 7308 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3517; किताबुल फ़ितन : 7117.

फ़ायदा : इमाम कुर्तुबी (रह़.) के नज़दीक यह क़हत़ानी अगली हदीस में आने वाला जहजाह नामी इंसान है, जो बकरियों के रेवड़ की तरह, अपनी रिआया को क़ाबू में रखेगा, उसका अभी तक ज़ुहूर नहीं हुआ।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْكَبِيرِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ أَبُو بَكْرٍ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْحَكَمِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَذْهَبُ الأَيَّامُ وَاللَّيَالِي حَتَّى يَمْلِكَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ الْجَهْجَاهُ " . قَالَ مُسْلِمٌ هُمْ أَرْبَعَةُ إِخْوَةٍ شَرِيكٌ وَعُبَيْدُ اللَّهِ وَعُمَيْرٌ وَعَبْدُ الْكَبِيرِ بَنُو عَبْدِ الْمَجِيدِ.

(7309) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'दिन और रातें ख़त्म नहीं होंगी यहाँ तक कि एक जहजाह नामी आदमी बादशाह बनेगा।' इमाम मुस्लिम (रह़.) फ़र्माते हैं, अ़ब्दुल कबीर बिन अ़ब्दुल मजीद के तीन भाई और हैं , शरीक, उ़बैदुल्लाह और उ़मैर।

तख़रीज 7309 : जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2228.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي عُمَرَ - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا كَأَنَّ وُجُوهَهُمْ

(7310) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि तुम से ऐसी क़ौम जंग करेगी जिनके चेहरे गोया कि दोहरी ढाल हैं और क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि तुम ऐसी क़ौम से लड़ोगे जिनकी जूतियाँ बालों की होंगी।

الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ وَلاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ " .

तख़रीज 7310 : सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस्सियर : 2929; सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4304; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 4215; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4096.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) मजान्न : मिजन्न की जमा है। (2) मुत्रक़ा : जिन पर चमड़ा चढ़ाया गया हो, यानी उनके चेहरे गोल मटोल और भरपूर होंगे। (3) निआलुहुमुश शअर : उनके जूते बालों की रस्सियों से बने होंगे।

फ़ायदा : हदीस में बयान कर्दा क़ौम से मुराद तुर्क हैं , जिनसे उनके कुफ़्र के दौर में जंगें हुईं, यह बालों के जूते और लिबास पहनते थे और एक दूसरी क़ौम, बाबक ख़ुर्मी के साथी भी बालों के जूते पहनते थे, यह 201हिज्री में निकला और 222 हिज्री में क़त्ल कर दिया गया।

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلَكُمْ أُمَّةٌ يَنْتَعِلُونَ الشَّعَرَ وُجُوهُهُمْ مِثْلُ الْمَجَانِّ الْمُطْرَقَةِ"

(7311) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि तुम्हारे साथ ऐसे लोग लड़ेंगे, जो बालों के जूते पहनते हैं और उनके चेहरे दोहरी ढालों जैसे हैं।'

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ وَلاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا صِغَارَ الأَعْيُنِ ذُلْفَ الآنُفِ " .

(7312) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) तक पहुँचाते हैं, आपने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि तुम ऐसी क़ौम से जंग लड़ोगे जिनके जूते बालों के हैं और क़ियामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि तुम एक ऐसी क़ौम से लड़ोगे जिनकी आँखें छोटी और नाक चिपटी होगी।

सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस्सियर : 2929; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4097.

मुफ़रदातुल हदीस : ज़ुल्फ़, अज़्लुफ़ की जमा है, चिपटी और छोटी नाक।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُقَاتِلَ الْمُسْلِمُونَ التُّرْكَ قَوْمًا وُجُوهُهُمْ كَالْمَجَانِّ الْمُطْرَقَةِ يَلْبَسُونَ الشَّعَرَ وَيَمْشُونَ فِي الشَّعَرِ " .

(7313) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि मुसलमान, तुर्क क़ौम से लड़ेंगे, जिनके चेहरे गोया कि तह दर तह ढाल हैं , उनका लिबास बालों का होगा और बालों में चलेंगे, यानी जूते भी बालों के होंगे।'

सुनन अबूदाऊद, किताबुल फ़ितन : 4303; नसाई, किताबुल जिहाद : 3177.

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَأَبُو أُسَامَةَ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسٍ، بْنِ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تُقَاتِلُونَ بَيْنَ يَدَىِ السَّاعَةِ قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ حُمْرُ الْوُجُوهِ صِغَارُ الأَعْيُنِ "

(7314) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम क़ियामत से पहले ऐसी क़ौम से जंग करोगे जिनके जूते बालों के होंगे, उनके चेहरे गोया तह-ब-तह ढाल हैं , सुर्ख़ी माइल चेहरे और छोटी आँखें।'

तख़रीज 7314 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3591.

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ يُوشِكُ أَهْلُ الْعِرَاقِ أَنْ لاَ يُجْبَى إِلَيْهِمْ قَفِيزٌ وَلاَ دِرْهَمٌ . قُلْنَا مِنْ أَيْنَ ذَاكَ قَالَ مِنْ قِبَلِ الْعَجَمِ يَمْنَعُونَ ذَاكَ . ثُمَّ قَالَ يُوشِكُ أَهْلُ الشَّأْمِ أَنْ لاَ يُجْبَى إِلَيْهِمْ دِينَارٌ وَلاَ مُدْىٌ . قُلْنَا مِنْ أَيْنَ ذَاكَ قَالَ

(7315) अबू नज़रा (रह.) बयान करते हैं, हम हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर थे, चुनाँचे उन्होंने फ़र्माया, 'क़रीब है कि अहले इराक़ के पास कोई क़फ़ीज़ लाया जाए और न कोई दिरहम, हमने पूछा, यह किस बिना पर होगा, किनकी त़रफ़ से होगा? कहने लगे, अ़िजमियों की तरफ़ से, वह उन चीज़ों को रोक लेंगे, फिर कहने लगे, हो सकता है अहले शाम के पास दीनार और मुद्य न लाया जाए, हमने कहा, यह क्यूँ

مِنْ قِبَلِ الرُّومِ . ثُمَّ سَكَتَ هُنَيَّةً ثُمَّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَكُونُ فِي آخِرِ أُمَّتِي خَلِيفَةٌ يَحْثِي الْمَالَ حَثْيًا لاَ يَعُدُّهُ عَدَدًا " . قَالَ قُلْتُ لأَبِي نَضْرَةَ وَأَبِي الْعَلاَءِ أَتَرَيَانِ أَنَّهُ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ فَقَالاَ لاَ .

होगा? कहने लगे, रूमियों की तरफ़ से, फिर वह थोड़ी देर चुप रहे, फिर कहने लगे, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मेरी उम्मत के आख़िरी लोगों में एक ख़लीफ़ा होगा, जो लप भर भरकर माल देगा, उसको गिने या शुमार नहीं करेगा।' रावी कहते हैं, मैंने अबू नज़रा और अबुल अलाअ से पूछा, क्या तुम्हारी राय में, यह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) हैं? उन्होंने कहा, नहीं!

وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، - يَعْنِي الْجُرَيْرِيَّ - بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(7316) इमाम साहब एक और उस्ताद से उसके हम मआनी रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : इमाम महदी के दौर में माल व दौलत की फ़रावानी होगी, लोगों में ह़िर्स व आरज़ू कम होगी, इसलिए वह मोह़ताजों और ज़रूरतमंदों को ख़ूब ख़ूब माल देंगे और जिन दिनों काफ़िरों का ग़ल्बा होगा, वह अहले इराक़ और अहले शाम को ग़ल्ला और जिज़्या की रक़म और लगान अदा नहीं करेंगे।

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ يَعْنِي ابْنَ الْمُفَضَّلِ، ح وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ، بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنِي ابْنَ عُلَيَّةَ - كِلاَهُمَا عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مِنْ خُلَفَائِكُمْ خَلِيفَةٌ يَحْثُو الْمَالَ حَثْيًا لاَ يَعُدُّهُ عَدَدًا " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ حُجْرٍ " يَحْثِي الْمَالَ " .

(7317) हजरत अबू सईद (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम्हारे ख़लीफ़ाओं में एक ख़लीफ़ा होगा, जो माल ख़ूब लप भर भरकर देगा, उसे बिलकुल शुमार नहीं करेगा।' इब्ने हुज्र की रिवायत में यह्सू की बजाय यह्सी है (दोनों का मआनी एक है।)

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا دَاوُدُ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، وَجَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالاَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ خَلِيفَةٌ يَقْسِمُ الْمَالَ وَلاَ يَعُدُّهُ " .

(7318) हजरत अबू सईद और ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) दोनों बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'आख़िरी ज़माना में एक ख़लीफ़ा माल तक़्सीम करेगा और उसे शुमार नहीं करेगा।'

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ أَبِي، نَضْرَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(7319) इमाम साहब एक और उस्ताद से ह़ज़रत अबू सईद (रज़ि.) की मज़्कूरा बाला (ऊपर की) रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي مَسْلَمَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا نَضْرَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي مَنْ، هُوَ خَيْرٌ مِنِّي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ لِعَمَّارٍ حِينَ جَعَلَ يَحْفِرُ الْخَنْدَقَ وَجَعَلَ يَمْسَحُ رَأْسَهُ وَيَقُولُ " بُؤْسَ ابْنِ سُمَيَّةَ تَقْتُلُكَ فِئَةٌ بَاغِيَةٌ "

(7320) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, मुझे मुझसे बेहतर शख़्स ने बताया कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अ़म्मार (रज़ि.) से जब वह ख़ंदक़ खोद रहे थे, फ़र्माया और आप उनके सिर पर हाथ फेरते हुए फ़र्मा रहे थे, 'हाय सुमय्या के बेटे की मुसीबत! तुझे बाग़ी जमाअ़त क़त्ल करेगी।'

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُعَاذِ بْنِ عَبَّادٍ الْعَنْبَرِيُّ، وَهُرَيْمُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالاَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ،

(7321) इमाम साहब अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों की दो सनदों से बयान करते हैं, नज़्र की हदीस में है, मुझे मुझसे बेहतर शख़्स अबू क़तादा ने बताया और ख़ालिद बिन ह़ारिस

وَإِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ قُدَامَةَ قَالُوا أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي مَسْلَمَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَهُ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ النَّضْرِ أَخْبَرَنِي مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي أَبُو قَتَادَةَ . وَفِي حَدِيثِ خَالِدِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ أُرَاهُ يَعْنِي أَبَا قَتَادَةَ . وَفِي حَدِيثِ خَالِدٍ وَيَقُولُ " وَيْسَ " أَوْ يَقُولُ " يَا وَيْسَ ابْنِ سُمَيَّةَ " .

की हदीस में है, हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कहा, मेरा ख़याल है वह अबू क़तादा हैं और ख़ालिद की हदीस में यह भी आप 'वैस' या 'या वैस इब्ने सुमय्या' फ़र्मा रहे थे, यानी ऐ हसरत व अफ़सोस, यह सरीह की जगह आता है।

फ़ायदा : हजरत उस्मान (रज़ि.) ने हजरत अम्मार (रज़ि.) को मिस्र के हालात का जायज़ा लेने के लिये रवाना किया था और वह मिस्री बाग़ियों के भर्रा (झाँसे) में आ गए थे और उन्हीं के साथ मिल गए थे और जंगे सिफ़्फ़ीन में उनके साथ शहीद हुए, इसलिए हजरत मुआविया (रज़ि.) कहते थे, उनके क़ातेलीन वही हैं, जो उनको लेकर आए हैं, इस बिना पर हजरत हसन (रज़ि.) ने हजरत अम्मार (रज़ि.) की शहादत को अपने लिए दलील नहीं बनाया।

और उम्मत की अकसरियत ने हजरत अम्मार (रज़ि) की हजरत अली (रज़ि.) के गिरोह में शहादत को हजरत अली (रज़ि.) के हक़ पर होने की दलील बनाया है और उनकी ख़िलाफ़त के हक़ होने में कोई शुब्हा नहीं है और न ही हजरत मुआविया (रज़ि.) ने उनके मुक़ाबले में अपने ख़िलाफ़त का दावा किया था, ध्यान तो देने वाली बात उनकी आपस की जंग है जिसकी असास व बुनियाद हजरत उस्मान (रज़ि.) के क़ातिलीन से क़िसास लेने का मसला है, हजरत मुआविया (रज़ि.) उसके लिए तलवार उठाने को जाइज़ समझते थे, क्योंकि सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जब हजरत उस्मान की शहादत की अफ़वाह फैल गई तो आपने उनके ख़ून का बदला लेने के लिए सहाबा किराम (रज़ि.) से लड़ने मरने पर बैअत ली थी और हजरत अली (रज़ि.) का ख़याल था, मुआविया पहले मेरी बैअत करके, मेरे हाथ मज़बूत करें, उसके बग़ैर क़ातिलीने उस्मान पर क़ाबू नहीं पाया जा सकता, क्योंकि वह अपने तहफ़्फ़ुज़ के लिए हजरत अली (रज़ि.) के क़रीबी साथियों में घुस चुके थे और उन्हीं की साजिशें और रीशा दवानियों (मक्कारियों) की बिना पर, हजरत अली और हज़रत मुआविया (रज़ि.) किसी समझौते पर पहुँच न सके, वरना दोनों ही जंग से गुरेज़ करते थे। हजरत मुआविया (रज़ि.) का ख़याल था कि हजरत अम्मार (रज़ि.) को क़ातिलीने उस्मान (रज़ि.) ने शहीद किया है और नाम हजरत मुआविया

(रज़ि.) के साथियों का लगाया है इसलिए वह उनकी शहादत को अपने हक में दलील ख़्याल करते थे। (देखिए तबक़ात इब्ने सअद जिल्द 3 पेज 253; ब हवाला मिन्नतुल मुन्इम जिल्द 4 पेज 363)

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ جَبَلَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ، مُكْرَمٍ الْعَمِّيُّ وَأَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ قَالَ عُقْبَةُ حَدَّثَنَا وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ، أَخْبَرَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ خَالِدًا، يُحَدِّثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْحَسَنِ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ لِعَمَّارٍ " تَقْتُلُكَ الْفِئَةُ الْبَاغِيَةُ ".

(7322) इमाम साहब अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों से हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अम्मार (रज़ि.) को फ़र्माया, 'तुम्हें बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी।'

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْحَسَنِ، وَالْحَسَنِ، عَنْ أُمِّهِمَا، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(7323) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ" تَقْتُلُ عَمَّارًا الْفِئَةُ الْبَاغِيَةُ".

(7324) हजरत उम्मे सलमा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अम्मार को एक बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ

(7325) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मेरी उम्मत की हलाकत व बर्बादी इस क़ुरैशी ख़ानदान के हाथों होगी।' सहाबा किराम ने पूछा तो

صلى الله عليه وسلم قَالَ " يُهْلِكُ أُمَّتِي هَذَا الْحَىُّ مِنْ قُرَيْشٍ " . قَالُوا فَمَا تَأْمُرُنَا قَالَ " لَوْ أَنَّ النَّاسَ اعْتَزَلُوهُمْ " .

आपका हमारे लिए क्या हुक्म है? आपने फ़र्माया, 'ऐ काश! लोग उनसे अलग रहें।
सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3604.

وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ النَّوْفَلِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ فِي مَعْنَاهُ .

(7326) इमाम साहब दो उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि क़ुरैशी खानदान के नौख़ैज़ और नौजवान उस हलाकत व तबाही के बाइस बनेंगे और हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) की एक और रिवायत की रू से इसका आग़ाज़ 60 हिज्री से हुआ, जब यज़ीद बिन मुआविया ख़लीफ़ा बना, उसके बाद ख़िलाफ़त व हुकूमत पर क़ब्ज़ा के लिए आपस में खाना जंगी शुरू हुई।

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ أَبِي عُمَرَ - قَالاَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَدْ مَاتَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتُنْفَقَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ " .

(7327) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'किसरा मर चुका, अब उसके बाद किसरा नहीं होगा और जब क़ैसर हलाक हो जाएगा तो उसके बाद क़ैसर नहीं होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च होंगे।'
तख़रीज 7327 : जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2216.

وَحَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، ح وَحَدَّثَنِي ابْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِإِسْنَادِ سُفْيَانَ وَمَعْنَى حَدِيثِهِ.

(7328) इमाम साहब तीन उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी रिवायत बयान करते हैं।
सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3618.

फ़ायदा : क़ुरैश तिजारत के लिए, शाम और इराक़ का सफ़र करते थे, मुसलमान हो जाने के बाद उन्हें ख़तरा पैदा हो गया कि हमारा यह तिजारती सफ़र बन्द हो जाएगा, क्योंकि यह दोनों इलाक़े काफ़िरों के क़ब्ज़े में थे तो आपने उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाई कि ख़तरा की कोई बात नहीं है, उन इलाक़ों पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा होगा, इराक़ में किसरा की हुकूमत थी, वह पहले ख़त्म हुई, वह तबाह व बर्बाद हुआ और उसका नामो-निशान जल्द ही मिट गया, इसलिए आपने उसकी हलाकत को माज़ी से ताबीर किया और क़ैसरे रूम जिसका शाम पर क़ब्ज़ा था, उसकी सल्तनत और इक्तिदार धीरे धीरे ख़त्म हुआ, इसलिए उसके लिए आपने आइन्दा का ज़माना बयान किया और दोनों के ख़ज़ाने मुसलमानों के क़ब्ज़े में आए और दीनी ज़रूरतों पर सर्फ़ हुए।

(7329) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह को सुनाई हुई हदीसों में से एक यह है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'किसरा हलाक हो गया, फिर उसके बाद किसरा नहीं होगा और क़ैसर भी यक़ीनन हलाक होकर रहेगा।' फिर उसके बाद क़ैसर नहीं होगा (उनकी यह सल्तनतें नहीं रह सकेंगी) और उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में सर्फ़ होकर रहेंगे।'

तख़रीज 7328 : सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3618

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هَلَكَ كِسْرَى ثُمَّ لاَ يَكُونُ كِسْرَى بَعْدَهُ وَقَيْصَرُ لَيَهْلِكَنَّ ثُمَّ لاَ يَكُونُ قَيْصَرُ بَعْدَهُ وَلَتُقْسَمَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ " .

(7330) हजरत जाबिर बिन समुरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब किसरा हलाक हो जाएगा तो उसके बाद किसरा नहीं होगा (जो उसकी सल्तनत बहाल कर सके) इस तरह हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) वाली मुकम्मल रिवायत बयान की।

सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुम्स : 3121; किताबुल मनाक़िब : 3619; किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर : 6629.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ " . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ سَوَاءً .

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سِمَاكِ، بْنِ حَرْبٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَتَفْتَحَنَّ عِصَابَةٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ أَوْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ كَنْزَ آلِ كِسْرَى الَّذِي فِي الأَبْيَضِ " . قَالَ قُتَيْبَةُ مِنَ الْمُسْلِمِينَ . وَلَمْ يَشُكَّ .

(7331) हजरत जाबिर बिन समुरा (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'मुसलमानों या मोमिनों की एक जमाअ़त किसरा ख़ानदान का क़स्रे अब्यज (सफ़ेद महल) वाला खजाना ज़रूर फ़तह करेगी।' कुतैबा ने बग़ैर शक के मुसलमानों की जमाअ़त कहा।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِمَعْنَى حَدِيثِ أَبِي عَوَانَةَ .

(7332) इमाम साहब दो और उस्तादों से ऊपर वाली रिवायत के जैसी रिवायत बयान करते हैं।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ - عَنْ ثَوْرٍ، - وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ الدِّيلِيُّ - عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " سَمِعْتُمْ بِمَدِينَةٍ جَانِبٌ مِنْهَا فِي الْبَرِّ وَجَانِبٌ مِنْهَا فِي الْبَحْرِ " . قَالُوا نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَغْزُوَهَا سَبْعُونَ أَلْفًا مِنْ بَنِي إِسْحَاقَ فَإِذَا جَاءُوهَا نَزَلُوا فَلَمْ يُقَاتِلُوا بِسِلاَحٍ وَلَمْ يَرْمُوا بِسَهْمٍ قَالُوا لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ

(7333) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क्या तुमने उस शहर के बारे में सुना, जिसका एक किनारा खुश्की में है और एक किनारा समुन्द्र में है?' सहाबा किराम ने जवाब दिया, जी हाँ! ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि उस पर बनू इस्हाक़ के सत्तर हजार अफ़राद हमलावर होंगे, चुनाँचे जब वह उसके क़रीब पड़ाव डालेंगे तो वह हथियारों से जंग नहीं करेंगे और न कोई तीर फेंकेंगे, वह कहेंगे, ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर तो

وَاللَّهُ أَكْبَرُ . فَيَسْقُطُ أَحَدُ جَانِبَيْهَا " . قَالَ ثَوْرٌ لاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ قَالَ " الَّذِي فِي الْبَحْرِ ثُمَّ يَقُولُوا الثَّانِيَةَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ . فَيَسْقُطُ جَانِبُهَا الآخَرُ ثُمَّ يَقُولُوا الثَّالِثَةَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ . فَيُفَرَّجُ لَهُمْ فَيَدْخُلُوهَا فَيَغْنَمُوا فَبَيْنَمَا هُمْ يَقْتَسِمُونَ الْمَغَانِمَ إِذْ جَاءَهُمُ الصَّرِيخُ فَقَالَ إِنَّ الدَّجَّالَ قَدْ خَرَجَ . فَيَتْرُكُونَ كُلَّ شَىْءٍ وَيَرْجِعُونَ " .

उसका एक किनारा गिर जाएगा, यानी एक जानिब तबाह हो जाएगा।' सौर (रह.) कहते हैं, मेरे इल्म में यही है कि उन्होंने कहा (समुन्द्र वाला हिस्सा, फिर वह दोबारा कहेंगे, ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर तो उसका दूसरा किनारा भी गिर जाएगा, फिर वह तीसरी बार कहेंगे, ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर तो उनके लिए रास्ता खुल जाएगा, तो वह उसमें दाख़िल हो जाएँगे और ग़नीमत हासिल करेंगे और जबकि वह ग़नीमतें तक़्सीम कर रहे होंगे तो उनके पास चीख़ पहुँचेगी, वह कहेगा दज्जाल निकल चुका है, चुनाँचे वह सबकुछ छोड़कर (अपने इलाक़े की तरफ़) लौट आएँगे।'

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مَرْزُوقٍ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ الزَّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنَا ثَوْرُ بْنُ زَيْدٍ الدِّيلِيُّ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ .

(7334) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं।

फ़ायदा : इस शहर से मुराद क़ुस्तुन्तुनिया है, उसके बाहर बड़ी जोरदार जंग होगी, जिसमें मुसलमानों का एक सुलुस (1/3) राहे फ़रार इख़्तियार करेगा, दूसरा तिहाई शहीद होगा और तीसरा तिहाई जिसमें बनू इस्हाक के अफ़राद की तादाद ज़्यादा होगी, क्योंकि उसमें शामी लोग होंगे जो बनू इस्हाक़ से है। शहर के क़रीब पहुँच जाएगा तो वहाँ किसी क़िस्म की मुज़ाहमत और जंग नहीं होंगी और उस हदीस वाला वाक़िया पेश आएगा इसलिए फ़तहे क़ुस्तुन्तुनिया के तहत जो रिवायत गुज़र चुकी है, उसमें और इसमें कोई तआरुज़ (टकराव) या इख़्तिलाफ़ नहीं है, क्योकि वह जंगे आमाक़ या दाबिक़ में लड़ी गई है जो शाम के इलाक़ा हल्ब के क़रीब वाक़ेअ है और उसमें जाँ निसारी के नतीजे में उस करामत का ज़ुहूर होगा कि सिर्फ़ ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर कहने से क़ुस्तुन्तुनिया के दोनों जानिब गिर जाएँगे और तीसरी बार कहने पर शहर में दाख़िल होने का रास्ता मिल जाएगा और यह क़ियामत के क़रीब होगा।

(7335) हजरत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है, नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम्हारी यहूदियों से यक़ीनन जंग होगी और तुम उनको क़त्ल करोगे यहाँ तक कि पत्थर बोलकर बताएगा, 'ऐ मुसलमान! इधर यहूदी खड़ा है, आओ इसको क़त्ल कर दो।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لَتُقَاتِلُنَّ الْيَهُودَ فَلَتَقْتُلُنَّهُمْ حَتَّى يَقُولَ الْحَجَرُ يَا مُسْلِمُ هَذَا يَهُودِيٌّ فَتَعَالَ فَاقْتُلْهُ ".

(7336) इमाम साहब यही रिवायत दो और उस्तादों से बयान करते हैं, उसमें है, 'यह यहूदी मेरे पीछे है।'

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . وَقَالَ فِي حَدِيثِهِ " هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي " .

फ़ायदा : यहूदी दज्जाल का साथ देंगे, जिनकी तादाद सत्तर हज़ार होगी, हजरत ईसा (अ.) दज्जाल को क़त्ल कर देंगे और यहूदी हार जाएँगे और इधर उधर छुपने की कोशिश करेंगे तो ग़रक़द दरख़्त के सिवा हर शजर (पेड़), हजर (पत्थर) और दीवार और जानवर बोलकर यहूदी की निशानदेही करेगा अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को क़ुव्वते गोयाई (बोलने की ताक़त) दे देगा। **(सुनन इब्ने माजा:4128)**

(7337) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम्हारी यहूदियों के साथ जंग होगी, यहाँ तक कि पत्थर बोलकर बताएगा, ऐ मुसलमान! यह यहूदी मेरे पीछे है, आओ और इसको क़त्ल कर दो।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ حَمْزَةَ، قَالَ سَمِعْتُ سَالِمًا، يَقُولُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تَقْتَتِلُونَ أَنْتُمْ وَيَهُودُ حَتَّى يَقُولَ الْحَجَرُ يَا مُسْلِمُ هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي تَعَالَ فَاقْتُلْهُ " .

(7338) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'यहूदी तुम्हारे साथ जंग करेंगे,

حَدَّثَنَا حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ

رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تُقَاتِلُكُمُ الْيَهُودُ فَتُسَلَّطُونَ عَلَيْهِمْ حَتَّى يَقُولَ الْحَجَرُ يَا مُسْلِمُ هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ " .

चुनाँचे तुम्हें उन पर ग़ल्बा दिया जाएगा, यहाँ तक कि पत्थर कहेगा, ऐ मुसलमान! यह यहूदी मेरे पीछे है, इसको क़त्ल कर दे।'

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُقَاتِلَ الْمُسْلِمُونَ الْيَهُودَ فَيَقْتُلُهُمُ الْمُسْلِمُونَ حَتَّى يَخْتَبِئَ الْيَهُودِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْحَجَرِ وَالشَّجَرِ فَيَقُولُ الْحَجَرُ أَوِ الشَّجَرُ يَا مُسْلِمُ يَا عَبْدَ اللَّهِ هَذَا يَهُودِيٌّ خَلْفِي فَتَعَالَ فَاقْتُلْهُ . إِلاَّ الْغَرْقَدَ فَإِنَّهُ مِنْ شَجَرِ الْيَهُودِ " .

(7339) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी, यहाँ तक कि मुसलमान यहूदियों से लड़ेंगे, चुनाँचे मुसलमान उन्हें क़त्ल करेंगे, यहाँ तक कि यहूदी पत्थर और दरख़्त के पीछे छुपेगा तो पत्थर या दरख़्त कहेगा, ऐ मुसलमान! ऐ अल्लाह के बन्दे! यह यहूदी मेरे पीछे है, आओ इसको क़त्ल कर दो, मगर ग़रक़द का दरख़्त नहीं बताएगा क्योंकि यह यहूदी दोस्त दरख़्त है।

फ़ायदा : ग़रक़द एक काँटेदार दरख़्त है, जो बैतुल मक़्दिस के इलाक़ा में आम है, अहले मदीना का क़ब्रिस्तान बक़ीअ ग़रक़द, इसलिए कहलाया कि वहाँ भी यह दरख़्त था और उसको काट दिया गया।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، كِلاَهُمَا عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ " إِنَّ بَيْنَ يَدَىِ السَّاعَةِ كَذَّابِينَ " . وَزَادَ فِي حَدِيثِ أَبِي الأَحْوَصِ قَالَ فَقُلْتُ لَهُ آنْتَ سَمِعْتَ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ نَعَمْ

(7340) इमाम साहब मुख़्तलिफ़ उस्तादों से जाबिर बिन समुरा (रज़ि.) की रिवायत बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'क़ियामत से पहले झूटे लोग नमूदार होंगे।' अबुल अह़वस़ की रिवायत में है, सिमाक ने पूछा, क्या आपने बराहे रास्त रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी है? उन्होंने कहा, हाँ!

وَحَدَّثَنِي ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ . قَالَ سِمَاكٌ وَسَمِعْتُ أَخِي، يَقُولُ قَالَ جَابِرٌ فَاحْذَرُوهُمْ .

(7341) इमाम साहब ऊपर वाली हदीस दो और उस्तादों से बयान करते हैं, सिमाक (रह.) कहते हैं, मैंने अपने भाई को यह फ़र्माते सुना, हजरत जाबिर (रज़ि.) ने फ़र्माया, 'उनसे बचकर रहना।'

फ़ायदा : झूठों से मुराद वह लोग हैं, जो अपने अपने मफ़ादात के लिए हदीसें गढ़ेंगे और उन्हें रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ मंसूब करेंगे, या अपनी बिदअतों (नई रस्मों/दीन में नए तरीक़ों) की निस्बत आपकी तरफ़ करेंगे।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - وَهُوَ ابْنُ مَهْدِيٍّ - عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُبْعَثَ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ قَرِيبٌ مِنْ ثَلاَثِينَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ " .

(7342) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि बहुत बड़े धोखेबाज़, इंतिहाई झूठे, तक़रीबन तीस (30) की तादाद में उठाए जाएँगे, उनमें से हर एक का दावा यह होगा, वह अल्लाह का रसूल है।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ يَنْبَعِثَ .

(7343) इमाम साहब और एक उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि यहाँ युब्अस की बजाय यंबइस है, उठेंगे।
सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3609; जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2218.

फ़ायदा : इस हदीस से मुराद वह मुद्दइयाने नबुव्वत (नबी होने के दावेदारान) हैं जिनको जअ़ली नबुव्वत के पैरोकार मिल जाएँगे और उनको कुछ शानो शौकत ह़ासिल हो जाएगी जैसाकि आपके आख़री जमाने में मुसैलिमा कज़्ज़ाब और अस्वद अ़ंसी थे, बाद में तुलैह़ा बिन ख़ुवेलिद असदी था, जिसको बाद में तौबा नसीब हो गई थी और इस दौर में मिर्ज़ा क़ादियानी है, जिसके बहुत से पैरोकार मौजूद हैं, जो मुसलमानों को मुर्तद बनाने की कोशिश करते रहते हैं। अआ़जनल्लाहु तआ़ला मिन शर्रिहिम!

बाब 19 :
इब्ने स़य्याद का तज़्किरा (बयान)

(19)
بَاب : ذِكْرِ ابْنِ صَيَّادٍ

(7344) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ थे, चुनाँचे हमारा गुज़र बच्चों के पास से हुआ, जिनमें इब्ने सय्याद भी था तो बच्चे भाग गए और इब्ने सय्याद बैठा रहा, तो गोया रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसकी हरकत को पसंद न किया, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे कहा, 'तेरे हाथ ख़ाक आलूद हों, क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ?' तो उसने कहा, नहीं! बल्कि क्या आप गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? तो हजरत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अ़र्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मुझे इजाज़त दीजिए ताकि मैं इस को क़त्ल कर दूँ तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर यह वही है, जो तुम समझते हो, यानी दज्जाल है तो तुम इसको क़त्ल नहीं कर सकते।' (क्योंकि दज्जाल को ह़ज़रत ईसा (अ़.) क़त्ल करेंगे)

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لِعُثْمَانَ - قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَمَرَرْنَا بِصِبْيَانٍ فِيهِمُ ابْنُ صَيَّادٍ فَفَرَّ الصِّبْيَانُ وَجَلَسَ ابْنُ صَيَّادٍ فَكَأَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَرِهَ ذَلِكَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " تَرِبَتْ يَدَاكَ أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ " . فَقَالَ لاَ . بَلْ تَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ . فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ذَرْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ حَتَّى أَقْتُلَهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنْ يَكُنِ الَّذِي تَرَى فَلَنْ تَسْتَطِيعَ قَتْلَهُ " .

फ़ायदा : इब्ने स़य्याद जिसका नाम साफ़ है, उसकी विलादत और चेहरा मोहरा आ़म बच्चों से अलग थलग थी और कुछ सिफ़ात, दज्जाल की स़िफ़ात से मिलती जुलती थीं, इसलिए कुछ सहाबा (रज़ि.) को उससे दज्जाल होने का शुब्हा पड़ता था और आपने उसको क़त्ल इसलिए नहीं करवाया कि वह यहूदी था और यहूदियों के साथ आपने मुआहिदा (समझौता) किया था कि वह उनके साथ अम्नो सलामती से रहेंगे, बाद में उनकी रीशा दवानियों (मक्कारियों) और शरारतों की बिना पर, उनको मदीना मुनव्वरा से निकाल दिया गया।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ - قَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ كُنَّا نَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَمَرَّ بِابْنِ صَيَّادٍ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَدْ خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا " . فَقَالَ دُخٌّ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اخْسَأْ فَلَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ " . فَقَالَ عُمَرُ يَا رَسُولَ اللَّهِ دَعْنِي فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " دَعْهُ فَإِنْ يَكُنِ الَّذِي تَخَافُ لَنْ تَسْتَطِيعَ قَتْلَهُ".

(7345) हजरत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ जा रहे थे कि आपका गुज़र इब्ने सय्याद के पास से हुआ, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़र्माया, 'मैंने तेरे (इम्तिहान के) लिए एक चीज़ दिल में पोशीदा रखी है।' उसने कहा, वह दुख़्ख़ है तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'ज़लीलो ख़्वार रह तू हर्गिज़ अपनी हैसियत से तजावुज़ नहीं कर सकेगा।' चुनाँचे हजरत उ़मर (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मुझे छोड़ दीजिए कि मैं इसकी गर्दन मार दूँ तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'उसे छोड़िए, अगर यह वह है, जिसका तुम्हें अंदेशा है तो तुम उसे क़त्ल करने की ताक़त नहीं रखते।'

फ़ायदा : आपने अपने ज़हन में यह आयत रखी थी, इन्तेज़ार कर उस दिन का जिस दिन आसमान साफ़ धुआँ लेकर आयेगा। (दुख़ान, आ : 10) 'लेकिन काहिनों की तरह उसे शैतानी इल्हाम से एक नामुकम्मल लफ़्ज़ का पता चल सका इसलिए आपने फ़र्माया, तुम काहिन की हैसियत से तजावुज़ नहीं कर सकोगे।

मुफ़रदातुल ह़दीस (1) खबातु लक खबीआ : मैंने तेरे लिए दिल में एक चीज़ छुपाई है। **(2) इख़्सा :** ज़लीलो ख़्वार होकर रह, ज़लील होकर दूर हो जा।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحٍ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ لَقِيَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فِي بَعْضِ طُرُقِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم "

(7346) हजरत अबू सईद (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) , अबू बक्र और उ़मर (रज़ि.) की मदीना के किसी रास्ते में इब्ने सय्याद से मुलाक़ात हुई तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़र्माया, 'क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ?' तो उसने जवाबन

أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ " . فَقَالَ هُوَ أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " آمَنْتُ بِاللَّهِ وَمَلاَئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ مَا تَرَى " . قَالَ أَرَى عَرْشًا عَلَى الْمَاءِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " تَرَى عَرْشَ إِبْلِيسَ عَلَى الْبَحْرِ وَمَا تَرَى " . قَالَ أَرَى صَادِقَيْنِ وَكَاذِبًا أَوْ كَاذِبَيْنِ وَصَادِقًا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لُبِسَ عَلَيْهِ دَعْوهُ " .

आपका सवाल दोहराया, क्या आप गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ?' तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैं अल्लाह, उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों पर ईमान रखता हूँ, तुझे क्या नज़र आता है?' उसने कहा, मुझे पानी पर तख़्त नजर आता है, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुझे समुन्द्र पर इब्लीस का तख़्त नज़र आता है तू और क्या देखता है?' उसने कहा, मैं दो सच्चे एक झूठा या दो झूठे और एक सच्चा देखता हूँ। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'इस पर इसका मामला मुश्तबा हो गया है, इसे छोड़ दो।'
जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2247.

फ़ायदा : इब्ने स़य्याद ने आप ही का सवाल दोहराया, स़राहतन अपनी नुबुव्वत का दावा नहीं किया, इसलिए आपने भी स़राहतन उसकी नुबुव्वत का इंकार नहीं किया, एक उस़ूली बात फ़र्माई और उसको नज़र अन्दाज़ कर दिया।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالاَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ، حَدَّثَنَا أَبُو نَضْرَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ لَقِيَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ابْنَ صَائِدٍ وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَابْنُ صَائِدٍ مَعَ الْغِلْمَانِ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ الْجُرَيْرِيِّ.

(7347) हजरत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) इब्ने स़य्याद को मिले और अबू बक्र और उ़मर (रज़ि.) भी आपके साथ थे, आगे ऊपर वाली हदीस है।

حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا دَاوُدُ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ

(7348) हजरत अबू सईद (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैं मक्का जाते वक़्त इब्ने स़य्याद का साथी बना तो उसने मुझे कहा, हाँ! मुझे लोगों से तक्लीफ़ पहुँची है, वह ख़याल करते

الْخُدْرِيِّ، قَالَ صَحِبْتُ ابْنَ صَائِدٍ إِلَى مَكَّةَ فَقَالَ لِي أَمَا قَدْ لَقِيتُ مِنَ النَّاسِ يَزْعُمُونَ أَنِّي الدَّجَّالُ أَلَسْتَ سَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّهُ لاَ يُولَدُ لَهُ " . قَالَ قُلْتُ بَلَى . قَالَ فَقَدْ وُلِدَ لِي . أَوَلَيْسَ سَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لاَ يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ وَلاَ مَكَّةَ " . قُلْتُ بَلَى . قَالَ فَقَدْ وُلِدْتُ بِالْمَدِينَةِ وَهَذَا أَنَا أُرِيدُ مَكَّةَ - قَالَ - ثُمَّ قَالَ لِي فِي آخِرِ قَوْلِهِ أَمَا وَاللَّهِ إِنِّي لأَعْلَمُ مَوْلِدَهُ وَمَكَانَهُ وَأَيْنَ هُوَ . قَالَ فَلَبَسَنِي .

हैं, मैं दज्जाल हूँ, क्या तूने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते नहीं सुना कि, 'उसकी औलाद नहीं होगी।' मैंने कहा, क्यूँ नहीं! (मैंने सुना है) उसने कहा, तो मेरी तो औलाद है, क्या तूने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते नहीं सुना, 'वह मदीना में दाख़िल हो सकेगा न मक्का में।' मैंने कहा, ज़रूर सुना है, उसने कहा, मैं मदीना में पैदा हुआ हूँ और अब मैं मक्का जाना चाहता हूँ, फिर उसने अपनी बातों के आख़िर में मुझसे कहा, हाँ! अल्लाह की क़सम! मैं ख़ूब जानता हूँ, उसका मौलिद (जाये पैदाइश) कहाँ है और अब वह कहाँ है, इस तरह उसने मुझे शको शुब्हा में डाल दिया।

फ़ायदा : मालूम होता है कि इब्ने स़य्याद ही दज्जाले अकबर है, आख़िरी ज़माना में जब वह अपनी असलियत में जाहिर होगा तो फिर न मदीना में दाख़िल हो सकेगा और न मक्का में, और न उसकी औलाद होगी, अपने इब्तिदाई दौर में उसके अंदर दजल व फ़रेब का मलका था, लेकिन अभी पूरी सिफ़ात का ज़ुहूर न हुआ था, इसलिए वह शको शुब्हा और इल्तिबास में डालने वाली बातें करता था और अचानक वह गायब हो गया।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالاَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ لِيَ ابْنُ صَائِدٍ وَأَخَذَتْنِي مِنْهُ ذَمَامَةٌ هَذَا عَذَرْتُ النَّاسَ مَا لِي وَلَكُمْ يَا أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ أَلَمْ يَقُلْ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّهُ يَهُودِيٌّ " . وَقَدْ أَسْلَمْتُ . قَالَ " وَلاَ يُولَدُ لَهُ " . وَقَدْ وُلِدَ لِي . وَقَالَ "

(7349) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, इब्ने साइद ने मुझे एक बात कही, उससे मुझे शर्मो ह्या आ गई, उस मसले में मैं लोगों को मअज़ूर समझता हूँ, लेकिन ऐ मुहम्मद के साथियों! तुम मेरे बारे में ऐसी बातें क्यूँ करते हो, क्या नबिय्युल्लाह(ﷺ) ने नहीं कहा है, 'वह यहूदी है' और मैं तो इस्लाम का इज़्हार कर चुका हूँ, आपने फ़र्माया, 'और उसकी औलाद नहीं होगी' और मेरी औलाद है और आपने फ़र्माया, 'अल्लाह ने उस पर

إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَرَّمَ عَلَيْهِ مَكَّةَ " . وَقَدْ حَجَجْتُ . قَالَ فَمَا زَالَ حَتَّى كَادَ أَنْ يَأْخُذَ فِيَّ قَوْلُهُ . قَالَ فَقَالَ لَهُ أَمَا وَاللَّهِ إِنِّي لأَعْلَمُ الآنَ حَيْثُ هُوَ وَأَعْرِفُ أَبَاهُ وَأُمَّهُ . قَالَ وَقِيلَ لَهُ أَيَسُرُّكَ أَنَّكَ ذَاكَ الرَّجُلُ قَالَ فَقَالَ لَوْ عُرِضَ عَلَىَّ مَا كَرِهْتُ .

मक्का का दाख़िला हराम क़रार दिया है।' और मैं हज्ज कर चुका हूँ, वह इस क़िस्म की बातें करता रहा, यहाँ तक कि क़रीब था कि मुझ पर उसकी बातें असर अंदाज़ हो जाएँ (मैं उससे मुतास्सिर हो जाऊँ) चुनाँचे उसने हजरत जाबिर (रज़ि.) से कहा, हाँ! अल्लाह की क़सम! मैं खूब जानता हूँ, अब वह कहाँ है और मैं उसके बाप और उसकी माँ को भी जानता हूँ और उसे पूछा गया, क्या तुझे यह बात पसंद है कि तुम ही वह आदमी (दज्जाल) हो? तो उसने कहा, अगर मुझे उसकी पेशकश की जाए, मैं नापसंद नहीं करूँगा।

फ़ायदा : दावा ए इस्लाम के बावजूद उस क़िस्म की बातिल बातें करना और दज्जाल होने को नापसंदन न करना, इससे यह मालूम होता है, आख़िरी दौर में यही दज्जाल का रूप धारण करेगा, अभी यह पर्दे के पीछे छुपा है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحٍ، أَخْبَرَنِي الْجُرَيْرِيُّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ خَرَجْنَا حُجَّاجًا أَوْ عُمَّارًا وَمَعَنَا ابْنُ صَائِدٍ - قَالَ - فَنَزَلْنَا مَنْزِلاً فَتَفَرَّقَ النَّاسُ وَبَقِيتُ أَنَا وَهُوَ فَاسْتَوْحَشْتُ مِنْهُ وَحْشَةً شَدِيدَةً مِمَّا يُقَالُ عَلَيْهِ - قَالَ - وَجَاءَ بِمَتَاعِهِ فَوَضَعَهُ مَعَ مَتَاعِي . فَقُلْتُ إِنَّ الْحَرَّ شَدِيدٌ فَلَوْ وَضَعْتَهُ تَحْتَ تِلْكَ الشَّجَرَةِ - قَالَ - فَفَعَلَ - قَالَ - فَرُفِعَتْ لَنَا غَنَمٌ فَانْطَلَقَ فَجَاءَ بِعُسٍّ فَقَالَ اشْرَبْ أَبَا سَعِيدٍ . فَقُلْتُ إِنَّ الْحَرَّ شَدِيدٌ

(7350) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम हज्ज या उमरा के लिए निकले और इब्ने साइद भी हमारे साथ था तो हमने एक जगह पड़ाव किया, चुनाँचे लोग बिखर गए और मैं और वह ही रह गए, उसके बारे में जो कुछ कहा जाता था, उसकी वजह से मैंने उससे शदीद वहशत व बेगानगी (ख़ौफ़) महसूस की, वह अपना सामान ले आया और मेरे सामान के साथ रख दिया, मैंने कहा गर्मी बहुत सख़्त है, ऐ काश! तुम उसे उस दरख़्त के नीचे रख दो, तो उसने ऐसे ही किया, चुनाँचे हमें कुछ बकरियाँ नज़र आईं तो वह गया और एक बड़ा प्याला भर लाया और कहने लगा,

وَاللَّبَنُ حَارٌّ . مَا بِي إِلاَّ أَنِّي أَكْرَهُ أَنْ أَشْرَبَ عَنْ يَدِهِ -أَوْ قَالَ آخُذَ عَنْ يَدِهِ - فَقَالَ أَبَا سَعِيدٍ لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آخُذَ حَبْلاً فَأُعَلِّقَهُ بِشَجَرَةٍ ثُمَّ أَخْتَنِقَ مِمَّا يَقُولُ لِيَ النَّاسُ يَا أَبَا سَعِيدٍ مَنْ خَفِيَ عَلَيْهِ حَدِيثُ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا خَفِيَ عَلَيْكُمْ مَعْشَرَ الأَنْصَارِ أَلَسْتَ مِنْ أَعْلَمِ النَّاسِ بِحَدِيثِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَلَيْسَ قَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هُوَ كَافِرٌ " . وَأَنَا مُسْلِمٌ أَوَلَيْسَ قَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هُوَ عَقِيمٌ لاَ يُولَدُ لَهُ " . وَقَدْ تَرَكْتُ وَلَدِي بِالْمَدِينَةِ أَوَ لَيْسَ قَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ وَلاَ مَكَّةَ " . وَقَدْ أَقْبَلْتُ مِنَ الْمَدِينَةِ وَأَنَا أُرِيدُ مَكَّةَ قَالَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ حَتَّى كِدْتُ أَنْ أَعْذِرَهُ . ثُمَّ قَالَ أَمَا وَاللَّهِ إِنِّي لأَعْرِفُهُ وَأَعْرِفُ مَوْلِدَهُ وَأَيْنَ هُوَ الآنَ . قَالَ قُلْتُ لَهُ تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ .

पीजिए, ऐ अबू सईद! तो मैंने कहा, सख़्त गर्मी है और दूध गर्म है, असल वजह यह थी कि मैं उसके हाथ से पीना या कहा उसके हाथ से लेना पसंद नहीं करता था, चुनाँचे उसने कहा, ऐ अबू सईद! मैं इरादा कर चुका हूँ, रस्सी लेकर किसी दरख़्त से लटका दूँ, फिर उन बातों की बिना पर जो लोग मेरे बारे में कहते हैं, गला घोंट लूँ। ऐ अबू सईद! जिन लोगों से रसूलुल्लाह(ﷺ) की हदीस मख़्फ़ी है, उनकी बात नहीं है, ऐ अंसार की जमाअत! तुम पर तो अहादीस मख़्फ़ी नहीं हैं, क्या तुम उन लोगों में से नहीं हो, जिनको रसूलुल्लाह(ﷺ) की अहादीस का इल्म सबसे ज़्यादा है? क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नहीं फ़र्माया कि, 'वह काफ़िर है' और मैं तो मुसलमान हूँ? क्या रसूलुल्लाह (स) ने फ़र्माया नहीं है, 'वह बाँझ है, उसकी औलाद नहीं होगी' और मैं मदीना में अपनी औलाद छोड़ आया हूँ? क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नहीं फ़र्माया है, 'वह मदीना और मक्का में दाख़िल नहीं होगा।' और मैं मदीना से आ रहा हूँ और मक्का जाना चाहता हूँ? अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) कहते हैं, क़रीब था कि मैं उसको मअज़ूर समझ लेता, फिर उसने कहा कि, 'हाँ! अल्लाह की क़सम! मैं उसको जानता हूँ और उसकी जाये पैदाइश को जानता हूँ और उसको भी कि अब वह किस जगह है तो मैंने उसको कहा, तेरे लिए आइन्दा के लिए भी तबाही हो।

जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2246.

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ مُفَضَّلٍ - عَنْ أَبِي مَسْلَمَةَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لاِبْنِ صَائِدٍ " مَا تُرْبَةُ الْجَنَّةِ " . قَالَ دَرْمَكَةٌ بَيْضَاءُ مِسْكٌ يَا أَبَا الْقَاسِمِ . قَالَ " صَدَقْتَ " .

(7351) अबू सईद (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इब्ने साइद से पूछा, 'जन्नत की मिट्टी कैसी है?' उसने कहा, बारीक सफ़ेद कस्तूर, ऐ अबुल क़ासिम! आपने फ़र्माया, 'तूने सच कहा।'

मुफ़रदातुल हदीस : दर्मका : बारीक सफ़ेद, मुलायम व नर्म मिट्टी।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّ ابْنَ صَيَّادٍ، سَأَلَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم عَنْ تُرْبَةِ الْجَنَّةِ فَقَالَ " دَرْمَكَةٌ بَيْضَاءُ مِسْكٌ خَالِصٌ " .

(7352) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि इब्ने स़य्याद ने नबी अकरम(ﷺ) से जन्नत की मिट्टी के बारे में पूछा तो आप(ﷺ) ने फ़र्माया, 'ख़ालिस सफ़ेद, खालिस़ कस्तूरी।'

फ़ायदा : इब्ने स़य्याद ने आपसे जन्नत की मिट्टी के बारे में सवाल किया, आपने जवाब दे दिया, बाद में किसी वक़्त उससे यही सवाल किया, ताकि पता चले वह क्या कहता है, लेकिन उसने आपको वही जवाब दोहरा दिया।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، قَالَ رَأَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَحْلِفُ بِاللَّهِ أَنَّ ابْنَ صَائِدٍ الدَّجَّالُ، فَقُلْتُ أَتَحْلِفُ بِاللَّهِ قَالَ إِنِّي سَمِعْتُ عُمَرَ يَحْلِفُ عَلَى ذَلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَلَمْ يُنْكِرْهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم .

(7353) मुहम्मद बिन मुंकदिर (रह़.) बयान करते हैं, मैंने हजरत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को देखा, वह अल्लाह की क़सम खा रहे हैं कि इब्ने स़ाइद दज्जाल है तो मैंने कहा, क्या आप अल्लाह की क़सम उठाते हैं? उन्होंने जवाब दिया मैंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को नबी अकरम(ﷺ) के पास इस पर क़सम उठाते सुना, लेकिन नबी अकरम(ﷺ) ने उन पर एतिराज़ नहीं किया, या आपने उसका इंकार न किया।

सहीह बुख़ारी, किताबुल एतिस़ाम : 7355; सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाह़िम वल फ़ितन : 4331.

फ़ायदा : इब्ने स़य्याद के दज्जाल होने में तो कोई शको शुब्हा नहीं है, इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ इस अम्र में है कि वही दज्जाले अकबर यानी मसीह़ दज्जाल है, या दज्जाले अस़गर है, दज्जाले अकबर, आख़िरी ज़माने में जाहिर होगा, कुछ का ख़्याल है, यही दज्जाले अकबर की सूरत में जाहिर होगा और कुछ का ख़्याल है, आख़िरी दज्जाल और है, जैसाकि हजरत तमीमदारी की हदीस में है, लेकिन इस हदीस से भी पता चलता है कि दज्जाले अकबर पैदा हो चुका है, मौजूद है लेकिन उसका जुहूर आख़िरी ज़माने में होगा, उस वक़्त ईसा (अ.) उसको क़त्ल करेंगे।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَرْمَلَةَ بْنِ عِمْرَانَ التُّجِيبِيُّ، أَخْبَرَنِي ابْنُ، وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ انْطَلَقَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي رَهْطٍ قِبَلَ ابْنِ صَيَّادٍ حَتَّى وَجَدَهُ يَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ عِنْدَ أُطُمِ بَنِي مَغَالَةَ وَقَدْ قَارَبَ ابْنُ صَيَّادٍ يَوْمَئِذٍ الْحُلُمَ فَلَمْ يَشْعُرْ حَتَّى ضَرَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ظَهْرَهُ بِيَدِهِ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لاِبْنِ صَيَّادٍ " أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ " . فَنَظَرَ إِلَيْهِ ابْنُ صَيَّادٍ فَقَالَ أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ الأُمِّيِّينَ . فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ فَرَفَضَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَقَالَ " آمَنْتُ بِاللَّهِ وَبِرُسُلِهِ " . ثُمَّ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَاذَا تَرَى " . قَالَ

(7354) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि हजरत उ़मर बिन ख़त्ताब कुछ लोगों के साथ थे, आप(ﷺ) की मइयत (साथ) में। इब्ने सय्याद की तरफ़ गए, यहाँ तक कि उसको देखा कि वह बनू मग़ाला के क़िले के पास बच्चों के साथ खेल रहा है और इब्ने सय्याद, उन दिनों बालिग़ होने के क़रीब था, उसको पता न चला, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपना हाथ उसकी पुश्त पर मारा, फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इब्ने स़य्याद से कहा कि 'क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ।' तो इब्ने स़य्याद ने आपको देखकर कहा, मैं गवाही देता हूँ कि आप अ़रबों के रसूल हैं, चुनाँचे इब्ने स़य्याद ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से कहा, क्या आप गवाही देते हैं, मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उससे कहा, 'तुझे क्या नजर आता है?' इब्ने स़य्याद ने कहा, मेरे पास सच्चा और झूठा आते हैं, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़र्माया, 'मामला तुम पर गुडमुड कर दिया गया।' फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़र्माया, 'मैंने तेरे लिए दिल में एक चीज़ छुपाई है' तो इब्ने

ابْنُ صَيَّادٍ يَأْتِينِي صَادِقٌ وَكَاذِبٌ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " خُلِّطَ عَلَيْكَ الأَمْرُ " . ثُمَّ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِنِّي قَدْ خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا " . فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ " هُوَ الدُّخُّ " . فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " اخْسَأْ فَلَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ " . فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ذَرْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ أَضْرِبْ عُنُقَهُ . فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِنْ يَكُنْهُ فَلَنْ تُسَلَّطَ عَلَيْهِ وَإِنْ لَمْ يَكُنْهُ فَلاَ خَيْرَ لَكَ فِي قَتْلِهِ "

सय्याद ने कहा, वह दुख़ख़ है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'ज़लीलो ख़्वार हो रहे तू अपनी हैसियत से तजावुज़ नहीं कर सकेगा' तो उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा, मुझे छोड़िए ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं इसकी गर्दन उड़ा दूँ, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे फ़र्माया, 'अगर यह वह है तो तुझे इस पर ग़ल्बा नहीं दिया जाएगा और अगर यह नहीं है तो इस क़त्ल करने में तेरे लिए कोई ख़ैर नहीं है।' क्योंकि मुआहिद को क़त्ल करना सही नहीं हैं।

सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया : 3337; किताबुल जनाइज़ : 1354; किताबुल फ़ितन : 7127; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2235.

وَقَالَ سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، يَقُولُ انْطَلَقَ بَعْدَ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأُبَىُّ بْنُ كَعْبٍ الأَنْصَارِيُّ إِلَى النَّخْلِ الَّتِي فِيهَا ابْنُ صَيَّادٍ حَتَّى إِذَا دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم النَّخْلَ طَفِقَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ وَهُوَ يَخْتِلُ أَنْ يَسْمَعَ مِنِ ابْنِ صَيَّادٍ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ ابْنُ صَيَّادٍ فَرَآهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ مُضْطَجِعٌ عَلَى فِرَاشٍ فِي قَطِيفَةٍ لَهُ فِيهَا زَمْزَمَةٌ فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَّادٍ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ

(7355) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, इस वाक़िया के बाद रसूलुल्लाह(ﷺ) हजरत उबय बिन कअब अंसारी (रज़ि.) उस नख़्लिस्तान में गए, जहाँ इब्ने सय्याद था यहाँ तक कि जब रसूलुल्लाह(ﷺ) नख़्लिस्तान में दाख़िल हो गए तो खजूरों के तनों की आड़ (ओट) लेने लगे और आपकी कोशिश या चाराजोई कर रहे थे कि इब्ने सय्याद आपको देखे, आप इब्ने सय्याद की कोई बात सुन लें। चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसे देखा, वह बिस्तर पर एक चादर में लेटा हुआ है, वह गुनगुना रहा है, तो इब्ने सय्याद की माँ ने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा कि आप खजूरों की ओट ले रहे हैं तो उसने इब्ने सय्याद को कहा, ऐ साफ़ (यह इब्ने

فَقَالَتْ لاِبْنِ صَيَّادٍ يَا صَافِ - وَهُوَ اسْمُ ابْنِ صَيَّادٍ -هَذَا مُحَمَّدٌ . فَثَارَ ابْنُ صَيَّادٍ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ "

सय्याद का नाम है) यह मुहम्मद हैं तो इब्ने सय्याद उछल पड़ा, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर यह उसे रहने देती (इत्तिलाअ न देती) वह (अपनी असलियत बयान कर देता,' यानी उसकी बातों से उसकी अस़लियत नुमायाँ हो जाती। इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

قَالَ سَالِمٌ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ " إِنِّي لأُنْذِرُكُمُوهُ مَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ وَقَدْ أَنْذَرَهُ قَوْمَهُ لَقَدْ أَنْذَرَهُ نُوحٌ قَوْمَهُ وَلَكِنْ أَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلاً لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ تَعَلَّمُوا أَنَّهُ أَعْوَرُ وَأَنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى لَيْسَ بِأَعْوَرَ " . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَأَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيُّ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ بَعْضُ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ يَوْمَ حَذَّرَ النَّاسَ الدَّجَّالَ " إِنَّهُ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ كَافِرٌ يَقْرَؤُهُ مَنْ كَرِهَ عَمَلَهُ أَوْ يَقْرَؤُهُ كُلُّ مُؤْمِنٍ " . وَقَالَ " تَعَلَّمُوا أَنَّهُ لَنْ يَرَى أَحَدٌ مِنْكُمْ رَبَّهُ عَزَّ وَجَلَّ حَتَّى يَمُوتَ " .

(7356) अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) लोगों में ख़िताब के लिए खड़े हुए, अल्लाह के शायाने शान उसकी तारीफ़ बयान की, फिर दज्जाल का ज़िक्र करते हुए फ़र्माया, 'मैं तुम्हें उससे डराता हूँ और हर नबी ने उससे अपनी क़ौम को ख़बरदार किया है, नूह (अ.) ने भी अपनी क़ौम को उससे आगाह किया, लेकिन मैं तुम्हें उसके बारे में ऐसी बात बताता हूँ, जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई, जान लो! वह काना है और अल्लाह तआ़ला यक़ीनन काना नहीं है।' इब्ने शिहाब कहते हैं, मुझे उ़मर बिन साबित अंस़ारी (रज़ि.) ने बताया कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के कुछ साथियों ने बताया है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने जिस दिन लोगों को दज्जाल से होशियार किया, फ़र्माया, 'वाक़िया यह है उसकी आँखों के बीच काफ़िर लिखा हुआ है, उसे हर वह इंसान पढ़ेगा, जो उसके काम को नापसंद करता होगा, या उसे हर मोमिन पढ़ेगा।' और आपने फ़र्माया, 'जान लो! तुममें से कोई हर्गिज़ मौत से पहले अपने रब को नहीं देख सकेगा।'

तख़रीज 7356 : इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّالله عليه وسلم وَمَعَهُ رَهْطٌ مِنْ أَصْحَابِهِ فِيهِمْ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ حَتَّى وَجَدَ ابْنَ صَيَّادٍ غُلاَمًا قَدْ نَاهَزَ الْحُلُمَ يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ عِنْدَ أُطُمِ بَنِي مُعَاوِيَةَ . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمِثْلِ حَدِيثِ يُونُسَ إِلَى مُنْتَهَى حَدِيثِ عُمَرَ بْنِ ثَابِتٍ وَفِي الْحَدِيثِ عَنْ يَعْقُوبَ قَالَ قَالَ أُبَىٌّ - يَعْنِي فِي قَوْلِهِ لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ - قَالَ لَوْ تَرَكَتْهُ أُمُّهُ بَيَّنَ أَمْرَهُ .

(7357) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने साथियों के एक गिरोह के साथ चले, उनमें हजरत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी थे, यहाँ तक कि इब्ने सय्याद को पाया, वह एक क़रीबुल बुलूग़त (जवानी के क़रीब) लड़का है और बच्चों के साथ बनू मुआविया के क़िले के पास खेल रहा है और आगे ऊपर वाली हदीस, उमर बिन साबित (रज़ि.) की हदीस के ख़ात्मा तक बयान की और और उस हदीस में है कि हजरत उबय ने लौ तरकत्हु बय्य-न की वज़ाहत की, अगर उसकी माँ उसको छोड़ देती (उसको आगाह न करती) वह अपना मामला वाज़ेह कर देता।

इसकी तखरीज हदीस 7283 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : बनू मग़ाला और बनू मुआविया के क़िले एक दूसरे के सामने हैं, इसलिए मशहूर यही है कि बनू मग़ाला के क़िला के पास खेल रहे थे, शायद भागकर एक दूसरे की तरफ़ जाते हों, इसलिए कभी एक का नाम लिया गया, कभी दूसरे का।

وَحَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَسَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، جَمِيعًا عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَرَّ بِابْنِ صَيَّادٍ فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فِيهِمْ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَهُوَ يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ عِنْدَ أُطُمِ بَنِي مَغَالَةَ وَهُوَ غُلاَمٌ . بِمَعْنَى حَدِيثِ يُونُسَ وَصَالِحٍ غَيْرَ أَنَّ

(7358) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने साथियों के एक गिरोह के साथ, इब्ने सय्याद के पास से गुज़रे, उनमें उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी थे, वह बनू मग़ाला के क़िले के पास बच्चों के साथ खेल रहा था और वह नौजवान था, आगे ऊपर वाली रिवायत की तरह रिवायत है, लेकिन शोबा की रिवायत में हजरत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) के साथ नख़्लिस्तान की तरफ़ जाने का ज़िक्र नहीं है।

عَبْدَ بْنَ حُمَيْدٍ لَمْ يَذْكُرْ حَدِيثَ ابْنِ عُمَرَ فِي انْطِلاَقِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مَعَ أُبَىِّ بْنِ كَعْبٍ إِلَى النَّخْلِ .

सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद : 3055; किताबुल क़द्र : 6618; सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4329; व फ़िस्सुन्ना : 4757; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2235; और हदीस : 2249.

حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، قَالَ لَقِيَ ابْنُ عُمَرَ ابْنَ صَائِدٍ فِي بَعْضِ طُرُقِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ قَوْلاً أَغْضَبَهُ فَانْتَفَخَ حَتَّى مَلأَ السِّكَّةَ فَدَخَلَ ابْنُ عُمَرَ عَلَى حَفْصَةَ وَقَدْ بَلَغَهَا فَقَالَتْ لَهُ رَحِمَكَ اللَّهُ مَا أَرَدْتَ مِنِ ابْنِ صَائِدٍ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِنَّمَا يَخْرُجُ مِنْ غَضْبَةٍ يَغْضَبُهَا " .

(7359) हजरत नाफ़ेअ (रह.) बयान करते हैं कि इब्ने उमर (रज़ि.) की मदीना के किसी रास्ते में इब्ने साइद से मुलाक़ात हो गई तो उन्होंने उसे ऐसी बात कही, जिससे वह नाराज़ हो गया, जिससे वह इस क़द्र फूल गया, यहाँ तक कि उसने गली को भर दिया, चुनाँचे हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) हजरत हफ़्सा (रज़ि.) के यहाँ गए और उन्हें वाक़िया पहुँच चुका था तो उन्होंने हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) से कहा, अल्लाह तुम पर रहम करे तूने इब्ने साइद को क्यूँ छेड़ा? क्या तुम्हें पता नहीं है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'उसका ज़ुहूर किसी गुस्से के आने पर होगा।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، - يَعْنِي ابْنَ حَسَنِ بْنِ يَسَارٍ - حَدَّثَنَا ابْنُ، عَوْنٍ عَنْ نَافِعٍ، قَالَ كَانَ نَافِعٌ يَقُولُ ابْنُ صَيَّادٍ . قَالَ قَالَ ابْنُ عُمَرَ لَقِيتُهُ مَرَّتَيْنِ - قَالَ -فَلَقِيتُهُ فَقُلْتُ لِبَعْضِهِمْ هَلْ تَحَدَّثُونَ أَنَّهُ هُوَ قَالَ لاَ وَاللَّهِ - قَالَ - قُلْتُ كَذَبْتَنِي وَاللَّهِ لَقَدْ أَخْبَرَنِي بَعْضُكُمْ أَنَّهُ لَنْ يَمُوتَ حَتَّى يَكُونَ أَكْثَرَكُمْ مَالاً وَوَلَدًا فَكَذَلِكَ هُوَ زَعَمُوا الْيَوْمَ -قَالَ - فَتَحَدَّثْنَا ثُمَّ فَارَقْتُهُ - قَالَ - فَلَقِيتُهُ لَقْيَةً أُخْرَى

(7360) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैं इब्ने सय्याद को दो बार मिला हूँ, मैं उसको मिला तो मैंने किसी को कहा, क्या तुम (इसके साथी हो) यह कहते हो, यह वही (दज्जाल) है?' उसने कहा, नहीं! मैंने कहा, तुम मुझे झूठ बताते हो, अल्लाह की क़सम! मुझे तुममें से ही कुछ ने बताया है कि वह हर्गिज़ मरेगा नहीं, यहाँ तक कि सबसे ज़्यादा माल और औलाद वाला होगा, आज लोगों के ख़्याल में वह ऐसा ही है, चुनाँचे हमने बातचीत की, फिर मैं उससे अलग हो गया, फिर मेरी उससे एक और मुलाक़ात हुई और उसकी

وَقَدْ نَفَرَتْ عَيْنُهُ - قَالَ - فَقُلْتُ مَتَى فَعَلَتْ عَيْنُكَ مَا أَرَى قَالَ لاَ أَدْرِي - قَالَ - قُلْتُ لاَ تَدْرِي وَهِيَ فِي رَأْسِكَ قَالَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ خَلَقَهَا فِي عَصَاكَ هَذِهِ . قَالَ فَنَخَرَ كَأَشَدِّ نَخِيرِ حِمَارٍ سَمِعْتُ - قَالَ -فَزَعَمَ بَعْضُ أَصْحَابِي أَنِّي ضَرَبْتُهُ بِعَصًا كَانَتْ مَعِيَ حَتَّى تَكَسَّرَتْ وَأَمَّا أَنَا فَوَاللَّهِ مَا شَعَرْتُ - قَالَ - وَجَاءَ حَتَّى دَخَلَ عَلَى أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ فَحَدَّثَهَا فَقَالَتْ مَا تُرِيدُ إِلَيْهِ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّهُ قَدْ قَالَ " إِنَّ أَوَّلَ مَا يَبْعَثُهُ عَلَى النَّاسِ غَضَبٌ يَغْضَبُهُ " .

आँख सूज चुकी थी मैंने कहा, जो कुछ मैं देख रहा हूँ, यह तेरी आँख ने कब किया (तेरी आँख ऐसे कब हुई) उसने कहा, मुझे पता नहीं है मैंने कहा, तुझे पता नहीं, जबकि यह तेरे सिर में है? उसने कहा, अगर यह अल्लाह चाहे तो उसे तेरे इस डण्डे में पैदा कर दे, फिर उसने गधे की इंतिहाई सख़्त आवाज़ मैंने जो सुनी है, निकाली! हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं, मेरे कुछ साथियों का ख़्याल है, मैंने उसको उस डण्डे के साथ पीटा, जो मेरे पास था, यहाँ तक कि वह टूट गया, लेकिन मैं, अल्लाह की क़सम! मुझे इसका पता नहीं चला, फिर वह आए यहाँ तक कि उम्मुल मोमिनीन के यहाँ चले गए और उन्हें बताया तो उन्होंने कहा, तुम उससे क्या चाहते हो? क्या तुम्हें पता नहीं है कि आपने फ़र्माया है, 'पहली चीज़ जो उसे लोगों के पास भेजेगी, वह एक गुस्सा है, जिसमें वह मुब्तला होगा।'

(20)
بَاب : ذِكْرِ الدَّجَّالِ

बाब 20 : दज्जाल का ज़िक्र और जो कुछ उसके साथ होगा, उसकी कैफ़ियत व नोइयत

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ

(7361) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने लोगों के सामने दज्जाल का ज़िक्र करते हुए फ़र्माया, 'अल्लाह तआला काना नहीं है, ख़बरदार! मसीह दज्जाल की दाएँ आँख कानी है, गोया उसकी आँख फूला हुआ अंगूर है।'

رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ذَكَرَ الدَّجَّالَ بَيْنَ ظَهْرَانَىِ النَّاسِ فَقَالَ " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَيْسَ بِأَعْوَرَ . أَلاَ وَإِنَّ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ أَعْوَرُ الْعَيْنِ الْيُمْنَى كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِئَةٌ " .

फ़ायदा : मसीह़ दज्जाल की दोनों आँखें ऐबदार हैं, दाएँ आँख फूली हुई कानी है और बाएँ आँख मम्सूह़ रोशनी से मह़रूम है, इसलिए त़ाफ़िया अगर दाएँ है तो 'या' के साथ है और अगर बाएँ है तो त़ाफ़िआ हम्ज़ा के साथ है और उसकी आँखों के बीच काफ़ फ़ र (काफ़िर) लिखा होगा, इस वजह से हर मोमिन आदमी उसको शनाख़्त कर लेगा (पहचान लेगा), इब्ने स़य्याद में भी फूली हुई आँख वाली बात थी, इसलिए कुछ दफ़ा उसके बारे में यही दज्जाल होने का शुब्हा पैदा हो जाता था।

حَدَّثَنِي أَبُو الرَّبِيعِ، وَأَبُو كَامِلٍ قَالاَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ - عَنْ أَيُّوبَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، - يَعْنِي ابْنَ إِسْمَاعِيلَ - عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، كِلاَهُمَا عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(7362) इमाम साहब तीन और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं।

तख़रीज 7362 : इसकी तख़रीज किताबुल ईमान : 425 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ وَقَدْ أَنْذَرَ أُمَّتَهُ الأَعْوَرَ الْكَذَّابَ أَلاَ إِنَّهُ أَعْوَرُ وَإِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ وَمَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ ك ف ر " .

(7363) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'हर नबी अपनी उम्मत को काने दज्जाल से डरा चुके हैं, ख़बरदार! वह काना है और तुम्हारा रब काना नहीं है और दज्जाल की आँखों के बीच काफ़ फ़ र लिखा होगा।'

सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन : 7131; किताबुत्तौहीद : 7408; सुनन अबू दाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4316 और हदीस : 7317; जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2245.

حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " الدَّجَّالُ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ ك ف ر أَىْ كَافِرٌ " .

(7364) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबिय्युल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'दज्जाल की दोनों आँखों के बीच काफ़ फ़ र यानी काफ़िर लिखा होगा।'

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ شُعَيْبِ بْنِ الْحَبْحَابِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الدَّجَّالُ مَمْسُوحُ الْعَيْنِ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ كَافِرٌ " . ثُمَّ تَهَجَّاهَا ك ف ر " يَقْرَؤُهُ كُلُّ مُسْلِمٍ".

(7365) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, 'रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'दज्जाल की आँख मिटी होगी (इसलिए उसको मसीह कहते हैं) उसकी दोनों आँखों के बीच काफ़िर लिखा होगा।' फिर आपने उसके हुरूफ़े तहज्जी को अलग पढ़ा, काफ़ फ़ र (उसे हर मुसलमान पढ़ेगा।)

तख़रीज 7365 : सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4318.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الدَّجَّالُ أَعْوَرُ الْعَيْنِ الْيُسْرَى جُفَالُ الشَّعَرِ مَعَهُ جَنَّةٌ وَنَارٌ فَنَارُهُ جَنَّةٌ وَجَنَّتُهُ نَارٌ " .

(7366) हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'दज्जाल की बाएँ आँख कानी होगी, बाल घने होंगे, उसके साथ जन्नत और दोज़ख़ होगी, उसकी आग जन्नत होगी और उसकी जन्नत आग होगी।'

तख़रीज 7366 : सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4071.

मुफ़रदातुल हदीस : जुफ़ालुश्शअर : घने बाल।

फ़ायदा : दज्जाल से कुछ ख़र्के आदत काम नज़र आएँगे, इसलिए लोग उसकी जालसाज़ियों का

शिकार हो जाएँगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इस तरह ख़र्क़े आ़दत के त़ौर पर, उसकी आँखों के बीच काफ़िर लिख दिया होगा, जिसे ख़र्क़े आ़दत के त़ौर पर हर मुसलमान पढ़ा लिखा हो या जाहिल हो पढ़ेगा और कोई काफ़िर पढ़ा लिखा हो या अनपढ़, पढ़ नहीं सकेगा, वह उलूहियत का दावा करेगा लेकिन अपनी आँखों को सही नहीं कर सकेगा और न ही अपनी आँखों के बीच से काफ़िर का लफ़्ज़ मिटा सकेगा, जिससे उसका दजल व फ़रेब मुसलमान पर वाज़ेह़ हो जाएगा।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ أَبِي مَالِكٍ الأَشْجَعِيِّ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لأَنَا أَعْلَمُ بِمَا مَعَ الدَّجَّالِ مِنْهُ مَعَهُ نَهْرَانِ يَجْرِيَانِ أَحَدُهُمَا رَأْىَ الْعَيْنِ مَاءٌ أَبْيَضُ وَالآخَرُ رَأْىَ الْعَيْنِ نَارٌ تَأَجَّجُ فَإِمَّا أَدْرَكَنَّ أَحَدٌ فَلْيَأْتِ النَّهْرَ الَّذِي يَرَاهُ نَارًا وَلْيُغَمِّضْ ثُمَّ لْيُطَأْطِئْ رَأْسَهُ فَيَشْرَبَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مَاءٌ بَارِدٌ وَإِنَّ الدَّجَّالَ مَمْسُوحُ الْعَيْنِ عَلَيْهَا ظَفَرَةٌ غَلِيظَةٌ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ كَافِرٌ يَقْرَؤُهُ كُلُّ مُؤْمِنٍ كَاتِبٍ وَغَيْرِ كَاتِبٍ".

(7367) हजरत हुजैफ़ा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैं ख़ूब जानता हूँ।' दज्जाल के साथ क्या होगा (मैं उसकी ह़क़ीक़त उससे भी ज़्यादा जानता हूँ) उसके साथ दो बहती हुई नहरें होंगी, उनमें से एक भरी आँखों के देखने में (बस़ीरत की नजर से नहीं) सफ़ेद पानी होगा और दूसरा आँख के देखने में (हकीक़त की नजर से नहीं) भड़कती हुई आग होगी, अगर कोई शख़्स यह नज़ारा देखे तो उस नहर (दरिया) में छलाँग लगाए, जिसको आग देखे और आँखें बन्द करले, फिर अपना सिर झुकाकर उससे पानी पी ले, क्योंकि वह ठण्डा पानी होगा और दज्जाल मम्सूह़ुल ऐन (मिटी हुई आँख) होगा, उस आँख पर गोश्त की गुल्टी होगी, उसकी दोनों आँखों के दरम्यान काफ़िर लिखा होगा जिसे हर मोमिन पढ़ा हुआ और अनपढ़ पढ़ लेगा।

सहीह बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया : 3450; किताबुल फ़ितन : 7130; सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाह़िम वल फ़ितन : 4315.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) तअज्जजु यानी तताह़्हजु , भड़कती हुई। लि युग़म्मिज़ : आँखें बन्द कर ले, ताकि भड़कती हुई आग से ख़ौफ़ज़दा न हो। (2) तफ़्रा ग़लीज़ा : गोश्त की गुल्टी या आँख को ढाँपने वाली मोटी खाल (3) कातिब : जिसको लिखना आता हो।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ، حِرَاشٍ عَنْ حُذَيْفَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ فِي الدَّجَّالِ " إِنَّ مَعَهُ مَاءً وَنَارًا فَنَارُهُ مَاءٌ بَارِدٌ وَمَاؤُهُ نَارٌ فَلاَ تَهْلِكُوا " .

(7368) हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं कि आपने दज्जाल के बारे में फ़र्माया, 'उसके साथ आग और पानी होगा, चुनाँचे उसकी आग ठण्डा पानी होगी और उसका पानी आग होगा, लिहाज़ा तुम हलाक न हो जाना।'

तख़रीज 7368 : इसकी तख़रीज हदीस 7294 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ، حِرَاشٍ عَنْ حُذَيْفَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ فِي الدَّجَّالِ " إِنَّ مَعَهُ مَاءً وَنَارًا فَنَارُهُ مَاءٌ بَارِدٌ وَمَاؤُهُ نَارٌ فَلاَ تَهْلِكُوا " . قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ وَأَنَا سَمِعْتُهُ مِنْ، رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

(7369) हजरत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं आपने दज्जाल के बारे में फ़र्माया, 'हक़ीक़त यह है उसके साथ पानी और आग है तो उसकी आग ठण्डा पानी है और उसका पानी आग है तो तुम हलाक न हो जाना तो हजरत अबू मसऊद (रज़ि.) ने कहा, और मैं इस हदीस को रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना है। हज़रत अबू मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने भी यह रिवायत रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी है।

इसकी तख़रीज हदीस में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ صَفْوَانَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ رِبْعِيِّ، بْنِ حِرَاشٍ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَمْرٍو أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ انْطَلَقْتُ مَعَهُ إِلَى حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ فَقَالَ لَهُ عُقْبَةُ حَدِّثْنِي مَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(7370) हजरत अबू मसऊद, उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैं और हजरत बिन ह्रिराश (रज़ि.) हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) की तरफ़ चले, हज़रत उक़्बा (रज़ि.) से कहा, दज्जाल के बारे में जो आपने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना है, मुझे सुनाइए, उन्होंने आपसे बयान किया, दज्जाल

فِي الدَّجَّالِ . قَالَ " إِنَّ الدَّجَّالَ يَخْرُجُ وَإِنَّ مَعَهُ مَاءً وَنَارًا فَأَمَّا الَّذِي يَرَاهُ النَّاسُ مَاءً فَنَارٌ تُحْرِقُ وَأَمَّا الَّذِي يَرَاهُ النَّاسُ نَارًا فَمَاءٌ بَارِدٌ عَذْبٌ فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَلْيَقَعْ فِي الَّذِي يَرَاهُ نَارًا فَإِنَّهُ مَاءٌ عَذْبٌ طَيِّبٌ " . فَقَالَ عُقْبَةُ وَأَنَا قَدْ، سَمِعْتُهُ تَصْدِيقًا، لِحُذَيْفَةَ .

निकलेगा, उसके साथ पानी और आग होगी, चुनाँचे जिसको लोग पानी देखेंगे, वह जला देने वाली आग होगी और जिसको लोग आग देखेंगे, वह शीरीं ठण्डा पानी होगा, लिहाजा तुममें से जो इस वाक़िया को देखे तो वह उसमें गिरे जिसको वह पानी देखे क्योंकि वह ख़ुशगवार मीठा पानी होगा।' हजरत उ़क़्बा (रज़ि.) ने ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) की तस्दीक़ करते हुए कहा और मैं भी आपसे यह रिवायत सुन चुका हूँ।

इसकी तख़रीज हदीस 7294 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، -وَاللَّفْظُ لاِبْنِ حُجْرٍ قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ حُجْرٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ نُعَيْمِ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ رِبْعِيِّ، بْنِ حِرَاشٍ قَالَ اجْتَمَعَ حُذَيْفَةُ وَأَبُو مَسْعُودٍ فَقَالَ حُذَيْفَةُ " لأَنَا بِمَا مَعَ الدَّجَّالِ أَعْلَمُ مِنْهُ إِنَّ مَعَهُ نَهْرًا مِنْ مَاءٍ وَنَهْرًا مِنْ نَارٍ فَأَمَّا الَّذِي تَرَوْنَ أَنَّهُ نَارٌ مَاءٌ وَأَمَّا الَّذِي تَرَوْنَ أَنَّهُ مَاءٌ نَارٌ فَمَنْ أَدْرَكَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَأَرَادَ الْمَاءَ فَلْيَشْرَبْ مِنَ الَّذِي يَرَاهُ أَنَّهُ نَارٌ فَإِنَّهُ سَيَجِدُهُ مَاءً " . قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ هَكَذَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ .

(7371) हजरत रिब्ई बिन ह़िराश (रज़ि.) बयान करते हैं कि ह़ज़रत हुज़ैफ़ा और ह़ज़रत अबू मसऊ़द (रज़ि.) इकट्ठे हुए तो ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने कहा, 'दज्जाल के साथ जो कुछ है मैं उसकी ह़क़ीक़त उससे ज़्यादा जानता हूँ, उसके साथ एक पानी का दरिया होगा, और एक दरिया आग का होगा, चुनाँचे वह जिसको तुम देखोगे कि वह आग है, पानी होगा और रहा वह जिसको तुम देखोगे कि वह पानी है, आग होगी, लिहाज़ा तुममें से जो इस वाक़िया को पाये और पानी पीना चाहे तो उससे पिये, जिसको आग देखे, क्योंकि वह उसको यक़ीनन पानी पाएगा।' हजरत अबू मसऊ़द (रज़ि.) कहने लगे, मैंने भी नबी अकरम(ﷺ) को इस तरह बयान करते सुना।

इसकी तख़रीज हदीस 7294 में गुज़र चुकी है।

(7372) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'क्या मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में ऐसी बात न बताऊँ, जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई? वह काना होगा और इस सूरते हाल में आएगा कि उसके साथ जन्नत और दोज़ख़ की मिस्ल होगी, चुनाँचे जिसको वह जन्नत कहेगा, वह आग होगी और मैंने तुम्हें दज्जाल से ख़बरदार कर दिया, जैसाकि उससे हज़रत नूह (अ.) ने अपनी क़ौम को मुतनब्बा किया था।'

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3338.

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي، سَلَمَةَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَلاَ أُخْبِرُكُمْ عَنِ الدَّجَّالِ حَدِيثًا مَا حَدَّثَهُ نَبِيٌّ قَوْمَهُ إِنَّهُ أَعْوَرُ وَإِنَّهُ يَجِيءُ مَعَهُ مِثْلُ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ فَالَّتِي يَقُولُ إِنَّهَا الْجَنَّةُ هِيَ النَّارُ وَإِنِّي أَنْذَرْتُكُمْ بِهِ كَمَا أَنْذَرَ بِهِ نُوحٌ قَوْمَهُ " .

(7373) हजरत नव्वास बिन सम्आन (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक सुबह रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दज्जाल का तज़्किरा किया और उसके मामले को हक़ीर और बड़ा बयान किया, यहाँ तक कि हमने उसे खजूरों के झुण्ड में ख़्याल किया, चुनाँचे हम शाम को आपके पास गए, आपने हमारे तास्सुर को या ख़्याल को भाँप लिया तो फ़र्माया, 'तुम्हारा क्या हाल है?' हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने सुबह दज्जाल का तज़्किरा किया और आपने उसके बारे में कभी पस्त आवाज़ में बातचीत की और कभी बुलंद आवाज़ में, या उसको कभी घटा दिया और कभी बढ़ाया (यानी उसके फ़ित्ने की कभी तहक़ीर की और कभी उसके फ़ित्ने को बड़ा क़रार दिया।) यहाँ तक कि हमने उसे खजूरों के झुण्ड में मौजूद ख़्याल किया, आपने फ़र्माया, 'दज्जाल से ज़्यादा तुम्हारे बारे में मुझे और चीज़

حَدَّثَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ، زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ، بْنُ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ جَابِرٍ الطَّائِيُّ، قَاضِي حِمْصَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ، جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ، جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ الْحَضْرَمِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ النَّوَّاسَ بْنَ سَمْعَانَ الْكِلاَبِيَّ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ الرَّازِيُّ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ جَابِرٍ الطَّائِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ، نُفَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ، جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ، قَالَ ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الدَّجَّالَ

ذَاتَ غَدَاةٍ فَخَفَّضَ فِيهِ وَرَفَّعَ حَتَّى ظَنَنَّاهُ فِي طَائِفَةِ النَّخْلِ فَلَمَّا رُحْنَا إِلَيْهِ عَرَفَ ذَلِكَ فِينَا فَقَالَ " مَا شَأْنُكُمْ " . قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَكَرْتَ الدَّجَّالَ غَدَاةً فَخَفَّضْتَ فِيهِ وَرَفَّعْتَ حَتَّى ظَنَنَّاهُ فِي طَائِفَةِ النَّخْلِ . فَقَالَ " غَيْرُ الدَّجَّالِ أَخْوَفُنِي عَلَيْكُمْ إِنْ يَخْرُجْ وَأَنَا فِيكُمْ فَأَنَا حَجِيجُهُ دُونَكُمْ وَإِنْ يَخْرُجْ وَلَسْتُ فِيكُمْ فَامْرُؤٌ حَجِيجُ نَفْسِهِ وَاللَّهُ خَلِيفَتِي عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ إِنَّهُ شَابٌّ قَطَطٌ عَيْنُهُ طَافِئَةٌ كَأَنِّي أُشَبِّهُهُ بِعَبْدِ الْعُزَّى بْنِ قَطَنٍ فَمَنْ أَدْرَكَهُ مِنْكُمْ فَلْيَقْرَأْ عَلَيْهِ فَوَاتِحَ سُورَةِ الْكَهْفِ إِنَّهُ خَارِجٌ خَلَّةً بَيْنَ الشَّأْمِ وَالْعِرَاقِ فَعَاثَ يَمِينًا وَعَاثَ شِمَالاً يَا عِبَادَ اللَّهِ فَاثْبُتُوا " . قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا لَبْثُهُ فِي الأَرْضِ قَالَ " أَرْبَعُونَ يَوْمًا يَوْمٌ كَسَنَةٍ وَيَوْمٌ كَشَهْرٍ وَيَوْمٌ كَجُمُعَةٍ وَسَائِرُ أَيَّامِهِ كَأَيَّامِكُمْ " . قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَذَلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَسَنَةٍ أَتَكْفِينَا فِيهِ صَلاَةُ يَوْمٍ قَالَ " لاَ اقْدُرُوا لَهُ قَدْرَهُ " . قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا إِسْرَاعُهُ فِي الأَرْضِ قَالَ " كَالْغَيْثِ اسْتَدْبَرَتْهُ الرِّيحُ فَيَأْتِي عَلَى الْقَوْمِ فَيَدْعُوهُمْ فَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَجِيبُونَ لَهُ فَيَأْمُرُ السَّمَاءَ

का अंदेशा है, अगर वह मेरी तुम्हारे अंदर मौजदूगी में निकला तो मैं तुमसे पहले उसका मुक़ाबला करूँगा (उस पर दलील से ग़ालिब आउँगा) और अगर वह मेरी ग़ैर मौजूदगी में निकला तो हर इंसान अपनी तरफ़ से मुक़ाबला करेगा और हर मुसलमान पर अल्लाह निगहबान है, या मेरी तरफ़ से मुहाफ़िज़ है, वह नौजवान घुँघराले बाल वाला होगा, उसकी एक आँख मिटी हुई है, गोया कि मैं उसे अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन क़तन से मुशाबिहत देता हूँ, तुममें से जो शख़्स उसको पाए तो वह उस पर सूरह कहफ़ की इब्तिदाई आयात की तिलावत करे, बिला शुब्हा वह शाम और इराक़ के बीच रास्ते से निकलेगा और दाएँ बाएँ फ़साद मचाएगा, ऐ अल्लाह के बन्दों! साबित क़दम रहना।' हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! वह ज़मीन में कितनी मुद्दत ठहरेगा? आपने फ़र्माया, 'चालीस दिन, एक दिन साल भर का होगा और एक दिन महीना का और एक दिन हफ़्ते भर का और बाक़ी दिन आ़म दिनों की तरह'' हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! तो वह दिन जो साल भर के बराबर होगा तो क्या हमें उसमें एक दिन की नमाज़ें किफ़ायत कर जाएँगी? आपने फ़र्माया, 'नहीं! तुम दिन का अंदाज़ा कर लेना।' हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! ज़मीन में उसकी तेज़ रफ़्तारी कितनी होगी? आपने फ़र्माया, 'उस बारिश की तरह जिसको हवा धकेल रही हो, चुनाँचे वह एक क़ौम के पास आकर, उन्हें दअ़वत देगा, वह लोग उस पर ईमान ले आएँगे

فَتُمْطِرُ وَالأَرْضَ فَتُنْبِتُ فَتَرُوحُ عَلَيْهِمْ سَارِحَتُهُمْ أَطْوَلَ مَا كَانَتْ ذُرًا وَأَسْبَغَهُ ضُرُوعًا وَأَمَدَّهُ خَوَاصِرَ ثُمَّ يَأْتِي الْقَوْمَ فَيَدْعُوهُمْ فَيَرُدُّونَ عَلَيْهِ قَوْلَهُ فَيَنْصَرِفُ عَنْهُمْ فَيُصْبِحُونَ مُمْحِلِينَ لَيْسَ بِأَيْدِيهِمْ شَيْءٌ مِنْ أَمْوَالِهِمْ وَيَمُرُّ بِالْخَرِبَةِ فَيَقُولُ لَهَا أَخْرِجِي كُنُوزَكِ . فَتَتْبَعُهُ كُنُوزُهَا كَيَعَاسِيبِ النَّحْلِ ثُمَّ يَدْعُو رَجُلاً مُمْتَلِئًا شَبَابًا فَيَضْرِبُهُ بِالسَّيْفِ فَيَقْطَعُهُ جَزْلَتَيْنِ رَمْيَةَ الْغَرَضِ ثُمَّ يَدْعُوهُ فَيُقْبِلُ وَيَتَهَلَّلُ وَجْهُهُ يَضْحَكُ فَبَيْنَمَا هُوَ كَذَلِكَ إِذْ بَعَثَ اللَّهُ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ فَيَنْزِلُ عِنْدَ الْمَنَارَةِ الْبَيْضَاءِ شَرْقِيَّ دِمَشْقَ بَيْنَ مَهْرُودَتَيْنِ وَاضِعًا كَفَّيْهِ عَلَى أَجْنِحَةِ مَلَكَيْنِ إِذَا طَأْطَأَ رَأْسَهُ قَطَرَ وَإِذَا رَفَعَهُ تَحَدَّرَ مِنْهُ جُمَانٌ كَاللُّؤْلُؤِ فَلاَ يَحِلُّ لِكَافِرٍ يَجِدُ رِيحَ نَفَسِهِ إِلاَّ مَاتَ وَنَفَسُهُ يَنْتَهِي حَيْثُ يَنْتَهِي طَرْفُهُ فَيَطْلُبُهُ حَتَّى يُدْرِكَهُ بِبَابِ لُدٍّ فَيَقْتُلُهُ ثُمَّ يَأْتِي عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ قَوْمٌ قَدْ عَصَمَهُمُ اللَّهُ مِنْهُ فَيَمْسَحُ عَنْ وُجُوهِهِمْ وَيُحَدِّثُهُمْ بِدَرَجَاتِهِمْ فِي الْجَنَّةِ فَبَيْنَمَا هُوَ كَذَلِكَ إِذْ أَوْحَى اللَّهُ إِلَى عِيسَى إِنِّي قَدْ أَخْرَجْتُ عِبَادًا لِي لاَ يَدَانِ لأَحَدٍ بِقِتَالِهِمْ فَحَرِّزْ

और उसकी बातों को मान लेंगे, चुनाँचे वह बादलों को हुक्म देगा, वह बारिश बरसाएँगे, ज़मीन उसके हुक्म से उगाएगी, शाम को उनको चराने वाले मवेशी आएँगे तो उनकी कोहानें पहले से लम्बी होंगे और थन बड़े और कोखें दराज़ होंगी, फिर दूसरी क़ौम के पास आएगा और उन्हें दअवत देगा, वह उसकी बातों की तर्दीद करेंगे तो वह उनके पास से चला जाएगा तो वह सुबह कहत़ का शिकार हो चुके होंगे, उनके अम्वाल में से कुछ भी उनके पास नहीं होगा और वह एक बंजर इलाक़े से गुज़रेगा तो उसे कहेगा, अपने ख़ज़ाने निकाल दे तो उसके ख़ज़ाने उसके पीछे चलेंगे, जैसाकि शहद की मक्खियाँ अपने सरदार के पीछे चलती हैं, फिर वह एक भरपूर जवानी वाले आदमी को बुलाएगा और उसे तलवार मारकर दो टुकड़े कर देगा, जिनके बीच तीर के निशाने के बक़द्र फ़ासला होगा, फिर वह उसको बुलाएगा, वह दमकते चेहरे के साथ हँसता हुआ बढ़ेगा, वह इन्हीं हालात में होगा कि अल्लाह मसीह इब्ने मरियम (अ.) को भेज देगा तो वह दमिश्क़ के मश्रिक़ में सफ़ेद मिनारा के पास दो ज़र्द चादरों में, दो फ़रिश्तों के परों पर, अपनी दोनों हथेलियाँ रखे हुए उतरेंगे, जब वह अपना सिर झुकाएँगे तो पसीना बहेगा और जब वह उसे उठाएँगे तो उसे मोती जैसे दानों की सूरत में क़तरे गिरेंगे तो जो काफ़िर भी हजरत ईसा (अ.) के साँस की ख़ुश्बू पाएगा, वह ज़िन्दा नहीं रह सकेगा और उनका साँस वहाँ तक पहुँचेगा, जहाँ

عِبَادِي إِلَى الطُّورِ . وَيَبْعَثُ اللَّهُ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ فَيَمُرُّ أَوَائِلُهُمْ عَلَى بُحَيْرَةِ طَبَرِيَّةَ فَيَشْرَبُونَ مَا فِيهَا وَيَمُرُّ آخِرُهُمْ فَيَقُولُونَ لَقَدْ كَانَ بِهَذِهِ مَرَّةً مَاءٌ . وَيُحْصَرُ نَبِيُّ اللَّهُ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ حَتَّى يَكُونَ رَأْسُ الثَّوْرِ لأَحَدِهِمْ خَيْرًا مِنْ مِائَةِ دِينَارٍ لأَحَدِكُمُ الْيَوْمَ فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ فَيُرْسِلُ اللَّهُ عَلَيْهِمُ النَّغَفَ فِي رِقَابِهِمْ فَيُصْبِحُونَ فَرْسَى كَمَوْتِ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ يَهْبِطُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ إِلَى الأَرْضِ فَلاَ يَجِدُونَ فِي الأَرْضِ مَوْضِعَ شِبْرٍ إِلاَّ مَلأَهُ زَهَمُهُمْ وَنَتْنُهُمْ فَيَرْغَبُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ إِلَى اللَّهِ فَيُرْسِلُ اللَّهُ طَيْرًا كَأَعْنَاقِ الْبُخْتِ فَتَحْمِلُهُمْ فَتَطْرَحُهُمْ حَيْثُ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ مَطَرًا لاَ يَكُنُّ مِنْهُ بَيْتُ مَدَرٍ وَلاَ وَبَرٍ فَيَغْسِلُ الأَرْضَ حَتَّى يَتْرُكَهَا كَالزَّلَفَةِ ثُمَّ يُقَالُ لِلأَرْضِ أَنْبِتِي ثَمَرَتَكِ وَرُدِّي بَرَكَتَكِ . فَيَوْمَئِذٍ تَأْكُلُ الْعِصَابَةُ مِنَ الرُّمَّانَةِ وَيَسْتَظِلُّونَ بِقِحْفِهَا وَيُبَارَكُ فِي الرِّسْلِ حَتَّى أَنَّ اللِّقْحَةَ مِنَ الإِبِلِ لَتَكْفِي الْفِئَامَ مِنَ النَّاسِ وَاللِّقْحَةَ مِنَ الْبَقَرِ لَتَكْفِي الْقَبِيلَةَ مِنَ النَّاسِ وَاللِّقْحَةَ

तक उनकी नज़र पहुँचेगी तो हज़रत ईसा (अ.), दज्जाल को तलाश करेंगे यहाँ तक कि लुद मक़ाम के दरवाज़े पर उसको जा लेंगे और उसे क़त्ल कर देंगे, फिर ईसा (अ.) के पास एक क़ौम आएगी, जिसे अल्लाह ने दज्जाल से बचा लिया होगा (वह उससे मुतास्सिर नहीं होंगे) तो हजरत ईसा (अ.) उनके चेहरों पर हाथ फेरेंगे और उन्हे जन्नत में उनके दरजात बताएँगे, उन्हीं हालात में अल्लाह हजरत ईसा (अ.) की तरफ़ वह्य करेगा कि मैंने अपने ऐसे बन्दे निकाल दिये हैं, किसी को उनसे जंग करने का यारा नहीं है, लिहाज़ा मेरे बन्दों को तूर की पनाह में ले जाइए और अल्लाह याजूज माजूज को भेज देगा और वह हर टीले से दौड़ रहे होंगे चुनाँचे उनका पहला गिरोह वह बहीरा तब्रिया से गुज़रेगा और वह उसका सारा पानी पी जाएगा और उनका दूसरा गिरोह आएगा और कहेगा कभी इधर पानी रहा है, अल्लाह के नबी ईसा (अ.) और उनके साथी, महसूर हो जाएँगे (जबले तूर में बन्द हो जाएँगे) यहाँ तक कि उनमें से किसी के लिए बैल का सिर, आज तुम्हारे किसी एक के नज़दीक सौ दीनार से बेहतर होगा। चुनाँचे अल्लाह के नबी ईसा (अ.) और उनके साथ अल्लाह तआला की तरफ़ राग़िब होंगे, (दुआ करेंगे) तो अल्लाह तआला उनकी गर्दनों में कीड़े डाल देगा तो वह एक शख़्स की तरह फ़ौरन मर जाएँगे, फिर अल्लाह के नबी ईसा (अ.) और उनके साथी (तूर से) ज़मीन पर उतर आएँगे तो उन्हें ज़मीन का एक बालिश्त टुकड़ा भी ऐसा नहीं मिलेगा,

مِنَ الْغَنَمِ لَتَكْفِي الْفَخِذَ مِنَ النَّاسِ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ بَعَثَ اللَّهُ رِيحًا طَيِّبَةً فَتَأْخُذُهُمْ تَحْتَ آبَاطِهِمْ فَتَقْبِضُ رُوحَ كُلِّ مُؤْمِنٍ وَكُلِّ مُسْلِمٍ وَيَبْقَى شِرَارُ النَّاسِ يَتَهَارَجُونَ فِيهَا تَهَارُجَ الْحُمُرِ فَعَلَيْهِمْ تَقُومُ السَّاعَةُ " .

जो उनकी चिकनाई और बदबू से भरा न हो, चुनाँचे अल्लाह के नबी ईसा (अ.) और उनके साथी अल्लाह तआला की तरफ़ राग़िब होंगे, (दुआ करेंगे) चुनाँचे अल्लाह तआला बुख़्ती ऊँटों की गर्दनों जैसे परिन्दे भेजेगा, जो उन्हें उठाएँगे और जहाँ अल्लाह चाहेगा, उन्हें फेंक देंगे, यहाँ तक कि वह उसे शीशा की तरह साफ़ शफ़्फ़ाफ़ बनाकर छोड़ेगी, फिर ज़मीन से कहा जाएगा, अपनी पैदावार उगा और अपनी बरकत लौटा तो उन दिनों एक अनार जमाअत को सैर करेगा और वह उसके छिल्के के साये में बैठेगी और दूध में बरकत डाली जाएगी, यहाँ तक कि उन्हें दूध देने वाली ऊँटनी लोगों की एक बड़ी जमाअत के लिए काफ़ी होगी और दूध देने वाली गाय लोगों के एक क़बीले के लिए काफ़ी होगी और दूध देने वाली बकरी लोगों के एक कुंबा के लिए काफ़ी होगी, उन्हीं हालात में अचानक अल्लाह एक पाकीज़ा हवा भेजेगा, जो लोगों की बग़लों को छूएगी और वह हर मोमिन और हर मुस्लिम की जान क़ब्ज़ कर लेगी और बदतरीन लोग रह जाएँगे, जो गधों की तरह खुल्लम खुल्ला ताल्लुक़ात क़ायम करेंगे और उन्हीं पर क़ियामत कायम होगी।

सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4321; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2240; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4075, 4076.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) फ़ख़फ़्फ़ज़ फ़ीहि व रफ़्फ़अ : उसके बारे में लम्बी बातचीत करते हुए, आवाज़ को कभी पस्त किया और कभी बुलंद किया, या कभी उसके मक़ाम व मर्तबा की तहक़ीर की कि वह काना है अल्लाह के नज़दीक वह बहुत हक़ीर है, वह सिर्फ एक आदमी को क़त्ल कर सकेगा,

बाद में क़त्ल होगा, उसके साथी हारकर क़त्ल हो जाएँगे और कभी उसके फ़ित्ने और आज़माइश को बड़ा बयान किया और उससे ख़र्क़े आदत काम सरज़द होंगे, इसलिए हर नबी ने उसके ख़तरा से डराया है। (2) गैरुद्दज्जालि अख़्वफ़ुनी अलैकुम : यानी दज्जाल के सिवा फ़ित्ने मुझे ज़्यादा ख़ौफ़नाक महसूस होते हैं, जैसे बाहमी खानाजंगी, दुनिया की हिर्स व आज़, गुमराह करने वाले ज़लालत पेशा रहनुमा। (लीडरान) (3) अना हजीजुहू : मैं उसके साथ दलील व हुज्जत से बात करूँगा, यह बात आपने सिर्फ़ अला सबीलील फ़र्ज कही थी, क्यों कि वह समझ रहे थे शायद वह नमूदार हो चुका है, वरना यह तो तै है, उसका ज़हूर आख़िरी ज़माने में होगा, जैसाकि आगे आ रहा है और हजरत ईसा (अ.) उसे क़त्ल करेंगे। (4) कअन्नी ल मुशशबिहुहू : चूँकि दज्जाल जैसी क़बीह और बदशक्ल, किसी की शक्ल नहीं है, इसलिए आपने कअन्नी, गोया कि का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया। (5) फ़ल्यक्रउ अलैहि फ़वातिह सूरतिल कहफ़ : उसके फ़ित्ने से बचने के लिए सूरह कहफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़े, दज्जाल के फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहने के लिए इब्तिदाई तीन आयात का पढ़ना काफ़ी है, अगरचे याद, दस आयात करनी चाहिए, क्योकि बाद वाली आयात में इंसान की आज़माइश व इब्तिला का तज़्किरा है और ज़मीनी चीज़ों की दिलकशी और रानाई का इम्तिहान लेने के मक़्सद के लिए बयान है। (6) ख़ल्लतन : संगरेज़ों वाला रास्ता, रास्ता। (7) आस : माज़ी का सेग़ा क्योंकि उसके फ़साद का वुक़ूअ यक़ीनी है कि वह बहुत जल्द फ़साद फैलाएगा। (8) उक़्दुरू लहू क़दरुहू : दिन का अंदाज़ा लगाओ जितनी देर के बाद उन दिनों नमाज़ पढ़ते हो, उतनी देर के बाद नमाज़ें पढ़ते रहना, क्योंकि अल्लाह ख़र्क़े आदत के तौर पर इब्तिदाई तीन दिन साल महीना और हफ़्ता के बराबर कर देगा सूरज या ज़मीन की रफ़्तार इंतिहाई सुस्त कर देगा, या वह ऐसे इलाक़े से नमूदार होगा, जहाँ दिन रात का बार बार आना कम होते हैं।

इस हदीस से साबित होता है कि जिन इलाक़ों में दिन रात आम तरीक़े के मुताबिक़ नहीं हैं, वह नमाज़ और रोज़ा के लिए अंदाज़ा कर लेंगे और जिन इलाक़ों में दिन और रात छः छः माह के हैं, वहाँ दिन, रात में सिर्फ़ पाँच नमाज़ें काफ़ी नहीं होंगे, बल्कि चौबीस घंटों में, पाँच नमाज़ें पढ़नी होंगी और उसके मुताबिक़ रोज़े रखना होगा, उसके लिए अपनी क़रीबी इलाक़े के दिन रात को सामने रखा जाएगा। (9) कल्ग़ैस इस्तदबरत्हुरीहु : उस बादल की तरह जिसको हवा उड़ाती है, यानी वह मसाफ़त बहुत जल्द तै करेगा, लोगों के इम्तिहान और आज़माइश के लिए उससे ख़ारिक़े आदत बहुत से काम सरज़द होंगे और यह सब कुछ अल्लाह की मशिय्यत और इरादे से होगा। (10) फ़युस्बिहून मुम्हिलीन : वह कहत का शिकार हो जाएँगे। (11) यआसीब, यअसूब की जमा है, शहद की मक्खियों के सरदार, जिसके पीछे वह उड़ती हैं। (12) जज़्लतुन : टुकड़ा (13) रम्यतुल ग़र्ज़ : तीर के निशाने का फ़ासला, दोनों टुकड़ों के बीच काफ़ी फ़ासला होगा। (14) यंज़िलु इन्दल मनारतिल बैज़ाअ शर्क़िय्य दमिश्क़ : वह दमिश्क़ के मश्रिक़ में सफ़ेद मिनारे के पास उतरेंगे। (15) बैना महरूदतैन : दो ज़र्द चादरों में, यानी

उनका जोड़ा इंतिहाई ख़ूबसूरत होगा। (16) जुमान : चाँदी के दाने या मुनक्के। बक़ौल हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) जब हजरत ईसा (अ.) को आसमान की तरफ़ उठाया गया है तो उनके सिर से पानी के क़तरे गिर रहे थे, उस हालत में वह उतरेंगे, जो इस बात की अलामत होगी कि आप ज़िन्दा रहे हैं। (17) फ़ला यहिल्लु लिकाफ़िरिन अय्यजिदा रीहा नफ़्सिही इल्ला मात : जिस काफ़िर तक ईसा (अ.) के साँस की महक पहुँचेगी, वह मौत से बच नहीं सकेगा, इसका यह मआनी नहीं है कि वह फ़ौरन मर जाएगा, बल्कि मक़्सद यह है कि अब वह ज़िन्दा नहीं रह सकेगा और दज्जाल को ख़ुसूसी तौर पर आप क़त्ल करेंगे, ताकि लोगों को उसका ख़ून अपने भाले पर दिखाएँ, वरना वह भी आपके साँस की बू से हलाक हो जाता, इसलिए किसी तावील की ज़रूरत नहीं है। (18) लुद : आजकल इस्राईल का हवाई अड्डा है और यह शहर फ़िलिस्तीन के इलाक़े में , बैतुल मक़्दिस के क़रीब वाक़ेअ है। (19) यम्सहु अन वुजूहिहिम : इज़्ज़त व तक्रीम के लिए, सफ़र की वजह से उनके चेहरों पर जो गर्दो ग़ुबार होगी, उसको साफ़ करेंगे, या दज्जाल के क़त्ल की ख़बर देकर, तबर्रुक व बरकत के लिए, ग़म व हुज़्न और ख़ौफ़ दूर करने के लिए हाथ फेरेंगे। (20) इबादल् ली : अपने तक्वीनी और तक्दीरी हुक्म को पूरा करने के लिए अपने बन्दे निकाले हैं कि ला यदानि लि अहृदिन बि क़ितालिहिम : उनसे जंग के लिए किसी के दो हाथ यानी क़ुव्वत व ताक़त नहीं है और जब इबाद से मुराद नेक बन्दे हों तो उनकी अल्लाह की तरफ़ बिला सिला व वास्ता इज़ाफ़त की जाती है, जैसे इबादुर्रहमान, अब्दुहू, अब्दुल्लाह। अगर तक्वीनी हुकूमत के पाबन्द मुराद हों, जो काफ़िर व सरकश होते हैं तो फिर इज़ाफ़त के लिए लाम का वास्ता लाया जाता है जैसे फ़र्माया, 'बअसना अलैकुम इबादल्लना' और इस हदीस में इबादल् ली और ईसा (अ.) के साथियों के लिए है। (21) हरिंज़ इबादी : मेरे बन्दों को महफ़ूज़ करो, पनाह दो (तूर पर ले जाकर) (22) हदबुन : टीला बुलंद जगह (23) यंसिलून : दौड़ रहे होंगे। (24) बुहैरा तबरिय्या : उर्दुन के इलाक़े में है। (25) कज्रय्या तबरिय्या : शहर है जिसके क़रीब यह बुहैरा वाक़ेअ है और इमाम तब्रानी, उस शहर की तरफ़ मंसूब हैं। (26) काना बि हाजिही मरतन माअन : अलामात व निशानात देखकर कहेंगे, कभी यहाँ पानी रहा है। जबले तूर पर ईसा (अ.) और उनके साथी महसूर हो जाएँगे तो ग़िज़ाई क़िल्लत की वजह से गाय या बैल का सिर जो आम गोश्त से सस्ता होता है, उसकी क़ीमत भी सौ (100) दीनार तक पहुँच जाएगी। (27) नग़फ़ : वह कीड़ा जो ऊँटों और बकरियों के नाकों (नथुनों) में पैदा होता है। (28) फ़र्सा : फ़रीस की जमा है, हलाक होने वाले, बैक वक़्त सब ग़ज़बे इलाही का शिकार (फ़रीसा) हो जाएँगे। (29) ज़हमुन : चिक्नाहट, बदबू के मआनी में भी आ जाता है। (30) ला यकुन्नु मिन्ह : उस बारिश से कोई ओट या छत किसी को बचा नहीं सकेगी , बारिश हर जगह, छत टपक कर भी पहुँच जाएगी। (31) जलफ़तुन शैततुन : डेम। (32) फ़िआम : गिरोह, जमाअत, क़बीला के नीचे बतन (ख़ानदान) और उसके नीचे। (33) फ़ख़िज़ : कुंबा एक आदमी का अहलो अयाल (34) तहारुज : इख़्तिलात, मेल मिलाप, मुराद जिंसी तअल्लुक़ात हैं।

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ، وَالْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ - قَالَ ابْنُ حُجْرٍ دَخَلَ حَدِيثُ أَحَدِهِمَا فِي حَدِيثِ الآخَرِ - عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَ مَا ذَكَرْنَا وَزَادَ بَعْدَ قَوْلِهِ " لَقَدْ كَانَ بِهَذِهِ مَرَّةً مَاءٌ ثُمَّ يَسِيرُونَ حَتَّى يَنْتَهُوا إِلَى جَبَلِ الْخَمَرِ وَهُوَ جَبَلُ بَيْتِ الْمَقْدِسِ فَيَقُولُونَ لَقَدْ قَتَلْنَا مَنْ فِي الأَرْضِ هَلُمَّ فَلْنَقْتُلْ مَنْ فِي السَّمَاءِ . فَيَرْمُونَ بِنُشَّابِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ فَيَرُدُّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ نُشَّابَهُمْ مَخْضُوبَةً دَمًا " . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ حُجْرٍ " فَإِنِّي قَدْ أَنْزَلْتُ عِبَادًا لِي لاَ يَدَىْ لأَحَدٍ بِقِتَالِهِمْ " .

(7374) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली हदीस में, 'कभी यहाँ पानी रहा है' के बाद यह इज़ाफ़ा करते हैं, फिर याजूज माजूज के लोग चलते चलते, जबलुल ख़म्र तक जो बैतुल मक़्दिस में एक पहाड़ है, पहुँच जाएँगे और कहेंगे, हमने ज़मीन वालों को तो क़त्ल कर दिया है, आओ अब हम आसमान के बाशिन्दों (वासियों) को क़त्ल करें। चुनाँचे वह अपने तीर आसमान की तरफ़ चलाएँगे, अल्लाह उनके तीरों को उनकी तरफ ख़ून आलूदा करके लौटाएगा।' और इस हदीस में यह लफ़्ज़ है (मैंने अपने बन्दे उतारे हैं) अख़्रज्तु की जगह अंज़ल्तु है और ला यदानिन की जगह ला युक्रा है, मआनी एक ही है।

इसकी तख़रीज हदीस 7299 में गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : नुश्शाब नुश्शाबा की जमा है जिसके मआनी तीर के हैं।

(21)

بَابُ : فِي صِفَةِ الدَّجَّالِ وَتَحْرِيمِ الْمَدِينَةِ عَلَيْهِ، وَقَتْلِهِ الْمُؤْمِنَ وَإِحْيَائِهِ

बाब 21 : दज्जाल की सूरत व कैफ़ियत कि मदीना में उसका दाख़िला मम्नूअ (मना) है और वह एक मोमिन को क़त्ल करके ज़िन्दा करेगा (फिर किसी को मार नहीं सकेगा)

حَدَّثَنِي عَمْرٌو النَّاقِدُ، وَالْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، - وَأَلْفَاظُهُمْ مُتَقَارِبَةٌ وَالسِّيَاقُ

(7375) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की रिवायत, इमाम साहब अपने तीन उस्तादों से बयान करते हैं, सबके अल्फ़ाज़

لِعَبْدٍ - قَالَ حَدَّثَنِي وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، -وَهُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، قَالَ حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَوْمًا حَدِيثًا طَوِيلاً عَنِ الدَّجَّالِ فَكَانَ فِيمَا حَدَّثَنَا قَالَ " يَأْتِي وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْهِ أَنْ يَدْخُلَ نِقَابَ الْمَدِينَةِ فَيَنْتَهِي إِلَى بَعْضِ السِّبَاخِ الَّتِي تَلِي الْمَدِينَةَ فَيَخْرُجُ إِلَيْهِ يَوْمَئِذٍ رَجُلٌ هُوَ خَيْرُ النَّاسِ - أَوْ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ - فَيَقُولُ لَهُ أَشْهَدُ أَنَّكَ الدَّجَّالُ الَّذِي حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدِيثَهُ فَيَقُولُ الدَّجَّالُ أَرَأَيْتُمْ إِنْ قَتَلْتُ هَذَا ثُمَّ أَحْيَيْتُهُ أَتَشُكُّونَ فِي الأَمْرِ فَيَقُولُونَ لاَ . قَالَ فَيَقْتُلُهُ ثُمَّ يُحْيِيهِ فَيَقُولُ حِينَ يُحْيِيهِ وَاللَّهِ مَا كُنْتُ فِيكَ قَطُّ أَشَدَّ بَصِيرَةً مِنِّي الآنَ - قَالَ - فَيُرِيدُ الدَّجَّالُ أَنْ يَقْتُلَهُ فَلاَ يُسَلَّطُ عَلَيْهِ " . قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ يُقَالُ إِنَّ هَذَا الرَّجُلَ هُوَ الْخَضِرُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ .

मिलते जुलते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दज्जाल के बारे में लम्बी हदीस बयान की, जो कुछ आपने हमें सुनाया उसमें यह भी था, 'वह आएगा और मदीना के अंदुरूनी रास्तों पर उसका दाख़िला मम्नूअ है। चुनाँचे वह मदीना के क़रीबी शोरीले बंजर इलाक़े तक पहुँचेगा, तो उस दिन उसके पास सब लोगों से बेहतर, या बेहतरीन लोगों में से एक आदमी जाएगा और उसे कहेगा, मैं गवाही देता हूँ तू वही दज्जाल है, जिसके बारे में रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बताया था तो दज्जाल कहेगा ऐ लोगों! बताओ अगर मैं इसे क़त्ल कर दूँ, फिर इसको ज़िन्दा कर दूँ तो क्या तुम मेरे बारे में शक में रहोगे? वह कहेंगे नहीं तो वह उसको क़त्ल कर देगा, फिर उसको ज़िन्दा करेगा तो जब उसको ज़िन्दा कर चुकेगा वह आदमी कहेगा, अल्लाह की क़सम! आज से ज़्यादा मैं कभी भी तेरे बारे में बसीरत नहीं रखता था तो वह दज्जाल उसको क़त्ल करना चाहेगा तो उसे उस पर क़ाबू नहीं दिया जाएगा। इमाम मुस्लिम (रह.) के शागिर्द अबू इस्हाक़ (इब्राहीम बिन सुफ़्यान) कहते हैं, यह आदमी ख़िज़्र (अ.) है।

सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले मदीना : 1882; किताबुल फ़ितन : 7132.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) निक़ाब : नक़ब की जमा है, दर्रा, रास्ता (2) सिबाख़ : सबख़ की जमा है, शोरीली ज़मीन। (3) यकूलून ला : उसके साथी यहूदी कहेंगे, तेरे मामले में शक नहीं रहेगा, अगर मुसलमान मुराद हैं तो मआनी होगा, तेरे दजल व फ़रेब में कोई शक नहीं रहेगा। (4) युक़ालु हाजा,

हुवल ख़िज़्र : क़ाइल कौन है, उसकी तअ़यीन नहीं है, हाँ! यह उन लोगों का नज़रिया है, जो हजरत ख़िज़्र (अ.) को ज़िन्दा मानते हैं, उसके सिवा कोई दलील नहीं है। जबकि अगली हदीस में आ रहा है 'रजुलुम मिनल मोमिनीन' वह उस दौर के मोमिनों में से होगा।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ بِمِثْلِهِ .

(7376) इमाम साहब एक और उस्ताद से ऊपर वाली रिवायत बयान करते हैं।

तख़रीज 7376 : इसकी तखरीज हदीस 7301 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُهْزَاذَ، مِنْ أَهْلِ مَرْوَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنْ قَيْسِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ أَبِي الْوَدَّاكِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فَيَتَوَجَّهُ قِبَلَهُ رَجُلٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَتَلْقَاهُ الْمَسَالِحُ مَسَالِحُ الدَّجَّالِ فَيَقُولُونَ لَهُ أَيْنَ تَعْمِدُ فَيَقُولُ أَعْمِدُ إِلَى هَذَا الَّذِي خَرَجَ - قَالَ - فَيَقُولُونَ لَهُ أَوَمَا تُؤْمِنُ بِرَبِّنَا فَيَقُولُ مَا بِرَبِّنَا خَفَاءٌ . فَيَقُولُونَ اقْتُلُوهُ . فَيَقُولُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ أَلَيْسَ قَدْ نَهَاكُمْ رَبُّكُمْ أَنْ تَقْتُلُوا أَحَدًا دُونَهُ - قَالَ - فَيَنْطَلِقُونَ بِهِ إِلَى الدَّجَّالِ فَإِذَا رَآهُ الْمُؤْمِنُ قَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ هَذَا الدَّجَّالُ الَّذِي ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ فَيَأْمُرُ الدَّجَّالُ بِهِ فَيُشَبَّحُ فَيَقُولُ خُذُوهُ وَشُجُّوهُ . فَيُوسَعُ

(7377) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'दज्जाल का ज़ुहूर होगा तो मोमिनों में से एक आदमी उसका रुख़ करेगा तो उसका मुसल्लह दस्ता, दज्जाल के मुसल्लह दस्ते से मिलेगा, वह उससे पूछेंगे किस जगह का क़स्द है? तो वह कहेगा उस ज़ाहिर होने वाले की तरफ़ जा रहा हूँ, वह उससे कहेंगे, क्या तू हमारे रब पर ईमान नहीं रखता? तो वह जवाब देगा, हमारा रब पोशीदा नहीं है तो वह कहेंगे, उसको क़त्ल कर दो, फिर एक दूसरे को कहेंगे, क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें किसी को उसकी इजाज़त के बग़ैर क़त्ल करने से मना नहीं किया है, चुनाँचे वह उसको लेकर दज्जाल की तरफ़ चल पड़ेंगे तो जब मोमिन उसे देख लेगा, कहेगा, ऐ लोगों! यह वह दज्जाल है, जिसका रसूलुल्लाह(ﷺ) ने तज़्किरा किया है, दज्जाल उसके बारे में हुक्म देगा तो उसको फैला दिया जाएगा, वह कहेगा, उसे पकड़ो और उसे ज़ख़्मी करो, मार मारकर उसकी पुश्त और पेट को वसीअ़ कर

दिया जाएगा, दज्जाल कहेगा क्या तू मुझ पर ईमान नहीं लाएगा? वह आदमी कहेगा तू ही झूठा मसीह है, चुनाँचे उसके बारे में हुक्म दिया जाएगा और उसे आरे से चोटी से लेकर दोनों पैर के बीच तक चीर दिया जाएगा, फिर दज्जाल उसके दोनों टुकड़ों के बीच गश्त करेगा फिर उसको कहेगा, उठ खड़ा हो तो वह सीधा खड़ा हो जाएगा, फिर उससे कहेगा, क्या तू मुझ पर ईमान लाता है? तो वह जवाब देगा, तेरे बारे में मेरी बसीरत ही में इज़ाफ़ा हुआ है, फिर वह आदमी लोगों को कहेगा, ऐ लोगों! यह मेरे बाद किसी एक इंसान के साथ यह हरकत नहीं कर सकेगा तो दज्जाल उसको पकड़ेगा, ताकि उसको ज़िब्ह कर दें तो उस आदमी की गर्दन और हँसली के बीच के हिस्से को पीतल का बना दिया जाएगा, इसलिए वह उसको क़त्ल करने की कोई राह नहीं पाएगा तो वह उसको उसके दोनों हाथों और पैरों से पकड़कर फेंक देगा, लोग ख़याल करेंगे, बस उसे आग में फेंक दिया है, हालाँकि उसे जन्नत में डाला गया होगा।' चुनाँचे रसूलुल्ल..ह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'यह रब्बुल आलमीन के यहाँ सबसे बड़ा (अज़ीम दर्जे वाला) शहीद है।

ظَهْرُهُ وَبَطْنُهُ ضَرْبًا - قَالَ - فَيَقُولُ أَوَمَا تُؤْمِنُ بِي قَالَ فَيَقُولُ أَنْتَ الْمَسِيحُ الْكَذَّابُ - قَالَ - فَيُؤْمَرُ بِهِ فَيُؤْشَرُ بِالْمِئْشَارِ مِنْ مَفْرِقِهِ حَتَّى يُفَرَّقَ بَيْنَ رِجْلَيْهِ - قَالَ - ثُمَّ يَمْشِي الدَّجَّالُ بَيْنَ الْقِطْعَتَيْنِ ثُمَّ يَقُولُ لَهُ قُمْ . فَيَسْتَوِي قَائِمًا - قَالَ - ثُمَّ يَقُولُ لَهُ أَتُؤْمِنُ بِي فَيَقُولُ مَا ازْدَدْتُ فِيكَ إِلاَّ بَصِيرَةً - قَالَ - ثُمَّ يَقُولُ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لاَ يَفْعَلُ بَعْدِي بِأَحَدٍ مِنَ النَّاسِ - قَالَ - فَيَأْخُذُهُ الدَّجَّالُ لِيَذْبَحَهُ فَيُجْعَلَ مَا بَيْنَ رَقَبَتِهِ إِلَى تَرْقُوَتِهِ نُحَاسًا فَلاَ يَسْتَطِيعُ إِلَيْهِ سَبِيلاً - قَالَ - فَيَأْخُذُ بِيَدَيْهِ وَرِجْلَيْهِ فَيَقْذِفُ بِهِ فَيَحْسِبُ النَّاسُ أَنَّمَا قَذَفَهُ إِلَى النَّارِ وَإِنَّمَا أُلْقِيَ فِي الْجَنَّةِ " . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " هَذَا أَعْظَمُ النَّاسِ شَهَادَةً عِنْدَ رَبِّ الْعَالَمِينَ " .

मुफ़रदातुल हदीस : (1) मसालिह़ : मुसल्लह़ की जमा है हथियारबंद। मुराद दज्जाल का हरावल दस्ता है (2) युशब्बहु : उसे फैलाया जाएगा, ज़मीन पर चित्त लिटाया जाएगा। (3) मिअ्शार : चीरने का आला, आरा।

बाब 22 : दज्जाल अल्लाह के यहाँ बहुत हक़ीर है।

(22) بَابُ : فِي الدَّجَّالِ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ

(7378) हजरत मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ि.) बयान करते हैं, दज्जाल के बारे में मुझसे ज़्यादा किसी ने नबी अकरम(ﷺ) से पूछा नहीं होगा, आपने फ़र्माया, 'तुम उसके बारे में क्यूँ थकते हो?' (क्यूँ फ़िक्रमन्द हो) वह तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा।' मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! साथी कहते हैं, उसके साथ खाना और दरिया होंगे।' आपने फ़र्माया, 'वह अल्लाह के नज़दीक इससे हल्का और हक़ीर है कि वह उसके ज़रिये किसी मुसलमान को गुमराह कर सके, या उन पर उन चीज़ों की हक़ीक़त छुप सके।'

इसकी तखरीज किताबुल आदाब में 5589 में गुज़र चुकी

حَدَّثَنَا شِهَابُ بْنُ عَبَّادٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَيْدٍ الرُّؤَاسِيُّ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ مَا سَأَلَ أَحَدٌ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم عَنِ الدَّجَّالِ أَكْثَرَ مِمَّا سَأَلْتُ قَالَ " وَمَا يُنْصِبُكَ مِنْهُ إِنَّهُ لاَ يَضُرُّكَ " . قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّ مَعَهُ الطَّعَامَ وَالأَنْهَارَ قَالَ " هُوَ أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ مِنْ ذَلِكَ".

(7379) हजरत मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ि.) बयान करते हैं, किसी फ़र्द ने भी नबी अकरम(ﷺ) से दज्जाल के बारे में मुझसे ज़्यादा नहीं पूछा, आपने फ़र्माया, 'तुम क्यूँ पूछते हो?' मैंने कहा, साथी कहते हैं, उसके साथ रोटी और गोश्त का पहाड़ होगा और पानी का दरिया होगा, आपने फ़र्माया, 'वह अल्लाह के नज़दीक उससे कमतर और हक़ीर है कि इससे वह गुमराह कर सके।'

इसकी तखरीज किताबुल आदाब में 5589 में गुज़र चुकी

حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ، بْنِ شُعْبَةَ قَالَ مَا سَأَلَ أَحَدٌ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم عَنِ الدَّجَّالِ أَكْثَرَ مِمَّا سَأَلْتُهُ قَالَ " وَمَا سُؤَالُكَ " . قَالَ قُلْتُ إِنَّهُمْ يَقُولُونَ مَعَهُ جِبَالٌ مِنْ خُبْزٍ وَلَحْمٍ وَنَهَرٌ مِنْ مَاءٍ . قَالَ " هُوَ أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ مِنْ ذَلِكَ " .

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ، أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، كُلُّهُمْ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَ حَدِيثِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ حُمَيْدٍ وَزَادَ فِي حَدِيثِ يَزِيدَ فَقَالَ لِي " أَىْ بُنَىَّ".

(7380) इमाम स़ाहब अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों की सनदों से इस्माईल ही की ऊपर वाली सनद से यह रिवायत बयान करते हैं, यज़ीद की हदीस में यह इज़ाफ़ा है, आपने मुझे फ़र्माया, 'ऐ मेरे प्यारे बच्चे।'

तख़रीज 7380 : इसकी तखरीज किताबुल आदाब में 5590 में गुज़र चुकी है।

(23)

بَابُ : فِي خُرُوجِ الدَّجَّالِ وَمُكْثِهِ فِي الأَرْضِ، وَنُزُولِ عِيسَى وَقَتْلِهِ إِيَّاهُ، وَذَهَابِ أَهْلِ الْخَيْرِ وَالإِيمَانِ، وَبَقَاءِ شِرَارِ النَّاسِ وَعِبَادَتِهِمُ الأَوْثَانَ، وَالنَّفْخِ فِي الصُّورِ، وَبَعْثِ مَنْ فِي الْقُبُورِ

बाब 23 :

दज्जाल का ज़ुहूर और ज़मीन में इक़ामत, ह़ज़रत ईसा (अ.) का नाज़िल होकर उसको क़त्ल करना, अहले ख़ैर और अस्ह़ाबे ईमान का ख़त्म हो जाना, शरीर लोगों का रह जाना और बुतों की पूजा करना, स़ूर में फूँकना और क़ब्रों से लोगों का उठना

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ سَالِمٍ، قَالَ سَمِعْتُ يَعْقُوبَ بْنَ عَاصِمِ بْنِ عُرْوَةَ بْنِ

(7381) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) के पास एक आदमी आया और पूछा, यह कैसी हदीस है, जो आप बयान करते हैं, आप कहते हैं फ़लाँ, फ़लाँ वक़्त क़ियामत क़ायम हो जाएगी, उन्होंने सुब्हानल्लाह या ला

مَسْعُودٍ الثَّقَفِيَّ، يَقُولُ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو، وَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ مَا هَذَا الْحَدِيثُ الَّذِي تُحَدِّثُ بِهِ تَقُولُ إِنَّ السَّاعَةَ تَقُومُ إِلَى كَذَا وَكَذَا . فَقَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ - أَوْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهُمَا - لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ لاَ أُحَدِّثَ أَحَدًا شَيْئًا أَبَدًا إِنَّمَا قُلْتُ إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدَ قَلِيلٍ أَمْرًا عَظِيمًا يُحَرَّقُ الْبَيْتُ وَيَكُونُ وَيَكُونُ ثُمَّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فِي أُمَّتِي فَيَمْكُثُ أَرْبَعِينَ - لاَ أَدْرِي أَرْبَعِينَ يَوْمًا أَوْ أَرْبَعِينَ شَهْرًا أَوْ أَرْبَعِينَ عَامًا - فَيَبْعَثُ اللَّهُ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ كَأَنَّهُ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُودٍ فَيَطْلُبُهُ فَيُهْلِكُهُ ثُمَّ يَمْكُثُ النَّاسُ سَبْعَ سِنِينَ لَيْسَ بَيْنَ اثْنَيْنِ عَدَاوَةٌ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ رِيحًا بَارِدَةً مِنْ قِبَلِ الشَّأْمِ فَلاَ يَبْقَى عَلَى وَجْهِ الأَرْضِ أَحَدٌ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ أَوْ إِيمَانٍ إِلاَّ قَبَضَتْهُ حَتَّى لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ دَخَلَ فِي كَبِدِ جَبَلٍ لَدَخَلَتْهُ عَلَيْهِ حَتَّى تَقْبِضَهُ " . قَالَ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " فَيَبْقَى شِرَارُ النَّاسِ فِي خِفَّةِ الطَّيْرِ وَأَحْلاَمِ السِّبَاعِ لاَ يَعْرِفُونَ مَعْرُوفًا وَلاَ يُنْكِرُونَ مُنْكَرًا فَيَتَمَثَّلُ

इलाहा इल्लल्लाह या उन जैसा कोई और कलिमा कहकर कहा, मैंने इरादा कर लिया है कि किसी को कोई बात कभी भी न बताऊँ, मैंने तो बस कहा था, तुम थोड़े अर्से बाद एक बहुत बड़ा नागवार वाक़िया देख लोगे, बैतुल्लाह जला दिया जाएगा, यह होगा, यह होगा, फिर कहने लगे, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'दज्जाल का मेरी उम्मत में ज़ुहूर होगा तो वह चालीस* की मुद्दत रहेगा, मुझे मालूम नहीं, चालीस दिन या चालीस माह या चालीस साल! चुनाँचे अल्लाह ईसा बिन मरियम (अ.) को भेजेगा, गोया कि वह उर्वा बिन मसऊद हैं तो वह उसको तलाश करके क़त्ल कर देंगे, फिर लोग सात साल इस तरह ठहरेंगे कि दो इंसानों में भी दुश्मनी नहीं होगी, फिर अल्लाह शाम की तरफ़ से ठण्डी हवा भेजेगा तो ज़मीन में कोई ऐसा इंसान ज़िन्दा नहीं बचेगा, जिसके दिल में ज़र्रा बराबर ख़ैर या ईमान होगा, यहाँ तक कि अगर तुममें से कोई पहाड़ के जिगर में यानी दरम्यान में दाख़िल हो जाएगा तो वह हवा वहाँ पहुँचकर उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेगी', मैंने यह बात रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी है, आपने फ़र्माया, 'चुनाँचे बदतरीन लोग रह जाएँगे, जो परिन्दों की तरह हर काम में जल्दबाज़ और दरिन्दों की अक़्ल वाले होंगे, न वह अच्छी बात को अच्छा समझेंगे और न बुरी बात को बुरा ख़्याल करेंगे, शैतान उनके पास (भेस बदलकर) कोई शक्ल इख़्तियार करके आएगा और कहेगा, क्या तुम मेरी बात नहीं

لَهُمُ الشَّيْطَانُ فَيَقُولُ أَلاَ تَسْتَجِيبُونَ فَيَقُولُونَ فَمَا تَأْمُرُنَا فَيَأْمُرُهُمْ بِعِبَادَةِ الأَوْثَانِ وَهُمْ فِي ذَلِكَ دَارٌّ رِزْقُهُمْ حَسَنٌ عَيْشُهُمْ ثُمَّ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَلاَ يَسْمَعُهُ أَحَدٌ إِلاَّ أَصْغَى لِيتًا وَرَفَعَ لِيتًا - قَالَ - وَأَوَّلُ مَنْ يَسْمَعُهُ رَجُلٌ يَلُوطُ حَوْضَ إِبِلِهِ - قَالَ - فَيَصْعَقُ وَيَصْعَقُ النَّاسُ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ - أَوْ قَالَ يُنْزِلُ اللَّهُ - مَطَرًا كَأَنَّهُ الطَّلُّ أَوِ الظِّلُّ - نُعْمَانُ الشَّاكُّ - فَتَنْبُتُ مِنْهُ أَجْسَادُ النَّاسِ ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ثُمَّ يُقَالُ يَا أَيُّهَا النَّاسُ هَلُمَّ إِلَى رَبِّكُمْ . وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ - قَالَ - ثُمَّ يُقَالُ أَخْرِجُوا بَعْثَ النَّارِ فَيُقَالُ مِنْ كَمْ فَيُقَالُ مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ - قَالَ - فَذَاكَ يَوْمَ يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا وَذَلِكَ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ " .

मानोगे? तो वह कहेंगे तो आप हमें क्या हुक्म देते हैं? चुनाँचे वह उन्हें बुतपरस्ती का हुक्म देगा, वह उन्हीं हालात में होंगे, उनकी रोज़ी कुशादा होगी, अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहे होंगे, फिर सूर फूँका जाएगा तो उसको जो भी सुनेगा, गर्दन एक तरफ़ से झुका देगा और दूसरी जानिब से उठा लेगा यानी बेहोश होकर गिर पड़ेगा और उसको सबसे पहले वह इंसान सुनेगा, जो अपने ऊँटों के हौज़ को लेप रहा होगा (मिट्टी लगाकर दुरुस्त कर रहा होगा) तो वह बेहोश हो जाएगा, सब लोग बेहोश हो जाएँगे, फिर अल्लह बारिश भेजेगा या उतारेगा, गोया कि वह शबनम या साया है, यानी फव्वारा है (नोमान को शक है) उससे लोगों के जिस्म उग पड़ेंगे, फिर सूर में दोबारा फूँका जाएगा तो फ़ौरन ही सब लोग खड़े होकर देख रहे होंगे, फिर कहा जाएगा, ऐ लोगों! अपने रब की तरफ़ चलो और (फ़रिश्तों) इनको खड़ा करो उनसे पूछगछ होगी, फिर कहा जाएगा, आग की पार्टी (जहन्नमियों को) निकालो, पूछा जाएगा, कितने लोगों में से? तो कहा जाएगा, हर हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे (999) और यह वह दिन होगा जो दहशत से बच्चों को बूढ़ा कर देगा और उस दिन पिण्डली नंगी की जाएगी।'

मुफ़रदातुल हदीस : (1) युहर्रकुल बैतु : बैतुल्लाह जलाया जाएगा, हज्जाज की मिंजनीक़ों से बैतुल्लाह जल चुका है। (2) यब्असुल्लाहु ईसा इब्ने मरियम : अहादीसे सहीहा की बिना पर अहले सुन्नत के नज़दीक, हज़रत ईसा (अ.) आख़िरी दौर में आसमान से उतरेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे, आपकी शरीअत पर अमल पैरा होंगे, कुछ मोतज़िला और जहमिया ने अल्लाह के फ़र्मान

ख़ातमुन्नबिय्यीन और आपके क़ौल ला नबिय्या बअ़दी से इन अह़ादीस का इंकार किया है, ह़ालाँकि आयत और हदीस का मत़लब तो यह है, मेरे बाद कोई नबी पैदा नहीं होगा, (और ईसा अ़. आपके बाद तो पैदा नहीं हुए, उनको तो नबुव्वत आपसे पहले मिल चुकी है, आपके बाद किसी को नबुव्वत नहीं मिलेगी, आपके बाद आने वाला हर मुद्दइये नबुव्वत झूटा होगा। (3) कबदे जबल : पहाड़ के बीच क्योंकि किसी चीज़ का कबद उसका दरम्यान होता है। (4) फ़ी ख़िफ़्फ़तित्तैरि, व अह़लामुस्सिबाअ़, अह़लाम, हुलुम की जमा है, अ़क़्ल, मक़्सद यह है कि वह शर्र व फ़साद और ख़्वाहिशाते नफ़्स के पूरा करने में बड़े तेज़ और जल्दबाज़ होंगे और एक दूसरे पर ज़ुल्मो ज़्यादती करने में दरिन्दा स़िफ़त होंगे। (5) अस़ग़ा : झुकाना (6) लीतुन : गर्दन की जानिब (7) दार्र : मूसलाधार, बहने वाला, यानी रिज़्क़ वाफ़िर होगा। (8) युकशफ़ु शाक़ुन : अल्लाह तआला अपने पिण्डली ज़ाहिर करेगा, उसकी ह़क़ीक़त और कैफ़ियत को जानना, इस दुनिया में मुम्किन नहीं है।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ، سَالِمٍ قَالَ سَمِعْتُ يَعْقُوبَ بْنَ عَاصِمِ بْنِ عُرْوَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ سَمِعْتُ رَجُلاً، قَالَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو إِنَّكَ تَقُولُ إِنَّ السَّاعَةَ تَقُومُ إِلَى كَذَا وَكَذَا فَقَالَ لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ لاَ أُحَدِّثَكُمْ بِشَىْءٍ إِنَّمَا قُلْتُ إِنَّكُمْ تَرَوْنَ بَعْدَ قَلِيلٍ أَمْرًا عَظِيمًا . فَكَانَ حَرِيقَ الْبَيْتِ - قَالَ شُعْبَةُ هَذَا أَوْ نَحْوَهُ -قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فِي أُمَّتِي " . وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمِثْلِ حَدِيثِ مُعَاذٍ وَقَالَ فِي حَدِيثِهِ " فَلاَ يَبْقَى أَحَدٌ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ إِيمَانٍ إِلاَّ قَبَضَتْهُ " . قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنِي شُعْبَةُ بِهَذَا الْحَدِيثِ مَرَّاتٍ وَعَرَضْتُهُ عَلَيْهِ .

(7382) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) से एक आदमी ने पूछा, आप कहते हैं, फ़लाँ फ़लाँ वाक़ियात तक क़ियामत क़ायम हो जाएगी, उन्होंने जवाब दिया, मैंने इरादा किया है, तुम्हें कोई चीज़ न बताऊँ, (क्योंकि बात को सही त़ौर पर समझते नहीं हो) मैंने तो कहा था, तुम थोड़ी मुद्दत के बाद एक बड़ा हादसा देख लोगे तो बैतुल्लाह को जला दिया गया, (शोबा ने यह या इस क़िस्म का लफ़्ज़ कहा) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बताया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मेरी उम्मत में दज्जाल निकलेगा।' आगे ऊपर वाली हदीस है और इस हदीस में मिस्क़ालु ज़र्रतिम मिन ईमान है ख़ैर का लफ़्ज़ नहीं है, शोबा ने यह हदीस, मुहम्मद बिन जअ़फ़र को कई दफ़ा सुनाई और उसने भी उन पर पेश की।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدِيثًا لَمْ أَنْسَهُ بَعْدُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ أَوَّلَ الآيَاتِ خُرُوجًا طُلُوعُ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَخُرُوجُ الدَّابَّةِ عَلَى النَّاسِ ضُحًى وَأَيُّهُمَا مَا كَانَتْ قَبْلَ صَاحِبَتِهَا فَالأُخْرَى عَلَى إِثْرِهَا قَرِيبًا " .

(7383) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से एक ऐसी हदीस सुनी है जिसको मैं अभी तक भूला नहीं हूँ, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'वुक़ूअ़े क़ियामत की सबसे पहले जो निशानी ज़ाहिर होगी, वह सूरज का मग़्रिब (पश्चिम) से निकलना है और दाब्बह (जानवर) लोगों के सामने चाश्त के वक़्त निकल चुका होगा, उन दोनों में से जो भी निशानी अपने साथ वाली से पहले हो, दूसरी जल्द ही उसके पीछे निकल आएगी।

सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4310; सुनन इब्ने माजा : 4069.

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، قَالَ جَلَسَ إِلَى مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ بِالْمَدِينَةِ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَسَمِعُوهُ وَهُوَ، يُحَدِّثُ عَنِ الآيَاتِ، أَنَّ أَوَّلَهَا، خُرُوجًا الدَّجَّالُ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو لَمْ يَقُلْ مَرْوَانُ شَيْئًا قَدْ حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَدِيثًا لَمْ أَنْسَهُ بَعْدُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ . فَذَكَرَ بِمِثْلِهِ .

(7384) अबू ज़ुरआ (रह.) बयान करते हैं, मदीना में मरवान बिन हकम के पास तीन मुसलमान अफ़राद बैठे, उन्होंने उससे सुना कि वह निशानियों के बारे में बयान कर रहा है, उसने कहा, सबसे पहली निशानी दज्जाल का निकलना है तो हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने कहा, मरवान ने कोई वज़नी बात नहीं कही, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से एक हदीस याद की है, जिसे मैं अभी तक भूला नहीं हूँ, आगे ऊपर वाली रिवायत बयान की।

इसकी तखरीज 7309 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنْ أَبِي

(7385) अबू ज़ुरआ (रह.) बयान करते हैं, लोगों ने मरवान के सामने क़ियामत के बारे में आपसी बातचीत की तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह

زُرْعَةَ، قَالَ تَذَاكَرُوا السَّاعَةَ عِنْدَ مَرْوَانَ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا وَلَمْ يَذْكُرْ ضُحًى .

बिन अम्र (रज़ि.) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते हुए सुना है, आगे ऊपर वाली हदीस है, लेकिन उसमें चाश्त का ज़िक्र नहीं है।

इसकी तख़रीज 7309 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : दज्जाल का निकलना कुर्बे क़ियामत की अलामत है और सूरज का मग़िब से निकलना, यह वुक़ूअे क़ियामत की अलामत है वुक़ूअे अलामत के लिए ख़ुरूजे दज्जाल को पहली निशानी क़रार देना दुरुस्त नहीं होगा।

(24) بَاب : قِصَّةِ الْحَسَّاسَةِ

बाब 24 : जस्सासा (तजस्सुस करने वाली) का वाक़िया

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ بْنِ عَبْدِ الْوَارِثِ، وَحَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الصَّمَدِ، - وَاللَّفْظُ لِعَبْدِ الْوَارِثِ بْنِ عَبْدِ الصَّمَدِ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ جَدِّي، عَنِ الْحُسَيْنِ، بْنِ ذَكْوَانَ حَدَّثَنَا ابْنُ بُرَيْدَةَ، حَدَّثَنِي عَامِرُ بْنُ شَرَاحِيلَ الشَّعْبِيُّ، شَعْبُ هَمْدَانَ أَنَّهُ سَأَلَ فَاطِمَةَ بِنْتَ قَيْسٍ أُخْتَ الضَّحَّاكِ بْنِ قَيْسٍ وَكَانَتْ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ الأُوَلِ فَقَالَ حَدِّثِينِي حَدِيثًا سَمِعْتِيهِ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى

(7386) इमाम आमिर बिन शराहील शअ़बी, जिसका तअ़ल्लुक़ हम्दान के शअ़ब से है, बयान करते हैं कि उन्होंने ज़ह्हाक बिन क़ैस (रज़ि.) की बहन फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) से जो इब्तिदा में हिज्रत करने वालियों में से हैं, दरयाफ़्त किया कि मुझे ऐसी हदीस सुनाइए जो आपने बराहे रास्त रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुनी है, उसे किसी और की तरफ़ मंसूब न करें, तो हजरत फ़ातिमा (रज़ि.) ने कहा, अगर आप चाहते हैं, तो मैं ऐसा ही करूँगी, तो उसने उनसे कहा, हाँ! आप मुझे सुनाएँ, तो उन्होंने कहा, मैंने मुग़ीरा के बेटे से शादी की, वह उन दिनों क़ुरैश के बेहतरीन नौजवानों में से थे, चुनाँचे वह रसूलुल्लाह(ﷺ) की मइयत (साथ) में, पहले जिहाद में शहीद हो गए, तो जब मैं बेवा

الله عليه وسلم لاَ تُسْنِدِيهِ إِلَى أَحَدٍ غَيْرِهِ فَقَالَتْ لَئِنْ شِئْتَ لأَفْعَلَنَّ فَقَالَ لَهَا أَجَلْ حَدِّثِينِي . فَقَالَتْ نَكَحْتُ ابْنَ الْمُغِيرَةِ وَهُوَ مِنْ خِيَارِ شَبَابِ قُرَيْشٍ يَوْمَئِذٍ فَأُصِيبَ فِي أَوَّلِ الْجِهَادِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا تَأَيَّمْتُ خَطَبَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَخَطَبَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى مَوْلاَهُ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ وَكُنْتُ قَدْ حُدِّثْتُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " مَنْ أَحَبَّنِي فَلْيُحِبَّ أُسَامَةَ " . فَلَمَّا كَلَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قُلْتُ أَمْرِي بِيَدِكَ فَأَنْكِحْنِي مَنْ شِئْتَ فَقَالَ " انْتَقِلِي إِلَى أُمِّ شَرِيكٍ " . وَأُمُّ شَرِيكٍ امْرَأَةٌ غَنِيَّةٌ مِنَ الأَنْصَارِ عَظِيمَةُ النَّفَقَةِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَنْزِلُ عَلَيْهَا الضِّيفَانُ فَقُلْتُ سَأَفْعَلُ فَقَالَ " لاَ تَفْعَلِي إِنَّ أُمَّ شَرِيكٍ امْرَأَةٌ كَثِيرَةُ الضِّيفَانِ فَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ يَسْقُطَ عَنْكِ خِمَارُكِ أَوْ يَنْكَشِفَ

हो गई, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) के चंद साथियों में, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने भी मुझे शादी का पैग़ाम भेजा और रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे अपने आज़ादकर्दा गुलाम उसामा बिन ज़ेद के लिए पैग़ाम दिया और मुझे यह बात बताई जा चुकी थी कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया है, 'जो मुझसे मुहब्बत करता है, वह उसामा (रज़ि.) से मुहब्बत करे, तो जब रसूलुललाह(ﷺ) ने इस सिलसिले में मेरे साथ बातचीत की तो मैंने कहा, मेरा मामला आपके हाथ में है (जहाँ चाहें शादी कर दें) तो आपने फ़र्माया, 'उम्मे शरीक के यहाँ मुंतक़िल हो जाओ' और उम्मे शरीक अंसारी एक मालदार औरत थी, अल्लाह की राह में बहुत ख़र्च करती थीं, उनके यहाँ मेहमान आते रहते थे, तो मैंने कहा, मैं ऐसे ही करूँगी, फिर आपने फ़र्माया, 'ऐसा न कर, क्योंकि उम्मे शरीक के पास मेहमान बहुत आते हैं, चुनाँचे मैं उसको नापसंद करता हूँ कि तेरा दुपट्टा गिर जाए या तेरी पिण्डली, तेरे कपड़े से खुल जाए, तो लोग तेरा वह कुछ हिस्सा देख लें, जो तुझे नागवार हो, लेकिन अपने चचाज़ाद, अब्दुल्लाह बिन अम्र, इब्ने मक्तूम के यहाँ मुंतक़िल हो जाओ, जो क़ुरैश के फ़िहर ख़ानदान से थे, जिससे वह थीं) चुनाँचे वह उनके यहाँ चली गईं, जब मेरी इद्दत ख़त्म हो गई, मैंने निदा करने वाले की आवाज़ सुनी, जो रसूलुल्लाह(ﷺ) की तरफ़ से आवाज़ लगा रहा था, नमाज़ के लिए जमा हो जाओ, तो मैं

الثَّوْبُ عَنْ سَاقَيْكِ فَيَرَى الْقَوْمُ مِنْكِ بَعْضَ مَا تَكْرَهِينَ وَلَكِنِ انْتَقِلِي إِلَى ابْنِ عَمِّكِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو ابْنِ أُمِّ مَكْتُومٍ " . - وَهُوَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي فِهْرٍ فِهْرِ قُرَيْشٍ وَهُوَ مِنَ الْبَطْنِ الَّذِي هِيَ مِنْهُ - فَانْتَقَلْتُ إِلَيْهِ فَلَمَّا انْقَضَتْ عِدَّتِي سَمِعْتُ نِدَاءَ الْمُنَادِي مُنَادِي رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يُنَادِي الصَّلاَةَ جَامِعَةً . فَخَرَجْتُ إِلَى الْمَسْجِدِ فَصَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَكُنْتُ فِي صَفِّ النِّسَاءِ الَّتِي تَلِي ظُهُورَ الْقَوْمِ فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم صَلاَتَهُ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَضْحَكُ فَقَالَ " لِيَلْزَمْ كُلُّ إِنْسَانٍ مُصَلاَّهُ " . ثُمَّ قَالَ " أَتَدْرُونَ لِمَ جَمَعْتُكُمْ " . قَالُوا اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ . قَالَ " إِنِّي وَاللَّهِ مَا جَمَعْتُكُمْ لِرَغْبَةٍ وَلاَ لِرَهْبَةٍ وَلَكِنْ جَمَعْتُكُمْ لأَنَّ تَمِيمًا الدَّارِيَّ كَانَ رَجُلاً نَصْرَانِيًّا فَجَاءَ فَبَايَعَ وَأَسْلَمَ وَحَدَّثَنِي حَدِيثًا وَافَقَ الَّذِي كُنْتُ أُحَدِّثُكُمْ عَنْ مَسِيحِ الدَّجَّالِ حَدَّثَنِي أَنَّهُ

मस्जिद चली गई और रसूलुल्लाह(ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ी, मैं औरतों की उस सफ़ में थी, जो लोगों की पुश्तों से मुत्तसिल थी, तो जब रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी नमाज़ अदा कर ली, हँसते हुए मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और फ़र्माया, 'हर इंसान अपनी नमाज़ वाली जगह पर बैठा रहे, फिर आपने फ़र्माया, 'क्या जानते हो, मैंने तुम्हें क्यूँ इकट्ठा किया है?' सहाबा किराम (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं, आपने फ़र्माया, 'मैंने अल्लाह की क़सम, तुम्हें किसी तग़ीब या तर्हीब (डराने) के लिए जमा नहीं किया, लेकिन मैंने तुम्हें इसलिए जमा किया है कि तमीमदारी, एक ईसाई आदमी था, उसने आकर बैअत कर ली है और मुसलमान हो गया है और उसने मुझे ऐसी बात बताई है, जो इस बात के मुताबिक़ है, जो मैं तुम्हें मसीह दज्जाल के बारे में बताता था उसने मुझे बताया है कि वह लख़्म और जुज़ाम के तीस अफ़राद के साथ एक समुन्द्र में कश्ती में सवार हुआ, चुनाँचे एक माह तक समुन्द्री मौजें उनके साथ अठखेलियाँ करती रहीं (वह मौजों के थपेड़ों का शिकार रहे) फिर वह एक समुन्द्री जज़ीरा में ग़ुरूबे आफ़ताब के वक़्त लंगर अंदाज़ हुए तो वह छोटी कश्तियों में सवार होकर, जजीरा में दाख़िल हो गए तो उन्हें घने बालों वाला एक जानवर मिला, उन्हें उसके बालों की कसरत की बिना पर आगे पीछे का पता नहीं चल रहा था, तो उन्होंने कहा, तू मरे, तू क्या बला है?

رَكِبَ فِي سَفِينَةٍ بَحْرِيَّةٍ مَعَ ثَلاَثِينَ رَجُلاً مِنْ لَخْمٍ وَجُذَامَ فَلَعِبَ بِهِمُ الْمَوْجُ شَهْرًا فِي الْبَحْرِ ثُمَّ أَرْفَئُوا إِلَى جَزِيرَةٍ فِي الْبَحْرِ حَتَّى مَغْرِبِ الشَّمْسِ فَجَلَسُوا فِي أَقْرُبِ السَّفِينَةِ فَدَخَلُوا الْجَزِيرَةَ فَلَقِيَتْهُمْ دَابَّةٌ أَهْلَبُ كَثِيرُ الشَّعَرِ لاَ يَدْرُونَ مَا قُبُلُهُ مِنْ دُبُرِهِ مِنْ كَثْرَةِ الشَّعَرِ فَقَالُوا وَيْلَكِ مَا أَنْتِ فَقَالَتْ أَنَا الْجَسَّاسَةُ . قَالُوا وَمَا الْجَسَّاسَةُ قَالَتْ أَيُّهَا الْقَوْمُ انْطَلِقُوا إِلَى هَذَا الرَّجُلِ فِي الدَّيْرِ فَإِنَّهُ إِلَى خَبَرِكُمْ بِالأَشْوَاقِ . قَالَ لَمَّا سَمَّتْ لَنَا رَجُلاً فَرِقْنَا مِنْهَا أَنْ تَكُونَ شَيْطَانَةً - قَالَ - فَانْطَلَقْنَا سِرَاعًا حَتَّى دَخَلْنَا الدَّيْرَ فَإِذَا فِيهِ أَعْظَمُ إِنْسَانٍ رَأَيْنَاهُ قَطُّ خَلْقًا وَأَشَدُّهُ وِثَاقًا مَجْمُوعَةٌ يَدَاهُ إِلَى عُنُقِهِ مَا بَيْنَ رُكْبَتَيْهِ إِلَى كَعْبَيْهِ بِالْحَدِيدِ قُلْنَا وَيْلَكَ مَا أَنْتَ قَالَ قَدْ قَدَرْتُمْ عَلَى خَبَرِي فَأَخْبِرُونِي مَا أَنْتُمْ قَالُوا نَحْنُ أُنَاسٌ مِنَ الْعَرَبِ رَكِبْنَا فِي سَفِينَةٍ بَحْرِيَّةٍ فَصَادَفْنَا الْبَحْرَ حِينَ اغْتَلَمَ فَلَعِبَ بِنَا الْمَوْجُ شَهْرًا ثُمَّ أَرْفَأْنَا إِلَى

उसने कहा, मैं जस्सासा हूँ, साथियों ने कहा, जस्सासा क्या होता है? उसने कहा, ऐ लोगों! कि दैर (गिर्जा या महल) में उस आदमी की तरफ़ चलो, क्योंकि वह तुम्हारे हालात जानने का बहुत शौक़ रखता है, जब उसने हमारे सामने एक आदमी का नाम लिया, तो हम उस (जानवर) से डर गए कहीं यह जिन्नी न हो। चुनाँचे हम जल्दी जल्दी चले यहाँ तक कि हम दैर (गिर्जा) में दाख़िल हो गए तो अचानक उसमें एक बहुत बड़ा इंसान था, बनावट व जसामत के लिहाज़ से जो हमने कभी देखा और उसे बड़ी मज़बूती से बाँधा गया, उसके दोनों हाथ गर्दन के साथ, उसके दोनों घुटनों और टख़्नों के दरम्यान लोहे से जकड़े हुए थे, हमने कहा, ऐ कमबख़्त! तू क्या हो? उसने कहा, तुमने मेरे हालात जानने की क़ुदरत हासिल करली है (मैं तुम्हें अभी बताऊँगा) पहले तुम मुझे बताओ तुम कौन हो? साथियों ने कहा, हम कुछ अ़रब लोग हैं, हम एक समुन्द्री कश्ती में सवार हुए, हम समुन्द्र पर उस वक़्त पहुँचे, जब वह भड़का हुआ था (ठाठें मार रहा था) इसलिए मौजें हमारे साथ एक माह तक खेलती रहीं, फिर हम तुम्हारे इस जज़ीरा पर लंगर अंदाज़ हुए और हम उसके डोंगों में बैठे और जज़ीरा में दाख़िल हुए तो हमें एक घने, बहुत बालों वाला जानवर मिला, तो हमने कहा, तू मरे, तू क्या बला है? क्योंकि उसके बालों की कसरत की वजह से उसके आगे और पीछे का पता नहीं चल रहा है, उसने कहा, मैं

جَزِيرَتِكَ هَذِهِ فَجَلَسْنَا فِي أَقْرُبِهَا فَدَخَلْنَا الْجَزِيرَةَ فَلَقِيَتْنَا دَابَّةٌ أَهْلَبُ كَثِيرُ الشَّعَرِ لاَ يُدْرَى مَا قُبُلُهُ مِنْ دُبُرِهِ مِنْ كَثْرَةِ الشَّعَرِ فَقُلْنَا وَيْلَكِ مَا أَنْتِ فَقَالَتْ أَنَا الْجَسَّاسَةُ . قُلْنَا وَمَا الْجَسَّاسَةُ قَالَتِ اعْمِدُوا إِلَى هَذَا الرَّجُلِ فِي الدَّيْرِ فَإِنَّهُ إِلَى خَبَرِكُمْ بِالأَشْوَاقِ فَأَقْبَلْنَا إِلَيْكَ سِرَاعًا وَفَزِعْنَا مِنْهَا وَلَمْ نَأْمَنْ أَنْ تَكُونَ شَيْطَانَةً فَقَالَ أَخْبِرُونِي عَنْ نَخْلِ بَيْسَانَ قُلْنَا عَنْ أَىِّ شَأْنِهَا تَسْتَخْبِرُ قَالَ أَسْأَلُكُمْ عَنْ نَخْلِهَا هَلْ يُثْمِرُ قُلْنَا لَهُ نَعَمْ . قَالَ أَمَا إِنَّهُ يُوشِكُ أَنْ لاَ تُثْمِرَ قَالَ أَخْبِرُونِي عَنْ بُحَيْرَةِ الطَّبَرِيَّةِ . قُلْنَا عَنْ أَىِّ شَأْنِهَا تَسْتَخْبِرُ قَالَ هَلْ فِيهَا مَاءٌ قَالُوا هِيَ كَثِيرَةُ الْمَاءِ . قَالَ أَمَا إِنَّ مَاءَهَا يُوشِكُ أَنْ يَذْهَبَ . قَالَ أَخْبِرُونِي عَنْ عَيْنِ زُغَرَ . قَالُوا عَنْ أَىِّ شَأْنِهَا تَسْتَخْبِرُ قَالَ هَلْ فِي الْعَيْنِ مَاءٌ وَهَلْ يَزْرَعُ أَهْلُهَا بِمَاءِ الْعَيْنِ قُلْنَا لَهُ نَعَمْ هِيَ كَثِيرَةُ الْمَاءِ وَأَهْلُهَا يَزْرَعُونَ مِنْ مَائِهَا . قَالَ أَخْبِرُونِي عَنْ نَبِيِّ الأُمِّيِّينَ مَا

जस्सासा (जासूस) हूँ, हमने पूछा, जस्सासा क्या होता है? उसने कहा, उस आदमी का रुख़ करो, जो महल में है, क्योंकि वह तुम्हारे हालात से आगाही का बहुत शौक़ीन है, इसलिए हम जल्दी जल्दी तेरी तरफ़ बढ़े हैं और हम उससे ख़ौफ़ज़दा हो गए थे और हम उससे बेख़ौफ़ नहीं थे कि वह जिन्नी हो, उसने कहा, मुझे बैसान के नख़्लिस्तान के बारे में बताओ, हमने कहा, तुम उसके बारे में क्या पूछना चाहते हो, उसने कहा, मैं तुमसे उसके खजूर के दरख़्तों के बारे में पूछता हूँ, क्या वह फल देते हैं, हमने उससे कहा, हाँ! उसने कहा, हाँ! क़रीब है कि वह फल न दें, उसने कहा, मुझे तब्रिया के बुहैरा (छोटा समुन्द्र) के बारे में बताओ, हमने कहा, तुम उसकी कौनसी हालत के बारे में पूछते हो? उसने कहा, क्या उसमें पानी है, साथियों ने कहा, उसमें बहुत पानी है, उसने कहा, हाँ! उसका पानी क़रीब है कि ख़त्म हो जाए, उसने कहा, मुझे ज़ग़र के चश्मे के बारे में बताओ, साथियों ने कहा, तुम उसके बारे में क्या जानना चाहते हो? उसने कहा, क्या उस चश्मा में पानी है? और क्या वहाँ के बाशिन्दे, उस चश्मे के पानी से काश्त करते हैं? हमने उससे कहा, हाँ! उसमें बहुत पानी है और उसके रहवासी उसके पानी से काश्त करते हैं, उसने कहा, मुझे उम्मियों (अरबों) के नबी के बारे में बताओ, उसका क्या बना? उन्होंने कहा, वह मक्का से निकलकर यस्रिब में उतर चुका है, उसने कहा, क्या अरबों ने उससे जंग लड़ी है

فَعَلَ قَالُوا قَدْ خَرَجَ مِنْ مَكَّةَ وَنَزَلَ يَثْرِبَ . قَالَ أَقَاتَلَهُ الْعَرَبُ قُلْنَا نَعَمْ . قَالَ كَيْفَ صَنَعَ بِهِمْ فَأَخْبَرْنَاهُ أَنَّهُ قَدْ ظَهَرَ عَلَى مَنْ يَلِيهِ مِنَ الْعَرَبِ وَأَطَاعُوهُ قَالَ لَهُمْ قَدْ كَانَ ذَلِكَ قُلْنَا نَعَمْ . قَالَ أَمَا إِنَّ ذَاكَ خَيْرٌ لَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ وَإِنِّي مُخْبِرُكُمْ عَنِّي إِنِّي أَنَا الْمَسِيحُ وَإِنِّي أُوشِكُ أَنْ يُؤْذَنَ لِي فِي الْخُرُوجِ فَأَخْرُجَ فَأَسِيرَ فِي الأَرْضِ فَلاَ أَدَعَ قَرْيَةً إِلاَّ هَبَطْتُهَا فِي أَرْبَعِينَ لَيْلَةً غَيْرَ مَكَّةَ وَطَيْبَةَ فَهُمَا مُحَرَّمَتَانِ عَلَىَّ كِلْتَاهُمَا كُلَّمَا أَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَ وَاحِدَةً أَوْ وَاحِدًا مِنْهُمَا اسْتَقْبَلَنِي مَلَكٌ بِيَدِهِ السَّيْفُ صَلْتًا يَصُدُّنِي عَنْهَا وَإِنَّ عَلَى كُلِّ نَقْبٍ مِنْهَا مَلاَئِكَةً يَحْرُسُونَهَا قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَطَعَنَ بِمِخْصَرَتِهِ فِي الْمِنْبَرِ " هَذِهِ طَيْبَةُ هَذِهِ طَيْبَةُ هَذِهِ طَيْبَةُ " . يَعْنِي الْمَدِينَةَ " أَلاَ هَلْ كُنْتُ حَدَّثْتُكُمْ ذَلِكَ " . فَقَالَ النَّاسُ نَعَمْ " فَإِنَّهُ أَعْجَبَنِي حَدِيثُ تَمِيمٍ أَنَّهُ وَافَقَ الَّذِي كُنْتُ أُحَدِّثُكُمْ عَنْهُ وَعَنِ

हमने कहा, हाँ! उसने कहा, उसने उनके साथ क्या सुलूक किया, तो हमने उसे बताया, वह अपने क़रीबी अरबों पर ग़ालिब आ चुका है, उन्होंने उसकी इताअ़त क़ुबूल करली है, उसने उनसे कहा, यह काम हो चुका है? हमने कहा, हाँ! उसने कहा, हाँ! उनके लिए यही बेहतर है कि वह उसकी इताअ़त करें और मैं तुम्हें अपने बारे में बताता हूँ, मैं ही मसीह (दज्जाल) हूँ और मुझे जल्द ही निकलने की इजाज़त दे दी जाएगी, चुनाँचे मैं निकलूँगा, मक्का व मदीना दोनों में मेरा दाख़िला मम्नूअ़ है, जब मैं उनमें से एक या दोनों में से एक में दाखिल होने का इरादा करूँगा तो एक फ़रिश्ता अपने हाथ में तलवार सोंतकर मेरे सामने आ जाएगा, मुझे उसमें दाख़िल होने से रोकेगा और उसके हर नाका (रास्ते) पर उसकी हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्ते मौजूद होंगे, हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) कहती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपनी छड़ी से मिम्बर को कचोका लगाते हुए फ़र्माया, 'यह त़ैबा है, यह त़ैबा है, यह त़ैबा है,' यानी मदीना त़ैबा है, 'क्या मैंने तुम्हें यह बात बताई थी?' तो लोगों ने कहा, जी हाँ! सूरतेहाल यह है, मुझे तमीम की बात बहुत अच्छी लगी है, क्योंकि वह (वाक़ियाती त़ौर पर) उसके मुताबिक़ है जो मैं तुम्हें उसके बारे में और मदीना और मक्का के बारे में बताता था, ख़बरदार! वह शाम के या यमन के समुन्द्र (जज़ीरा) में है, नहीं बल्कि वह मश्रिक़ की जानिब है, यक़ीनन वह मश्रिक़ की जानिब है, यक़ीनन वह मश्रिक़

الْمَدِينَةِ وَمَكَّةَ أَلاَ إِنَّهُ فِي بَحْرِ الشَّامِ أَوْ بَحْرِ الْيَمَنِ لاَ بَلْ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ ما هُوَ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ مَا هُوَ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ مَا هُوَ " . وَأَوْمَأَ بِيَدِهِ إِلَى الْمَشْرِقِ . قَالَتْ فَحَفِظْتُ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

की जानिब है यक़ीनन वह' और आपने अपने हाथ से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा किया, चुनाँचे मैंने उसको रसूलुल्लाह(ﷺ) से बराहे रास्त याद किया।

सुनन अबू दाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4326, 4327; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 66, 22563; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 4074.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) जस्सासा : जासूसी करने वाली, क्योंकि वह दज्जाल के लिए जासूसी करती है। (2) फ़ उसीब फ़ी अव्वलिल जिहाद : वह पहले जिहाद में शहीद हो गया, यह रावी का वहम है, क्योकि वह हज़रत अली (रज़ि.) के साथ यमन गया था, वह वहाँ फ़ौत हुआ और बक़ौल कुछ हज़रत उमर (रज़ि.) के दौरे ख़िलाफ़त में फ़ौत हुआ, हाँ! यह हो सकता है कि वह आपके साथ पहले जिहाद में ज़ख़्मी हुआ हो, लेकिन फ़ौत बाद में हुआ हो और आपके साथ जंग में हिस्सा लेना क़ाबिले क़द्र अमल है और उसने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को वक़्तन फ़वक़्तन तीन तलाक़ें दे दी थीं, इसलिए इद्दत के ख़त्म होने के बाद, हज़रत मुआविया, अबू जहम और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने शादी का पैग़ाम भेजा था इसलिए यह कहना कि मैं उसकी बेवा हो गई सही नहीं है, उसने उसे वक़्तन फ़वक़्तन तीन तलाक़ें दी थी और यमन से आख़िरी तलाक़ भेजी थी और हज़रत अली (रज़ि.) 10 हिज्री में यमन गए थे हज़रत अब्दुल्लाह के वालिद का नाम अम्र है और माँ का नाम उम्मे मक्तूम है, इसलिए इब्ने उम्मे मक्तूम, अब्दुल्लाह की सिफ़त है, अम्र की सिफ़त नहीं है। चूँकि वह भी उनके क़बीले से तअल्लुक़ रखते थे, इसलिए उनको चचाज़ाद का नाम दिया गया। (3) अस्सलातु जामिआ : दोनों लफ़्ज़ मंसूब हैं, पहला फ़ेअल महज़ूफ़ का मफ़ऊल है और दूसरा हाल है, या दोनों मरफ़ूअ हैं, यानी हाज़िहिस्सलातुल जामिआ : या हाज़िहिस्सलात मरफ़ूअ है और जामिआ हाल है और इस हदीस से तस्वीब पर (अज़ान के बाद फिर ऐलान) इस्तिदलाल दुरुस्त नहीं है, क्योंकि यह कलिमात उस वक़्त कहे जाते हैं, जब लोगों को ऐसे वक़्त में मस्जिद में जमा करना हो, जो नमाज़ का वक़्त नहीं है और हज़रत तमीम दारी 9 हिज्री को मुसलमान हुए थे, जो अहले फ़िलिस्तीन से राहिब और आबिद इंसान थे और उन ही को यह शर्फ़ हासिल है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनसे हदीसे जस्सासा रिवायत की है। (4) अर्फ़ऊ : वह लंगर अंदाज़ हुए, मरफ़ा : बंदरगाह। (5) अक़्रुब, क़ारिब की जमा है, जो क़यासी रू से क़अराबु है, डोंगा छोटी कश्ती। (6) अह्लब : बहुत बालों वाला, इसलिए कसीरुश्शअर इसकी तफ़्सीर है। (7) दैर : राहिब की कुटिया, यहाँ मुराद महल है। (8) अल्अश्वाक़ : शौक़ीन, बहुत शौक़ रखने वाला है। (9) विसाक़ : क़ैदो बंद, बंधन। (10) इग़्तलम : हद से तजावुज़ कर जाना, यानी

वह तूफ़ानखैज़ था। (11) बैसान : यमामा का एक इलाक़ा जहाँ नख़िलस्तान बहुत हैं, उर्दुन का एक इलाक़ा भी है लेकिन वहाँ इतनी ज़्यादा खजूरें नहीं हैं। (12) ज़ुग़र : यह शाम के इलाक़े की एक बस्ती है, जो बक़ौल इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ह़ज़रत लूत़ (अ.) की छोटी बेटी का नाम है, वह यहाँ दफ़न है। (13) मा हुवा : मा ताकीद के लिए ज़ाइद है कि मश्रिक़ की जनाब होना यक़ीनी है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ الْهُجَيْمِيُّ أَبُو عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ، حَدَّثَنَا سَيَّارٌ أَبُو الْحَكَمِ، حَدَّثَنَا الشَّعْبِيُّ، قَالَ دَخَلْنَا عَلَى فَاطِمَةَ بِنْتِ قَيْسٍ فَأَتْحَفَتْنَا بِرُطَبٍ يُقَالُ لَهُ رُطَبُ ابْنِ طَابٍ وَأَسْقَتْنَا سَوِيقَ سُلْتٍ فَسَأَلْتُهَا عَنِ الْمُطَلَّقَةِ، ثَلاَثًا أَيْنَ تَعْتَدُّ قَالَتْ طَلَّقَنِي بَعْلِي ثَلاَثًا فَأَذِنَ لِيَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَنْ أَعْتَدَّ فِي أَهْلِي - قَالَتْ - فَنُودِيَ فِي النَّاسِ إِنَّ الصَّلاَةَ جَامِعَةً - قَالَتْ - فَانْطَلَقْتُ فِيمَنِ انْطَلَقَ مِنَ النَّاسِ - قَالَتْ - فَكُنْتُ فِي الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ مِنَ النِّسَاءِ وَهُوَ يَلِي الْمُؤَخَّرَ مِنَ الرِّجَالِ - قَالَتْ - فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ يَخْطُبُ فَقَالَ " إِنَّ بَنِي عَمٍّ لِتَمِيمٍ الدَّارِيِّ رَكِبُوا فِي الْبَحْرِ " . وَسَاقَ الْحَدِيثَ وَزَادَ فِيهِ قَالَتْ فَكَأَنَّمَا أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم وَأَهْوَى بِمِخْصَرَتِهِ إِلَى الأَرْضِ وَقَالَ " هَذِهِ طَيْبَةُ " . يَعْنِي الْمَدِينَةَ .

(7387) इमाम शअ़बी (रह.) बयान करते हैं कि हम ह़ज़रत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, उन्होंने हमारी रूत़ब बिन त़ाब, नामी खजूरों से तवाज़ोअ की और अच्छे जौ के सत्तू पिलाए, चुनाँचे मैंने उनसे दरयाफ़्त किया, जिसको तीन त़लाक़ें मिल चुकी हों, वह इद्दत कहाँ गुज़ारेगी उन्होंने जवाब दिया, मेरे शौहर ने मुझे तीन त़लाक़ें दीं तो मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपने ख़ानदान के यहाँ इद्दत गुज़ारने की इजाज़त दे दी, चुनाँचे लोगों में ऐलान किया गया कि नमाज़ के लिए जमा हो जाओ, तो मैं भी जाने वाले लोगों के साथ चल पड़ी और मैं औरतों की पहली सफ़ में खड़ी हुई, जो मर्दों की पहली सफ़ से मुत्तस़िल होती है, तो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना, जबकि आप मिम्बर पर ख़ित़ाब फ़र्मा रहे थे, आपने फ़र्माया, 'तमीम दारी के चचा के ख़ानदान के लोग, समुन्द्र पर सवार हुए,' आगे ऊपर वाली रिवायत बयान की और उसमें यह इज़ाफ़ा किया, ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने कहा, गोया मैं नबी अकरम(ﷺ) की तरफ़ देख रही हूँ और आपने अपनी छड़ी को ज़मीन की तरफ़ झुकाया हुआ था और आपने फ़र्माया, 'ये त़ैबा' है यानी मदीना त़ैबा है।

इसकी तख़रीज हदीस 7312 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ النَّوْفَلِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا وَهْبُ، بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ، سَمِعْتُ غَيْلاَنَ بْنَ جَرِيرٍ، يُحَدِّثُ عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ، قَيْسٍ قَالَتْ قَدِمَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم تَمِيمٌ الدَّارِيُّ فَأَخْبَرَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ رَكِبَ الْبَحْرَ فَتَاهَتْ بِهِ سَفِينَتُهُ فَسَقَطَ إِلَى جَزِيرَةٍ فَخَرَجَ إِلَيْهَا يَلْتَمِسُ الْمَاءَ فَلَقِيَ إِنْسَانًا يَجُرُّ شَعَرَهُ . وَاقْتَصَّ الْحَدِيثَ وَقَالَ فِيهِ ثُمَّ قَالَ أَمَا إِنَّهُ لَوْ قَدْ أُذِنَ لِي فِي الْخُرُوجِ قَدْ وَطِئْتُ الْبِلاَدَ كُلَّهَا غَيْرَ طَيْبَةَ . فَأَخْرَجَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى النَّاسِ فَحَدَّثَهُمْ قَالَ " هَذِهِ طَيْبَةُ وَذَاكَ الدَّجَّالُ " .

(7388) हजरत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) बयान करती हैं, हज़रत तमीमदारी, रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास तशरीफ़ लाए, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) को ख़बर दी कि वह समुन्द्र पर सवार हुए, उनका जहाज़ रास्ते से हट गया और एक जज़ीरा में जा निकला, तो वह पानी की तलाश में जज़ीरा की तरफ़ चल दिए और एक इंसान से मिले, जो अपने बाल घसीट रहा था और ऊपर वाली हदीस बयान की और उसमें यह है, फिर उसने कहा, अगर मुझे निकलने की इजाज़त दी गई, तो मैं त़ैबा के सिवा तमाम इलाक़ों को रौंद डालूँगा, फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) तमीमदारी को लोगों के पास ले आए और उन्हें वाक़िया सुनाया, या फ़र्माया, 'यह त़ैबा है और वह (मसीह़) दज्जाल है।

तख़रीज 7388 : इसकी तख़रीज हदीस 7313 में गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) ताहत बिही सफ़ीनतुहू : उनकी कश्ती रास्ते से भटक गई। (2) ज़ाक दज्जालुन : वह दज्जाल है, इससे मालूम होता है, वह अभी तक किसी जज़ीरा में महबूस क़ैद है और याजूज व माजूज की तरह अभी तक अल्लाह ने उसको पोशीदा रखा है, दोनों का तक़रीबन एक दौर में ज़ुहूर होगा और आपने वाक़ियाती तस्दीक़ के त़ौर पर हजरत तमीमदारी का वाक़िया लोगों को सुनाया और अल्लाह ने भी वाक़ियाती तस्दीक़ के लिए उसको तमीम दारी को दिखाया।

حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ -عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ قَيْسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

(7389) हजरत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और फ़र्माया, 'ऐ लोगों! मुझे तमीम दारी ने बताया है कि उनकी क़ौम के कुछ लोग समुन्द्री सफ़र पर थे, अपनी

قَعَدَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ " أَيُّهَا النَّاسُ حَدَّثَنِي تَمِيمٌ الدَّارِيُّ أَنَّ أُنَاسًا مِنْ قَوْمِهِ كَانُوا فِي الْبَحْرِ فِي سَفِينَةٍ لَهُمْ فَانْكَسَرَتْ بِهِمْ فَرَكِبَ بَعْضُهُمْ عَلَى لَوْحٍ مِنْ أَلْوَاحِ السَّفِينَةِ فَخَرَجُوا إِلَى جَزِيرَةٍ فِي الْبَحْرِ " . وَسَاقَ الْحَدِيثَ

कश्ती पर सवार थे और वह टूट गई, तो उनमें से कुछ कश्ती के तख़्तों में से किसी तख़्ते पर सवार हो गए और समुन्द्री जज़ीरा में जा निकले।' आगे ऊपर वाली हदीस बयान की।

तख़रीज 7389 : इसकी तख़रीज हदीस 7313 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنِي أَبُو عَمْرٍو، - يَعْنِي الأَوْزَاعِيَّ - عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " لَيْسَ مِنْ بَلَدٍ إِلاَّ سَيَطَؤُهُ الدَّجَّالُ إِلاَّ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةَ وَلَيْسَ نَقْبٌ مِنْ أَنْقَابِهَا إِلاَّ عَلَيْهِ الْمَلاَئِكَةُ صَافِّينَ تَحْرُسُهَا فَيَنْزِلُ بِالسَّبَخَةِ فَتَرْجُفُ الْمَدِينَةُ ثَلاَثَ رَجَفَاتٍ يَخْرُجُ إِلَيْهِ مِنْهَا كُلُّ كَافِرٍ وَمُنَافِقٍ " .

(7390) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'दज्जाल, मक्का और मदीना के सिवा हर शहर को रौंदेगा और मदीना के हर रास्ते पर फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त के लिए सफ़बंद होंगे, चुनाँचे वह एक शोरज़दा जगह पर उतरेगा और मदीना तीन बार लरज़ेगा, उससे हर काफ़िर और मुनाफ़िक़ निकलर उसके पास चला जाएगा।'

तख़रीज 7390 : सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल मदीना : 1881.

मुफ़रदातुल हदीस : तर्जुफ़ुल मदीना : मदीना लरज़ा उठेगा, यह लरज़ा दज्जाल के रौब की वजह से नहीं होगा, बल्कि मदीना में रहने वाले काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को ख़ौफ़ज़दा करके निकालने के लिए होगा, मोमिन उससे मुतास्सिर नहीं होंगे।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ . فَذَكَرَ نَحْوَهُ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ فَيَأْتِي سَبَخَةَ الْجُرُفِ فَيَضْرِبُ رِوَاقَهُ وَقَالَ فَيَخْرُجُ إِلَيْهِ كُلُّ مُنَافِقٍ وَمُنَافِقَةٍ .

(7391) हजरत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'आगे ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी रिवायत है, हाँ! उसमें यह है, आपने फ़र्माया, 'वह इलाक़ा ज़ुरूफ़ के शोरीले इलाक़े में आएगा और वहाँ अपना ख़ेमा लगाएगा, तो उसकी तरफ़ हर मुनाफ़िक़ मर्द औरत निकलकर चला जाएगा।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) जुरूफ़ : शाम की सिम्त में मदीना की क़रीबी इलाक़ा है। (2) रिवाक़, ख़ेमा, या साज़ो सामान

बाब 25 : दज्जाल से मुतअल्लिक़ा बाक़ी अहादीस

(25) بَاب : فِىْ بَقِيَّةٍ مِنْ اَحَادِيثِ الدَّجَّالِ

(7392) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अस्बहान के सत्तर हज़ार यहूदी तयालिसान पहने हुए, दज्जाल के साथ होंगे।' तयालिसान, गौन।

حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مُزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ إِسْحَاقَ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ عَمِّهِ، أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَتْبَعُ الدَّجَّالَ مِنْ يَهُودِ أَصْبَهَانَ سَبْعُونَ أَلْفًا عَلَيْهِمُ الطَّيَالِسَةُ "

(7393) हजरत उम्मे शरीक (रज़ि.) बयान करती हैं कि उन्होंने, नबी अकरम(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'लोग दज्जाल से पहाड़ों में भाग जाएँगे,' उम्मे शरीक (रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! तो उस वक़्त अरब कहाँ होंगे? आपने फ़र्माया, 'वह बहुत थोड़े होंगे' यानी अरब जंग जू लोगों के तहफ़्फ़ुज़ के लिए नहीं होंगे।

जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब : 3930.

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ حَدَّثَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ أَخْبَرَتْنِي أُمُّ شَرِيكٍ، أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " لَيَفِرَّنَّ النَّاسُ مِنَ الدَّجَّالِ فِي الْجِبَالِ " . قَالَتْ أُمُّ شَرِيكٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَيْنَ الْعَرَبُ يَوْمَئِذٍ قَالَ " هُمْ قَلِيلٌ " .

(7394) यही रिवायत इमाम साहब दो और उस्तादों से बयान करते हैं।

तख़रीज 7394 : इसकी तख़रीज 7319 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ الْحَضْرَمِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي ابْنَ الْمُخْتَارِ - حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ رَهْطٍ، مِنْهُمْ أَبُو الدَّهْمَاءِ وَأَبُو قَتَادَةَ قَالُوا كُنَّا نَمُرُّ عَلَى هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ نَأْتِي عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ فَقَالَ ذَاتَ يَوْمٍ إِنَّكُمْ لَتُجَاوِزُونِي إِلَى رِجَالٍ مَا كَانُوا بِأَحْضَرَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنِّي وَلاَ أَعْلَمَ بِحَدِيثِهِ مِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَا بَيْنَ خَلْقِ آدَمَ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ خَلْقٌ أَكْبَرُ مِنَ الدَّجَّالِ " .

(7395) हजरत अबू हम्माद और अबू क़तादा, अपने साथियों के साथ बयान करते हैं कि हम हिशाम बिन आमिर (रज़ि.) से गुज़रकर हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होते, उन्होंने (हिशाम) ने एक दिन कहा, तुम मेरे पास गुज़र कर ऐसे लोगों के पास जाते हो, जो मुझसे ज़्यादा रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर नहीं हुए और न ही वह मुझसे ज़्यादा आपकी अहादीस जानते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना 'आदम (अ.) की पैदाइश से लेकर, क़ियामत के वाक़ेअ होने तक कोई मख़्लूक़ दज्जाल से बड़ी नहीं है।' फ़ित्ना और इब्तिला में बढ़कर भी मुराद हो सकता है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ الرَّقِّيُّ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ ثَلاَثَةِ، رَهْطٍ مِنْ قَوْمِهِ فِيهِمْ أَبُو قَتَادَةَ قَالُوا كُنَّا نَمُرُّ عَلَى هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ إِلَى عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ . بِمِثْلِ حَدِيثِ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ مُخْتَارٍ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ " أَمْرٌ أَكْبَرُ مِنَ الدَّجَّالِ".

(7396) हुमैद बिन हिलाल अपनी क़ौम के तीन अफ़राद जिनमें अबू क़तादा भी हैं, से बयान करते हैं, हम हिशाम बिन आमिर (रज़ि.) से गुज़रकर इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) के पास जाते, आगे ऊपर वाली रिवायत इस फ़र्क़ के साथ है कि उसमें ख़ल्क़ (मख़्लूक़) की जगह अम्र (मामला) है यानी दज्जाल के फ़ित्ने से बढ़कर कोई फ़ित्ना नहीं होगा।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَابْنُ، حُجْرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، -يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي

(7397) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'छः चीज़ों के वक़ूअ से पहले पहले नेक आमाल कर लो, मग़रिब से सूरज का

هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بَادِرُوا بِالأَعْمَالِ سِتًّا طُلُوعَ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا أَوِ الدُّخَانَ أَوِ الدَّجَّالَ أَوِ الدَّابَّةَ أَوْ خَاصَّةَ أَحَدِكُمْ أَوْ أَمْرَ الْعَامَّةِ " .

निकलना, या धुआँ, या दज्जाल या दाब्बा (जानवर) अपनी ख़ुसूसी मुद्दत या ख़ुसूसी मसरूफ़ियात व मशाग़िल या उमूमी फ़ित्ना व आज़माइश या सबकी मौत (क़ियामत)।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अम्रल आम्मा : ऐसा फ़ित्ना जो सबको अपनी लपेट में ले लेगा और सब उसमें मसरूफ़ हो जाएँगे किसी के पास ख़ैर व इस्लाह के लिए वक़्त नहीं होगा। (2) ख़ास्सता अहदिकुम : अपनी शख़्सी मसरूफ़ियत व मशग़ूलियत जिसकी बिना पर नेकी नहीं कर सकेगा और दोनों जगह मौत भी मुराद हो सकती है, यानी क़ियामत क़ायम हो जाएगी इसलिए उसको उसके बाद किसी अमल का फ़ायदा नहीं होगा।

حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامَ الْعَيْشِيُّ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ زِيَادِ بْنِ رِيَاحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بَادِرُوا بِالأَعْمَالِ سِتًّا الدَّجَّالَ وَالدُّخَانَ وَدَابَّةَ الأَرْضِ وَطُلُوعَ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا وَأَمْرَ الْعَامَّةِ وَخُوَيِّصَةَ أَحَدِكُمْ " .

(7398) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'छः चीज़ों के ज़ुहूर (ज़ाहिर होने) से पहले नेक अमल कर लो, दज्जाल, धुआँ, ज़मीन से निकलने वाला जानवर, सूरज का मग़रिब से उगना, सबका फ़ित्ना या मौत और अपनी ख़ुसूसी मशग़ूलियत।'

फ़ायदा : क़ियामत के क़ायम होने की निशानियों के ज़ाहिर होने के बाद, आमाल या ईमान मोतबर नहीं होगा।

وَحَدَّثَنَاهُ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(7399) यही रिवायत इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से बयान करते हैं।

बाब 26 : फ़ित्ना और आज़माइश के दिनों में इबादत की फ़ज़ीलत

(26) بَاب : فَضْلِ الْعِبَادَةِ فِى الْهَرْجِ

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ مُعَلَّى بْنِ زِيَادٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ، قُرَّةَ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ح وَحَدَّثَنَاهُ قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنِ الْمُعَلَّى بْنِ زِيَادٍ، رَدَّهُ إِلَى مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ رَدَّهُ إِلَى مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَدَّهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ " الْعِبَادَةُ فِي الْهَرْجِ كَهِجْرَةٍ إِلَىَّ " .

(7400) हजरत माक़िल बिन यसार (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं आपने फ़र्माया, 'फ़ित्ना और आज़माइश के दिनों में इबादत करना, मेरी तरफ़ हिज्रत करने की तरह है।'

तख़रीज 7400 : जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2201; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 3985.

फ़ायदा : मसरूफ़ियत और मशाग़िल से वक़्त निकालकर इबादत करना बड़ा मुश्किल है, फ़ित्ना में इब्तिला की सूरत में इंसान इबादत से ग़ाफ़िल हो जाता है, ऐसे वक़्त में इबादत करना हिज्रत की तरह बहुत बड़ी नेकी है।

وَحَدَّثَنِيهِ أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ نَحْوَهُ .

(7401) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, जो मुअनन इस जैसी है। इसकी तख़रीज हदीस 7326 में गुज़र चुकी है।

बाब 27: क़ियामत का क़रीब होना

(27) بَاب : قُرْبِ السَّاعَةِ

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - يَعْنِي ابْنَ مَهْدِيٍّ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الأَقْمَرِ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ عَلَى شِرَارِ النَّاسِ " .

(7402) हजरत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से रिवायत करते हैं, आपने फ़र्माया, 'क़ियामत सिर्फ़ शरीर लोगों पर क़ायम होगी' (क्योंकि अहले ईमान फ़ौत हो जाएँगे।)

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَعَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي، حَازِمٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، أَنَّهُ سَمِعَ سَهْلاً، يَقُولُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يُشِيرُ بِإِصْبَعِهِ الَّتِي تَلِي الإِبْهَامَ وَالْوُسْطَى وَهُوَ يَقُولُ " بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ هَكَذَا " .

(7403) हजरत सहल (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना, आप अंगूठे से मुत्तसिल और दरम्यानी उँगली से इशारा करके फ़र्मा रहे थे, 'मुझे और क़ियामत को इस तरह भेजा गया है।'

फ़ायदा : जिस तरह शहादत की उँगली और दरम्यानी उँगली के बीच फ़ासला नहीं है, इसी तरह मेरे और क़ियामत के बीच का फ़ासला नहीं है, मेरी नबुव्वत के दौर में क़ियामत आएगी। अब इसके ब ाद कोई नबी नहीं होगा।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ " . قَالَ شُعْبَةُ وَسَمِعْتُ قَتَادَةَ يَقُولُ فِي قَصَصِهِ كَفَضْلِ إِحْدَاهُمَا عَلَى الأُخْرَى فَلاَ أَدْرِي أَذَكَرَهُ عَنْ أَنَسٍ أَوْ قَالَهُ قَتَادَةُ .

(7404) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि .) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैं और क़ियामत इन उँगलियों की तरह मुत्तसिल भेजे गए हैं।' शोबा कहते हैं, क़तादा अपने बयान में कहते थे, जिस तरह एक दूसरी से (मामूली) ज़ाइद है, तो मुझे मालूम नहीं, क़तादा यह तफ़्सीर हजरत अनस से नक़ल करते थे या अपनी तरफ़ से बयान करते थे, यानी हमारे दरम्यान की मुद्दत, इंसानों की पूरी मुद्दत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है।

सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6504; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन : 2214.

وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، - يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ - حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ، وَأَبَا التَّيَّاحِ، يُحَدِّثَانِ أَنَّهُمَا سَمِعَا أَنَسًا، يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ هَكَذَا " . وَقَرَنَ شُعْبَةُ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ الْمُسَبِّحَةِ وَالْوُسْطَى يَحْكِيهِ .

(7405) हजरत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैं और क़ियामत को इस तरह मुत्तसिल भेजा गया है।' शोबा ने नक़्ल करते हुए अपनी दोनों उँगलियों, शहादत की और दरम्यानी को मिलाया।

इसकी तख़रीज हदीस 7330 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي ح، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِهَذَا.

(7406) इमाम साहब और दो और उस्तादों की सनदों से, अबू तय्याह से यह हदीस बयान करते हैं।

तख़रीज 7406 : सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6504.

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ حَمْزَةَ، - يَعْنِي الضَّبِّيَّ - وَأَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِهِمْ

(7407) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से हम्ज़ा ज़ब्बी और अबू तय्याह से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَعْبَدٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ " . قَالَ وَضَمَّ السَّبَّابَةَ وَالْوُسْطَى .

(7408) हजरत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैं और क़ियामत इन दो उँगलियों की तरह मुत्तसिल भेजे गए हैं, 'और आपने शहादत की उँगली की दरम्यानी वाली उँगली से मिलाया।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ كَانَ الأَعْرَابُ إِذَا قَدِمُوا عَلَى

(7409) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, बद्दू जब रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आते, तो आपसे क़ियामत के बारे में पूछते, क़ियामत कब होगी? तो आप उनमें से सबसे

رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم سَأَلُوهُ عَنِ السَّاعَةِ مَتَى السَّاعَةُ فَنَظَرَ إِلَى أَحْدَثِ إِنْسَانٍ مِنْهُمْ فَقَالَ " إِنْ يَعِشْ هَذَا لَمْ يُدْرِكْهُ الْهَرَمُ قَامَتْ عَلَيْكُمْ سَاعَتُكُمْ " .

नौख़ैज़ (उम्र) इंसान को देखकर फ़र्माते, 'अगर यह ज़िन्दा रहा तो उसको बूढ़ा होने से पहले तुम्हारी क़ियामत यानी मौत वाक़ेअ हो जाएगी।'

फ़ायदा : हर इंसान के लिए मुद्दते अ़मल उसकी ज़िन्दगी है, उसकी मौत से उसकी क़ियामत क़ायम हो गई, हिसाब व किताब का आग़ाज़ हो गया और यही क़ियामत है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَجُلاً، سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ وَعِنْدَهُ غُلاَمٌ مِنَ الأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ مُحَمَّدٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنْ يَعِشْ هَذَا الْغُلاَمُ فَعَسَى أَنْ لاَ يُدْرِكَهُ الْهَرَمُ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ" .

(7410) हजरत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से पूछा, क़ियामत कब क़ायम होगी? आपके पास मुहम्मद नामी एक अंसारी लड़का था, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर यह नौ उम्र ज़िन्दा रहा, तो मुम्किन है, यह बूढ़ा न हो सके, यहाँ तक कि (इस नस्ल की) क़ियामत क़ायम हो जाएगी।

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، - يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ - حَدَّثَنَا مَعْبَدُ بْنُ هِلاَلٍ الْعَنَزِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَجُلاً، سَأَلَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ قَالَ فَسَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم هُنَيْهَةً ثُمَّ نَظَرَ إِلَى غُلاَمٍ بَيْنَ يَدَيْهِ مِنْ أَزْدِ شَنُوءَةَ فَقَالَ " إِنْ عُمِّرَ هَذَا لَمْ يُدْرِكْهُ الْهَرَمُ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ " . قَالَ قَالَ أَنَسٌ ذَاكَ الْغُلاَمُ مِنْ أَتْرَابِي يَوْمَئِذٍ .

(7411) हजरत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से पूछा, क़ियामत कब क़ायम होगी? चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) कुछ देर ख़ामोश रहे, फिर आपके सामने अज़्दे शनुआ का एक लड़का था, उसकी तरफ़ देखकर फ़र्माया, 'अगर इसको उम्र मिली तो यह बूढ़ा नहीं हो सकेगा कि (तुम्हारी नस्ल की) क़ियामत क़ायम हो जाएगी।' हजरत अनस (रज़ि.) कहते हैं, वह लड़का उस वक़्त मेरा हम उम्र (सत्रह 17 साल) का था।

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ مَرَّ غُلاَمٌ لِلْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ وَكَانَ مِنْ أَقْرَانِي فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " إِنْ يُؤَخَّرْ هَذَا فَلَنْ يُدْرِكَهُ الْهَرَمُ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ " .

(7412) हजरत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं, मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ि.) का एक गुलाम जो मेरा हम उम्र था, गुज़रा, तो नबी अकरम(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर उसकी मौत मुअख़्ख़र (ताख़ीर) हुई तो उसे बुढ़ापा नहीं पा सकेगा , यहाँ तक कि क़ियामत क़ायम हो जाएगी।'

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " تَقُومُ السَّاعَةُ وَالرَّجُلُ يَحْلُبُ اللِّقْحَةَ فَمَا يَصِلُ الإِنَاءُ إِلَى فِيهِ حَتَّى تَقُومَ وَالرَّجُلاَنِ يَتَبَايَعَانِ الثَّوْبَ فَمَا يَتَبَايَعَانِهِ حَتَّى تَقُومَ وَالرَّجُلُ يَلِطُ فِي حَوْضِهِ فَمَا يَصْدُرُ حَتَّى تَقُومَ " .

(7413) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'क़ियामत क़ायम हो जाएगी और जो आदमी दुधारी ऊँटनी दूह रहा होगा, उसका बरतन उसके मुँह तक नहीं पहुँच सकेगा कि वह क़ायम हो जाएगी और दो आदमी कपड़े की ख़रीदो फ़रोख़्त कर रहे होंगे और वह उसका सौदा मुकम्मल नहीं कर सकेंगे कि अचानक क़ियामत क़ायम हो जाएगी और एक आदमी अपना हौज़ लेप पोत रहा होगा कि उसकी वापसी से पहले क़ियामत क़ायम हो जाएगी।

मुफ़रदातुल हदीस : यलितु, यलीत़, यल्वत़, यलित्तु सबका मआनी लीपना पोतना है।

फ़ायदा : इस हदीस का मक़्सद यह है कि क़ियामत अचानक क़ायम हो जाएगी उसके वाक़ेअ होने में कोई देर नहीं लगेगी जैसाकि फ़र्माने बारी तआला है (व मा अम्रूस्साअति इल्ला कलम्हिल बसरि औ हुवा अक़्रबु) (नह़ल, आ. 77) 'और क़ियामत का मामला नहीं है मगर आँख झपकने की या वह उससे भी ज़्यादा क़रीब है।'

बाब 28 :
दो नफ़्ख़ों का दरम्यानी फ़ासला या वक़्फ़ा व मुद्दत

(28)
بَاب : مَابَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ

(7414) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'दोबारा सूर फूँकने का दरम्यानी फ़ासला चालीस होगा।' लोगों ने पूछा, 'ऐ अबू हुरैरा (रज़ि.)! चालीस दिन? उन्होंने कहा, मैं नहीं कह सकता, लोगों ने कहा, चालीस माह? उन्होंने कहा यह कहने से भी मैं इंकार करता हूँ, लोगों ने कहा, चालीस साल? उन्होंने कहा, मैं यह भी नहीं कह सकता, 'फिर अल्लाह आसमान से बारिश बरसाएगा, जिससे लोग सब्ज़ियों की तरह उग आएँगे।' यानी खेती की तरह पानी से नशोनुमा पा लेंगे, आपने फ़र्माया, 'इंसान की हर चीज़ बोसीदा हो जाती है मगर एक दुमची की हड्डी, उससे क़ियामत के दिन इंसानों की (मख़लूक़ की) तख़लीक़ होगी।'
सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर : 4935.

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَا بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ " . قَالُوا يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَرْبَعُونَ يَوْمًا قَالَ أَبَيْتُ . قَالُوا أَرْبَعُونَ شَهْرًا قَالَ أَبَيْتُ . قَالُوا أَرْبَعُونَ سَنَةً قَالَ أَبَيْتُ " ثُمَّ يُنْزِلُ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيَنْبُتُونَ كَمَا يَنْبُتُ الْبَقْلُ " . قَالَ " وَلَيْسَ مِنَ الإِنْسَانِ شَىْءٌ إِلاَّ يَبْلَى إِلاَّ عَظْمًا وَاحِدًا وَهُوَ عَجْبُ الذَّنَبِ وَمِنْهُ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " .

(7415) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'इंसान के हर हिस्से को मिट्टी खा जाती है, मगर दुमची की हड्डी, उससे इंसान पैदा किया गया है और उससे जोड़ा जाएगा।'
सुनन अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना : 4743; नसाई, किताबुल जनाइज़ : 2076.

وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، - يَعْنِي الْحِزَامِيَّ - عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " كُلُّ ابْنِ آدَمَ يَأْكُلُهُ التُّرَابُ إِلاَّ عَجْبَ الذَّنَبِ مِنْهُ خُلِقَ وَفِيهِ يُرَكَّبُ".

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنَّ فِي الإِنْسَانِ عَظْمًا لاَ تَأْكُلُهُ الأَرْضُ أَبَدًا فِيهِ يُرَكَّبُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " . قَالُوا أَىُّ عَظْمٍ هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " عَجْبُ الذَّنَبِ " .

(7416) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह को सुनाई हुई हदीसों में से एक यह हदीस है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'इंसान में एक हड्डी है, उसको ज़मीन कभी भी खा नहीं सकेगी, उससे क़ियामत के दिन जोड़ा जाएगा।' लोगों ने पूछा, वह कौनसी हड्डी है? ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'दुमची'

फ़ायदा : अजबुज़ ज़नब : जानवर के दुम पर एक इंतिहाई छोटी सी हड्डी है, जिससे इंसान की तख़्लीक़ का आग़ाज़ होता है और उससे उसका एआदा होगा।

इस किताब के कुल बाब 20 और 106 अहादीस हैं।

किताबुज़्ज़ुह्द वर्रक़ाइक़

दुनिया से बेरग़बती का बयान

हदीस नम्बर 7417 से 7522 तक

तआरूफ़ किताबुज़्ज़ुहद वर्रक़ाइक़

ये दुनिया बनू आदम का अस़ल वतन नहीं। ये जगह तकलीफ़ों, स़दमों, ख़तरों और आफ़तों से भरी हूई है। आदम (ﷺ) और उनकी औलाद का वतन वही जगह है जिसे हासिल करने की ख़्वाहिश उसके ख़ून में दौड़ रहा है। आदम (ﷺ) के जिस बेटे/बेटी ने अपनी फ़ितरत की हिफ़ाजत की, अपने ख़ालिक़ व मालिक, पालने वाले और नेमतों से नवाज़ने वाले परवरदिगार से अपना ताल्लुक़ नहीं तोड़ा उसे मालूम है कि उसका अस़ल वतन कौन सा है और उसने वहाँ पहुँचने के लिये कौन सा रास्ता इख़्तियार करना है, उसे मालूम है कि इस दारूल महन में इसे हर सूरत एक मुतय्यन मुद्दत के लिये वक़्त गुज़ारना है और जब ये मीयाद पूरी हो जायेगी तो वह इस क़ैद ख़ाने से परवाज़ करेगा और अपने ख़ूबसूरत तरीन, अब्दी नेमतों से भरे हुये और हर तरह की तकलीफ़ों से महफ़ूज़ वतन में पहुँच जायेगा। वहाँ से हमेशा अपने मोहब्बत करने वाले इन्तेहाई महबूब और रहीम व करीम रब के इन्तेहाई क़ुर्ब में ज़िन्दगी गुज़ारेगा, जहाँ हर आन नये से नया इनाम उसका मुन्तज़िर होगा।

दूसरी तरफ़ आदम (ﷺ) का वह बेटा/बेटी जिसने अपनी फ़ितरत को अपने बदतरीन दुशमन के पास गिरवी रख दिया, अपने रहीम व करीम परवरदिगार से अपना नाता तोड़ लिया और अपने बदतरीन दुशमन के इस झूठ का ऐतबार कर लिया कि इस दुनिया में जो कुछ है लज़्ज़त का सामान स़िर्फ़ वही है, वह इस दुनिया के मताअ फ़रेब का शिकार हो जायेगा, अपनी मन्ज़िल को भुला देगा, हक़ीक़ी वतन की तरफ़ जाने वाले रास्ते को छोड़ देगा और इस घटिया ज़िन्दगी की झूठी और आरज़ी दिल फ़रेबियों के पीछे चलता हुआ तबाही के गड्ढे में गिर जायेगा। अपने दुशमन के फ़रेब में अगर उसने जिस झूठी जन्नत में दिल लगाया था वह भी उससे छिन जायेगी। ये दुनिया हक़ीक़तन एक क़ैद ख़ाना है जिसकी अस़लियत से मोमिन आगाह है और काफ़िर के लिये जन्नत है जिसके फ़रेब होने का उसे तब पता चलेगा जब वह हतमी तबाही का शिकार हो चुका होगा।

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस दुनिया की अस़लियत को वाश्गाफ़ करने वाली एक मिस़ाल से औलादे आदम को इस दुनिया के फ़रेब से बचाने की कोशिश फ़रमाई। ये उस दुनिया बदसूरत कान कटे बकरी के बच्चे से भी ज़्यादा हक़ीर है जिसे अपनी मुख़्तस़र सी ज़िन्दगी के बाद मर कर मुतअफ़्फ़न हो जाना और गन्दगी में बदल जाना है। इस दुनिया की सारी नेमतें इसी तरह की हैं, थोड़ी देर के लिये दिलकश और जल्द ही बदल जाने वाली हैं। सबसे ज़्यादा दाना और सबसे कामयाब इन्सान वही हो सकता है जो इसी वक़्त इस नेमत से फ़ायदा उठाये जबकि वह नहीं बदली, खा ले, पहन ले और जो बच्चे उसे एक नुस्ख़–

ए-कीमीया के ज़रिये से इन्तेहाई बेश क़ीमत और लाफ़ानी बनाकर ऐसे ज़रिये से अपने हक़ीक़ी वतन और अपने दाइमी घर की ज़ैब व ज़ीनत बनाने के लिये आगे रवाना कर दे कि वहाँ पहुँचने तक वह लम्हा बेश अज़ बेश क़ीमती और अ़ज़ीम से अ़ज़ीम तर होता जाये। नुस्ख़-ए-कीमीया ये है कि हर नेमत को अपने रब की रज़ा के साथ वाबस्ता कर दे और उसके रास्ते में दे कर उसे आगे भिजवा दे। अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो ये नेमतें उसे क़ब्र तक पहुँचा कर वापस उन लोगों के पास आ जायेंगी जो उन्हें सेंत सेंत कर रखेंगे और वह गन्दगी में बदलती फ़ना होती जायेंगी या फिर उनकी क़िस्मत अच्छी हूई तो जो काम ये जाने वाला नहीं कर सका वह कर गुज़रेंगे और उन्हें आगे रवाना करने में कामयाब हो जायेंगे। दुनिया की अक्सर नेमतें इसी दुनिया में गन्दगी में बदलती रहती हैं और जो नहीं बदलती वह तप कर अंगारा बनती रहती हैं, उसी को जला डालती हैं, वह उनसे चिमटा रहता है।

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हर मौक़े पर अपनी उम्मत को कामयाबी के उन सुनहरे उसूलों से आगाह किया और बेहतरीन तर्बीयत फ़रमाई। जब फ़ाक़ों में ज़िन्दगी गुज़ार कर ईसार करने वाले अन्सार बहरीन से माल आ जाने की ख़बर सुन कर फ़ाक़े और एहतियाज की शिद्दत से बचने की उम्मीद ले कर आपकी ख़िदमत में आ बैठे तो आपने उन्हें उस माल में से अपने हिस्से की नवेद भी अ़ता की और उससे करोड़ों गुना ज़्यादा क़ीमती उस हक़ीक़त से आगाह किया कि फ़ाक़े में जो इम्तेहान होता है वह उस इम्कतेहान से बहुत आसान है जो माल की फ़रावानी के ज़रिये से होता है। वही अहले ईमान जो फ़ाक़ों के आ़लम में ईसार और मवासात के रास्ते पर चल रहे हैं, माल आ जाने के बाद उनमें से बहुत लोग दुनियादारी में मुक़ाबले का शिकार हो जायेंगे, ईसार के बजाये एक दूसरे से मुँह मोड़ लेंगे और मवासात के बजाये बाहमी हसद और बुग़्ज़ का शिकार हो जायेंगे। आपने इस इम्तेहान में सुर्ख़रू होने का नुस्ख़ा ये बताया कि दुनिया और माल के मामले में उसकी तरफ़ देखने के बजाये जो तुमसे ऊपर है, उसकी तरफ़ देखना जो तुमसे कम तर है और अपनी उस हालत को याद रखना जो दुनिया की नेमतें मिलने से पहले थी और याद रखना कि तुम ख़ूद अपनी ख़ूबसूरत शक्ल व सूरत, सेहत व आ़फ़ियत, सुनने, बोलने, देखने की सलाहियत और माल व दौलत ख़ूद बना कर साथ नहीं लाये, न तुमहारे पास ऐसा करने की ताक़त है। ये सब कुछ तुम्हें देने वाले ने दिया है। ये उसी के काम आयेगा जिसने आँखों से देखने के साथ दिल से देखने की सलाहियत से फ़ायदा उठाया। देने वाले का एहसान याद रखा, उसके नाम पर देने को बोझ न समझा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किसी साबिक़ा उम्मत के तीन आदमियों का क़िस्सा सुना कर अपनी उम्मत को मन्ज़िल का पता बताया और वहाँ तक पहुँचाने वाले रास्ते पर ला खड़ा किया। वह अपने नसीब को रोये जो आपके बताये हुये रास्ते को छोड़ कर दुशमन के पीछे चल पड़ा। जिन्होंने आप (ﷺ) के रास्ते को न छोड़ा वह हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) जैसे हैं, उन्होंने याद रखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

फ़रमाया था: 'अल्लाह अपने उस बन्दे से मोहब्बत रखता है जो मुत्तक़ी हो, ग़नी और गुमनाम व गोशानशीन हो। वह उत्बा बिन ग़ज़्वा(ﷺ) जेसे थे जो फ़िक्र व फ़ाक़ा के आलम में रसूलुल्लाह (ﷺ) की रफ़ाक़त में गुज़ारी हूई ज़िन्दगी की लज़्ज़तों को भुला न पाये थे और दूसरों को भी यही रास्ता दिखाते रहते थे। हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अनस (ﷺ) ने भी उम्मत के सामने इस सबक़ को दोहराया जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन लोगों के अन्जाम के हवाले से लिखाया था जो दुनिया के फ़रेब में आकर अपने रब को भुला देते हैं और उससे ताल्लुक़ तोड़ लेते हैं।

हज़रत अनस, अबू हुरैरह, नोमान बिन बशीर (ﷺ) और सबसे बढ़ कर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा (ﷺ) ने खोल खोल कर बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उम्मत को दिये हुये सबक़ पर ख़ूद किस तरह अमल फ़रमाते थे। रिज़्क़ तक के मामले में आपकी दुआ ही ये थी: 'ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद का रिज़्क़ ज़िन्दगी बरक़रार रखने जितना कर दे।' और ये ज़िन्दगी इस तरह बरक़रार रहती थी कि महीनों चूल्हा न जलता था। सारा घर कभी मुसल्सल दो रातें जौ की रोटी पेट भर कर न खाता था। बहुत ख़ूश हाली में भी मुसल्सल तीन रातों से ज़्यादा गन्दुम की रोटी न खाई थी। गुज़र इन दो चीज़ों पर थी, खजूर पर और पानी पर, बल्कि जब आपके घर वालों को ये दोनों चीज़ें पेट भर कर मिलने लगीं तो आप दुनिया छोड़ कर आगे रवाना हो गये। यहाँ की ज़िन्दगी में तो रद्दी खजूर भी इतनी मयस्सर न थी कि पेट भर जाता, आपके तर्बीयत याफ़्ता सहाबा मक्खन और एक से ज़्यादा क़िस्म की खजूरों को सामाने ऐश ख़्याल करते थे और जिसके घर में बीवी के साथ कोई ख़िदमत गुज़ार भी मयस्सर होता तो उसे बादशाह क़रार देते थे। फ़क़ीरी में फ़ायदा ये था कि फ़ुक़रा मुसलमान अग़निया से चालीस साल पहले जन्नत में जा बस्ते थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुनिया की लज़्ज़तों में ग़र्क़ होकर अज़ाब का शिकार होने वालों के कुएँ के पानी से गुंधा हुआ आटा भी अपने साथियों को इस्तेमाल न करने दिया और सवारी के ऊँटों के आगे डाल दिया और ये नुक्ता सिखाया कि सोचो जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी ही समूद वालों की तरह दुनिया की लज़्ज़तों में ग़र्क़ होकर गुज़ार देगा वह किस तरह अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार होगा।

इसके बाद इमाम मुस्लिम (رحمه الله) ने वह अहादीस़ बयान कीं जिनमें सिखाया गया है कि अपने माल के ज़रिये से अल्लाह की रज़ा और उसका क़ुर्ब कैसे हासिल हो सकता है, बेवा औरतों, मिस्कीनों और यतीमों की ख़बर गीरी का क्या इनाम मिलता है, मस्जिदें बनाने और मुसाफ़िरों का ख़्याल रखने का अज्र क्या है। साथ ही वह अहादीस़ बयान की जिनमें बताया गया है कि ये अच्छे काम ज़ाया किस वजह से होते हैं बल्कि बुरे और क़ाबिले सज़ा हो जाते हैं। रियाकारी की तबाहकारी क्या है। ज़बान को बेएहतियाती से इस्तेमाल करने पर क्या तबाही आती है। दूसरों को अच्छी तल्क़ीन करने और ख़ूद अमल न करने का नतीजा क्या होता है, तकब्बुर का शिकार होकर अपने गुनाहों का इश्तेहार लगाने वाला किस

अंजाम को पहुँचता है, अल्लाह की रज़ा के लिये छोटे छोटे काम करने पर कितने बड़े इनामात मिल सकते हैं। इसके बरअक्स जिसकी फ़ितरत मस्ख़ हो जाये, बईद नहीं कि उसकी ख़िल्क़त भी मस्ख़ हो जाये, उसे इन्सान से तब्दील करके कोई हक़ीर जानवर बना दिया जाये। इन्सान ख़ुद भी तकब्बुर से बचे, दूसरों को भी तकब्बुर का निशाना न बनने दे। हर बड़े छोटे का हक़ अदा करे। फ़रामीने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर मुश्तमिल अमल व हिकमत का ये ख़ज़ीना इंसानियत की हिदायत और फ़लाह का ज़ामिन है इसका सही तहफ़्फ़ुज़ भी अज़ीम अज्र का सबब है।

इसके बाद उन लोगों का ज़िक्र है जिन्हें पैगम्बरों की तालीमात और सच्ची हिदायात की हक़ीक़ी क़द्र मालूम थी। वह ज़िन्दा आग में जल गये और हिदायत से दस्तबरदार न हुये।

फिर इमाम मुस्लिम (رحمة الله) ने हज़रत अबू यसर और हज़रत जाबिर (رضي الله عنه) की ज़बानी उस ज़िन्दगी के नमूने पेश किये जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की रफ़ाक़त में बसर हुई, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) की हयाते मुबारका की झलकियाँ, आपकी सिखाई हुई हिकमत के नमूने, आपकी दुनिया से बेरग़बती, अल्लाह की राह में मुस्तैदी और आपके बेकिनार फ़ैज़ और आपकी अज़ीम तरीन बरकतों और उस ज़िन्दगी और उसके बाद उम्मत के हर फ़र्द से आपकी शफ़क़त व रहमत के रूह पर्वर तज़्किरे करे हैं जिनसे हर मोमिन का दिल ईमान की लज़्ज़तों से मामूर हो जाता है। आपकी हयाते मुबारका की ये झलकियाँ और ज़िन्दगी के हर मरहले यहाँ तक कि अल्लाह की राह में हिजरत के हर मोड़ पर आपके तर्ज़े अमल और रवैये के जमाल इन्सान के दिल को मोम बनाने का सामान है। आपकी सीरत का हर नक़्श आपके साथ अहले ईमान की मोहब्बत को फ़रौज़ाँ तर करने का यक़ीनी ज़रिया है।

56 : दुनिया से बेरग़बती का बयान

बाब 1 : दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिए जन्नत है।

(1)

بَابُ : اَلدُّنْيَا سِجْنٌ لِّلْمُؤْمِنِ وَجَنَّةٌ لِّلْكَافِرِ

(7417) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, **'दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है।'**

तख़रीज 7417 : जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2334.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، - يَعْنِي الدَّرَاوَرْدِيَّ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ " .

फ़ायदा : क़ैदख़ाना में, इंसान अपनी ज़िन्दगी में आज़ाद नहीं होता, बल्कि हर चीज़ में जेल के क़वानीन और उसकेकारिन्दों के हुक्म का पाबन्द होता है, खाने पीने उठने बैठने और चलने फिरने और मैल मिलाप में, वह अपनी मर्ज़ी नहीं चला सकता, बल्कि चार व नाचार, हर मामले में दूसरों के हुक्म की पाबन्दी करना ही पड़ती है, इस तरह कोई इंसान जेलख़ाना में जी नहीं लगाता और उसको अपना घर नहीं समझता, बल्कि हर वक़्त और हर क़ीमत पर उससे निकलने का ख़्वाहिशमंद और ख़्वाहाँ रहता है जबकि जन्नत में किसी क़ानून की पाबन्दी नहीं रहेगी और हर जन्नती अपनी मर्ज़ी की ज़िन्दगी गुज़ार सकेगा और उसकी हर आरज़ू और ख़्वाहिश पूरी होगी, हर चीज़ में आज़ाद होगा और वह जन्नत को अपना मुस्तक़िल घर बनाएगा, कभी भी और किसी हालत में भी उससे निकलने की ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं करेगा, इसलिए दुनिया में एक मोमिन को हुक्म व क़ानून की पाबन्दी में

क़ैदख़ाना वाली ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए, शरीअत के किसी हुक्म व क़ानून की नाफ़र्मानी नहीं करना चाहिए और काफ़िर की तरह शुत्र बे महार होकर ज़िन्दगी नहीं गुज़ारनी चाहिए और न दुनिया में जी लगाना और इसको मुस्तक़िल ठिकाना बनाना चाहिए, इसलिए मुहद्दिसीन किताबुज़्ज़ुहद वर्रिक़ाक़ में उन ही हदीसों को दर्ज करते हैं, जिनसे दिल में रिक़्क़त व नर्मी और गुदाज़ की कैफ़ियत पैदा होती है, दुनिया से वाबस्तगी कम होती है, आख़िरत की फ़िक्र मोजिज़न (भरपूर) होती है और अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत की कामयाबी को ही नसबुल ऐन (ज़िन्दगी का मकसद) क़रार देता है।

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، - يَعْنِي ابْنَ بِلاَلٍ - عَنْ جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَرَّ بِالسُّوقِ دَاخِلاً مِنْ بَعْضِ الْعَالِيَةِ وَالنَّاسُ كَنَفَتَهُ فَمَرَّ بِجَدْىٍ أَسَكَّ مَيِّتٍ فَتَنَاوَلَهُ فَأَخَذَ بِأُذُنِهِ ثُمَّ قَالَ " أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنَّ هَذَا لَهُ بِدِرْهَمٍ " . فَقَالُوا مَا نُحِبُّ أَنَّهُ لَنَا بِشَىْءٍ وَمَا نَصْنَعُ بِهِ قَالَ " أَتُحِبُّونَ أَنَّهُ لَكُمْ " . قَالُوا وَاللَّهِ لَوْ كَانَ حَيًّا كَانَ عَيْبًا فِيهِ لأَنَّهُ أَسَكُّ فَكَيْفَ وَهُوَ مَيِّتٌ فَقَالَ " فَوَاللَّهِ لَلدُّنْيَا أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ مِنْ هَذَا عَلَيْكُمْ " .

(7419) हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) अवाली (बुलंद हिस्सा) की तरफ़ से आते हुए, बाज़ार से गुज़रे और लोग दोनों तरफ़ से आपको घेरे हुए थे, चुनाँचे आप बकरी के एक बूचे (छोटे या कान कटे) मुर्दा बच्चे से गुज़रे, तो उसको उसके कान से पकड़कर फ़र्माया, 'तुममें से कौन इसको एक दिरहम के बदले लेना पसंद करता है?' तो सहाबा किराम (रज़ि.) ने जवाब दिया, हम तो इसको मामूली चीज़ के बदले भी लेना पसंद नहीं करते और हम इसको लेकर क्या करेंगे? आपने फ़र्माया, 'क्या तुम इसको लेना पसंद करते हो?' उन्होंने कहा, 'अल्लाह की क़सम! अगर यह ज़िन्दा होता, तो फिर भी ऐबदार होता क्योंकि यह बूचा है, तो अब इसकी क्या सूरत होगी, जबकि यह मुर्दा है। चुनाँचे आपने फ़र्माया, 'अल्लाह की क़सम! दुनिया अल्लाह की नजर में इससे ज़्यादा हक़ीर है, जितना यह तुम्हारी नज़र में हक़ीर है।'

तख़रीज 7418 : सुनन अबूदाऊद, किताबुत्तहारत : 186.

मुफ़रदातुल हदीस : अस्सक्कु : जिसके कान छोटे या कटे हों, बूचा

फ़ायदा : जिस तरह मुरदार और बूचा बच्चा इंसान के नज़दीक ह़क़ीर और ज़लील है, अल्लाह के नज़दीक दुनिया उससे भी ज़्यादा ह़क़ीर और बेवक़्अत है, इसलिए दुनिया को अपनी त़लब व फ़िक्र का मर्कज़ बनाने की बजाए, हमें आख़िरत को अपनी तवज्जह और एहतिमाम का मर्कज़ बनाना चाहिए और दुनिया से बक़द्रे ज़रूरत ही फ़ायदा उठाना चाहिए, दुनिया के सिलसिले में इफ़रात़ व तफ़रीत़ का शिकार नहीं होना चाहिए।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَرْعَرَةَ السَّامِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، - يَعْنِيَانِ الثَّقَفِيَّ - عَنْ جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ‏.‏ بِمِثْلِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ الثَّقَفِيِّ فَلَوْ كَانَ حَيًّا كَانَ هَذَا السَّكَكُ بِهِ عَيْبًا ‏.‏

(7419) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही हदीस इस फ़र्क़ से बयान करते हैं (तो अगर यह ज़िन्दा होता तो तब भी यह बूचापन उसके लिए ऐ़ब व नुक़्स होता।'

तख़रीज 7419 : इसकी तख़रीज हदीस 7344 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَقْرَأُ ‏{‏ أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ‏}‏ قَالَ ‏"‏ يَقُولُ ابْنُ آدَمَ مَالِي مَالِي - قَالَ - وَهَلْ لَكَ يَا ابْنَ آدَمَ مِنْ مَالِكَ إِلاَّ مَا أَكَلْتَ فَأَفْنَيْتَ أَوْ لَبِسْتَ فَأَبْلَيْتَ أَوْ تَصَدَّقْتَ فَأَمْضَيْتَ ‏"‏ ‏.‏

(7420) मुतर्रिफ़ (रह़.) अपने वालिद (ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शुख़ैर रह़.) से बयान करते हैं, मैं नबी अकरम(ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ, जबकि आप सूरह अल्हाकुमुत्तकासुर (तुम्हें कसरत की चाहत व रग़बत ने मशग़ूल कर दिया) पढ़ रहे थे, आपने फ़र्माया, 'आदम (अ़.) का बेटा कहता है, मेरा माल, मेरा माल (फ़र्माया) और क्या तेरे लिए, ऐ आदम के बेटे! तेरे माल से उसके सिवा कुछ ह़िस्सा है, जो तूने खाकर ख़त्म कर दिया, या तूने पहन लिया, तो पुराना कर डाला या तूने स़दक़ा करके आगे भेज दिया।'

जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2342; किताबुत्तफ़्सीर : 3354; नसाई, किताबुल अह़बास : 3615.

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ, इंसान के लिए ह़क़ीक़तन और वाक़िअतन काम आने वाला माल वही है जो उसने अल्लाह की राह में स़दक़ा किया और जो माल दुनिया में खाने पीने और पहनने की ज़रूरियात या इस क़िस्म की और दुनियावी ज़रूरियात में ख़र्च किया, उसका नफ़ा मह़दूद और आ़रज़ी है, यहीं ख़त्म हो जाएगा, अबदी और हमेशा की ज़िन्दगी में काम नहीं आएगा।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، وَقَالاَ، جَمِيعًا حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سَعِيدٍ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا أَبِي كُلُّهُمْ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ انْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ بِمِثْلِ حَدِيثِ هَمَّامٍ .

(7421) इमाम साहब अपने तीन और उस्तादों से ऊपर वाली हदीस बयान करते हैं और उसमें अतैतु की जगह इन्तहैतु (आप तक पहुँचा) है।

तख़रीज 7421 : इसकी तख़रीज हदीस 7346 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي، هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَقُولُ الْعَبْدُ مَالِي مَالِي إِنَّمَا لَهُ مِنْ مَالِهِ ثَلاَثٌ مَا أَكَلَ فَأَفْنَى أَوْ لَبِسَ فَأَبْلَى أَوْ أَعْطَى فَاقْتَنَى وَمَا سِوَى ذَلِكَ فَهُوَ ذَاهِبٌ وَتَارِكُهُ لِلنَّاسِ " .

(7422) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'बन्दा कहता है, मेरा माल, मेरा माल, हालाँकि उसके माल में से उसका बस तीन मदों में ख़र्च होने वाला है, जो उसने खाकर ख़त्म कर दिया, जो पहनकर पुराना कर दिया और अल्लाह की राह में देकर ज़खीरा कर लिया और उसके सिवा जो कुछ है तो वह उसे लोगों के लिए छोड़कर यहाँ से जाने वाला है।'

मुफ़रदातुल हदीस : इक़्तना : जमा कर लिया, ज़ख़ीरा बना लिया।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि हदीस में मज़्कूरा तीन मदों के सिवा जो माल वह जमा करता है, वह दरह़क़ीक़त उसका नहीं है, बल्कि उन वारिसों का है जिनके लिए वह उसको छोड़ जाने वाला है।

وَحَدَّثَنِيهِ أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي الْعَلاَءُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

(7423) इमाम साहब ने यही रिवायत एक और उस्ताद से सुनी है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى التَّمِيمِيُّ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، كِلاَهُمَا عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، قَالَ يَحْيَى أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثَلاَثَةٌ فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقَى وَاحِدٌ يَتْبَعُهُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَعَمَلُهُ فَيَرْجِعُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَيَبْقَى عَمَلُهُ " .

(7424) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मय्यित के साथ तीन चीज़ें जाती हैं, चुनाँचे दो लौट आती हैं और एक उसके पास रह जाती है, उसका अहल, उसका माल और अ़मल उसके साथ जाते हैं, फिर उसका अहल और माल लौट आते हैं और उसका अ़मल रह जाता है।'

तख़रीज 7424 : सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6514; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2379; नसाई, किताबुल जनाइज़ : 1936.

फ़ायदा : इंसान के साथ उसके कुछ अहल और कुछ माल, नौकर चाकर, गुलाम, चारपाई वग़ैरह जाते हैं, जो दरहक़ीक़त अब उसके नहीं हैं, उसके वारिसों के हैं, जाते हैं और दफ़न करने के बाद वापिस आ जाते हैं, नेक अ़मल क़ब्र में इंसान के पास एक ख़ूबरू ख़ुशपोश और ख़ुश्बूदार जवान की शक्ल में आता है और बुरा अ़मल उसके बरअक्स आता है।

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، - يَعْنِي ابْنَ حَرْمَلَةَ بْنِ عِمْرَانَ التُّجِيبِيَّ - أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَوْفٍ وَهُوَ حَلِيفُ بَنِي

(7425) हजरत अ़म्र बिन औ़फ़ (रज़ि.) जो बनू आ़मिर बिन लुअय के हलीफ़ थे और जंगे बद्र में रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ मौजूद थे, बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हजरत अबू उ़बैदा बिन ज़र्राह (रज़ि.) को बहरैन, का जिज़्या लाने के लिए भेजा, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बहरैन के बाशिन्दों से सुलह कर ली थी और उन पर हज़रत अ़लाअ बिन हज़रमी

عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِجِزْيَتِهَا وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم هُوَ صَالَحَ أَهْلَ الْبَحْرَيْنِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمُ الْعَلاَءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَسَمِعَتِ الأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَوَافَوْا صَلاَةَ الْفَجْرِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم انْصَرَفَ فَتَعَرَّضُوا لَهُ فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ رَآهُمْ ثُمَّ قَالَ " أَظُنُّكُمْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدِمَ بِشَىْءٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ " . فَقَالُوا أَجَلْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ " فَأَبْشِرُوا وَأَمِّلُوا مَا يَسُرُّكُمْ فَوَاللَّهِ مَا الْفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ . وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُبْسَطَ الدُّنْيَا عَلَيْكُمْ كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا وَتُهْلِكَكُمْ كَمَا أَهْلَكَتْهُمْ " .

(रज़ि.) को गवर्नर मुक़र्रर किया था, चुनाँचे हजरत अबू उबैदा (रज़ि.) बह्रैन से माल लेकर आ गए, चुनाँचे हज़रत अबू उबैदा (रज़ि.) की आमद की ख़बर अंसार ने भी सुन ली थी, वह आपके साथ सुबह की नमाज़ में शरीक हुए, तो जब रसूलुल्लाह(ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फिरे, तो वह आपके सामने हुए, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) उनको देखकर मुस्कुराए। फिर फ़र्माया, 'तुम्हारे बारे में मेरा ख़्याल है कि तुमने सुन लिया है कि अबू उबैदा बह्रैन से कुछ माल ले आए हैं?' उन्होंने कहा, जी हाँ! ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'ख़ुश हो जाओ और ख़ुशकुन चीज़ की उम्मीद रखो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! मैं तुम पर फ़क़ीरी व नादारी के आने से नहीं डरता, लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में यह डर है कि तुम पर दुनिया खोल दी जाएगी, जैसे कि तुमसे पहले लोगों पर वसीअ (खोल) दी गई थी, फिर तुम उसको बहुत ज़्यादा चाहने लगोगे, जैसे उन्होंने उसको बहुत ज़्यादा चाहा था और वह तुमको बर्बाद कर देगी, जिस तरह उन लोगों को बर्बाद किया था।'

तख़रीज 7425 : सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्यति वल मुवादिआ : 3158; किताबुल मग़ाज़ी : 12, हदीस : 4015; किताबुर्रिक़ाक़ : 6425; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 28, हदीस 2462; सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 3997.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) फ़वाफ़ौ सलातल फ़ज्र : उन्होंने नमाज़े फ़ज्र को पाया, उसमें हाज़िर हुए क्योंकि आम हालात में वह अपने अपने महल्लों की मसाजिद में नमाज़ पढ़ते थे, किसी इज्तिमाई ज़रूरत के लिए, सारे आपकी मस्जिद में हाजिर होते थे। (2) तनाफ़सूहा : यानी ततना फ़सूहा इसमें रग़बत व चाहत करोगे, ज़्यादा से ज़्यादा समेटने की कोशिश करोगे। एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करोगे।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है कि आपको उम्मत के फ़क्रो नादारी में मुब्तला होने का ज़्यादा ख़तरा नहीं था, बल्कि ज़्यादा ख़तरा इस बात का था कि ज़्यादा दौलतमंदी आएगी, जिससे दुनियावी हिर्स और दौलत की रग़बत व चाहत में इज़ाफ़ा होगा, लोग दुनिया के दीवाने और मतवाले होकर मक़सदे ज़िन्दगी को भुला बैठेंगे, दुनिया की ऐशो इशरत में मगन होकर, आपस में हसदो बुग़ज़ का शिकार होंगे और दुनियापरस्ती में मुब्तला होकर तबाह व बर्बाद होंगे और आजकल हम सिर की आँखों से इसका मुशाहिदा कर रहे हैं।

حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، جَمِيعًا عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، بْنِ سَعْدٍ حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدَّارِمِيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، كِلاَهُمَا عَنِ الزُّهْرِيِّ، بِإِسْنَادِ يُونُسَ وَمِثْلِ حَدِيثِهِ غَيْرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ صَالِحٍ " وَتُلْهِيَكُمْ كَمَا أَلْهَتْهُمْ " .

(7426) इमाम साहब यही हदीस अपने तीन उस्तादों से बयान करते हैं, मगर सालेह की हदीस में तुहलिककुम कमा अहलकत्हुम की जगह है 'तुल्हीकुम कमा अल्हत्हुम' तुमको ग़ाफ़िल कर देगी, जिस तरह उनको ग़ाफ़िल किया था।'

तख़रीज 7426 : इसकी तख़रीज हदीस 7351 में गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : तुल्हीकुम इल्हाअ का मआनी होता है, किसी काम में मगन या मशग़ूल व मुन्हमिक (बीजी) होकर दूसरे कामों से ग़ाफ़िल हो जाना।

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سَوَّادٍ الْعَامِرِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ، الْحَارِثِ أَنَّ بَكْرَ بْنَ سَوَادَةَ، حَدَّثَهُ أَنَّ يَزِيدَ بْنَ رَبَاحٍ - هُوَ أَبُو فِرَاسٍ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ

(7427) हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) रसूलुल्लाह(ﷺ) से बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया, 'जब तुम्हारे लिए फ़ारिस और रूम फ़तह कर दिये जाएँगे, तुम किस हालत में होगे, किस क़िस्म की क़ौम साबित होगे। हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़

الْعَاصِ - حَدَّثَهُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ قَالَ " إِذَا فُتِحَتْ عَلَيْكُمْ فَارِسُ وَالرُّومُ أَىُّ قَوْمٍ أَنْتُمْ " . قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ نَقُولُ كَمَا أَمَرَنَا اللَّهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَوْ غَيْرَ ذَلِكَ تَتَنَافَسُونَ ثُمَّ تَتَحَاسَدُونَ ثُمَّ تَتَدَابَرُونَ ثُمَّ تَتَبَاغَضُونَ أَوْ نَحْوَ ذَلِكَ ثُمَّ تَنْطَلِقُونَ فِي مَسَاكِينِ الْمُهَاجِرِينَ فَتَجْعَلُونَ بَعْضَهُمْ عَلَى رِقَابِ بَعْضٍ".

(रज़ि.) ने कहा, हम अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ कलिमाते ह़म्दो शुक्र कहेंगे।' रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'या उसके सिवा कुछ और होगा, तुम रग़बत व चाहत करोगे, फिर एक दूसरे से ह़सद करोगे, एक दूसरे को पुश्त (पीठ) दिखाओगे, यानी एक दूसरे से ऐराज़ और क़त़अ तअ़ल्लुक़ी करोगे, फिर एक दूसरे से बुग़्ज़ व नफ़रत करोगे, या ऐसी ही सूरत होगी, फिर तुम मिस्कीन व कमज़ोर मुहाजिरीन में जाओगे और उनके कुछ को कुछ की गर्दनों पर सवार कर दोगे।' यानी उनको ओ़हदे और मनास़िब ह़ासिल होंगे।

सुनन इब्ने माजा, फ़ित्नतुल माल : 3996.

फ़ायदा : माल व दौलत की कसरत और उसकी रग़बत और चाहत के नतीजे बित्तर्तीब वह निकलते हैं और निकल रहे हैं, जिनकी आपने निशानदेही की थी, अल्लाह मह़फ़ूज़ फ़र्माए।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا وَقَالَ، يَحْيَى أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحِزَامِيُّ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِذَا نَظَرَ أَحَدُكُمْ إِلَى مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِي الْمَالِ وَالْخَلْقِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ مِمَّنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ "

(7428) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब तुममें से किसी की नज़र ऐसे इंसान पर पड़े जिसे मालो दौलत और शक्लो सूरत में उस पर बरतरी दी गई है, तो उसे चाहिए ऐसे इंसान पर नज़र डाल ले, जो उन फ़ज़ीलत व बरतरी वाली चीज़ों में उससे कमतर हो।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ أَبِي الزِّنَادِ سَوَاءً .

(7429) इमाम साहब को एक और उस्ताद ने यही हदीस इसी तरह सुनाई।

फ़ायदा : इंसान की नजर जब अपने से ज़्यादा माल व दौलत वाले पर पड़ती है या अपने से ज़्यादा ह़सीनो जमील इंसान को देखता है तो दिल में कमतरी का एह़सास नुमायाँ होता है, जिससे अल्लाह की नेअ़मतों के एह़सास का जज़्बा माँद पड़ता है और शुक्रगुज़ारी का जज़्बा नहीं उभरता, बलिक बसा औक़ात नाशुक्रगुज़ारी और नमक ह़रामी के जज़्बात परवरिश पाने लगते हैं, उसके बरअक्स जब मालो दौलत और हुस्नो जमाल में कमतर शख़्स पर नज़र पड़ती है, तो उसके अंदर अपनी बरतरी और बुलंदी का एह़सास पैदा होता है, अल्लाह तआ़ला की नेमतों की क़द्र मह़सूस होती और जज़्ब-ए सिपास व शुक्रगुज़ारी उभरता है, जैसकि अगली हदीस में वज़ाह़त कर दी गई है, इंसान अगर राहत व सुकून की ज़िन्दगी चाहता है, गम व फ़िक्र और परेशानी से बचना चाहता है, तो उसे अपने से कमतर पर नज़र रखनी चाहिए, कभी भी अपने से बालातर (ऊपर) को देखकर एह़सासे मह़रूमी में मुब्तला न हो।

وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ح وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " انْظُرُوا إِلَى مَنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلاَ تَنْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَكُمْ فَهُوَ أَجْدَرُ أَنْ لاَ تَزْدَرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ " . قَالَ أَبُو مُعَاوِيَةَ " عَلَيْكُمْ " .

(7430) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अपने से कम हैसियत की तरफ़ देखो और अपने से बालातर की तरफ़ न देखो तो यह त़र्ज़े अ़मल ज़्यादा लायक़ है कि तुम अल्लाह की नेमतों को ह़क़ीर न समझोगे।' अबू मुआविया ने निअ़्मतल्लाह के बाद अ़लैकुम (तुम पर) का इज़ाफ़ा किया है।

तख़रीज 7430 : जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 58, हदीस : 2513; सुनन इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, हदीस़: 4142.

मुफ़रदातुल हदीस : अन ला तज़्दरु : ह़क़ीर और कमतर ख़्याल न करो क्योंकि इज़्दराअ का मआ़नी होता है, किसी को ह़क़ीर व नाक़िस़ क़रार देना ऐ़ब लगाना।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ،

(7431) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने नबी अकरम(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'बनी इस्राईल के तीन अफ़राद, बर्स वाला, गंजा और अंधा थे, तो अल्लाह ने उनको आज़माइश में डालने का इरादा किया, उसकी

حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ ثَلاَثَةً فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ أَبْرَصَ وَأَقْرَعَ وَأَعْمَى فَأَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَبْتَلِيَهُمْ فَبَعَثَ إِلَيْهِمْ مَلَكًا فَأَتَى الأَبْرَصَ فَقَالَ أَىُّ شَىْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ لَوْنٌ حَسَنٌ وَجِلْدٌ حَسَنٌ وَيَذْهَبُ عَنِّي الَّذِي قَدْ قَذِرَنِي النَّاسُ . قَالَ فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ عَنْهُ قَذَرُهُ وَأُعْطِيَ لَوْنًا حَسَنًا وَجِلْدًا حَسَنًا قَالَ فَأَىُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ الإِبِلُ - أَوْ قَالَ الْبَقَرُ شَكَّ إِسْحَاقُ - إِلاَّ أَنَّ الأَبْرَصَ أَوِ الأَقْرَعَ قَالَ أَحَدُهُمَا الإِبِلُ وَقَالَ الآخَرُ الْبَقَرُ - قَالَ فَأُعْطِيَ نَاقَةً عُشَرَاءَ فَقَالَ بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِيهَا - قَالَ - فَأَتَى الأَقْرَعَ فَقَالَ أَىُّ شَىْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ شَعَرٌ حَسَنٌ وَيَذْهَبُ عَنِّي هَذَا الَّذِي قَذِرَنِي النَّاسُ . قَالَ فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ عَنْهُ وَأُعْطِيَ شَعَرًا حَسَنًا - قَالَ - فَأَىُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ الْبَقَرُ . فَأُعْطِيَ بَقَرَةً حَامِلاً فَقَالَ بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِيهَا - قَالَ - فَأَتَى الأَعْمَى فَقَالَ

ख़ातिर, उनके पास एक फ़रिश्ता भेजा, तो वह बर्स वाले के पास आया और उससे पूछा, तुम्हें सबसे ज़्यादा कौनसी चीज़ पसंद है उसने कहा, हसीन रंग और खुशनुमा जिल्द (खाल) और मुझसे (बर्स का वह दाग़ दूर हो जाए) जिसकी बिना पर लोग मुझसे नफ़रत करते हैं, तो फ़रिश्ते ने उस पर हाथ फेरा और उसे क़ाबिले नफ़रत दाग़ हट गए और उसे हसीन रंग और जमील जिल्द (खाल) दे दी गई (फिर उससे) कहा, तुम्हें कौनसा माल ज़्यादा महबूब है? उसने कहा, ऊँट (या गाय, इस्हाक़ को शक है) हाँ यह बात है, बर्स वाले और गंजे में से एक ने ऊँट कहा और दूसरे ने गाय कहा, चुनाँचे उसे दस माह की गाभिन ऊँटनी दे दी गई और फ़रिश्ते ने दुआ दी, अल्लाह तुम्हें इसमें बरकत (बढ़ोतरी) दे, (फिर वह) फ़रिश्ता गंजे के पास आया) और पूछा, तुम्हें कौनसी चीज़ सबसे ज़्यादा पसंद है उसने जवाब दिया, ख़ूबसूरत बाल और यह गंजापन जिससे लोग मुझसे कराहत महसूस करते हैं, दूर हो जाए, तो फ़रिश्ते ने उसके सिर पर हाथ फेरा, जिससे उसका गंजापन ख़त्म हो गया और उसे ख़ूबसूरत बाल दे दिये गए, फिर पूछा, तुम्हें कौनसा माल ज़्यादा महबूब है? उसने कहा, गाय, तो उसे हामिला गाय इनायत की गई और फ़रिश्ते ने दुआ दी, अल्लाह तुम्हें इसमें बरकत दे, फिर वह फ़रिश्ता अंधे के पास आया और पूछा, तुम्हें कौनसी चीज़ ज़्यादा पसंद है? उसने कहा, यह कि अल्लाह मेरी नज़र लौटा दे ताकि मैं उससे लोगों को देख सकूँ। चुनाँचे फ़रिश्ते ने

उसके चेहरे पर हाथ फेरा, और अल्लाह ने उसकी नज़र उसको लौटा दी, फिर पूछा, तुम्हें कौनसा माल ज़्यादा महबूब है? उसने कहा, बकरियाँ तो उसे बच्चा जनने वाली बकरी दे दी गई। चुनाँचे उन दोनो (ऊँटनी, गाय) ने अपना फल दिया (यानी बच्चा जना) और उस (बकरी) ने बच्चा जना। (धीरे धीरे) उसके पास ऊटों का रेवड़ था, उसके पास गायों का जंगल और उसके पास बकरियों की वादी थी, फिर (कुछ अर्से के बाद) वह फ़रिश्ता बर्स वाले के पास गया, उसकी शक्लो हैयत में आया और कहा, एक मिस्कीन आदमी हूँ और मेरे सफ़र में मेरा सफ़री सामान व अस्बाब ख़त्म हो गए हैं, तो मेरे लिए आज अल्लाह की तौफ़ीक़ फिर तेरी मदद के बग़ैर घर पहुँचना मुम्किन नहीं है मैं तुमसे उस अल्लाह के वास्ते से जिसने तुम्हें अच्छा रंग व रोग़न दिया और ख़ूबसूरत जिल्द और माल दिया, एक ऊँट माँगता हूँ, जिस पर मैं अपने सफ़र में अपनी मंज़िल पर पहुँच सकूँ, उसने कहा, मेरे ज़िम्मे बहुत से हुक़ूक़ हैं, (इसलिए मेरे पास तुझे ऊँट देने की गुंजाइश नहीं है) तो फ़रिश्ते ने उसे कहा, गोया कि मैं तुम्हें पहचानता हूँ, क्या तुम बर्स वाले नहीं थे, लोग तुझसे नफ़रत करते थे एक मोहताज था, तो अल्लाह तआला ने तुम्हें नवाज़ा? उसने कहा, यह माल तो मुझे अपने बड़ों से नस्ल दर नस्ल हासिल हुआ है, तो फ़रिश्ते ने कहा, अगर तू झूटा है तो अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी पहली हालत पर कर दे (उसके बाद) वह गंजे के पास उसकी

أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ أَنْ يَرُدَّ اللَّهُ إِلَيَّ بَصَرِي فَأُبْصِرَ بِهِ النَّاسَ - قَالَ - فَمَسَحَهُ فَرَدَّ اللَّهُ إِلَيْهِ بَصَرَهُ . قَالَ فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ الْغَنَمُ . فَأُعْطِيَ شَاةً وَالِدًا فَأُنْتِجَ هَذَانِ وَوَلَّدَ هَذَا - قَالَ - فَكَانَ لِهَذَا وَادٍ مِنَ الإِبِلِ وَلِهَذَا وَادٍ مِنَ الْبَقَرِ وَلِهَذَا وَادٍ مِنَ الْغَنَمِ . قَالَ ثُمَّ إِنَّهُ أَتَى الأَبْرَصَ فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ فَقَالَ رَجُلٌ مِسْكِينٌ قَدِ انْقَطَعَتْ بِيَ الْحِبَالُ فِي سَفَرِي فَلاَ بَلاَغَ لِيَ الْيَوْمَ إِلاَّ بِاللَّهِ ثُمَّ بِكَ أَسْأَلُكَ بِالَّذِي أَعْطَاكَ اللَّوْنَ الْحَسَنَ وَالْجِلْدَ الْحَسَنَ وَالْمَالَ بَعِيرًا أَتَبَلَّغُ عَلَيْهِ فِي سَفَرِي . فَقَالَ الْحُقُوقُ كَثِيرَةٌ . فَقَالَ لَهُ كَأَنِّي أَعْرِفُكَ أَلَمْ تَكُنْ أَبْرَصَ يَقْذَرُكَ النَّاسُ فَقِيرًا فَأَعْطَاكَ اللَّهُ فَقَالَ إِنَّمَا وَرِثْتُ هَذَا الْمَالَ كَابِرًا عَنْ كَابِرٍ . فَقَالَ إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللَّهُ إِلَى مَا كُنْتَ . قَالَ وَأَتَى الأَقْرَعَ فِي صُورَتِهِ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِهَذَا وَرَدَّ عَلَيْهِ مِثْلَ مَا رَدَّ عَلَى هَذَا

فَقَالَ إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللَّهُ إِلَى مَا كُنْتَ . قَالَ وَأَتَى الأَعْمَى فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ فَقَالَ رَجُلٌ مِسْكِينٌ وَابْنُ سَبِيلٍ انْقَطَعَتْ بِيَ الْحِبَالُ فِي سَفَرِي فَلاَ بَلاَغَ لِيَ الْيَوْمَ إِلاَّ بِاللَّهِ ثُمَّ بِكَ أَسْأَلُكَ بِالَّذِي رَدَّ عَلَيْكَ بَصَرَكَ شَاةً أَتَبَلَّغُ بِهَا فِي سَفَرِي فَقَالَ قَدْ كُنْتُ أَعْمَى فَرَدَّ اللَّهُ إِلَيَّ بَصَرِي فَخُذْ مَا شِئْتَ وَدَعْ مَا شِئْتَ فَوَاللَّهِ لاَ أَجْهَدُكَ الْيَوْمَ شَيْئًا أَخَذْتَهُ لِلَّهِ فَقَالَ أَمْسِكْ مَالَكَ فَإِنَّمَا ابْتُلِيتُمْ فَقَدْ رُضِيَ عَنْكَ وَسُخِطَ عَلَى صَاحِبَيْكَ .

शक्ल में आया और उससे वही कहा, जो कुछ उस बर्स वाले को कहा था और उसने इस क़िस्म का जवाब दिया, जो उस बर्स वाले ने दिया था, तो फ़रिश्ते ने कहा, अगर तू झूटा है, तो अल्लाह तुम्हें उस हालत की तरफ़ लौटा दे, जिस पर तुम पहले थे, फिर वह अंधे के पास उसकी शक्लो हैयत में आया और कहा, एक मिस्कीन व मुसाफ़िर आदमी हूँ, मेरे सफ़र में मेरे ज़रायेअ सफ़र ख़त्म हो गए हैं, तो आज अल्लाह की तौफ़ीक़ और फिर तेरी मदद के बग़ैर मेरे लिए पहुँचना मुम्किन नहीं है, मैं तुझसे उस ज़ात के नाम पर जिसने तुम्हें तुम्हारी बीनाई लौटाई, एक बकरी माँगता हूँ, जो मेरे सफ़र में मेरे लिए किफ़ायत करे, उसने कहा, मैं वाक़ेई अंधा था, चुनाँचे अल्लाह ने मुझे मेरी बीनाई लौटाई, तू जो चाहो ले लो और जो चाहो छोड़ दो, तो अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें आज किसी चीज़ की वापसी की तक्लीफ़ नहीं दूँगा, जो तुम अल्लाह के नाम ले लोगे, तो फ़रिश्ते ने कहा, अपना माल अपने पास रखो, तुमको और तुम्हारे साथियों को बस आज़माया गया था, चुनाँचे तुम्हें रज़ामंदी व ख़ुशनुदी हासिल हो गई और तेरे साथियों को नाराज़ी मिली।

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3464; किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर : 6653.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) क़ज़िर : नफ़रत और कराहत की। (2) नाक़तुन अशरा : दस माह की गाभिन ऊँटनी। (3) शातन वालिदन : बच्चे वाली बकरी, यानी जो बच्चा जनने के बिलकुल क़रीब थी, जनना ही चाहती थी। (4) उंतिज हाज़ान : उन दोनों यानी ऊँटनी और गाय वाले को उनका फल मिला। (5) वल्लद हाज़ा : उस अंधे से बच्चा हासिल किया। (6) हिबाल : हबल की जमा है,

अस्बाब व ज़राये सफ़र मुराद है। (7) अतबल्लग़ु अ़लैहि उसको (बुल्ग़ह किफ़ायत) बना सकूँ, उस पर इक्तिफ़ा करूँ। (8) काबिरन अ़न काबिरिन : हर बड़ा स़ाहिबे इ़ज्ज़त व शर्फ़, अपने बड़े का वारिस बनता आ रहा है। (9) ला अज्हदुक : तुम्हें मशक़्क़त और तक्लीफ़ में नहीं डालूँगा।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है, जब इंसान अपनी अस़लियत भूल जाता है, अपने माज़ी को नज़र अंदाज़ करके डींगों और फ़ख़्र व मुबाहात का शिकार होकर यह समझने लगता है कि मैं तो सोने का चमचा मुँह में लेकर पैदा हुआ हूँ, तो उसके लिए अल्लाह की राह में जीना मुश्किल हो जाता है और बसा औक़ात (कभी कभी) वह नाशुक्रगुज़ारी की भेंट चढ़कर सब कुछ से महरूम हो जाता है, लेकिन जो इंसान अपने माज़ी (पास्ट) को याद रखता है, वह अल्लाह का शुक्रगुज़ार रहता है और लइन शकरतुम ल अज़ीदन्नकुम के मुज़्दा (खुश खबरी) जाँ फ़िज़ा से मुतमत्तेअ़ होता है, अल्लाह अपना शुक्रगुज़ार बनने की तौफ़ीक़ दे, आमीन!

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ، -وَاللَّفْظُ لإِسْحَاقَ - قَالَ عَبَّاسٌ حَدَّثَنَا وَقَالَ، إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا - أَبُو بَكْرٍ الْحَنَفِيُّ، حَدَّثَنَا بُكَيْرُ بْنُ مِسْمَارٍ، حَدَّثَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ، قَالَ كَانَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ فِي إِبِلِهِ فَجَاءَهُ ابْنُهُ عُمَرُ فَلَمَّا رَآهُ سَعْدٌ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ هَذَا الرَّاكِبِ فَنَزَلَ فَقَالَ لَهُ أَنَزَلْتَ فِي إِبِلِكَ وَغَنَمِكَ وَتَرَكْتَ النَّاسَ يَتَنَازَعُونَ الْمُلْكَ بَيْنَهُمْ فَضَرَبَ سَعْدٌ فِي صَدْرِهِ فَقَالَ اسْكُتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْعَبْدَ التَّقِيَّ الْغَنِيَّ الْخَفِيَّ " .

(7432) आ़मिर (रह.) बिन सअ़द (रज़ि) बयान करते हैं, ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि) अपने ऊँटों में थे, तो उनके पास उनके बेटे उ़मर हाज़िर हुए तो जब ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) की उन पर नज़र पड़ी तो कहने लगे, मैं इस सवार के शर्र से अल्लाह की पनाह में आता हूँ, तो वह अपनी सवारी से उतरे और ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) से कहा, क्या आप अपने ऊँटों और बकरियों में उतर चुके हैं और लोगों को आपसी इक़्तिदार व बादशाहत के लिए झगड़ते छोड़ दिया है? तो हजरत सअ़द (रज़ि.) ने उ़मर के सीने पर हाथ मारा और कहा, ख़ामोश रह! मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना है, 'अल्लाह उस बन्दे को पसंद फ़र्माता है, जो उसकी हुदूद का पाबन्द हो, (दुनियावी मफ़ादात से) बेनियाज़ और गुमनाम हो।'

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है, जब फ़ित्ना व फ़साद का दौर दौरा हो, लोग दुनियावी मफ़ादात की ख़ातिर एक दूसरे के आमने सामने हों और उन पर वअ़ज़ व नस़ीहत कारगर न हो तो ऐसी सूरत में

सबसे अलग थलग होकर अल्लाह की इबादत और ज़िक्रो फ़िक्र में मशग़ूल रहना, उससे बेहतर है कि इंसान ख़ुद भी मफ़ादात की जंग में शरीक हो जाए, हाँ! अगर वह लोगों के बीच रहकर मुअस्सिर (काम बनाने किरदार अदा कर सकता हो, तो फिर उनके बीच रहना बेहतर है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ، قَالَ سَمِعْتُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ سَعْدٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي وَابْنُ، بِشْرٍ قَالاَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ قَيْسٍ، قَالَ سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ، يَقُولُ وَاللَّهِ إِنِّي لأَوَّلُ رَجُلٍ مِنَ الْعَرَبِ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَقَدْ كُنَّا نَغْزُو مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا لَنَا طَعَامٌ نَأْكُلُهُ إِلاَّ وَرَقُ الْحُبْلَةِ وَهَذَا السَّمُرُ حَتَّى إِنَّ أَحَدَنَا لَيَضَعُ كَمَا تَضَعُ الشَّاةُ ثُمَّ أَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ تُعَزِّرُنِي عَلَى الدِّينِ لَقَدْ خِبْتُ إِذًا وَضَلَّ عَمَلِي وَلَمْ يَقُلِ ابْنُ نُمَيْرٍ إِذًا .

(7433) हजरत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) बयान करते हैं, अल्लाह की क़सम! मैं पहला अ़रब इंसान हूँ, जिसने अल्लाह की राह में तीर चलाया और हम (कुछ बार) रसूलुल्लाह(ﷺ) की मइयत (साथ) में जिहाद के लिए निकलते और हमारे पास खाने के लिए जंगली दरख़्तों, हुब्ला के पत्ते या कीकर के तक्ले और बबूल के सिवा कुछ न होता, यहाँ तक कि हम क़ज़ाए हाजत बकरियों की मींगनियों की सूरत में करते, फिर अब बनू असद के लोग मुझे दीन की ता'लीम देते हैं या दीन से आगाह करते हैं, ऐसी सूरत में तो मैं नामुराद और नाकाम हो गया और मेरे अ़मल बर्बाद हो गए, इब्ने नुमैर की रिवायत में, ख़िब्तु मैं नाकाम हो गया, के बाद इज़न का लफ़्ज़ नहीं है।

सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले सहाबा : 3728; किताबुल अत्इमा : 5412; किताबुर्रिक़ाक़ : 6453; जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2365, 2366; सुनन इब्ने माजा, किताबुल मुक़द्दमा : 131.

नोट : बनू असद से मुराद, असद बिन ख़ुज़ैमा बिन मुद्रका के लोग हैं, जो आपकी वफ़ात के बाद मुर्तद होकर त़लीह़ा बिन ख़ुवेलिद असदी की नबुव्वत के क़ाइल हो गए और त़लीह़ा की तौबा के बाद उनमें से अकसर कूफ़ा में आबाद हो गए थे और उन्होंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ पर इल्ज़ामात लगाए थे, उनमें से एक इल्ज़ाम यह था कि उन्हें सही त़ौर पर नमाज़ पढ़नी नहीं आती, नमाज़ को ही ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) दीन का नाम दे रहे हैं कि अगर मुझे नमाज़ भी

उन लोगों से सीखने की ज़रूरत है, तो मैंने आज तक रसूलुल्लाह(ﷺ) और आपके साथियो के साथ रहकर क्या सीखा, अगर मेरी नमाज़ ही दुरुस्त नहीं है, तो मेरा कौनसा काम सही हो सकता है, इसका मआनी तो यह हुआ कि मेरे सारे काम राइगाँ गए।

وَحَدَّثَنَاهُ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ حَتَّى إِنْ كَانَ أَحَدُنَا لَيَضَعُ كَمَا تَضَعُ الْعَنْزُ مَا يَخْلِطُهُ بِشَىْءٍ .

(7434) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं उसमें है, यहाँ तक कि हमसे कोई पाख़ाना करता तो बकरी की मींगनी की तरह करता, जिसमें किसी चीज़ की आमेज़िश न होती, यानी जिस तरह वह ख़ुश्क और अलग अलग होती हैं, यही कैफ़ियत हमारी क़ज़ाए हाजत की होती।

حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ عُمَيْرٍ الْعَدَوِيِّ، قَالَ خَطَبَنَا عُتْبَةُ بْنُ غَزْوَانَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ الدُّنْيَا قَدْ آذَنَتْ بِصُرْمٍ وَوَلَّتْ حَذَّاءَ وَلَمْ يَبْقَ مِنْهَا إِلاَّ صُبَابَةٌ كَصُبَابَةِ الإِنَاءِ يَتَصَابُّهَا صَاحِبُهَا وَإِنَّكُمْ مُنْتَقِلُونَ مِنْهَا إِلَى دَارٍ لاَ زَوَالَ لَهَا فَانْتَقِلُوا بِخَيْرِ مَا بِحَضْرَتِكُمْ فَإِنَّهُ قَدْ ذُكِرَ لَنَا أَنَّ الْحَجَرَ يُلْقَى مِنْ شَفَةِ جَهَنَّمَ فَيَهْوِي فِيهَا سَبْعِينَ عَامًا لاَ يُدْرِكُ لَهَا قَعْرًا وَوَاللَّهِ لَتُمْلأَنَّ أَفَعَجِبْتُمْ وَلَقَدْ ذُكِرَ لَنَا أَنَّ مَا بَيْنَ

(7435) ख़ालिद बिन उमैर अदवी (रह.) बयान करते हैं, हमें हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान (रज़ि.) ने ख़िताब किया, अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की, फिर कहा, हम्दो सलात के बाद, दुनिया अपने इख़्तिताम या ख़ात्मा का ऐलान कर रही है और बड़ी तेज़ी से पीछे को जा रही है और उसका सिर्फ़ बरतन के आख़िरी क़तरा की तरह मामूली सा हिस्सा बाक़ी रह गया है, जिसको पीने वाला तोशा लेकर मुंतक़िल हो, यानी अच्छे अमल लेकर जाओ, क्योंकि हमें बताया गया है कि जहन्नम के किनारे से पत्थर फेंका जाएगा चुनाँचे वह जहन्नम में सत्तर साल गिरता रहेगा, और उसकी तह (पेन्दे) को न पा सकेगा और अल्लाह की क़सम! उसको भरा जाएगा, क्या तुम्हें इस पर ताज्जुब है? और हमें यह भी बताया जा चुका है कि जन्नत के दरवाज़ों के दो पट्टों के बीच का फ़ासला चालीस साल की मसाफ़त है और उस पर यक़ीनन ऐसा दिन आएगा कि वह लोगों के

مِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيعِ الْجَنَّةِ مَسِيرَةُ أَرْبَعِينَ سَنَةً وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَيْهَا يَوْمٌ وَهُوَ كَظِيظٌ مِنَ الزِّحَامِ وَلَقَدْ رَأَيْتُنِي سَابِعَ سَبْعَةٍ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا لَنَا طَعَامٌ إِلاَّ وَرَقُ الشَّجَرِ حَتَّى قَرِحَتْ أَشْدَاقُنَا فَالْتَقَطْتُ بُرْدَةً فَشَقَقْتُهَا بَيْنِي وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ فَاتَّزَرْتُ بِنِصْفِهَا وَاتَّزَرَ سَعْدٌ بِنِصْفِهَا فَمَا أَصْبَحَ الْيَوْمَ مِنَّا أَحَدٌ إِلاَّ أَصْبَحَ أَمِيرًا عَلَى مِصْرٍ مِنَ الأَمْصَارِ وَإِنِّي أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ فِي نَفْسِي عَظِيمًا وَعِنْدَ اللَّهِ صَغِيرًا وَإِنَّهَا لَمْ تَكُنْ نُبُوَّةٌ قَطُّ إِلاَّ تَنَاسَخَتْ حَتَّى يَكُونَ آخِرُ عَاقِبَتِهَا مُلْكًا فَسَتَخْبُرُونَ وَتُجَرِّبُونَ الأُمَرَاءَ بَعْدَنَا .

भीड़ से भरी होगी और मैंने अपने आपको रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ सातवाँ फ़र्द पाया, हम सातों के पास खाने के लिए दरख़्त के पत्तों के सिवा कुछ न था, यहाँ तक कि (पत्ते खाकर) हमारी बाछें ज़ख़्मी हो गईं, मैंने एक धारीदार चादर उठाई और उसे अपने और सअ़द बिन मालिक (अबी वक़्क़ास) के बीच बांट लिया, आधी की तहबंद मैंने बना ली और आधी को सअ़द (रज़ि.) ने तहबंद बना लिया, लेकिन आज यह सूरतेहाल बन चुकी है कि हममें से हर एक किसी ना किसी शहर का अमीर बन चुका है और मैं अल्लाह तआ़ला से इस बात से पनाह चाहता हूँ कि मैं अपने नफ़्स में बड़ा हूँ, (अपने आपको बड़ा समझूँ) और अल्लाह के नज़दीक छोटा (हक़ीर) हूँ और हर दौर में नबुव्वत का ज़माना ख़त्म हो रहा है, यहाँ तक कि अंजामकार अम्बिया के पैरोकारों ने उसे बादशाहत बना दिया है, तुम जल्द ही आगाह हो जाओगे यानी हमारे बाद के उमरा के तजुर्बात कर लोगे।

जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम : 2585, सुनन इब्ने माजा, 4156.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) आज़नत् बि सुर्मिन : उसने इंक़िताअ़ व ख़ात्मा का ऐलान कर दिया है और (2) वल्लत हज़्ज़ाअ : तेज़ रफ़्तारी से पीछे को भाग रही है। (3) सुबाबा : बरतन मे बच रह जाने वाला और आख़िरी बूँद। (4) यतसाबुहा : आख़िरी क़तरा को पी रहा है। (5) मा बिहज़्रतिकुम : जो तुम्हारे पास है। (6) कज़ीज़ : भरी हुई। (7) क़रिहत : छिल गए, ज़ख़्मी हो गए। (8) अश्दाक़िन : शिदक़ की जमा है, बाछें (पत्तों की ख़ुश्की और हरारत व गर्मी से ज़ख़्मी हो गए थे) (9) लम तकुन नबुव्वत क़त्तु इल्ला तना सख़त : नबुव्वत, ख़िलाफ़ते नबुव्वत से गुज़रकर, बादशाहत की शक्ल इख़्तियार कर गई, नबी के मानने वाले, उसके ख़ुलफ़ा के ख़ात्मे के बाद बादशाह बन गए और

बादशाहों वाला वतीरा (तौर–तरीक़ा) इख़्तियार किया और तुम (10) सतख़बुरून : इस तब्दीली का तजुर्बा और मुशाहिदा कर लोगे, जब हमारे बाद आने वाले उमरा से तुम्हें वास्ता पड़ेगा।

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि नबी की मौजूदगी में जो सीरत व किरदार बनता है, दुनिया से बेरग़बती और आख़िरत का रुज्हान नुमायाँ होता है, वह नबी की वफ़ात के बाद आहिस्ता आहिस्ता कम होना शुरू हो जाता है, ख़िलाफ़त तक उसके असरात बाक़ी रहते हैं, फिर उनमें नुमायाँ तब्दीली हो जाती है और उम्मत में बादशाहत के असरात नुमायाँ हो जाते हैं।

(7436) ख़ालिद बिन उमैर, जिन्होंने जाहिलियत का दौर पाया है, बयान करते हैं, हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान (रज़ि.) ने ख़िताब किया, जबकि वह बस़रा के गवर्नर थे, आगे ऊपर वाली रिवायत है।

तख़रीज 7436 : इसकी तख़रीज हदीस 7361 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عُمَرَ بْنِ سَلِيطٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ، هِلاَلٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ عُمَيْرٍ، وَقَدْ أَدْرَكَ الْجَاهِلِيَّةَ قَالَ خَطَبَ عُتْبَةُ بْنُ غَزْوَانَ وَكَانَ أَمِيرًا عَلَى الْبَصْرَةِ . فَذَكَرَ نَحْوَ حَدِيثِ شَيْبَانَ .

(7437) ख़ालिद बिन उमैर बयान करते हैं, मैंने हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान (रज़ि.) को यह कहते हुए सुना, मैंने अपने आपको रसूलुल्लाह(ﷺ) के सात साथियों में सातवाँ फ़र्द देखा, हमारा खाना सिर्फ़ हुब्ला दरख़्त के पत्ते थे, यहाँ तक कि हमारी बाछें छिल गईं।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ قُرَّةَ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ حُمَيْدِ، بْنِ هِلاَلٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ عُمَيْرٍ، قَالَ سَمِعْتُ عُتْبَةَ بْنَ غَزْوَانَ، يَقُولُ لَقَدْ رَأَيْتُنِي سَابِعَ سَبْعَةٍ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مَا طَعَامُنَا إِلاَّ وَرَقُ الْحُبْلَةِ حَتَّى قَرِحَتْ أَشْدَاقُنَا .

मुफ़रदातुल हदीस : हुब्ला : काँटों वाला दरख़्त

(7438) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, सहाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या क़ियामत के दिन हम अपने रब को देख सकेंगे? आपने फ़र्माया, 'क्या तुम दोपहर के वक़्त जब सूरज बादलों में न हो,

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا

يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ " هَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ فِي الظَّهِيرَةِ لَيْسَتْ فِي سَحَابَةٍ " . قَالُوا لاَ . قَالَ " فَهَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ لَيْسَ فِي سَحَابَةٍ " . قَالُوا لاَ . قَالَ " فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ رَبِّكُمْ إِلاَّ كَمَا تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ أَحَدِهِمَا - قَالَ - فَيَلْقَى الْعَبْدَ فَيَقُولُ أَىْ فُلْ أَلَمْ أُكْرِمْكَ وَأُسَوِّدْكَ وَأُزَوِّجْكَ وَأُسَخِّرْ لَكَ الْخَيْلَ وَالإِبِلَ وَأَذَرْكَ تَرْأَسُ وَتَرْبَعُ فَيَقُولُ بَلَى . قَالَ فَيَقُولُ أَفَظَنَنْتَ أَنَّكَ مُلاَقِيَّ فَيَقُولُ لاَ . فَيَقُولُ فَإِنِّي أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي . ثُمَّ يَلْقَى الثَّانِيَ فَيَقُولُ أَىْ فُلْ أَلَمْ أُكْرِمْكَ وَأُسَوِّدْكَ وَأُزَوِّجْكَ وَأُسَخِّرْ لَكَ الْخَيْلَ وَالإِبِلَ وَأَذَرْكَ تَرْأَسُ وَتَرْبَعُ فَيَقُولُ بَلَى أَىْ رَبِّ . فَيَقُولُ أَفَظَنَنْتَ أَنَّكَ مُلاَقِيَّ فَيَقُولُ لاَ . فَيَقُولُ فَإِنِّي أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي . ثُمَّ يَلْقَى الثَّالِثَ فَيَقُولُ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ فَيَقُولُ يَا رَبِّ آمَنْتُ بِكَ وَبِكِتَابِكَ وَبِرُسُلِكَ وَصَلَّيْتُ وَصُمْتُ وَتَصَدَّقْتُ . وَيُثْنِي بِخَيْرٍ مَا اسْتَطَاعَ

उसके देखने में भीड़ करते हो?' साथियों ने कहा, नहीं! आपने फ़र्माया, 'तो क्या चौदहवीं रात के चाँद देखने में जब वह बादलों में न हो, एक दूसरे को ज़रर (तक्लीफ़) पहुँचाते हो?' साथियों ने कहा, नहीं! आपने फ़र्माया, 'तो उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम अपने रब के देखने में भीड़ के सबब इतनी ही एक दूसरे को तक्लीफ़ दोगे जितनी तक्लीफ़ आपस में उनसे किसी एक को देखने में पहुँचाते हो, आपने फ़र्माया, चुनाँचे अल्लाह बन्दे से कहेगा और फ़र्माएगा, 'ऐ फ़लाँ! क्या मैंने तुझे इज़्ज़त न दी, तुझे सरदार न बनाया, तुझे बीवी न दी और तेरे लिए घोड़ों और ऊँटों को मुतीअ (फ़र्माबरदार) न किया और तुझे इस हालत में न छोड़ा कि अपनी क़ौम का सरदार बनो और उनसे ग़नीमत का चौथा हिस़्सा वसूल करो? वह कहेगा, क्यूँ नहीं! तो अल्लाह फ़र्माएगा, क्या तेरा यह गुमान था कि तू मुझसे मिलेगा? वह कहेगा, नहीं! तो अल्लाह फ़र्माएगा, तो मैंने तुझे भुला दिया, जिस तरह तूने मुझे भुलाया, फिर अल्लाह दूसरे इंसान से मिलेगा और फ़र्माएगा, ऐ फ़लाँ! क्या मैंने तुम्हें इज़्ज़त, सरदारी और बीवी न दी और मैंने तेरे लिए घोड़े और ऊँट पाबंद न किये और तुझे उस मर्तबे पर न छोड़ा कि क़ौम के रईस (सरदार) बनो और राहत व आराम की ज़िन्दगी गुज़ारो? वह कहेगा ज़रूर! ऐ मेरे रब! तो वह फ़र्माएगा, क्या तेरा यह गुमान था कि तू मुझसे मिलने वाला है? तो वह कहेगा, नहीं ! तो वह फ़र्माएगा, तो मैं तुम्हें भुलाता हूँ, जिस तरह तूने मुझे भुलाया,

فَيَقُولُ هَا هُنَا إِذًا - قَالَ - ثُمَّ يُقَالُ لَهُ الآنَ نَبْعَثُ شَاهِدَنَا عَلَيْكَ . وَيَتَفَكَّرُ فِي نَفْسِهِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْهَدُ عَلَىَّ فَيُخْتَمُ عَلَى فِيهِ وَيُقَالُ لِفَخِذِهِ وَلَحْمِهِ وَعِظَامِهِ انْطِقِي فَتَنْطِقُ فَخِذُهُ وَلَحْمُهُ وَعِظَامُهُ بِعَمَلِهِ وَذَلِكَ لِيُعْذِرَ مِنْ نَفْسِهِ . وَذَلِكَ الْمُنَافِقُ وَذَلِكَ الَّذِي يَسْخَطُ اللَّهُ عَلَيْهِ " .

(जिस तरह तूने इताअत करके याद नहीं रखा, हमने भी अपनी रहमत करके तुझे याद नहीं रखा) फिर अल्लाह तीसरे इंसान से मिलेगा और उसे भी यही बातें कहेगा, तो वह इंसान कहेगा ऐ मेरे रब! मैं तुझ पर ईमान लाया, तेरी किताब और तेरे रसूलों पर ईमान लाया, मैंने नमाज़ पढ़ी, रोज़े रखे और सदक़ा किया और जिस क़द्र हो सकेगा, अपनी ख़ुदसताई करेगा, चुनाँचे अल्लाह फ़र्माएगा, अब यहाँ खामोश हो जा, फिर उसे कहा जाएगा, अब हम तुम पर अपने गवाह भेजते हैं, (क़ायम करते हैं) और वह अपने दिल में सोचेगा, मेरे ख़िलाफ़ कौन गवाही देगा, चुनाँचे उसके मुँह पर मुहर लगा दी जाएगी और उसकी रान, गोश्त और हड्डियों से कहा जाएगा कि हर हिस्सा बोले, तो उसकी रान, उसका गोश्त और उसकी हड्डियाँ उसके अमल बताएँगे और यह इसलिए होगा, ताकि अल्लाह उसकी तरफ़ से उसका बहाना और उज़्र ख़त्म कर देगा और यह मुनाफ़िक़ इंसान होगा और यह वह फ़र्द होगा, जिस पर अल्लाह नाराज़ होगा।'

सुनन अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना : 4730.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) हल तज़ारून : यह बाब मुफ़ाअला और बाबे तफ़ाउल दोनों से बन सकता है और इसका माद्दा ज़रर है यानी बाहमी (आपसी) भीड़ और टकराव से तक्लीफ़ नहीं होगी। (2) तर्रासु : तू क़ौम का रईस और चौधरी बने, (3) तर्बउ : जाहिलियत के दौर के क़ानून के मुताबिक़, उनसे ग़नीमत (लूटा हुआ माल) का चौथा हिस्सा वसूल करे या बक़ौल क़ाज़ी एयाज़ राहत व आराम की ज़िन्दगी गुज़ारे। (4) युस्नी बिख़ैरिन : ताकत भर अपनी नेकियाँ बयान करेगा, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनेगा। (5) लि यअ्ज़िर मिन नफ़्सिही : ताकि उसकी तरफ़ उसका उज़्र और बहाना खत्म कर दे, वह कोई उज़्र पेश न कर सके।

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला इंसान के हर क़िस्म के

उ़ज़्र और बहाने ख़त्म कर देगा और इंसानों के आमाल की गवाही, अ़मल करने वाले आ़ज़ा (पार्टस्) भी देंगे, ताकि इंसान अपनी गवाही से ही मुज्रिम साबित हो जाए।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ النَّضْرِ بْنِ أَبِي النَّضْرِ، حَدَّثَنِي أَبُو النَّضْرِ، هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ الأَشْجَعِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدٍ الْمُكْتِبِ، عَنْ فُضَيْلٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَضَحِكَ فَقَالَ " هَلْ تَدْرُونَ مِمَّ أَضْحَكُ " . قَالَ قُلْنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ . قَالَ " مِنْ مُخَاطَبَةِ الْعَبْدِ رَبَّهُ يَقُولُ يَا رَبِّ أَلَمْ تُجِرْنِي مِنَ الظُّلْمِ قَالَ يَقُولُ بَلَى . قَالَ فَيَقُولُ فَإِنِّي لاَ أُجِيزُ عَلَى نَفْسِي إِلاَّ شَاهِدًا مِنِّي قَالَ فَيَقُولُ كَفَى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ شَهِيدًا وَبِالْكِرَامِ الْكَاتِبِينَ شُهُودًا - قَالَ - فَيُخْتَمُ عَلَى فِيهِ فَيُقَالُ لأَرْكَانِهِ انْطِقِي . قَالَ فَتَنْطِقُ بِأَعْمَالِهِ - قَالَ - ثُمَّ يُخَلَّى بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْكَلاَمِ - قَالَ - فَيَقُولُ بُعْدًا لَكُنَّ وَسُحْقًا . فَعَنْكُنَّ كُنْتُ أُنَاضِلُ " .

(7439) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे, तो आप हँसे और फ़र्माया, 'क्या तुम जानते हो, मैं क्यूँ हँस रहा हूँ?' हमने कहा, अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं, आपने फ़र्माया, 'मुझे बन्दे की अपने रब से बातचीत पर हँसी आती है, बन्दा कहेगा, ऐ मेरे रब! क्या तूने मुझे ज़ुल्म से पनाह (सुरक्षा) नहीं दी है? अल्लाह फ़र्माएगा, ज़रूर! चुनाँचे बन्दा कहेगा, तो मैं अपने बारे में अपने नफ़्स के सिवा किसी गवाह की इजाज़त नहीं देता (किसी की गवाही को सही नहीं समझता) तो अल्लाह फ़र्माएगा, आज के दिन तू ख़ुद ही अपने बारे में गवाह काफ़ी है और किरामन कातिबीन बतौर गवाह काफ़ी होंगे, तो उसके मुँह पर मुहर लगा दी जाएगी और उसके आ़ज़ा (अंग), व अरकान (जवारेह़) से कहा जाएगा हर अ़ज़्व (अपने अ़मल के बारे में) बोले, तो वह उसके अ़मलो की गवाही देंगे, फिर उसको कलाम करने के लिए छोड़ दिया जाएगा, तो वह कहेगा, तुम्हारे लिए दूरी और तबाही हो, तुम्हारी तरफ़ से तो मैं दिफ़ाअ़ कर रहा था।' यानी तुम्हें ही आग से बचाने की कोशिश कर रहा था।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अरकान : आ़ज़ा जवारेह़। (2) उफ़ाज़िलु : मैं तुम्हारा दिफ़ाअ़ और बचाव कर रहा था।

(7440) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दुआ की, 'ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद का रिज़्क़ बक़द्रे किफ़ायत कर दे।'

तख़रीज 7440 : इसकी तख़रीज हदीस 2424 किताबुज़्ज़कात में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ آلِ مُحَمَّدٍ قُوتًا " .

(7441) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दुआ की, 'ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद (ख़ानदाने मुहम्मद) का रिज़्क़ बक़द्रे किफ़ायत फ़र्मा।' और अ़म्र की रिवायत में अल्लाहुम्मर्ज़ुक़ है, यानी इज्अल की जगह उर्ज़ुक़ है, मक़्सद एक ही है।

तख़रीज 7441 : इसकी तख़रीज हदीस 2424 किताबुज़्ज़कात में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَعَمْرٌو النَّاقِدُ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالُوا حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " اللَّهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ آلِ مُحَمَّدٍ قُوتًا " . وَفِي رِوَايَةِ عَمْرٍو " اللَّهُمَّ ارْزُقْ " .

फ़ायदा : आल से मुराद यहाँ आपका अहलो अ़याल है, आपने दुआ की कि हमें रोज़ी बस उतनी दे कि उससे ज़िन्दगी का निज़ाम चलता रहे, न उतनी तंगी हो कि फ़ाक़ाकशी और परेशान हाली की वजह से, अपने मुतअल्लिक़ा उमूर और फ़राइज़ भी सरअंजाम न दिये जा सकें और किसी के सामने दस्ते सवाल दराज़ करना पड़े और न इतनी फ़राग़त हो कि ज़ख़ीरा करके रखा जा सके, क्योंकि उम्मत अकसरियत ग़ुर्बत व नादारी की शिकार है, इसलिए आपने उम्मत के ग़ुरबा और उन मसाकीन व मोहताजों के लिए अपना नमूना छोड़ा ताकि वह अपने हालात और गुज़र बसर पर सब्रो क़नाअ़त कर सकें और दूसरों को देखकर हिर्स व तमअ़ या हसद व कीना का शिकार न हों।

(7442) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, उसमें क़ुव्वत की जगह कफ़ाफ़ बक़द्रे गुज़रान है।

तख़रीज 7442 : इसकी तख़रीज हदीस 2424 किताबुज़्ज़कात में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالَ سَمِعْتُ الأَعْمَشَ، ذَكَرَ عَنْ عُمَارَةَ، بْنِ الْقَعْقَاعِ بِهَذَا الإِسْنَادِ وَقَالَ " كَفَافًا " .

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ، زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم مُنْذُ قَدِمَ الْمَدِينَةَ مِنْ طَعَامِ بُرٍّ ثَلاَثَ لَيَالٍ تِبَاعًا حَتَّى قُبِضَ.

(7443) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मुहम्मद(ﷺ) के घर वाले, जबसे आप मदीना तशरीफ़ लाए हैं, कभी मुसलसल तीन रातें गंदुम (गेहूँ) की ख़ुराक व ग़िज़ा से सैर नहीं हुए, यहाँ तक कि आपकी वफ़ात हो गई।

सहीह बुख़ारी, किताबुल अत्इमा : 5416; किताबुर्रिक़ाक़ : 6454; इब्ने माजा, किताबुल अत्इमा : 3344.

फ़ायदा : हुज़ूरे अकरम(ﷺ) की पूरी ज़िन्दगी में ऐसा नहीं हुआ कि आपने मुसलसल और मुतवातिर दो या तीन रातें गंदुम या जौ की रोटी पेट भरकर खाई हो, कुछ दिनों में सिर्फ़ खजूरों या दूध पर गुज़ारा करना पड़ता था, अगरचे आप चाहते तो आपको हर क़िस्म की फ़रावानी और सहूलत मयस्सर हो सकती थी।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا شَبِعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ تِبَاعًا مِنْ خُبْزِ بُرٍّ حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ .

(7444) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) मुतवातिर (लगातार) तीन दिन गंदुम की रोटी से सैर नहीं हुए, यहाँ तक कि फ़ौत हो गए।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ، يُحَدِّثُ عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم مِنْ خُبْزِ شَعِيرٍ يَوْمَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ حَتَّى قُبِضَ

(7445) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मुहम्मद(ﷺ) का कुंबा (बीवी बच्चे) मुतवातिर (मुसलसल) दो दिन, जौ की रोटी से सैर नहीं हुए, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की रूह क़ब्ज़ कर ली गई।

तख़रीज 7445 : सहीह बुख़ारी, किताबुल अत्इमा : 5423; किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर : 6687; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल अज़ाही :

رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

1511; नसाई, किताबुज़्ज़हाया : 4444, 4445; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अज़ाही : 3159; किताबुल अत्इमा : 3313.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم مِنْ خُبْزِ بُرٍّ فَوْقَ ثَلاَثٍ

(7446) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि मुहम्मद(ﷺ) का खानदान, तीन दिन से ज़्यादा गंदुम की रोटी से सैर नहीं हुआ।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم مِنْ خُبْزِ الْبُرِّ ثَلاَثًا حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ.

(7447) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, आले मुहम्मद(ﷺ) ने तीन दिन भी गंदुम की रोटी से पेट नहीं भरा, यहाँ तक कि आपने अपनी राह ली।

जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2357; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अत्इमा : 3346.

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ حُمَيْدٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم يَوْمَيْنِ مِنْ خُبْزِ بُرٍّ إِلاَّ وَأَحَدُهُمَا تَمْرٌ .

(7448) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, मुहम्मद(ﷺ) का कुंबा दो दिन भी गंदुम की रोटी से सैर नहीं हुआ, मगर उनमें एक दिन खजूरें थीं।

सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6455.

حَدَّثَنَا عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ وَيَحْيَى بْنُ يَمَانٍ حَدَّثَنَا عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ إِنْ كُنَّا آلَ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم لَنَمْكُثُ شَهْرًا مَا نَسْتَوْقِدُ بِنَارٍ إِنْ هُوَ إِلاَّ التَّمْرُ وَالْمَاءُ.

(7449) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं यक़ीनन हम आले मुहम्मद(ﷺ) कुछ दफ़ा महीना गुज़र जाता और हम अपने घरों में चूल्हा न जलाते, बस सिर्फ़ खजूरों और पानी पर गुज़ारा होता।

तख़रीज 7449 : जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 34, हदीस 2471.

(7450) इमाम साहब दो और उस्तादों से यही रिवायत नक़्ल करते हैं, उसमें इन कुन्ना लनम्कुस, हम ठहरते थे, है दरम्यान में आले मुहम्मद(ﷺ) का ज़िक्र नहीं हुआ और अबू कुरैब, इब्ने नुमैर से यह इज़ाफ़ा बयान करते हैं, इल्ला यह कि कहीं से थोड़ा सा गोश्त मिल जाता।

सुनन इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद : 4144.

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَابْنُ، نُمَيْرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ إِنْ كُنَّا لَنَمْكُثُ . وَلَمْ يَذْكُرْ آلَ مُحَمَّدٍ . وَزَادَ أَبُو كُرَيْبٍ فِي حَدِيثِهِ عَنِ ابْنِ نُمَيْرٍ إِلاَّ أَنْ يَأْتِيَنَا اللُّحَيْمُ .

(7451) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) वफ़ात पा गए और मेरे ताक़चा या दीवार के आला में जानदार के खाने की कोई चीज़ न थी, सिर्फ़ मेरे ताक़चा में कुछ जौ थे, तो मैं वही खाती रही, यहाँ तक कि तवील मुद्दत गुज़र गई, तो मैंने उन तमाम को माप लिया और वह ख़त्म हो गए।'

तख़रीज 7451 : सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुम्स : 3097; किताबुर्रिक़ाक़ : 6451; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अत्इमा : 3345.

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ بْنِ كُرَيْبٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَمَا فِي رَفِّي مِنْ شَىْءٍ يَأْكُلُهُ ذُو كَبِدٍ إِلاَّ شَطْرُ شَعِيرٍ فِي رَفٍّ لِي فَأَكَلْتُ مِنْهُ حَتَّى طَالَ عَلَىَّ فَكِلْتُهُ فَفَنِيَ .

फ़ायदा : लम्बी मुद्दत खाने के बाद, बाक़ी को माप लिया, तो दिल में उसके ख़ात्मा के लिए एक अंदाज़ा मुक़र्रर कर लिया, जिससे उसकी बरकत ख़त्म हो गई।

(7452) हजरत उर्वा (रह.) से रिवायत है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती थीं अल्लाह की क़सम! ऐ मेरी बहन के बेटे! यक़ीनन चाँद देखते, फिर चाँद देखते, फिर चाँद देखते, इस तरह दो माह में तीन चाँद देख लेते और रसूलुल्लाह(ﷺ) के घरों में चूल्हा गर्म न होता (आग न जलती) मैंने अर्ज़

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ، رُومَانَ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا كَانَتْ تَقُولُ وَاللَّهِ يَا ابْنَ أُخْتِي إِنْ كُنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى الْهِلاَلِ ثُمَّ الْهِلاَلِ ثُمَّ الْهِلاَلِ ثَلاَثَةَ أَهِلَّةٍ فِي شَهْرَيْنِ وَمَا أُوقِدَ فِي

أَبْيَاتِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم نَارٌ - قَالَ - قُلْتُ يَا خَالَةُ فَمَا كَانَ يُعَيِّشُكُمْ قَالَتِ الأَسْوَدَانِ التَّمْرُ وَالْمَاءُ إِلاَّ أَنَّهُ قَدْ كَانَ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم جِيرَانٌ مِنَ الأَنْصَارِ وَكَانَتْ لَهُمْ مَنَائِحُ فَكَانُوا يُرْسِلُونَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مِنْ أَلْبَانِهَا فَيَسْقِينَاهُ .

किया, ऐ ख़ाला! तो आप लोगों को क्या चीज़ ज़िन्दा रखती थी? उन्होंने कहा, दो स्याह चीज़ें, खजूरें और पानी, हाँ! अल्बत्ता रसूलुल्लाह(ﷺ) के अंसारी पड़ौसी थे, जिनके पास दूध देने वाले जानवर थे, वह आपके लिए दूध बतौर हदिया भेजा करते थे, तो हम वह पी लिया करते थे।

सहीह बुख़ारी, किताबुल हिबा : 2567.

फ़ायदा : दूसरे माह के ख़त्म पर तीसरे माह का चाँद नज़र आ जाता है इस तरह दो माह में तीन चाँद नज़र आ जाते हैं और पानी को खजूर की मुनासिबत व ग़ल्बा से स्याह कह दिया है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو صَخْرٍ، عَنْ يَزِيدَ، بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُسَيْطٍ ح وَحَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو صَخْرٍ، عَنِ ابْنِ قُسَيْطٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَتْ لَقَدْ مَاتَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَمَا شَبِعَ مِنْ خُبْزٍ وَزَيْتٍ فِي يَوْمٍ وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ .

(7453) नबी अकरम(ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात हो गई और आपने एक दिन में दो बार पेट भरकर रोटी और ज़ैतून नहीं खाया।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا دَاوُدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَكِّيُّ الْعَطَّارُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ، ح وَحَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْعَطَّارُ، حَدَّثَنِي مَنْصُورُ، بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحَجَبِيُّ

(7454) हजरत आइशा (रज़ि) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) उस वक़्त फ़ौत हुए जब सहाबा किराम (रज़ि.) को पेट भरकर दो स्याह चीज़ें, खजूरें और पानी मयस्सर था।

तख़रीज 7454 : सहीह बुख़ारी, किताबुल अत्इमा : 5382; और हदीस : 5442.

عَنْ أُمِّهِ، صَفِيَّةَ عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ شَبِعَ النَّاسُ مِنَ الأَسْوَدَيْنِ التَّمْرِ وَالْمَاءِ .

(7455) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात हुई, जबकि हमें पेट भरने के लिए दो स्याह चीज़ें पानी और खजूरे दस्तयाब थीं।

तख़रीज 7455 : इसकी तख़रीज हदीस 7380 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ صَفِيَّةَ، عَنْ أُمِّهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَقَدْ شَبِعْنَا مِنَ الأَسْوَدَيْنِ الْمَاءِ وَالتَّمْرِ .

फ़ायदा : आपके ख़ानदान को पेट भरकर यह दोनों चीज़ें फ़तहे ख़ैबर के बाद मयस्सर आ गई थीं, लेकिन आप कई बार अपनी मर्ज़ी से नहीं खाते थे। (लेकिन आपको मयस्सर थीं)

(7456) इमाम साहब दो और उस्तादों से बयान करते हैं कि हम दो स्याह चीज़ों से भी सैर नहीं हुए।

इसकी तख़रीज हदीस 7380 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا الأَشْجَعِيُّ، ح وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، كِلاَهُمَا عَنْ سُفْيَانَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِهِمَا عَنْ سُفْيَانَ وَمَا شَبِعْنَا مِنَ الأَسْوَدَيْنِ

(7457) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, इब्ने अब्बाद की रिवायत में है, अबू हुरैरा (रज़ि.) की जान जिसके हाथ में है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने कभी अपने अहल को लगातार तीन दिन पेट भरकर गंदुम की रोटी नहीं खिलाई, यहाँ तक कि दुनिया छोड़ गए।

जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2358; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अत्इमा : 3343.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، وَابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالاَ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ، - يَعْنِيَانِ الْفَزَارِيَّ - عَنْ يَزِيدَ، - وَهُوَ ابْنُ كَيْسَانَ - عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ -وَقَالَ ابْنُ عَبَّادٍ وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي هُرَيْرَةَ بِيَدِهِ - مَا أَشْبَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَهْلَهُ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ تِبَاعًا مِنْ خُبْزِ حِنْطَةٍ حَتَّى فَارَقَ الدُّنْيَا .

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ كَيْسَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ قَالَ رَأَيْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يُشِيرُ بِإِصْبَعِهِ مِرَارًا يَقُولُ وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي هُرَيْرَةَ بِيَدِهِ مَا شَبِعَ نَبِيُّ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَأَهْلُهُ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ تِبَاعًا مِنْ خُبْزِ حِنْطَةٍ حَتَّى فَارَقَ الدُّنْيَا .

(7458) अबू हाज़िम (रह.) बयान करते हैं मैंने अबू हुरैरा (रज़ि.) को बार बार ऊँगली का इशारा देखा वह कह रहे थे उस जात की कसम जिसके हाथ में अबू हुरैरा की जान है नबी अकरम(ﷺ) और आपके घर वाले मुसलसल तीन दिन गंदुम (अनाज) की रोटी से सैर नहीं हुए यहाँ तक कि आपने दुनिया को छोड़ दिया।
इसकी तख़रीज हदीस 7383 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سِمَاكٍ، قَالَ سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ، يَقُولُ أَلَسْتُمْ فِي طَعَامٍ وَشَرَابٍ مَا شِئْتُمْ لَقَدْ رَأَيْتُ نَبِيَّكُمْ صلى الله عليه وسلم وَمَا يَجِدُ مِنَ الدَّقَلِ مَا يَمْلأُ بِهِ بَطْنَهُ . وَقُتَيْبَةُ لَمْ يَذْكُرْ بِهِ .

(7459) हजरत नोमान बिन बशीर (रज़ि.) फ़र्माते थे, क्या तुम अपनी मर्ज़ी का खाते पीते नहीं हो? मैं तुम्हारे नबी(ﷺ) को उन हालात से गुज़रते देख चुका हूँ कि आपको सैर होने के लिए (पेट भरने के लिए) रद्दी खजूरें भी मयस्सर न थीं, क़ुतैबा ने यम्लउ बिही के बाद नहीं कहा।
जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2382.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا الْمُلاَئِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، كِلاَهُمَا عَنْ سِمَاكٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَهُ وَزَادَ فِي حَدِيثِ زُهَيْرٍ وَمَا تَرْضَوْنَ دُونَ أَلْوَانِ التَّمْرِ وَالزُّبْدِ .

(7460) इमाम साहब अपने दो उस्तादों की ऊपर वाली रिवायत के हम मआनी रिवायत बयान करते हैं और ज़ुहैर की रिवायत में यह इज़ाफ़ा है और तुम रंग बिरंग खजूरों और मक्खन के बग़ैर मुत्मइन ही नहीं होते हो।
इसकी तख़रीज हदीस 7385 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ، بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ

(7461) सिमाक बिन हर्ब (रह.) बयान करते हैं, मैंने नोमान (रज़ि.) को ख़ुत्बा में यह बयान करते सुना, हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा लोगों ने जिस क़द्र दुनिया हासिल कर

ली है, उसका ज़िक्र करके फ़र्माया, 'मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को दिन भर भूख से पेचो ताब खाते देखा, आपको पेट भरने के लिए रद्दी खजूरें भी दस्तयाब न थीं।
सुनन इब्ने माजाः किताबुज़्ज़ुहद : 4146.

سَمِعْتُ النُّعْمَانَ، يَخْطُبُ قَالَ ذَكَرَ عُمَرُ مَا أَصَابَ النَّاسُ مِنَ الدُّنْيَا فَقَالَ لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَظَلُّ الْيَوْمَ يَلْتَوِي مَا يَجِدُ دَقَلاً يَمْلأُ بِهِ بَطْنَهُ .

(7462) अबू अ़ब्दुर्रहमान हुबुली (रह.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) से सुना, जबकि उन्हें एक आदमी ने पूछा था, उसने कहा, क्या हम फ़ुक़रा मुहाजिरीन में से नहीं हैं? तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उसे कहा, क्या तेरी बीवी है, जिसके पास तुम रहते हो? उसने कहा, हाँ! उन्होंने पूछा, क्या तेरे पास घर है, जिसमें आबाद हो? उसने कहा, हाँ! तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, तुम अग़निया यानी मालदारों में से हो, उसने कहा, मेरा ख़ादिम भी है, फिर तो तुम बादशाहों में से हो (जिनको यह सहूलत मयस्सर होती है।)

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو هَانِئٍ سَمِعَ أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبُلِيَّ، يَقُولُ سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، وَسَأَلَهُ، رَجُلٌ فَقَالَ أَلَسْنَا مِنْ فُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ أَلَكَ امْرَأَةٌ تَأْوِي إِلَيْهَا قَالَ نَعَمْ . قَالَ أَلَكَ مَسْكَنٌ تَسْكُنُهُ قَالَ نَعَمْ قَالَ فَأَنْتَ مِنَ الأَغْنِيَاءِ قَالَ فَإِنَّ لِي خَادِمًا قَالَ فَأَنْتَ مِنَ الْمُلُوكِ .

(7463) अबू अ़ब्दुर्रहमान (रह.) बयान करते हैं, तीन इंसान, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) के पास आए और मैं भी उनके पास मौजूद था, उन्होंने कहा, ऐ अबू मुहम्मद! हम अल्लाह की क़सम! कुछ नहीं पाते, न ख़र्च न सवारी और न साज़ो सामान, तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनसे कहा, तुम क्या चाहते हो? अगर चाहो, तो हमारे पास आ जाओ, तो हम तुम्हें वह अ़ता करेंगे, जो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए

قَالَ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَجَاءَ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ وَأَنَا عِنْدَهُ فَقَالُوا يَا أَبَا مُحَمَّدٍ إِنَّا وَاللَّهِ مَا نَقْدِرُ عَلَى شَىْءٍ لاَ نَفَقَةٍ وَلاَ دَابَّةٍ وَلاَ مَتَاعٍ . فَقَالَ لَهُمْ مَا شِئْتُمْ إِنْ شِئْتُمْ رَجَعْتُمْ إِلَيْنَا فَأَعْطَيْنَاكُمْ مَا يَسَّرَ اللَّهُ لَكُمْ وَإِنْ شِئْتُمْ

ذَكَرْنَا أَمْرَكُمْ لِلسُّلْطَانِ وَإِنْ شِئْتُمْ صَبَرْتُمْ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِينَ يَسْبِقُونَ الأَغْنِيَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى الْجَنَّةِ بِأَرْبَعِينَ خَرِيفًا " . قَالُوا فَإِنَّا نَصْبِرُ لاَ نَسْأَلُ شَيْئًا .

मयस्सर करेगा, अगर चाहो, तो हम तुम्हारा मामला सुल्तान (वाली, गवर्नर) के सामने पेश कर देते हैं और अगर चाहो तो (इन हालात पर) सब्र करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना है, 'फ़ुक़रा (मोहताज) मुहाजिरीन, क़ियामत के दिन मालदारों से चालीस साल पहले, जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे।' उन्होंने कहा, तो हम सब्र करेंगे, कुछ माँगेंगे नहीं।

तख़रीज 7463 : इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : चालीस साल का अदद तअयीन और तहदीद के लिए नहीं, सिर्फ़ लम्बी मुद्दत बयान करने के लिए है, इसलिए कुछ रिवायात में पाँच सौ साल का अर्सा आया है, या सहाबा किराम के फ़ुक़रा और अग़्निया (मालदारों) का फ़र्क़ चालीस का होगा और आम फ़ुक़रा और मालदारों का पाँच सौ साल का, क्योंकि मालदार अपने मालो मताअ और आसाइश व आराम का हिसाब किताब देने के लिए रोक लिए जाएँगे, जबकि फ़ुक़रा का लम्बा चौड़ा मुहासबा नहीं होगा और ज़ाहिर है आम अग़्निया और सहाबा अग़्निया के बीच हुस्ने अमल और इख़लास के एतिबार से बहुत ज़्यादा फ़र्क़ है।

(2) بَابُ : لاَتَدْ خُلُوْا مَسَاكِنَ الَّذِىْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهمْ إِلَّا أَنْ تَكُوْنُوْا بَاكِيْنَ

बाब 2 : जिन लोगों ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है, उनके घरों (रिहाइशगाहों) में रोते हुए ही दाख़िल हो।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، جَمِيعًا عَنْ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ ابْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ، بْنَ

(7464) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हिज्र के बाशिन्दों के बारे में फ़र्माया, 'उन अज़ाब दिये गए लोगों के यहाँ दाख़िल न हो, मगर रोते हुए, अगर तुम रो न सको, तो उनके

عُمَرَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لأَصْحَابِ الْحِجْرِ " لاَ تَدْخُلُوا عَلَى هَؤُلاَءِ الْقَوْمِ الْمُعَذَّبِينَ إِلاَّ أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا بَاكِينَ فَلاَ تَدْخُلُوا عَلَيْهِمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَهُمْ " .

यहाँ दाख़िल न हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उन जैसे अ़ज़ाब का शिकार हो जाओ।'

حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، -وَهُوَ يَذْكُرُ الْحِجْرَ مَسَاكِنَ ثَمُودَ - قَالَ سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ قَالَ مَرَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْحِجْرِ فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " لاَ تَدْخُلُوا مَسَاكِنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ إِلاَّ أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ حَذَرًا أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَهُمْ " . ثُمَّ زَجَرَ فَأَسْرَعَ حَتَّى خَلَّفَهَا .

(7465) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) की मइयत (साथ) में हि्जर से गुज़रे तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हमें फ़र्माया, 'जिन लोगों ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, उनकी रिहाइशगाहों में रोते हुए ही दाख़िल हो, इस बात का अंदेशा और ख़तरा महसूस करते हुए कि कहीं तुम भी उन जैसे अ़ज़ाब से दो चार न हो जाओ।' फिर आपने सवारी को तेज़ करने के लिए डाँटा और जल्दी करते हुए उस जगह को पीछे छोड़ दिया।

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3380.

फ़ायदा : हि्ज्र का इलाक़ा जहाँ क़ौमे समूद आबाद थी, वहाँ से ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े पर गुज़रे हैं, क्योंकि यह जगह ख़ैबर और तबूक के बीच वाक़ेअ है, जहाँ आज भी खण्डरात मौजूद हैं, अ़ज़ाबशुदा क़ौमों के इलाक़े से गुज़रते हुए रोना चाहिए, या कम अज़्कम रोने की शक्ल ही बनानी चाहिए कि कहीं हम भी उस अ़ज़ाब का शिकार न हो जाएँ और उन इलाक़ों से सि़र्फ ज़रूरत के तहत या इ़ब्रत और सबक़ आमूज़ी के लिए ही जाना चाहिए।

حَدَّثَنِي الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى أَبُو صَالِحٍ، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ إِسْحَاقَ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ النَّاسَ

(7466) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि लोग रसूलुल्लाह(ﷺ) की मइयत में समूद के इलाक़े हि्जर में उतरे, तो उसके कुओं से पानी

نَزَلُوا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْحِجْرِ أَرْضِ ثَمُودَ فَاسْتَقَوْا مِنْ آبَارِهَا وَعَجَنُوا بِهِ الْعَجِينَ فَأَمَرَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ يُهَرِيقُوا مَا اسْتَقَوْا وَيَعْلِفُوا الإِبِلَ الْعَجِينَ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَسْتَقُوا مِنَ الْبِئْرِ الَّتِي كَانَتْ تَرِدُهَا النَّاقَةُ .

खींचा और उससे आटा गूँधा, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हुक्म दिया, जो पानी खींचा है, उसको बहा दो और आटा ऊँटों को खिला दो और उन्हें उस कूएँ से पानी निकालने का हुक्म दिया जहाँ ऊँटनी आया करती थी।'

फ़ायदा : जिन कूओं से समूदी पानी पीते थे, वह नजिस या पलीद नहीं था, सिर्फ़ उनकी सीरत व किरदार से नफ़रत व कराहत के इज़्हार के लिए उनके कुओं से पानी निकालने से मना किया गया, हैवानात चूँकि मुकल्लफ़ नहीं हैं, इसलिए आटा उनको खिला दिया गया और जिस कूएँ पर ऊँटनी आती थी, उसका पता आपको वह्य के ज़रिये चल गया, या शोहरत से।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . مِثْلَهُ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ فَاسْتَقَوْا مِنْ بِئَارِهَا وَاعْتَجَنُوا بِهِ .

(7467) इमाम साहब यह रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, लेकिन उसके अल्फ़ाज़ में फ़र्क़ है, मआनी एक ही है, यानी आबार की जगह बिआर है और अजनू की जगह इअ़्तजनू है।

सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3379.

(3) بَاب : الإِحْسَانِ إِلَى الأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ وَالْيَتِيمِ

बाब 3 : बेवा, मिस्कीन और यतीम के साथ अच्छा सुलूक करना

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " السَّاعِي عَلَى الأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ - وَأَحْسِبُهُ قَالَ -

(7468) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'बेवा और मिस्कीन के लिए मेहनत व मशक़्क़त या भागदौड़ करने वाला, अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले की तरह है और मेरा ख़याल है कि यह भी कहा और उस क़ियाम

وَكَالْقَائِمِ لاَ يَفْتُرُ وَكَالصَّائِمِ لاَ يُفْطِرُ " .

करने वाले की तरह है जो थकता नहीं, सुस्त नहीं पड़ता और उस रोज़ेदार की तरह है जो कभी रोज़ा नहीं छोड़ता।'

तख़रीज 7468 : सहीह बुख़ारी, किताबुन नफ़क़ात : 5353; किताबुल अदब : 6006 मीम; हदीस : 6007; जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस़्सिला : 1969मीम; सुनन इब्ने माजा, किताबुत्तिजारात : 2140.

फ़ायदा : वो इंसान जो बग़ैर तमअ़ व लालच और दुनियावी मफ़ादात के सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए इख़्लास़ के साथ अपना कमाया हुआ माल बेवा या मिस्कीन पर ख़र्च करता है वह हदीस में मज़्कूरा (बताये गये) अज्रो सवाब का ह़क़दार ठहरता है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ، الدِّيلِيِّ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا الْغَيْثِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " كَافِلُ الْيَتِيمِ لَهُ أَوْ لِغَيْرِهِ أَنَا وَهُوَ كَهَاتَيْنِ فِي الْجَنَّةِ " . وَأَشَارَ مَالِكٌ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى .

(7469) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं , रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अपने या दूसरे के यतीम की किफ़ालत करने वाला और मैं जन्नत में इन दो उँगलियों की तरह होंगे।' मालिक ने शहादत की उँगली और दरम्यानी उँगली से इशारा किया।

फ़ायदा : जिस तरह दरम्यानी उँगली, शहादत की उँगली के क़रीब है उनके दरम्यान ज़्यादा फ़ास़ला नहीं है इस तरह अपने अ़ज़ीज़ो रिश्तेदार यतीम या अजनबी यतीम की परवरिश और किफ़ालत करने वाला जन्नत में आपका रफ़ीक़ होगा, उसको आपके क़रीब रखा जाएगा। (कफ़ा बिही शरफ़न)

बाब 4 : मस्जिद बनाने की फ़ज़ीलत

(4) بَاب : فَضْلِ بِنَاءِ الْمَسَاجِدِ

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ سَعِيدٍ الأَيْلِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ عِيسَى، قَالاَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، - وَهُوَ ابْنُ الْحَارِثِ - أَنَّ بُكَيْرًا، حَدَّثَهُ أَنَّ عَاصِمَ بْنَ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ عُبَيْدَ اللَّهِ الْخَوْلاَنِيَّ، يَذْكُرُ أَنَّهُ سَمِعَ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ، عِنْدَ قَوْلِ النَّاسِ فِيهِ حِينَ بَنَى مَسْجِدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِنَّكُمْ قَدْ أَكْثَرْتُمْ وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ بَنَى مَسْجِدًا - قَالَ بُكَيْرٌ حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ - يَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ اللَّهِ بَنَى اللَّهُ لَهُ مِثْلَهُ فِي الْجَنَّةِ " . وَفِي رِوَايَةِ هَارُونَ " بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ " .

(7470) उबैदुल्लाह ख़ौलानी (रह.) बयान करते हैं, जब हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की मस्जिद नए सिरे से ता'मीर की और लोगों ने उसके अंदाज़े ता'मीर पर नुक्ता चीनी की, उस वक़्त उनसे मैंने सुना, तुम बहुत बातें बनाते हो और मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना है, 'जिसने मस्जिदें ता'मीर की, बुकैर (रह.) कहते हैं, मेरे ख़याल में उन्होंने कहा, अल्लाह की रज़ामन्दी चाहते हुए तो अल्लाह उसके लिए वैसा (मकान) जन्नत में बनाएगा।' हारून (रह.) की रिवायत में है, 'जिसने अल्लाह के लिए मस्जिद बनाई, अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा।'

इसकी तख़रीज किताबुल मसाजिद व मवाज़िउस्सलात की हदीस 1189 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : दुनिया में मस्जिद बनाने वाला, मस्जिद की तामीर में जिस क़द्र आला और उम्दा सामाने ता'मीर इस्तेमाल करेगा, अल्लाह उसके लिए जन्नत में आला और उम्दा सामाने ता'मीर से घर बनाएगा, इसलिए मैंने उम्दा और अच्छा सामाने तामीर इस्तेमाल किया है, लेकिन दूसरे सहाबा किराम (रज़ि.) का ख़याल था, वही सामाने ता'मीर इस्तेमाल किया जाए, जो आपने और हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस्तेमाल किया था, तफ़्सील गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، كِلاَهُمَا عَنِ الضَّحَّاكِ، - قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى

(7471) महमूद बिन लबीद कहते हैं, हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने मस्जिद को नए सिरे से तामीर करने का इरादा किया तो लोगों ने

حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، - أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ مَحْمُودِ بْنِ لَبِيدٍ، أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ، أَرَادَ بِنَاءَ الْمَسْجِدِ فَكَرِهَ النَّاسُ ذَلِكَ وَأَحَبُّوا أَنْ يَدَعَهُ عَلَى هَيْئَتِهِ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " مَنْ بَنَى مَسْجِدًا لِلَّهِ بَنَى اللَّهُ لَهُ فِي الْجَنَّةِ مِثْلَهُ " .

उसको नापसंद किया और चाहा कि वह उसे उसकी शक्लो सूरत में रहने दें, तो उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना है, 'जो अल्लाह के लिए मस्जिद बनाएगा, अल्लाह उसके लिए वैसा ही जन्नत में (घर) बनाएगा।'

इसकी तख़रीज किताबुल मसाजिद व मवाज़िउस्सलात की हदीस 1189 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : मिस्लुहू : वैसा ही का यह मआनी नहीं है, उस हजम और पैमाइश का, या उस जैसे मसाला का, बल्कि मुराद है जिस हुस्ने निय्यत और उम्दगी से बनाएगा, उस तरह उसको आला और उम्दा जन्नत का घर मिलेगा, क्योंकि जन्नत की नज़ीर व तम्सील तो दुनिया में है ही नहीं और न हो सकती है।

وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ الْحَنَفِيُّ، وَعَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ، الصَّبَّاحِ كِلاَهُمَا عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّ فِي، حَدِيثِهِمَا " بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ " .

(7472) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, उसमें बैत (घर) का लफ़्ज़ सराहतन मौजूद है।

तख़रीज 7472 : इसकी तख़रीज किताबुल मसाजिद व मवाज़िउस्सलात की हदीस 1190 में गुज़र चुकी है।

(5) بَاب : فَضْلِ الْإِنْفَاقِ عَلَى الْمَسَاكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ

बाब 5 : मसाकीन और मुसाफ़िरों पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَزُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ،

(7473) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'जबकि एक आदमी जंगल, बियाबान में था, तो उसने एक बादल से आवाज़ सुनी कि फ़लाँ इंसान के बाग़ को सैराब कर, तो वह बादल एक रुख़ पर चल

اللَّيْثِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " بَيْنَا رَجُلٌ بِفَلاَةٍ مِنَ الأَرْضِ فَسَمِعَ صَوْتًا فِي سَحَابَةٍ اسْقِ حَدِيقَةَ فُلاَنٍ . فَتَنَحَّى ذَلِكَ السَّحَابُ فَأَفْرَغَ مَاءَهُ فِي حَرَّةٍ فَإِذَا شَرْجَةٌ مِنْ تِلْكَ الشِّرَاجِ قَدِ اسْتَوْعَبَتْ ذَلِكَ الْمَاءَ كُلَّهُ فَتَتَبَّعَ الْمَاءَ فَإِذَا رَجُلٌ قَائِمٌ فِي حَدِيقَتِهِ يُحَوِّلُ الْمَاءَ بِمِسْحَاتِهِ فَقَالَ لَهُ يَا عَبْدَ اللَّهِ مَا اسْمُكَ قَالَ فُلاَنٌ . لِلاِسْمِ الَّذِي سَمِعَ فِي السَّحَابَةِ فَقَالَ لَهُ يَا عَبْدَ اللَّهِ لِمَ تَسْأَلُنِي عَنِ اسْمِي فَقَالَ إِنِّي سَمِعْتُ صَوْتًا فِي السَّحَابِ الَّذِي هَذَا مَاؤُهُ يَقُولُ اسْقِ حَدِيقَةَ فُلاَنٍ لاِسْمِكَ فَمَا تَصْنَعُ فِيهَا قَالَ أَمَّا إِذَا قُلْتَ هَذَا فَإِنِّي أَنْظُرُ إِلَى مَا يَخْرُجُ مِنْهَا فَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثِهِ وَآكُلُ أَنَا وَعِيَالِي ثُلُثًا وَأَرُدُّ فِيهَا ثُلُثَهُ " .

पड़ा और अपना पानी एक संगरेज़ों वाली ज़मीन में ख़ाली कर दिया (बरसा) तो उस ज़मीन की नालियों में से एक नाली ने सारा पानी भर लिया, चुनाँचे वह आदमी उस पानी के साथ चल पड़ा (उसके पीछे हो लिया) तो उसने देखा, एक आदमी अपने बाग़ में खड़े अपनी कस्सी से पानी इधर उधर कर रहा है (ज़मीन को सैराब कर रहा है) तो उसने पानी वाले से पूछा, ऐ अल्लाह के बन्दे! तेरा क्या नाम है? उसने कहा, फ़लाँ है, वही नाम जो उसने बादलों में से सुना था, तो उसने उससे कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे! तू मेरा नाम क्यूँ पूछता है? पूछने वाले ने कहा, मैंने उस बादल से जिसका यह पानी है, एक आवाज़ सुनी (हातिफ़ ग़ैबी) कह रहा था, फ़लाँ के बाग़ को सैराब करो, तेरा नाम था, तो तुम इस बाग़ में क्या तर्ज़े अमल अपनाते हो? बाग़ के मालिक ने कहा, जब तुमने पूछ ही लिया है, (तो सुन) इसमें से जो कुछ हासिल होता है, मैं उस पर नज़र डालता हूँ, चुनाँचे उसका एक तिहाई सदक़ा कर देता हूँ और एक तिहाई मैं और मेरा अयाल खा लेते हैं और तीसरा तिहाई इस बाग़ में लगा देता हूँ।

وَحَدَّثَنَاهُ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، أَخْبَرَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ كَيْسَانَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ" وَأَجْعَلُ ثُلُثَهُ فِي الْمَسَاكِينِ وَالسَّائِلِينَ وَابْنِ السَّبِيلِ " .

(7474) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं, जिसमें यह है 'और मैं उसका एक तिहाई, मिस्कीनों, माँगने वालों और मुसाफ़िरों पर ख़र्च करता हूँ।'

मुफ़रदातुल **हदीस** : (1) तनह्हा : एक तरफ़ का रुख़ किया, अलग होकर चला गया। (2) ह्र्रा : स्याह कंकरों वाली ज़मीन। (3) शर्जतुन : नाली उसकी जमा शिराजुन है। (4) मिस्ह़ात : वह आला जिससे ज़मीन को खोदा जाता है, कस्सी।

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है, ज़मीन या बाग़ की पैदावार के ह़ासिल होते ही उससे कुछ ह़िस्सा नेक कामों के लिए, फ़ुक़रा, मोह़ताजों और ज़रूरतमंदों के लिए अलग कर लेना और कुछ ह़िस्सा ज़मीन की बेहतरी और इस्लाह़ पर नेक निय्यती से ख़र्च करना ख़ैरो बरकत का बाइस बनता है और ऐसा ज़मींदार नापसंदीदा होने की बजाए फ़ज़ीलत का बाइस है और पैदावार से उ़श्र (दसवाँ ह़िस्सा) से ज़ाइद ख़र्च करना पसंदीदा त़र्ज़े अ़मल है।

बाब 6 : जिसने अपने अ़मल में अल्लाह के सिवा की रज़ा भी चाही) रियाकारी (दिखावा) की ह़ुर्मत

(6) بَاب : تَحْرِيمِ الرِّيَآءِ

(7475) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अल्लाह तबारक व तआ़ला का इर्शाद है, 'मैं शरीकों की शराकत और ह़िस्सेदारों से बिलकुल बेनियाज़ हूँ, जिसने कोई काम किया, जिसमें मेरे साथ किसी और को शरीक किया, मैं उसको उसके शरीक के साथ छोड़ दूँगा।'

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ الْقَاسِمِ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَعْقُوبَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ مَنْ عَمِلَ عَمَلاً أَشْرَكَ فِيهِ مَعِي غَيْرِي تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ " .

फ़ायदा : कोई इंसान कोई अच्छा और नेक काम करता है और उसकी निय्यत में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा और ख़ुशनूदी का ह़ुसूल नहीं बल्कि किसी और को ख़ुश करना या कोई मफ़ाद मत़्लूब है, तो अल्लाह तआ़ला उसके अ़मल को उसके शरीक के लिए रहने देता है, अपनी बारगाह में शर्फ़े क़ुबूलियत नहीं बख़्शता या उस इंसान को उसके शिर्क के ह़वाले कर देता है और वह आदमी आहिस्ता आहिस्ता अल्लाह तआ़ला से लौट जाता है, यानी सिर्फ़ अपने मफ़ादात का और दूसरों की

रज़ा का असीर बनकर रह जाता है, इसलिए शिर्क का लफ़्ज़ मस़दरी मआनी और शरीक के मआनी दोनों के लिए इस्तेमाल हो सकता है।

حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ سُمَيْعٍ، عَنْ مُسْلِمٍ، الْبَطِينِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ سَمَّعَ سَمَّعَ اللَّهُ بِهِ وَمَنْ رَاءَى رَاءَى اللَّهُ بِهِ " .

(7476) हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जो लोगों को सुनाकर (शोहरत व नामवरी के लिए) अ़मल करता है, अल्लाह उसके उस अ़मल को (शोहरत की निय्यत) सुनाएगा, (शोहरत देगा) और जो रियाकारी करता है (दिखलावे के लिए काम करता है ताकि नेक नामी का चर्चा हो) तो अल्लाह उसके साथ दिखलावा करेगा (सवाब दिखाकर, उसको उससे महरूम कर देगा) या उसकी रियाकारी को नुमायाँ कर देगा।'

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ، قَالَ سَمِعْتُ جُنْدُبًا الْعَلَقِيَّ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ يُسَمِّعْ يُسَمِّعِ اللَّهُ بِهِ وَمَنْ يُرَائِي يُرَائِي اللَّهُ بِهِ " .

(7477) हजरत जुन्दुब अ़लक़ी (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जो लोगों को सुनाएगा अल्लाह उसकी ह़रकत सुना देगा और जो रियाकारी करेगा अल्लाह उसकी रियाकारी दिखला देगा।'
सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6499; सुनन इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद : 4207.

फ़ायदा : सम्मआ यह है कि एक नेक काम अल्लाह के लिए करने के बाद लोगों में उसका चर्चा किया जाए और रिया यह है, लोगों को दिखलाकर ही किया जाए और बक़ौल कुछ सम्मआ लोगों के ऊ़यूब व नक़ाइस़ को सुनाना और उनमें फैलाना है, तो अल्लाह तआ़ला उसके ऊ़यूब व नक़ाइस़ ज़ाहिर कर देता है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا الْمُلاَئِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ

(7478) इमाम साहब यह रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं, उसमें सलमा बिन कुहैल के इस क़ौल का इज़ाफ़ा है, मैंने उनके सिवा यानी जुन्दुब के सिवा किसी को यह

وَزَادَ وَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا غَيْرَهُ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

कहते नहीं सुना, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'यानी सलमा बिन कुहैल को सिर्फ़ जुन्दुब (रज़ि.) से ही हदीस सुनने का मौक़ा मिला है और किसी सहाबी से हदीस नहीं सुनी।
इसकी तख़रीज हदीस 7402 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَمْرٍو الأَشْعَثِيُّ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ حَرْبٍ، - قَالَ سَعِيدٌ أَظُنُّهُ قَالَ ابْنُ الْحَارِثِ بْنِ أَبِي مُوسَى - قَالَ سَمِعْتُ سَلَمَةَ بْنَ كُهَيْلٍ، قَالَ سَمِعْتُ جُنْدُبًا، -وَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ غَيْرَهُ - يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ بِمِثْلِ حَدِيثِ الثَّوْرِيِّ .

(7479) इमाम साहब अपने उस्ताद, सईद बिन अम्र सक़फ़ी से बयान करते हैं कि मेरे ख़याल में, मेरे उस्ताद सुफ़्यान ने कहा, वलीद बिन हारिस बिन अबी मूसा ने सलमा बिन कुहैल से सुना कि मैंने जुन्दुब से सुना और उनके सिवा किसी को मैंने यह कहते नहीं सुना, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से सुना, आगे ऊपर वाली हदीस है।
इसकी तख़रीज हदीस 7402 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَاهُ ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الصَّدُوقُ الأَمِينُ الْوَلِيدُ بْنُ حَرْبٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ

(7480) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।
इसकी तख़रीज हदीस 7402 में गुज़र चुकी है।

(7) بَاب : حِفْظِ اللِّسَانِ

बाब 7 : (ऐसा बोल बोलना जिससे इंसान आग में गिर जाता है, या) ज़ुबान की हिफ़ाज़त

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا بَكْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ مُضَرَ - عَنِ ابْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ، بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه

(7781) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'इंसान कुछ बार ऐसा कलिमा बोलता है, जिससे दोज़ख़ में उतना नीचे उतर जाता है, जिसका फ़ासला मश्रिक़

وسلم يقُولُ " إِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ يَنْزِلُ بِهَا فِي النَّارِ أَبْعَدَ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

व मग़्रिब का दरम्यानी फ़ासला से ज़्यादा है।'
सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़ : 6477; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2314.

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عُمَرَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ الدَّرَاوَرْدِيُّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ، الْهَادِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " إِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مَا يَتَبَيَّنُ مَا فِيهَا يَهْوِي بِهَا فِي النَّارِ أَبْعَدَ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ "

(7482) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'बन्दा एक ऐसा कलिमा बोल देता है, जिसकी हक़ीक़त व गहराई के एहाता पर ग़ौर नहीं करता, उसके सबब वह दोज़ख़ में इतना नीचे गिर जाता है कि वह फ़ासला मश्रिक़ व मग़्रिब के बीच से भी ज़्यादा होता है।'
इसकी तखरीज हदीस 7406 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : कुछ दफ़ा इंसान बिला सोचे समझे किसी हुक्मरान की ख़ुशामद में कोई बात कह देता है, या उसके सामने किसी मुसलमान के बारे में कोई बात कह देता है, जिससे हुक्मरान को उसके क़त्ल का बहाना मिल जाता है, या बदगोई और फ़ोहश कलामी करता है, या बिला सोचे समझें हँसी मज़ाक़ में किसी दीनी हुक्म पर तअ़न कर देता है, उसका मज़ाक़ उड़ाता है, तो यह चीज़ें उसकी ताबही व बर्बादी का बाइस बन जाती है, इसलिए रसूलुल्लाह(ﷺ) ने ज़ुबान की हिफ़ाज़त पर बहुत ज़ोर दिया है और ख़ामोशी को नजात क़रार दिया है।

(8) بَاب : عُقُوبَةِ مَنْ يَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَلَايَفْعَلُهُ وَيَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ وَيَفْعَلُهُ

बाब 8 : दूसरों को मअ़रूफ़ (भलाई) का हुक्म देकर ख़ुद उस पर अ़मल न करने और दूसरों को बुराई से रोककर उसके इर्तिकाब करने की उ़क़ूबत व सज़ा

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ -

(7483) हजरत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) बयान करते हैं, उनसे कहा गया, क्या आप हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के पास जाकर उनसे बातचीत नहीं करेंगे? चुनाँचे उन्होंने जवाब

قَالَ يَحْيَى وَإِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرُونَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ قِيلَ لَهُ أَلاَ تَدْخُلُ عَلَى عُثْمَانَ فَتُكَلِّمَهُ فَقَالَ أَتُرَوْنَ أَنِّي لاَ أُكَلِّمُهُ إِلاَّ أُسْمِعُكُمْ وَاللَّهِ لَقَدْ كَلَّمْتُهُ فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَهُ مَا دُونَ أَنْ أَفْتَتِحَ أَمْرًا لاَ أُحِبُّ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ فَتَحَهُ وَلاَ أَقُولُ لأَحَدٍ يَكُونُ عَلَىَّ أَمِيرًا إِنَّهُ خَيْرُ النَّاسِ . بَعْدَ مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " يُؤْتَى بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ فَتَنْدَلِقُ أَقْتَابُ بَطْنِهِ فَيَدُورُ بِهَا كَمَا يَدُورُ الْحِمَارُ بِالرَّحَى فَيَجْتَمِعُ إِلَيْهِ أَهْلُ النَّارِ فَيَقُولُونَ يَا فُلاَنُ مَا لَكَ أَلَمْ تَكُنْ تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ فَيَقُولُ بَلَى قَدْ كُنْتُ آمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَلاَ آتِيهِ وَأَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ وَآتِيهِ " .

दिया, क्या तुम्हारा ख़याल है कि मैं तुम्हें सुनाकर ही उनसे बातचीत करता हूँ? अल्लाह की क़सम! मैं अपने तौर पर राज़दाराना तरीक़े से बातचीत कर चुका हूँ, बग़ैर इसके कि मैं ऐसे फ़ित्ने का दरवाज़ा खोलूँ (खुल्लम खुल्ला उमरा पर एतिराज़ करूँ) जिसको मैं सबसे पहले खोलना पसंद नहीं करता और मैं किसी इंसान के बारे में, जो मेरा अमीर (हाकिम है) यह नहीं कहता कि वह तमाम इंसानों से बेहतर है, जबकि मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुन चुका हूँ, 'क़ियामत के दिन एक आदमी को लाया जाएगा और उसे आग में डाल दिया जाएगा, चुनाँचे उसके पेट की अंतड़ियाँ बाहर निकल आएँगी, तो वह उन अंतड़ियों के साथ इस तरह चक्कर लगाएगा, जिस तरह गधा चक्की के गिर्द चक्कर लगाता है, चुनाँचे लोग उसके पास जमा हो जाएँगे और पूछेंगे, ऐ फ़लाँ इंसान! तुम्हें क्या हुआ, क्या तुम मअ़रूफ़ का हुक्म नहीं देते और बुराई से रोकते नहीं थे, वह जवाब देगा, क्यूँ नहीं! मैं नेकी का हुक्म देता था और ख़ुद नेकी नहीं करता था और मैं बुराई से रोकता था और ख़ुद बुराई करता था।'

तख़रीज 7483 : सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़ : 3267; किताबुल फ़ितन : 7098.

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ كُنَّا عِنْدَ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ فَقَالَ رَجُلٌ مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَدْخُلَ عَلَى عُثْمَانَ فَتُكَلِّمَهُ فِيمَا يَصْنَعُ وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمِثْلِهِ

(7484) अबू वाइल (रह.) बयान करते हैं, हम हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर थे, तो एक आदमी ने कहा, कौनसी चीज़ तुम्हें इस बात से रोकती है कि आप उस्मान के पास जाएँ और उनके रवैया,

तर्ज़े अमल के बारे में उनसे बातचीत करें।'

आगे ऊपर वाली हदीस है।

इसकी तख़रीज हदीस 7408 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : हजरत उ़स्मान (रज़ि.) के बारे में गुफ़्तनी बातें की जाती थीं और ख़ुसूसी तौर पर उनकी अक़रबा परवरी (अपने रिश्तेदारों को तर्जीह देना) को उछाला जाता था, चूँकि ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) के उनसे ख़ुशगवार तअ़ल्लुक़ात व मरासिम थे, इसलिए उनसे यह कहा गया कि आप उनसे बातचीत करें और दूसरों की बातों से आगाह करें, तो उन्होंने कहा, मैंने इस्लामी उसूलों और आदाब के मुताबिक़ क़ाबिले गुफ़्तगू मामला में उनसे अ़लैह़िदगी (तन्हाई) में बातचीत की है और उमरा व हुक्काम से बातचीत का सही त़रीक़ा यही है कि दीनी ख़ैरख़्वाही और हमदर्दी के जज़्बे के तह़त सूरतेह़ाल से आगाह करके नसीह़त की जाए, उन पर खुल्म खुल्ला नाशाइस्ता और नाज़ेबा अल्फ़ाज़ में तअ़न व तश्नीअ़ करना और कीचड़ उछालना तो फ़ित्ना का दरवाज़ा खोलना है, जिससे फ़ायदा की बजाये नुक़्सान होता है और एक अमीर सब लोगों से बेहतर नहीं हो जाता कि उसको नसीह़त व ख़ैरख़्वाही की ज़रूरत ही न रहे, बल्कि वह तो कुछ बार इस हदीस का भी मिस्दाक़ बन सकता है कि अम्र बिल्मअ़रूफ़ और नह्य अ़निल मुंकर (भलाइयों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना) उसका फ़र्ज़े मंसबी है, उसकी अदायगी की सूरत में हो सकता है कि वह दूसरों को नेकी का हुक्म दे और ख़ुद वह नेकी न कर सके, दूसरों को किसी बुराई से रोके, जबकि ख़ुद वह बुराई करता रहा हो, अक़्ताब, क़ुतुब की जमा है, अंतड़ियाँ जिस तरह नेकी का हुक्म देना नेक काम है इस तरह नेकी न करना, जबकि वह नेकी उसे करनी चाहिए, गुनाह है, इसी तरह जिस तरह़ बुराई से रोकना नेकी है, उसी तरह बुराई का इर्तिकाब करना जुर्म व गुनाह है, त़ाक़त व क़ुदरत की सूरत में अम्र बिल्मअ़रूफ़ और नह्य अ़निल मुंकर के लिए क़ुव्वत इस्तेमाल करना ज़रूरी है और यह बात उमरा व हुक्मरानों को ह़ासिल है और अगर त़ाक़त व क़ुव्वत का इस्तेमाल मुम्किन न हो, क्यों कि इख़्तियार व इक़्तिदार ह़ासिल नहीं है, तो फिर यह काम ज़ुबान के ज़रिये किया जाएगा और उ़लमा का यही फ़रीज़ा है और अगर ज़ुबान से यह काम मुम्किन न रहे, तो दिल में उसकी अदायगी के लिए कोई तदबीर और ह़ीला सोचना चाहिए जिसको काम में लाकर यह फ़रीज़ा अदा हो सके।

बाब 9 : अपने गुनाहों का पर्दा चाक करना या उनका इज़्हार करना नाजाइज़ है

(9) بَاب : النَّهْيِ عَنْ هَتْكِ الْإِنْسَانِ سِتْرَ نَفْسِهِ

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ حَدَّثَنِي وَقَالَ، الآخَرَانِ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَمِّهِ، قَالَ قَالَ سَالِمٌ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " كُلُّ أُمَّتِي مُعَافَاةٌ إِلاَّ الْمُجَاهِرِينَ وَإِنَّ مِنَ الإِجْهَارِ أَنْ يَعْمَلَ الْعَبْدُ بِاللَّيْلِ عَمَلاً ثُمَّ يُصْبِحُ قَدْ سَتَرَهُ رَبُّهُ فَيَقُولُ يَا فُلاَنُ قَدْ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا وَقَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ فَيَبِيتُ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللَّهِ عَنْهُ " . قَالَ زُهَيْرٌ " وَإِنَّ مِنَ الْهِجَارِ" .

(7485) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, मेंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना, 'मेरी तमाम उम्मत को माफ़ी मिल जाएगी, मगर उन लोगों को जो अपने गुनाहों को फ़ाश करते हैं, या खुल्लम खुल्ला गुनाह करते हैं और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने की ही यह शक्ल भी है कि बन्दा रात को एक गुनाह का काम करे, फिर सुबह को जबकि अल्लाह तआला ने उसके गुनाह पर पर्दा डाला (किसी को पता नहीं चलने दिया) है, वह किसी को कहता है, ऐ फ़लाँ! मैं शाम को यह यह काम कर चुका हूँ, हालाँकि रात भर अल्लाह ने उसकी पर्दापोशी की थी और सुबह को उसी (अल्लाह) ने जो उसकी पर्दापोशी की थी, उसको चाक कर दिया है, 'ज़ुहैर की रिवायत में इज्हार की जगह हिजार है, दोनों का मआनी खोलना, ज़ाहिर करना है, क्योंकि हुज्र जिससे हिजार है, का मआनी होता है, बदगोई या फ़ह्शगोई

सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, 6069.

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम होता है जो इंसान छुपकर और पोशीदा तौर पर गुनाह करता है उसके अंदर शर्मो हया बाक़ी है और वह उस काम को बुरा ही समझता है, इसलिए वह उस गुनाह से बाज़ आ सकता है, तौबा कर सकता है, लेकिन जो इंसान किसी गुनाह का ऐलानिया तौर पर इर्तिकाब करता है, इसका

मआनी यह है कि वह शर्मो ह्या से आरी है और गुनाह को गुनाह ही नहीं समझता, बल्कि ढिटाई से काम लेकर उसको यूँ करता है कि यह भी अच्छा काम है, या दूसरों की ग़ैरत को ललकारता है, या उनके जज़्बात का ख़ून करता है, इसलिए उस काम से बाज़ आना या तौबा करना मुम्किन नहीं रहता।

बाब 10 : छींक पर दुआ देना और जमाई (उबासी) का नापसंदीदा होना

(10) بَابُ : تَشْمِيْتِ الْعَاطِسِ وَكَرَاهَةِ التَّثَاؤبِ

(7486) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) के पास दो आदमियों को छींक आई तो आपने उनमें से एक को ख़ैरो बरकत की दुआ दी और दूसरे के लिए ख़ैरो बरकत की दुआ न की तो जिसको आपने दुआ न दी थी, उसने कहा, 'फ़लाँ को छींक आई तो आपने उसको दुआ दी और मुझे छींक आई तो आपने मुझे दुआ नहीं दी, आपने फ़र्माया, 'उसने अल्लाह की ह्म्द बयान की और तूने अल्लाह की ह्म्द बयान नहीं की (अल्ह्म्दु लिल्लाह नहीं कहा)।'

सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब : 6221, 6225; सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब : 5039; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल अदब : 2742; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अदब : 3713.

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، - وَهُوَ ابْنُ غِيَاثٍ - عَنْ سُلَيْمَانَ، التَّيْمِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ عَطَسَ عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم رَجُلاَنِ فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الآخَرَ فَقَالَ الَّذِي لَمْ يُشَمِّتْهُ عَطَسَ فُلاَنٌ فَشَمَّتَّهُ وَعَطَسْتُ أَنَا فَلَمْ تُشَمِّتْنِي . قَالَ " إِنَّ هَذَا حَمِدَ اللَّهَ وَإِنَّكَ لَمْ تَحْمَدِ اللَّهَ " .

फ़ायदा : छींक आने से दिमाग़ के फ़ुज़्लात ख़ारिज होते हैं, जिससे इंसान का दिमाग़ हल्का हो जाता है और उसका जिस्म राह्त व सुकून मह्सूस करता है, इसलिए उस पर अल्लाह की ह्म्द और उसका शुक्र बजा लाते हुए अल्ह्म्दु लिल्लाह! कहना चाहिए और सुनने वाले को उसकी ख़ैरो बरकत की दुआ देते हुए यर्हमुकल्लाह कहना चाहिए, अगर छींकने वाला अल्ह्म्दु लिल्लाह नहीं कहता तो उसको दुआए ख़ैर देना ज़रूरी नहीं है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ، - يَعْنِي الأَحْمَرَ - عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(7487) इमाम साहब को एक और उस्ताद ने यही हदीस सुनाई।

तख़रीज 7487 : इसकी तख़रीज हदीस 7411 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، - وَاللَّفْظُ لِزُهَيْرٍ - قَالاَ حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ مَالِكٍ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، قَالَ دَخَلْتُ عَلَى أَبِي مُوسَى وَهْوَ فِي بَيْتِ بِنْتِ الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ فَعَطَسْتُ فَلَمْ يُشَمِّتْنِي وَعَطَسَتْ فَشَمَّتَهَا فَرَجَعْتُ إِلَى أُمِّي فَأَخْبَرْتُهَا فَلَمَّا جَاءَهَا قَالَتْ عَطَسَ عِنْدَكَ ابْنِي فَلَمْ تُشَمِّتْهُ وَعَطَسَتْ فَشَمَّتَّهَا . فَقَالَ إِنَّ ابْنَكِ عَطَسَ فَلَمْ يَحْمَدِ اللَّهَ فَلَمْ أُشَمِّتْهُ وَعَطَسَتْ فَحَمِدَتِ اللَّهَ فَشَمَّتُّهَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَحَمِدَ اللَّهَ فَشَمِّتُوهُ فَإِنْ لَمْ يَحْمَدِ اللَّهَ فَلاَ تُشَمِّتُوهُ " .

(7488) हजरत अबू बुर्दा (रह.) बयान करते हैं, मैं (अपने वालिद) अबू मूसा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जबकि वह हज़रत फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास (रज़ि.) की बेटी के घर में थे, मुझे छींक आई तो उन्होंने मुझे दुआ न दी और उस औरत को छींक आई तो उसे दुआ दी, मैं वापिस अपनी माँ के पास आया तो उसे उस वाक़िया की ख़बर दी, तो जब वह मेरी माँ के पास आए, उसने कहा, आपके पास मेरे बेटे को छींक आई तो आपने उसे दुआ न दी और उस औरत को छींक आई, तो आपने उसे दुआ दी, तो उन्होंने जवाब दिया, तेरे बेटे को छींक आई, तो उसने अल्हम्दु लिल्लाह न कहा, इसलिए मैंने उसको दुआ न दी और उस औरत को छींक आई, तो उसने अल्हम्दु लिल्लाह कहा, तो मैंने भी उसे दुआ दी, मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को यह फ़र्माते सुना है, 'जब तुममें से किसी को छींक आए और वह अल्हम्दु लिल्लाह कहे, तो तुम भी उसे दुआ दो और अगर वह अल्लाह की हम्द बयान न करे तो तुम भी उसको दुआ न दो।

फ़ायदा : हजरत फ़ज़्ल (रज़ि.) की बेटी, उम्मे कुल्सूम, हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) की दूसरी बीवी थी और अबू बुर्दा की माँ की सौकन थी, इसलिए उसको गुस्सा आया और उसने सबब पूछा।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، عَنْ إِيَاسِ، بْنِ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ عَنْ أَبِيهِ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنِي إِيَاسُ بْنُ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ، أَنَّ أَبَاهُ، حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَعَطَسَ رَجُلٌ عِنْدَهُ فَقَالَ لَهُ " يَرْحَمُكَ اللَّهُ " . ثُمَّ عَطَسَ أُخْرَى فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " الرَّجُلُ مَزْكُومٌ " .

(7489) हजरत सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने नबी अकरम(ﷺ) से यह सुना, जबकि आपके पास एक आदमी को छींक आई, यर्हमुकल्लाह अल्लाह तुम पर रहम फ़र्माए, फिर उसको दोबारा छींक आई, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसके बारे में फ़र्माया, 'इस आदमी को जुकाम है।'

तख़रीज 7489 : सुनन अबूदाऊद, किताबुल अदब : 5037; जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल इस्तिअ्ज़ान : 2743; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अदब : 3714.

फ़ायदा : ज़ुकाम की वजह से छींकें आएँ तो एक बार दुआ काफ़ी है, आम हालात में आपने तीन बार दुआ दी है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، وَقُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ السَّعْدِيُّ، قَالُوا حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، - يَعْنُونَ ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنِ الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ " التَّثَاؤُبُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَكْظِمْ مَا اسْتَطَاعَ " .

(7490) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जमाई शैतानी चीज़ है, तो जब तुममें से किसी को जमाई आए, तो मक़्दूर भर(जहाँ तक हो सके) उसको रोके।

तख़रीज 7490 : जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुस़् स़लात : 270.

मुफ़रदातुल हदीस : फ़ल्यक्ज़िम : इसको रोके, कज़िम : रोकने को कहते हैं।

फ़ायदा : जमाई, बिस्यारख़ोरी या पुरख़ोरी और काहिली व सुस्ती की अलामत है, अगर उसको रोका न जाए, तो इंसान के मुँह की हैबत व शक्ल बदनुमा नज़र आती है और मुँह खुलने से उसमें मक्खी वग़ैरह दाख़िल हो जाती है, इसलिए उसको नापसंदीदा क़रार दिया गया है और उसे रोकने की ताकीद की गइ है, इसलिए शैतान को ख़ुश होने और हँसने का मौक़ा नहीं देना चाहिए, मुँह को बंद कर लेना चाहिए, या उस पर हाथ रख लेना चाहिए।

حَدَّثَنِي أَبُو غَسَّانَ الْمِسْمَعِيُّ، مَالِكُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنًا، لأَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ يُحَدِّثُ أَبِي عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا تَثَاوَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيُمْسِكْ بِيَدِهِ عَلَى فِيهِ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ " .

(7491) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब तुममें से किसी को जमाई आए, तो वह अपने मुँह पर हाथ रख दे, क्योंकि खुले मुँह में शैतान दाख़िल हो जाता है।'

तख़रीज 7491 : सुनन अबूदाऊद, किताबुल अदब : 5026, 5027.

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي، سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا تَثَاوَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيُمْسِكْ بِيَدِهِ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ " .

(7492) हजरत अबू सईद (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब तुममें से किसी को जमाई आए, तो वह अपने हाथ से उसको रोके, क्योंकि शैतान दाख़िल हो जाता है।'

इसकी तख़रीज हदीस 7416 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ " إِذَا تَثَاوَبَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلاَةِ فَلْيَكْظِمْ مَا اسْتَطَاعَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ " .

(7493) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जब तुममें से किसी को नमाज़ में जमाई आए, तो मक़्दूर भर उसको रोके, क्योंकि (मुँह में) शैतान दाख़िल हो जाता है।'

इसकी तखरीज हदीस 7416 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : आम हालात में जमाई आने पर, उसको रोकने की कोशिश करनी चाहिए, लेकिन नमाज़ की हालत में इसकी ताकीद ज़्यादा है।

حَدَّثَنَاهُ عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَوْ عَنِ ابْنِ أَبِي، سَعِيدٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمِثْلِ حَدِيثِ بِشْرٍ وَعَبْدِ الْعَزِيزِ .

(7494) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

इसकी तखरीज हदीस 7416 में गुज़र चुकी है।

Sherkhan
9825 696 131

बाब 11 : मुतफ़र्रिक़ अहादीस

(11) بَاب : فِىْ اَحَادِيثَ مُتَفَرِّقَةٍ

(7495) हजरत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया गया, जिन्नों को आग के शोले से और आदम (अ.) को उस चीज़ से पैदा किया गया जो तुम्हें बताई गई है, यानी मिट्टी से।'

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ ابْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " خُلِقَتِ الْمَلاَئِكَةُ مِنْ نُورٍ وَخُلِقَ الْجَانُّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ وَخُلِقَ آدَمُ مِمَّا وُصِفَ لَكُمْ " .

बाब 12 : चूहा और वह मस्ख़शुदा है

(12) بَابُ : فِي الْفَأرِوَأَنَّهُ مَسْخٌ

(7496) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'बनी इस्राईल का एक गिरोह गुम हो गया था, पता नहीं उसका क्या बना और मैं यही ख़याल करता हूँ, उनको मस्ख़ करके चूहा बना दिया गया, क्या तुम उसे देखते नहीं हो, जब उनके सामने ऊँटों का दूध रखा जाता है, तो वह उसे पीते नहीं हैं और जब उनके सामने बकरी का दूध रखा जाता है, तो पी जाते हैं?' हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं, मैंने यह हदीस कअ़ब (अहबार) को सुनाई, तो उन्होंने पूछा, क्या आपने बराहे रास्त रसूलुल्लाह(ﷺ) से

حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى الْعَنَزِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرُّزِّيُّ، جَمِيعًا عَنِ الثَّقَفِيِّ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ، سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " فُقِدَتْ أُمَّةٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ لاَ يُدْرَى مَا فَعَلَتْ وَلاَ أُرَاهَا إِلاَّ الْفَأْرَ أَلاَ تَرَوْنَهَا إِذَا وُضِعَ لَهَا أَلْبَانُ الإِبِلِ لَمْ تَشْرَبْهُ

وَإِذَا وُضِعَ لَهَا أَلْبَانُ الشَّاءِ شَرِبَتْهُ " . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَحَدَّثْتُ هَذَا الْحَدِيثَ كَعْبًا فَقَالَ آنْتَ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قُلْتُ نَعَمْ . قَالَ ذَلِكَ مِرَارًا . قُلْتُ أَأَقْرَأُ التَّوْرَاةَ قَالَ إِسْحَاقُ فِي رِوَايَتِهِ " لاَ نَدْرِي مَا فَعَلَتْ " .

सुनी है? मैंने कहा, हाँ! उन्होंने बार बार यही पूछा, तो मैंने कहा, क्या मैं तौरात पढ़ता हूँ?' यानी रसूलुल्लाह(ﷺ) के सिवा मेरे पास कोई और ज़रिय-ए-इल्म नहीं है, इस्हाक़ की रिवायत में ला यद्री की जगह ला नद्री है, हम नहीं जानते।

सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़ : 3305.

फ़ायदा : यह बात आपने उस वक़्त कही थी, जबकि आपको वह्य के ज़रिये यह नहीं बताया गया था कि मस्ख़शुदा हैवान की नस्ल व ज़ुर्रियत नहीं होती।

وَحَدَّثَنِي أَبُو كُرَيْبٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ " الْفَأْرَةُ مَسْخٌ وَآيَةُ ذَلِكَ أَنَّهُ يُوضَعُ بَيْنَ يَدَيْهَا لَبَنُ الْغَنَمِ فَتَشْرَبُهُ وَيُوضَعُ بَيْنَ يَدَيْهَا لَبَنُ الإِبِلِ فَلاَ تَذُوقُهُ " . فَقَالَ لَهُ كَعْبٌ أَسَمِعْتَ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ أَفَأُنْزِلَتْ عَلَىَّ التَّوْرَاةُ

(7497) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं, चूहिया मस्ख़शुदा जानदार है, उसकी अलामत यह है कि उसके सामने बकरियों का दूध रखा जाता है, तो यह उसे पी जाती है और उसके सामने ऊँट का दूध रखा जाता है, तो यह उसको मुँह ही नहीं लगाती, उसको चखती ही नहीं।' तो उनसे कअ़ब अहबार ने पूछा कि यह बात आपने रसूलुल्लाह(ﷺ) से बराहे रास्त सुनी है? अबू हुरैरा (रज़ि.) ने कहा तो क्या मुझ पर तौरात उतरी है? मैं तौरात से आगाह नहीं हूँ कि उससे कोई चीज़ बयान कर दूँ।'

(13) بَاب : لَا يُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ

बाब 13 : मोमिन एक बिल से दो बार नहीं डसा जाता

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ

(7498) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं, आपने फ़र्माया, 'मोमिन एक बिल (सूराख़) से दो

Sherkhan
9825 696 131

أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ " .

बार नहीं डसा जाता।'

तख़रीज 7498: सुनन अबूदाऊद, किताबुल अदब : 6133 सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन : 3982.

وَحَدَّثَنِيهِ أَبُو الطَّاهِرِ، وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى، قَالاَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، ح وَحَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي، ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ

(7499) यही रिवायत इमाम साहब अपने मुख़तलिफ़ उस्तादों से बयान करते हैं।

फ़ायदा : हदीस के अल्फ़ाज़ ख़बर पर हैं, लेकिन मआनी व मफ़्हूम के एतिबार से इर्शाद व हिदायत है कि मोमिन को होशियार बेदार और मोहतात होकर रहना चाहिए, ग़फ़्लत और बेख़बरी की ज़िन्दगी नहीं गुज़ारनी चाहिए कि ग़फ़्लत व बेख़बरी की बिना पर उसको बार बार धोखा दिया जा सके।

(14)
بَاب : الْمُؤْمِن أَمْرُهُ كُلُّهُ خَيْرٌ

बाब 14 :
मोमिन के लिए हर हाल में, हर मामले में ख़ैर (भलाई) है।

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ الأَزْدِيُّ، وَشَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، جَمِيعًا عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، - وَاللَّفْظُ لِشَيْبَانَ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ صُهَيْبٍ، قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " عَجَبًا لأَمْرِ الْمُؤْمِنِ إِنَّ أَمْرَهُ كُلَّهُ خَيْرٌ وَلَيْسَ ذَاكَ

(7500) हजरत सुहैब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मोमिन का मामला ताज्जुब खेज़ है, उसकी हर हालत, हर मामला खैर है, मोमिन के सिवा यह शर्फ़ किसी को हासिल नहीं है, अगर उसे मसर्रत व शादमानी हासिल होती है, वह शुक्र अदा करता है, जो उसके लिए ख़ैरो ख़ूबी का बाइस है और अगर उसे तंगी व तुर्शी लाहिक़

لأَحَدٍ إِلاَّ لِلْمُؤْمِنِ إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ وَإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ

होती है, सब्र करता है जो उसके लिए ख़ैर (अज्रो सवाब) का सबब बनता है।'

(15) بَاب : النَّهْيِ عَنِ الْمَدْحِ إِذَاكَانَ فِيهِ إِفْرَاطٌ وَخِيفَ مِنْهُ فِتْنَةٌ عَلَى الْمَمْدُوحِ

बाब 15 : मदह व तअ़रीफ़ में इफ़रात जबकि वह मम्दूह के लिए फ़ित्ना का बाइस और ख़तरा हो, मम्नूअ है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ مَدَحَ رَجُلٌ رَجُلاً عِنْدَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم - قَالَ - فَقَالَ " وَيْحَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ " . مِرَارًا " إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ مَادِحًا صَاحِبَهُ لاَ مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ أَحْسِبُ فُلاَنًا وَاللَّهُ حَسِيبُهُ وَلاَ أُزَكِّي عَلَى اللَّهِ أَحَدًا أَحْسِبُهُ إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذَاكَ كَذَا وَكَذَا " .

(7501) हजरत अबू बक्र (रज़ि.) बयान करते हैं, एक आदमी ने नबी अकरम(ﷺ) के पास दूसरे आदमी की तारीफ़ की, तो आपने फ़र्माया, 'तुम पर अफ़सोस! तूने अपने साथी की गर्दन तोड़ दी या काट दी, तूने अपने साथी की गर्द काट दी।' कई बार फ़र्माया, 'जब तुममें से किसी को अपने साथी की मदह की ज़रूरत पेश आ जाए (मदह के बग़ैर कोई चारा न रहे) तो वह यूँ कहे, 'मैं फ़लाँ को यूँ ख़याल करता हूँ, असल मुहासबा करने वाला तो अल्लाह ही है, मैं अल्लाह के सामने उसका तज़्किया व सफ़ाई नहीं दे रहा, मैं उसको यूँ ही समझता हूँ, अगर वह उसको इस तरह जानता हो।'

सहीह बुख़ारी, किताबुश्शहादात : 2662; किताबुल अदब : 6061, 6162; सुनन अबूदाऊद, किताबुल अदब : 4805; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अदब : 3744.

फ़ायदा : अगर कोई इंसान ख़ूबी और कमाल से मुत्तसिफ़ हो, या उसने कोई कारनामा सरअंजाम दिया हो, जिस पर उसकी हौसला अफ़ज़ाई की ज़रूरत हो, तो उसकी हौसला अफ़ज़ाई करनी चाहिए,

लेकिन उसमें ऐसा अंदाज़ और उस्लूब इख़्तियार नहीं करना चाहिए, जिसमें मुबालग़ा व मदह़ सराई हो, जिससे उसके अंदर अ़जबो गुरूर और घमण्ड पैदा हो जाए और वह अपनी मदह़ व तारीफ़ सुनने का आ़दी बन जाए, या दूसरों के कामों का क्रेडिट भी लेने लगे और यह तारीफ़ व तौसीफ़ भी अपने इल्म की ह़द तक होगी, क्योंकि अस़ल ह़क़ीक़त तो अल्लाह ही जानता है, हम तो किसी के ज़ाहिर ही को जान सकते हैं।

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَبَلَةَ بْنِ أَبِي رَوَّادٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا غُنْدَرٌ، قَالَ شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ عَبْدِ، الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم أَنَّهُ ذُكِرَ عِنْدَهُ رَجُلٌ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا مِنْ رَجُلٍ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَفْضَلُ مِنْهُ فِي كَذَا وَكَذَا . فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم " وَيْحَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ " . مِرَارًا يَقُولُ ذَلِكَ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " إِنْ كَانَ أَحَدُكُمْ مَادِحًا أَخَاهُ لاَ مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ أَحْسِبُ فُلاَنًا إِنْ كَانَ يُرَى أَنَّهُ كَذَلِكَ وَلاَ أُزَكِّي عَلَى اللَّهِ أَحَدًا " .

(7502) हजरत अबू बक्र (रज़ि.) नबी अकरम(ﷺ) से बयान करते हैं कि आपके सामने एक आदमी का ज़िक्र किया गया, तो एक आदमी कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! रसूलुल्लाह(ﷺ) के बाद फ़लाँ फ़लाँ सिफ़त में उससे बढ़कर कोई फ़र्द नहीं है, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुम पर अफ़सोस! तूने अपने साथी की गर्दन काट दी।' आपने कई बार यही बात कही, फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'अगर तुममें से किसी को ला महाला किसी की तारीफ़ करना हो, तो यूँ कहे, मैं फ़लाँ को यूँ ख़्याल करता हूँ, अगर वह वाक़ेई उसको उस तरह समझता हो और मैं अल्लाह के नज़दीक किसी की सफ़ाई नहीं देता कि वह अल्लाह के नज़दीक भी ऐसा ही है।

तख़रीज 7502 : इसकी तख़रीज हदीस 7426 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِيهِ عَمْرٌو النَّاقِدُ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، ح وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّارٍ، كِلاَهُمَا عَنْ شُعْبَةَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . نَحْوَ حَدِيثِ يَزِيدَ بْنِ زُرَيْعٍ وَلَيْسَ فِي حَدِيثِهِمَا

(7503) इमाम साहब अपने दो और उस्तादों से यही रिवायत बयान करते हैं, लेकिन उसमें यह लफ़्ज़ नहीं है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के बाद, उससे कोई शख़्स बढ़ा हुआ नहीं है।

فَقَالَ رَجُلٌ مَا مِنْ رَجُلٍ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَفْضَلُ مِنْهُ .

तख़रीज 7503 : इसकी तख़रीज हदीस 7426 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي أَبُو جَعْفَرٍ، مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّاءَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ، عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ سَمِعَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم رَجُلاً يُثْنِي عَلَى رَجُلٍ وَيُطْرِيهِ فِي الْمِدْحَةِ فَقَالَ " لَقَدْ أَهْلَكْتُمْ أَوْ قَطَعْتُمْ ظَهْرَ الرَّجُلِ " .

(7504) हजरत अबू मूसा (रज़ि) बयान करते हैं, नबी अकरम(ﷺ) ने सुना कि एक आदमी दूसरे आदमी की तारीफ़ कर रहा है, और तारीफ़ में भी उसको ह़द से बढ़ा रहा है, तो आपने फ़र्माया, 'तुमने हलाक कर डाला या यह कि उस आदमी की पुश्त काट डाली।
सहीह बुख़ारी, किताबुश्शहादात : 2663; किताबुल अदब : 6060.

मुफ़रदातुल ह़दीस : (1) युत्रीहः तारीफ़ में मुबालग़ा करना (2) अल मिद्ह़ा : मदह़ व तारीफ़।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، جَمِيعًا عَنِ ابْنِ مَهْدِيٍّ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ حَبِيبٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، قَالَ قَامَ رَجُلٌ يُثْنِي عَلَى أَمِيرٍ مِنَ الأُمَرَاءِ فَجَعَلَ الْمِقْدَادُ يَحْثِي عَلَيْهِ التُّرَابَ وَقَالَ أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ نَحْثِيَ فِي وُجُوهِ الْمَدَّاحِينَ التُّرَابَ .

(7505) हजरत अबू मअ़मर (रह.) बयान करते हैं, एक आदमी खड़ा होकर उमरा, गवर्नरों में से किसी अमीर गवर्नर की तारीफ़ कर रहा था, तो ह़ज़रत मिक़्दाद (रज़ि.) उस पर मिट्टी फेंकने लगे और कहा, हमें रसूलुल्लाह(ﷺ) ने हुक्म दिया है कि हम तारीफ़ में मुबालग़ा करने वालों के चेहरों पर मिट्टी डालें।
जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद : 2393; सुनन इब्ने माजा, किताबुल अदब : 3742.

फ़ायदा : कुछ हजरात ने सहाबिये रसूल की तरह, इस ह़दीस को ज़ाहिरी लग़वी मआ़नी पर मह़मूल किया है कि तमल्लुक़ व चापलूसी करने वाले पेशावर क़सीदाख़ानों के चेहरों पर ह़क़ीक़तन मिट्टी डालनी चाहिए, लेकिन अक्सर सलफ़ के नज़दीक यह उसको नाकाम व नामुराद करने से किनाया है कि उसकी ह़ौसला अफ़ज़ाई नहीं करनी चाहिए और इस मक़्सद और ग़र्ज़ को पूरा नहीं करना चाहिए, मम्दूह़ (जिसकी तारीफ़ हो रही है उसको) को किसी फ़ख़्रो घमण्ड और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला नहीं

होना चाहिए और न उसकी बात को अहमियत व वज़न देना चाहिए, अगर वह कुछ लेने के लिए ऐसे कर रहा है, तो उसे महरूम करना चाहिए।

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ الْحَارِثِ، أَنَّ رَجُلاً، جَعَلَ يَمْدَحُ عُثْمَانَ فَعَمِدَ الْمِقْدَادُ فَجَثَا عَلَى رُكْبَتَيْهِ - وَكَانَ رَجُلاً ضَخْمًا - فَجَعَلَ يَحْثُو فِي وَجْهِهِ الْحَصْبَاءَ فَقَالَ لَهُ عُثْمَانُ مَا شَأْنُكَ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " إِذَا رَأَيْتُمُ الْمَدَّاحِينَ فَاحْثُوا فِي وُجُوهِهِمُ التُّرَابَ " .

(7506) हम्माम बिन हारिस (रह.) बयान करते हैं कि एक आदमी हज़रत उस्मान (रज़ि.) (के सामने) मदह करने लगा, तो हज़रत मिक़्दाद मुतवज्जह हुए और अपने घुटनों के बल बैठ गए, क्योंकि वह एक भारी भरकम आदमी थे और उसके चेहरे पर कंकरियाँ फेंकने लगे, तो हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने पूछा, तुम्हें क्या हुआ? उन्होंने कहा, बिला शुब्हा रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया है, 'जब तुम तारीफ़ में मुबालग़ा करने वालों को देखो तो उनके चेहरों पर मिट्टी डालो।'

तख़रीज 7506 : सुनन अबूदाऊद, किताब कराहियतुत्तमादोह : 4804.

وَحَدَّثَنَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مَنْصُورٍ، ح وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا الأَشْجَعِيُّ، عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُبَيْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنِ الأَعْمَشِ، وَمَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنِ الْمِقْدَادِ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِمِثْلِهِ .

(7507) इमाम साहब यही रिवायत अपने मुख़्तलिफ़ उस्तादों से बयान करते हैं।

तख़रीज 7507 : इसकी तखरीज हदीस 7431 में गुज़र चुकी है।

बाब 16 : चीज़ बड़े को देना (जबकि वह नया फल न हो)

(16) بَابُ : مُنَاوَلَةِ الأَكْبَرِ

حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا صَخْرٌ، - يَعْنِي ابْنَ جُوَيْرِيَةَ - عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " أَرَانِي فِي الْمَنَامِ أَتَسَوَّكُ بِسِوَاكٍ فَجَذَبَنِي رَجُلاَنِ أَحَدُهُمَا أَكْبَرُ مِنَ الآخَرِ فَنَاوَلْتُ السِّوَاكَ الأَصْغَرَ مِنْهُمَا فَقِيلَ لِي كَبِّرْ ‏.‏ فَدَفَعْتُهُ إِلَى الأَكْبَرِ ‏"‏ ‏.‏

(7508) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मैंने अपने आपको ख़्वाब में मिस्वाक करते देखा तो मुझे दो आदमियों ने खींचा, (मिस्वाक लेने के लिए) चुनाँचे मैंने मिस्वाक दोनों में से छोटे को दे दी, तो मुझे कहा गया, बड़े को दो, तो मैंने उसे बड़े के हवाले कर दिया।'

इसकी तख़रीज हदीस 5892 में गुज़र चुकी है।

बाब 17 : हदीस के बयान में तह्क़ीक़ से काम लेना और इल्म रखने का हुक्म

(17) بَاب : التَّثَبُّتِ فِى الْحَدِيثِ وَحُكْمِ كِتَابَةِ الْعِلْمِ

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، حَدَّثَنَا بِهِ، سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ كَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُحَدِّثُ وَيَقُولُ اسْمَعِي يَا رَبَّةَ الْحُجْرَةِ اسْمَعِي يَا رَبَّةَ الْحُجْرَةِ ‏.‏ وَعَائِشَةُ تُصَلِّي فَلَمَّا قَضَتْ صَلاَتَهَا قَالَتْ لِعُرْوَةَ أَلاَ تَسْمَعُ إِلَى هَذَا وَمَقَالَتِهِ آنِفًا إِنَّمَا كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُحَدِّثُ حَدِيثًا لَوْ عَدَّهُ الْعَادُّ لأَحْصَاهُ ‏.‏

(7509) हजरत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हुए कह रहे थे, ऐ हुज्रा की मालिका! ऐ हुज्रा की मालिका! सुन लीजिए, सुन लीजिए और हजरत आइशा (रज़ि.) नमाज़ पढ़ रही थीं, जब वह अपनी नमाज़ पूरी कर चुकीं, तो हज़रत उर्वा (रह.) से कहा, तुमने अभी उसकी आवाज़ और उसके क़ौल को सुना, नबी अकरम(ﷺ) तो बस इस तरह बात करते थे कि अगर कोई शुमार करने वाला, उस (कलिमात) को गिनना चाहता तो गिन सकता था।'

फ़ायदा : इल्मी बातचीत, ठहर ठहरकर धीरे धीरे करनी चाहिए, ताकि समझना आसान हो।

(7510) हजरत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'मेरी बातें न लिखो और जिसने क़ुरआन के अलावा मुझसे कुछ सीखा है तो उसे मिटा दे और मुझसे बयान करो, मेरी हदीसें सुनाओ, उसमें कोई तंगी नहीं है और जिसने मुझ पर झूठ बोला, मेरी तरफ़ अपनी तरफ़ से कोई बात मंसूब की, हम्माम कहते हैं, मेरे ख़याल में आपने जान बूझकर का लफ़्ज़ कहा, तो वह अपना ठिकाना जहन्नम बना ले।

जामेअ़ तिर्मिज़ी, किताबुल इल्म : 2665.

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ تَكْتُبُوا عَنِّي وَمَنْ كَتَبَ عَنِّي غَيْرَ الْقُرْآنِ فَلْيَمْحُهُ وَحَدِّثُوا عَنِّي وَلاَ حَرَجَ وَمَنْ كَذَبَ عَلَىَّ - قَالَ هَمَّامٌ أَحْسِبُهُ قَالَ - مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ " .

फ़ायदा : हदीस को लिखने की मुमानिअ़त इस सूरत में थी, जबकि क़ुरआनो हदीस को यक्जा लिखा जा रहा था और दोनों के बाहमी इख़्तिलात़ और आमेज़िश का ख़तरा था, या यह हुक्म उस वक़्त था, जब किताबत के अस्बाब और वसाइल की क़िल्लत थी और क़ुरआन और हदीस दोनों को लिखना दिक़्क़त और परेशानी का बाइस था, क्योंकि लिखने वाले (कातिब) और काग़ज़ आ़म न थे, नीज़ लिखने की मुमानिअ़त इसलिए भी थी कि अ़रबों का ह़ाफ़िज़ा बहुत तेज़ था और सब चीज़ों को ज़ुबानी याद रखते थे, इसलिए उनको याद रखने का हुक्म दिया, ताकि क़ुव्वते हाफ़िज़ा अ़दमे इस्तेमाल की वजह से ज़ाये न हो जाए, इसलिए आपने अह़ादीस बयान करने की तल्क़ीन फ़र्माई कि ह़द्दिसू मेरी बातें बयान करो।

बाब 18 : अस्ह़ाबे उख़दूद, जादूगर, राहिब और नौजवान का वाक़िया

(18)بَاب : قِصَّةِ أَصْحَابِ الأُخْدُوْدِ

(7511) हजरत सुहैब (रज़ि.) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'तुमसे पहले लोगों में एक बादशाह था और उसका एक जादूगर था, तो जब वह बूढ़ा हो गया, उसने बादशाह को कहा, मैं बूढ़ा हो चुका हूँ इसलिए आप मेरे पास

حَدَّثَنَا هَدَّابُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ، أَبِي لَيْلَى عَنْ صُهَيْبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى

الله عليه وسلم قَالَ " كَانَ مَلِكٌ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ وَكَانَ لَهُ سَاحِرٌ فَلَمَّا كَبِرَ قَالَ لِلْمَلِكِ إِنِّي قَدْ كَبِرْتُ فَابْعَثْ إِلَيَّ غُلاَمًا أُعَلِّمْهُ السِّحْرَ . فَبَعَثَ إِلَيْهِ غُلاَمًا يُعَلِّمُهُ فَكَانَ فِي طَرِيقِهِ إِذَا سَلَكَ رَاهِبٌ فَقَعَدَ إِلَيْهِ وَسَمِعَ كَلاَمَهُ فَأَعْجَبَهُ فَكَانَ إِذَا أَتَى السَّاحِرَ مَرَّ بِالرَّاهِبِ وَقَعَدَ إِلَيْهِ فَإِذَا أَتَى السَّاحِرَ ضَرَبَهُ فَشَكَا ذَلِكَ إِلَى الرَّاهِبِ فَقَالَ إِذَا خَشِيتَ السَّاحِرَ فَقُلْ حَبَسَنِي أَهْلِي . وَإِذَا خَشِيتَ أَهْلَكَ فَقُلْ حَبَسَنِي السَّاحِرُ . فَبَيْنَمَا هُوَ كَذَلِكَ إِذْ أَتَى عَلَى دَابَّةٍ عَظِيمَةٍ قَدْ حَبَسَتِ النَّاسَ فَقَالَ الْيَوْمَ أَعْلَمُ آلسَّاحِرُ أَفْضَلُ أَمِ الرَّاهِبُ أَفْضَلُ فَأَخَذَ حَجَرًا فَقَالَ اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ أَمْرُ الرَّاهِبِ أَحَبَّ إِلَيْكَ مِنْ أَمْرِ السَّاحِرِ فَاقْتُلْ هَذِهِ الدَّابَّةَ حَتَّى يَمْضِيَ النَّاسُ . فَرَمَاهَا فَقَتَلَهَا وَمَضَى النَّاسُ فَأَتَى الرَّاهِبَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ لَهُ الرَّاهِبُ أَىْ بُنَىَّ أَنْتَ الْيَوْمَ أَفْضَلُ مِنِّي . قَدْ بَلَغَ مِنْ أَمْرِكَ مَا أَرَى

कोई नौजवान भेजें जिसको मैं जादू सिखा दूँ, चुनाँचे उसने उसके पास एक लड़का भेजा, ताकि वह उसे जादू सिखा दे और जिस रास्ते पर चलकर वह जाता था, उसमें एक राहिब था, लड़का उसके पास बैठ गया, उसकी बातें सुनीं, जो उसे बहुत पसंद आईं, चुनाँचे जब वह जादूगर के पास जाता, राहिब के पास से गुज़रता और उसके पास बैठ जाता और जब वह ताख़ीर से जादूगर के पास पहुँचता, वह उसे सज़ा देता, जिसका उसने राहिब के पास शिकायत किया, तो उसने उसे (यह हीला बताया) कहा, जब तुमको जादूगर (की मार) का ख़ौफ़ हो, तो कह दिया करो, मुझे घरवालों ने रोक लिया था, (इसलिए देर हो गई) और जब घरवालों की बाज़पुर्स का अंदेशा हो तो कह दिया करो, मुझे जादूगर ने रोक लिया था, (इसलिए देर से आया हूँ) वह इसी तरह आता जाता रहा कि इस अस्ना (बीच) में वह एक बहुत बड़े जानवर (शेर) के पास पहुँचा, जिसने लोगों को रोक रखा था (लोग उससे डरकर खड़े थे) तो उसने दिल में कहा, आज मैं यह जानने की कोशिश करता हूँ कि जादूगर अफ़ज़ल है, या राहिब अफ़ज़ल है? उसने एक पत्थर लिया और कहा, ऐ अल्लाह! अगर राहिब का मामला और काम तेरे नज़दीक जादूगर के अमल व वतीरा से ज़्यादा महबूब है, तो इस जानवर (शेर) को मार डाल ताकि लोग गुज़र जाएँ यह कहकर उसको पत्थर मारा उसने उसे क़त्ल कर दिया और लोग गुज़र गए, उसके बाद वह राहिब के पास आया और उसे उस वाक़िया की ख़बर दी, तो राहिब ने उसे कहा, ऐ

وَإِنَّكَ سَتُبْتَلَى فَإِنِ ابْتُلِيتَ فَلاَ تَدُلَّ عَلَيَّ . وَكَانَ الْغُلاَمُ يُبْرِئُ الأَكْمَهَ وَالأَبْرَصَ وَيُدَاوِي النَّاسَ مِنْ سَائِرِ الأَدْوَاءِ فَسَمِعَ جَلِيسٌ لِلْمَلِكِ كَانَ قَدْ عَمِيَ فَأَتَاهُ بِهَدَايَا كَثِيرَةٍ فَقَالَ مَا هَا هُنَا لَكَ أَجْمَعُ إِنْ أَنْتَ شَفَيْتَنِي فَقَالَ إِنِّي لاَ أَشْفِي أَحَدًا إِنَّمَا يَشْفِي اللَّهُ فَإِنْ أَنْتَ آمَنْتَ بِاللَّهِ دَعَوْتُ اللَّهَ فَشَفَاكَ . فَآمَنَ بِاللَّهِ فَشَفَاهُ اللَّهُ فَأَتَى الْمَلِكَ فَجَلَسَ إِلَيْهِ كَمَا كَانَ يَجْلِسُ فَقَالَ لَهُ الْمَلِكُ مَنْ رَدَّ عَلَيْكَ بَصَرَكَ قَالَ رَبِّي . قَالَ وَلَكَ رَبٌّ غَيْرِي قَالَ رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ . فَأَخَذَهُ فَلَمْ يَزَلْ يُعَذِّبُهُ حَتَّى دَلَّ عَلَى الْغُلاَمِ فَجِيءَ بِالْغُلاَمِ فَقَالَ لَهُ الْمَلِكُ أَىْ بُنَىَّ قَدْ بَلَغَ مِنْ سِحْرِكَ مَا تُبْرِئُ الأَكْمَهَ وَالأَبْرَصَ وَتَفْعَلُ وَتَفْعَلُ . فَقَالَ إِنِّي لاَ أَشْفِي أَحَدًا إِنَّمَا يَشْفِي اللَّهُ . فَأَخَذَهُ فَلَمْ يَزَلْ يُعَذِّبُهُ حَتَّى دَلَّ عَلَى الرَّاهِبِ فَجِيءَ بِالرَّاهِبِ فَقِيلَ لَهُ ارْجِعْ عَنْ دِينِكَ . فَأَبَى فَدَعَا بِالْمِئْشَارِ فَوَضَعَ الْمِئْشَارَ فِي

मेरे बेटे! अब तुम मुझसे अफ़ज़ल हो तेरा मामला इस हद तक पहुँच गया है, जो मैं देख रहा हूँ और तुम्हें जल्द ही आज़माया जाएगा, मसाइब में गिरफ़्तार होंगे, तो अगर तुम मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाओ, तो मेरे बारे में किसी को न बताना, (कि मैंने तुम्हें तालीम दी है) और नौजवान, मादरज़ाद अंधे और बर्सवाले (कोढ़ी) को तन्दुरुस्त करता था और लोगों की हर क़िस्म की बीमारियों का इलाज करता था, बादशाह के एक हमनशीन ने भी सुना, जो अंधा हो चुका था, वह उसके पास बहुत सारे तोहफ़े तहाइफ़ लेकर हाजिर हुआ और कहा, यह जो कुछ भी है तेरा होगा, अगर तुम मुझे तन्दुरुस्त कर दो। नौजवान ने कहा, मैं किसी को शिफ़ा नहीं बख़्श सकता, शिफ़ा तो सिर्फ़ अल्लाह ही देता है, तो अगर तुम अल्लाह पर ईमान ले आओ, मैं अल्लाह से दुआ करूँगा, वह तुम्हें शिफ़ा दे देगा, तो वह अल्लाह पर ईमान ले आया, अल्लाह ने उसे सेहत बख़्श दी, चुनाँचे वह बादशाह के दरबार में आया और जैसे पहले बैठा था, उस तरह उसके पास बैठ गया, तो बादशाह ने उसे पूछा, तेरी नज़र तुझे किसने लौटा दी? उसने जवाब दिया, मेरे रब ने, बादशाह ने कहा, तेरा मेरे सिवा कोई और रब है? उसने कहा, मेरा रब और तेरा रब अल्लाह है। चुनाँचे बादशाह ने उसको गिरफ़्तार कर लिया और उसे मुसलसल तक्लीफ़ें देता रहा, यहाँ तक कि उसने नौजवान के बारे में बता दिया, चुनाँचे नौजवान को लाया गया, बादशाह ने उससे पूछा, ऐ बेटे! तेरा जादू इस हद तक तरक़्क़ी कर गया है कि तू मादरज़ाद अंधे और कोढ़ी को

مفْرِقِ رَأْسِهِ فَشَقَّهُ حَتَّى وَقَعَ شِقَّاهُ ثُمَّ جِيءَ بِجَلِيسِ الْمَلِكِ فَقِيلَ لَهُ ارْجِعْ عَنْ دِينِكَ . فَأَبَى فَوَضَعَ الْمِئْشَارَ فِي مَفْرِقِ رَأْسِهِ فَشَقَّهُ بِهِ حَتَّى وَقَعَ شِقَّاهُ ثُمَّ جِيءَ بِالْغُلَامِ فَقِيلَ لَهُ ارْجِعْ عَنْ دِينِكَ . فَأَبَى فَدَفَعَهُ إِلَى نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ اذْهَبُوا بِهِ إِلَى جَبَلِ كَذَا وَكَذَا فَاصْعَدُوا بِهِ الْجَبَلَ فَإِذَا بَلَغْتُمْ ذُرْوَتَهُ فَإِنْ رَجَعَ عَنْ دِينِهِ وَإِلاَّ فَاطْرَحُوهُ فَذَهَبُوا بِهِ فَصَعِدُوا بِهِ الْجَبَلَ فَقَالَ اللَّهُمَّ اكْفِنِيهِمْ بِمَا شِئْتَ . فَرَجَفَ بِهِمُ الْجَبَلُ فَسَقَطُوا وَجَاءَ يَمْشِي إِلَى الْمَلِكِ فَقَالَ لَهُ الْمَلِكُ مَا فَعَلَ أَصْحَابُكَ قَالَ كَفَانِيهِمُ اللَّهُ . فَدَفَعَهُ إِلَى نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ اذْهَبُوا بِهِ فَاحْمِلُوهُ فِي قُرْقُورٍ فَتَوَسَّطُوا بِهِ الْبَحْرَ فَإِنْ رَجَعَ عَنْ دِينِهِ وَإِلاَّ فَاقْذِفُوهُ . فَذَهَبُوا بِهِ فَقَالَ اللَّهُمَّ اكْفِنِيهِمْ بِمَا شِئْتَ . فَانْكَفَأَتْ بِهِمُ السَّفِينَةُ فَغَرِقُوا وَجَاءَ يَمْشِي إِلَى الْمَلِكِ فَقَالَ لَهُ الْمَلِكُ مَا فَعَلَ أَصْحَابُكَ قَالَ كَفَانِيهِمُ اللَّهُ

शिफ़ा बख़्शता है और यह यह काम करते हो, नौजवान ने कहा, मैं किसी को शिफ़ा नहीं देता, शिफ़ा तो बस अल्लाह देता है, तो उसने उसको भी गिरफ़्तार कर लिया और उसे मुसलसल अज़िय्यत देता रहा, यहाँ तक कि उसने राहिब का पता बता दिया। चुनाँचे राहिब को लाया गया और उसे कहा गया, अपने दीन से बाज़ आ जाओ, उसने इंकार कर दिया, तो एक आरा लाया गया और बादशाह ने आरा उसके सिर की चोटी पर रख दिया और उसको चीर दिया, वह दो टुकड़े होकर गिर पड़ा, फिर बादशाह के हमनशीं (साथी) को लाया गया और उसे कहा गया, अपने दीन से लौट आओ, तो उसने भी इंकार कर दिया, तो उसके सिर की चोटी पर आरा रखा और उससे चीर दिया, यहाँ तक कि वह दो टुकड़े होकर गिर पड़ा, फिर नौजवान को लाया गया, उसे भी कहा गया, अपने दीन से फिर जा, उसने भी इंकार कर दिया। चुनाँचे बादशह ने उसे अपने चंद साथियों के हवाले कर दिया और कहा, उसे फ़लाँ पहाड़ पर ले जाओ, उसे पहाड़ पर चढ़ाओ, जब तुम पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाओ तो अगर यह अपने दीन से बाज़ आए (तो ठीक है) वरना उसे नीचे फेंक दो, तो वह उसे ले गए और उसको लेकर पहाड़ पर चढ़ गए, तो नौजवान ने दुआ की, ऐ अल्लाह! तू जैसे चाहे मेरे लिए इनसे काफ़ी हो जा, (मुझे इनसे बचा ले) पहाड़ ने उनको हरकत देकर गिरा दिया और नौजवान चलकर बादशाह के पास आ गया, बादशाह ने उससे पूछा, तेरे साथियों का क्या बना? उसने जवाब दिया, अल्लाह ने

فَقَالَ لِلْمَلِكِ إِنَّكَ لَسْتَ بِقَاتِلِي حَتَّى تَفْعَلَ مَا آمُرُكَ بِهِ . قَالَ وَمَا هُوَ قَالَ تَجْمَعُ النَّاسَ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ وَتَصْلُبُنِي عَلَى جِذْعٍ ثُمَّ خُذْ سَهْمًا مِنْ كِنَانَتِي ثُمَّ ضَعِ السَّهْمَ فِي كَبِدِ الْقَوْسِ ثُمَّ قُلْ بِاسْمِ اللَّهِ رَبِّ الْغُلاَمِ . ثُمَّ ارْمِنِي فَإِنَّكَ إِذَا فَعَلْتَ ذَلِكَ قَتَلْتَنِي . فَجَمَعَ النَّاسَ فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ وَصَلَبَهُ عَلَى جِذْعٍ ثُمَّ أَخَذَ سَهْمًا مِنْ كِنَانَتِهِ ثُمَّ وَضَعَ السَّهْمَ فِي كَبِدِ الْقَوْسِ ثُمَّ قَالَ بِاسْمِ اللَّهِ رَبِّ الْغُلاَمِ . ثُمَّ رَمَاهُ فَوَقَعَ السَّهْمُ فِي صُدْغِهِ فَوَضَعَ يَدَهُ فِي صُدْغِهِ فِي مَوْضِعِ السَّهْمِ فَمَاتَ فَقَالَ النَّاسُ آمَنَّا بِرَبِّ الْغُلاَمِ آمَنَّا بِرَبِّ الْغُلاَمِ آمَنَّا بِرَبِّ الْغُلاَمِ . فَأُتِيَ الْمَلِكُ فَقِيلَ لَهُ أَرَأَيْتَ مَا كُنْتَ تَحْذَرُ قَدْ وَاللَّهِ نَزَلَ بِكَ حَذَرُكَ قَدْ آمَنَ النَّاسُ . فَأَمَرَ بِالأُخْدُودِ فِي أَفْوَاهِ السِّكَكِ فَخُدَّتْ وَأَضْرَمَ النِّيرَانَ وَقَالَ مَنْ لَمْ يَرْجِعْ عَنْ دِينِهِ فَأَحْمُوهُ فِيهَا . أَوْ قِيلَ لَهُ اقْتَحِمْ . فَفَعَلُوا حَتَّى

मुझे उनसे बचा लिया, तो उसने उसे अपने कुछ साथियों के सुपुर्द कर दिया और कहा, इसे ले जाओ और इसे एक डोंगे (छोटी कश्ती) में सवार करो और इसे समुन्द्र के बीच ले जाओ, अगर यह अपने दीन से लौट आए तो ठीक है वरना इसे समुन्द्र में फेंक दो। चुनाँचे वह उसे ले गए और उसने दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे लिए इनसे काफ़ी हो जा, जैसे तू चाहे, कश्ती उनको लेकर उलट गई, जिससे वह डूब गए और नौजवान चलकर बादशाह के पास आ गया, बादशाह ने उससे पूछा, तेरे साथियों का क्या बना? उसने कहा, अल्लाह मेरे लिए उनसे काफ़ी हो गया, फिर उसने बादशाह से कहा, तू मुझे उस वक़्त तक क़त्ल नहीं कर सकता, जब तक वह काम न करे, जो मैं तुम्हें बताने वाला हूँ। उसने कहा, वह क्या है? उसने कहा, तुम तमाम लोगों को एक मैदान में इकट्ठा करो और मुझे एक तने पर सूली चढ़ा दो, फिर मेरे तरकश से एक तीर लो, फिर तीर को कमान के नोक पर में रखकर कहो, अल्लाह के नाम से, जो इस नौजवान का रब है, फिर मुझ पर तीर चला दो, तो जब तुम यह काम कर लोगे, तो मुझे मार सकोगे, बादशाह ने तमाम लोगों को एक मैदान में जमा किया और ग़ुलाम को एक तने पर लटका दिया, फिर उसके तरकश से एक तीर लिया और तीर को कमान के नोक पर रखा, फिर कहा, अल्लाह के नाम से जो इस नौजवान का रब है, फिर उसे तीर मारा और तीर उसकी कनपटी पर लगा, तो लड़के ने अपना हाथ अपनी कनपटी पर तीर लगने की जगह पर रख लिया और मर गया, लोग कहने लगे, हम

جَاءَتِ امْرَأَةٌ وَمَعَهَا صَبِيٌّ لَهَا فَتَقَاعَسَتْ أَنْ تَقَعَ فِيهَا فَقَالَ لَهَا الْغُلَامُ يَا أُمَّهِ اصْبِرِي فَإِنَّكِ عَلَى الْحَقِّ " .

नौजवान के रब पर ईमान लाए हम नौजवान के रब पर ईमान लाए, हमने नौजवान के रब को मान लिया, बादशाह को आकर ख़बर दी गई कि देखिए, जिस बात का आपको ख़तरा या धड़का था, अल्लाह की क़सम! उस अंदेशा ने हक़ीक़त का रूप धार लिया, लोग ईमान ला चुके हैं, तो उसने गलियों के दहानों पर खाइयाँ (ख़ंदक़ें) खोदने का हुक्म दिया, उनको खोदा गया और आगें रोशन की गईं और कहा, जो अपने दीन से वापिस न आए तो उन्हें उनमें जला दो, या उसे कहा जाए, कूदो, छलाँग लगाओ, बादशाह के कारिन्दों ने ऐसा किया, यहाँ तक कि एक औरत आई और उसके साथ उसका बच्चा था, उसने उसमें गिरने से पसो पेश की (झिझकी) तो बच्चे ने उसे कहा, ऐ मेरी माँ! सब्र कर, साबित क़दम रह, क्योंकि तू हक़ पर है।'
जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुत्तफ़्सीर : 3340.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) तक़ाअसत : उसने पसो पेश किया, वह झिझकी। (2) मिअ्शार और मिन्शार : दोनों का मआन एक ही है यानी आरा है।

फ़ायदा : राहिब ने बच्चे को साहिर और घरवालों के मुवाख़िज़ा से बचने का जो ह़ीला बताया क़ाज़ी एयाज़ और इमाम क़ुर्तुबी ने उससे इस बात का जवाज़ निकाला है कि इंसान अल्लाह के दीन के हासिल करने और ईमान के तह़फ़्फ़ुज़ के लिए झूट बोल सकता है क्यांकि हुज़ूरे अकरम(ﷺ) ने इस काम पर तंक़ीद नहीं की लेकिन इमाम उबय ने एक तौरिया का जवाज़ निकाला है कि यहाँ अहल से मुराद राहिब है क्योंकि इंसान का ह़क़ीक़ी अहल वही है जो उसका ख़ैरख़्वाह और हमदर्द हो और ह़बसनी साहिर का मआनी यह है कि मुझे घर वापिस आने के लिए राहिब और साहिर दोनों के पास ठहरकर आना पड़ता है इसलिए राहिब के पास से साहिर के पास आता हूँ इसी तरह साहिर के पास रुकना ताख़ीर का बाइस बनता है।

अल्लाह तआला जब किसी के साथ ख़ैर और भलाई का इरादा फ़र्माता है तो उसके लिए अस्बाबे ख़ैर पैदा कर देता है और अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों के हाथों बवक़्ते ज़रूरत करामत का इज़्हार

फ़र्माता है और ऐसे ह्रालात में उनको आज़माइशों और मसाइब व मुश्किलात से वास्ता पड़ता है और ईमान जब दिल की गहराई में उतर जाता है, तो यह ऐसा नशा है जो मसाइब व आलाम (मुसीबतों) की तुर्शी से दूर या ज़ाइल नहीं होता और अल्लाह तआला जब चाहता है, इंसान की तमाम तदबीरें उसके उलट पड़ती हैं और वह जिन चीज़ों से डरता है, अल्लाह उन चीज़ों को उसके हाथों नमूदार फ़र्मा देता है और जब वह अपने बन्दों को बचाना चाहता है, तो मख़्फ़ी अस्बाब से काम लेता है, इसलिए एक मुसलमान बन्दे को हर क़िस्म के ह्रालात में साबित क़दम रहते हुए अल्लाह पर भरोसा और एतिमाद रखना चाहिए और उससे दुआ करनी चाहिए वह हर क़िस्म के ह्रालात में अपनी तौफ़ीक़ से नवाज़े।

बाब 19 : हजरत जाबिर (रज़ि.) की लम्बी हदीस और ह्रजरत अबुल यसर का वाक़िया

(19)بَاب : قِصَّةِ أَبِى الْيَسَرِ حَدِيْثِ جَابِرِ الطَّوِيْلُ

(7512) उबादा बिन वलीद (रह्.) बिन सामित बयान करते हैं, मैं और मेरे वालिद (वलीद) उस अंसारी ख़ानदान के पास तलबे इल्म के लिए गए, ताकि उनकी मौत से पहले उन लोगों से इल्म ह्रासिल कर लें, चुनाँचे हमारी सबसे पहले सहाबिये रसूल ह्ज़रत अबुल यसर (रज़ि.) से मुलाक़ात हुई, उनके साथ उनका गुलाम भी था, जिसके पास काग़ज़ों का एक गट्ठा था, अबुल यसर एक यमनी चादर और एक मआफ़िरी कपड़ा पहने हुए थे और उनके गुलाम ने भी एक यमनी और मआफ़रनी कपड़ा ओढ़ा हुआ था, तो मेरे वालिद ने उनसे कहा, ऐ चचाजान! मैं आपके चेहरे पर नाराज़गी के आसार देखता हूँ, उन्होंने कहा हाँ! बनू ह्राम के फ़लाँ बिन फ़लाँ के ज़िम्मे मेरा कुछ माल था, तो मैं उनके घर गया और सलाम कहकर पूछा, वह इधर है? घर वालों ने कहा, नहीं! इतने में उसका

حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ، - وَتَقَارَبَا فِي لَفْظِ الْحَدِيثِ - وَالسِّيَاقُ لِهَارُونَ قَالاَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ مُجَاهِدٍ أَبِي حَزْرَةَ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الْوَلِيدِ بْنِ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ خَرَجْتُ أَنَا وَأَبِي نَطْلُبُ الْعِلْمَ فِي هَذَا الْحَيِّ مِنَ الأَنْصَارِ قَبْلَ أَنْ يَهْلِكُوا فَكَانَ أَوَّلُ مَنْ لَقِينَا أَبَا الْيَسَرِ صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَمَعَهُ غُلاَمٌ لَهُ مَعَهُ ضِمَامَةٌ مِنْ صُحُفٍ وَعَلَى أَبِي الْيَسَرِ بُرْدَةٌ وَمَعَافِرِيٌّ وَعَلَى غُلاَمِهِ بُرْدَةٌ وَمَعَافِرِيٌّ فَقَالَ لَهُ أَبِي يَا

عَمِّ إِنِّي أَرَى فِي وَجْهِكَ سَفْعَةً مِنْ غَضَبٍ . قَالَ أَجَلْ كَانَ لِي عَلَى فُلاَنِ بْنِ فُلاَنٍ الْحَرَامِيِّ مَالٌ فَأَتَيْتُ أَهْلَهُ فَسَلَّمْتُ فَقُلْتُ ثَمَّ هُوَ قَالُوا لاَ . فَخَرَجَ عَلَىَّ ابْنٌ لَهُ جَفْرٌ فَقُلْتُ لَهُ أَيْنَ أَبُوكَ قَالَ سَمِعَ صَوْتَكَ فَدَخَلَ أَرِيكَةَ أُمِّي . فَقُلْتُ اخْرُجْ إِلَىَّ فَقَدْ عَلِمْتُ أَيْنَ أَنْتَ . فَخَرَجَ فَقُلْتُ مَا حَمَلَكَ عَلَى أَنِ اخْتَبَأْتَ مِنِّي قَالَ أَنَا وَاللَّهِ أُحَدِّثُكَ ثُمَّ لاَ أَكْذِبُكَ خَشِيتُ وَاللَّهِ أَنْ أُحَدِّثَكَ فَأَكْذِبَكَ وَأَنْ أَعِدَكَ فَأُخْلِفَكَ وَكُنْتَ صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَكُنْتُ وَاللَّهِ مُعْسِرًا . قَالَ قُلْتُ آللَّهِ . قَالَ اللَّهِ . قُلْتُ آللَّهِ . قَالَ اللَّهِ . قُلْتُ آللَّهِ . قَالَ اللَّهِ . قَالَ فَأَتَى بِصَحِيفَتِهِ فَمَحَاهَا بِيَدِهِ فَقَالَ إِنْ وَجَدْتَ قَضَاءً فَاقْضِنِي وَإِلاَّ أَنْتَ فِي حِلٍّ فَأَشْهَدُ بَصَرُ عَيْنَىَّ هَاتَيْنِ - وَوَضَعَ إِصْبَعَيْهِ عَلَى عَيْنَيْهِ - وَسَمْعُ أُذُنَىَّ هَاتَيْنِ وَوَعَاهُ قَلْبِي هَذَا - وَأَشَارَ إِلَى مَنَاطِ قَلْبِهِ - رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَقُولُ " مَنْ أَنْظَرَ

छोटा बच्चा मेरे पास आ गया, तो मैंने उससे कहा, तेरे वालिद कहाँ है? उसने कहा, उसने आपकी आवाज़ सुन ली है, इसलिए वह मेरी अम्मी की डोली (छप्परकट) में दाख़िल हो गया है, उस पर मैंने कहा, मेरे पास आ जाओ, मुझे पता चल चुका है कि तुम कहाँ हो, वह आ गया, तो मैंने कहा, तुझे मुझसे छुपने पर किस चीज़ ने आमादा किया है? उसने कहा, मैं अल्लाह की क़सम! आपको बताता हूँ और मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा, अल्लाह की क़सम! मुझे यह डर लाहिक़ हुआ कि मैं आपसे बात करूँगा और उसमें आपसे झूठ बोलूँगा और आपसे वादा करूँगा और उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी करूँगा, हालाँकि आप रसूलुल्लाह(ﷺ) के सहाबी हैं (जिनसे यह तर्ज़े अमल अपनाना मुनासिब नहीं है) और मैं अल्लाह की क़सम! तंगदस्त हूँ, अबुल यसर (रज़ि.) कहते हैं, मैंने कहा, क्या अल्लाह की क़सम! उसने कहा, अल्लाह की क़सम! मैंने कहा क्या अल्लाह की क़सम उसने कहा, अल्लाह की क़सम! मैंने कहा, क्या अल्लाह की क़सम उसने कहा अल्लाह की क़सम! वह अपने क़र्ज़ की दस्तावेज़ लाया मैंने अपने हाथ से उसे मिटाकर कहा, अगर तुझे अदायगी की क़ुदरत हासिल हो जाए, तो मुझे अदा कर देना, वरना तुम बरीउज़्ज़िम्मा हो, क्योंकि मैं गवाही देता हूँ, मेरी इन दो आँखों ने देखा और उन्होंने अपनी दो उँगलियाँ अपनी दोनों आँखों पर रख लीं और मेरे इन दोनों कानों से सुना और उसे मेरे इस दिल ने याद रखा और उन्होंने दिल की रग पर हाथ रख लिया,

مُعْسِرًا أَوْ وَضَعَ عَنْهُ أَظَلَّهُ اللَّهُ فِي ظِلِّهِ " .

रसूलुल्लाह(ﷺ) फ़र्मा रहे थे, 'जिसने तंगदस्त को मोहलत दी, या उसको छोड़ दिया, अल्लाह उसको अपने साये में जगह देगा।'

सुनन इब्ने माजा, किताबुस्सदक़ात : 2419.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) ज़िमामा या इज़्मामा : गट्ठा, मज्मूआ। (2) मआफ़िरी, मआफ़िर नामी बस्ती में बनने वाले कपड़े। (3) सुफ़आ : निशान, तब्दीली। (4) जफ़र : छोटा बच्चा, अपने तौर पर खाने पीने वाला, पाँच साला, नाबालिग़। (5) अरीका : डोली की चारपाई, मस्हरी। (6) मनात़ : रग।

फ़ायदा : बच्चा भोला भाला मासूम होता है, इसलिए अगर उसको सबक़ न पढ़ाया जाए तो वह सही सही बात कर देता है।

قَالَ فَقُلْتُ لَهُ أَنَا يَا عَمِّ لَوْ أَنَّكَ أَخَذْتَ بُرْدَةَ غُلاَمِكَ وَأَعْطَيْتَهُ مَعَافِرِيَّكَ وَأَخَذْتَ مَعَافِرِيَّهُ وَأَعْطَيْتَهُ بُرْدَتَكَ فَكَانَتْ عَلَيْكَ حُلَّةٌ وَعَلَيْهِ حُلَّةٌ . فَمَسَحَ رَأْسِي وَقَالَ اللَّهُمَّ بَارِكْ فِيهِ يَا ابْنَ أَخِي بَصَرُ عَيْنَىَّ هَاتَيْنِ وَسَمْعُ أُذُنَىَّ هَاتَيْنِ وَوَعَاهُ قَلْبِي هَذَا - وَأَشَارَ إِلَى مَنَاطِ قَلْبِهِ - رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَهُوَ يَقُولُ " أَطْعِمُوهُمْ مِمَّا تَأْكُلُونَ وَأَلْبِسُوهُمْ مِمَّا تَلْبَسُونَ " . وَكَانَ أَنْ أَعْطَيْتُهُ مِنْ مَتَاعِ الدُّنْيَا أَهْوَنَ عَلَىَّ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ مِنْ حَسَنَاتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ .

(7513) इबादा (रह.) बयान करते हैं, मैंने उनसे कहा, ऐ चचाजान! अगर आप अपने गुलाम की धारीदार चादर ले लें और उसे अपना मआफ़िरी कपड़ा दे दें, या आप उसका मआफ़िरी कपड़ा ले लें और अपनी धारीदार चादर उसे दे दें, तो आप पर भी जोड़ा होगा और उस पर जोड़ा (एक क़िस्म के कपड़े) होगा, तो उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, ऐ अल्लाह! इसको बरकत दे, ऐ भतीजे! मेरी इन दोनों आँखों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा और मेरे इन दोनों कानों ने सुना और मेरे इस दिल ने याद रखा और अपने दिल की रग की तरफ़ इशारा किया, आप फ़र्मा रहे थे, 'जो ख़ुद खाते हो, वही उन गुलामों को खिलाओ और जो ख़ुद पहनते हो, वही इनको पहनाओ।' और मेरे लिए यह आसान है कि मैं इसको दुनिया का सामान दूँ, बजाय इसके कि वह क़ियामत के दिन मेरी नेकियाँ ले जाए।'

तख़रीज 7513 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : हजरत अबुल यसर (रज़ि.) ने ग़ुलामों के बारे में आपके फ़र्मान को मसावात और बराबरी पर महमूल फ़र्माया है जबकि जुम्हूर के नज़दीक मज्मूई अहादीस की रोशनी में इससे मक़्सूद मसावात व हमदर्दी है, हर एतिबार से यक्सानियत मक़्सूद नहीं है, लेकिन आज हमारा अपने नौकरों, चाकरों और ग़ुलामों से क्या सुलूक है, क्या हमें भी यह एहसास है कि क़ियामत के दिन वह कहीं हमारे तर्ज़े अमल की वजह से हमारी नेकियाँ ही न ले जाएँ।

(7514) फिर हम बाप बेटे चले यहाँ तक कि हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि) के पास उनकी मस्जिद में पहुँच गए और वह एक कपड़े में उसको अपने गिर्द लपेटकर नमाज़ पढ़ रहे थे, तो मैं लोगों को फलाँगकर, उनके और क़िब्ला के बीच जा बैठा और मैं ने कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़र्माए, क्या आप एक कपड़े में नमाज़ पढ़ रहे हैं, जबकि आपकी ऊपर की चादर, आपके पहलू में मौजूद हैं? तो उन्होंने इस तरह मेरे सीने पर हाथ मारा, अपनी उँगलियों को खोल लिया और उनको कमान की शक्ल में कर लिया, कहा, मैंने चाहा, आप जैसा कम अक़्ल और नादान यानी नावाक़िफ़ मेरे पास आए और मुझे देखे, मैं क्या तरीक़ा इख़्तियार करता हूँ, फिर ख़ुद भी इस तरह करे, रसूलुल्लाह(ﷺ) हमारी इस मस्जिद में तशरीफ़ लाए और इब्ने ताब नामी खजूर के दरख़्त की छड़ी आपके हाथ में थी, आपने मस्जिद के क़िब्ले रुख़ में बलग़म को देखा और उसको छड़ी से खुरच दिया फिर आपने हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया, 'तुममें से कौन इस बात को पसंद करता है कि अल्लाह तआला उससे बेरुख़ी बरते?' क्योंकि आप मस्जिद के क़िब्ला रुख़ में बलग़म देखकर, उसको शाख़

ثُمَّ مَضَيْنَا حَتَّى أَتَيْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ فِي مَسْجِدِهِ وَهُوَ يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ مُشْتَمِلاً بِهِ فَتَخَطَّيْتُ الْقَوْمَ حَتَّى جَلَسْتُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ فَقُلْتُ يَرْحَمُكَ اللَّهُ أَتُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ وَرِدَاؤُكَ إِلَى جَنْبِكَ قَالَ فَقَالَ بِيَدِهِ فِي صَدْرِي هَكَذَا وَفَرَّقَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ وَقَوَّسَهَا أَرَدْتُ أَنْ يَدْخُلَ عَلَىَّ الأَحْمَقُ مِثْلُكَ فَيَرَانِي كَيْفَ أَصْنَعُ فَيَصْنَعُ مِثْلَهُ . أَتَانَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي مَسْجِدِنَا هَذَا وَفِي يَدِهِ عُرْجُونُ ابْنِ طَابٍ فَرَأَى فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ نُخَامَةً فَحَكَّهَا بِالْعُرْجُونِ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا فَقَالَ " أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يُعْرِضَ اللَّهُ عَنْهُ " . قَالَ فَخَشَعْنَا ثُمَّ قَالَ " أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يُعْرِضَ اللَّهُ عَنْهُ " . قَالَ فَخَشَعْنَا ثُمَّ قَالَ " أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يُعْرِضَ اللَّهُ عَنْهُ " . قُلْنَا لاَ أَيُّنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ

قَالَ " فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَامَ يُصَلِّي فَإِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قِبَلَ وَجْهِهِ فَلاَ يَبْصُقَنَّ قِبَلَ وَجْهِهِ وَلاَ عَنْ يَمِينِهِ وَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ تَحْتَ رِجْلِهِ الْيُسْرَى فَإِنْ عَجِلَتْ بِهِ بَادِرَةٌ فَلْيَقُلْ بِثَوْبِهِ هَكَذَا " . ثُمَّ طَوَى ثَوْبَهُ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ فَقَالَ " أَرُونِي عَبِيرًا " . فَقَامَ فَتًى مِنَ الْحَىِّ يَشْتَدُّ إِلَى أَهْلِهِ فَجَاءَ بِخَلُوقٍ فِي رَاحَتِهِ فَأَخَذَهُ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَجَعَلَهُ عَلَى رَأْسِ الْعُرْجُونِ ثُمَّ لَطَخَ بِهِ عَلَى أَثَرِ النُّخَامَةِ . فَقَالَ جَابِرٌ فَمِنْ هُنَاكَ جَعَلْتُمُ الْخَلُوقَ فِي مَسَاجِدِكُمْ .

से खुरच चुके थे।' तो हमने नज़रें झुका लीं, झुक गए, फिर आपने फ़र्माया, 'तुममें से कौन इस बात को पसंद करता है कि अल्लाह तआला उसकी तरफ़ से मुँह फेरे।' तो हम दब गए, नजरें नीची कर लीं, फिर आपने फ़र्माया, 'तुममें से कौन इस अ़मल को पसंद करता है कि अल्लाह तआला उससे ऐराज़ करे।' हमने अ़र्ज़ किया, हममें से कोई भी ऐसा नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़र्माया, 'तुम्हारा कोई एक जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा होता है तो अल्लाह तआला उसके सामने होता है (अपनी रहमत के साथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता है) इसलिए वह हर्गिज़ अपने सामने न थूके और न ही अपने दाएँ तरफ़ लेकिन अपने बाएँ क़दम के नीचे, बाएँ तरफ़ थूके, अगर अचानक और फ़ौरी आने वाली थूक उसको जल्दबाज़ी पर मजबूर करे, तो अपने कपड़े में इस तरह कर ले।' फिर आपने कपड़े के एक हिस्से को दूसरे हिस्से पर लपेटा और फ़र्माया, 'मुझे ख़ुश्बू दिखाओ, क़बीला का एक नौजवान उठा, दौड़कर अपने घर गया और अपनी हथेली में मख़्लूत ख़ुश्बू ले आया, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) वह ख़ुश्बू लेकर छड़ी के सिरे पर लगाई, फिर उसे बलग़म (खंगार) के निशान पर मल दिया, जाबिर (रज़ि.) कहते हैं, इस वजह से लोगों ने मस्जिदों में ख़ुश्बू इस्तेमाल करना शुरू कर दी है।

तख़रीज 7514 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

(7515) हजरत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं, हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-बुवात़ के लिए निकले और आप मजदी बिन अ़म्र जोहनी की तलाश में थे और एक ऊँट पर हम बारी बारी, पाँच, छः और सात बैठते थे, अपने ऊँट पर एक अंसारी आदमी की बारी आ गई, तो उसने उसे बिठाया और उस पर सवार हो गया, फिर उसे उठाया, तो उसने कुछ पसो पेश की, देर कर दी, तो उसने उसे कहा, अल्लाह तुझ पर लअ़नत भेजे, उठ! तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने पूछा, 'यह अपने ऊँट पर लअ़नत भेजने वाला कौन है?' उसने अ़र्ज़ किया, जी मैं हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'इससे उतर आओ, लअ़नत शुदा सवारी के साथ हमारे साथ न चलो, अपने नफ़्सों को बद्दुआ न दो, अपनी औलाद को बद्दुआ न दो और अपने मालों को बद्दुआ न दो, कहीं ऐसा न हो कि वह ऐसी घड़ी के मुवाफ़िक़ पड़ जाए जिसमें अल्लाह से कुछ माँगा जाता है तो वह तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर लेता है।'

سِرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي غَزْوَةِ بَطْنِ بُوَاطٍ وَهُوَ يَطْلُبُ الْمَجْدِيَّ بْنَ عَمْرٍو الْجُهَنِيَّ وَكَانَ النَّاضِحُ يَعْتَقِبُهُ مِنَّا الْخَمْسَةُ وَالسِّتَّةُ وَالسَّبْعَةُ فَدَارَتْ عُقْبَةُ رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ عَلَى نَاضِحٍ لَهُ فَأَنَاخَهُ فَرَكِبَهُ ثُمَّ بَعَثَهُ فَتَلَدَّنَ عَلَيْهِ بَعْضَ التَّلَدُّنِ فَقَالَ لَهُ شَأْ لَعَنَكَ اللَّهُ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ هَذَا اللاَّعِنُ بَعِيرَهُ " . قَالَ أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " انْزِلْ عَنْهُ فَلاَ تَصْحَبْنَا بِمَلْعُونٍ لاَ تَدْعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ وَلاَ تَدْعُوا عَلَى أَوْلاَدِكُمْ وَلاَ تَدْعُوا عَلَى أَمْوَالِكُمْ لاَ تُوَافِقُوا مِنَ اللَّهِ سَاعَةً يُسْأَلُ فِيهَا عَطَاءٌ فَيَسْتَجِيبُ لَكُمْ " .

तख़रीज 7515 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) यअ़क़ुबुहू : उस पर बारी बारी सवार होते थे, ग़ज़्व-ए-बुवात़ के लिए आप जंगे बद्र से पहले रबीउ़ल अव्वल 2 हिज्री में एक क़ुरैशी क़ाफ़िला के लिए निकले थे। (2) तलद्दन : उसने तवक्क़ुफ़ किया, ताख़ीर कर दी। (3) शअ : उसको खड़ा करने के लिए डाँटना, हुश हुश कहना।

(7516) हम रसूलुल्लाह (स) के साथ चलते रहे यहाँ तक कि शाम का वक़्त क़रीब हो गया और अ़रबों के पानियों में से एक पानी के क़रीब हो गए, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया,

سِرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى إِذَا كَانَتْ عُشَيْشِيَةٌ وَدَنَوْنَا مَاءً مِنْ

مِيَاهِ الْعَرَبِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " مَنْ رَجُلٌ يَتَقَدَّمُنَا فَيَمْدُرُ الْحَوْضَ فَيَشْرَبُ وَيَسْقِينَا " . قَالَ جَابِرٌ فَقُمْتُ فَقُلْتُ هَذَا رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " أَىُّ رَجُلٍ مَعَ جَابِرٍ " . فَقَامَ جَبَّارُ بْنُ صَخْرٍ فَانْطَلَقْنَا إِلَى الْبِئْرِ فَنَزَعْنَا فِي الْحَوْضِ سَجْلاً أَوْ سَجْلَيْنِ ثُمَّ مَدَرْنَاهُ ثُمَّ نَزَعْنَا فِيهِ حَتَّى أَفْهَقْنَاهُ فَكَانَ أَوَّلَ طَالِعٍ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " أَتَأْذَنَانِ " . قُلْنَا نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ . فَأَشْرَعَ نَاقَتَهُ فَشَرِبَتْ شَنَقَ لَهَا فَشَجَتْ فَبَالَتْ ثُمَّ عَدَلَ بِهَا فَأَنَاخَهَا ثُمَّ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى الْحَوْضِ فَتَوَضَّأَ مِنْهُ ثُمَّ قُمْتُ فَتَوَضَّأْتُ مِنْ مُتَوَضَّإِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَذَهَبَ جَبَّارُ بْنُ صَخْرٍ يَقْضِي حَاجَتَهُ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لِيُصَلِّيَ وَكَانَتْ عَلَىَّ بُرْدَةٌ ذَهَبْتُ أَنْ أُخَالِفَ بَيْنَ طَرَفَيْهَا فَلَمْ تَبْلُغْ لِي وَكَانَتْ لَهَا ذَبَاذِبُ فَنَكَّسْتُهَا ثُمَّ خَالَفْتُ بَيْنَ طَرَفَيْهَا ثُمَّ تَوَاقَصْتُ عَلَيْهَا ثُمَّ جِئْتُ حَتَّى قُمْتُ عَنْ

'कौनसा मर्द है, जो हमसे आगे जाएगा और हौज़ को ठीक ठाक करेगा, (मिट्टी वग़ैरह निकाल देगा) ख़ुद भी पियेगा और हमें भी पिलाएगा।' हज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं, मैं खड़ा हो गया और कहा, यह मर्द, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'जाबिर के साथ कौनसा मर्द जाएगा?' तो जब्बार बिन स़ख़र (रज़ि.) खड़े हो गए, चुनाँचे हम कूएँ की तरफ़ रवाना हो गए, हमने हौज़ में एक या दो डोल खींचे, फिर उसकी मिट्टी को स़ाफ़ किया, लीपा पोती की फिर हमने उसमें पानी खींचा (डाला) यहाँ तक कि हमने उसे भर डाला, तो हम तक सबसे पहले पहुँचने वाले रसूलुल्लाह(ﷺ) थे, आपने फ़र्माया, 'क्या इजाज़त देते हो?' हमने कहा, जी हाँ अल्लाह के रसूल! आपने पानी के लिए उसकी महार ढीली की, उसने पानी पिया, आपने उसकी महार खींची तो उसने अपने पैर कुशादा कर लिये और बोल किया, फिर उसको एक तरफ़ ले गए और उसको बिठा दिया, फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) हौज़ पर तशरीफ़ लाए और उससे वुज़ू किया, फिर मैं उठा और मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) के वुज़ू करने की जगह से वुज़ू किया, जब्बार बिन स़ख़र (रज़ि.) क़ज़ाए हाजत के लिए चले गए और रसूलुल्लाह(ﷺ) नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो गए, मेरे जिस्म पर एक चादर थी, मैं उसके दोनों किनारों को उलटने लगा, वह मेरे कँधों पर न पहुँची, उसके डोरे थे, मैंने उस चादर को उलटा किया, फिर

يَسَارِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخَذَ بِيَدِي فَأَدَارَنِي حَتَّى أَقَامَنِي عَنْ يَمِينِهِ ثُمَّ جَاءَ جَبَّارُ بْنُ صَخْرٍ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ جَاءَ فَقَامَ عَنْ يَسَارِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِيَدَيْنَا جَمِيعًا فَدَفَعَنَا حَتَّى أَقَامَنَا خَلْفَهُ فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَرْمُقُنِي وَأَنَا لاَ أَشْعُرُ ثُمَّ فَطِنْتُ بِهِ فَقَالَ هَكَذَا بِيَدِهِ يَعْنِي شُدَّ وَسَطَكَ فَلَمَّا فَرَغَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " يَا جَابِرُ " . قُلْتُ لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " إِذَا كَانَ وَاسِعًا فَخَالِفْ بَيْنَ طَرَفَيْهِ وَإِذَا كَانَ ضَيِّقًا فَاشْدُدْهُ عَلَى حِقْوِكَ " .

उसके किनारों को उलटा और उस पर अपनी गर्दन को मज़बूत किया (गर्दन और ठोड़ी से उसको रोका) फिर मैं आकर रसूलुल्लाह(ﷺ) की बाएँ जानिब खड़ा हो गया, आपने मेरा हाथ पकड़कर मुझे घुमाकर अपनी दाएँ जानिब खड़ा कर दिया, फिर जब्बार बिन स़ख़र (रज़ि.) आए और उन्होंने वुज़ू किया, फिर आकर रसूलुल्लाह(ﷺ) की बाएँ जानिब खड़े हो गए, तो आपने हम दोनों के हाथों को पकड़कर हमें धकेलकर अपने पीछे खड़ा कर लिया और रसूलुल्लाह(ﷺ) मुझे घूरने लगे और मैं समझ नहीं रहा था (मुझे एह़सास नहीं हो रहा था) फिर मैं आपका मक़्सद समझ गया और आपने अपने हाथ के इशारे के ज़रिये बताया कि उसको कमर पर बाँध लो, चुनाँचे जब रसूलुल्लाह(ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए, फ़र्माया, 'ऐ जाबिर! मैंने कहा, ह़ाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'जब कपड़ा खुला हो, तो उसके दोनों किनारों को मुख़ालिफ़त सिमतों पर डाल लो और जब तंग हो तो अपनी कमर पर बाँध लो।'

तख़रीज 7516 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अल्अह़्मक़ : बेवकूफ़, लेकिन यहाँ नावाक़िफ़ और जाहिल मुराद है कि वह मुझे इस तरह़ नमाज़ पढ़ता देखकर मुझसे सीख ले कि एक कपड़े में नमाज़ पढ़ना जाइज़ है। (2) नुख़ामा : भीनी, रेंट, नाक का फ़ुज़्ला, बलग़म को भी कह देते हैं। (3) यम्दुरूल ह़ौज़ : ह़ौज़ की लिपाई करे, उसको ठीक ठाक करे (4) इफ़्हक़्नाहु : हमने उस ह़ौज़ को भर दिया। (5) अश्रअ नाक़तहू : पानी पीने के लिए अपनी ऊँटनी की महार को ढीला कर दिया, उसको पानी पिलाने लगे। (6) शनक़ लहा : उसकी महार को खींचा। (7) फ़शजत : ऊँटनी ने बोल के लिए अपनी टाँगे कुशादा कीं खोलीं। (8) ज़बाज़िब : मुफ़्रद ज़ब्ज़िब है, यानी अहदाब, डोरे (9) तवाक़स्तु अलैहा : चादर को गर्दन से रोक लिया, (1) यर्मुक़ुनी : मुझे घूर रहे थे, मुझ पर नज़र जमाए हुए थे।

(7517) हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ चल रहे थे और रोज़ाना हममें से हर आदमी की ख़ूराक एक खजूर थी, जिसे वह चूसता, फिर उसे अपने कपड़े में बाँध लेता, (ताकि फिर चूस सके) और हम अपनी कमानों से पत्ते झाड़ते और खा लेते, यहाँ तक कि हमारी बाछें छिल गईं, मैं क़सम खाता हूँ, एक दिन हममें से एक आदमी को चूक कर न दी गई, तो हम उसको उठाकर ले गए और हमने गवाही दी कि इसको खजूर नहीं दी गई, तो उसे खजूर दी गई और उसने खड़े होकर खाई।

सِرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَكَانَ قُوتُ كُلِّ رَجُلٍ مِنَّا فِي كُلِّ يَوْمٍ تَمْرَةً فَكَانَ يَمَصُّهَا ثُمَّ يَصُرُّهَا فِي ثَوْبِهِ وَكُنَّا نَخْتَبِطُ بِقِسِيِّنَا وَنَأْكُلُ حَتَّى قَرِحَتْ أَشْدَاقُنَا فَأُقْسِمُ أُخْطِئَهَا رَجُلٌ مِنَّا يَوْمًا فَانْطَلَقْنَا بِهِ نَنْعَشُهُ فَشَهِدْنَا أَنَّهُ لَمْ يُعْطَهَا فَأُعْطِيَهَا فَقَامَ فَأَخَذَهَا .

तख़रीज 7517 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) यसुर्रुहा : वह उसे बाँध या लपेट लेता। (2) नख़्बितु : हम पत्ते झाड़ते। (3) नन्‌अशुह : हम उसको सहारे से उठाते थे और बक़ौल क़ाज़ी एयाज़ हम उसके दावा को मज़बूत करते थे कि वाक़ेई ग़लती से उसको खजूर नहीं दी है।

(7518) हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ एक खुली वादी में चले, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिए निकले और मैं भी पानी का बरतन लेकर आपके पीछे हो लिया, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नज़र दौड़ाई तो आपको पर्दापोशी के लिए कोई चीज़ दिखाई न दी अचानक आपने देखा, वादी के किनारे पर दो दरख़्त हैं, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) उनमें से एक की तरफ़ चल पड़े और उसकी टहनियों में से एक टहनी को पकड़कर फ़र्माया, 'अल्लाह के हुक्म से मेरी इताअत कर।' वह आपके लिए नकेल डाले गए ऊँट की तरह मुतीअ हो गया, जो अपने क़ाइद (आगे से पकड़ने वाले) की

سِرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حَتَّى نَزَلْنَا وَادِيًا أَفْيَحَ فَذَهَبَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقْضِي حَاجَتَهُ فَاتَّبَعْتُهُ بِإِدَاوَةٍ مِنْ مَاءٍ فَنَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَلَمْ يَرَ شَيْئًا يَسْتَتِرُ بِهِ فَإِذَا شَجَرَتَانِ بِشَاطِئِ الْوَادِي فَانْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم إِلَى إِحْدَاهُمَا فَأَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْ أَغْصَانِهَا فَقَالَ " انْقَادِي عَلَىَّ بِإِذْنِ اللَّهِ " . فَانْقَادَتْ مَعَهُ كَالْبَعِيرِ

الْمَخْشُوشِ الَّذِي يُصَانِعُ قَائِدَهُ حَتَّى أَتَى الشَّجَرَةَ الأُخْرَى فَأَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْ أَغْصَانِهَا فَقَالَ " انْقَادِي عَلَىَّ بِإِذْنِ اللَّهِ " . فَانْقَادَتْ مَعَهُ كَذَلِكَ حَتَّى إِذَا كَانَ بِالْمَنْصَفِ مِمَّا بَيْنَهُمَا لأَمَ بَيْنَهُمَا - يَعْنِي جَمَعَهُمَا - فَقَالَ " الْتَئِمَا عَلَىَّ بِإِذْنِ اللَّهِ " . فَالْتَأَمَتَا قَالَ جَابِرٌ فَخَرَجْتُ أُحْضِرُ مَخَافَةَ أَنْ يُحِسَّ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِقُرْبِي فَيَبْتَعِدَ - وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ فَيَتَبَعَّدَ - فَجَلَسْتُ أُحَدِّثُ نَفْسِي فَحَانَتْ مِنِّي لَفْتَةٌ فَإِذَا أَنَا بِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم مُقْبِلاً وَإِذَا الشَّجَرَتَانِ قَدِ افْتَرَقَتَا فَقَامَتْ كُلُّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا عَلَى سَاقٍ فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَقَفَ وَقْفَةً فَقَالَ بِرَأْسِهِ هَكَذَا - وَأَشَارَ أَبُو إِسْمَاعِيلَ بِرَأْسِهِ يَمِينًا وَشِمَالاً - ثُمَّ أَقْبَلَ فَلَمَّا انْتَهَى إِلَىَّ قَالَ " يَا جَابِرُ هَلْ رَأَيْتَ مَقَامِي " . قُلْتُ نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ . قَالَ " فَانْطَلِقْ إِلَى الشَّجَرَتَيْنِ فَاقْطَعْ مِنْ كُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا غُصْنًا فَأَقْبِلْ بِهِمَا حَتَّى إِذَا قُمْتَ مَقَامِي فَأَرْسِلْ غُصْنًا عَنْ يَمِينِكَ وَغُصْنًا عَنْ يَسَارِكَ " . قَالَ

फ़र्मांबरदारी करता है, यहाँ तक कि आप दूसरे दरख़्त के पास पहँच गए और उसकी शाख़ों में से एक शाख़ को पकड़कर फ़र्माया, 'अल्लाह के हुक्म से मेरी इताअत करो।' वह भी इस तरह आपका मुतीअ हो गया, यहाँ तक कि जब दोनों के बीच मक़ाम पर पहुँच गये, तो उनको इकट्ठा कर दिया और फ़र्माया, 'अल्लाह के हुक्म से मुझ पर जुड़े रहो।' तो वह दोनों मिल गए। जाबिर (रज़ि.) कहते हैं, मैं इस डर से दौड़कर आपसे दूर निकल गया कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मुझे क़रीब महसूस करके दूर न निकल जाएँ, मुहम्मद बिन अ़ब्बाद फ़यब्तइद की जगह फ़यब्तअ़अद कहते हैं मैं ख़ुद कलामी करते हुए बैठ गया, अचानक मैंने नज़र डाली, तो मैंने देखा, रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरी तरफ़ आ रहे हैं और दोनों दरख़्त अलग अलग हो चुके हैं और उनमें हर एक अपने तने पर खड़ा हो चुका है। चुनाँचे मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा, आप थोड़ी देर के लिए खड़े हुए और अपने सिर से इस तरह किया (और अबू इस्माईल ने अपने सिर से दाएँ और बाएँ इशारा किया) फिर आप आगे बढ़े, तो जब मुझ तक पहुँच गए, फ़र्माया, 'क्या तूने मेरा ठहरना देखा?' मैंने कहा, जी हाँ! ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आपने फ़र्माया, 'उन दोनों दरख़्तों की तरफ़ जाओ और उनमें से हर एक से, एक एक शाख़ काट लाओ और जब मेरे खड़े होने की जगह पहुँचो, तो एक शाख़ अपनी दाएँ जानिब डाल दो और एक शाख़

جَابِرٌ فَقُمْتُ فَأَخَذْتُ حَجَرًا فَكَسَرْتُهُ وَحَسَرْتُهُ فَانْذَلَقَ لِي فَأَتَيْتُ الشَّجَرَتَيْنِ فَقَطَعْتُ مِنْ كُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا غُصْنًا ثُمَّ أَقْبَلْتُ أَجُرُّهُمَا حَتَّى قُمْتُ مَقَامَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَرْسَلْتُ غُصْنًا عَنْ يَمِينِي وَغُصْنًا عَنْ يَسَارِي ثُمَّ لَحِقْتُهُ فَقُلْتُ قَدْ فَعَلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَعَمَّ ذَاكَ قَالَ " إِنِّي مَرَرْتُ بِقَبْرَيْنِ يُعَذَّبَانِ فَأَحْبَبْتُ بِشَفَاعَتِي أَنْ يُرَفَّهَ عَنْهُمَا مَا دَامَ الْغُصْنَانِ رَطْبَيْنِ " .

अपने बाएँ डाल दो।' हजरत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं; मैं उठा और मैंने एक पत्थर लेकर उसको तोड़ा और उसको तेज़ किया और वह तेज़ हो गया। चुनाँचे मैं दोनों दरख़्तों के पास पहुँचा और उनमें से हर एक से एक शाख़ काट ली, फिर उनको घसीटते या खींचते हुए आगे बढ़ा, यहाँ तक कि जब मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की खड़े होने की जगह पर खड़ा हुआ, तो एक शाख़ अपने दाएँ छोड़ दी और एक शाख़ अपने बाएँ छोड़ दी, फिर आपको आ मिला और अ़र्ज़ किया, मैं आपके फ़र्मान पर अ़मल कर चुका हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! और यह क्यूँ है? आपने फ़र्माया, 'मैं दो ऐसी क़ब्रों से गुज़रा, जिनमें अ़ज़ाब दिया जा रहा था, तो मैंने पसंद किया कि मेरी सिफ़ारिश से उन दोनों के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ कर दी जाए, जब तक वह दोनों शाख़ें ताज़ा रहें।

तख़रीज 7518 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अफ़्यहु : वसीअ़ (2) अल्मख़्शूश : ख़िशाश (नकेल) डाली गई। (3) युसानिउ क़ाइदहू : अपने चलाने वाले की इताअ़त करता है। (4) मंसफ़ : दरम्यानी जगह, दोनों के दरम्यान की जगह। (5) लाअम बैनहुमा : दोनों को मिला दिया, जोड़ दिया। (6) उह्ज़िरु : मैं तेज़ दौड़ रहा था। (7) ह़सर्तुहू : मैंने उसको तेज़ किया। (8) फ़न्ज़लक़ : वह तेज़ हो गया। (9) अ़म्म ज़ाक : आपने उस काम का हुक्म क्यूँ दिया। (10) अंय युरफ़्फ़ह अ़न्हुमा : उन दोनों से तख़्फ़ीफ़ की जाए, अ़ज़ाब हल्का कर दिया जाए।

फ़ायदा : इस हदीस का लफ़्ज़ बिशफ़ाअ़ती : मेरी सिफ़ारिश की वजह से इस बात की सरीह़ दलील है कि अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ आपकी सिफ़ारिश के सबब हुई, इसमें टहनी का कोई दख़ल नहीं था, इसलिए इससे क़ब्र पर फूल वग़ैरह डालने पर इस्तिदलाल करना सही नहीं है और आपको तो अ़ज़ाब होता मह़सूस हो गया क्या हमें भी अ़ज़ाब होने का इ़ल्म हो जाता है।

قَالَ فَأَتَيْنَا الْعَسْكَرَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " يَا جَابِرُ نَادِ بِوَضُوءٍ " . فَقُلْتُ أَلاَ وَضُوءَ أَلاَ وَضُوءَ أَلاَ وَضُوءَ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا وَجَدْتُ فِي الرَّكْبِ مِنْ قَطْرَةٍ وَكَانَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يُبَرِّدُ لِرَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْمَاءَ فِي أَشْجَابٍ لَهُ عَلَى حِمَارَةٍ مِنْ جَرِيدٍ قَالَ فَقَالَ لِيَ " انْطَلِقْ إِلَى فُلاَنِ بْنِ فُلاَنٍ الأَنْصَارِيِّ فَانْظُرْ هَلْ فِي أَشْجَابِهِ مِنْ شَىْءٍ " . قَالَ فَانْطَلَقْتُ إِلَيْهِ فَنَظَرْتُ فِيهَا فَلَمْ أَجِدْ فِيهَا إِلاَّ قَطْرَةً فِي عَزْلاَءِ شَجْبٍ مِنْهَا لَوْ أَنِّي أُفْرِغُهُ لَشَرِبَهُ يَابِسُهُ . فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي لَمْ أَجِدْ فِيهَا إِلاَّ قَطْرَةً فِي عَزْلاَءِ شَجْبٍ مِنْهَا لَوْ أَنِّي أُفْرِغُهُ لَشَرِبَهُ يَابِسُهُ قَالَ " اذْهَبْ فَأْتِنِي بِهِ " . فَأَتَيْتُهُ بِهِ فَأَخَذَهُ بِيَدِهِ فَجَعَلَ يَتَكَلَّمُ بِشَىْءٍ لاَ أَدْرِي مَا هُوَ وَيَغْمِزُهُ بِيَدَيْهِ ثُمَّ أَعْطَانِيهِ فَقَالَ " يَا جَابِرُ نَادِ بِجَفْنَةٍ " . فَقُلْتُ يَا جَفْنَةَ الرَّكْبِ . فَأُتِيتُ بِهَا تُحْمَلُ فَوَضَعْتُهَا بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِيَدِهِ فِي الْجَفْنَةِ

(7519) हजरत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं, फिर हम लश्कर के पास पहुँच गए, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'ऐ जाबिर! पानी के लिए आवाज़ लगाओ?' तो मैंने कहा, ख़बरदार! पानी है, सुनो किसी के पास पानी है?' ख़बरदार! पानी लाओ, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! इस क़ाफ़िला में तो मुझे पानी का एक क़तरा भी नहीं मिला और एक अंसारी आदमी रसूलुल्लाह(ﷺ) के लिए अपनी पुरानी मश्क में, खजूर की शाख़ पर लटकाकर, पानी ठण्डा रखता था, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे फ़र्माया, 'फ़लाँ बिन फ़लाँ अंसारी के पास जाओ और देखो उसकी बोसीदा मश्कों में कुछ पानी है?' चुनाँचे मैं उसके पास गया और उसकी मश्कों में पानी देखा, तो मुझे उनमें सिर्फ़ एक क़तरा मश्क के मुँह में मिला, अगर मैं उसको उँडेलूँ तो मश्क का ख़ुश्क हिस्सा उसको जज़्ब कर लेगा, तो मैं रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मुझे उन मश्कों में से एक मश्क के मुँह में सिर्फ़ एक क़तरा पानी मिला है, अगर मैं उसको उँडेलूँ तो मश्क का ख़ुश्क हिस्सा उसको जज़्ब कर लेगा, आपने फ़र्माया, 'जाओ उसे मेरे पास लाओ।' चुनाँचे मैं उसे आपके पास ले आया, आपने उसे (मश्क) को हाथ में पकड़ा और कुछ कलिमात पढ़ने लगे, मुझे मालूम नहीं, वह कौन से कलिमात थे और आप अपने दोनों हाथों से उसको निचोड़ रहे थे, या दबा रहे थे,

هَكَذَا فَبَسَطَهَا وَفَرَّقَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ ثُمَّ وَضَعَهَا فِي قَعْرِ الْجَفْنَةِ وَقَالَ " خُذْ يَا جَابِرُ فَصُبَّ عَلَىَّ وَقُلْ بِاسْمِ اللَّهِ " . فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ وَقُلْتُ بِاسْمِ اللَّهِ . فَرَأَيْتُ الْمَاءَ يَتَفَوَّرُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ فَارَتِ الْجَفْنَةُ وَدَارَتْ حَتَّى امْتَلأَتْ فَقَالَ " يَا جَابِرُ نَادِ مَنْ كَانَ لَهُ حَاجَةٌ بِمَاءٍ " . قَالَ فَأَتَى النَّاسُ فَاسْتَقَوْا حَتَّى رَوَوْا قَالَ فَقُلْتُ هَلْ بَقِيَ أَحَدٌ لَهُ حَاجَةٌ فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَدَهُ مِنَ الْجَفْنَةِ وَهِيَ مَلأَى .

फिर आपने वह मश्क मुझे दे दी और फ़र्माया, 'ऐ जाबिर! प्याला के लिए आवाज़ दो।' मैंने आवाज़ दी, ऐ क़ाफ़िला के प्याले वाले, वह उठा कि मेरे पास लाया गया और मैंने उसे आपके आगे रख दिया, चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपने हाथ को इस तरह प्याले में फैलाया, आपने उसको खोलकर उसकी उँगलियाँ अलग अलग कर लीं फिर उन्हें प्याले के पेंदे में रख दिया और फ़र्माया, 'मश्क पकड़कर, बिस्मिल्लाह पढ़कर, मुझ पर पानी डालो।' मैंने आप पर पानी डाला और बिस्मिल्लाह पढ़ ली, मैंने पानी को देखा कि वह रसूलुल्लाह(ﷺ) की उँगलियों के दरम्यान से फूट रहा है, फिर टब में पानी ने जोश मारा और घूमा यहाँ तक कि टब भर गया, तो आपने फ़र्माया, 'ऐ जाबिर! आवाज़ दो, किसको पानी की ज़रूरत है (वह ले ले)' लोग आ गए, उन्होंने पानी पिया, यहाँ तक कि वह सैराब हो गए, मैंने कहा, क्या कोई ज़रूरतमंद रह गया है? चुनाँचे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने टब से अपना हाथ उठा लिया, जबकि वह अभी भरा हुआ था। इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) अश्जाब : मुफ़रद शज्ब है, बोसीदा और पुराना मश्कीज़ा। (2) ह़िमारतुन : मश्क लटकाने की खूँटी। (3) अज़्ला : मश्क का मुँह (4) यग़्मिज़ुहू : निचोड़ने के लिए उसे दबा रहे थे। (5) जफ़्ना : बड़ा प्याला या टब।

وَشَكَا النَّاسُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم الْجُوعَ فَقَالَ " عَسَى اللَّهُ أَنْ يُطْعِمَكُمْ " . فَأَتَيْنَا سِيفَ الْبَحْرِ فَزَخَرَ

(7520) लोगों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) से भूख की शिकायत की, तो आपने फ़र्माया, 'उम्मीद है, अल्लाह तुम्हें खिलाएगा।' चुनाँचे हम समुन्द्र के साहिल पर पहुँचे तो समुन्द्र ने ज़ोर से

الْبَحْرُ زَخْرَةً فَأَلْقَى دَابَّةً فَأَوْرَيْنَا عَلَى شِقِّهَا النَّارَ فَاطَّبَخْنَا وَاشْتَوَيْنَا وَأَكَلْنَا حَتَّى شَبِعْنَا . قَالَ جَابِرٌ فَدَخَلْتُ أَنَا وَفُلاَنٌ وَفُلاَنٌ حَتَّى عَدَّ خَمْسَةً فِي حِجَاجِ عَيْنِهَا مَا يَرَانَا أَحَدٌ حَتَّى خَرَجْنَا فَأَخَذْنَا ضِلَعًا مِنْ أَضْلاَعِهِ فَقَوَّسْنَاهُ ثُمَّ دَعَوْنَا بِأَعْظَمِ رَجُلٍ فِي الرَّكْبِ وَأَعْظَمِ جَمَلٍ فِي الرَّكْبِ وَأَعْظَمِ كِفْلٍ فِي الرَّكْبِ فَدَخَلَ تَحْتَهُ مَا يُطَأْطِئُ رَأْسَهُ .

जोश मारा यानी उसकी लहर ज़ोर से उठी और उसने एक जानदार फेंक दिया, हमने उसके एक टुकड़े के लिए आग जलाई, उसको पकाया और भूना और उसको खाया, यहाँ तक कि हम सैर हो गए, ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं, मैं और फ़लाँ फ़लाँ पाँच आदमी गए और उसके आँख के ख़ोल में दाख़िल हो गए, हमें कोई देख नहीं रहा था, यहाँ तक कि हम बाहर आ गए, तो हम उसकी पसलियों में से एक पसली को लेकर उसको कमान बनाई, फिर हमने क़ाफ़िला में से सबसे बड़े आदमी और उस सबसे बड़े ऊँट को तलब किया और क़ाफ़िला के सबसे बड़े पालान को लिया, तो वह उसके नीचे सिर झुकाए बग़ैर चला गया।

तख़रीज 7520 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

मुफ़रदातुल हदीस : (1) सीफ़ुल बह़र : समुन्द्र का साह़िल (2) ज़ख़रल बह़रु ज़ख़्रा : समुन्द्र ने ठाठें मारीं। (3) ह़िजाज : आँख का खोल। (4) किफ़्ल : वह कपड़ा जो ऊँट की कोहान के इर्द गिर्द लपेटा जाता है, यहाँ मुराद पालान है।

फ़ायदा : इन अह़ादीस में आपके मुख़्तलिफ़ मोजिज़ात को बयान किया गया है और मोजिज़ात पर क़यास नहीं हो सकता, अगर आपको दो क़ब्रों के अ़ज़ाब का इल्म दिया गया है, तो उसका यह मआ़नी नहीं है कि आपको दुनिया में बर्ज़ख़ के ह़ालात का पता था और बर्ज़ख़ (क़ब्र) में दुनिया के ह़ालात का इल्म है और अगर तर शाख़ रखने से अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हुई है, तो क़ब्र पर पढ़ने से बिल औला होगी, क्योंकि अ़ज़ाब की तख़्फ़ीफ़ में शाख़े तर का कोई दख़ल नहीं है और अगर तर शाख़ तस्बीह़ पढ़ती है, तो क्या ख़ुश्क शाख़ तस्बीह़ नहीं पढ़ती, अल्लाह का फ़र्मान तो यह है इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बि ह़म्दिही हर चीज़ ह़म्द के साथ तस्बीह़ बयान करती है, फिर यह कहने की क्या ज़रूरत, जब तक यह तर रहेंगी।

बाब 20 :
हदीसे हिज्रत (हिज्रत का वाक़िया) जिसको हदीसे रहल (पालान) भी कहते हैं।

(20)
بَاب : فِيْ حَدِيثِ الْهِجْرَةِ

(7521) हजरत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) बयान करते हैं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) मेरे वालिद के घर आए और उनसे पालान ख़रीदा और (मेरे वालिद) आज़िब से कहा, मेरे साथ अपने बेटे को भेजो कि वह मेरे साथ पालान उठाकर घर छोड़ आए, तो मेरे वालिद ने मुझे कहा, उसे उठाओ, मैंने उसे उठा लिया और मेरे वालिद भी रक़म वसूल करने के लिए उनके साथ चले, चुनाँचे मेरे वालिद ने उनसे कहा, ऐ अबू बक्र (रज़ि.)! मुझे बताओ जिस रात आप रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ चले थे, आप दोनों ने क्या किया, उन्होंने कहा, हाँ! हम रात भर चलते रहे, यहाँ तक कि सूरज दोपहर को थम गया, रास्ता ख़ाली हो गया, कोई भी उसमें चल नहीं रहा था, यहाँ तक कि हमें एक लम्बी चट्टान नजर आई, जिसका साया था, अभी तक वहाँ धूप नहीं आई थी, तो हमने वहाँ पड़ाव डाला, मैं चट्टान के पास पहुँचा और अपने हाथ से एक जगह हमवार की, ताकि वहाँ नबी अकरम(ﷺ) चट्टान के साये में सो सकें, फिर उस पर पोस्तीन (खाल) बिछाई, फिर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! सो जाइए! मैं आपके लिए इर्द गिर्द का ध्यान

حَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ، يَقُولُ جَاءَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ إِلَى أَبِي فِي مَنْزِلِهِ فَاشْتَرَى مِنْهُ رَحْلاً فَقَالَ لِعَازِبٍ ابْعَثْ مَعِيَ ابْنَكَ يَحْمِلْهُ مَعِي إِلَى مَنْزِلِي فَقَالَ لِي أَبِي احْمِلْهُ . فَحَمَلْتُهُ وَخَرَجَ أَبِي مَعَهُ يَنْتَقِدُ ثَمَنَهُ فَقَالَ لَهُ أَبِي يَا أَبَا بَكْرٍ حَدِّثْنِي كَيْفَ صَنَعْتُمَا لَيْلَةَ سَرَيْتَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ نَعَمْ أَسْرَيْنَا لَيْلَتَنَا كُلَّهَا حَتَّى قَامَ قَائِمُ الظَّهِيرَةِ وَخَلاَ الطَّرِيقُ فَلاَ يَمُرُّ فِيهِ أَحَدٌ حَتَّى رُفِعَتْ لَنَا صَخْرَةٌ طَوِيلَةٌ لَهَا ظِلٌّ لَمْ تَأْتِ عَلَيْهِ الشَّمْسُ بَعْدُ فَنَزَلْنَا عِنْدَهَا فَأَتَيْتُ الصَّخْرَةَ فَسَوَّيْتُ بِيَدِي مَكَانًا يَنَامُ فِيهِ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم فِي ظِلِّهَا ثُمَّ بَسَطْتُ عَلَيْهِ فَرْوَةً ثُمَّ قُلْتُ نَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ

وَأَنَا أَنْفُضُ لَكَ مَا حَوْلَكَ فَنَامَ وَخَرَجْتُ أَنْفُضُ مَا حَوْلَهُ فَإِذَا أَنَا بِرَاعِي غَنَمٍ مُقْبِلٍ بِغَنَمِهِ إِلَى الصَّخْرَةِ يُرِيدُ مِنْهَا الَّذِي أَرَدْنَا فَلَقِيتُهُ فَقُلْتُ لِمَنْ أَنْتَ يَا غُلاَمُ فَقَالَ لِرَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ قُلْتُ أَفِي غَنَمِكَ لَبَنٌ قَالَ نَعَمْ . قُلْتُ أَفَتَحْلُبُ لِي قَالَ نَعَمْ . فَأَخَذَ شَاةً فَقُلْتُ لَهُ انْفُضِ الضَّرْعَ مِنَ الشَّعَرِ وَالتُّرَابِ وَالْقَذَى - قَالَ فَرَأَيْتُ الْبَرَاءَ يَضْرِبُ بِيَدِهِ عَلَى الأُخْرَى يَنْفُضُ - فَحَلَبَ لِي فِي قَعْبٍ مَعَهُ كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ قَالَ وَمَعِي إِدَاوَةٌ أَرْتَوِي فِيهَا لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم لِيَشْرَبَ مِنْهَا وَيَتَوَضَّأَ - قَالَ - فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَكَرِهْتُ أَنْ أُوقِظَهُ مِنْ نَوْمِهِ فَوَافَقْتُهُ اسْتَيْقَظَ فَصَبَبْتُ عَلَى اللَّبَنِ مِنَ الْمَاءِ حَتَّى بَرَدَ أَسْفَلُهُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ اشْرَبْ مِنْ هَذَا اللَّبَنِ - قَالَ - فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيتُ ثُمَّ قَالَ " أَلَمْ يَأْنِ لِلرَّحِيلِ " . قُلْتُ بَلَى . قَالَ فَارْتَحَلْنَا بَعْدَ مَا زَالَتِ الشَّمْسُ وَاتَّبَعَنَا سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكٍ - قَالَ - وَنَحْنُ فِي جَلَدٍ مِنَ الأَرْضِ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أُتِينَا فَقَالَ " لاَ تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ

रखता हूँ, आप सो गए और मैं इर्द गिर्द का जायज़ा लेने के लिए निकला, अचानक मैं देखता हूँ, बकरियों का एक चरवाहा, अपनी बकरियों को लेकर चट्टान की तरफ़ बढ़ रहा है और हमारी तरह उसके साये से फ़ायदा उठाना चाहता है, मैं उसको मिला और पूछा, तुम्हारा मालिक कौन है ऐ ग़ुलाम! उसने कहा, मेरा मालिक शहर का एक आदमी है, मैंने कहा, क्या तेरी बकरियाँ दूध देती हैं? उसने कहा, हाँ! मैंने कहा, क्या तुम मुझे दूह कर दे सकते हो। (तुम्हें दूध दूहने की इजाज़त है) उसने कहा, हाँ! उसने एक बकरी पकड़ ली, तो मैंने उसे कहा, उसके थन से बाल, मिट्टी और तिनके झाड़ लो (बराअ रज़ि. ने झाड़ने के लिए एक हाथ दूसरे हाथ पर मारा) उसने मुझे अपने लकड़ी के प्याले में कुछ दूध दूह दिया और मेरे पास एक मशकीज़ा था, जिसमें मैं नबी अकरम(ﷺ) के पीने और वुज़ू के लिए पानी रखता था, मैं नबी अकरम(ﷺ) की तरफ़ चल पड़ा और मैं आपको नींद से बेदार करना नापसंद करता था, मैंने आपको जागते हुए पाया, चुनाँचे मैंने दूध पर कुछ पानी डाला, यहाँ तक कि वह ठण्डा हो गया, (पानी से उसकी गर्मी टूट गई) फिर मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! इस दूध को पी लीजिए, आपने पिया, यहाँ तक कि मेरी तसल्ली हो गई (कि आपने पेट भरकर पी लिया)' फिर आपने पूछा, 'क्या कूच का वक़्त नहीं हुआ?' मैंने कहा, क्यूँ नहीं! तो हम सूरज ढलने के बाद चल पड़े

مَعَنَا " . فَدَعَا عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَارْتَطَمَتْ فَرَسُهُ إِلَى بَطْنِهَا أُرَى فَقَالَ إِنِّي قَدْ عَلِمْتُ أَنَّكُمَا قَدْ دَعَوْتُمَا عَلَىَّ فَادْعُوَا لِي فَاللَّهُ لَكُمَا أَنْ أَرُدَّ عَنْكُمَا الطَّلَبَ . فَدَعَا اللَّهَ فَنَجَى فَرَجَعَ لاَ يَلْقَى أَحَدًا إِلاَّ قَالَ قَدْ كَفَيْتُكُمْ مَا هَا هُنَا فَلاَ يَلْقَى أَحَدًا إِلاَّ رَدَّهُ - قَالَ - وَوَفَى لَنَا .

और सुराक़ा बिन मालिक ने हमारा पीछा किया, जबकि हम सख़्त ज़मीन पर चल रहे थे (जिसमें पैर धंस नहीं सकते थे) मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हमें पा लिया गया (दुश्मन सिर पर पहुँच चुका) तो आपने फ़र्माया, 'ग़म व फ़िक्र न कर, अल्लाह हमारे साथ है।' तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसके ख़िलाफ़ दुआ की, मेरे देखते हुए उसका घोड़ा पेट तक धंस गया, मेरे ख़्याल में उसने कहा, मैं जान चुका हूँ, तुम दोनों ने मेरे ख़िलाफ़ दुआ की है, तो मेरे हक़ में दुआ करो, चुनाँचे मैं दोनों के साथ अल्लाह के नाम पर अहद करता हूँ कि मैं तुम्हारे पीछे आने वालों को रोकूँगा, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दुआ की, उसे नजात मिल गई, वापसी पर जो भी उसको मिला, उसने उसे कहा, इधर से मैं तुम्हारे लिए काफ़ी हो चुका हूँ, (इधर मैं देख आया हूँ) चुनाँचे उसे जो भी मिलता, वह उसे वापिस लौटा देता और उसने हमारे साथ किये हुए वादा को पूरा किया।

तख़रीज 7521 : किताबुल अशरिबा : 5206.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) क़ाम क़ाइमुज़्ज़हीरा : सूरज सिर पर खड़ा हो गया, ऐन दोपहर हो गई। (2) रुफ़िअत लना सख़्रा : हमें एक चट्टान नज़र आई। (3) फ़र्वा : बालों या ऊन का कम्बल, पोस्तीन जिसका अंदुरूनी हिस्सा जानवरों की खाल से तैयार किया जाता है। (4) अंफ़ुज़ुलक : मैं आपके लिए पहरा देता हूँ, आसपास का ध्यान रखता हूँ। (5) अहलुल मदीना : अहले शहर, मदीना से यहाँ शहर मुराद है, यानी मक्का, क्योंकि मदीनतुन् नबी तो आपके हिज्रत के बाद नाम पड़ा है, पहले तो उसको यस्रिब कहते थे और बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत लि रजुल मिन क़ुरैश है और क़ुरैशी मक्का ही में आबाद थे, क़अब : लकड़ी का प्याला। (7) कस्बा : कुछ, थोड़ा सा, एक वक़्त निकलने वाला दूध। (8) अर्तवी : मैं उसमें पानी रखता था। (9) इर्तमत फ़र्सुह : उसका घोड़ा धंस गया।

फ़ायदा : क़ुरैश ने आपके पकड़ने वाले के लिए सौ ऊँट बतौर इन्आम देने का ऐलान किया था, इसलिए आपके तआक़ुब में निकला और यह वाक़िया पेश आया।

(7522) हजरत बराअ (रज़ि.) बयान करते हैं, अबू बक्र (रज़ि.) ने मेरे वालिद से एक पालान तेरह दिरहम में ख़रीदा और आगे मज़्कूरा बाला हदीस बयान की और उस्मान बिन उमर की हदीस में यह है, तो जब सुराक़ा क़रीब आ गया, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसके ख़िलाफ़ दुआ की, चुनाँचे उसका घोड़ा पेट तक ज़मीन में खब गया (धंस गया) और उसने उससे छलाँग लगा दी और उसने कहा, ऐ मुहम्मद(ﷺ)! मैं जान गया हूँ यह आपका काम है, तो अल्लाह से दुआ कीजिए, वह मुझे इस परेशानी से छुटकारा बख़्शे और मैं आपसे अहद करता हूँ, मैं अपने पिछलों से आपको मख़्फ़ी ओझल रखूँगा (किसी को इधर नहीं आने दूँगा) और यह मेरा तरकश है, उससे आप एक तीर ले लें, क्योंकि आप फ़लाँ फ़लाँ मक़ाम पर मेरे ऊँटों और ग़ुलामों के पास से गुज़रेंगे, तो अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ उनमें से ले लें, आपने फ़र्माया, 'हमें तुम्हारे ऊँटों की ज़रूरत नहीं।' चुनाँचे हम रात को मदीना पहुँचे, वहाँ के बाशिन्दों में आपको अपने अपने पास ठहराने के सिलसिले में इख़्तिलाफ़ हुआ, तो आपने फ़र्माया, 'मैं बनू नज्जार के यहाँ ठहरूँगा, जो अब्दुल मुत्तलिब के मामू हैं, इससे मैं उनकी

وَحَدَّثَنِيهِ زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، ح وَحَدَّثَنَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، كِلاَهُمَا عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ اشْتَرَى أَبُو بَكْرٍ مِنْ أَبِي رَحْلاً بِثَلاَثَةَ عَشَرَ دِرْهَمًا وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمَعْنَى حَدِيثِ زُهَيْرٍ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ وَقَالَ فِي حَدِيثِهِ مِنْ رِوَايَةِ عُثْمَانَ بْنِ عُمَرَ فَلَمَّا دَنَا دَعَا عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَسَاخَ فَرَسُهُ فِي الأَرْضِ إِلَى بَطْنِهِ وَوَثَبَ عَنْهُ وَقَالَ يَا مُحَمَّدُ قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ هَذَا عَمَلُكَ فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يُخَلِّصَنِي مِمَّا أَنَا فِيهِ وَلَكَ عَلَىَّ لأُعَمِّيَنَّ عَلَى مَنْ وَرَائِي وَهَذِهِ كِنَانَتِي فَخُذْ سَهْمًا مِنْهَا فَإِنَّكَ سَتَمُرُّ عَلَى إِبِلِي وَغِلْمَانِي بِمَكَانِ كَذَا وَكَذَا فَخُذْ مِنْهَا حَاجَتَكَ قَالَ " لاَ حَاجَةَ لِي فِي إِبِلِكَ " . فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ لَيْلاً فَتَنَازَعُوا أَيُّهُمْ يَنْزِلُ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ " أَنْزِلُ عَلَى

بَنِي النَّجَّارِ أَخْوَالِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ أُكْرِمُهُمْ بِذَلِكَ " . فَصَعِدَ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ فَوْقَ الْبُيُوتِ وَتَفَرَّقَ الْغِلْمَانُ وَالْخَدَمُ فِي الطُّرُقِ يُنَادُونَ يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُولَ اللَّهِ يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُولَ اللَّهِ.

इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई करूँगा।' मर्द और ओ़रतें अपने घरों की छतों पर चढ़ गए, बच्चे और नौकर चाकर रास्तों में फैल गए, वह पुकार रहे थे, ऐ मुहम्मद(ﷺ)! ऐ मुहम्मद(ﷺ)! ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)!

तख़रीज 7522 : इसकी तखरीज गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : इस हदीस में, या मुहम्मद और या रसूलल्लाह कहा, आपकी आमद पर इज़्हारे मसर्रत व शादमानी के लिए है और आप उनके सामने मौजूद थे, इससे आजकल या मुहम्मद या रसूलल्लाह(ﷺ) के नारे का जवाज़ साबित करना क़यास मअ़ल फ़ारिक़ है, अगर उन्होंने यह अल्फ़ाज़ आपकी ग़ैर मौजूदगी जबकि आप उनके सामने नहीं थे, कहे होते तो फिर क़यास हो सकता था। रावी का यह कहना कि 'क़दिम्ना लैलन' रात को पहुँचे दुरुस्त नहीं है क्योंकि आप मदीना मुनव्वरा में दिन को दाख़िल हुए थे और आपने सफ़री ज़रूरत के बावजूद, इस्तिग़ना और बेनियाज़ी का इज़्हार करते हुए सुराक़ा से कोई चीज़ नहीं ली।

Sherkhan
9825 696 131

इस किताब के कुल बाब 08 और 40 अहादीस हैं।

किताबुत तफ़्सीर
तफ़्सीर का बयान

हदीस नम्बर 7523 से 7563 तक

तआरूफ़ किताबुत तफ़्सीर

सहीह मुस्लिम का आख़री हिस्सा किताबुत तफ़्सीर पर मुश्तमिल है। ये इन्तेहाई मुख़्तसर है। बज़ाहिर लगता है कि इमाम मुस्लिम (رحمه الله) ने तफ़्सीर के हवाले से जो सही अहादीस़ मौजूद थीं उनका अहाता करने की कोशिश नहीं की, लेकिन अगर इस किताब की अहादीस़ और इनकी तर्तीब का बग़ौर मुताला किया जाये तो ये बात समझ में आती है कि तफ़्सीर से मुताल्लिका अहादीस़ का एहाता उनका मक़सद ही न था बल्कि उन्होंने किताबुत्तफ़्सीर को इस तरह तर्तीब दिया है कि तफ़्सीर के बुनियादी उसूल समझ में आ जायें। इस किताब के पहले बाब में मुतफ़र्रिक़ आयात की तफ़्सीर पर मुश्तमिल अहादीस़ हैं। सबसे पहली हदीस़ से ये बात समझ में आती है कि अल्लाह की नाज़िल करदा हिदायत बल्कि उसके अल्फ़ाज़ तक इन्तेहाई अहम हैं, उनका तहफ़्फ़ुज़ और उनके मक़सूद के मुताबिक़ उन पर अ़मल करना कामयाबी का ज़रिया है। वह्य के अल्फ़ाज़ को संजीदगी से न लेने वाले और उन्हें इस्तेहज़ा का निशाना बनाने वाले यहूद की तरह अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हो जाते हैं।

दूसरी हदीस़ से ये वाज़ेह होता है कि क़ुर्आन, जो अल्लाह की वह्य है, इन्सानों की ज़रूरत और हालात के मुताबिक़ नाज़िल हुआ है। उसके बाद हज़रत ऊमर (رضي الله عنه) से मरवी अहादीस़ हैं, उनसे पता चलता है कि सहाबा किराम (رضي الله عنهم) ने जिन जिन मौक़े पर और जिन हालात में क़ुर्आन मजीद नाज़िल हुआ उनको अच्छी तरह याद रखा, वह उन सब बातों की अहमियत से पहले दिन ही से आगाह थे, फिर मुख़्तलिफ़ आयात की तफ़्सीर में हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा (رضي الله عنها) से मनक़ूल अहादीस़ हैं। इन अहादीस़ से अच्छी तरह वाज़ेह हो जाता है कि क़ुर्आन मजीद के कुछ वज़ाहत तलब मक़ामात को सही तौर पर समझने के लिये इन हालात को पेशे नज़र रखना नागुज़ीर है जिनमें आयात का नुज़ूल हुआ। हज़रत आ़यशा (رضي الله عنها) से जिन आयात की तफ़्सीर इन अहादीस़ में मनक़ूल है उनका सही मफ़हूम हज़रत आ़यशा (رضي الله عنها) की तफ़्सीर से समझ में आता है। हज़रत आ़यशा (رضي الله عنها) ने मफ़हूम का तअय्युन उन हालात की बुनियाद पर और इस तर्तीब को मल्हूज़ रखते हुये किया जिसके मुताबिक़ आयात नाज़िल हुईं। ये भी एक दिलचस्प पहलू है कि इमाम मुस्लिम (رحمه الله) ने हज़रत आ़यशा(رضي الله عنها) के हवाले से जो अहादीस़ बयान की। उनका ताल्लुक़ उन्हीं आयात से है जो ख़्वातीन के हुक़ूक़ और ख़ानगी मामलात के बारे में नाज़िल हुईं, लेकिन उनकी तफ़्सीर उन्हीं मसाइल से मुताल्लिक़ा आयात तक महदूद नहीं। बतौर नमूना जंगे ख़न्दक़ के दौरान में मुसलमानों की हालत की मन्ज़र कशी करने वाली आयत के तअय्युन पर मबनी हदीस़ भी शामिल है। इसी तरह वह हदीस़ भी शामिल है जिसमें हज़रत आ़यशा (رضي الله عنها) ने क़ुर्आन मजीद की आयत को रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद के हालात पर मुन्तबिक़ करके दिखाया है।

इसके बाद हज़रत इब्ने अब्बास (ﷺ) से मरवी अहादीस हैं। उन्होंने इन आयात का मफ़हूम, जिनके बारे में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया था, नुज़ूल के हालात और आयात की तर्तीब की रोशनी में करके रहनुमाई मुहैया की और इख़्तिलाफ़ मिटाया। उनकी तफ़्सीर से पता चला कि वह क़ुर्आन के हुक्म और मफ़हूम के हवाले से किसी क़िस्म का रिआयती पहलू तलाश करने के रवादार न थे चाहे ज़द किसी पर भी पड़ती हो। हज़रत इब्ने अब्बास (ﷺ) तर्तीबे नुज़ूल को मल्हूज़ रखने की अहमियत को वाज़ेह करने के लिये तफ़्सीर के तालिबे इल्मों से इसके मुताल्लिक़ सवाल भी करते थे। (हदीस: 7546)

फिर इमाम मुस्लिम (رحمہ اللہ) ने हज़रत बराअ बिन आज़िब, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत जाबिर (ﷺ) से मुख़्तलिफ़ रिवायात पेश की। और दिखाया कि सहाबा किराम (ﷺ) किस तरह मुख़्तलिफ़ हालात में उतरने वाली आयाते मुबारका का मफ़हूम उन हालात की रोशनी में करते थे और इस तरीक़े से मफ़हूम किस क़द्र वाज़ेह हो जाता है।

हज़रत इब्ने अब्बास (ﷺ) ने क़ुर्आन के तालिबे इल्मों की तफ़हीम के लिये मुख़्तलिफ़ सूरतों के मौज़ूआत की निशानदेही करके उनके काम को आसान फ़रमाया। तफ़्सीर के हवाले से ये भी इन्तेहाई अहम नुक्ता है।

शराब की हुरमत के हवाले से हज़रत उमर (ﷺ) से मरवी जो अहादीस पेश की गईं उनसे वाज़ेह होता है कि मफ़हूम के तअय्युन के लिये शाने नुज़ूल को मल्हूज़ रखना ज़रूरी है लेकिन इससे उनके हुक्म में किसी तरह की तख़्सीस या तहदीद नहीं होती। शाने नुज़ूल से सही मफ़हूम का तअय्युन होता है लेकिन हुक्म आम और दाइमी होता है। उनकी हदीस से ये भी पता चलता है कि ये निशानदेही फ़रमाई और वाज़ेह किया कि क़ुर्आन के मफ़हूम का तअय्युन आप (ﷺ) के फ़रामीन की रोशनी ही में हो सकता है। उन्होंने इस चैलेंज का सरे आम सहाबा के सामने ज़िक्र करके उनकी हिम्मतों को महमीज़ दी कि वह एक दूसरे से रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़्यादा से ज़्यादा फ़रामीन मालूम करें, उन पर ग़ौर व ख़ौज़ करें और मुश्किल मसाइल को हल करें। अल्हम्दुलिल्लाह उम्मत ने इस चैलेंज को क़बूल किया और बेहतरीन नतीजे सामने आये।

हज़रत अबू ज़र (ﷺ) से मरवी आख़री हदीस का सबूत है कि फ़रामीने रसूल और आसारे सहाबा मयस्सर न हों तो क़ुर्आन मजीद की असल तफ़्सीर करना मुमकिन ही नहीं। असल तफ़्सीर, तफ़्सीरे मासूर ही है

57 : किताबुत्तफ़्सीर

बाब 1 : मुतफ़र्रिक़ आयात की तफ़्सीर

(1) بَابُ : فِى تَفْسِيرِ آيَاتٍ، مُّتَفَرِّقَةٍ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم . فَذَكَرَ أَحَادِيثَ مِنْهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم " قِيلَ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ { ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ يُغْفَرْ لَكُمْ خَطَايَاكُمْ} فَبَدَّلُوا فَدَخَلُوا الْبَابَ يَزْحَفُونَ عَلَى أَسْتَاهِهِمْ وَقَالُوا حَبَّةٌ فِي شَعَرَةٍ" .

(7523) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हम्माम बिन मुनब्बिह् (रह.) की बयान की हुई अहादीस में से एक हदीस यह है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, 'बनी इस्राईल को हुक्म दिया गया, दरवाज़ा से गुज़रो झुकते हुए और कहना, 'माफ़ी की दरख़्वास्त है, तुम्हारी ख़ताएँ माफ़ कर दी जाएँगी, तो उन्होंने तब्दीली कर दी, तो दरवाज़े से गुज़रे अपनी सुरीनों पर घिसटते हुए और कहने लगे, दाना बाली में (मत्लूब है)।'

तख़रीज 7523 : सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 28; हदीस : 3403; किताबुत्तफ़्सीर : 4641.

फ़ायदा : बनी इस्राईल के जब मन्न और सलवा (एक तरह का भोजन) से दिल भर गए और उन्होंने ज़मीनी ग़िज़ाओं का मुतालबा किया, तो उन्हें यह हुक्म दिया गया कि वह अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हुए सज्दारेज़ होकर या आजिज़ी व फ़रोतनी इख़्तियार करते हुए, झुककर दरवाज़े से गुज़रें, लेकिन उन्होंने अपनी रिवायती सरकशी से काम लेते हुए, उस हुक्म का मज़ाक़ बनाया, सज्दा या

आजिज़ी व इंकिसारी के बजाए तकब्बुर व घमण्ड से सुरीनों के बल घिसटते हुए और माफ़ी की बजाए, बालियों में दाना माँगते हुए दरवाज़े से गुज़रे, अस्ताह उस्त (सुरीन) की जमा है। और दरवाज़ा किसी बस्ती या शहर का था, इसके बारे में इख़्तिलाफ़ है, हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने बैतुल मक़्दिस का दरवाज़ा मुराद लिया, कुछ ने कहा बाबे लुद्द और कुछ ने बाबे अरीहा और कुछ ने कहा कोई मिस्री शहर मुराद है।

(7524) हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की वफ़ात से पहले आप पर वह्य लगातार उतारी, यहाँ तक कि आप फ़ौत हो गए और आपकी वफ़ात के अ़हदो ज़माना में वह्य का नुज़ूल बहुत बढ़ गया था, यानी आपकी ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम में वही की आमद ज़्यादा हो गई थी।

तख़रीज 7524 : सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन : 4982.

حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ بُكَيْرٍ النَّاقِدُ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ، حُمَيْدٍ - قَالَ عَبْدٌ حَدَّثَنِي وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، - يَعْنُونَ ابْنَ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ - حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، - وَهُوَ ابْنُ كَيْسَانَ - عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ، مَالِكٍ أَنَّ اللَّهَ، عَزَّ وَجَلَّ تَابَعَ الْوَحْىَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَبْلَ وَفَاتِهِ حَتَّى تُوُفِّيَ وَأَكْثَرُ مَا كَانَ الْوَحْىُ يَوْمَ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم .

(7525) हजरत तारिक़ बिन शिहाब (रज़ि.) से रिवायत है कि यहूदियों ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा, आप हज़रात एक ऐसी आयत तिलावत करते हैं, अगर वह हम पर उतरती तो हम उसके नुज़ूल के दिन को त्यौहार क़रार देते, तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया, मुझे ख़ूब इल्म है, वह कहाँ उतरी और किस दिन उतरी और जब उतरी, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) कहाँ थे, वह मक़ामे अ़रफ़ात में उतरी, जबकि रसूलुल्लाह(ﷺ) वहाँ ठहरे

حَدَّثَنِي أَبُو خَيْثَمَةَ، زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى - وَاللَّفْظُ لاِبْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، - وَهُوَ ابْنُ مَهْدِيٍّ - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ، بْنِ شِهَابٍ أَنَّ الْيَهُودَ، قَالُوا لِعُمَرَ إِنَّكُمْ تَقْرَءُونَ آيَةً لَوْ أُنْزِلَتْ فِينَا لاَتَّخَذْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ عِيدًا . فَقَالَ عُمَرُ إِنِّي لأَعْلَمُ حَيْثُ أُنْزِلَتْ وَأَىَّ يَوْمٍ أُنْزِلَتْ وَأَيْنَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم

حَيْثُ أُنْزِلَتْ أُنْزِلَتْ بِعَرَفَةَ وَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم وَاقِفٌ بِعَرَفَةَ . قَالَ سُفْيَانُ أَشُكُّ كَانَ يَوْمَ جُمُعَةٍ أَمْ لاَ . يَعْنِي } الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي{

हुए थे, सुफ़्यान (रह.) कहते हैं, मुझे शक है कि वह जुम्अे का दिन था या नहीं, आयत से मुराद है, तर्जुमा 'आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (दस्तूरे ज़िन्दगी) मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत (शरीअत) पूरी कर दी।' (अल्माइदा : आ. 3)

सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान : 45; किताबुल मग़ाज़ी : 4407; किताबुत्तफ़्सीर : 4606; किताबुल एतिसाम : 7268; जामेअ तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन : 3043; नसाई, किताबुल मनासिक : 3002.

फ़ायदा : यह आयते मुबारका दो ईदों के दिन, मैदाने अरफ़ात में उतरी, हफ़्ते की ईद यानी जुम्अे का दिन था और सालाना ईद, अरफ़ा का दिन था और मुसलमानों के लिए यह दोनों ईद के दिन हैं, क्योंकि अरफ़े का दिन, ईदुल अज़्हा का पेश ख़ैमा है और मुसलमानों का सबसे बड़ा इज्तिमाअ है, उसी दिन अरफ़ात के मैदान में होता है, अपने तौर पर ईद का दिन मुक़र्रर करने की ज़रूरत ही नहीं है।

कुछ हज़रात ने इस हदीस से इस्तिदलाल करते हुए लिखा है, (इससे मालूम हुआ कि किसी दीनी कामयाबी के दिन को ख़ुशी का दिन मनाना जाइज़ और सहाबा से साबित है, वरना हज़रत उमर, इब्ने अब्बास (रज़ि.) साफ़ फ़र्मा देते कि जिस दिन कोई ख़ुशी का वाक़िया हो उसकी यादगार क़ायम करना और उस दिन को ईद मनाना हम बिदअत जानते हैं, इससे साबित हुआ कि ईद मीलाद मनाना जाइज़ है, क्योंकि वह मख़्लूक़ात में सबसे बेहतर मख़्लूक़ की यादगार व शुक्रगुज़ारी है।' (ख़ज़ाइनुल अरक़ान अज़ मौलाना नईम मुराद आबादी, पेज 171)

सवाल यह है कि अगर किसी ख़ुशी के वाक़िया की यादगार क़ायम करना और उस दिन को ईद बनाना सहाबा किराम के नज़दीक जाइज़ था, तो उन्होंने हर साल तक्मीले कुरआन की यादगार क्यूँ नहीं मनाई और उसके लिए ईद वाला जश्न क्यूँ क़ायम न किया और क्या आज मुसलमान तक्मीले कुरआन का जश्न, नौ ज़िल हिज्ज को मनाते हैं और ईद मीलादुन्नबी की तरह जलसे और जुलूस निकालते हैं, सहाबा किराम ने ग़ज़्व-ए-बद्र का जश्न मनाया, फ़तहे मक्का के दिन को ईद का दिन क़रार पाया या ईद मीलादुन्नबी के लिए, आपकी पैदाइश के दिन को ईद का दिन क़रार दिया, चारों इमामों में से किसी ने किसी तीसरी ईद की निशानदेही की और ईदैन की तरह अपनी किताबों में उसके लिए अब्वाब क़ायम

किए? ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा अल्लाह तआला की मुक़र्ररकर्दा हैं इसी तरह अ़रफ़ा और जुम्अ़े का दिन पहले से ईद का दिन है न कि क़ुरआन के नुज़ूल की तक्मील के बाद।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ - وَاللَّفْظُ لأَبِي بَكْرٍ - قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ، اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، قَالَ قَالَتِ الْيَهُودُ لِعُمَرَ لَوْ عَلَيْنَا مَعْشَرَ يَهُودَ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ { الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِينًا} نَعْلَمُ الْيَوْمَ الَّذِي أُنْزِلَتْ فِيهِ لاَتَّخَذْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ عِيدًا . قَالَ فَقَالَ عُمَرُ فَقَدْ عَلِمْتُ الْيَوْمَ الَّذِي أُنْزِلَتْ فِيهِ وَالسَّاعَةَ وَأَيْنَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم حِينَ نَزَلَتْ نَزَلَتْ لَيْلَةَ جَمْعٍ وَنَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِعَرَفَاتٍ .

(7526) हजरत त़ारिक़ बिन शिहाब (रज़ि.) बयान करते हैं, यहूदियों ने हजरत उ़मर (रज़ि.) से कहा, अगर हम पर यानी यहूदियों के गिरोह पर यह आयत उतरती, 'आज के दिन, मैंने तुम्हारा ज़ाब्ता–ए–हयात मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत की तक्मील कर दी और मैंने तुम्हारे लिए इस्लाम को बत़ौर दीन पसंद कर लिया' उस दिन को हम जान लेते जिसमें यह उतरती तो हम उस दिन को ईद (जश्न व मसर्रत) का दिन क़रार देते, तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जवाब दिया, मुझे उस दिन का ख़ूब इल्म है, जिसमें यह उतरी और उस घड़ी (वक़्त) का भी और नुज़ूल के वक़्त रसूलुल्लाह कहाँ थे, उसका भी, यह मुज़दलिफ़ा की रात उतरी, जबकि हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ अ़रफ़ात में थे।

इसकी तख़रीज हदीस 7441 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : अ़रफ़ा के दिन शाम का वक़्त होगा, इसलिए उसको लैलते मुज़्दलिफ़ा से ताबीर कर दिया, वरना सूरज के ग़ुरूब हो जाने के बाद अ़रफ़ात से कूच शुरू हो जाता है और मग़रिब की नमाज़ मुज़दलिफ़ा में आकर पढ़ी जाती है और यह बात कहने वाले कअ़ब अह़बार और उनके साथी थे, कअ़ब अह़बार बाद में मुसलमान हो गए थे।

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو عُمَيْسٍ، عَنْ قَيْسِ، بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، قَالَ جَاءَ رَجُلٌ

(7527) हजरत त़ारिक़ बिन शिहाब (रज़ि.) बयान करते हैं, एक यहूदी आदमी ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास आकर कहने लगा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! तुम्हारी किताब में एक आयत है, जिसे आप पढ़ते हैं, अगर

مِنَ الْيَهُودِ إِلَى عُمَرَ فَقَالَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ آيَةٌ فِي كِتَابِكُمْ تَقْرَءُونَهَا لَوْ عَلَيْنَا نَزَلَتْ مَعْشَرَ الْيَهُودِ لاَتَّخَذْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ عِيدًا . قَالَ وَأَىُّ آيَةٍ قَالَ { الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِينًا} فَقَالَ عُمَرُ إِنِّي لأَعْلَمُ الْيَوْمَ الَّذِي نَزَلَتْ فِيهِ وَالْمَكَانَ الَّذِي نَزَلَتْ فِيهِ نَزَلَتْ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِعَرَفَاتٍ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ .

वह हम यहूदियों के गिरोह पर उतरती, तो हम उस दिन को ईद बना लेते, मैंने पूछा वह कौनसी आयत है? उस आदमी ने कहा, 'आज के दिन मैंने तुम पर तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौर दीन पसंद कर लिया।' तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जवाब दिया, मैं उस दिन को ख़ूब जानता हूँ, जिसमें यह उतरी है और उस जगह को भी जहाँ यह उतरी है, यह रसूलुल्लाह(ﷺ) पर मक़ामे अरफ़ात में जुम्अे के दिन उतरी है।'

इसकी तख़रीज हदीस 7441 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي أَبُو الطَّاهِرِ، أَحْمَدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ سَرْحٍ وَحَرْمَلَةُ بْنُ يَحْيَى التُّجِيبِيُّ - قَالَ أَبُو الطَّاهِرِ حَدَّثَنَا وَقَالَ، حَرْمَلَةُ أَخْبَرَنَا - ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ عَنْ قَوْلِ اللَّهِ، { وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ، تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَى وَثُلاَثَ وَرُبَاعَ} قَالَتْ يَا ابْنَ أُخْتِي هِيَ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا

(7528) हजरत उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) बयान करते हैं कि उन्होंने हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से अल्लाह के इस फ़र्मान के बारे में पूछा, 'और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम बच्चों के सिलसिले में इंसाफ़ नहीं कर सकोगे, तो फिर (दूसरी) औरतों में से जो तुम्हें पसंद आएँ, दो, तीन या चार से निकाह कर लो।' (निसाअ आयत नम्बर 3)

हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा, ऐ मेरे भांजे! इससे मुराद वह यतीम बच्ची है, जो अपने वली (सरपरस्त) की गोद (किफ़ालत) में हो और उसके साथ उसके माल में हिस्सेदार हो, चुनाँचे उस वली को उसका माल व जमाल भा जाए (पसंद आ जाए) इसलिए उसका सरपरस्त उससे, उसके मुहर में इंसाफ़ किये

تُشَارِكُهُ فِي مَالِهِ فَيُعْجِبُهُ مَالُهَا وَجَمَالُهَا فَيُرِيدُ وَلِيُّهَا أَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِغَيْرِ أَنْ يُقْسِطَ فِي صَدَاقِهَا فَيُعْطِيَهَا مِثْلَ مَا يُعْطِيهَا غَيْرُهُ فَنُهُوا أَنْ يَنْكِحُوهُنَّ إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهُنَّ وَيَبْلُغُوا بِهِنَّ أَعْلَى سُنَّتِهِنَّ مِنَ الصَّدَاقِ وَأُمِرُوا أَنْ يَنْكِحُوا مَا طَابَ لَهُمْ مِنَ النِّسَاءِ سِوَاهُنَّ . قَالَ عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ اسْتَفْتَوْا رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بَعْدَ هَذِهِ الآيَةِ فِيهِنَّ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ اللاَّتِي لاَ تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ } . قَالَتْ وَالَّذِي ذَكَرَ اللَّهُ تَعَالَى أَنَّهُ يُتْلَى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ الآيَةُ الأُولَى الَّتِي قَالَ اللَّهُ فِيهَا { وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ } . قَالَتْ عَائِشَةُ وَقَوْلُ اللَّهِ فِي الآيَةِ الأُخْرَى {

बग़ैर शादी करना चाहे (उसको इतना देने के लिए तैयार न हो) जितना उसको दूसरा शख़्स दे सकता है, तो ऐसी सूरत में उनको (वलियों) को उनसे इंसाफ़ किये बग़ैर शादी करने से रोक दिया गया है, जबकि वह उनको उनके मुहर में, उनकी आ़ला मैयार पर नहीं पहुँचाते और उनको यह हुक्म दिया गया है, वह उनके सिवा, उन औ़रतों से निकाह कर ले, जो उन्हें पसंद हों।

उ़र्वा (रह.) कहते हैं, हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा, फिर लोगों ने इस आयत के नुज़ूल के बाद, उनके बारे में, (यतीम बच्चियों के बारे में) सवाल किया, तो अल्लह तआ़ला ने यह आयत उतारी, 'लोग आपसे औ़रतों के बारे में फ़त्वा पूछते हैं, फ़र्मा दीजिए कि उनके बारे में अल्लाह तुम्हें फ़त्वा देता है और वह अह्काम भी जो यतीम औ़रतों के बारे में इस किताब में पहले से तुम्हें सुनाए जा चुके हैं , जिनको तुम वह हुक़ूक़ नहीं देते हो, जो उनके लिए मुक़र्रर किये गए हैं और (हुस्नो जमाल और माल की सूरत में) तुम उनसे निकाह में दिलचस्पी (रग़बत) रखते हो।' (निसाअ : आयत 127) हजरत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह तआ़ला ने जो यह फ़र्माया है, तुम पर किताब में पढ़ा जा चुका है, इससे पहली आयत मुराद है, जिसमें अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है और अगर तुम्हें ख़तरा हो कि तुम यतीम बच्चियों से इंसाफ़ नहीं कर सकोगे, तो और औ़रतों से जो

وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ} رَغْبَةَ أَحَدِكُمْ عَنِ الْيَتِيمَةِ الَّتِي تَكُونُ فِي حَجْرِهِ حِينَ تَكُونُ قَلِيلَةَ الْمَالِ وَالْجَمَالِ فَنُهُوا أَنْ يَنْكِحُوا مَا رَغِبُوا فِي مَالِهَا وَجَمَالِهَا مِنْ يَتَامَى النِّسَاءِ إِلاَّ بِالْقِسْطِ مِنْ أَجْلِ رَغْبَتِهِمْ عَنْهُنَّ .

तुम्हें पसंद हों, निकाह कर लो। (निसा :3)

हजरत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं, दूसरी आयत में अल्लाह का यह फ़र्मान, 'तुम उनसे शादी करने से बेरुख़ी बेनियाज़ी बरतते हो।' इससे मुराद, उनका उस यतीम बच्ची से बेरुख़ी बरतना है, जो उनकी गोद (किफ़ालत) में है जबकि उसके पास माल व जमाल कम है, इसलिए उन्हें उन यतीम औरतों से भी निकाह करने से मना कर दिया गया, जिनके माल व जमाल में वह रग़बत रखते हैं, इल्ला यह कि उनसे इंसाफ़ व अदल करें, क्योंकि वह उनसे (जमाल व माल की कमी की सूरत में) बेरुख़ी बरतते हैं।

सहीह बुख़ारी, किताबुश्शिर्कत : 2494; किताबुन्निकाह : 5064; सुनन अबूदाऊद : 2068; नसाई : 3346.

फ़ायदा : हज़रत आइशा (रज़ि.) का मक़सद यह है कि जाहिलियत के दौर में, जब किसी बच्ची के चचाज़ाद सरपरस्त बनकर उसकी परवरिश और किफ़ालत करते, तो अगर वह मालदार और हसीनो जमील होती, उससे शादी कर लेते, लेकिन उनको उनकी हैसियत व मैयार के मुताबिक़ मुहर न देते, बल्कि बहुत ही कम मुहर देते, लेकिन अगर वह मालदार और हसीनो जमील न होती, तो उससे शादी न करते, इसलिए फ़र्माया, जब तुम उनके हुस्नो जमाल और माल में कमी की वजह से उनको नज़र अंदाज़ करते हो, तो हुस्नो जमाल और माल की सूरत में भी, उनका पूरा पूरा हक़ अदा करो और मुहरे मिस्ल अदा करो, वरना उनके सिवा और औरतों से जो तुम्हें पसंद हों, चार तक शादी कर सकते हो।

وَحَدَّثَنَا الْحَسَنُ الْحُلْوَانِيُّ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، جَمِيعًا عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ، أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ عَنْ قَوْلِ اللَّهِ،

(7529) हजरत उर्वा (रज़ि.) बयान करते हैं, उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से अल्लाह के इस फ़र्मान के बारे में सवाल किया, 'और अगर तुम्हें ख़तरा हो कि तुम यतीम बच्चियों से इंसाफ़ न कर सकोगे, आगे ऊपर वाली हदीस

{وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ، تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى}
وَسَاقَ الْحَدِيثَ بِمِثْلِ حَدِيثِ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَزَادَ فِي آخِرِهِ مِنْ أَجْلِ رَغْبَتِهِمْ عَنْهُنَّ إِذَا كُنَّ قَلِيلاَتِ الْمَالِ وَالْجَمَالِ .

है, जिसके आख़िर में यह इज़ाफ़ा है, क्योंकि तुम उनसे बेरग़बती बरतते हो, जबकि उनका माल व हुस्न कम हो।

सहीह बुख़ारी, किताबुश्शिर्कत : 2494; किताबुत्तफ़्सीर : 4573.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ قَالاَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ { وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى} قَالَتْ أُنْزِلَتْ فِي الرَّجُلِ تَكُونُ لَهُ الْيَتِيمَةُ وَهُوَ وَلِيُّهَا وَوَارِثُهَا وَلَهَا مَالٌ وَلَيْسَ لَهَا أَحَدٌ يُخَاصِمُ دُونَهَا فَلاَ يُنْكِحُهَا لِمَالِهَا فَيَضُرُّ بِهَا وَيُسِيءُ صُحْبَتَهَا فَقَالَ { إِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ} يَقُولُ مَا أَحْلَلْتُ لَكُمْ وَدَعْ هَذِهِ الَّتِي تَضُرُّ بِهَا .

(7530) हजरत हिशाम (रह.) अपने वालिद से, वह हज़रत आइशा (रज़ि.) से अल्लाह तआला के इस फ़र्मान के बारे में बयान करते हैं, 'और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम बच्चियों के साथ इंसाफ़ नहीं कर सकोगे।' यह उस मर्द के बारे में नाज़िल हुई, यतीम बच्ची जिसकी सरपरस्ती में है और वह उसका वारिस भी है, बच्ची का माल है, उस बच्ची की ख़ातिर कोई झगड़ा करने वाला नहीं है, तो वह सरपरस्त आगे उसकी शादी नहीं करता, क्योंकि उसके पास माल है, (ख़ुद शादी करके) उसको नुक़्सान पहुँचाता है (मुहर पूरा नहीं देता) और उसके साथ बदसुलूकी करता है, इसलिए अल्लाह ने फ़र्माया, 'अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम बच्चियों के सिलसिले में इंसाफ़ नहीं कर सकोगे, तो (उनके सिवा और) उन औरतों से शादी कर लो, जो तुम्हें पसंद हों।' यानी जो मैंने तुम्हारे लिए हलाल क़रार दी हैं और उस लड़की को छोड़ दो, जिसको तुम नुक़्सान पहुँचाते हो।

सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरका : 2494; किताबुत्तफ़्सीर : 4573.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ } وَمَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ اللاَّتِي لاَ تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ{ قَالَتْ أُنْزِلَتْ فِي الْيَتِيمَةِ تَكُونُ عِنْدَ الرَّجُلِ فَتَشْرَكُهُ فِي مَالِهِ فَيَرْغَبُ عَنْهَا أَنْ يَتَزَوَّجَهَا وَيَكْرَهُ أَنْ يُزَوِّجَهَا غَيْرَهُ فَيَشْرَكُهُ فِي مَالِهِ فَيَعْضِلُهَا فَلاَ يَتَزَوَّجُهَا وَلاَ يُزَوِّجُهَا غَيْرَهُ .

(7531) ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) अल्लाह तआला के इर्शाद 'और वह अह़काम जो अल्लाह की किताब में तुम पर पढ़े जाते हैं, उन यतीम औरतों के बारे में जिनको तुम उनके फ़र्ज़कर्दा हुक़ूक़ नहीं देते हो और उनसे निकाह़ करने की रग़बत नहीं रखते हो' के बारे में कहा, यह यतीम बच्ची के बारे में उतरी है, वह किसी मर्द की किफ़ालत में होती है और वह बच्ची उसके माल में ह़िस्सेदार होती है, और वह उससे ख़ुद शादी करने से बेरुख़ी बरतता है और किसी और से भी उसकी शादी नहीं करना चाहता, क्योंकि वह उसके माल में ह़िस्सेदार बन जाएगा, इसलिए वह बच्ची को रोके रखता है, उससे ख़ुद शादी नहीं करता और न दूसरे से शादी कराता है (इस हरकत से मना किया गया है।)

सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह़ : 5131.

फ़ायदा : हजरत आइशा (रज़ि.) का मक़्सद यह है कि अगर बच्ची का हुस्नो जमाल कम है, लेकिन वह मालदार है, तो उसके सरपरस्त के लिए माल की लालच व ह़िर्स में यह जाइज़ नहीं है कि वह उसकी शादी ही न करे, उसको दो सूरतों में से एक को इख़्तियार करना या तो ख़ुद शादी कर ले और उसको उसकी हैसियत और मैयार के मुताबिक़ मुहर दे और हुस्ने मुआशिरत से काम ले, या फिर उसकी आगे शादी कर दे।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ } وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ{ الآيَةَ قَالَتْ هِيَ الْيَتِيمَةُ الَّتِي تَكُونُ

(7532) हजरत आइशा (रज़ि.) अल्लाह तआला के इस इर्शाद के बारे में 'लोग आपसे औरतों के बारे में फ़त्वा पूछते हैं, फ़र्मा दीजिए, अल्लाह तआला तुम्हें उनके बारे में फ़त्वा देता है, अल्आयत फ़र्माती हैं, इससे मुराद यतीम बच्ची है, जो किसी मर्द

عِنْدَ الرَّجُلِ لَعَلَّهَا أَنْ تَكُونَ قَدْ شَرِكَتْهُ فِي مَالِهِ حَتَّى فِي الْعَذْقِ فَيَرْغَبُ يَعْنِي أَنْ يَنْكِحَهَا وَيَكْرَهُ أَنْ يُنْكِحَهَا رَجُلاً فَيَشْرَكُهُ فِي مَالِهِ فَيَعْضِلُهَا .

की सरपरस्ती में है, शायद कि वह उस मर्द के माल में हिस्सेदार है, यहाँ तक कि वह खुजूर के दरख़्त में शरीक है, तो वह उससे ख़ुद निकाह करने से बेरग्बती इख़्तियार करता है और वह इसको भी नापसंद करता है कि किसी और मर्द से उसकी शादी कर दे, वह उसका माल में हिस्सेदार बन जाएगा, इसलिए वह यतीम बच्ची को (निकाह से) रोके रखता है।

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4600.

फ़ायदा : यतीम बच्ची जब अपने अ़म्मज़ाद (चचाज़ाद) की किफ़ालत में होगी, तो अपने वालिद की विरासत में हिस्सा लेगी, इसलिए वह अपने वली (सरपरस्त) के साथ माल में हिस्सेदार होगी, जब वह आगे शादी कर लेगी, तो उसका माल, अपने वली की निगरानी से निकलकर यतीम बच्ची के शौहर की निगरानी में चला जाएगा, और यह बात सरपरस्त को पसंद नहीं है, इसलिए अगरचे ख़ुद तो उस बच्ची के साथ निकाह नहीं करता, उसका आगे भी निकाह नहीं करता, ताकि उसके माल पर तसर्रुफ़ करने का मौक़ा हाथ से निकल न जाए, शरीअ़त इस ज़ुल्म की कैसे इजाज़त दे सकती थी, इसलिए उसके बारे में हिदायात नाज़िल की गईं।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ ﴿ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ﴾ قَالَتْ أُنْزِلَتْ فِي وَالِي مَالِ الْيَتِيمِ الَّذِي يَقُومُ عَلَيْهِ وَيُصْلِحُهُ إِذَا كَانَ مُحْتَاجًا أَنْ يَأْكُلَ مِنْهُ .

(7533) हजरत आइशा (रज़ि.) अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद, 'और जो फ़क़ीर व मोहताज हो, वह मअ़रूफ़ तरीक़े के मुताबिक़ खा ले।' (निसाअ : 6) के बारे में फ़र्माती हैं, यह आयत यतीम बच्चे के उस सरपरस्त निगरान के बारे में उतरी है, जो उसका निगरान और मुहाफ़िज़ है और उसके माल की इस्लाह व बेहतरी का ख़याल रखता है, जब वह मोहताज व ज़रूरतमंद हो, तो यतीम के माल से खा सकता है।

फ़ायदा : मअ़रूफ़ तरीक़े के मुताबिक़ खा सकता है, के बारे में उलमा का इख़्तिलाफ़ है, अक़्वाल

मुंदर्जा ज़ैल हैं।

1.वह यतीम के माल से अपने अ़मल, कारकर्दगी के मुताबिक़ ले सकता है, हज़रत आइशा (रज़ि.) हसन बसरी, इक्रिमा से और इब्ने अ़ब्बास का एक क़ौल यही है।

2.वह यतीम के माल से ज़रूरतमंद होने की सूरत में खा सकता है, यानी बक़द्रे ज़रूरत ले सकता है, हसन बस़री, इब्राहीम, अ़ता और मक्हूल का यही नज़रिया है, सही नज़रिया यही है कि वह ज़रूरतमंद होने की सूरत में बक़द्रे ज़रूरत ले सकता है, अगर ज़रूरत मंद न हो तो फिर नहीं ले सकता।

3.वह यतीम के माल से बतौर उज्रत या नान व नफ़्क़ा के लिए नहीं ले सकता, हाँ! बतौर क़र्ज़ ले सकता है और आसूदगी पैदा होने पर क़र्ज़ चुका देगा, हज़रत उ़मर (रज़ि.), उ़बैदा सलमानी, सईद बिन जुबैर और मुजाहिद वग़ैरह का यही नज़रिया है।

4.अगर माल सोना, चाँदी यानी नक़दी हो तो सिर्फ़ बसूरते क़र्ज़ ले सकता है, अगर ग़ल्ला हो तो बक़द्रे ह़ाजत ले सकता है, शअ़बी, अबुल आ़लिया और इब्ने अ़ब्बास का सही तरीन क़ौल यही है।

5.उज्रत व मज़दूरी और नान व नफ़्क़ा में से जो कम ख़र्च है, वह ले सकता है, इमाम शाफ़ेई (रह़.) का नज़रिया ये है (तफ़्सील के लिए अह़कामुल कुरआन लिल जस्सास और फ़त्हुल बारी देखिए।)

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ تَعَالَى } وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ{ قَالَتْ أُنْزِلَتْ فِي وَلِيِّ الْيَتِيمِ أَنْ يُصِيبَ مِنْ مَالِهِ إِذَا كَانَ مُحْتَاجًا بِقَدْرِ مَالِهِ بِالْمَعْرُوفِ .

(7534) हजरत आइशा (रज़ि.) अल्लाह के इर्शाद 'और जो मुस्तग़्नी हो, बेनियाज़ हो, वह बचे (कुछ न ले) और जो मोहताज हो, वह दस्तूर के मुताबिक़ खा ले' के बारे में फ़र्माती हैं, यह आयत यतीम बच्चे के निगरान (पालन-पोषण करने वाले) के बारे में उतरी है, वह उसके माल से ले सकता है, अगर मोहताज (ज़रूरतमंद) हो दस्तूर के मुताबिक़, माल की मिक़्दार को मल्हूज़ रखते हुए।

सहीह बुख़ारी, किताबुल वस़ाया : 2765.

फ़ायदा : यतीम के माल से ज़रूरत के वक़्त खाते वक्त माल की मिक़्दार का लिहाज़ भी रखा जाएगा, यह नहीं कि वह उसे अपने ख़र्च में ही उड़ा दे, जिस तरह इंसान क़लीलुल माल होने की सूरत में अपने अख़्राजात को महदूद करता है, इस तरह यहाँ भी किया जाए।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ .

(7535) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से भी बयान करते हैं।

तख़रीज 7535 : सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ : 1212; किताबुत्तफ़्सीर : 4575.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ } إِذْ جَاءُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ{ قَالَتْ كَانَ ذَلِكَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ .

(7536) हजरत आइशा (रज़ि.) अल्लाह अज़्ज व जल्ल के इस इर्शाद और जब वह (काफ़िर) तुम पर तुम्हारे ऊपर तुम्हारे नीचे से चढ़ आए और जब आँखें फिर गईं और कलेजे मुँह को आने लगे।' के बारे में फ़र्माती हैं, यह ख़ंदक़ के दिन का वाक़िया है।

सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी : 4103.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، } وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا{ الآيَةَ قَالَتْ أُنْزِلَتْ فِي الْمَرْأَةِ تَكُونُ عِنْدَ الرَّجُلِ فَتَطُولُ صُحْبَتُهَا فَيُرِيدُ طَلاَقَهَا فَتَقُولُ لاَ تُطَلِّقْنِي وَأَمْسِكْنِي وَأَنْتَ فِي حِلٍّ مِنِّي . فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ .

(7537) हजरत आइशा (रज़ि) इस आयत और अगर औरत को अपने शौहर से नफ़रत व कराहत (बदसुलूकी) और ऐराज़ (बेरुख़ी) का ख़तरा हो' (निसाअ : 128) के बारे में फ़र्माती हैं, यह उस औरत के बारे में उतरी है, जो किसी मर्द की सोहबत व रफ़ाक़त में लम्बी मुद्दत गुज़ारती है, अब वह उसे तलाक़ देना चाहता है, तो वह उसे कहती है मुझे तलाक़ न दो और मुझे अपने पास रखो और मैं तुम्हें इजाज़त देती हूँ, (तुम मेरी बारी दूसरी बीवी को दे दो या दूसरी शादी कर लो।' तो यह आयत उतरी।

सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह : 5206.

मुफ़रदातुल हदीस : (1) नुशूज़ : रिफ़अत व बुलंदी, अपने आपको बड़ा ख़्याल करके, उससे कराहत व नफ़रत का इज़्हार करना, उस पर ज़ुल्मो ज़्यादती करना।

(7538) हजरत आइशा (रज़ि.) अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के फ़र्मान, 'और अगर औरत को अपने शौहर की बदसुलूकी और बेरुख़ी का खौफ़ हो।' के बारे में फ़र्माती हैं, यह आयत उस औरत के बारे में नाज़िल हुई, जो किसी मर्द की बीवी है, शायद वह उससे ज़्यादा दिलचस्पी नहीं रखता, वह उसको पसंद नहीं है, लेकिन वह उसके साथ अर्सा गुज़ार चुकी है और औलाद भी है और उसको यह बात नापसंद है कि शौहर उसको छोड़ दे, इसलिए वह उसको कहती है, तुझे मेरे मामले में आज़ादी है।

حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ } وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا{ قَالَتْ نَزَلَتْ فِي الْمَرْأَةِ تَكُونُ عِنْدَ الرَّجُلِ فَلَعَلَّهُ أَنْ لاَ يَسْتَكْثِرَ مِنْهَا وَتَكُونُ لَهَا صُحْبَةٌ وَوَلَدٌ فَتَكْرَهُ أَنْ يُفَارِقَهَا فَتَقُولُ لَهُ أَنْتَ فِي حِلٍّ مِنْ شَأْنِي .

(7539) हिशाम (रह.) बिन उर्वा (रह.) अपने वालिद से बयान करते हैं कि मुझे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, ऐ भांजे! सहाबा किराम (रज़ि) के बाद आने वालों को हुक्म दिया गया कि वह नबी अकरम(ﷺ) के साथियों के लिए बख़्शिश की दुआ करें और उन लोगों ने उनको बुरा भला कहना शुरू कर दिया है।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ قَالَتْ لِي عَائِشَةُ يَا ابْنَ أُخْتِي أُمِرُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا، لأَصْحَابِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَسَبُّوهُمْ.

(7540) यही रिवायत इमाम साहब एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

وَحَدَّثَنَاهُ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ .

फ़ायदा : यह बात हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उस वक़्त कही, जबकि अहले मिस्र ने हज़रत उस्मान(रज़ि.) पर तअ़न व तश्नीअ़ किया, अहले शाम ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) पर और ख़ारजियों ने सब पर, अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है, उनके बाद आने वाले दुआ करते हैं,
(रब्बनग़्फ़िर लना वलि इख़्वानिनल्लज़ीना सबक़ूना बिल ईमान)
इसलिए हजरत इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते थे, सहाबा किराम को बुरा भला कहने वालों के लिए फ़ै में कोई हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह तो उन बाद वालों के लिए है जो उनके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं।

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ اخْتَلَفَ أَهْلُ الْكُوفَةِ فِي هَذِهِ الآيَةِ { وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ} فَرَحَلْتُ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَسَأَلْتُهُ عَنْهَا فَقَالَ لَقَدْ أُنْزِلَتْ آخِرَ مَا أُنْزِلَ ثُمَّ مَا نَسَخَهَا شَيْءٌ .

(7541) हजरत सईद बिन जुबैर (रज़ि.) बयान करते हैं, अहले कूफ़ा का इस आयत के बारे में इख़्तिलाफ़ हुआ, 'और जो शख़्स किसी मोमिन को जान बूझकर क़त्ल करेगा, तो उसकी जज़ा जहन्नम है।' (निसाअ : 93) तो मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की तरफ़ सफ़र किया और उनसे इस आयत के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, यह आयत आख़िर में उतरने वाली आयात में से है और इसकी कोई नासिख़ आयत नहीं है। (इसको किसी आयत ने मंसूख़ नहीं किया है।)

तख़रीज 7541 : सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4590; और बाब वल्लज़ीना ला यदऊन.... की हदीस 4763; सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4275; नसाई, किताब तहरीमुद्दम : 4011; किताबुल क़सामा : 4879.

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ، بَشَّارٍ قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا النَّضْرُ، قَالاَ جَمِيعًا حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . فِي حَدِيثِ ابْنِ جَعْفَرٍ نَزَلَتْ فِي آخِرِ مَا أُنْزِلَ . وَفِي حَدِيثِ النَّضْرِ إِنَّهَا لَمِنْ آخِرِ مَا أُنْزِلَتْ .

(7542) इमाम साहब यह रिवायत तीन और उस्तादों से बयान करते हैं, इब्ने जअ़फ़र (रह.) की रिवायत में है, आख़िर में उतरने वाली आयात में उतरी है और नज़्र (रह.) की हदीस में है, 'यह आख़िर में उतरने वाली आयात में से है।'

इसकी तख़रीज हदीस 7457 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ،

(7543) हजरत सईद बिन जुबैर (रह.) कहते हैं, मुझे अ़ब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ा (रह.) ने हुक्म दिया कि मैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि) से इन दो आयात के बारे में

قَالَ أَمَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبْزَى أَنْ أَسْأَلَ ابْنَ عَبَّاسٍ، عَنْ هَاتَيْنِ الآيَتَيْنِ، } وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا{ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ لَمْ يَنْسَخْهَا شَىْءٌ . وَعَنْ هَذِهِ الآيَةِ } وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ{ قَالَ نَزَلَتْ فِي أَهْلِ الشِّرْكِ .

पूछ लूँ 'और जो शख़्स किसी मोमिन को अमदन क़त्ल करेगा, उसकी सज़ा जहन्नम है, उसमें हमेशा रहेगा, तो मैंने उनसे पूछा, उन्होंने कहा, इसको किसी आयत से मंसूख़ नहीं किया और इस आयत के बारे में (और जो लोग अल्लाह के साथ किसी और इलाह को नहीं पुकारते और नाहक़ किसी ऐसी जान को क़त्ल नहीं करते हैं, जिसका क़त्ल अल्लाह ने हराम क़रार दिया है' (फ़ुरक़ान : 68) उन्होंने कहा, यह अहले शिर्क (काफ़िरों) के बारे में उतरी है।

सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार : 3855; किताबुत्तफ़्सीर : 4764, 4765, 4766; सुनन अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम वल फ़ितन : 4273; नसाई, किताब तहरीमुद्दम : 4013; किताबुल क़सामा : 4878.

حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ اللَّيْثِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، - يَعْنِي شَيْبَانَ - عَنْ مَنْصُورِ بْنِ الْمُعْتَمِرِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ،قَالَ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ بِمَكَّةَ { وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ} إِلَى قَوْلِهِ { مُهَانًا} فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ وَمَا يُغْنِي عَنَّا الإِسْلاَمُ وَقَدْ عَدَلْنَا بِاللَّهِ وَقَدْ قَتَلْنَا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ وَأَتَيْنَا الْفَوَاحِشَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ { إِلاَّ مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلاً صَالِحًا} إِلَى آخِرِ

(7544) हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, यह आयत मक्का में उतरी, वह लोग जो अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और इलाह को नहीं पुकारते हैं, इस आयत को मुहाना तक पढ़ा, इस पर मुश्रिकों ने कहा, हमें इस्लाम लाने का क्या फ़ायदा (वह अ़ज़ाब से हमें कैसे बचाएगा) हम तो अल्लाह के साथ शिर्क कर चुके हैं और उस नफ़्स को भी हमने क़त्ल किया है, जिसका क़त्ल अल्लाह ने हराम ठहराया है और बेहयाइयों का भी हमने इर्तिकाब किया है? इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह हिस्सा उतारा, मगर जिसने तौबा की, ईमान लाया

الآيَةِ . قَالَ فَأَمَّا مَنْ دَخَلَ فِي الإِسْلاَمِ وَعَقَلَهُ ثُمَّ قَتَلَ فَلاَ تَوْبَةَ لَهُ .

और अच्छे अमल किये (फ़ुरक़ान : 70) के आख़िर तक, हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, रहा वह मुसलमान जो मुसलमान हो गया और इस्लाम को समझ लिया और अच्छे अमल किये, फिर क़त्ल का इर्तिकाब किया, तो उसकी तौबा का एतिबार नहीं है।

इसकी तख़रीज हदीस 7459 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ هَاشِمٍ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ بِشْرٍ الْعَبْدِيُّ، قَالاَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، - وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ - عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ أَبِي بَزَّةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ أَلِمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا مِنْ تَوْبَةٍ قَالَ لاَ . قَالَ فَتَلَوْتُ عَلَيْهِ هَذِهِ الآيَةَ الَّتِي فِي الْفُرْقَانِ } وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ{ إِلَى آخِرِ الآيَةِ . قَالَ هَذِهِ آيَةٌ مَكِّيَّةٌ نَسَخَتْهَا آيَةٌ مَدَنِيَّةٌ } وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا{ . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ هَاشِمٍ فَتَلَوْتُ هَذِهِ الآيَةَ الَّتِي فِي الْفُرْقَانِ{ إِلاَّ مَنْ تَابَ}

(7545) हजरत सईद बिन जुबैर (रह.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा, क्या जो मुसलमान किसी मोमिन को अमदन (जान बुझ कर) क़त्ल कर देता है, वह तौबा कर सकता है? (उसकी तौबा क़ुबूल हो जाएगी?) उन्होंने जवाब दिया, नहीं! तो मैंने उन्हें सूरह फ़ुरक़ान की यह आयत सुनाई, 'वह लोग जो अल्लाह के साथ किसी और इलाह को नहीं पुकारते और न किसी ऐसी जान को नाहक़ क़त्ल करते हैं, जिसका क़त्ल अल्लाह ने हराम क़रार दिया है, आख़िर तक। उन्होंने फ़र्माया, 'यह आयत मक्की है, जिसे मदनी आयत 'जो शख़्स किसी मोमिन को क़त्ल करेगा, जान बूझकर तो उसका ठिकाना जहन्नम है, उसमें हमेशा रहेगा, इब्ने हाशिम की रिवायत में है, सईद (रह.) कहते हैं, 'मैंने सूरह फ़ुरक़ान की यह आयत सुनाई, 'इल्ला मन ताब' मगर जिसने तौबा की।

तख़रीज 7545 : सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4762; नसाई, किताब तहरीमुद्दम : 4012; किताबुल क़सामा : 4880.

फ़ायदा : इन अहादीस से मालूम होता है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) मोमिन को अ़मदन क़त्ल करने वाले को अबदी जहन्नमी ख़्याल करते थे और उसकी तौबा की क़ुबूलियत के क़ाइल नहीं थे और सूरह फ़ुरक़ान की आयत, जिससे यह साबित होता है कि क़ातिल की तौबा क़ुबूल होती है, इसके दो जवाब देते थे (1) सूरह फ़ुरक़ान मक्की सूरत है और सूरह निसाअ मदनी सूरत है, इसलिए उसने मक्की आयत को मंसूख़ कर दिया और मदनी आयत में, तौबा का ज़िक्र नहीं है और इसको किसी आयत ने मंसूख़ भी नहीं किया है, लिहाज़ा इसका हुक्म बरक़रार है। (2) सूरह फ़ुरक़ान की आयत का तअ़ल्लुक़ मुश्रिकों, काफ़िरों से है और इस्लाम तमाम गुनाहों को मिटा देता है, लेकिन जो इंसान मुसलमान हो चुका है, इस्लाम के अहकाम को समझ चुका है, फिर नाहक़ जान बूझकर किसी मोमिन को क़त्ल कर देता है, तो उसकी तौबा क़ुबूल नहीं की जाएगी।

लेकिन इसका जवाब यह है, दोनों आयात में तज़ाद नहीं है कि एक को मंसूख़ बनाने की ज़रूरत पड़े, हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ख़ुद, कुछ उन आयात को जिनको कुछ हज़रात मंसूख़ ठहराते थे, नासिख़ के साथ तत्बीक़ देकर उनके नस्ख़ का इंकार करते हैं, इन आयात में भी यही सूरत है कि अगर क़ातिल तौबा करता है और अपने अ़मल की इस्लाह कर लेता है, तो उसकी तौबा क़ुबूल होगी, लेकिन अगर वह तौबा नहीं करता, क्योंकि सूरह निसाअ की आयत में तौबा का ज़िक्र नहीं है, तो फिर अगर अल्लाह तआला उसको अपने फ़ज़्लो करम से माफ़ नहीं करता, तो उसकी सज़ा जहन्नम है और ख़ुलूद से मुराद तवील अ़र्सा है, जब वह अपने गुनाह की सज़ा भुगत लेगा, या उसके हक़ में किसी की सिफ़ारिश क़ुबूल हो जाएगी तो उसको जहन्नम से नजात मिल जाएगी और इसकी दलील यह है कि कुफ़्रो शिर्क सबसे बड़ा गुनाह है, अगर उससे तौबा क़ाबिले क़ुबूल है, तो क़त्ले नफ़्स, जो उसके मुक़ाबले में छोटा गुनाह है तो उसकी तौबा क्यूँ क़ाबिले क़ुबूल नहीं है और ख़ुद सूरह फ़ुरक़ान की आयत में लफ़्ज़े मन, उ़मूम पर दलालत करता है, इसमें काफ़िर या मोमिन की क़ैद नहीं है और आयत में लफ़्ज़ अगर आ़म है, तो उसको सबबे नुज़ूल के साथ ख़ास़ नहीं किया जाता, बल्कि लफ़्ज़ के उ़मूम की बिना पर आ़म ही रखा जाता है, नीज़ राहिब को क़त्ल करके, सौ क़त्ल करने वाले को अगर माफ़ी मिल सकती है और उसकी तौबा क़ुबूल हो सकती है तो एक मुसलमान की तौबा क्यूँ क़ुबूल नहीं हो सकती और उ़लमा के इसके बारे में मुंदर्जा ज़ेल क़ौल मिलते हैं (1) क़ातिल की तौबा क़ुबूल नहीं है, इब्ने अ़ब्बास, ज़ैद बिन साबित, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान, उ़बैद बिन उ़मैर, हसन बसरी और ज़ह्हाक (रहि.) से यही मंक़ूल है लेकिन मालूम होता है यह फ़त्वा उस इंसान को देते थे, जिसने क़त्ल किया नहीं है, वह क़त्ल करना चाहता है, इसलिए इब्ने उ़मर, इब्ने अ़ब्बास और ज़ैद बिन साबित (रज़ि.) से दूसरा (2) यह क़ौल भी मंक़ूल है कि उसकी तौबा क़ुबूल होगी। (3) क़ातिल का मामला अल्लाह के सुपुर्द है, वह तौबा करे या

तौबा न करे। अहनाफ़ अइम्मा अबू हनीफ़ा और उसके साथियों का यही क़ौल है। (4) अगर अल्लाह क़ातिल को सज़ा देना चाहे, माफ़ न करे, तो फिर सज़ा यही है, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का एक क़ौल यही है लेकिन जुम्हूर के नज़दीक क़ातिल की तौबा क़ुबूल है और यही सही मौक़िफ़ है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ عَبْدٌ أَخْبَرَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو عُمَيْسٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، قَالَ قَالَ لِي ابْنُ عَبَّاسٍ تَعْلَمُ - وَقَالَ هَارُونُ تَدْرِي - آخِرَ سُورَةٍ نَزَلَتْ مِنَ الْقُرْآنِ نَزَلَتْ جَمِيعًا قُلْتُ نَعَمْ . } إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ{ قَالَ صَدَقْتَ . وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ تَعْلَمُ أَىُّ سُورَةٍ . وَلَمْ يَقُلْ آخِرَ .

(7546) उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुनब्बिह् (रह.) बयान करते हैं, हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने मुझसे पूछा, क्या तुम्हें इल्म है (हारून ने कहा तद्‌री) कुरआन मजीद की आख़िरी मुकम्मल सूरत कौनसी नाज़िल हुई? मैंने कहा, हाँ! इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वल फ़त्ह है, उन्होंने कहा तूने सच कहा, इब्ने अबी शैबा की रिवायत में आख़िरि सूरतिन की जगह अय्यु सूरतिन (कौनसी सूरत) है।

وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو عُمَيْسٍ، بِهَذَا الإِسْنَادِ مِثْلَهُ وَقَالَ آخِرَ سُورَةٍ وَقَالَ عَبْدُ الْمَجِيدِ وَلَمْ يَقُلِ ابْنِ سُهَيْلٍ .

(7547) इमाम साहब एक और उस्ताद से यही रिवायत बयान करते हैं, उसमें आख़ि–र सूरतिन (आख़िरी सूरत) का लफ़्ज़ है और अ़ब्दुल मजीद के वालिद सुहैल का नाम नहीं है।

फ़ायदा : सबसे आख़िर में मुकम्मल नाज़िल होने वाली सूरत यही है, उसके बाद आयात का नुज़ूल तो हुआ है, कोई मुकम्मल सूरह एक बार में नाज़िल नहीं हुई है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، - وَاللَّفْظُ

(7548) हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, कुछ मुसलमानों की एक आदमी से उसकी चंद बकरियों के साथ

لِابْنِ أَبِي شَيْبَةَ - قَالَ حَدَّثَنَا وَقَالَ الآخَرَانِ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ لَقِيَ نَاسٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ رَجُلاً فِي غُنَيْمَةٍ لَهُ فَقَالَ السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ . فَأَخَذُوهُ فَقَتَلُوهُ وَأَخَذُوا تِلْكَ الْغُنَيْمَةَ فَنَزَلَتْ { وَلاَ تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلَمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا} وَقَرَأَهَا ابْنُ عَبَّاسٍ السَّلاَمَ .

मुलाक़ात हुई, तो उसने कहा, अस्सलामु अलैकुम, तो उन्होंने उसे पकड़कर क़त्ल कर दिया और उन चंद बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया, इस पर यह आयत नाज़िल हुई 'जो शख़्स तुमको सलाम पेश करे, उसके बारे में यह न कहो, तुम मोमिन नहीं हो।' (निसाअ : 94) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने अस्सलम की जगह अस्सलाम पढ़ा है।

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4591; सुनन अबू दाऊद, किताबुल हुरूफ़ वल क़िरअत : 3974.

फ़ायदा : हाफ़िज इब्ने हजर (रह.) ने इस आयत के शाने नुज़ूल में मुख़्तलिफ़ वाक़ियात बयान किये हैं, और ऐसे सब वाक़ियात इस आयत का मिस्दाक़ होंगे, क्योंकि असल मक़्सद तो यह है, इस्लाम का इज़्हार करने वाले पर बिला वजह बदगुमानी करना सही नहीं है, उसको उस वक़्त तक मुसलमान तसव्वुर किया जाएगा, जब तक उससे उस दावा के ख़िलाफ़ कोई हरकत सरज़द न हो और इस आयत में लफ़्ज़ अस्सलमु को अस्सलामु और अस्सिल्मु भी पढ़ा गया है, मक़्सद एक ही है।

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، عَنْ شُعْبَةَ، ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَابْنُ بَشَّارٍ - وَاللَّفْظُ لِابْنِ الْمُثَنَّى - قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ، يَقُولُ كَانَتِ الأَنْصَارُ إِذَا حَجُّوا فَرَجَعُوا لَمْ يَدْخُلُوا الْبُيُوتَ إِلاَّ مِنْ ظُهُورِهَا - قَالَ - فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَدَخَلَ مِنْ بَابِهِ فَقِيلَ لَهُ فِي ذَلِكَ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ }وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا{ .

(7549) हजरत बराअ (रज़ि.) बयान करते हैं, अंसार जब हज्ज करके वापिस आते, तो घरों में सिर्फ़ उनके पिछवाड़ों से दाख़िल होते, चुनाँचे एक आदमी आया, तो वह अपने (घर) के दरवाज़े से दाख़िल हो गया, तो इस सिलसिले में उसे तअ़ना दिया, जिस पर यह आयत उतरी, 'यह नेकी नहीं है कि तुम घरों में उनकी पिछली तरफ़ से आओ, (पिछवाड़े से आओ।)'

तख़रीज 7549 : सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज

फ़ायदा : ह़ुम्स (क़ुरैशी और ख़ुज़ाआ वग़ैरहुमा) के सिवा अरब लोग और अंसार, जब घर से ह़ज्ज और उ़म्रा के लिए निकलते और फिर किसी वजह से घर आने की ज़रूरत पेश आती, तो वह घर में दरवाज़ा से दाख़िल होना सही नहीं समझते थे, इसी तरह ह़ज्ज व उ़म्रा से फ़राग़त के बाद, दरवाज़ों की बजाये मकानों के पिछवाड़ों से या किसी दूसरे रास्ते से दाख़िल होते, शायद उस अजीबो ग़रीब ह़रकत का मुह़र्रिक यह वह्म हो कि जिन दरवाज़ों से गुनाहों का बोझ लादे हुए निकले थे, पाक हो जाने के बाद उन ही दरवाज़ों से घरों में दाख़िल होना सही नहीं है।

(2)

بَابُ : فِي قَوْلِهِ تَعَالَى (أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَن تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ)

बाब 2 : अल्लाह का फ़र्मान (क्या मोमिनों के लिए अभी वह वक़्त नहीं आया) कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से झुक जाएँ

حَدَّثَنِي يُونُسُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّدَفِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو، بْنُ الْحَارِثِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ عَوْنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ ابْنَ مَسْعُودٍ، قَالَ مَا كَانَ بَيْنَ إِسْلاَمِنَا وَبَيْنَ أَنْ عَاتَبَنَا اللَّهُ بِهَذِهِ الآيَةِ { أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ} إِلاَّ أَرْبَعُ سِنِينَ .

(7550) हजरत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि हमारे इस्लाम लाने और हमें इस आयत के ज़रिये एताब फ़र्माने के बीच सिर्फ़ चार साल का फ़ासला है (क्या मोमिनों के लिए अभी वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से पसीज जाएँ।' (सूरह ह़दीद : 16)

मुफ़रदातुल ह़दीस : अलम यअनि : किसी चीज़ का वक़्त हो जाना।

फ़ायदा : इस आयत के असल मुख़ात़ब वह लोग हैं, जिन्होंने मौक़ा की मुनासिबत से इस्लाम को तो क़ुबूल कर लिया था, मगर अभी तक इस्लाम के लिए जान को जोखिम में डालने और किसी क़िस्म की क़ुर्बानी के लिए तैयार नहीं थे।

(3)

بَابُ : فِيْ قَوْلِهِ تَعَالَى خُذُوا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ

बाब 3 :

हर मस्जिद में जाते वक़्त, अपने आपको आरास्ता करो, या हर नमाज़ के वक़्त अपना लिबास ज़ेबतन करो

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، ح وَحَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ، - وَاللَّفْظُ لَهُ - حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ، عَنْ مُسْلِمٍ الْبَطِينِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ كَانَتِ الْمَرْأَةُ تَطُوفُ بِالْبَيْتِ وَهِيَ عُرْيَانَةٌ فَتَقُولُ مَنْ يُعِيرُنِي تِطْوَافًا تَجْعَلُهُ عَلَى فَرْجِهَا وَتَقُولُ الْيَوْمَ يَبْدُو بَعْضُهُ أَوْ كُلُّهُ فَمَا بَدَا مِنْهُ فَلاَ أُحِلُّهُ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ { خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ}

(7551) हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं, जब औ़रत बैतुल्लाह का नंगे होकर त़वाफ़ करती तो कहती, कौन है जो मुझे त़वाफ़ करने के लिए कपड़ा दे, जिसे वह अपनी शर्मगाह पर रख सके और यह कहती, 'आज उसकी शर्मगाह का कुछ ह़िस्सा या कुल (पूरा) जिस्म खुल जाएगा और उसका जो ह़िस्सा खुलेगा, मैं उसको ह़लाल क़रार नहीं देती हूँ।' तो यह आयत उतरी, 'हर मस्जिद में अपनी ज़ीनत को यानी लिबास को ज़ेबतन करो।' (आराफ़ : 31)

नसाई, किताबुल मनासिक : 2956.

मुफ़रदातुल ह़दीस : तित्वाफ़ुन : वह लिबास जिसमें वह त़वाफ़ कर सके। (2) अल्यौमु यब्दू बअ़ज़ुहू औ कुल्लहू : आज अगर लिबास पूरा न मिला, तो शर्मगाह का कुछ ह़िस्सा खुल जाएगा और लिबास बिलकुल न मिला तो शर्मगाह मुकम्मल ही खुल जाएगी। फ़मा बदअ मिन्हू फ़ला उह़िल्लुहू शर्मगाह का कुछ या कुल जो भी खुले, मैं किसी के लिए उसकी त़रफ़ देखना या नज़र बाज़ी करना जाइज़ क़रार नहीं देती।

फ़ायदा : ह़ुम्स के सिवा बाक़ी क़बीलों का यह नज़रिया था कि जिन कपड़ों में हमने गुनाह किये हैं, उनमें ह़ज्ज या उ़म्रा का त़वाफ़ करना जाइज़ नहीं है, इसलिए अगर उन्हें क़ुरैश या उनके ह़लीफ़ लिबास दे देते, तो वह लिबास पहनकर त़वाफ़ कर लेते, वरना अपने कपड़े उतार देते और नंगे त़वाफ़ करते या फिर अपने उन कपड़ों को वहीं पड़े रहने देते और बक़ौल कुछ अगर अपने कपड़ों में तवाफ़

कर लेते, तो फिर त़वाफ़ के बाद उन कपड़ों का इस्तेमाल नहीं कर सकते थे, अगर नंगे त़वाफ़ कर लेते फिर पहन सकते थे, इसलिए अगर औ़रतों को ह़ुम्स से कपड़े न मिलते, तो वह नंगे त़वाफ़ करती थीं और अपनी शर्मगाह पर हाथ रख लेतीं।

बाब 4 : अल्लाह का फ़र्मान 'और अपनी लौण्डियों को ज़िना पर मजबूर न करो।'

(4) بَابُ : فِي قَوْلِهِ تَعَالَى (وَلَاتُكْرِهُوافَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ)

(7552) हजरत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल अपनी लौण्डी को कहता, जा हमारे लिए कुछ कमा ला, तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़र्माई, 'तुम अपनी लौण्डियों को बदकारी पर मजबूर न करो, जबकि वह अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करना चाहती हैं, ताकि तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान ह़ासिल कर सको और जो भी उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके उनको मजबूर करने के बाद (उन्हें) बख़्शने वाला, मेहरबान है।' (नूर : 33)

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَبُو كُرَيْبٍ جَمِيعًا عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ، -وَاللَّفْظُ لأَبِي كُرَيْبٍ - حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ كَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَىٍّ ابْنُ سَلُولَ يَقُولُ لِجَارِيَةٍ لَهُ اذْهَبِي فَابْغِينَا شَيْئًا فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ } وَلاَ تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْهُنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ{ لَهُنَّ { غَفُورٌ رَحِيمٌ}

फ़ायदा : कुछ बदबख़्त आज़ाद लोग दुनियावी माल की ह़िर्स़ व लालच में अपनी लौण्डियों से जबकि वह लौण्डी होने के बावजूद अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाजत करना चाहती थी, बदकारी करवाते, उसके लिए उन्हें मजबूर करते थे, तो अल्लाह तआ़ला ने ऐसी बान्दियों को जो मजबूरन यह नाज़ेबा ह़रकत करें, मअ़ज़ूर क़रार दिया और मुज्रिम उनके मालिकों और आक़ाओं को क़रार दिया, जिससे मालूम हुआ मजबूर और मक्हूर मर्द क़ाबिले मुवाख़िज़ा नहीं है।

وَحَدَّثَنِي أَبُو كَامِلٍ الْجَحْدَرِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ جَارِيَةً، لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُبَىِّ ابْنِ سَلُولَ يُقَالُ لَهَا مُسَيْكَةُ وَأُخْرَى يُقَالُ لَهَا أُمَيْمَةُ فَكَانَ يُكْرِهُهُمَا عَلَى الزِّنَى فَشَكَتَا ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَنْزَلَ اللَّهُ } وَلاَ تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ{ إِلَى قَوْلِهِ { غَفُورٌ رَحِيمٌ}

(7553) हजरत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिल सलूल की एक लौण्डी को मुसैका और दूसरी को उमैमा कहा जाता था और वह उन दोनों को बदकारी पर मजबूर करता था, तो उन दोनों ने उसकी नबी अकरम(ﷺ) से शिकायत की, चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी, 'और तुम अपनी बान्दियों को ज़िना पर मजबूर न करो, ग़फ़ूरुर रहीम तक।

(5)بَابُ : فِي قَوْلِهِ تَعَالَى (أُوْلَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ اِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ)

बाब 5 : जिनको यह लोग पुकारते हैं, वह ख़ुद अपने रब का तक़र्रुब चाहते हैं

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، فِي قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ } أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ{ قَالَ كَانَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ أَسْلَمُوا وَكَانُوا يُعْبَدُونَ فَبَقِيَ الَّذِينَ كَانُوا يَعْبُدُونَ عَلَى عِبَادَتِهِمْ وَقَدْ أَسْلَمَ النَّفَرُ مِنَ الْجِنِّ .

(7554) हजरत अ़ब्दुल्लाह (बिन मसऊ़द रज़ि.) अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान, 'जिन्हें यह लोग पुकारते हैं, वह तो ख़ुद अपने रब का वसीला (तक़र्रुब) तलाश करते हैं कि कौन उससे क़रीबतर होता है।' (बनीइस्राईल : 75) के बारे में कहते हैं, जिन्नों का एक गिरोह जिनकी बन्दगी की जाती थी, मुसलमान हो गया और जो लोग उनकी इबादत करते थे, वह उनकी इबादत पर क़ायम रहे, हालाँकि जिन्नों का गिरोह मुसलमान हो गया।'

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4714, 4715.

फ़ायदा : वसीला के मआ़नी तक़र्रुब व नज़दीकी है, मक़्सद यह है कि जिन लोगों की यह मुश्रिक बन्दगी करते हैं, वह जिन्न हों, या फ़रिश्ते या अम्बिया वह तो ख़ुद अल्लाह तआ़ला की बन्दगी करते हैं और उसका तक़र्रुब हासिल करने के लिए एक दूसरे से बढ़कर उसकी इताअ़त करते हैं, वह कैसे चाह सकते हैं कि कोई उनकी इबादत या बन्दगी करे।

(7555) हजरत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं, जिनको यह लोग पुकारते हैं, वह तो ख़ुद अपने रब की तरफ़ वसीला (क़ुर्ब) तलाश करते हैं, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं, इंसानों में से कुछ लोग जिन्नों के एक गिरोह की इबादत करते थे, तो जिन्नों का वह गिरोह मुसलमान हो गया और इंसानों ने उनकी इबादत को पकड़े रखा, इस पर यह आयत नाज़िल हुई, जिनको यह लोग पुकारते हैं, वह तो ख़ुद अपने रब की तरफ़ वसीला तलाश करते हैं।

इसकी तख़रीज हदीस 7470 में गुज़र चुकी है।

حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ الْعَبْدِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، { أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ} قَالَ كَانَ نَفَرٌ مِنَ الإِنْسِ يَعْبُدُونَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ فَأَسْلَمَ النَّفَرُ مِنَ الْجِنِّ . وَاسْتَمْسَكَ الإِنْسُ بِعِبَادَتِهِمْ فَنَزَلَتْ { أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ}

(7556) इमाम साहब यही रिवायत एक और उस्ताद से बयान करते हैं।

इसकी तख़रीज ह़दीस 7470 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِيهِ بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ، - يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ - عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ

(7557) हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) इस आयत के बारे में कि 'जिन्हें यह लोग पुकारते हैं, वह ख़ुद अपने रब की तरफ़ वसीला तलाश करते हैं और कहते हैं, उन चंद अ़रबों के बारे में नाज़िल हुई, जो जिन्नों के एक गिरोह की इबादत करते थे, तो जिन्न मुसलमान हो गए और वह इंसान जो उनकी इ़बादत करते थे, उन्हें पता ही न चला, तब यह आयत उतरी, जिन्हें यह लोग पुकारते हैं वह तो ख़ुद अपने रब का तक़र्रुब हासिल करते हैं।

इसकी तख़रीज ह़दीस 7373 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنِي حَجَّاجُ بْنُ الشَّاعِرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَعْبَدٍ الزِّمَّانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ، مَسْعُودٍ { أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ} قَالَ نَزَلَتْ فِي نَفَرٍ مِنَ الْعَرَبِ كَانُوا يَعْبُدُونَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ فَأَسْلَمَ الْجِنِّيُّونَ وَالإِنْسُ الَّذِينَ كَانُوا يَعْبُدُونَهُمْ لاَ يَشْعُرُونَ فَنَزَلَتْ { أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ}

(6)بَابُ : فِيْ سُوْرَةِ بَرَاءَةٌ وَالْأَنْفَالِ وَالْحَشْرِ

बाब 6 : सूरह बरा'त अन्फ़ाल और ह्रश्र के बारे में

حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُطِيعٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ سُورَةُ التَّوْبَةِ قَالَ آلتَّوْبَةِ قَالَ بَلْ هِيَ الْفَاضِحَةُ مَا زَالَتْ تَنْزِلُ وَمِنْهُمْ وَمِنْهُمْ . حَتَّى ظَنُّوا أَنْ لاَ يَبْقَى مِنَّا أَحَدٌ إِلاَّ ذُكِرَ فِيهَا . قَالَ قُلْتُ سُورَةُ الأَنْفَالِ قَالَ تِلْكَ سُورَةُ بَدْرٍ . قَالَ قُلْتُ فَالْحَشْرُ قَالَ نَزَلَتْ فِي بَنِي النَّضِيرِ .

(7558) हजरत सईद बिन जुबैर (रह) बयान करते हैं, मैंने ह्रज़रत इब्ने अ़ब्बस (रज़ि.) से पूछा, सूरह तौबा, फ़र्माने लगे, क्या वह तौबा है? बल्कि वह तो (फ़ाज़िह्रा) रुस्वा करने वाली) है, इसमें बार बार मिन्हुम, मिन्हुम उतरता रहा यहाँ तक कि उन्होंने (मुनाफ़िक़ों ने) यह समझा, यह हममें से किसी का ज़िक्र किये बग़ैर न रहेगी (हम सबको रुस्वा करके छोड़ेगी) मैंने पूछा, सूरह अंफ़ाल? (उसको अंफ़ाल क्यूँ कहते हैं?) उन्होंने फ़र्माया, यह सूरह बद्र है, (बद्र के वाक़ियात का तज़्किरा है।) मैंने कहा, तो सूरह ह्रश्र? फ़र्माने लगे, यह बनू नज़ीर के बारे में उतरी है।

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4645; बाब (1) की हदीस 4882, 4883; किताबुल मग़ाज़ी : 4029.

(7) بَابُ : فِي نُزُولِ تَحْرِيمِ الْخَمْرِ

बाब 7 : हुर्मते ख़म्र (शराब के ह्राम होने) का बयान

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ خَطَبَ عُمَرُ عَلَى مِنْبَرِ رَسُولِ

(7559) हजरत इब्ने उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि ह्रज़रत उ़मर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह(ﷺ) के मिम्बर पर ख़ुत्बा दिया, अल्लाह तआला की ह्रम्दो सना बयान की, फिर फ़र्माया, 'ह्रम्दो सलात के बाद,

اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم فَحَمِدَ اللّٰهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ أَمَّا بَعْدُ أَلاَ وَإِنَّ الْخَمْرَ نَزَلَ تَحْرِيمُهَا يَوْمَ نَزَلَ وَهِيَ مِنْ خَمْسَةِ أَشْيَاءَ مِنَ الْحِنْطَةِ وَالشَّعِيرِ وَالتَّمْرِ وَالزَّبِيبِ وَالْعَسَلِ . وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ وَثَلاَثَةُ أَشْيَاءَ وَدِدْتُ أَيُّهَا النَّاسُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ عَهِدَ إِلَيْنَا فِيهَا الْجَدُّ وَالْكَلاَلَةُ وَأَبْوَابٌ مِنْ أَبْوَابِ الرِّبَا .

ख़बरदार! शराब की हुर्मत जिस वक़्त नाज़िल हुई, तो वह पाँच चीज़ों से (आम तौर पर) तैयार की जाती थी, गंदुम, जौ, खजूर, मुनक़्क़ा और शहद से और ख़म्र (शराब) उसको कहते हैं, जो अक़्ल को ढाँप ले और तीन चीज़ें ऐसी हैं, जिनके बारे में, ऐ लोगों! चाहता था कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हमें उनके बारे में तफ़्सीली ताकीद फ़र्मा जाते, दादा की विरासत, कलाला की हक़ीक़त और सूद के कुछ अब्वाब व मसाइल की तफ़्सीलात।

सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर : 4619; किताबुल अशरिबा : 5581; और हदीस 5588; किताबुल एतिसाम : 7337; सुनन अबूदाऊद, किताबुल अशरिबा : 3669; जामेअ तिर्मिज़ी, किताबुल अशरिबा : 1874.

फ़ायदा : इस हदीस से साबित होता है, हर वह मशरूब जो अक़्ल को माउफ़ करे, अक़्ल पर असरअंदाज़ हो, वह ख़म्र (शराब) है, लिहाज़ा उसका इस्तेमाल और ख़रीदो फ़रोख़्त नाजाइज़ है, और वह नजिस पलीद है, तफ़्सीलात किताबुल अशरिबा में गुज़र चुकी हैं, दादा की विरासत और कलाला के बारे में तफ़्सीलात किताबुल फ़राइज़ में गुज़र चुकी हैं और रिबाअ (सूद/ब्याज) की दो सूरतें हैं, (1) रिबाउन्नसीआ : उधार पर सूद/ब्याज : इसको क़ुरआन मजीद ने बयान किया है, इसलिए इसकी हुर्मत में इख़्तिलाफ़ नहीं है। (2) रिबाउल फ़ज़्ल : एक क़िस्म की चीज़ों का कमी व बेशी के साथ तबादला, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने छः क़िस्म की चीज़ों की तअयीन की है, इसलिए उनकी इल्लत निकालने में इख़्तिलाफ़ है और कुछ लोग इसमें इल्लत के क़ाइल नहीं हैं, इसलिए उसमें इख़्तिलाफ़ है, तो हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़्वाहिश थी कि आप इन तीनों चीज़ों की तफ़्सील बयान कर देते कि इनमें इख़्तिलाफ़ की गुंजाइश ही नहीं रहती।

وَحَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ ابْنِ، عُمَرَ قَالَ سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، عَلَى مِنْبَرِ رَسُولِ

(7560) हजरत इब्ने उमर (रज़ि.) बयान करते हैं, मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से रसूलुल्लाह(ﷺ) के मिम्बर पर यह सुना, अम्मा बअद! ऐ लोगों! वाक़िया यह है, शराब की हुर्मत उतरी, जबकि (वह आम तौर पर)

اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ أَمَّا بَعْدُ أَيُّهَا النَّاسُ فَإِنَّهُ نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهْىَ مِنْ خَمْسَةٍ مِنَ الْعِنَبِ وَالتَّمْرِ وَالْعَسَلِ وَالْحِنْطَةِ وَالشَّعِيرِ وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ وَثَلاَثٌ أَيُّهَا النَّاسُ وَدِدْتُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ عَهِدَ إِلَيْنَا فِيهِنَّ عَهْدًا نَنْتَهِي إِلَيْهِ الْجَدُّ وَالْكَلاَلَةُ وَأَبْوَابٌ مِنْ أَبْوَابِ الرِّبَا .

पाँच चीज़ों से तैयार की जाती थी, अंगूर, शहद, खजूर, गंदुम और जौ से और हर वह चीज़ शराब है जो अक़्ल को ढाँप ले, ऐ लोगों! तीन चीज़ें हैं, मैं चाहता था कि रसूलुल्लाह(ﷺ) उनके बारे में ऐसी तफ़्सीली तल्क़ीन फ़र्माते कि हम उस पर रुक जाते, हमें उसके बारे में अपने इज्तिहाद से कुछ न कहना पड़ता, दादा कलाला और अब्वाबे रिबा के मसाइल।

इसकी तख़रीज हदीस 7475 में गुज़र चुकी है।

وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، كِلاَهُمَا عَنْ أَبِي حَيَّانَ، بِهَذَا الإِسْنَادِ . بِمِثْلِ حَدِيثِهِمَا غَيْرَ أَنَّ ابْنَ عُلَيَّةَ فِي حَدِيثِهِ الْعِنَبِ . كَمَا قَالَ ابْنُ إِدْرِيسَ وَفِي حَدِيثِ عِيسَى الزَّبِيبِ . كَمَا قَالَ ابْنُ مُسْهِرٍ .

(7561) इमाम साहब यही रिवायत दो और उस्तादों से बयान करते हैं, इब्ने उलय्या की रिवायत में, इब्ने इदरीस की तरह अंगूर का लफ़्ज़ है और ईसा की हदीस में इब्ने मुस्हिर की तरह मुनक़्क़ा (ज़बीब) का लफ़्ज़ है।

इसकी तख़रीज हदीस 7475 में गुज़र चुकी है।

(8)بَابُ : فِي قَوْلِهِ تَعَالَى (هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ)

बाब 8 : यह अपने रब के बारे में झगड़ने वाले दो गिरोह हैं

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ أَبِي هَاشِمٍ، عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ، عَنْ قَيْسِ، بْنِ عُبَادٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ، يُقْسِمُ قَسَمًا إِنَّ {

(7562) क़ैस बिन अब्बाद (रह.) कहते हैं, मैंने अबू ज़र्र (रज़ि.) से सुना, वह पूरे ज़ोर से क़सम उठाकर कहते थे कि 'यह झगड़ने वाले दो गिरोह, जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया।' (हज्ज : आयत 19)

هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ{ إِنَّهَا نَزَلَتْ فِي الَّذِينَ بَرَزُوا يَوْمَ بَدْرٍ حَمْزَةُ وَعَلِيٌّ وَعُبَيْدَةُ بْنُ الْحَارِثِ وَعُتْبَةُ وَشَيْبَةُ ابْنَا رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدُ بْنُ عُتْبَةَ .

यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी, जिन्होंने बद्र के दिन मुबारज़त में हिस्सा लिया, हम्ज़ा, अली, उबैदा बिन हारिस, रबीआ के बेटे, उत्बा, शैबा और वलीद बिन उत्बा।

सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी : 3966; हदीस : 4968; और हदीस 3968; किताबुत्तफ़्सीर : 7343; सुनन इब्ने माजा, किताबुल जिहाद : 2835.

حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، جَمِيعًا عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي هَاشِمٍ، عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ، يُقْسِمُ لَنَزَلَتْ { هَذَانِ خَصْمَانِ} بِمِثْلِ حَدِيثِ هُشَيْمٍ .

(7563) क़ैस बिन उबाद (रह.) कहते हैं, मैंने हज़रत अबू ज़र्र से सुना, वह क़सम उठाकर कहते थे, यह झगड़ने वाले दो गिरोह, आगे ऊपर वाली हदीस है।

तख़रीज 7563 : इसकी तख़रीज हदीस 7478 में गुज़र चुकी है।

फ़ायदा : जंगे बद्र के मौक़े पर क़ुरैश की तरफ़ से लड़ाई के आग़ाज़ में उत्बा और शैबा (रबीआ के बेटे) और वलीद बिन उत्बा, ने दावते मुबारज़त दी, मुक़ाबले में , अंसारी नौजवान निकले, लेकिन उन्होंने कहा, हम तो अपने चचाज़ादों, (बनू हाशिम) को दावत दे रहे हैं, तो फिर आपने मुक़ाबले में हज़रत हम्ज़ा, अली और उबैदा बिन हारिस (रज़ि.) को निकाला, जिसकी तफ़्सीलात जंगे बद्र में गुज़र चुकी हैं, सूरह हज्ज की आयत इन दोनों गिरोह के बारे में उतरी है लेकिन इनका मिस्दाक़ तमाम मुसलमान और काफ़िर हैं।

Sherkhan
9825 696 131

मिलने के पते

मकतबा तर्जुमान, 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली
फोन: 011-23273407

तौफिक बुक डिपो, 2241/41 कुचा चैलान,
दरियागंज, नई दिल्ली 98732-96944

अल हिरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू बाजार, मटिया महल
जामा मस्जिद, दिल्ली 090153-82970

मदरसा दारूल उलूम सलफिया,
मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम, (एम.पी.)

मोहम्मद अब्बास, 903, बडे ओम्ती,
जबलपुर, (एम.पी.) 89595-13602

हाफ़िज़ मोहम्मद राशिद,
विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 70146-75559

तौहीद किताब सेन्टर, 08039-72503 सीकर (राज.)

कलीम बुक डिपो, सीकर (राज.) 70148-98515

नईम कुरैशी, 2 सी.एच.ए. 18 हाउसिंग बोर्ड,
शास्त्री नगर, भट्टा बास, पुलिस स्टेशन के पास, जयपुर
(राज.) 82091-64214

अब्दुर्रहीम मुतवल्ली, मर्कजी मस्जिद अहले हदीस,
जोधपुर (राज.) 93143-66303

अल कौसर ट्रेडर्स,
जोधपुर 94141-920119

मकतबा अस्सून्नह,
मुम्बई 08097-44448

उमरी बुक डिपो, मदरसा तालीमुल कुरआन,
अशोक नगर, हिल नं. 3 कुर्ला, मुम्बई 82918-33897

दारूल इल्म,
नागपाड़ा, मुम्बई 022-23088989, 23082231

मो. इस्हाक, अल हुदा रिफाई फाउण्डेशन,
खजराना, इन्दौर 95846-51411

शैफुल्लाह खालिद,
माणक बाग, इन्दौर 98273-97772

अबू रेहान मुहम्मदी मदनी,
जुलैखा चिल्ड्रन हॉस्पीटल केसर कॉलोनी,
औरंगाबाद 88307-46536, 95452-45056

शैख सुहैल सल्फ़ी,
मकतबा सलफिया, वाराणासी 094519-15874

आई.आई.सी.
नूरी होटल के पास, हाण्डा बाजार, भुज, कच्छा
(गुजरात) 094291-17111

मकतबा अलफहीम, मऊनाथ, भंजन (यूपी)
0547-2222013

नसीम खलीली, नीमू डायमण्ड फुट वियर, 87 बोधा
नगर, भूतला रोड़, आगरा (यूपी) 084497-10271

ALL INDIA DISTRIBUTOR
AL KITAB INTERNATIONAL
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-25
PH: 26986973 M. 9312508762

SOLE DISTRIBUTOR
POPULAR BOOK STORE
OUT SIDE MERTI GATE, JODHPUR [RAJ.]
9460768990, 9664159557